

# विषयसूची

|   |       |
|---|-------|
| परिच्छेद-१ : परिचय.....   | १-१८  |
| १.१ पृष्ठभूमि .....   | १     |
| १.२ योजनाबद्ध विकासको समीक्षा .....                             | ३     |
| १.३ चौधौं योजनाको समीक्षा .....                                 | ३     |
| १.३.१ समष्टिगत आर्थिक क्षेत्र .....                             | ६     |
| १.३.२ विषय क्षेत्र .....  | ९     |
| १.३.३ अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र .....                         | १३    |
| १.४ दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन समीक्षा .....                 | १६    |
| परिच्छेद-२ : दीर्घकालीन सोच २१०० .....                          | १९-३६ |
| २.१ पृष्ठभूमि .....   | १९    |
| २.२ दीर्घकालीन सोचको आवश्यकता .....                             | १९    |
| २.३ दीर्घकालीन सोचको मार्गचित्र .....                           | २०    |
| २.४ दीर्घकालीन सोच .....  | २१    |
| २.५ दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य .....                           | २१    |
| २.६ दीर्घकालीन राष्ट्रिय रणनीति .....                           | २२    |
| २.७ रूपान्तरणका प्रमुख सम्वाहक .....                            | २२    |
| २.८ सहयोगी क्षेत्र .....  | २२    |
| २.९ दीर्घकालीन सोचको परिदृश्य र परिमाणात्मक लक्ष्यहरू .....     | २३    |
| २.१० समष्टिगत तथा विषय क्षेत्रगत सोच .....                      | २६    |
| परिच्छेद-३ : पन्ध्रौं योजना (आर्थिक वर्ष २०७६/७७-२०८०/८१) ..... | ३७-६९ |
| ३.१ पृष्ठभूमि .....   | ३७    |
| ३.२ चुनौती तथा अवसर .....                                       | ३८    |
| ३.३ राष्ट्रिय लक्ष्य .....                                      | ३९    |
| ३.४ प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरू .....                          | ३९    |
| ३.५ राष्ट्रिय उद्देश्य .....                                    | ४४    |

|   |    |
|---|----|
| ३.६ राष्ट्रिय रणनीति .....                                    | ४४ |
| ३.७ दिगो विकास लक्ष्यको आन्तरिकीकरण .....                     | ४८ |
| ३.८ विकासमा क्षेत्रगत भूमिका .....                            | ४९ |
| ३.८.१ सार्वजनिक क्षेत्र .....                                 | ४९ |
| ३.८.२ निजी क्षेत्र .....                                      | ५१ |
| ३.८.३ सहकारी क्षेत्र .....                                    | ५१ |
| ३.८.४ गैरसरकारी संस्था, नागरिक समाज र सामुदायिक क्षेत्र ..... | ५२ |
| ३.९ समष्टिगत आर्थिक खाका .....                                | ५२ |
| ३.९.१ आर्थिक वृद्धिदर .....                                   | ५२ |
| ३.९.२ उत्पादकत्व .....  | ५६ |
| ३.९.३ सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र लगानी .....              | ५७ |
| ३.९.४ स्रोत-साधनको अनुमान तथा बाँडफाँटका आधार .....           | ६३ |
| ३.९.५ सार्वजनिक स्रोत व्यवस्था तथा खर्चको अनुमान .....        | ६३ |
| ३.९.६ अन्तरसरकारी वित्त .....                                 | ६६ |
| ३.९.७ समष्टिगत अर्थतन्त्रमा पर्ने प्रभाव .....                | ६७ |

**परिच्छेद-४ : समष्टिगत अर्थतन्त्र ..... ६९-१०४**

|  |    |
|--|----|
| ४.१ बचत .....  | ६९ |
| ४.२ सार्वजनिक वित्त .....                            | ७२ |
| ४.२.१ सार्वजनिक खर्च .....                           | ७२ |
| ४.२.२ राजस्व .....                                   | ७६ |
| ४.२.३ अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायता .....             | ७९ |
| ४.२.४ सार्वजनिक ऋण .....                             | ८१ |
| ४.२.५ अन्तर-सरकारी वित्त .....                       | ८४ |
| ४.३ सार्वजनिक संस्थान .....                          | ८७ |
| ४.४ मौद्रिक तथा वित्तीय क्षेत्र .....                | ९० |
| ४.५ मूल्य नीति .....                                 | ९३ |
| ४.६ वैदेशिक व्यापार, शोधनान्तर र विदेशी विनिमय ..... | ९५ |

|   |                |
|---|----------------|
| ४.७ बिमा .....                                    | ९८             |
| ४.८ पुँजी बजार .....                              | १०१            |
| <b>परिच्छेद-५ : निजी तथा सहकारी क्षेत्र .....</b> | <b>१०५-१२६</b> |
| ५.१ निजी क्षेत्र .....                            | १०५            |
| ५.२ सहकारी क्षेत्र .....                          | १०९            |
| ५.३ सार्वजनिक-निजी साझेदारी .....                 | ११४            |
| ५.४ वैदेशिक लगानी .....                           | ११७            |
| ५.५ विप्रेषण .....                                | १२१            |
| ५.६ उद्यमशीलता विकास .....                        | १२३            |
| <b>परिच्छेद-६ : आर्थिक क्षेत्र .....</b>          | <b>१२७-१७४</b> |
| ६.१ कृषि तथा प्राकृतिक स्रोत .....                | १२७            |
| ६.१.१ कृषि .....                                  | १२७            |
| ६.१.२ खाद्य सुरक्षा तथा पोषण .....                | १३४            |
| ६.१.३ सिँचाई .....                                | १३८            |
| ६.१.४ भूमि व्यवस्था .....                         | १४१            |
| ६.१.५ जलस्रोत .....                               | १४६            |
| ६.१.६ वन, जैविक विविधता तथा जलाधार .....          | १४८            |
| ६.२ उद्योग, वाणिज्य, आपूर्ति र पर्यटन .....       | १५५            |
| ६.२.१ उद्योग .....                                | १५५            |
| ६.२.२ वाणिज्य .....                               | १६२            |
| ६.२.३ आपूर्ति .....                               | १६७            |
| ६.२.४ पर्यटन .....                                | १७०            |
| <b>परिच्छेद-७ : सामाजिक क्षेत्र .....</b>         | <b>१७५-२२८</b> |
| ७.१ जनसंख्या तथा बसाइँसराइ .....                  | १७५            |
| ७.२ शिक्षा .....                                  | १८०            |
| ७.३ स्वास्थ्य तथा पोषण .....                      | १९०            |
| ७.४ खानेपानी तथा सरसफाई .....                     | १९८            |

|  |                |
|--|----------------|
| ७.५ युवा .....                               | २०३            |
| ७.६ लैङ्गिक समानता तथा महिला सशक्तीकरण ..... | २०६            |
| ७.७ बालबालिका तथा किशोरकिशोरी .....          | २११            |
| ७.८ ज्येष्ठ नागरिक .....                     | २१६            |
| ७.९ अपाङ्गता भएका व्यक्ति .....              | २१८            |
| ७.१० खेलकुद .....                            | २२१            |
| ७.११ सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण .....       | २२५            |
| <b>परिच्छेद-८ : पूर्वाधार क्षेत्र .....</b>  | <b>२२९-२८०</b> |
| ८.१ ऊर्जा .....                              | २२९            |
| ८.१.१ जलविद्युत .....                        | २२९            |
| ८.१.२ वैकल्पिक ऊर्जा .....                   | २३२            |
| ८.२ यातायात पूर्वाधार .....                  | २३६            |
| ८.२.१ सडक .....                              | २३७            |
| ८.२.२ हवाई यातायात .....                     | २४२            |
| ८.२.३ रेल यातायात .....                      | २४६            |
| ८.२.४ जल यातायात .....                       | २४८            |
| ८.२.५ यातायात व्यवस्थापन .....               | २५०            |
| ८.३ सञ्चार तथा सूचना प्रविधि पूर्वाधार ..... | २५२            |
| ८.४ स्थानीय पूर्वाधार .....                  | २५७            |
| ८.५ विज्ञान तथा प्रविधि .....                | २५९            |
| ८.६ शहरी विकास .....                         | २६३            |
| ८.७ ग्रामीण विकास .....                      | २६७            |
| ८.८ आवास तथा बस्ती विकास .....               | २७०            |
| ८.९ भवन निर्माण .....                        | २७४            |
| ८.१० पुनर्निर्माण .....                      | २७७            |
| <b>परिच्छेद-९ : लोकतन्त्र र सुशासन .....</b> | <b>२८१-३२८</b> |
| ९.१ राष्ट्रिय एकता .....                     | २८१            |

|   |                |
|---|----------------|
| ९.२ नेतृत्व निर्माण .....   | २८३            |
| ९.३ अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्ध .....                                      | २८६            |
| ९.४ शान्ति सुव्यवस्था र सुरक्षा .....   | २९०            |
| ९.५ निर्वाचन प्रणाली .....  | २९७            |
| ९.६ मानव अधिकार .....   | ३०१            |
| ९.७ न्याय प्रणाली .....   | ३०४            |
| ९.८ संघीय शासन प्रणाली .....  | ३१०            |
| ९.९ प्रदेश तथा स्थानीय तहको सन्तुलित विकास .....                              | ३१२            |
| ९.१० शासकीय सुधार .....   | ३१४            |
| ९.११ प्रशासकीय सुशासन .....   | ३१७            |
| ९.१२ भ्रष्टाचार नियन्त्रण .....   | ३२०            |
| ९.१३ मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण .....                                | ३२३            |
| <b>परिच्छेद-१० : अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र .....</b>                        | <b>३२९-३८०</b> |
| १०.१ तथ्याङ्क प्रणाली .....   | ३२९            |
| १०.२ गरिबी निवारण .....   | ३३४            |
| १०.३ श्रम तथा रोजगारी .....   | ३३८            |
| १०.४ मानव संसाधन विकास .....  | ३४४            |
| १०.५ अनुसन्धान तथा विकास .....  | ३४८            |
| १०.६ समावेशीकरण .....   | ३५२            |
| १०.७ सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता .....   | ३५४            |
| १०.८ विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन .....                               | ३५८            |
| १०.९ वातावरण .....  | ३६३            |
| १०.१० जलवायु परिवर्तन .....   | ३६७            |
| १०.११ जल तथा मौसम विज्ञान .....   | ३७१            |
| १०.१२ सामुदायिक र गैरसरकारी संस्था .....                                      | ३७५            |
| <b>परिच्छेद-११ : योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन .....</b> | <b>३८१-४००</b> |
| ११.१ योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन .....                                      | ३८१            |

|   |     |
|---|-----|
| ११.२ राष्ट्रिय आयोजना बैंक .....              | ३८७ |
| ११.३ तहगत सम्बन्ध तथा अन्तरसरकार समन्वय ..... | ३८९ |
| ११.४ अनुगमन तथा मूल्याङ्कन .....              | ३९२ |
| ११.५ जोखिम व्यवस्थापन .....                   | ३९५ |

## तालिका सूची

|             |  |    |
|-------------|--|----|
| तालिका १.१  | : चौधौं योजनाको आर्थिक, सामाजिक र भौतिक उपलब्धि .....  | ५  |
| तालिका २.१  | : दीर्घकालीन सोचका प्रमुख लक्ष्यहरू .....  | २४ |
| तालिका ३.१  | : समृद्धिका राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक .....   | ३९ |
| तालिका ३.२  | : सुखका राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक .....   | ४२ |
| तालिका ३.३  | : कुल गार्हस्थ्य उत्पादन तथा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिको लक्ष्य (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)..           | ५३ |
| तालिका ३.४  | : कुल गार्हस्थ्य उत्पादन तथा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिदरको लक्ष्य (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)<br>.....  | ५५ |
| तालिका ३.५  | : कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत योगदान .....  | ५६ |
| तालिका ३.६  | : सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र कुल लगानी (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा) .....                            | ५९ |
| तालिका ३.७  | : सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रबाट हुने लगानी (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा) .....                      | ६१ |
| तालिका ३.८  | : सार्वजनिक वित्तको प्रक्षेपण (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा) .....   | ६५ |
| तालिका ३.९  | : अन्तरसरकारी वित्तको प्रक्षेपण (२०७५/७६ को मूल्यमा) .....   | ६६ |
| तालिका ३.१० | : बचत तथा लगानी, सार्वजनिक वित्त र मौद्रिक तथा बाह्य क्षेत्र (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा) ..... | ६८ |



## परिच्छेद – १

# परिचय

### १.१ पृष्ठभूमि

प्राचीन कालदेखि नै नेपालले आर्थिक गतिशीलता भएको मुलुकको रूपमा पहिचान बनाएको छ। कौटिल्यको अर्थशास्त्रमा समेत नेपालका राडीपाखी तत्कालीन मगध राज्यसम्म निर्यात भएको र खानिको अन्वेषण तथा उत्खनन हुने गरेको उल्लेख छ। लिच्छविकालमा नेपाली वस्तुको निर्यात हुने गरेको र तिब्बतमा समेत नेपाली मुद्रा प्रचलनमा रहेको थियो। मल्लकालमा नेपाली कला र इञ्जिनियरिङ उत्कृष्ट रहेकाले यस समयको शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक र दक्ष जनशक्ति उत्पादनमा केन्द्रित रहेको अनुमान गर्न सकिन्छ।

विभिन्न राज्य रजौटामा विभाजित नेपालको एकीकरणपश्चात् आर्थिक विकासको आधार स्थापित भए तापनि वि.सं. १९०३ को कोतपर्वपछि सुरु भएको राजनीतिक अस्थिरताले आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा मुलुक निकै पछाडि पर्न गयो। खासगरी १०४ वर्षसम्मको मध्ययुगीन सामन्तवादी केन्द्रीकृत शासकीय प्रणाली, राज्यकोषको व्यक्तिगत दुरुपयोग भएको, शिक्षा, स्वास्थ्य लगायतका आधारभूत आवश्यकतामा जनताको अत्यन्त न्यून पहुँच रहेको र पूर्वाधार विकासमा ध्यान नदिएको अवस्था थियो। फलतः प्राचीन समयदेखि विस्तार हुँदै आएको आर्थिक गतिविधिमा नेपाल क्रमशः पछाडि पर्दै गयो। वि.सं. २००७ सालमा प्रजातन्त्रको प्राप्तिपछि एक दशक लामो राजनीतिक संक्रमण कालमा शासकीय संरचनाका लागि आवश्यक पर्ने पद्धति र प्रणालीको विकासको सुरुआत भए तापनि करिब तीन दशक लामो निर्दलीय पञ्चायत व्यवस्थामा नागरिकप्रति उत्तरदायी शासन प्रणालीको अभावका कारण अपेक्षित रूपमा विकास हुन सकेन।

वि.सं. २०४६ पश्चात्को खुला राजनीतिक परिवेश र आर्थिक सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमले आर्थिक गतिविधिमा विस्तार भएको थियो। तर एक दशक लामो द्वन्द्वका कारण मुलुकमा अपेक्षित विकास हुन सकेन। २०६२/६३ को जनआन्दोलनबाट स्थापित ऐतिहासिक संविधान सभाबाट जारी भएको नेपालको संविधानले संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्थालाई संस्थागत गरेको छ र आर्थिक समृद्धिका लागि मार्ग प्रशस्त गरेको छ।

नेपालको संविधानले लोकतान्त्रिक मूल्य र मान्यतामा आधारित समाजवादप्रति प्रतिबद्ध रही सुशासन, विकास र समृद्धि हासिल गर्ने राष्ट्रिय कार्यसूची निर्धारण गरेको छ। साथै, सामन्तवादका अवशेषलाई समाप्त गर्दै सबै प्रकारका विभेद अन्त्य गरी समृद्धि, आर्थिक समानता र सामाजिक न्याय सुनिश्चित गर्ने मार्गदर्शन गरेको छ। संविधानले प्रत्याभूत गरेका मौलिक हक तथा राज्यका निर्देशक सिद्धान्त, नीति र दायित्वमा उल्लेखित प्रावधानहरूलाई कार्यान्वयन गर्नुपर्नेछ। नयाँ शासकीय प्रबन्ध र प्रणालीले राष्ट्र निर्माणको लागि शान्ति र स्थायित्वको आधार निर्माण गरेको छ। यो राजनैतिक र नीतिगत स्थायित्वको जगमा उभिएर नागरिकले अनुभूत गर्ने र परिवर्तनको लाभांश वर्तमान पुस्ताले नै

प्राप्त गर्ने गरी नेपाली जनताको जीवनस्तरमा सुधार गरी विकास र समृद्धिको आधार तयार गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ ।

अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता अनुरूप वि.सं. २०८७ सम्ममा दिगो विकास लक्ष्यहरू हासिल गर्नुपर्नेछ । विकासका सबै आयाममा कसैलाई पनि पछि नछोड्ने प्रतिबद्धता बमोजिम दिगो विकास लक्ष्यहरूको संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका विकास कार्यक्रममा आन्तरिकीकरण र स्थानीयकरणका कार्यहरू भइरहेका छन् । विगतमा समान अवस्थामा रहेका राष्ट्रहरूको तुलनामा पछाडि परेकाले आर्थिक सामाजिक विकासमा छोटो अवधिमा फड्को मार्दै अगाडि बढ्नु परेको छ । वि.सं. २०७९ सम्ममा नेपाललाई अतिकम विकसित देशबाट विकासशील देशमा स्तरोन्नति गर्दै वि.सं. २०८७ सम्ममा मध्यम आय भएको मुलुकको स्तरमा पुऱ्याउनुपर्नेछ ।

तीन तहको निर्वाचनपश्चात् राजनीतिक स्थायित्वको जगमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारहरू संविधानको कार्यान्वयनको लागि क्रियाशील छन् । तीन तहका सरकारलाई संवैधानिक कार्य जिम्मेवारीका आधारमा नेपालको स्वतन्त्रता, सार्वभौमसत्ता, भौगोलिक अखण्डता र स्वाधीनतालाई सम्बर्द्धन गर्दै नेपाललाई समृद्ध र समुन्नत बनाउने दायित्व आएको छ । वर्तमान सरकारले “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली” बनाउने संकल्प लिए अनुरूप दीर्घकालीन सोच तर्जुमा गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ । सबै स्रोत र साधनको दिगो एवम् विवेकपूर्ण परिचालन गर्दै प्रणालीगत सुधार र सक्षम कार्यशैलीका माध्यमबाट अन्य देशले पच्चीस वर्षमा विकासमा फड्को मारेको अनुभवलाई आत्मसात गर्दै अगाडि बढ्नुपरेको छ ।

चालु आर्थिक वर्ष (आ.व.) २०७५/७६ चौधौं योजनाको अन्तिम वर्ष भएकाले अर्को योजना तर्जुमा गर्नुपर्ने भएको छ । विगतमा संक्रमणकालका कारणले त्रिवर्षीय योजनाहरू कार्यान्वयन भइरहेकोमा स्थायी सरकार गठन भएकोले पाँच वर्ष अवधिको पन्ध्रौं योजना तर्जुमा गरिएको छ । विकासको लागि दीर्घकालीन सोचको आवश्यकतालाई ध्यानमा राखी वि.सं. २१०० सम्ममा नेपाललाई समुन्नत मुलुकको स्तरमा पुऱ्याउने लक्ष्य राख्दै यो योजना तर्जुमा गरिएको छ । नागरिकका विकास र समृद्धिका अपेक्षा सम्बोधन गर्न बृहत् आर्थिक तथा सामाजिक रूपान्तरण गर्न विकास नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्न, तीव्र र उच्च आर्थिक वृद्धि हासिल गर्न र समन्यायिक वितरण र पुनर्वितरणको सुनिश्चितताका लागि सम्पूर्णतामा कार्यान्वयन हुने योजनाको आधार-पत्र तयार गरिएको छ ।

देशको भू-बनोट, विविधतायुक्त प्रकृति, समाजको उत्पत्ति र बनोट, सभ्यता र विविधतायुक्त संस्कृति, भाषा, प्राकृतिक स्रोत र साधनको अत्युत्तम परिचालन, उदीयमान दुई छिमेकी अर्थतन्त्र, देशभित्रको क्रियाशील जनशक्ति, अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमा सुरु भएको असल सम्बन्धको विकास र कायम रहेको समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व नै आर्थिक समृद्धिको आधारका रूपमा रहेका छन् । सुशासन र विकासका लागि वर्तमान सरकारको राजनैतिक अठोट र इच्छाशक्ति एवम् प्रदेश र स्थानीय तहको क्रियाशीलता र सामर्थ्यको माध्यमबाट सम्पूर्ण रूपमा कार्यान्वयन गर्नुपर्ने भएको छ । यो अवसरलाई मुलुकको सुशासन, विकास र समृद्धिको लागि उपयोग गर्न शासकीय अवयवहरूको कुशलतापूर्वक परिचालनबाट समृद्धिको आधार तयार हुनेछ ।

यस योजनाले समृद्धि र सुखको आधार सिर्जना गर्ने, तत्पश्चात्का दुई वटा पञ्चवर्षीय योजनाले समृद्धि र सुख प्राप्तिलाई तीव्रता दिने र अन्तका दुई पञ्चवर्षीय योजनाले हासिल गरिएको समृद्धि र सुखको सन्तुलन सहितको दिगोपना ल्याउने राष्ट्रिय सोच, लक्ष्य र उद्देश्य प्राप्त गर्ने गरी रणनीति, कार्यनीति र कार्यक्रमहरूको कार्यान्वयन गर्नुपर्नेछ। यस योजनाले प्रदेश र स्थानीय तहका दीर्घकालीन सोच र आवधिक योजनालाई समेत मार्गदर्शन गर्नेछ।

## १.२ योजनाबद्ध विकासको समीक्षा

छ दशक लामो योजनाबद्ध विकासको अवधिमा नौ वटा पञ्चवर्षीय र पाँच वटा त्रिवर्षीय योजना कार्यान्वयनमा आएका छन्। आ.व. २०७५/७६ चौधौँ योजनाको अन्तिम वर्ष हो। यस अवधिमा राजनीतिक क्षेत्रमा युगान्तकारी परिवर्तन भए तापनि आर्थिक, सामाजिक तथा आधुनिक यातायात तथा पूर्वाधार विकासको क्षेत्रमा अपेक्षित उपलब्धि हासिल हुन सकेको छैन। विगतको तुलनामा नेपाली जनतामा सचेतनामा अभिवृद्धि भएको छ र समाज आधुनिकतामा प्रवेश गरेको छ। जातीय, लैङ्गिक र वर्गीय विभेद, बहिष्करण र असमानता पूर्ण रूपमा समाप्त नभए तापनि सुधारोन्मुख रहेका छन्। शिक्षा, स्वास्थ्य, खानेपानी, सामाजिक सुरक्षा आदि क्षेत्रमा यस अवधिमा महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल भएका छन्। पूर्वाधार क्षेत्र अन्तर्गत सडक यातायात, सञ्चार तथा सूचना प्रविधि र शहरी पूर्वाधारमा उल्लेख्य विकास भए तापनि अधिकांश पूर्वाधारको गुणस्तर सुनिश्चित हुन सकेको छैन। जलविद्युत, हवाई यातायात लगायतका अन्य पूर्वाधार निर्माणमा थप प्रयास गर्नुपर्नेछ। जनताका बढ्दो अपेक्षाको सम्बोधन गर्न र समृद्ध तथा समुन्नत राष्ट्रको रूपमा विकास गर्न अल्पकालीन, मध्यमकालीन र दीर्घकालीन योजना तर्जुमा गरी नतिजामूलक कार्यान्वयन गर्नुपर्ने हुन्छ।

निरपेक्ष तथा बहुआयामिक गरिबीमा उल्लेख्य कमी आएको भए तापनि अझै पनि जनसंख्याको ठूलो हिस्सा गरिबीको रेखामुनि रहेको छ। स्वदेशमा रोजगारीको अभावले युवा श्रमशक्ति रोजगारीका लागि विदेशिने क्रम यथावत् छ। अर्थतन्त्रमा औद्योगिक क्षेत्रको योगदान घटिरहेको छ र निर्यात-आयात अनुपात तीव्र रूपमा बढिरहेको छ। विप्रेषणले अर्थतन्त्रको आकारमा वृद्धि भएको र विदेशी मुद्राको पर्याप्त सञ्चिति रहेको छ। सामाजिक सुरक्षा, समावेशीकरण, वातावरण संरक्षण लगायतका आर्थिक-सामाजिक विकासका क्षेत्रमा महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल भएका छन्। आर्थिक वृद्धि, उत्पादन र उत्पादकत्व, औद्योगिकीकरण, गुणस्तरीय शिक्षा तथा स्वास्थ्य, स्वच्छ र प्रदूषणमुक्त वातावरण र सुशासन लगायतका क्षेत्रमा योजनाले लिएका लक्ष्यहरू अपेक्षित रूपमा हासिल हुन सकेका छैनन्।

## १.३ चौधौँ योजनाको समीक्षा

ऐतिहासिक संविधान सभाबाट संविधान जारी भएपछिको पहिलो योजनाको रूपमा चौधौँ योजना (आ.व. २०७३/७४-२०७५/७६) तर्जुमा भएको थियो। योजनाले कृषि उपज, औषधि तथा ऊर्जा क्षेत्रमा आत्मनिर्भर बनाउँदै स्वाधीन, समुन्नत तथा समाजवाद उन्मुख राष्ट्रिय अर्थतन्त्रको निर्माण गर्ने सोच लिएको थियो। योजनाले सामाजिक न्याय सहितको लोक कल्याणकारी राज्य हुँदै मध्यम आय भएको मुलुकमा पुग्ने लक्ष्य लिएको थियो। साथै, यो योजना दिगो विकास लक्ष्यहरूलाई मूलप्रवाहीकरण एवम् आन्तरिकीकरण गर्ने प्रयास गरेको पहिलो योजना थियो। योजना

तर्जुमाका बखत विनाशकारी भूकम्पबाट अर्थतन्त्रमा करिब रू. सात खर्ब बराबरको क्षति भएको थियो। दक्षिणी सीमा नाकामा लामो समयसम्म भएको अवरोधबाट अर्थतन्त्रमा थप नोक्सानी भएको थियो। यसका कारण लगानीको वातावरण समेत प्रतिकूल रहेको थियो। सार्वजनिक लगानीमा उल्लेख्य वृद्धि गरी भूकम्प पछिको पुनर्निर्माणलाई तीव्रता दिने, संघीयता कार्यान्वयन र व्यवस्थापनका साथै दक्षिण सीमानाको व्यापारिक अवरोधबाट अर्थतन्त्रमा भएको नोक्सानीलाई सम्बोधन गर्नेगरी योजना तर्जुमा भएको थियो।

संविधानले तय गरेको विकासको कार्यदिशा बमोजिम राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई समाजवाद उन्मुख, आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र तथा उन्नतिशील बनाउने सोचलाई कार्यान्वयन गर्दै दिगो विकास सहितको समृद्धिको मार्गमा राष्ट्रलाई अगाडि बढाउनेतर्फ चौधौं योजना उन्मुख थियो। साथै, संविधान कार्यान्वयन गर्ने प्रारम्भिक कार्यको रूपमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको निर्वाचन सम्पन्न गर्ने, संघीयता कार्यान्वयन र व्यवस्थापन लागि आवश्यक कानून र संरचना निर्माण गर्ने उद्देश्य रहेको थियो।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको निर्वाचन सम्पन्न भई तीन तहका सरकार क्रियाशील रहेका छन्। यसबाट लामो समयदेखिको राजनैतिक संक्रमणकाल समाप्त भई राजनैतिक स्थायित्व कायम भएको छ। संघीय संरचनामा तीन तहका सरकारका अधिकार सूचीको प्रयोग र सोही अनुरूप विधि र संरचना समेत निर्माण गर्ने कार्य तीव्र भएको छ। मुलुकले खोजेको आर्थिक समानता, सुशासन, विकास, समृद्धि र सामाजिक न्यायको सुनिश्चितताका लागि समेत चौधौं योजनाको पहिलो दुई वर्ष महत्वपूर्ण वर्षका रूपमा रहेका थिए। साथै, राजनैतिक स्थायित्वको लागि जनमत प्राप्त भई स्थिर सरकार गठन भएपश्चात् लगानीको वातावरण अनुकूल भएको र वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयन समेत प्रारम्भ भएको छ। वित्त नीति तथा उत्प्रेरणाको माध्यमबाट विनाशकारी भूकम्प तथा दक्षिणी सीमा नाकामा भएको अवरोधबाट अर्थतन्त्रमा देखापरेका प्रतिकूलता हटाउँदै समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्न यो योजना सफल भएको छ। योजना र बजेट प्रणालीबीचको अन्तरसम्बन्ध अभिवृद्धि गर्ने र वित्त प्रणाली सुदृढ तथा प्रतिफलयुक्त बनाउन मध्यमकालीन खर्च संरचना समेत यसै योजनाको आधारमा तयार भएको थियो।

चौधौं योजनाले उत्पादनशील रोजगारी उन्मुख र न्यायपूर्ण वितरण सहितको उच्च आर्थिक वृद्धिद्वारा गरिबी द्रुत रूपमा न्यूनीकरण गर्दै आर्थिक सामाजिक रूपान्तरण गर्ने उद्देश्य लिएको थियो। सो अनुरूप कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको औसत वार्षिक वृद्धिदर ७.२ प्रतिशत पुऱ्याउने लक्ष्य रहेकोमा आ.व. २०७३/७४ मा ७.७ प्रतिशत, आ.व. २०७४/७५ मा ६.३ प्रतिशत र आ.व. २०७४/७५ मा ६.८ प्रतिशत गरी औसत ६.९ प्रतिशत वृद्धि भएको छ। क्षेत्रगत आधारमा यस अवधिमा कृषि क्षेत्रको कुल मूल्य अभिवृद्धि वार्षिक औसत ४.२ प्रतिशत र गैहकृषि क्षेत्रको ८ प्रतिशत रहेको छ। आठौं योजना पश्चातका अन्य योजनाले तोकेको लक्ष्यको तुलनामा यस समीक्षा अवधिको आर्थिक वृद्धिदर (६.९ प्रतिशत) लक्ष्यको सबैभन्दा नजिक रहेको छ। आ.व. २०७५/७६ सम्ममा अर्थतन्त्रको आकार रू. ३४ खर्ब ६४ अर्ब पुगेको छ।

योजना अवधिमा लगानीमैत्री आर्थिक नीति, विद्युत आपूर्ति प्रणालीमा भएको निरन्तर सुधार, श्रम सम्बन्धमा सुधार र राजनीतिक स्थायित्वले गर्दा लगानीको वातावरणमा आएको अनुकूलताका कारण अर्थतन्त्रमा सकारात्मक

असर पुन गएको छ । सन् २०१८ मा ११ लाख ४० हजार पर्यटक नेपाल प्रवेश गर्नुले मुलुकको अर्थतन्त्र सकारात्मक दिशातिर अघि बढिरहेको पुष्टि हुन्छ । साथै, जनसांख्यिक लाभांश, लगानीमैत्री वातावरण, विकसित सामाजिक-आर्थिक पूर्वाधार, भूकम्पपछिको तीव्र गतिको पुनर्निर्माण र ऊर्जा उत्पादनमा भएको वृद्धि लगायतका सकारात्मक परिदृश्यबाट मुलुकको विकास र समृद्धिको प्रस्थान बिन्दुका आधार तयार भएको छ ।

योजना अवधिको सुरुका दुई वर्ष आ.व. २०७२/७३ र आ.व. २०७४/७५ मा कुल सरकारी खर्च क्रमशः रू. ८ खर्ब १९ अर्ब ४६ करोड ८८ लाख ८५ हजार र रू. १० खर्ब ८४ अर्ब ९२ करोड १३ लाख ५४ हजार रहेको थियो । कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा) को अनुपातमा उक्त रकम क्रमशः ३१ र ३६ प्रतिशत हुन आउँछ । विगतभन्दा तीव्र रूपमा भइरहेको आर्थिक विस्तार एवम् विस्तारकारी वित्त नीतिको कार्यान्वयन गर्दा पनि कुशल मौद्रिक नीति कार्यान्वयनको कारण पछिल्लो दशकमा मुद्रास्फीति न्यून रहेको छ ।

मानव विकास सूचकांक ०.५७ र अपेक्षित आयु सरदर ७२ वर्ष पुऱ्याउने लक्ष्य रहेकोमा समीक्षा अवधिमा क्रमशः ०.५७४ र ७० वर्षको हाराहारीमा पुगेको छ । स्वच्छ खानेपानी सेवा पुगेको जनसंख्या ९० प्रतिशत, माध्यमिक तहमा खुद भर्नादर ४५ प्रतिशत र १५ देखि २४ वर्ष उमेर समूहको साक्षरता दर ९२ प्रतिशत पुऱ्याउने लक्ष्य राखिएकोमा क्रमशः ८८, ४३.९ र ८५ प्रतिशत पुगेको छ । सामाजिक परिसूचकका पहुँचगत लक्ष्य प्राप्तमा उल्लेख्य प्रगति भए तापनि यसको गुणात्मक पक्षमा सुधारको आवश्यकता रहेको छ ।

चौधौँ योजनाको प्रमुख आर्थिक, सामाजिक तथा भौतिक लक्ष्यहरू र दुई वर्षको प्रगति निम्न तालिकामा देखाइएको छ । कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँग सम्बन्धित आँकडा भने योजना अवधिभरका उल्लेख गरिएका छन् ।

**तालिका १.१ : चौधौँ योजनाको आर्थिक, सामाजिक र भौतिक उपलब्धि**

| सूचक   | आधार वर्ष<br>(२०७२/७३) | आ.व.२०७५/७६<br>सम्मको लक्ष्य | आ.व. २०७४/७५<br>सम्मको प्रगति |
|--|------------------------|------------------------------|-------------------------------|
| १. वार्षिक औसत आर्थिक वृद्धिदर (प्रतिशत) <sup>१</sup>            | ०.८                    | ७.२                          | ६.९                           |
| २. कृषि क्षेत्रको वार्षिक औसत वृद्धिदर (प्रतिशत) <sup>१</sup>    | १.३                    | ४.७                          | ४.२                           |
| ३. गैरकृषि क्षेत्रको वार्षिक औसत वृद्धिदर (प्रतिशत) <sup>१</sup> | ०.६                    | ८.४                          | ८.०                           |
| ४. मुद्रास्फीति (प्रतिशत)  | ९.५                    | ७.५                          | ४.२                           |
| ५. प्रतिव्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (रू. हजारमा) <sup>१</sup> | ७९.४                   | ११६.५                        | ११७.५                         |
| ६. गरिबीको रेखामुनिको जनसङ्ख्या (प्रतिशत)                        | २१.६                   | १७                           | १८.७                          |
| ७. मानव विकास सूचकाङ्क   | ०.५४                   | ०.५७                         | ०.५७४                         |
| ८. लैङ्गिक सशक्तीकरण सूचकाङ्क                                    | ०.५६                   | ०.५८                         | ०.५६८                         |
| ९. अपेक्षित आयु (जन्मेको समयमा, वर्ष)                            | ६९                     | ७२                           | ६९.७                          |

| सूचक  | आधार वर्ष<br>(२०७२/७३) | आ.व. २०७५/७६<br>सम्मको लक्ष्य | आ.व. २०७४/७५<br>सम्मको प्रगति |
|---|------------------------|-------------------------------|-------------------------------|
| १०. खानेपानी सेवा पुगेको जनसङ्ख्या (प्रतिशत)          | ८३.६                   | ९०                            | ८८                            |
| ११. माध्यमिक तहमा खुद भर्नादर (प्रतिशत)               | ३७.७                   | ४५                            | ४३.९                          |
| १२. १५-२४ वर्ष उमेर समूहको साक्षरता दर                | ८८.६                   | ९२                            | ८५                            |
| १३. विद्युत उत्पादन (जडित क्षमता, मेगावाट)            | ८५१                    | २३०९                          | १,०२०                         |
| १४. विद्युत्मा पहुँच प्राप्त परिवार (प्रतिशत)         | ७४.०                   | ८७                            | ९०.७                          |
| १५. सिँचाइ (हेक्टर लाखमा)                             | १३.९                   | १५.२                          | १४.७                          |
| १६. इन्टरनेट सेवामा पहुँच प्राप्त जनसङ्ख्या (प्रतिशत) | ४४.४                   | ६५                            | ५५.४                          |

स्रोत: १. राष्ट्रिय लेखा २०७५/७६ को प्रारम्भिक अनुमान ।

### १.३.१ समष्टिगत आर्थिक क्षेत्र

#### बचत तथा लगानी

समीक्षा अवधिमा कुल स्थिर पुँजी निर्माण कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा क्रमशः बढ्दै गएको छ । आधार वर्ष २०७२/७३ मा चालु मूल्यमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको २८ प्रतिशत रहेको कुल स्थिर पुँजी निर्माण आ.व. २०७५/७६ मा ३६.९ प्रतिशत पुगेको प्रारम्भिक अनुमान छ । यस अवधिमा निजी क्षेत्र समेतबाट भएको उल्लेख्य लगानीका कारण यो वृद्धि सम्भव भएको छ । सरकारले वित्त प्रणाली सुदृढ गर्नका लागि निजी क्षेत्रमा प्रवाह गर्ने कर्जामा संकुचन आउन नदिने गरी वित्त नीति अवलम्बन गरेकोले कर्जा प्रवाहमा उल्लेख्य सुधार भएको छ । आ.व. २०७२/७३ मा चालु मूल्यमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको तुलनामा २१.६ प्रतिशत रहेको निजी क्षेत्रको कुल स्थिर पुँजी निर्माण आ.व. २०७५/७६ मा २९.० प्रतिशत पुगेको छ । सार्वजनिक क्षेत्रको कुल स्थिर पुँजी निर्माण कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको १३.० प्रतिशत पुऱ्याउने लक्ष्य रहेकोमा आ.व. २०७५/७६ मा ८.० प्रतिशतमा सीमित भएको छ । यस अवधिमा निजी क्षेत्रबाट निर्माण, होटल, जलविद्युत र नागरिक उड्डयन क्षेत्रमा भएको लगानीको कारण कुल स्थिर पुँजी निर्माण बढेको छ । न्यून पुँजीगत खर्चका कारण यस अवधिमा सार्वजनिक क्षेत्रको पुँजी निर्माण अपेक्षा अनुरूप हुन सकेन ।

योजनाको अन्त्यसम्ममा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको तुलनामा कुल गार्हस्थ्य बचत र कुल राष्ट्रिय बचत क्रमशः १०.८ र ४५.० प्रतिशत पुऱ्याउने लक्ष्य राखिएकोमा आ.व. २०७५/७६ मा क्रमशः २०.५ र ५२.४ प्रतिशत पुगेको प्रारम्भिक अनुमान छ । यस अवधिमा आर्थिक वृद्धिको तुलनामा कुल उपभोग वृद्धि न्यून रहँदा कुल गार्हस्थ्य बचतको लक्ष्य पूरा भएको छ । यस अवधिमा विप्रेषण आयको वृद्धि भएको कारण कुल राष्ट्रिय बचतको अनुपात उल्लेख्य वृद्धि भएको छ ।

## सरकारी वित्त

आ.व. २०७२/७३ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा २६.७ प्रतिशत रहेको सरकारी खर्च आ.व. २०७४/७५ मा ३५.७ प्रतिशत पुगेको छ। यस अवधिमा सो अनुपात चालु खर्चतर्फ ६.७ प्रतिशत र पुँजीगत खर्चतर्फ ३.४ प्रतिशत बिन्दुले बढेको छ। स्थानीय तहमा गरिएको वित्तीय हस्तान्तरण, सामाजिक सुरक्षा र तलबमा भएको बढोत्तरीका कारण चालु खर्चको वृद्धिदर पुँजीगत खर्चको तुलनामा बढ्न गएको छ। समग्रमा सार्वजनिक खर्च बढे पनि विनियोजन गरिएको रकमको तुलनामा भने खर्च न्यून रहन गयो। आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा कुल बजेट अनुमानको क्रमशः ७८.५१ र ८४.८२ प्रतिशत खर्च भएको छ। न्यून पुँजीगत खर्चको प्रमुख कारणमा पर्याप्त पूर्वतयारी विना आयोजना कार्यान्वयनमा लैजानु, जग्गा अधिग्रहणमा समस्या हुनु, समयमै ठेक्कापट्टा नहुनु, प्रक्रियागत ढिलासुस्ती हुनु, निर्माण सामग्रीको अभाव हुनु र सरोकारवाला निकायहरूबीच समन्वयको अभाव हुनु रहेका छन्।

समीक्षा अवधिमा राजस्वको वृद्धिदर वार्षिक औसत १९.३ प्रतिशत रहेर आ.व. २०७४/७५ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको २४.३ प्रतिशत पुगेको छ। मूल्य अभिवृद्धि कर, आयकर, भन्सार महसुल, अन्तःशुल्कको प्रमुख योगदानको कारण उक्त वृद्धि सम्भव भएको हो। समीक्षा अवधिमा विभिन्न नीतिगत तथा संस्थागत सुदृढीकरणका कार्यहरू कार्यान्वयनमा आए पनि कर प्रणालीको आधार र दायरा साँघुरो रहनु र राजस्वको वृद्धि मूलतः आयातमा आधारित क्रियाकलापहरूले निर्धारण गर्नु जस्ता चुनौती यस योजनामा समेत निरन्तर रहेका छन्।

आ.व. २०७३/७४ मा रू. ७२.७७ अर्ब वैदेशिक सहायता परिचालन भएकोमा आ.व. २०७४/७५ मा रू. १२८.९ अर्ब परिचालन भएको छ। तथापि, समीक्षा अवधिमा अपेक्षित वैदेशिक सहायता परिचालन गर्न सकिएको छैन। यस अवधिमा वैदेशिक सहायताबाट सञ्चालित आयोजनाहरू लक्ष्य अनुरूप सञ्चालन नहुनु, समयमा शोधभर्ना नलिनु र प्रतिबद्धता बमोजिमको रकम परिचालन हुन नसक्नुका कारण वैदेशिक सहायता कम परिचालन भएको हो।

आ.व. २०७४/७५ मा नेपाल सरकारको तिर्न बाँकी बाह्य ऋण रू. ४५४.६ अर्ब र आन्तरिक ऋण रू. ३८८.३ अर्ब गरी कुल तिर्न बाँकी ऋण रू. ८४२.९ अर्ब पुगेको छ। आ.व. २०७४/७५ सम्ममा तिर्न बाँकी कुल ऋण कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा २८ प्रतिशत पुगेको छ। विनियोजित रकम खर्च हुन नसक्नु र विशेषतः वैदेशिक ऋणबाट सञ्चालित आयोजनाहरूको वित्तीय प्रगति न्यून रहेका कारण योजनाले अपेक्षा गरे बमोजिम वैदेशिक ऋण परिचालन हुन नसकेको हो।

## मूल्य स्थिति

मुद्रास्फीति दर ७.५ प्रतिशतमा सीमित राख्ने लक्ष्य रहेकोमा समीक्षा अवधिमा औसत ४.३ प्रतिशत रहेको छ। खाद्य र गैह्रखाद्य वस्तु तथा सेवाको मूल्यको वार्षिक वृद्धिदर क्रमशः २.३ र ५.९ प्रतिशत रहेको थियो। आधार वर्षमा मुद्रास्फीति उच्च रहेको कारण आधार मूल्यको प्रभाव, आपूर्ति व्यवस्थापनमा आएको सुधार एवम् भारत

लगायत विश्वव्यापी रूपमै भएको न्यून मूल्यवृद्धिको प्रभावका कारण समीक्षा अवधिमा उपभोक्ता मुद्रास्फीति लक्ष्यभन्दा उल्लेख्य कम रहेको छ ।

## वित्तीय क्षेत्र

यस अवधिमा उत्पादनशील क्षेत्रतर्फको कर्जाको वार्षिक वृद्धिदर २० प्रतिशत रहने लक्ष्य लिएकोमा निजी क्षेत्रतर्फको कर्जाको वृद्धिदर वार्षिक १९.३ प्रतिशतले विस्तार भई उत्पादनशील क्षेत्रतर्फको कर्जा १७ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । पुनर्निर्माण लगायत निजी क्षेत्रको गतिविधिमा आएको विस्तारका कारण निजी क्षेत्रतर्फको कर्जाको वृद्धि भएको छ । वाणिज्य बैंकको शाखा सङ्ख्या ३,०२३ विकास बैंकको ९३९, वित्त कम्पनीको १८६ र लघुवित्त संस्थाहरूको २,४४९ गरी कुल शाखा सङ्ख्या ६,६५१ पुगेको छ । बैंक तथा वित्तीय संस्थाको प्रति शाखाले औसतमा करिब ४,३७५ जनसङ्ख्यालाई सेवा दिनुपर्ने देखिन्छ । संघीय व्यवस्था अन्तर्गत गठित ७५३ स्थानीय तहहरूमध्ये आ.व. २०७४/७५ मा ५५६ स्थानीय तहमा वाणिज्य बैंकहरूको शाखा पुगेको छ ।

## पुँजी बजार

आ.व. २०७४/७५ मा धितोपत्र बजार मार्फत् कुल पुँजी परिचालन रू. १३५ अर्ब र बजार पुँजीकरण रू. १,४३५ अर्ब पुगेको छ । सूचीकृत कम्पनीको संख्या १९६ पुगेको र नेप्से परिसूचक आ.व. २०७२/७३ को असार मसान्तमा १,७१८ बिन्दु रहेकोमा २०७४/७५ को असार मसान्तमा १,२१२ कायम भएको छ । हकप्रद शेयरको निष्काशनका कारण पुँजीकरणमा भएको वृद्धि, बोनस शेयरको वितरण, वाणिज्य बैंकहरूको व्याजदरमा वृद्धि जस्ता कारणहरूले नेप्से परिसूचक घट्न गएको छ ।

## वैदेशिक व्यापार

यस योजनाले निर्यात प्रवर्द्धन, आयात व्यवस्थापन, पर्यटन प्रवर्द्धन र ऊर्जा विकास मार्फत व्यापार घाटा कम गर्ने उद्देश्य लिए पनि उक्त घाटा समीक्षा अवधिमा निरन्तर बढेको छ । आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा आयात क्रमशः २८.० र २५.५ प्रतिशतले बढेको छ भने सो अवधिमा निर्यात क्रमशः ४.२ र ११.१ प्रतिशतले मात्र बढ्न सक्यो । फलस्वरूप, व्यापार घाटामा उल्लेख्य वृद्धि भई आ.व. २०७४/७५ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ३८.६ प्रतिशत पुगेको छ । उच्च व्यापार घाटासँगै आयात धान्न सक्ने विदेशी विनिमय सञ्चिति क्रमशः घट्दै गएको छ । आ.व. २०७२/७३ मा करिब १४ महिनाको वस्तु तथा सेवाको आयात धान्न सक्ने विदेशी विनिमय सञ्चिति रहेकोमा आ.व. २०७३/७४ मा ११ महिना र आ.व. २०७४/७५ मा ९ महिनाका लागि सञ्चिति पर्याप्तता रहेको छ । निर्यातयोग्य वस्तुहरूको उत्पादन नबढ्नु, उत्पादित वस्तुको गुणस्तर र प्रतिस्पर्धी क्षमता कम हुनु र पेट्रोलियम पदार्थ तथा यातायातका सामानहरूको बढ्दो आयातका कारण निर्यात-आयात अनुपात बढ्न गएको छ ।

## सहकारी

आ.व. २०७४/७५ मा सहकारी संस्थाको सङ्ख्या ३४,५१२ र शेयर पुँजी रू. ७३ अर्ब रहेको छ । सहकारी संस्थाले गर्ने कुल बचत र ऋणमा उल्लेख्य प्रगति भएको छ । आ.व. २०७४/७५ मा सहकारी सङ्घ संस्थाको कुल बचत रू. ३०२ अर्ब र ऋण लगानी रू. २७३ अर्ब रहेको छ । रोजगारी सिर्जना, महिला सहभागिता, महिलाद्वारा

सञ्चालन गरिएको सहकारी संस्था, सहकारी साना तथा मझौला उद्योग सञ्चालन, सहकारी खेती योजना जस्ता लक्ष्यहरूमा भने उल्लेख्य प्रगति रूपमा हुन सकेन ।

### १.३.२ विषय क्षेत्र

#### अ. आर्थिक क्षेत्र

##### कृषि, खाद्य सुरक्षा र सिँचाइ

आ.व. २०७३/७४, आ.व. २०७४/७५ र आ.व. २०७५/७६ मा कृषि क्षेत्रको लक्षित वृद्धि दर क्रमशः ४.५, ४.७ र ४.९ प्रतिशत रहेकोमा उपलब्धितर्फ क्रमशः ५.२, २.८ र ५.० प्रतिशत भएको अनुमान छ । आ.व. २०७३/७४ मा प्रमुख खाद्यान्न बाली धान, गहुँ र मकैको उत्पादन वृद्धि भएकोले सो लक्ष्य हासिल हुन सकेको हो । समयमै मनसुनको सुरुआत हुनु, कृषि व्यावसायीकरण बढ्दै जानु, रासायनिक मलको उपलब्धता बढ्नु, सिँचाइ सुविधाको विस्तार हुँदै जानु आदि जस्ता कारणले यी खाद्यान्न बालीहरूको उत्पादन बढेको हो । आ.व. २०७४/७५ मा खडेरी, पहिरो र बाढी जस्ता प्राकृतिक प्रकोपले खाद्यान्न बालीको क्षेत्रफलमा हास आएकाले उत्पादन अपेक्षित रूपमा बढ्न सकेको छैन । तरकारीको उत्पादनमा मुलुक आत्मनिर्भर हुँदै गएको छ भने फलफूलको उत्पादनमा अपेक्षित वृद्धि हासिल गर्न सकिएको छैन ।

आ.व. २०७३/७४ मा २० लाख ३१ हजार मेट्रिक टन र आ.व. २०७४/७५ मा २२ लाख ९६ हजार मेट्रिक टन दुध उत्पादन गर्ने लक्ष्य रहेकोमा क्रमशः १९ लाख ११ हजार (९४ प्रतिशत) र १९ लाख ९१ हजार (८७ प्रतिशत) मेट्रिक टन उत्पादन भएको छ । त्यसै गरी मासु उत्पादनको लक्ष्य क्रमशः ३ लाख ४४ हजार मेट्रिक टन र ३ लाख ७९ हजार मेट्रिक टन रहेकोमा ३ लाख ३२ हजार मेट्रिक टन (९६ प्रतिशत) र ३ लाख ४७ हजार मेट्रिक टन (९१ प्रतिशत) उत्पादन भएको छ । अण्डा उत्पादनको लक्ष्य क्रमशः १३५ करोड र १४५ करोड गोटा रहेकोमा १३५ करोड (१०० प्रतिशत) र १४७ करोड (१०१ प्रतिशत) गोटा उत्पादन भएको छ । मुलुक अण्डामा आत्मनिर्भर भएको छ भने दुध र मासुमा आत्मनिर्भरता उन्मुख हुँदै गएको छ । पशुपालनप्रति कृषकहरूको बढ्दो आकर्षण र सरकारी नीति अनुकूल रहनु यसका मुख्य कारण रहेका छन् ।

आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष खाद्यान्न उपलब्धता क्रमशः ३८ के.जी. र ३ के.जी.ले वृद्धि भई क्रमशः ३४० र ३४३ के.जी. रहेको छ । कृषि उत्पादनमा वृद्धि र दुर्गम जिल्लामा दुवानी सेवा सहज भई खाद्यान्न भण्डारमा सुधार भएकोले लक्ष्य प्राप्ति भएको थियो ।

आ.व. २०७३/७४ मा लक्ष्यको ८५ प्रतिशत र आ.व. २०७४/७५ मा लक्ष्यको ७९ प्रतिशत भूमिमा मात्र सिँचाई सुविधा पुऱ्याउन सकियो । अपेक्षित प्रगति हुन नसक्नुका मुख्य कारणहरूमा भौगोलिक विकटता, जमिनको असहज अवस्थिति, जल स्थानान्तरण तथा जलाशययुक्त बहुउद्देशीय आयोजनाको अपेक्षाकृत रूपमा अघि बढ्न नसक्नु र वर्षेनी प्राकृतिक प्रकोपबाट सिँचाइ पूर्वाधारमा भएको क्षति रहेका छन् ।

करिब ३७ हजार कमैया परिवार मध्ये पुनर्स्थापना गर्न बाँकी रहेका करिब १० हजार ५ सय परिवारमध्ये जम्मा ४४० परिवारको पुनर्स्थापना भएको छ। त्यसैगरी, मुक्त हलियाहरूलाई जग्गा खरिद, घर निर्माण र मर्मत अनुदान वितरण गर्ने कार्यमा समेत लक्ष्य अनुरूपको प्रगति हुन सकेको छैन।

## वन व्यवस्थापन

आ.व. २०७४/७५ मा कुल भूभागको ४४.७४ प्रतिशत वन क्षेत्र रहेको छ। यस मध्ये सघन वनले ओगटेको क्षेत्र ४०.३६ प्रतिशत कायम नै छ भने संरक्षित वनले ओगटेको क्षेत्र केही बढेको छ। यस अवधिमा ४५ वटा वन पैदावारमा आधारित उद्योग स्थापना भएर सञ्चालनमा आएका छन्। वनमा आधारित उद्यम विकास तथा काठ र दाउराको उत्पादनमा पनि उल्लेख्य वृद्धि भएकोले राजस्व सङ्कलनमा थप सहयोग पुगेको छ।

## उद्योग

आ.व. २०७५/७६ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उत्पादनमूलक उद्योगको योगदान ५.६ प्रतिशत पुगेको छ। उद्योगको सङ्ख्या र औद्योगिक लगानी उल्लेखनीय रूपमा वृद्धि भएको छ। हालका वर्षमा विद्युत आपूर्तिमा वृद्धि तथा लगानीकर्ताको विश्वास बढेकोले लगानीमा वृद्धि भएको हो।

## आपूर्ति

औसत १६.८ हजार मेट्रिक टन खाद्यान्न ढुवानी गर्ने लक्ष्य रहेकोमा १८.४ हजार मेट्रिक टन (१०९ प्रतिशत) ढुवानी भएको छ। नुन ढुवानीको औसत लक्ष्य करिब ९४ हजार क्विन्टल रहेकोमा ८४ हजार क्विन्टल (८९ प्रतिशत) नुन ढुवानी हुन सकेको छ। राष्ट्रिय खाद्य सुरक्षा भण्डारमा यी दुई वर्षमा २५ हजार मेट्रिक टन भण्डारण गर्ने औसत लक्ष्य रहेकोमा १५ हजार मेट्रिक टन (६० प्रतिशत) भण्डारण क्षमता पुगेको छ।

## पर्यटन

आधार वर्ष २०७२/७३ मा ७ लाख १ हजार पर्यटक आगमन भएकोमा सो संख्या ३४ प्रतिशतले वृद्धि भई आ.व. २०७४/७५ मा ९ लाख ४० हजार पुगेको छ। यसमा राजनीतिक स्थिरता, भूकम्पबाट भत्किएका पर्यटकीय संरचनाहरूको पुनर्निर्माण तथा जीर्णोद्धार, थप अन्तर्राष्ट्रिय हवाई सेवाको विस्तार, बाह्रै महिना र रात्रि सेवा सञ्चालन गर्न मिल्ने विमानस्थलको सङ्ख्यामा वृद्धि आदिको प्रमुख भूमिका रहेको छ।

## आ. सामाजिक क्षेत्र

### शिक्षा

विद्यालय तहमा खुद भर्ना, टिकाउ, विद्यालय छाड्ने र लैङ्गिक समता दरको प्रगति लक्ष्य अनुरूप भएको छ। आ.व. २०७३/७४ र आ.व. २०७४/७५ मा प्राथमिक तहको (कक्षा १ देखि ५) खुद भर्ना दर क्रमशः ९६.९ प्रतिशत र ९७.२ प्रतिशत पुगेको छ भने आधारभूत तहमा (कक्षा १ देखि ८) सो दर क्रमशः ९१ प्रतिशत र ९२.३ प्रतिशत पुगेको छ। माध्यमिक तहमा (कक्षा ९ देखि १२) सो दर क्रमशः ३८.९ प्रतिशत र ४३.९ प्रतिशत पुगेको छ। विशेष गरी

विपन्न वर्गलाई लक्षित गरी सञ्चालित कार्यक्रमहरू जस्तै: छात्रवृत्ति, दिवा खाजा, निःशुल्क शिक्षा, प्रविधि, शिक्षा पूर्वाधार आदिको विस्तार र विकासले गर्दा यो सम्भव भएको हो ।

## स्वास्थ्य

नवजात शिशु, मातृ र बाल मृत्युदर घटाउने लक्ष्यहरूको प्रगति मिश्रित रहेको छ । नवजात शिशु मृत्यु दर (प्रतिहजार जीवित जन्म) को लक्ष्य २२ रहेकोमा सोही अनुरूप उपलब्धि हासिल गर्न सकिएको छ । ५ वर्षभन्दा मुनिको बाल मृत्यु दर आ.व. २०७४/७५ मा ३४ (प्रतिहजार जीवित जन्ममा) ल्याउने लक्ष्य रहेकोमा यस अवधिमा ३९ मा झार्न सकिएको छ । यसैगरी मातृ मृत्युदरको लक्ष्य १४८ (प्रतिलाख जीवित जन्ममा) रहेकोमा वास्तविक उपलब्धि २३९ रह्यो ।

## खानेपानी

आधारभूत खानेपानी तथा सरसफाइको सुविधा सबैलाई उपलब्ध गराउने तर्फको प्रगति उत्साहप्रद रहेको छ । योजना अवधिमा औसत ९० प्रतिशत जनसंख्यालाई आधारभूत खानेपानीको सुविधा पुऱ्याउने लक्ष्य रहेकोमा ८८ प्रतिशत जनसंख्यालाई सो सुविधा पुगेको छ ।

## युवा

युवा जनशक्तिको समुचित परिचालन गरी देशको सर्वाङ्गीण विकास गर्ने लक्ष्य हासिल गर्ने दिशातर्फको प्रगति सन्तोषजनक छ । राष्ट्रिय युवा परिषद् मार्फत १,५०० युवालाई सीप तथा नेतृत्व विकास तालिम दिने लक्ष्य रहेकोमा क्रमशः १,५६० युवाले सो तालिम प्राप्त गरेका छन् । ग्रामीण भेगका युवालाई उद्यमशील बनाउने रणनीति अनुरूप आ.व. २०७३/७४ देखि ग्रामीण युवा उद्यम समूह गठन गर्ने प्रक्रिया सुरु गरिएको छ । यस अवधिमा ३९४ वटा युवा उद्यम समूहहरू गठन भएका छन् ।

## खेलकूद

समीक्षा अवधिमा खेल पूर्वाधारतर्फ ११ वटा क्रिकेट मैदानहरू निर्माण भएका छन् । २८ वटा कर्भड हल निर्माण गर्ने लक्ष्य रहेकोमा ३२ वटा हलहरू निर्माणाधीन रहेका छन् । हरेक निर्वाचन क्षेत्रमा कम्तीमा एउटा खेल मैदान निर्माण गर्ने लक्ष्य रहेकोमा हाल २४० खेल मैदानहरू निर्माणाधीन अवस्थामा छन् । उत्कृष्ट खेलाडीहरूलाई राष्ट्रिय टिममा सहभागी गराई राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको प्रशिक्षणमा सहभागी गराउने तर्फको प्रगति सन्तोषजनक रहेको छ । प्रत्येक वर्ष १५ हजार खेलाडीहरूलाई प्रशिक्षण प्रदान गरिएको छ ।

## इ. पूर्वाधार क्षेत्र

### विद्युत तथा ऊर्जा

विद्युत उत्पादन क्षमता विस्तारमा लक्ष्यभन्दा न्यून उपलब्धि भएको छ भने प्रसारण लाइन विस्तार, चुहावट नियन्त्रण र विद्युत पहुँचमा लक्ष्यभन्दा बढी उपलब्धि भएको छ । आ.व. २०७४/७५ मा ३३९ मेगावाट विद्युत उत्पादन

थप भई १,०२० मेगावाट पुगेको छ । विद्युत प्रसारण लाइन तथा व्यवस्थापन र चुहावट नियन्त्रणमा भएको सुधारको फलस्वरूप आ.व. २०७२/७३ मा २६ प्रतिशत रहेको चुहावट आ.व. २०७४/७५ मा २०.५ प्रतिशतमा झरेको छ । साथै, राष्ट्रिय प्रसारण लाइनमा पहुँच पुगेको जनसंख्या ७० प्रतिशत र प्रतिव्यक्ति विद्युत खपत करिब २०० किलोवाट घण्टा पुगेको छ । भूकम्पपछिको पुनर्निर्माणमा ढिलाई, ठेकेदारसँगको असामन्जस्यता र विवाद, परियोजनाको लागि आवश्यक जग्गा प्राप्ति तथा क्षतिपूर्तिको समस्या, रुख कटानको स्वीकृति समयमा प्राप्त नहुनु, समयभित्रै अख्तियारी नपुग्ने, छिटो छिटो कर्मचारी स्थानान्तरण हुने जस्ता समस्याले विद्युत उत्पादन क्षमतामा लक्ष्यभन्दा न्यून उपलब्धि भएको छ ।

## सडक

यस अवधिमा रणनीतिक तथा अन्य सडक निर्माण, स्तरोन्नति, पुनर्निर्माण र सुदृढीकरण, आवधिक तथा नियमित मर्मत-सम्भार र पुल निर्माणमा उल्लेख्य उपलब्धि हासिल भएको छ । समीक्षा अवधिमा करिब १,४०० कि.मि. सडक निर्माण भएको छ । भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त सडक संरचनाको पुनर्निर्माण, आधारभूत सडक सञ्जाल विस्तार, प्रमुख राजमार्गहरूको विकास, उत्तर-दक्षिण जोड्ने प्रमुख व्यापारिक एवम् महत्वपूर्ण सडकहरूको विकास, द्विदेशीय व्यापारिक नाका जोड्ने प्रमुख सडकहरूको विकास, काठमाडौँ उपत्यका पहुँचमार्ग तथा उपत्यका सडक सुदृढीकरण, सुरुङमार्ग निर्माण जस्ता मुख्य कार्यक्रमहरूको उपलब्धि अपेक्षा अनुरूप हुन सकेको छैन ।

## रेलमार्ग

समीक्षा अवधिमा रेल मार्गको स्तरोन्नति गर्ने लक्ष्य बाहेक अन्य कार्य अपेक्षित रूपमा हुन सकेनन् । समीक्षा अवधिमा २५ कि.मि. टूयाक खोलिएको र मेची-महाकाली विद्युतीय रेलमार्गको ६४१ कि.मि. को लागि डी.पी.आर. तयार भएको छ । पर्याप्त अनुभव र प्राविधिक तथा वित्तीय स्रोतको कमी, रेल्वे विकासको लागि नीतिगत र कानुनी अस्पष्टता तथा प्रभावकारी समन्वय नहुँदा लक्ष्य अनुरूप प्रगति हुन सकेको छैन ।

## सूचना तथा सञ्चार

समीक्षा अवधिमा सूचना तथा सञ्चार क्षेत्रका टेलिफोन, मोबाइल, इन्टरनेट, रेडियो तथा टेलिभिजनमा पहुँच जस्ता मुख्य सूचकहरूमा लक्ष्यभन्दा बढी उपलब्धि प्राप्त भएको छ । आ.व. २०७४/७५ मा जनसंख्या र वितरित टेलिफोन लाइनको अनुपात (प्रतिसय व्यक्तिमा) १३३ पुगेको छ । सोही अवधिमा मोबाइल टेलिफोन ग्राहकको संख्या लक्ष्यभन्दा २५ प्रतिशतले वृद्धि भई ३ करोड ८० लाख र इन्टरनेट ग्राहक संख्या १ करोड ४७ लाख पुगेको छ । देशको ९० प्रतिशत भूभागमा मोबाइल सेवाको पहुँच पुगेको छ । नेपाल टेलिभिजन तथा रेडियो नेपालको राष्ट्रिय प्रसारण क्रमशः ७२ प्रतिशत र ८७ प्रतिशत जनसंख्यामा पुगेको छ । सबै नगरपालिका, गाउँपालिका, वडा कार्यालय, शैक्षिक संस्था, स्वास्थ्य संस्था आदिमा ब्रोडब्याण्ड इन्टरनेट सेवा उपलब्ध गराउने कार्य अगाडि बढाइएको छ ।

## आवास र शहरी विकास

समीक्षा अवधिमा १३ हजार आवास एकाई र ६० वटा सरकारी भवन निर्माण निर्माण गर्ने लक्ष्य रहेकोमा ९ हजार ८ आवास एकाई र १८ वटा सरकारी भवन निर्माण भएका छन्। पूर्वाधार सहितको ७ वटा नमुना बस्ती निर्माण सम्पन्न गर्ने लक्ष्य लिएकोमा ३१ वटा एकीकृत बस्ती निर्माणको क्रममा रहेका छन्। यस योजनाले जनता आवास, सरकारी भवन निर्माण, एकीकृत सरकारी भवन निर्माण, एक-शहर एक पहिचान, स्मार्ट सिटीको विकास, खाद्य हरियाली शहर, कोरिडोर सिटी, स्मार्ट भिलेज जस्ता कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने लक्ष्य रहेतापनि अपेक्षित उपलब्धि हासिल हुन सकेन।

## विज्ञान तथा प्रविधि

आ.व. २०७३/७४ मा १० वटा अध्ययन केन्द्रको स्थापना गरी आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा त्यस क्षेत्रमा क्रमशः ३ हजार र ४ हजार थप रोजगारी सिर्जना भएको छ। आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा क्रमशः ५० र ८० वटा अध्ययन अनुसन्धानलाई उपयोगमा ल्याइएको छ। वैज्ञानिक विद्यार्थी उत्पादन गरी युवा पलायन रोक्न विद्यालयको क्षमता र कार्यसम्पादनको आधारमा विद्यालय शिक्षादेखि नै विज्ञान शिक्षामा विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गर्न आवश्यक छ।

## पुनर्निर्माण

भूकम्प पछिको पुनर्निर्माण गर्नुपर्ने सरकारी भवन, विद्यालय भवन र स्वास्थ्य संस्थाको भवनमध्ये आधाभन्दा बढी निर्माण सम्पन्न भएका र बाँकी भवन निर्माणाधीन छन्। पुरातात्विक सम्पदा र सुरक्षा निकायको भवन निर्माणमा भने न्यून मात्र प्रगति भएको छ। निजी आवास निर्माणतर्फ करिब ९० प्रतिशतले घर निर्माणको लागि अनुदान सम्झौता गरिसकेका छन्। राष्ट्रिय पुनर्निर्माण प्राधिकरणको नेतृत्व बारम्बार परिवर्तन, पुनर्निर्माणमा पर्याप्त अनुभवको अभाव, झन्झटिलो सार्वजनिक सेवा प्रवाह जस्ता कारणले पुनर्निर्माणको गति ढिला भएको हो।

## १.३.३ अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र

### लैङ्गिक समानता र समावेशीकरण

राज्यद्वारा लैङ्गिक हिंसालाई समानता र सशक्तीकरणका बाधकको रूपमा स्वीकार गरी त्यसको निराकरणको लागि विभिन्न नीति, योजना तथा कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको छ। महिला तथा बालिका उपर हुने हिंसा निवारणको लागि यौनजन्य दुर्व्यवहार आचारसंहिता २०७४ लागू भएको छ। राष्ट्रिय बजेटमा महिलालाई प्रत्यक्ष रूपमा फाइदा पुग्ने लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट विनियोजनको अनुपात आ.व. २०७४/७५ र २०७५/७६ क्रमशः ३७.४ र ३८.६ प्रतिशत पुगेको छ। महिला, बालबालिका, अपाङ्गता भएका व्यक्ति तथा ज्येष्ठ नागरिकको सुरक्षा र कल्याण सम्बन्धी विषयहरूलाई व्यवस्थित रूपमा सम्बोधन गर्नु आवश्यक छ।

## श्रम र रोजगारी

पन्ध्र वर्ष वा सोभन्दा माथिल्लो उमेरका कुल जनसंख्याको श्रमशक्ति सहभागिता दर ३८.५ प्रतिशत पुगेको छ। योजना अवधिमा सञ्चालन भएको नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण, २०१७ अनुसार समग्र बेरोजगारी दर ११.४ प्रतिशत तथा पुरुष र महिलाको बेरोजगारी दर क्रमशः १०.३ र १३.१ प्रतिशत रहेको छ। आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा मात्र क्रमशः ३ लाख ५४ हजार र ३ लाख २४ हजार युवा वैदेशिक रोजगारीमा गएका छन्। देशमा करिब ५६ प्रतिशत घर परिवारमा विप्रेषण आय प्राप्त भएको छ। विप्रेषण आय आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा क्रमशः रू. ९५.५ र रू. ७५.६ अर्ब रहेको छ। देशभित्रै रोजगारी सिर्जनाको लागि एकीकृत व्यावहारिक दृष्टिकोण तयार गरी प्रतिस्पर्धी वस्तु तथा सेवाको पहिचान, उत्पादन तथा प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक छ।

## सामाजिक सुरक्षा

कोषमा आ.व. २०७४/७५ मा थप रू. १६ करोड जम्मा गर्ने लक्ष्य रहेकोमा करिब रू. १८ करोड जम्मा भएको छ। सामाजिक सुरक्षा कोषमा जम्मा भएको रकम उल्लेखनीय रूपमा बढेको भए तापनि सहभागीको संख्या भने बढाउन सकिएको छैन। यस कोषमा सहभागी हुनेको संख्या आ.व. २०७२/७३ को ७ लाखमा १३ हजार थप भएको छ। त्यस्तै, यसका मुख्य कारणहरूमध्ये असङ्गठित तथा अनौपचारिक क्षेत्रमा कार्यरत कर्मचारी तथा श्रमिकहरूलाई सामाजिक सुरक्षाको दायरामा ल्याउन नसक्नु हो।

## विपद् व्यवस्थापन

भूकम्प प्रभावित ३१ वटा जिल्लाबाट तथ्याङ्क सङ्कलन तथा अद्यावधिक गरी भूकम्पबाट भएका संरचनागत क्षतिको विवरण तयार भएको छ। राष्ट्रिय पुनर्निर्माण प्राधिकरणले आ.व. २०७४/७५ मा करिब ४०,१७५ व्यक्तिलाई डकमी तालिम प्रदान गरेको छ। विपद् व्यवस्थापनका सबै क्रियाकलापको समन्वयात्मक र प्रभावकारी व्यवस्थापन गरी प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक विपद्बाट सर्वसाधारणको जीउधन र सार्वजनिक, निजी तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति, प्राकृतिक एवम् सांस्कृतिक सम्पदा र भौतिक संरचनाको संरक्षण कार्य एकीकृत रूपमा अगाडि बढाउन विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन ऐन, २०७४ र Post Disaster Recovery Framework (PDRF) तयार भएका छन्।

## स्थानीय विकास

स्थानीय तहको निर्वाचन सम्पन्न भई जनप्रतिनिधिबाट सेवा सञ्चालन भएको छ। कार्य प्रणालीलाई सहज बनाउन तथा प्रभावकारिता ल्याउन निर्देशिका, कार्यपद्धति तयार भई स्थानीय तहले जनतालाई सेवा पुऱ्याउन थालेका छन्। परिणामस्वरूप स्थानीय तहहरूमा वित्तीय सुशासन कायम हुने क्रममा रहेको छ। आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा स्थानीय तहको आन्तरिक आयमा क्रमशः ८.९ र ५.८ प्रतिशत वृद्धि भई आ.व. २०७४/७५ मा रू. १७ अर्ब ५ करोड संकलन भएको छ। संगठनात्मक संरचना तयारी, जनशक्ति छनोट तथा व्यवस्थापन, पर्याप्त स्रोतहरू हस्तान्तरण लगायतका स्थानीय तहको क्रियाकलापहरूको प्रभावकारिताको लागि नियमित अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा नियमनको संयन्त्र तय गरी कार्यान्वयन गर्नु आवश्यक रहेको छ।

## सुशासन

यस योजनाले सम्पूर्ण सार्वजनिक प्रशासनलाई जनताप्रति उत्तरदायी र सेवामूलक तथा विकासमैत्री बनाउने लक्ष्य राखी प्रशासनलाई स्वच्छ, परिणाममुखी, जवाफदेही र पारदर्शी बनाई सार्वजनिक सेवा प्रवाह र विकास प्रक्रियालाई प्रभावकारी बनाउने उद्देश्य राखेको थियो। न्याय व्यवस्थापनमा समग्र सुधारको लागि न्यायपालिकाले देवानी तथा फौजदारी संहिताहरूको तर्जुमा गरी अनुमोदन गरिसकेको अवस्था छ। न्यायपालिकाको कार्यबोझको आधारमा जनशक्ति व्यवस्थापन र क्षमता विकास सम्बन्धी कार्य थालनी गरिएको छ। सूचक सहित कार्य सम्पादन सम्झौता सम्बन्धी कानून तर्जुमा, निजामती कर्मचारी ट्रेड युनियनको आचारसंहिता तर्जुमा, विभिन्न केन्द्रीय तथा जिल्ला स्थित सार्वजनिक सेवा प्रवाह गर्ने कार्यालयहरूको व्यवस्थापन परीक्षण अपेक्षित रूपमा हुन सकेको छैन। न्याय क्षेत्रमा पूर्ण रूपले सूचना प्रविधिको प्रयोग गर्नु र न्याय सम्पादनलाई व्यवस्थित गर्नु अझै चुनौतीपूर्ण रहेको छ।

## शान्ति तथा सुरक्षा

राष्ट्रिय सुरक्षा नीति, २०७३ को अनुमोदन भई कार्यान्वयनमा आएको छ। आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा नेपालका विभिन्न शहरमा क्रमशः ७०४ र ७०१ वटा सीसीटीभी क्यामेरा मार्फत शहरी यातायात व्यवस्था तथा आपराधिक घटनाहरूको अनुगमन कार्यको थालनी गरिएको छ। १५ जिल्लामा राष्ट्रिय परिचयपत्र वितरण गर्ने लक्ष्य रहेकोमा परीक्षणको रूपमा पाँचथर जिल्लामा वितरण सुरुआत भएको छ।

## वित्त सुशासन

समीक्षा अवधिमा बजेट तथा खर्च नियन्त्रण प्रणाली, नेपाल सार्वजनिक क्षेत्र लेखामान, सार्वजनिक खरिद कानून, एकल कोष प्रणाली, राजस्व व्यवस्थापन, एकीकृत राजस्व प्रणाली लगायतका सुधार कार्यक्रमहरू लागू भएका छन्। फलस्वरूप, आ.व. २०७३/७४ सम्मको बाँकी बेरुजु रू. २ खर्ब २२ अर्ब ५३ करोड रहेकोमा रू. ५२ अर्ब ९१ करोड फल्र्योर्ट भई रू. १ खर्ब ६९ अर्ब ६२ करोड बाँकी रहेको थियो। आ.व. २०७४/७५ को बेरुजु रू. १ खर्ब २० अर्ब ९१ करोड थप भई रू. २ खर्ब ९० अर्ब ५३ करोड बाँकी रहेको छ। २०७४ आषाढ मसान्तमा कायम ७४४ स्थानीय तहमध्ये ७३८ को रू. १ खर्ब ८० अर्ब ३१ करोडको लेखापरीक्षण सम्पन्न भएकोमा रू. १४ अर्ब २५ करोड (औसतमा ७.९० प्रतिशत) बेरुजु देखिएको छ। संघीय सरकार र स्थानीय तहबीचको वित्तीय सम्बन्धको अन्याय कम गर्न कोषको एकल खाता र वित्तीय व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको प्रविधिलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ।

आयोजना व्यवस्थापनमा सुधार गरी विकास निर्माणको सुरु र समाप्ति एवम् लागतमा निश्चितता ल्याउने, शासकीय संरचनाहरू नयाँ भएकाले असल समन्वय स्थापित गर्ने, वित्तीय साधन र स्रोतको दायरा फराकिलो बनाउने कार्य गर्न सकिएको छैन, आर्थिक सुधारले फड्को मार्न सकेको छैन, आर्थिक अनुशासन, योजना र बजेट कार्यान्वयन प्रणाली कमजोर रहेका छन्।

विगतका योजनाको कार्यान्वयनको सिकाइबाट आयोजना व्यवस्थापनमा सुधार गर्न साधन र स्रोतको प्रतिफलका आधारमा कार्यक्रम तथा आयोजनाको प्राथमिकीकरण गर्ने प्रणालीको विकास गर्नुपर्ने हुन्छ। स्रोत र साधनको उपलब्धताको आधारमा प्राथमिकीकरण गरी संविधानको क्रमशः कार्यान्वयन गर्ने, विकास र आर्थिक समृद्धिमा केन्द्रित रही पूर्वाधार निर्माण, शासकीय सुधार, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयन, समावेशीकरण र पिछडिएका क्षेत्र तथा समुदायको विकास, प्रादेशिक सन्तुलन, स्वावलम्बन र स्वआधार निर्माण, तीव्र आर्थिक वृद्धि र समन्यायिक वितरण, अनुसन्धान र विकास, शहरी विकास, विज्ञान तथा सूचना प्रविधि र मानव संसाधन विकास, उत्पादकत्व वृद्धि तथा कृषि, ऊर्जा, खनिज र पर्यटनको विकासमा जोड दिनुपर्नेछ।

### १.४ दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन समीक्षा

संयुक्त राष्ट्रसंघको महासभाले सन् २०१६ देखि २०३० सम्म विश्वको रूपान्तरण र विकासका हरेक आयाममा कसैलाई पनि पछाडि नछोड्ने प्रतिबद्धताका साथ सन् २०१५ को सेप्टेम्बरमा दिगो विकास लक्ष्यहरू घोषणा गरेको थियो। उक्त घोषणा बमोजिम दिगो विकासका १७ वटा लक्ष्य, १६९ वटा परिमाणात्मक लक्ष्य र २३२ वटा विश्वव्यापी सूचक निर्धारण गरिएका छन्। दिगो विकास लक्ष्यमा विश्वका सबै राष्ट्रमा सहभागितामूलक, अधिकारमुखी र समतामूलक विकास गरी गरिबीको र भोकमरीको अन्त्य गर्ने, सबैलाई स्वास्थ्य र शिक्षा पुऱ्याउने जस्ता विषय समेटिएका छन्। यसैगरी, लैंगिक समानता, सबैका लागि स्वच्छ पानी, सबैमा ऊर्जाको पहुँच, रोजगारीको प्रवर्द्धन, आर्थिक वृद्धि, उद्योग, पूर्वाधार विकास र दिगो शहरीकरण जस्ता विषयलाई समेत समेटिएका छन्। यसरी दिगो विकास लक्ष्यमा सामाजिक, आर्थिक र पर्यावरणीय आयाम गरी मुख्यतः ३ आयाम समावेश गरिएको छ।

नेपालले दिगो विकास लक्ष्यलाई मुलुकको आर्थिक, सामाजिक र पर्यावरणीय परिवेश अनुसार कार्यान्वयनमा ल्याउँदै चौधौँ योजनादेखि नै दिगो विकासका लक्ष्यलाई आन्तरिकीकरण गर्न सुरु गरेको छ। कार्यक्रम तथा बजेट तर्जुमा गर्दा कार्यक्रम तथा आयोजनालाई दिगो विकास लक्ष्यअनुसार बजेट सांकेतीकरण गर्ने व्यवस्था गरिएको छ। आ.व. २०७४/७५ देखि मध्यमकालीन खर्च संरचनामा समेत दिगो विकासका लक्ष्य हासिल गर्न सहयोग पुऱ्याउने आयोजनालाई उच्च प्राथमिकता प्रदान गर्न तदनुसार सूचक निर्माण गरी आयोजनाको प्राथमिकीकरण गरिएको छ। दिगो विकास लक्ष्यलाई प्रादेशिक तथा स्थानीय तहका योजनामा समावेश गरी लक्ष्य प्राप्त गर्न सहयोग पुग्ने ध्येयले प्रादेशिक तथा स्थानीय योजना तर्जुमा नमुना दिग्दर्शन तयार भएका छन्। यसै अनुरूप दिगो विकास लक्ष्यलाई प्रादेशिक तथा स्थानीय योजना तथा कार्यक्रममा आन्तरिकीकरण गर्ने उद्देश्यले क्षमता विकास सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन भएका छन्।

दिगो विकास लक्ष्य सम्बन्धमा राष्ट्रिय योजना आयोगले विभिन्न रणनीति तथा प्रतिवेदन तयार गरेको छ। वि.सं २०७२ सालमा दिगो विकास लक्ष्यको प्रारम्भिक राष्ट्रिय प्रतिवेदन प्रकाशन गरिएको थियो। उक्त प्रतिवेदनलाई

अध्यावधिक गरी २०७४ सालमा “नेपालमा दिगो विकास लक्ष्यको वर्तमान अवस्था र भावी कार्ययोजना: २०१६-२०३०” प्रकाशनमा ल्याइएको थियो। त्यस्तै, वि. सं. २०७४ सालमा ऐच्छिक राष्ट्रिय समीक्षा प्रतिवेदन तयार गरी संयुक्त राष्ट्रसंघीय उच्चस्तरीय राजनीतिक मञ्चमा प्रस्तुत गरिएको थियो। यी दस्तावेजहरूले दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन सम्बन्धमा नीतिगत मार्गनिर्देशन गर्नुका साथै उक्त लक्ष्यको आन्तरिकीकरण गर्ने कार्यमा सघाउ पुऱ्याएका छन्।

राष्ट्रिय योजना आयोगले तयार गरेको नेपालमा दिगो विकास लक्ष्यको आवश्यकता पहिचान, लागत अनुमान तथा वित्तीय रणनीतिले दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन गर्न नेपाललाई चाहिने वित्तीय स्रोतको आकलन र स्रोतका संभाव्य क्षेत्र पहिचान गरेको छ। यस अनुसार दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन गर्न वार्षिक औसत रू. २० खर्ब २५ अर्ब लाग्ने अनुमान गरिएको छ। उक्त वार्षिक औसत रकममध्ये रू. ११ खर्ब ११ अर्ब सरकारी क्षेत्रबाट, रू. ७ खर्ब ३९ अर्ब निजी क्षेत्रबाट, रू. ८७ अर्ब सहकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रबाट र रू. ८८ अर्ब घर-परिवार क्षेत्रबाट लगानी गर्नुपर्ने अनुमान गरिएको छ। सरकारी र निजी क्षेत्रबाट हुने लगानीमा क्रमशः रू. २ खर्ब ९८ अर्ब र रू. ३ खर्ब ६७ अर्ब गरी वार्षिक औसत रू. ५ खर्ब ८५ अर्ब नपुग हुनेछ। उल्लेखित न्यून वित्तीय स्रोत व्यवस्थापनको लागि आन्तरिक रूपमा प्रगतिशील करको व्यवस्था, करको आधार फराकिलो बनाउने, निजी तथा अन्य क्षेत्रलाई लगानीमा प्रोत्साहन गर्ने, सार्वजनिक निजी साझेदारी व्यवस्थालाई प्रभावकारी बनाउनुका साथै वैदेशिक विकास सहायता र वैदेशिक लगानीको परिचालन गर्नुपर्ने हुन्छ। साथै, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयनका चरणमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट थप स्रोत परिचालनको आधार तयार गरी वित्तीय दायरा बढाउनुपर्ने हुन्छ।

दिगो विकास लक्ष्यको कार्यान्वयनलाई प्रभावकारी र व्यवस्थित बनाउन नीतिगत, कानुनी तथा संस्थागत संरचना तयार गरिएका छन्। विश्वसनीय र सुदृढ तथ्याङ्क प्रणालीको विकास गर्न नयाँ तथ्याङ्क ऐनको मस्यौदा तयार भएको र तथ्याङ्क प्रणाली सम्बन्धी राष्ट्रिय रणनीति तयार भई कार्यान्वयनमा आएको छ। त्यस्तै, राष्ट्रिय तथा प्रादेशिक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन र प्रादेशिक तहका दिगो विकास लक्ष्य सूचकको पहिचान गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ। दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन तथा अनुगमनको लागि सम्माननीय प्रधानमन्त्रीको अध्यक्षतामा उच्चस्तरीय केन्द्रीय निर्देशक समिति, राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्षको संयोजकत्वमा दिगो विकास लक्ष्य कार्यान्वयन तथा समन्वय समिति तथा राष्ट्रिय योजना आयोगका सदस्यको संयोजकत्वमा विषयगत कार्य समिति गठन गरिएका छन्। यी समितिले दिगो विकास लक्ष्यसँग सम्बन्धित योजना, कार्यक्रम, नीति तथा बजेट कार्यान्वयन, अनुगमन र मूल्याङ्कन सम्बन्धमा मार्गनिर्देशन गर्दछन्। दिगो विकास लक्ष्यको कार्यान्वयन र अनुगमन प्रभावकारी बनाउने उद्देश्यले गरिने सहजीकरण र नियमनका लागि आवश्यक ऐन कानूनको निर्माण र सुधार गर्ने विषयमा संसदको भूमिका महत्त्वपूर्ण हुन्छ। यसै प्रयोजनार्थ संसदमा दिगो विकास तथा सुशासन समिति क्रियाशील रहेको छ।

नेपाल सरकारले नीति, कार्यक्रम र आयोजनाको निर्धारित लक्ष्य हासिल गर्न र कार्यान्वयनका क्रममा देखिन सक्ने कमजोरीलाई समयसापेक्ष सुधार गर्न अनुगमन र मूल्याङ्कनको निर्धारित ढाँचा तथा प्रणाली विकास र अवलम्बन गर्दै आएको छ। यी प्रणालीले दिगो विकास लक्ष्य अनुगमन र मूल्याङ्कनको साथै कार्यान्वयनमा आइपर्ने समस्याहरूको समेत समाधान गर्नेछन्। दिगो विकासका लक्ष्य हासिल गर्न सरकारको एकल प्रयासले मात्र सम्भव छैन। तसर्थ, सरकारी, निजी, गैरसरकारी, सामुदायिक लगायत सम्पूर्ण विकास साझेदारबीचमा रणनीतिक साझेदारी हुनु जरुरी छ।

## परिच्छेद – २

# दीर्घकालीन सोच २१००

### २.१ पृष्ठभूमि

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको निर्वाचन सम्पन्न भई मुलुकमा राजनीतिक स्थायित्व प्राप्त भएको छ। राजनीतिक स्थायित्वको जगमा तीव्र आर्थिक विकास र समृद्धिको दूरगामी सोच सहितको राष्ट्रिय लक्ष्यहरू निर्धारण गर्नुपर्नेछ। आय वृद्धि, गुणस्तरीय मानव पुँजी निर्माण र आर्थिक जोखिमको न्यूनीकरण गर्दै वि.सं. २०७९ सम्ममा अति कम विकसित देशबाट विकासशील देशमा स्तरोन्नति गर्ने र वि.सं. २०८७ सम्ममा दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्दै उच्च मध्यम आयस्तर भएको मुलुकमा स्तरोन्नति हुने गरी यस दीर्घकालीन सोच तयार गरिएको छ। सामाजिक न्यायमा आधारित समतामूलक समाज निर्माण गर्नेतर्फ दीर्घकालीन सोच लक्षित रहेको छ। आन्तरिक तथा बाह्य स्रोत-साधन लगायत अर्थतन्त्रका सहयोगी क्षेत्रको परिचालनबाट रूपान्तरणका कार्यक्रममा लगानी केन्द्रित गर्दै दीर्घकालीन सोचले लिएका लक्ष्य, उद्देश्य हासिल गरिनेछ।

### २.२ दीर्घकालीन सोचको आवश्यकता

नेपाली जनताको लामो संघर्ष र बलिदानबाट प्राप्त संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्थाको माध्यमबाट दिगो शान्ति, सुशासन, विकास र समृद्धि हासिल गर्ने गरी नेपालको संविधानले मार्ग प्रशस्त गरेको छ। मुलुकमा राजनीतिक स्थायित्वपछि नागरिकले आफ्नो जीवनस्तर सुधार हुने तथा आधुनिक, सुविधासम्पन्न, सुखी जीवन अनुभूत गर्ने आकांक्षा राखेका छन्। निर्वाचनपश्चात् गठन भएको सरकारले दीर्घकालीन सोच सहितका नीति तथा कार्यक्रम अगाडि सारेको छ। यसमा नेपालको संविधानले निर्दिष्ट गरेको विकासको मार्ग र निर्वाचनका बेला राजनीतिक दलहरूले जनताका बीचमा गरेका प्रतिबद्धताहरू अन्तर्निहित छन्। नागरिकका समृद्धि र समुन्नतिका यी अपेक्षा तथा सरकारका प्रतिबद्धता पूरा गर्न विकासका अल्पकालीन र मध्यमकालीन योजना कार्यान्वयन गर्न नीतिगत मार्गचित्र सहितको दीर्घकालीन सोचको आवश्यकता रहेको छ।

दीर्घकालीन विकास रणनीतिको माध्यमबाट सबै प्रकारका विभेद, बहिष्करण एवम् वञ्चितिकरणका अवशेष र विकासका अवरोधहरू समाप्त गरी समाजवाद उन्मुख समृद्ध अर्थव्यवस्था निर्माण गर्न पनि दीर्घकालीन सोचको आवश्यकता महसुस गरिएको छ। संविधानले अंगीकार गरेका विकास केन्द्रित सोचलाई आवधिक योजनामा समाहित गर्न, संघीय प्रणालीलाई मजबुत बनाउन, सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रलाई विकास प्रयासमा सहभागी बनाउन र समग्र राष्ट्रलाई एकताबद्ध र उत्प्रेरित बनाई अगाडि बढाउन समेत दीर्घकालीन सोच आवश्यक रहेको छ।

पहिलो तीन वर्षभित्र नेपाललाई विकासशील राष्ट्र बनाउने, वि.सं. २०८७ सम्ममा सम्पूर्ण नागरिकलाई निरपेक्ष र बहुआयामिक गरिबीको अवस्थाबाट मुक्त गर्दै दिगो विकासका लक्ष्य हासिल गर्ने तथा मध्यम आयस्तर भएको

मुलुकमा स्तरोन्नति गर्ने र वि.सं. २१०० सम्ममा समुन्नत राष्ट्रको स्तरमा पुऱ्याउन २५ वर्ष अवधिको दीर्घकालीन सोचको निर्माण गर्नु परेको हो ।

### २.३ दीर्घकालीन सोचको मार्गचित्र

अबको विकासको कार्यसूची सुशासन, विकास र समृद्धि रहेको छ । तसर्थ, विकासमा प्रादेशिक सन्तुलन, समावेशिता, प्राकृतिक स्रोत र साधनको संरक्षण, सम्वर्द्धन र उपयोग गर्दै मर्यादित काम र रोजगारी सिर्जना गर्नु पर्नेछ । समाजवाद उन्मुख लोककल्याणकारी राज्य व्यवस्था, उपलब्ध स्रोत र साधनको परिचालनबाट तीव्र आर्थिक वृद्धि गर्दै राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई आत्मनिर्भर बनाई समृद्ध अर्थतन्त्र निर्माण गर्ने मार्गचित्र निर्धारण गरिएको छ । संविधानले शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी, आवास, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा लगायत सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय अधिकारहरूलाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गरेको छ । महिला, दलित लगायतका पछाडि परेका वर्ग तथा समुदायलाई राज्यका संरचनामा सहभागी गराउने समावेशी व्यवस्था, खाद्य अधिकार र खाद्य सम्प्रभुताको व्यवस्था, जनतालाई सम्मानपूर्वक बाँच्न पाउने हक, समानताको हक, स्वच्छ वातावरणको हक, शोषण र विभेदबाट मुक्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, खाद्य, आवास, रोजगारी, सामाजिक न्याय, सामाजिक सुरक्षा जस्ता विषयहरूलाई प्रत्याभूत गर्न समाजवाद उन्मुख आर्थिक व्यवस्थाका आधार निर्माणमा दीर्घकालीन सोच केन्द्रित रहनेछ ।

नेपाल बहुजातीय, बहुभाषिक, बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक विशेषतायुक्त र भौगोलिक विविधता भएको देश हो । यिनै विशेषताहरूलाई ध्यान दिँदै विकासको प्रारूपमा विविधता ल्याउनु आवश्यक छ । ठूला अर्थतन्त्र भएका दुई छिमेकी देशको उच्च आर्थिक वृद्धि र विश्वव्यापीकरणबाट लाभ लिनेगरी हाम्रो अर्थतन्त्रलाई प्रतिस्पर्धात्मक बनाउनु आवश्यक रहेको छ । साथै, उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउने गरी संघीय आर्थिक नीति कार्यान्वयन गर्नुपर्ने र अनौपचारिक अर्थतन्त्रको हिस्सालाई औपचारिकीकरण गर्दै आर्थिक विस्तार गर्नुपर्ने छ ।

विकास सम्बन्धी राज्यका नीतिहरू लोककल्याणकारी राज्यको अवधारणामा आधारित रहनेछन् । सबैलाई समान अवसर, समान अधिकार, उक्तिकै सुरक्षा र उक्तिकै सम्मानको प्रत्याभूति गरिनेछ । लोकतन्त्रको मूल्य र मान्यतामा आधारित समाजवाद उन्मुख अर्थ व्यवस्थाको निर्माणमा सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहनेछ । लगानीको न्यूनता पूरा गर्न निजी क्षेत्र, सार्वजनिक-निजी साझेदारी र सार्वजनिक, निजी तथा सहकारी साझेदारीको लगानीलाई प्रोत्साहित गर्दै राष्ट्रिय पुँजीको विकास गरिनेछ ।

दीर्घकालीन सोच अन्तर्गत समृद्धि र सुख प्राप्तिका लक्ष्यहरूलाई तीन चरणमा विभाजन गरिएको छ । पहिलो चरण समृद्धि र सुखको आधार निर्माणको महत्त्वपूर्ण चरण हुनेछ । यस चरणमा उच्च आर्थिक वृद्धिका लागि आर्थिक, सामाजिक र भौतिक पूर्वाधार तयार गर्नुपर्ने हुन्छ । भौतिक पूर्वाधार अन्तर्गत यातायात, ऊर्जा, सिँचाई, सूचना प्रविधि तथा संचार आदिको विकासको लागि ठूलो लगानी गर्नुपर्ने आवश्यकता छ । रूपान्तरणकारी र क्रमागत राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरूको निर्माण पहिलो पाँच वर्षभित्रमा सम्पन्न गर्न र गुणस्तरीय पूर्वाधार निर्माण गरी उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्नमा राज्यको प्रमुख भूमिका रहनेछ । शिक्षा र स्वास्थ्यलाई क्रमशः राज्यको जिम्मेवारीमा ल्याउनुका साथै विद्यमान शिक्षा प्रणालीलाई सुधार गरी समान पहुँच सहितको गुणात्मक शिक्षा प्रणाली अवलम्बन गरिनेछ । पन्ध्रौँ योजना समृद्धि र सुखको आधारशिला तयार गर्ने पहिलो योजना हुनेछ ।

दोस्रो चरण समृद्धि र सुखका सूचकहरूमा तीव्र प्रगति हासिल गर्ने चरण हुनेछ। यस चरणमा पन्ध्रौं योजना पश्चात्का दुई वटा पञ्चवर्षीय योजना कार्यान्वयनमा आउनेछन्। पन्ध्रौं योजनाले निर्माण गरेका आर्थिक समृद्धि र सुखका आधारको मजबुत जगमा यस अवधिमा तीव्र र उच्च आर्थिक वृद्धि हासिल गरिनेछ। यस क्रममा आर्थिक वृद्धिदरसँगै प्राप्त उपलब्धिको वितरण न्यायपूर्ण बनाउँदै लगिनेछ। यस दश वर्ष अवधिको अन्त्यमा नेपाल उच्च मध्यम आय भएको मुलुकमा रूपान्तरित भई उच्च आय भएको मुलुकमा स्तरोन्नति हुनेतर्फ उन्मुख हुनेछ।

तेस्रो चरण समृद्धि र सुखका सूचकहरूमा सन्तुलन सहितको दिगोपना हासिल गर्ने चरण हुनेछ। यस चरणमा दीर्घकालीन सोच अवधिका बाँकी दुई पञ्चवर्षीय योजना कार्यान्वयनमा आउनेछन्। यस अवधिमा दुई अंकको औसत आर्थिक वृद्धिदर सहित सामाजिक न्याय कायम गरिनेछ। दीर्घकालीन सोच अवधिको अन्त्यमा अर्थतन्त्र आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र र समृद्ध हुनेछ। साथै, उपलब्ध स्रोत-साधनको अधिकतम परिचालन एवम् समन्यायिक वितरणद्वारा आर्थिक असमानता न्यून भई समाजवादतर्फको बाटो सुदृढ हुनेछ।

## २.४ दीर्घकालीन सोच

### “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली”

समुन्नत, स्वाधीन र समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्र सहितको समान अवसर प्राप्त, स्वस्थ, शिक्षित, मर्यादित र उच्च जीवनस्तर भएका सुखी नागरिक बसोबास गर्ने मुलुक।

## २.५ दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य

| १. समृद्धि (Prosperity)  | २. सुख (Happiness)  |
|--|---|
| १.१ सर्वसुलभ आधुनिक पूर्वाधार एवम् सघन अन्तर आबद्धता (Accessible modern infrastructure and intensive connectivity) | २.१ परिष्कृत तथा मर्यादित जीवन (Well-being and decent life)                 |
| १.२ मानव पुँजी निर्माण तथा सम्भावनाको पूर्ण उपयोग (Development and full utilization of human capital potentials)   | २.२ सुरक्षित, सभ्य र न्यायपूर्ण समाज (Safe, civilized and just society)     |
| १.३ उच्च र दिगो उत्पादन तथा उत्पादकत्व (High and sustainable production and productivity)                          | २.३ स्वस्थ र सन्तुलित पर्यावरण (Healthy and balanced environment)           |
| १.४ उच्च र समतामूलक राष्ट्रिय आय (High and equitable national income)  | २.४ सुशासन (Good governance)  |
|  | २.५ सबल लोकतन्त्र (Comprehensive democracy)                                 |
|  | २.६ राष्ट्रिय एकता, सुरक्षा र सम्मान (National unity, security and dignity) |

## २.६ दीर्घकालीन राष्ट्रिय रणनीति

१. तीव्र, दिगो र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि गर्ने,
२. सुलभ तथा गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा र शिक्षाको सुनिश्चित गर्ने,
३. आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय अन्तरआबद्धता एवम् दिगो शहर/बस्ती विकास गर्ने,
४. उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्ने,
५. पूर्ण, दिगो र उत्पादनशील सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण गर्ने,
६. गरिबी निवारण र आर्थिक सामाजिक समानता सहितको न्यायपूर्ण समाज निर्माण गर्ने,
७. प्राकृतिक स्रोतको संरक्षण र परिचालन तथा उत्थानशीलता विकास गर्ने र
८. सार्वजनिक सेवाको सुदृढीकरण, प्रादेशिक सन्तुलन र राष्ट्रिय एकता सम्बर्द्धन गर्ने ।

## २.७ रूपान्तरणका प्रमुख सम्वाहक

दीर्घकालीन सोचका रणनीति कार्यान्वयन गरी राष्ट्रिय लक्ष्य हासिल गर्न देहाय बमोजिम सामाजिक-आर्थिक रूपान्तरणका सम्वाहक अवलम्बन गरिएको छ । यी सम्वाहकलाई दीर्घकालीन सोचको प्राथमिकताका क्षेत्रका रूपमा समेत लिई तदनुरूप साधन-स्रोतको व्यवस्था गरिनेछ । आगामी आवधिक योजनाहरू तर्जुमा गर्दा राष्ट्रिय आवश्यकता अनुसार प्राथमिकताहरूमा समयानुकूल परिमार्जन गरिनेछ ।

१. गुणस्तरीय एकीकृत यातायात प्रणाली, सूचना प्रविधि तथा सञ्चार पूर्वाधार र बृहत् सञ्जालीकरण,
२. गुणस्तरीय मानव पुँजी निर्माण, उद्यमशील कार्य संस्कृति विकास र सम्भावनाको पूर्ण उपयोग,
३. जल विद्युत उत्पादन वृद्धि र हरित अर्थतन्त्र प्रवर्द्धन,
४. उत्पादन, उत्पादकत्व र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि,
५. गुणस्तरीय पर्यटन सेवाको विकास र विस्तार,
६. आधुनिक, दिगो र व्यवस्थित शहरीकरण, आवास र बस्ती विकास,
७. प्रादेशिक र स्थानीय अर्थतन्त्रको विकास र सुदृढीकरण तथा औपचारिक क्षेत्रको विस्तार,
८. सामाजिक संरक्षण र सुरक्षाको प्रत्याभूति र
९. शासकीय सुधार र सुशासन अभिवृद्धि ।

## २.८ सहयोगी क्षेत्र

दीर्घकालीन सोचका लक्ष्य हासिल गर्ने सन्दर्भमा रूपान्तरणका सम्वाहक क्षेत्रको प्रभावकारी परिचालन गर्न देहायका क्षेत्रहरूलाई प्रमुख सहयोगी क्षेत्रका रूपमा लिइएको छ ।

१. संविधान, लोकतन्त्र र विकास प्रतिको राजनीतिक प्रतिबद्धता,

२. जनसांख्यिक लाभ र नागरिक सचेतना,
३. भौगोलिक अवस्थिति र प्राकृतिक विविधता तथा सम्पन्नता,
४. सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता तथा मौलिक पहिचान,
५. सामाजिक पुँजी र विश्वभर फैलिएका नेपाली समुदाय,
६. स्वच्छ र नवीकरणीय ऊर्जा,
७. मित्रराष्ट्र र अन्तर्राष्ट्रिय समुदायको सद्भाव र
८. संघीय शासन प्रणाली र वित्तीय संघीयता ।

### २.९ दीर्घकालीन सोचको परिदृश्य र परिमाणात्मक लक्ष्यहरू

दीर्घकालीन सोचको राष्ट्रिय लक्ष्यहरू प्राप्तिको लागि उच्च आर्थिक वृद्धिदर आवश्यक हुन्छ। यस अवधिमा वार्षिक औसत १०.५ प्रतिशत आर्थिक वृद्धिदरको प्रारम्भिक लक्ष्य अनुमान गरिएको छ। यसमध्ये कृषि क्षेत्रमा औसत ५.५ प्रतिशत, उद्योग क्षेत्रमा औसत १३ प्रतिशत र सेवा क्षेत्रमा वार्षिक औसत १०.९ प्रतिशत आर्थिक वृद्धि हुने अनुमान गरिएको छ।

दीर्घकालीन सोच अवधिको आर्थिक वृद्धिदरको लक्ष्य अनुरूप यस सोच अवधिको अन्तिम वर्षमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको अंश हालको २७ प्रतिशतबाट घटेर ९ प्रतिशत, उद्योग क्षेत्रको अंश हालको १५.२ प्रतिशतबाट वृद्धि भई ३० प्रतिशत र सेवा क्षेत्रको अंश हालको ५७.८ प्रतिशतबाट ६१ प्रतिशत पुग्ने अनुमान छ। यसबाट कृषि क्षेत्रमा रहेको ठूलो जनशक्ति उद्योग र सेवा क्षेत्रमा स्थानान्तरण हुनेछ। आगामी २५ वर्षमा उद्योग र सेवा क्षेत्रको व्यापक विस्तार भई अर्थतन्त्रमा ठूलो संरचनागत एवम् गुणात्मक परिवर्तन हुने अनुमान छ।

दीर्घकालीन सोचको आधार वर्ष २०७५/७६ मा नेपालको प्रतिव्यक्ति आय १ हजार ४७ अमेरिकी डलर रहेको छ। वि.सं. २०७९ सम्ममा अति कम विकसित राष्ट्रबाट विकासशील राष्ट्रमा स्तरोन्नति हुने र वि.सं. २०८७ मा दिगो विकास लक्ष्यहरू हासिल गर्दै मध्यम आय भएको मुलुकमा स्तरोन्नति हुनेछ। वि.सं. २१०० मा १२ हजार १ सय अमेरिकी डलर प्रतिव्यक्ति आय सहित नेपाल उच्च आयस्तर भएको मुलुकमा स्थापित हुनेछ।

माथि उल्लेखित लक्ष्यहरू हासिल गर्न माथि उल्लेखित रूपान्तरणका सम्वाहक तथा सहयोगी क्षेत्रका अतिरिक्त देहायका तत्वलाई प्रमुख आधार लिइएको छ।

१. संविधानका राज्यका नीति र मौलिक हक प्राप्त गर्न उच्च र दिगो आर्थिक वृद्धि आवश्यक रहेको।
२. राजनीतिक तथा नीतिगत स्थिरता कायम भई आर्थिक समृद्धितर्फ उन्मुख अवस्था सिर्जना भएको।
३. समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गरी सार्वजनिक, निजी, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको लगानी वृद्धि गर्ने उपयुक्त वातावरण निर्माण भएको।
४. जनसांख्यिक लाभ र प्राकृतिक स्रोत-साधनको महत्तम उपयोग गरिने।

५. ज्ञान, सीप, पुँजी र प्रविधि तथा पूर्वाधार र ऊर्जा विकास गरी उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने ।
६. वि.सं. २०८७ सम्म दिगो विकास लक्ष्यहरू हासिल गर्ने राष्ट्रिय प्रतिबद्धता रहेको ।
७. विकास कार्यक्रमको कार्यान्वयनमा तीव्रता प्रदान गर्न आयोजना बैंक, आयोजना पूर्व तयारी र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यलाई सुदृढ बनाइने ।
८. अनौपचारिक अर्थतन्त्रलाई क्रमशः औपचारिक र उत्पादनशील बनाइने ।
९. राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रमा विदेशी लगानी आकर्षित गर्न आवश्यक सुधार र एकद्वार प्रणाली अपनाइने ।
१०. ज्ञानमा आधारित अर्थतन्त्र विकास गरी समृद्धि हासिल गर्ने ।

दीर्घकालीन सोचका प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरू देहायको तालिका २.१ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

**तालिका २.१ दीर्घकालीन सोचका प्रमुख लक्ष्यहरू**

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक  | एकाई        | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२१००/०१<br>को लक्ष्य |
|---------|---|-------------|------------------------------|------------------------------|
| १.      | आर्थिक वृद्धिदर (औसत) <sup>१</sup>  | प्रतिशत     | ६.८                          | १०.५                         |
| २.      | कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि तथा वन क्षेत्रको योगदान <sup>१</sup>                    | प्रतिशत     | २७.०                         | ९                            |
| ३.      | कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको योगदान <sup>१</sup>                         | प्रतिशत     | १५.२                         | ३०                           |
| ४.      | कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सेवा क्षेत्रको योगदान <sup>१</sup>                           | प्रतिशत     | ५७.८                         | ६१                           |
| ५.      | प्रतिव्यक्ति कुल राष्ट्रिय आय <sup>१</sup>  | अमेरिकी डलर | १,०४७                        | १२,१००                       |
| ६.      | गरिबीको रेखामुनि रहेको जनसंख्या (निरपेक्ष गरिबी)                                      | प्रतिशत     | १८.७                         | ०                            |
| ७.      | बहुआयामिक गरिबीमा रहेको जनसंख्या <sup>२</sup>   | प्रतिशत     | २८.६                         | ३                            |
| ८.      | आम्दानीमा माथिल्लो १० र तल्लो ४० प्रतिशत जनसंख्याको अनुपात (Palma Ratio) <sup>३</sup> | अनुपात      | १.३                          | १.१                          |
| ९.      | सम्पत्तिमा आधारित जिनी गुणक (Gini Coefficient)  | गुणक        | ०.३१                         | ०.२५                         |
| १०.     | श्रम सहभागिता दर (१५ वर्ष माथि)   | प्रतिशत     | ३८.५                         | ७२                           |
| ११.     | बेरोजगारी दर  | प्रतिशत     | ११.४                         | ३                            |
| १२.     | रोजगारीमा औपचारिक क्षेत्रको हिस्सा  | प्रतिशत     | ३६.५                         | ७०                           |
| १३.     | जलविद्युत तथा नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन (जडित क्षमता)                                    | मेगावाट     | १,०७४                        | ४०,०००                       |

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक                       | एकाई             | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२१००/०१<br>को लक्ष्य |
|---------|--|------------------|------------------------------|------------------------------|
| १४.     | विद्युतमा पहुँच प्राप्त परिवार                         | प्रतिशत          | ९०.७                         | १००                          |
| १५.     | प्रतिव्यक्ति विद्युत उपभोग                             | किलोवाट<br>घण्टा | १९८                          | ३,५००                        |
| १६.     | ३० मिनेट सम्मको दुरीमा यातायात पहुँच भएको परिवार       | प्रतिशत          | ७८.९                         | ९९                           |
| १७.     | राष्ट्रिय र प्रादेशिक लोकमार्ग                         | कि.मि.           | ६,९७९                        | ३३,०००                       |
| १८.     | द्रुत मार्ग (भूमिगत मार्ग समेत)                        | कि.मि.           | ०                            | २,०००                        |
| १९.     | रेलमार्ग   | कि.मि.           | ४२                           | २,२००                        |
| २०.     | इन्टरनेट प्रयोगकर्ता (कुल जनसंख्यामा)                  | प्रतिशत          | ५५.४                         | १००                          |
| २१.     | अपेक्षित आयु (जन्म हुँदाको)                            | वर्ष             | ६९.७                         | ८०                           |
| २२.     | मातृ मृत्युदर (प्रति लाख जीवित जन्ममा)                 | जना              | २३९                          | २०                           |
| २३.     | पाँच वर्ष मुनिको बाल मृत्युदर (प्रतिहजार जीवित जन्ममा) | जना              | ३९                           | ८                            |
| २४.     | ५ वर्ष मुनिका कम तौल भएका बालबालिका <sup>३</sup>       | प्रतिशत          | २७                           | २                            |
| २५.     | साक्षरता दर (१५ वर्ष माथि) <sup>४</sup>                | प्रतिशत          | ५८                           | ९८                           |
| २६.     | माध्यमिक तह (९-१२) मा खुद भर्नादर                      | प्रतिशत          | ४३.९                         | ९५                           |
| २७.     | उच्च शिक्षामा कुल भर्नादर                              | प्रतिशत          | ९.५                          | ४०                           |
| २८.     | उच्च मध्यम स्तरको खानेपानी सुविधा पुगेको जनसंख्या      | प्रतिशत          | २०                           | ९५                           |
| २९.     | आधारभूत सामाजिक सुरक्षामा आबद्ध जनसंख्या               | प्रतिशत          | १७                           | १००                          |
| ३०.     | लैंगिक विकास सूचकांक <sup>५</sup>                      | सूचकांक          | ०.९२५                        | १                            |
| ३१.     | मानव विकास सूचकांक <sup>५</sup>                        | सूचकांक          | ०.५७४                        | ०.७६०                        |

स्रोत: १. राष्ट्रिय लेखा, आ.व. २०७५/७६; २. बहुआयामिक गरिबीको प्रतिवेदन, २०१८; ३. नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण-२०१६; ४. राष्ट्रिय जनगणना, २०६८; ५. मानव विकास प्रतिवेदन-२०१८।

नोट: (i) दीर्घकालीन सोचको मार्गचित्र र रणनीति, २५ वर्षमा नेपाल उच्च आय भएको मुलुकको स्तरमा पुग्ने लक्ष्य र अन्य देशहरूको विकासको अनुभवका आधारमा प्रारम्भिक अनुमान गरिएको छ।

(ii) शून्य प्रतिशत गरिबीले १ प्रतिशत भन्दा कम गरिबी रहेको अवस्था बुझाउँछ।

(iii) आगामी आवधिक योजनाहरू तर्जुमा गर्दा माथि उल्लेखित लक्ष्यहरू समयानुकूल पुनरावलोकन गरिनेछ ।

## २.१० समष्टिगत तथा विषय क्षेत्रगत सोच

### क. समष्टिगत आर्थिक क्षेत्र

उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरी उच्च आर्थिक वृद्धि सहित समन्यायिक वितरण सुनिश्चित गर्नु समष्टिगत आर्थिक नीतिको प्रमुख उद्देश्य हुनेछ । अर्थतन्त्रमा निजी, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको भूमिकालाई महत्त्व दिई उपलब्ध साधन र स्रोतको अधिकतम परिचालन र उपयोगमा जोड दिइनेछ । राष्ट्रिय पुँजी निर्माणको लागि बचत परिचालन तथा स्वदेशी लगानीलाई प्राथमिकता दिइनेछ । अर्थतन्त्रको संरचनामा उत्पादनशील क्षेत्रको योगदान बढाउन औद्योगिकीकरणतर्फ लगानी केन्द्रित गरिनेछ । लगानीको वातावरणमा सुधार गर्न उद्योग व्यवसायको सुरुदेखि बहिर्गमनसम्मका सबै प्रक्रिया र प्रणालीमा सुधार गरी व्यावसायिक लागत कम गरिनेछ । आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धनका लागि अग्र तथा पृष्ठ सम्बन्धका आधारमा मूल्य अभिवृद्धि हुने उत्पादनशील क्षेत्रमा वैदेशिक पुँजी तथा प्रविधिको आकर्षण तथा लगानीका लागि वित्तीय प्रोत्साहन दिइनेछ । सूचना प्रविधि, वित्तीय पहुँच र सुदृढ कर प्रणालीको माध्यमबाट आर्थिक क्षेत्रका सबै गतिविधिमा स्वच्छता, जवाफदेही र प्रतिस्पर्धा कायम गर्दै अर्थतन्त्रको औपचारिकीकरणमा वृद्धि गरिनेछ । उपलब्ध साधनको दिगो परिचालनबाट प्राप्त हुने आर्थिक विकासको प्रतिफलको समन्यायिक वितरण गरिनेछ ।

आर्थिक वृद्धि र समतामैत्री कर नीतिका माध्यमबाट राष्ट्रिय कराधारको संरक्षण गर्दै करको आधार तथा दायरालाई फराकिलो बनाइनेछ । राजस्वको आधारलाई क्रमशः प्रत्यक्ष कर र सेवा प्रवाहमा आधारित बनाइनेछ । सामाजिक सुरक्षा कर प्रणालीको सुरुआत गरिनेछ । छिमेकी देशहरूको कर प्रणालीसँग प्रतिष्पर्धी हुने गरी संस्थागत आय करका दरहरू पुनरावलोकन गरिनेछ । व्यक्तिगत आय करमा ठाडो समता (Vertical equity) का साथै क्षितिजिय समता (Horizontal equity) कायम गरिनेछ । भन्सारका दरहरूलाई अर्थतन्त्रको लागत नबढ्ने र राष्ट्रिय उत्पादनको संरक्षण गर्ने गरी पुनरावलोकन गरिनेछ । कर तटस्थताको सिद्धान्त बमोजिम मूल्य अभिवृद्धि करको आधार फराकिलो बनाई कर दक्षतामा सुधार गरिनेछ । अन्तःशुल्कलाई मूल्यवृद्धि गर्ने वस्तु र सेवामा मात्र लगाई अन्य वस्तु र सेवामा लागेको अन्तःशुल्कलाई पूर्णतः खारेज गरिनेछ । संघ, प्रदेश तथा स्थानीय तहले करका दर निर्धारण गर्दा आर्थिक वृद्धिमैत्री कर प्रणालीको नीति अबलम्बन गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।

वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयन र वित्त दायराको परिचालन गर्दा समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गरिनेछ । राजस्व बचत वृद्धि गरी विकास वित्तमा परिचालन गरिनेछ । आर्थिक क्रियाकलापको विस्तार र औद्योगिकीकरणका लागि आवश्यक पूर्वाधारमा लगानी वृद्धि गरिनेछ । सार्वजनिक खर्चमा विनियोजन कुशलता र सञ्चालन दक्षता कायम गरिनेछ । सार्वजनिक खर्चलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा र अर्थतन्त्र विस्तार गर्ने गरी लगानी केन्द्रित गरिनेछ । सार्वजनिक लगानीको उच्च माग सम्बोधन गर्न सार्वजनिक निजी साझेदारीका उपयुक्त लगानी ढाँचा अवलम्बन गरी पुँजी निर्माणमा लगानी वृद्धि गरिनेछ । चालु खर्चमा मितव्ययिता कायम गर्दै लक्षित सीमामा राखिनेछ । वैदेशिक तथा आन्तरिक ऋणलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा परिचालन गरिनेछ । अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सहायता परिचालनलाई कार्यक्रम तथा

परियोजना र बजेट सहायताको रूपमा ग्रहण गरिनेछ । विदेशी मुद्राको जोखिम कम गर्नका लागि वित्त व्यवस्थापनका उपयुक्त उपाय अवलम्बन गरिनेछ । सार्वजनिक र निजी क्षेत्रको वित्तीय लेखाङ्कन र प्रतिवेदन प्रणालीलाई पारदर्शी बनाउन नवीनतम लेखामानक र लेखा प्रणाली अवलम्बन गरी वित्तीय जोखिम कम गरिनेछ ।

मूल्य नीतिलाई उपभोक्तामैत्री बनाउन उपयुक्त नीतिगत र संरचनागत उपाय अवलम्बन गरिनेछ । अत्यावश्यक र राज्यको दायित्वमा रहेका वस्तु तथा सेवाको मूल्य लागत मूल्यका आधारमा र अन्य क्षेत्रमा प्रतिस्पर्धात्मक बजारले मूल्य निर्धारण गर्ने पद्धति सुनिश्चित गरिनेछ । वित्तीय क्षेत्र स्थायित्वका लागि सरकारको वित्त नीतिसँग सामञ्जस्य हुने गरी मौद्रिक नीति अवलम्बन गरिनेछ । वित्तीय मध्यस्थता लागत कम गर्दै लगिनेछ । उत्पादनशील र रोजगारीमूलक क्षेत्रमा सहूलियतपूर्ण कर्जाको व्यवस्था गरिनेछ । वित्तीय क्षेत्रको नियमनलाई सुदृढ बनाई नागरिकको बचत र लगानीको जोखिम न्यूनीकरण गरिनेछ । सम्पूर्णतामा वित्तीय पहुँच र विद्युतीय भुक्तानी प्रणाली कार्यान्वयन गरिनेछ । विदेशी विनिमय नीतिमा समय सापेक्ष पुनरावलोकन गरिनेछ । पुँजी खातालाई सम्भाव्यता र उपयुक्तताको आधारमा क्रमशः परिवर्त्य बनाई पर्याप्त वैदेशिक लगानी भित्रिने र नेपालीले पनि विदेशमा लगानी गर्न पाउने व्यवस्था गरिनेछ ।

बिमा व्यवसायको विस्तार गरी सबै नागरिकलाई बिमामा आबद्ध गरिनेछ । सामाजिक सुरक्षा, उत्पादन तथा उत्पादकत्व वृद्धिको लागि लगानी र उत्पादन संरक्षण गर्न बिमा प्रिमियममा अनुदान दिने नीति लिइनेछ । पुँजीबजारको विकासका लागि उत्प्रेरणात्मक नीति लिइनेछ । साथै, यस सम्बन्धी नियामक निकायको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ । डिजिटल अर्थतन्त्र प्रवर्द्धनका लागि आवश्यक पर्ने सबै पूर्वाधारको विकास गरी यस क्षेत्रमा रहेको लागतलाई शून्यमा ल्याइनेछ ।

## ख. आर्थिक क्षेत्र

### १. कृषि, वन तथा प्राकृतिक स्रोत

कृषि, वन, भूमि र अन्य प्राकृतिक स्रोत नेपालको आर्थिक विकास र समृद्धिको लागि महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहेका छन् । विगतमा गरिएको विकासका असल अभ्यास र सिकाईलाई आत्मसात् गर्दै आगामी २५ वर्षभित्रमा यस क्षेत्रको दिगो विकासका माध्यमबाट देशलाई समुन्नत र समृद्ध बनाइनेछ ।

यस अवधिमा वैज्ञानिक, व्यवसायिक, बजार तथा उपभोक्तामुखी कृषि प्रणालीको विकास मार्फत कृषि क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धी, दिगो, आत्मनिर्भर र निर्यातमुखी बनाइनेछ । सहकारी र सामूहिक कृषि प्रणाली मार्फत कृषिको उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरिनेछ । खाद्य तथा पोषण सुरक्षाको सुनिश्चित गर्न राष्ट्रिय कृषि अन्वेषण प्रणाली एवम् आवश्यक संरचनागत विकास मार्फत कृषि क्षेत्रको आधुनिकीकरण, यान्त्रिकीकरण र औद्योगिकीकरण गरिनेछ । विज्ञान तथा प्रविधि र जैविक विविधतामा आधारित जलवायु अनुकूलन सहित दिगो कृषि प्रणाली मार्फत कृषिश्रम र उत्पादनमा विशिष्टीकरण तथा कृषिजन्य वस्तुहरूको बजार र उपभोगमा विविधीकरण गरिनेछ । खाद्य अधिकार तथा खाद्य सम्प्रभुताको सुनिश्चिता गर्दै योगदानमा आधारित किसानको पेन्सन समेतको हक र अधिकार सुनिश्चित गरिनेछ । कृषि क्षेत्रमा युवाको आकर्षण बढाउन प्रविधिमैत्री, यान्त्रिकृत, व्यवसायिक, उच्च प्रतिफलदायी एवम् मर्यादित पेसाको रूपमा रूपान्तरण गरिनेछ । कृषि भूमि लगायतका व्यवसायिक हक-अधिकार सुनिश्चित गर्दै उत्पादन सामग्रीको आपूर्ति सुनिश्चितता एवम् वित्तीय उत्प्रेरणाको उत्पादनशील क्षेत्रमा पूर्ण उपयोग गरिनेछ ।

आगामी २५ वर्षमा कृषि तथा वन क्षेत्रको वार्षिक औसत वृद्धिदर ५.५ प्रतिशत, कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा यस क्षेत्रको योगदान ९ प्रतिशत योगदान तथा कृषि क्षेत्रमा देशको आश्रित जनसंख्या कुल जनसंख्याको २० प्रतिशतमा रहने अनुमान गरिएको छ। यस क्षेत्रमा रहेका अर्धबेरोजगारीको अन्त्य गर्न तथा यस क्षेत्रको उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्न समेत सहयोग पुग्नेछ। आधुनिकीकरण तथा व्यवसायिकीकरणको माध्यमबाट कृषिलाई आधुनिक प्रविधिमा आधारित उद्योगको रूपमा विकास गरिनेछ। माटोमा प्राङ्गारिक पदार्थको मात्रा ५ प्रतिशत तथा सम्पूर्ण सिँचाइयोग्य जमिनमा सिँचाइ सुविधा पुगेको हुनेछ। प्रमुख बालीहरूको बीउ प्रतिस्थापन दर ७० प्रतिशतभन्दा बढी पुऱ्याई जमिनको उत्पादकत्व अमेरिकी डलर ९,५०० प्रतिहेक्टर र कृषि श्रमको उत्पादकत्व अमेरिकी डलर २,७९८ प्रतिश्रम पुऱ्याइनेछ। गम्भीर खाद्य असुरक्षा तथा खाद्य गरिबी शून्यमा पुऱ्याइनेछ। प्राङ्गारिक खेतीमा आधारित तुलनात्मक लाभ भएका बालीवस्तुहरूको उत्पादनले कृषिजन्य व्यापारमा प्रमुख हिस्सा रहेको हुनेछ। कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादनमा मुलुक आत्मनिर्भर हुनुका साथै कृषि क्षेत्रको निर्यात व्यापार समेत उल्लेख्य रूपमा वृद्धि हुनेछ।

दिगो वन व्यवस्थापन र सन्तुलित वातावरणबाट आर्थिक समृद्धि र नागरिकमा सुखको अनुभूति सिर्जना गर्न सहयोग पुग्नेछ। सोच अवधिमा वनले ढाकेको क्षेत्रफल ४५ प्रतिशत कायम राखी अर्थतन्त्रमा यसको योगदान उल्लेख्य वृद्धि गरिनेछ। सबै संरक्षित क्षेत्रहरूमा जैविक विविधताको संरक्षण गर्दै गुणात्मक पर्यटनको गन्तव्य स्थानका रूपमा विकास गरिनेछ। विद्यमान संरक्षणमुखी सोचमा आधारित वन व्यवस्थापनलाई दिगो प्रयोग र सोबाट प्राप्त लाभको समन्यायिक बाँडफाँटको व्यवस्था गरिनेछ। राष्ट्रिय वनको ७५ प्रतिशत क्षेत्रफल समुदायहरूबाट व्यवस्थापन गरी उच्चतम लाभ प्राप्त गर्ने व्यवस्था गरिनेछ। कृषि वनको अत्याधिक प्रयोगबाट जलाधार व्यवस्थापन र पर्यावरणीय पद्धति संरक्षण गरी कृषि जमिनको गुणात्मक सुधार र उत्पादकत्वमा वृद्धि गरिनेछ। प्रतिवर्ष १३ करोड क्युबिक फिट काठ दिगो रूपमा उत्पादन गरी त्यस्ता काष्ठजन्य उद्योगहरूबाट प्राप्त हुने लाभको समन्यायिक वितरणको व्यवस्था गरिनेछ। वनजन्य तथा जडिबुटीको उत्पादनमा उल्लेख्य वृद्धि भई यी उत्पादनको हिस्सा कुल निर्यातको १० प्रतिशत पुग्ने तथा ती व्यवसायहरूमा कम्तीमा १५ लाखले रोजगार पाउने अनुमान छ।

कृषि, खाद्य सुरक्षा, शहरी विकास एवम् विपद् व्यवस्थापन लगायतका क्षेत्रमा भूमिको उपयोग गर्न भू-उपयोग नीतिको समयानुकूल परिमार्जन गर्दै सबै स्थानीय तहमा भूमिको वर्गीकरणमा आधारित भू-उपयोग योजना कार्यान्वयन मार्फत भूमिको महत्तम उपयोग र व्यवस्थापन गरिनेछ। आधुनिक नापनक्सा तथा भौगोलिक सूचना प्रविधि मार्फत शुद्ध, विश्वसनीय र प्रभावकारी भू-सूचनाको उपलब्धता सुनिश्चित गरिनेछ। सबै प्रकारका भू-सम्बन्धहरूको उचित पहिचान र व्यवस्थापन गरी करिब १५ लाख भूमिहीन र सीमान्तीकृत परिवारहरूको बसोबास व्यवस्थित गरिनेछ।

आगामी २५ वर्षमा नेपालका सबै जलसम्पदाको उपयोग गर्दा कृषियोग्य जमिनमा सिँचाइ अभिवृद्धि गर्ने नीति लिइनेछ। यस अवधिमा २२ लाख हेक्टर कृषि योग्य भूमिमा भरपर्दो सिँचाइ व्यवस्था पुऱ्याइनेछ। यसैगरी, प्रमुख नदी किनारहरूमा बाढी पहिरो नियन्त्रण र व्यवस्थापन गरिनेछ। पर्यावरणीय पद्धति र जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको मापन केन्द्रहरूबाट रियल टाइम सूचना प्रवाह गरिनेछ। जलस्रोत र ऊर्जा सम्बन्धी तथ्याङ्कहरूको प्रभावकारी संकलन, व्यवस्थापन र सम्प्रेषण गरिनेछ। एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनको माध्यमद्वारा जलवायु परिवर्तनबाट जलस्रोतको उपलब्धता र उपयोगमा पर्ने प्रभाव न्यून गरी पर्यावरणीय सन्तुलनमा उल्लेख्य सुधार ल्याइनेछ।

## २. उद्योग, वाणिज्य तथा आपूर्ति र पर्यटन

उद्योग क्षेत्र आर्थिक समृद्धिको एक महत्त्वपूर्ण आधारको रूपमा रहेको छ। आर्थिक समुन्नति हासिल गर्नका लागि दिगो, रोजगारमूलक र उच्च प्रतिफलयुक्त औद्योगिक विकास गर्नु यस क्षेत्रको दीर्घकालीन सोच रहेको छ। यस अवधिमा उद्योगजन्य पूर्वाधारको विकास, उत्पादन र उत्पादकत्वमा अभिवृद्धि, रोजगारीका थप अवसरहरूको सिर्जना, स्थानीय श्रम र सीपमा आधारित उद्योगको प्रवर्द्धन र विकासका साथै निर्यात प्रवर्द्धन र आयात व्यवस्थापन गर्ने गरी उद्योग क्षेत्रको समग्र विकास गरिनेछ। यसका लागि वैदेशिक पुँजी र प्रविधि समेत आकर्षित गरिनेछ।

अन्तरदेशीय आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक करिडोर, विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक ग्राम र घरेलु उद्योग ग्राम जस्ता औद्योगिक पूर्वाधारको निर्माण र प्रवर्द्धनबाट सबल औद्योगिक वातावरण कायम भएको हुनेछ। उद्योग क्षेत्रको विकासका लागि संघ-प्रदेश र प्रदेश-प्रदेशबीच समन्वय कायम भई गतिशील औद्योगिक विकास भएको हुनेछ। प्रविधिमैत्री उद्योग क्षेत्रको विकास मार्फत अग्र तथा पृष्ठ सम्बन्धका आधारमा प्रतिस्पर्धी क्षमता विकास भई निर्यात व्यापारमा उल्लेख्य वृद्धि भएको हुनेछ। औद्योगिक विकासका लागि अध्ययन, अनुसन्धानबाट प्राप्त नतिजालाई उपयोग गरिएको हुनेछ। बौद्धिक सम्पत्तिको अधिकार संरक्षण गरी नवप्रवर्तनको प्रवर्द्धन गरिएको हुनेछ। खानि अन्वेषणलाई विशेष जोड दिई खानि तथा खनिजजन्य उद्योगको खोज र अन्वेषण गरी उपयोगमा ल्याइएको हुनेछ। उल्लेखित सोच प्राप्तिका लागि सरकारको भूमिका उत्प्रेरक, सहजकर्ता र नियामकको रूपमा रहने र निजी क्षेत्रले नेतृत्वदायी भूमिका लिएको हुनेछ।

व्यापार क्षेत्र समग्र आर्थिक क्षेत्रको सम्वाहकको रूपमा रहनेछ। बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली, क्षेत्रीय तथा द्विपक्षीय व्यापार संझौताका साथै विश्वव्यापीकरण, अन्तरनिर्भरता र आबद्धताले व्यापारमा थप अवसर सिर्जना भएका छन्। यस क्षेत्रमा निर्यात प्रवर्द्धन, आयात व्यवस्थापन र आर्थिक समृद्धिका लागि व्यापार सन्तुलन कायम गर्ने गरी दीर्घकालीन नीति तथा कार्यक्रमहरू लक्षित गरिएका छन्।

उत्पादन र उत्पादकत्वमा उल्लेख्य रूपमा वृद्धि, व्यापार पूर्वाधारहरूको सघन रूपमा निर्माण र विकास, तुलनात्मक र प्रतिस्पर्धी लाभ भएका वस्तु तथा सेवाको पहिचान, विकास र विविधीकरण, स्थानीय सीप, पुँजीका साथै उन्नत प्रविधिको प्रयोग यस क्षेत्रको दीर्घकालीन सोच हुनेछ। उत्पादन र पारवहन लागत कम गर्न व्यापार सहजीकरणका थप उपायहरू कार्यान्वयन गरिनेछ। बहुपक्षीय, क्षेत्रीय र द्विपक्षीय व्यापार संझौताहरूबाट सिर्जित अवसरहरूको उपयोगका लागि संस्थागत क्षमता विकास गरिनेछ। जल यातायातको उपयोगका लागि नीतिगत र संस्थागत व्यवस्थालाई सबल बनाउँदै निर्यात र आयातमा लाग्ने उच्च लागतमा कमी ल्याइनेछ। वार्ता क्षमताको अभिवृद्धि गरी व्यापार कूटनीतिलाई सुदृढ गरिनेछ। सेवा व्यापारबाट अधिकतम लाभ लिने र विद्युतीय व्यापारका लागि राष्ट्रिय क्षमताको विकास गरिनेछ। समग्रमा, निर्यात प्रवर्द्धन र आयात व्यवस्थापन गर्दै व्यापारलाई सन्तुलित गर्नु र गुणस्तरीय नेपाली वस्तुलाई विश्व बजारमा सहज रूपमा उपलब्ध गराउने व्यवस्था हुनेछ।

गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवा प्राप्त गर्नु प्रत्येक उपभोक्ताको अधिकार हो। प्रभावकारी, सहज, स्वचालित र जिम्मेवार आपूर्ति प्रणाली तथा उपभोक्ता हकको संरक्षण गर्ने आपूर्ति क्षेत्रको दीर्घकालीन सोच रहेको छ। यस अवधिमा संवैधानिक अधिकारको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्ने गरी समग्र आपूर्ति क्षेत्र व्यवस्थित गरिनेछ। यसका लागि

आपूर्ति सम्बन्धी नीति, ऐन र नियमहरूको परिमार्जन र प्रभावकारी कार्यान्वयन, आपूर्तिजन्य पूर्वाधार निर्माण तथा विकास र प्रतिस्पर्धी आपूर्ति प्रणालीको प्रवर्द्धन गरिनेछ ।

आपूर्ति क्षेत्रलाई पारदर्शी एवम् प्रतिस्पर्धी बनाउँदै आधारभूत र अत्यावश्यक वस्तुको सहज र सुलभ भण्डारण तथा वितरण प्रणालीको विकास भएको हुनेछ । प्रकोप र संकटको अवस्थामा प्रयोग गर्न सक्ने गरी पर्याप्त खाद्यान्न र अत्यावश्यक वस्तुको भण्डारण गरिनेछ । खाद्य सुरक्षाको प्रत्याभूति, प्रभावकारी बजार अनुगमन, नीतिगत र कानुनी सुधार, संस्थागत क्षमता विकास र प्रक्रियागत सुधारको माध्यमबाट आपूर्ति क्षेत्रलाई पारदर्शी र प्रतिस्पर्धी तुल्याउँदै आपूर्ति प्रणालीलाई भरपर्दो र सहज तुल्याउने गरी यस क्षेत्रका समग्र नीति तथा कार्यक्रम निर्देशित हुनेछन् ।

अद्वितीय प्राकृतिक एवम् सांस्कृतिक सम्पदा र विविधताको कारण पर्यटकीय उपजमा तुलनात्मक लाभ उच्च रहेको छ । नेपाललाई आकर्षक, सुरक्षित र मनोरञ्जनात्मक पर्यटकमैत्री गन्तव्य बनाउने दीर्घकालीन सोच रहेको छ । विश्व पर्यटन बजारमा नेपाल एक प्रमुख आकर्षक पर्यटकीय गन्तव्यको रूपमा स्थापित हुनेछ । साथै, नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरूको पहिचान र विविधीकरण गर्दै पर्यटकीय पूर्वाधार विकासमा निजी क्षेत्रको लगानी प्रवर्द्धन गरिनेछ । पर्यटन पूर्वाधारमा आधुनिक प्रविधिको प्रयोग गरी पर्यटन सेवालाई गुणस्तरीय, सुरक्षित र विश्वासिलो बनाइनेछ । प्राकृतिक सुन्दरता, आध्यात्मिकता, प्राचीन ज्ञान र दर्शनको उद्गमस्थल, जैविक विविधता जस्ता विशिष्ट प्रकृतिका पर्यटकीय गन्तव्य र उपजहरूले सिर्जना गरेका अवसरहरूको उपयोग मार्फत पर्यटन क्षेत्रको प्रवर्द्धन भएको हुनेछ । उल्लेखित प्रयासबाट पर्यटक आगमन र रोजगारीका अवसरमा उल्लेख्य वृद्धि भई जनताको जीवनस्तरमा उल्लेख्य सुधार भएको हुनेछ ।

सांस्कृतिक सम्पदाहरूलाई आर्थिक क्रियाकलापहरूमा आबद्ध गराई त्यसको लाभ जनस्तरमा पुऱ्याइनेछ । नेपालमा क्षेत्रीय र स्थानीय संस्कृति तथा परम्पराको पनि जगेर्ना गर्नुका साथै सबै जातजाति र धर्म समुदायहरूको पहिचान र मौलिकता कायम रहने र नेपाल एक सामाजिक सांस्कृतिक रूपले सम्पन्न आकर्षक गन्तव्य मुलुकको रूपमा विश्वमा परिचित हुनेछ । अर्थतन्त्रमा पर्यटन क्षेत्रको उल्लेखनीय योगदान रहने र रोजगारीमा पनि यस क्षेत्रको उल्लेख्य हिस्सा रहने अवस्था सिर्जना गरिनेछ ।

## ग. सामाजिक विकास क्षेत्र

राज्यले नागरिकका बीच उत्पत्ति, धर्म, वर्ण, जातजाति, लिंग, आर्थिक अवस्था, भाषा, क्षेत्र, वैचारिक आस्था वा अन्य कुनै आधारमा भेदभाव नगरिने संविधान प्रदत्त नागरिक हकको सुनिश्चितता हुने गरी सामाजिक विकासका प्रयास केन्द्रित हुनेछन् । दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्न सामाजिक विकासको क्षेत्रले विशेष योगदान गर्नेछ । सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षणका माध्यमबाट विकास र समृद्धि हासिल गर्नेतर्फ प्रयास केन्द्रित गरिनेछ ।

संविधान प्रदत्त स्वास्थ्य सम्बन्धी नागरिकको मौलिक हकलाई सुनिश्चित गर्दै “समृद्ध मुलुकको लागि स्वस्थ नागरिक”को दीर्घकालीन सोच हासिल गर्न स्वस्थ, सबल, उत्पादनशील र सुखी नागरिक सहितको समाज निर्माणमा जोड दिइनेछ । औसत आयु बढाउने, गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवामा नागरिकको समतामूलक पहुँच तथा उपभोग सुनिश्चित गर्ने, स्वास्थ्यलाई सबै नीतिमा समावेश गर्दै स्वस्थ जीवनशैली प्रवर्द्धन गरिनेछ । यस अवधिमा स्वस्थ, सबल र सक्रिय जीवन सहित नेपालीको औसत आयु ८० वर्ष पुगेको हुनेछ ।

जनसङ्ख्या, विकास र वातावरणबीच तादम्यता कायम गर्दै जनसङ्ख्या सम्बन्धी विषयलाई राज्यका सबै नीति र विकासका प्रत्येक क्षेत्रमा समावेश गर्दै मानव बस्ती र शहरहरूलाई दिगो, सुरक्षित, गुणस्तरीय र बसोबासयोग्य बनाउन सम्पूर्ण पूर्वाधार सहितको एकीकृत बस्ती विकास हुँदै जानेछ। जनसांख्यिक लाभांशको सदुपयोग गर्न स्वदेशमा नै ज्ञान, सीप र योग्यतामा आधारित रोजगारी र अवसर सिर्जना गर्दै जन्म, मृत्यु, विवाह र बसाइँसराइ जस्ता व्यक्तिगत घटनाको अभिलेखीकरणलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गरिनेछ।

शिक्षाको माध्यमबाट व्यक्तिको सर्वाङ्गीण विकास र सामाजिक आर्थिक रूपान्तरणका लागि गुणस्तरीय शिक्षा प्रणाली विकसित भएको हुने र कुनै पनि कारणले कुनै बालबालिकाले बीचमै पढाई छोड्नुपर्ने अवस्थाको अन्त्य गरिनेछ। स्थानीय तहमा रहेका रैथाने ज्ञान, सीपहरूको खोजी गरी आधुनिक ज्ञान र सीपसँग एकीकृत गरिनेछ। वैज्ञानिक अनुसन्धानहरूमा शैक्षिक संस्था, मन्त्रालय र उद्योगसँगको समन्वयमा युवा परिचालन गरिनेछन्। जनशक्ति प्रक्षेपणको मार्गदर्शनका आधारमा देशमा आवश्यक क्षमतावान जनशक्ति उत्पादन गर्न सरकारी लगानीमा उच्च वृद्धि गरिनेछ।

जनसङ्ख्या, भूगोल र सामुदायिक आवश्यकताका आधारमा स्वास्थ्य, शिक्षण र सीप तथा प्रविधि विकास केन्द्रहरू स्थापना र सञ्चालन भएका हुनेछन्। व्यावसायिक तथा प्राविधिक शिक्षा एवम् सीपमूलक तालिमका माध्यमबाट सबै युवा तथा वयस्क उत्पादनशील जनशक्तिमा परिणत भई राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्रतिस्पर्धा गर्न सक्षम भएका हुनेछन्। उच्च शिक्षालाई ज्ञान उत्पादन केन्द्रको रूपमा विकास गर्न अनुसन्धानमा आधारित शिक्षा विकासमा जोड दिइनेछ। विज्ञान तथा प्रविधिको विकास एवम् उपयोगको मार्गचित्र तयार गरी लागू भएको हुनेछ।

समाजमा विद्यमान सबै प्रकारका विभेद, गरिबी र असमानताको अन्त्य गरी आर्थिक समानता, समृद्धि, सामाजिक न्याय र सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षणका विद्यमान प्रणालीमा सुधार गर्दै गरिबी, सामाजिक तथा लैंगिक विभेद तथा जोखिमपूर्ण अवस्थामा रहेका व्यक्ति तथा समुदायको प्रतिरोध क्षमता अभिवृद्धि, अवसर, पहुँच र सहभागिता प्रवर्द्धन मार्फत नागरिकहरूको गुणस्तरीय एवम् मर्यादित जीवन सुनिश्चित गरिनेछ।

#### घ. पूर्वाधार क्षेत्र

पूर्वाधार क्षेत्र देशको विकासका लागि पूर्वशर्तको रूपमा रहेको छ। यसले देशको समग्र आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणको दिशालाई गति प्रदान गर्ने कार्यमा अहम् भूमिका खेल्दछ। पूर्वाधार क्षेत्र दूरगामी विकासको सम्वाहक रूपमा पनि रहेकोले यस क्षेत्रको समतामूलक, समावेशी, रोजगारमूलक समाज निर्माणमा प्रत्यक्ष रूपमा योगदान रहनेछ। आर्थिक समृद्धिको सूचकको रूपमा रहेको सर्वसुलभ तथा आधुनिक पूर्वाधार एवम् सघन अन्तर-आबद्धताका साथै उच्च र दिगो उत्पादन तथा उत्पादकत्वमा बढोत्तरीका लागि यस क्षेत्रको प्रमुख भूमिका रहनेछ।

दीर्घकालीन सोच अन्तर्गत समृद्धि र सुख प्राप्तिका कार्यहरू तीन चरणमा लक्ष्य विभाजन गरी कार्य योजना अगाडि बढाउने क्रममा भौतिक पूर्वाधार क्षेत्रलाई प्रथम चरणको (समृद्धि र सुखको आधार निर्माण) कार्यान्वयनमा प्राथमिकता दिने नीति लिइएको छ। पहिलो चरणमा पूर्वाधार क्षेत्रमा निर्माणाधीन आयोजनाहरू सम्पन्न गर्ने र रूपान्तरणकारी आयोजनाहरूको पहिचान, छनोट तथा निश्चित अवधिभित्र तोकिएको गुणस्तर हासिल गर्ने गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। यसबाट सिर्जना भएको उपलब्धिको आधारमा दोस्रो चरणमा गुणात्मक सेवा विस्तारका साथै

आर्थिक तथा सामाजिक विकासका अन्य कार्यहरूमा तीव्र प्रगति हासिल हुनेछ । तेस्रो चरणमा निर्मित पूर्वाधारको विकासबाट प्रतिफल प्राप्त हुने सन्तुलन सहितको दिगोपना कायम गरिनेछ ।

पूर्वाधार क्षेत्रमा निजी तथा सहकारी क्षेत्रको सहभागिता एवम् लगानी अपरिहार्य छ । सार्वजनिक निजी साझेदारी र सार्वजनिक, निजी तथा सहकारी साझेदारीको सशक्त योगदानबाट निर्माण भएका भौतिक संरचनाहरूको गुणात्मक तथा उच्च व्यवस्थापकीय प्रविधिमा आधारित हुने हुँदा सन्तुलन सहितको दिगोपना हासिल गर्न थप मद्दत पुग्ने हुँदा त्यस्तो साझेदारीलाई उच्च प्राथमिकता दिइनेछ । पूर्वाधार क्षेत्रमा संलग्न निर्माण व्यवसायी तथा परामर्शदाताको पनि व्यावसायिकता र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमतामा अभिवृद्धि गरी राष्ट्रिय पुँजी निर्माणमा योगदान पुग्नेछ ।

पूर्वाधार क्षेत्रभित्र रहेका ऊर्जा, यातायात (सडक, जल यातायात, रेल मार्ग, हवाई यातायात र रज्जु मार्ग), सञ्चार, शहरी विकास लगायतका उपक्षेत्रहरूको विकास गरिनेछ । यी उपक्षेत्रहरूको समन्वयात्मक, भरपर्दो तथा सुलभ सेवा उपलब्ध हुने गरी शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा बजारमा नागरिकको सुरक्षित पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ । ऊर्जा उत्पादन तथा उपयोग, सीमित भू-भागमा आबद्ध रहेको गुणस्तरीय सडक सञ्जाल र सञ्चार सम्बन्धी पूर्वाधारलाई दिगो रूपमा सञ्चालन गरी प्रभावकारी, गुणस्तरयुक्त र विश्वसनीय बनाउँदै अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूप विस्तार गर्ने रणनीति लिइनेछ ।

ऊर्जाको क्षेत्रमा प्रक्षेपित थप ऊर्जा उत्पादन, ऊर्जा समिश्रण र सुदृढ प्रसारण तथा वितरण प्रणाली मार्फत देशभित्र स्वच्छ ऊर्जा खपतमा वृद्धि गरी वातावरण र जलवायुमा पर्ने नकारात्मक प्रभावलाई कम गर्दै लगिनेछ । यस अवधिमा देशमा ३५ हजार मेगावाट जलविद्युत र ५ हजार मेगावाट वैकल्पिक ऊर्जा उत्पादन गरी प्रतिव्यक्ति ऊर्जा खपत १९८ किलोवाट घण्टाबाट ३,५०० किलोवाट घण्टा पुऱ्याइनेछ । यस क्षेत्रको अर्थतन्त्रमा उल्लेख्य योगदान भएको हुनेछ ।

समग्र यातायात क्षेत्रको विकासले देशको आर्थिक समाजिक रूपान्तरणका लागि बलियो र भरपर्दो आधार निर्माण गर्नेछ । यातायात क्षेत्रको २५ वर्षे प्रक्षेपणलाई मध्यनजर गरी यस क्षेत्रको दीर्घकालीन आवश्यकता परिपूर्ति गर्न यातायात संरचना र सेवाको विकास तथा विस्तारका कार्यहरू योजनाबद्ध रूपमा अगाडि बढाइनेछ । अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूप आर्थिक तथा सामाजिक रूपमा दिगो यातायात संरचना निर्माण गरिनेछ । रेल, जल, हवाई, केवलकार र रोपवे लगायतका यातायात पूर्वाधारहरूलाई एकीकृत यातायात प्रणालीमा आबद्ध गरी विकास तथा विस्तार गरिनेछ । शहरी क्षेत्रमा उपयुक्त यातायात माध्यम चयन गरी वृहत परिवहन सेवा (मेट्रो, हलुका रेल परिवहन, द्रुत बस सेवा प्रणाली, ट्राम, ट्रली सेवा) को विकासमा जोड दिइनेछ । भरपर्दो रेल तथा जल यातायात सेवा मार्फत तुलनात्मक रूपमा ढुवानी खर्च बचत गर्नुका साथै क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रिय आबद्धतामा सहजता ल्याउनेछ । आधुनिक प्रविधिमा आधारित निर्माण तथा सम्भार, सञ्चालनमा व्यवस्थापकीय कुशलता र सेवाको गुणस्तरीयता सुनिश्चित गरिनेछ ।

अन्तर्राष्ट्रिय तथा क्षेत्रीय यातायात आबद्धताका लागि द्रुत र भरपर्दो साधनको रूपमा हवाई यातायातको विकास र विस्तार गरिनेछ । नेपालको विशिष्ट भू-अवस्थिति र विश्व बजारमा प्रत्यक्ष पहुँच विस्तार गर्न तथा पर्यटन प्रवर्द्धन गर्न हवाई सेवाका पूर्वाधारहरूको विकास गरिनेछ । हवाई क्षेत्रको दीर्घकालीन सोच अनुरूप आन्तरिक हवाई सञ्जाल निर्माण, विस्तार तथा स्तरोन्नति गरी प्रतिस्पर्धी तथा भरपर्दो बनाइनेछ । साथै, अन्तर्राष्ट्रिय हवाई सेवाको लागि नेपाल

प्रवेश गर्न सहज मार्गहरूको विस्तार र हरेक प्रदेशमा कम्तीमा एक आन्तरिक विमानस्थललाई क्षेत्रीय विमानस्थलमा स्तरोन्नति गरिनेछ। अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा नेपालका वायुसेवा कम्पनीको हिस्सा बढाउन जोड दिइनेछ।

सञ्चार क्षेत्रमा सर्वसुलभ प्रविधिको उच्चतम प्रयोग तथा संस्थागत क्षमता विकासमा जोड दिनुका साथै एकीकृत डिजिटल सेवाको प्रवर्द्धन गरिनेछ। सुशासन कायम गर्ने कार्यमा सूचना प्रविधिको बढ्दो प्रयोगलाई प्रोत्साहन गर्दै डिजिटल रूपान्तरणका बहुआयामिक पक्षहरूलाई कार्यान्वयन गरी डिजिटल नेपालको अवधारणालाई पूर्ण कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ। बढ्दो शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्न आधुनिक पूर्वाधारयुक्त, योजनाबद्ध, वातावरणमैत्री, विपद्प्रतिरोधी, सुरक्षित, व्यवस्थित, समावेशी, आर्थिक रूपले गतिशील र सुरम्य शहरहरूको विकास गरिनेछ। शहरीकरणलाई उत्पादन र उत्पादकत्वसँग आबद्ध गरी रोजगारी सिर्जना र आर्थिक क्रियाकलापमा विस्तार हुने गरी शहरी विकास तथा विस्तार गर्न विशेष ध्यान केन्द्रित गरिनेछ।

यस अवधिमा पूर्वाधार क्षेत्रमा आमूल परिवर्तन हुनेछ। स्वच्छ ऊर्जा उपभोगमा मुलुक समुन्नत हुनेछ। सबै बस्तीहरूमा यातायात सेवा पुऱ्याइनेछ। ७५ प्रतिशत सडक सञ्जाल सबै खालको मौसममा चल्ने पक्की सडकमा स्तरोन्नति हुनेछन्। आवश्यकताका आधारमा राष्ट्रिय रणनीतिक महत्वका चार देखि आठ लेनसम्मको पूर्व-पश्चिम एसियाली हाइवे पूर्ण रूपमा सञ्चालनमा आएको हुनेछ। साथै, केन्द्र र प्रदेश तथा प्रदेश राजधानीहरूबीच द्रुत यातायात सेवा विस्तार भएको हुनेछ। यस अवधिमा रेल तथा जल यातायात सञ्जाल विस्तार भई अन्तर्राष्ट्रिय आबद्धताका साथ सञ्चालनमा आएको हुनेछ। बस्ती तथा बजारबीचको दूरी बढीमा आधा घण्टाको मोटर यात्रामा सीमित हुनेछ। सडक, रेल, हवाई तथा जल यातायातको माध्यमबाट मुलुक अन्तर्राष्ट्रिय यातायात सञ्जालमा थप आबद्ध भएको हुनेछ। शत प्रतिशत जनसंख्या आधुनिक सञ्चारको पहुँचभित्र आबद्ध हुनेछन्। सम्पूर्ण सरकारी तथा निजी कारोबारहरूमा सञ्चार प्रविधिको उच्चतम प्रयोग भई सुशासन, विकास र समृद्धिमा सञ्चार क्षेत्रको उल्लेखनीय योगदान पुगेको हुनेछ।

व्यवस्थित शहरीकरणका साथै रोजगारी सिर्जनाको अवसर शहरी क्षेत्रमा बढी हुने हुनाले मुलुकको अधिकतम जनसंख्या जीवनयापनको लागि शहरतर्फ आकर्षित हुने हुँदा व्यवस्थित शहरहरूको आर्थिक वृद्धिमा उल्लेखनीय योगदान रहनेछ।

## ड. लोकतन्त्र र सुशासन

यस अवधिमा संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली, नागरिक स्वतन्त्रता, मौलिक अधिकार, मानव अधिकार, वालिग मताधिकार, स्वतन्त्र, निष्पक्ष, मितव्ययी र भयरहित आवधिक निर्वाचन, पूर्ण प्रेस स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र, निष्पक्ष र सक्षम न्यायपालिका, कानुनी राज्यको अवधारणाको प्रभावकारी कार्यान्वयन र आधारभूत लोकतान्त्रिक मूल्य-मान्यतालाई संस्थागत गर्दै आमनागरिकले संविधानप्रदत्त हकको प्रभावकारी उपभोग र अभ्यास गर्ने उपयुक्त लोकतान्त्रिक वातावरण निर्माण गरिनेछ। विद्यमान संस्थाको आचरण र व्यवहारमा लोकतान्त्रीकरण गर्दै जनताको प्रत्यक्ष सहभागिता, पहुँच र सामाजिक न्यायमा आधारित लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली सुदृढ भएको हुनेछ।

जवाफदेही, पारदर्शी, जनउत्तरदायी, सहभागितामूलक, गुणात्मक प्रतिस्पर्धामा आधारित, समतामूलक र सदाचारयुक्त एवम् स्वअनुशासित शासन प्रणालीलाई संस्थागत गर्दै सेवा प्रवाहमा रहेका कार्य विधिगत प्रक्रियालाई

छिटो र सहज बनाउन आधुनिक प्रविधिमा आधारित विद्युतीय शासन प्रणाली (e-governance) को विकास र विस्तार गर्दै नागरिकको तहसम्म सबै प्रकारका सेवालाई गुणस्तरीय र प्रभावकारी बनाइनेछ ।

नागरिकको व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, मर्यादित जीवन र समानताको सुनिश्चितता गरिएको हुनेछ । मानव अधिकार र सामाजिक न्यायसँग सम्बन्धित संवैधानिक र कानुनी संरचनाको संस्थागत विकास र सुदृढीकरण, सन्तुलित र दिगो विकासका लागि शान्तिपूर्ण र समतामूलक समावेशी समाजको प्रवर्द्धन, संविधानप्रदत्त मौलिक हकको प्रभावकारी कार्यान्वयन र आमनागरिकले पहुँचयोग्य सामाजिक न्याय मार्फत मानव अधिकारको उपभोग र अभ्यास गरेका हुनेछन् ।

#### च. अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र

दीर्घकालीन सोच प्रासिका लागि अन्तरसम्बन्धित विषयहरूले दीर्घकालीन उपलब्धिलाई प्रत्यक्ष र परोक्ष रूपमा प्रभाव पार्ने सन्दर्भमा राज्यका नीति, योजना तथा कार्यक्रमहरूले सम्बोधन गर्नुपर्ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा वातावरणीय आयामहरू समेटिएका अन्तरसम्बन्धित विषयहरूमा एउटा क्षेत्रमा भएको परिवर्तन वा उपलब्धिको प्रभावबाट अन्य क्षेत्रको उपलब्धि हासिल गर्न सहयोग पुग्नेगरी नीतिगत, प्रणालीगत तथा संरचनागत सुधार गरिनेछ ।

सबैका लागि मर्यादित रोजगारीका अवसरको सुनिश्चितता, अनौपचारिक क्षेत्रमा रहेको श्रमको औपचारिकीकरणका साथै सबै श्रमिकहरूलाई सामाजिक सुरक्षाको दायरामा ल्याइनेछ । असल श्रम सम्बन्धको स्थापना र श्रमिकको क्षमता अभिवृद्धि गरी श्रमको उत्पादन र उत्पादकत्व तथा आय र जीवनस्तरमा उल्लेखनीय सुधार गरिनेछ ।

सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी कोषहरूको दिगो व्यवस्थापन सहित योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा अधिकांश नागरिकलाई आबद्ध गराउँदै समतामूलक र न्यायपूर्ण समाजको निर्माण गरिनेछ । सामाजिक सुरक्षामा योगदान गर्न नसक्ने एवम् आफ्नो जीवनयापन आफै गर्न नसक्ने अशक्त, अपाङ्गता भएका व्यक्ति तथा असहाय व्यक्तिलाई जीवनयापनको प्रत्याभूति र सामाजिक संरक्षण प्रदान गरिनेछ । साथै, रोजगारी, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा लगायतका मौलिक हकको प्राप्तिमा समेत सामाजिक संरक्षण प्रदान गरिनेछ । हरेक किसिमका विपद् व्यवस्थापनका लागि योजना तर्जुमा गरी यसका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा संस्थागत प्रणाली विकास गरिनेछ ।

प्राविधिक हिसाबले कुशल तथा नवप्रवर्तनशील हुने गरी युवा उद्यमशीलताको विकास गरिनेछ । आविष्कार र नवप्रवर्तनका लागि उपयुक्त वातावरण सिर्जना गर्न लगानी, बौद्धिक सम्पत्तिको अधिकार सम्बन्धी कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्था सहितको स्वचालित संयन्त्र र युवा उद्यमीहरूलाई जोखिम वहनका लागि प्रोत्साहन गर्न विभिन्न कोषहरूको व्यवस्था गरिनेछ । निजी क्षेत्रको सहकार्यमा उद्यमशीलता विकास केन्द्रहरूको स्थापना गरिनेछ । नेपालबाट दर्ता भएका बौद्धिक अधिकार सम्बन्धी पेटेन्ट, डिजाइन, भौगोलिक पहिचान, औद्योगिक डिजाइन, युटिलिटी मोडेल, ट्रेडमार्क, कपिराइट आदिको संख्या अन्तर्राष्ट्रिय बौद्धिक सम्पत्ति संस्थाको विश्वव्यापी डाटाबेसमा उल्लेख्य वृद्धि हुनेछ ।

प्रत्येक नगरपालिकाको कम्तिमा १० प्रतिशत क्षेत्रमा हरियाली प्रवर्द्धन गरिनेछ। पच्चीस वर्षमा वायु प्रदूषणको मात्रा (PPM 2.5) सबै शहरहरूमा ३० माइक्रोग्राम प्रति घनमिटरभन्दा कम हुने अवस्था सिर्जना गरिनेछ। नेपालका औद्योगिक शहरहरूमा फोहोरमैला व्यवस्थापनका लागि आधुनिक प्रविधिमा आधारित यन्त्रशालाहरू स्थापना गरी व्यवस्थित गरिनेछ। कुहिने र सड्ने फोहोरबाट प्रांगारिक मल बनाई कृषिमा प्रयोग गरिनेछ। देशका सबै क्षेत्रहरूमा हरितगृह ग्यास उत्सर्जनमा कमी ल्याउने र वातावरण सम्बन्धी अद्यावधिक तथ्याङ्क (Real Time Data) तयार गरिनेछ। यो समयमा खनिज ऊर्जा खपतलाई स्वच्छ विद्युतीय ऊर्जा मार्फत प्रतिस्थापन गर्दै यसको हिस्सा ५० प्रतिशतभित्र सीमित गरिनेछ।

तथ्य र ज्ञानमा आधारित विकासका माध्यमबाट असल, सिर्जनशील र विश्लेषणात्मक सीपयुक्त जनशक्ति विकास गरी समृद्ध राष्ट्र निर्माण गर्नका लागि विज्ञान, प्रविधि र अनुसन्धानमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको २.५ प्रतिशतसम्म लगानी गरिनेछ। यसले गर्दा अनुसन्धान तथा विकासका लागि शैक्षिक प्रणालीमा सुधार, अनुसन्धान तथा विकासलाई प्रोत्साहन, सिर्जनशीलता र सिर्जनाको संरक्षण र सम्बर्द्धन गरिनेछ। अनुसन्धानबाट प्राप्त नतिजाहरूको आधारमा वस्तु तथा सेवाको गुणस्तर अभिवृद्धि गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ। अनुसन्धान तथा विकासका लागि आवश्यक तथ्याङ्क प्रणालीको सुदृढीकरण गरिनेछ।

आवधिक योजनाहरूले प्राप्त गर्न खोजेको उच्च आर्थिक वृद्धिमा महिलाको समेत महत्वपूर्ण योगदान रहने तथा विगत देखिनै लैङ्गिक समतासँग सम्बन्धित बिभिन्न क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन मार्फत महिला सशक्तिकरणलाई जोड दिँदै आएको सन्दर्भमा नेपालले लैङ्गिक समानता भएको राष्ट्रको रूपमा पहिचान बनाउनेछ। यस क्रममा लैङ्गिक उत्तरदायी शासन व्यवस्थालाई संस्थागत गर्दै महिलाको सम्मानित जीवनयापनको वातावरण सुनिश्चित गरिने साथै महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव, हिंसा र शोषणको अन्त्य भएको हुनेछ।

अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा गरिएको प्रतिबद्धताअनुरूप बाल अधिकारको सुनिश्चितता भएको हुनेछ। यस क्रममा बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने शारिरीक र मानसिक लगायत सबै प्रकारका हिंसा, विभेद, दुर्व्यवहार, शोषण र उपेक्षाको अन्त्य गर्दै बालमैत्री समाजको निर्माण हुनेछ।

## छ. गरिबी, असमानता र प्रादेशिक सन्तुलन

यस अवधिमा सबै प्रकारका गरिबी, विभेद तथा वञ्चितिकरणको अन्त्य र समाजमा व्याप्त आर्थिक असमानता उल्लेख्य मात्रामा कम गरिनेछ। हाल विद्यमान १८.७ प्रतिशत निरपेक्ष गरिबीको दरलाई वि.सं. २०८७ सम्ममा ४.९ प्रतिशतमा कम गरी वि.सं. २१०० सम्ममा अन्त्य गरिनेछ। बहुआयामिक गरिबीमा रहेका २८.६ प्रतिशत जनसंख्यालाई वि.सं. २०८७ सम्ममा १० प्रतिशत र वि.सं. २१०० सम्ममा ३ प्रतिशतमा झार्नका लागि लक्षित कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। यसैगरी उपभोग खर्च र सम्पत्तिको स्वामित्वमा आधारित असमानता व्यक्त गर्ने जिनि गुणक क्रमशः कम गर्दै लगिनेछ।

संविधानप्रदत्त मौलिक हकहरूको कार्यान्वयन गर्न कानुनी र संस्थागत व्यवस्था गरी गरिबीको अन्त्य र असमानता कम गर्नेतर्फ राज्यका संयन्त्रहरू परिचालन गरिनेछ। तहगत सरकार, निजी तथा गैरसरकारी क्षेत्र, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको सहकार्य, समन्वय र सहयोगमा गरिब तथा न्यून आय भएका नागरिक लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन

गरिनेछ। रोजगार तथा स्वरोजगारमूलक सीप विकास तालिम र शैक्षिक कार्यक्रम सञ्चालन गर्नुका अतिरिक्त शिक्षा, स्वास्थ्य र रोजगारीका अवसरहरूमा सबै गरिबको पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ। उत्पादनका साधनहरू सीमित व्यक्तिहरूको हातमा केन्द्रित हुन नदिई तिनीहरूको प्रयोगमा गरिबवर्गको पहुँच वृद्धि गरिनेछ। तीन तहका सरकारहरूबाट गरिबी र असमानता न्यूनीकरण लक्षित कार्यक्रम र आयोजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्ने नीतिगत र संस्थागत प्रबन्ध गरिनेछ। उत्पादन तथा उत्पादकत्व वृद्धि, सामाजिक सुरक्षाको विस्तार, आरक्षण र सकारात्मक विभेदका रणनीति तथा कार्यक्रमहरू अवलम्बन गरी गरिबी र असमानता कम गरिनेछ।

यस अवधिमा सामाजिक-आर्थिक लगायत समग्र विकासका क्षेत्रमा प्रदेशहरूबीच रहेको असमानता र असन्तुलन कम गर्ने लक्ष्य लिइएको छ। आमनागरिकको देशप्रति सम्मान भावना तथा अपनत्व सिर्जना हुने गरी समतामूलक प्रादेशिक विकासका रणनीतिहरू अवलम्बन गरिनेछ। हरेक प्रदेशका बासिन्दाले विकासका प्रतिफलको समान उपयोगका अवसर प्राप्त गरी आफ्नो जीवनस्तरमा गुणात्मक सुधार भएको अनुभूति गर्न पाउने अवस्था सिर्जना गरिनेछ। संविधानले मार्गदर्शन गरेबमोजिम उपलब्ध स्रोत, साधन र अवसरहरूमा प्रदेशका नागरिकको समान पहुँच, प्रयोग र प्रतिनिधित्व हुन सक्ने अवस्था सिर्जना गर्न सकारात्मक विभेद, आरक्षण र विशेष लक्षित कार्यक्रमहरूको कार्यान्वयन गरिनेछ। हाल उपभोग र सम्पत्तिको असमानता, मानव विकास, गरिबी, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, सुविधा, पोषण आदि सूचक अनुसार सापेक्षिक रूपमा कमजोर देखिएका प्रदेश नं. २, कर्णाली प्रदेश र सुदूर पश्चिम प्रदेशहरूको विकासमा अन्य प्रदेशहरूसँग समता कायम गर्न सन्तुलित विकासका रणनीति अवलम्बन गरिनेछ। विकास सूचकांकलाई आधार लिई सबै प्रदेशमा भौतिक तथा सामाजिक-आर्थिक पूर्वाधारहरूको समानुपातिक विकास गरिनेछ।

प्रदेशहरूको बीचमा रहेको असन्तुलनका सम्पूर्ण आयामको सामयिक विश्लेषण गरी वित्तीय हस्तान्तरण, राजस्वको बाडफाँट र प्राकृतिक स्रोत-साधनको उपयोगलाई अद्यावधिक सूचकमा आधारित बनाइनेछ। एक प्रदेश वा स्थानीय तहले अवलम्बन गरेका विकासका असल अभ्यास अर्को प्रदेश वा स्थानीय तहले अनुकरण गर्ने र आपसमा स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक विकासका अभियान सञ्चालन गर्नेतर्फ प्रदेश र स्थानीय तहलाई उत्प्रेरित गरिनेछ। प्रादेशिक असन्तुलन कम गर्न संघ, प्रदेश र स्थानीय तहहरूबीचको आपसी समन्वय, सहकार्य र सहयोग परिचालन गरिनेछ।

## परिच्छेद – ३

# पन्ध्रौं योजना

(आर्थिक वर्ष २०७६/७७-२०८०/८१)

### ३.१ पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानमा समुन्नत, स्वाधीन र समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्रको निर्माण गर्ने परिकल्पना गरिएको छ। तीव्र र सन्तुलित आर्थिक विकास, समृद्धि, सुशासन र नागरिकले सुखको अनुभूति प्राप्त गर्ने दूरदृष्टि पन्ध्रौं योजनाले राखेको छ। संघीय संरचनामा तीन तहको कुशल अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन र निजी, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रसँगको सहकार्यद्वारा लक्षित उद्देश्य हासिल गर्ने यो पहिलो योजना हुनेछ। यस योजनाले वर्तमान पुस्ताले नै अनुभूत गर्ने गरी समृद्धि र सुख प्राप्ति गर्ने र समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्रको आधार निर्माण गर्नेछ। आय वृद्धि, गुणस्तरीय मानव पुँजी निर्माण र आर्थिक जोखिमहरूको न्यूनीकरण गर्दै वि.सं. २०७९ सम्ममा अतिकम विकसित मुलुकबाट विकासशील देशमा स्तरोन्नति गर्ने र वि.सं. २०८७ सम्ममा दिगो विकास लक्ष्यलाई हासिल गर्ने सोच सहित उच्च मध्यम आयस्तर भएको मुलुकमा पुग्ने गरी पन्ध्रौं योजनाको आधार पत्र तर्जुमा गरिएको छ।

यस योजना अवधिमा उत्पादनशील रोजगारी सिर्जना, न्यायोचित वितरण तथा सामाजिक संरक्षण र सुरक्षा सहितको आर्थिक वृद्धि हासिल गर्ने गरी मुलुकमा उपलब्ध सम्पूर्ण स्रोत-साधनको महत्तम परिचालन गरिनेछ। यसका लागि आर्थिक गतिविधिमा विस्तार एवम् गतिशीलता ल्याउने गरी लगानी केन्द्रित गरिनेछ। निजी, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रलाई एकअर्काको परिपूरकका रूपमा परिचालन गरिनेछ। यी क्षेत्रहरूबाट गरिने लगानी, उत्पादकत्व अभिवृद्धि तथा उद्यमशीलता प्रवर्द्धनद्वारा अर्थतन्त्रलाई उत्पादनमुखी, रोजगारमूलक र आत्मनिर्भर बनाउँदै अर्थतन्त्रको संरचनात्मक परिवर्तन गर्नेतर्फ उन्मुख गरिनेछ। संघीय संरचना बमोजिम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको बीचमा सहकारिता, सहअस्तित्व र समन्वयको सिद्धान्तका आधारमा आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय र सुशासन सम्बन्धी लक्ष्यहरू हासिल गर्नेगरी योजना कार्यान्वयन गरिनेछ। सामाजिक न्यायमा आधारित समतामूलक समाज निर्माण गर्नेतर्फ योजना लक्षित हुनेछ। अन्तर्राष्ट्रिय र क्षेत्रीयस्तरमा गरिएका प्रतिबद्धताको आन्तरिकीकरण गर्दै अर्थतन्त्रका सहयोगी क्षेत्रको परिचालनद्वारा रूपान्तरणका सम्वाहकको क्षेत्रमा लगानी केन्द्रित गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रको आकार वृद्धि गर्नेतर्फ योजनामा जोड दिइएको छ। आन्तरिक तथा बाह्य स्रोत र साधन तथा अन्तरसरकारी वित्तको परिचालनद्वारा तीन तहको सरकारको कार्यमा सामञ्जस्यता कायम गरी आर्थिक समृद्धि र नागरिक सुखको अनुभूतिको आधार निर्माण गर्नेतर्फ यो योजना केन्द्रित रहनेछ।

## ३.२ चुनौती तथा अवसर

समन्यायिक आर्थिक समृद्धि र नागरिकको जीवनमा गुणात्मक सुधार गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण छ। यसका लागि आधुनिक पूर्वाधार र गुणस्तरीय मानव पुँजी निर्माण गर्दै तीव्र आर्थिक वृद्धि हासिल गर्न जरूरी हुन्छ। निरपेक्ष र बहुआयामिक गरिबीको अन्त्य र आय असमानता सारभूत रूपमा घटाउन ठूलो स्रोत र साधनको आवश्यकता पर्दछ। यसैगरी व्यवस्थित शहरीकरण, एकीकृत एवम् सुरक्षित बस्ती विकास, ग्रामीण पूर्वाधार विकास, स्वच्छ ऊर्जाको उपभोगमा वृद्धि र सूचना प्रविधिको विकास गर्ने कार्य समेत त्यतिकै महत्त्वपूर्ण रहेको छ। कृषि र वनजन्य उत्पादनमा व्यावसायीकरण, उद्योग क्षेत्रको विस्तार र सेवा क्षेत्रको गुणस्तरीयता अभिवृद्धि गर्दै उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्नु पनि उत्तिकै चुनौतीपूर्ण छ। स्वस्थ र शिक्षित नागरिक एवम् दक्ष मानव संसाधनको विकासद्वारा उत्पादनशील रोजगारीका अवसर अभिवृद्धि गरी जनसांख्यिक लाभको उपयोग गर्ने कार्य र समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्दै वित्तीय संघीयताको कुशल र प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने कार्य समेत चुनौतीपूर्ण छ।

संविधानले प्रत्याभूत गरेका मौलिक हकको क्रमशः कार्यान्वयन र दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्नका लागि ठूलो मात्रामा स्रोत र साधन आवश्यक पर्दछ। आमनागरिकको परिष्कृत एवम् मर्यादित जीवनयापनको वातावरण सिर्जना र सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण प्रदान गर्दै न्यायपूर्ण समाजको निर्माण गर्ने कार्य कठिन छ। साथै, विपद् जोखिम न्यूनीकरण गर्दै उत्थानशीलता र जलवायु अनुकूलनशीलता हासिल गर्ने कार्य पनि उत्तिकै चुनौतीपूर्ण रहेको छ। संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका कार्य जिम्मेवारी पूरा गर्न साधन-स्रोतको लागत अनुमान, वितरण र जनशक्ति एवम् संस्थागत प्रबन्ध गर्ने कार्य पनि चुनौतीको रूपमा रहेको छ।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा क्रियाशील सरकार र संस्थागत स्थायित्वका कारण मुलुक सामाजिक न्याय सहित आर्थिक समृद्धिको दिशामा अगाडि बढ्नु र प्रदेश तथा स्थानीय तहमा दिगो विकास, समृद्धि र सुशासनका क्षेत्रमा हुने प्रतिस्पर्धी भावना आफैमा अवसरको रूपमा रहेको छ। साथै, उपलब्ध जनसांख्यिक लाभलाई मानव पुँजी निर्माणको माध्यमद्वारा मुलुकको विकासमा उपयोगको सम्भावना उच्च छ। अर्थतन्त्रका सहयोगी क्षेत्रको परिचालन र रूपान्तरणका सम्बाहक क्षेत्रको पहिचान गरी लगानी केन्द्रित गर्न सहज वातावरण निर्माण हुनु, प्रदेश र स्थानीय तहमा हुने वित्तीय हस्तान्तरणबाट पुँजीगत खर्च र गुणस्तर अभिवृद्धिले सार्वजनिक सेवा प्रवाहमा सुधार हुने अवस्था रहनु, स्थानीय अर्थतन्त्रको विकासबाट रोजगारी, आय-आर्जन र गरिबी न्यूनीकरण एवम् राष्ट्रिय उत्पादनमा बढोत्तरी आउने सम्भावना रहनुका साथै प्राकृतिक, भौगोलिक, जैविक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक साँस्कृतिक विविधताको बहुआयामिक उपयोग अवसरको रूपमा रहेको छ।

निजी क्षेत्रको लगानी, व्यावसायिकता र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि तथा सामुदायिक र सहकारी क्षेत्रको उत्पादनशील क्षेत्रमा परिचालनद्वारा राष्ट्रिय पुँजी निर्माणमा ठूलो योगदान पुग्ने सम्भावना छ। योजना अवधिमा अर्थतन्त्रका सम्बाहक क्षेत्र र रूपान्तरणकारी कार्यक्रम/आयोजनामा हुने लगानीले अर्थतन्त्रको आकारमा हुने वृद्धि र सोबाट प्राप्त हुने प्रतिफलको न्यायोचित वितरणबाट समतामूलक समाज निर्माणमा सहयोग पुग्ने देखिन्छ। आन्तरिक स्रोततर्फ वित्त दायरा विस्तार गरी सार्वजनिक लगानी अभिवृद्धि हुने सम्भावना रहेको छ। अन्तर सरकार साझेदारी र

सार्वजनिक निजी साझेदारीबाट पुँजी निर्माणको लागि आवश्यक लगानी परिचालन गर्न सक्ने अवस्था देखा परेको छ । साथै, द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय विकास साझेदारबाट प्राप्त प्रतिबद्धताले स्रोतको सुनिश्चितता प्रदान गर्दछ । आर्थिक, सामाजिक र भौतिक पूर्वाधारको विकासबाट सेवा क्षेत्रको विस्तारले अर्थतन्त्रको उत्पादन र उत्पादकत्व बढोत्तरीमा मद्दत पुग्नेछ । यसबाट उत्पादनशील रोजगारी सिर्जना, निर्यात अभिवृद्धि र आयात व्यवस्थापनका माध्यमबाट समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम भई समृद्धि हासिल गर्न सहयोग पुग्न जानेछ ।

### ३.३ राष्ट्रिय लक्ष्य

पन्ध्रौँ योजना “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली”को दीर्घकालीन सोच हासिल गर्ने आधार योजनाको रूपमा रहनेछ । सो बमोजिम समृद्ध अर्थतन्त्र, सामाजिक न्याय तथा परिष्कृत जीवन सहितको समाजवाद उन्मुख लोककल्याणकारी राज्यको रूपमा रूपान्तरण गर्दै उच्च आयस्तर भएको मुलुकमा स्तरोन्नति हुने आधार निर्माण गर्ने यस योजनाको राष्ट्रिय लक्ष्य रहेको छ ।

### ३.४ प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरू

योजनाका परिमाणात्मक राष्ट्रिय लक्ष्य र गन्तव्य देहाय बमोजिम रहेका छन् ।

तालिका ३.१ समृद्धिका राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक   | एकाई        | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२०८०/८१<br>को लक्ष्य |
|---------|--|-------------|------------------------------|------------------------------|
| १       | उच्च र समतामूलक राष्ट्रिय आय   |             |                              |                              |
| १.१     | औद्योगिक राष्ट्रको स्तरको उच्च आय  |             |                              |                              |
| १.१.१   | आर्थिक वृद्धिदर <sup>१</sup>   | प्रतिशत     | ६.८                          | १०.३                         |
| १.१.२   | प्रतिव्यक्ति कुल राष्ट्रिय आय <sup>१</sup>                               | अमेरिकी डलर | १,०४७                        | १,५९५                        |
| १.२     | गरिबीको अन्त्य   |             |                              |                              |
| १.२.२   | गरिबीको रेखामुनि रहेको जनसंख्या (निरपेक्ष गरिबी) <sup>२</sup>            | प्रतिशत     | १८.७                         | ११                           |
| १.३     | राष्ट्रिय आम्दानीमा तल्लो ४० प्रतिशत जनसंख्याको हिस्सा                   |             |                              |                              |
| १.३.१   | आम्दानीमा माथिल्लो १० र तल्लो ४० प्रतिशत जनसंख्याको अनुपात (Palma ratio) | अनुपात      | १.३                          | १.२५                         |
| १.३.२   | सम्पत्तिमा आधारित जिनी गुणक (Gini Coefficient) <sup>३</sup>              | गुणक        | ०.३१                         | ०.२९                         |
| २       | मानव पुँजी निर्माण तथा सम्भावनाको पूर्ण उपयोग                            |             |                              |                              |

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक  | एकाई    | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२०८०/८१<br>को लक्ष्य |
|---------|---|---------|------------------------------|------------------------------|
| २.१     | स्वस्थ र लामो आयु भएका नेपाली   |         |                              |                              |
| २.१.१   | अपेक्षित आयु (जन्म हुँदाको)   | वर्ष    | ६९.७                         | ७२                           |
| २.१.२   | मातृ मृत्युदर (प्रतिलाख जीवित जन्ममा)   | संख्या  | २३९                          | ९९                           |
| २.१.३   | ५ वर्ष मुनिका बाल मृत्युदर (प्रतिहजार जीवित जन्ममा) <sup>३</sup>              | संख्या  | ३९                           | २४                           |
| २.२     | गुणस्तरीय, रोजगारमूलक तथा जीवनोपयोगी शिक्षा प्राप्त नागरिक                    |         |                              |                              |
| २.२.१   | साक्षरता दर (१५ वर्ष माथि) <sup>४</sup>                                       | प्रतिशत | ५८                           | ९०                           |
| २.२.२   | युवा साक्षरता दर (१५-२४ वर्ष) <sup>४</sup>                                    | प्रतिशत | ८५                           | ९९                           |
| २.२.३   | आधारभूत तह (१-८) मा खुद भर्नादर   | प्रतिशत | ९२.३                         | ९९.५                         |
| २.२.४   | माध्यमिक तह (९-१२) मा खुद भर्नादर   | प्रतिशत | ४३.९                         | ६५                           |
| २.२.५   | उच्च शिक्षामा कुल भर्नादर   | प्रतिशत | ९.५                          | २२                           |
| २.२.६   | काम गर्ने उमेर समूहका प्राविधिक र व्यावसायिक क्षेत्रमा तालिम प्राप्त जनसंख्या | प्रतिशत | २५                           | ६०                           |
| २.३     | उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारी   |         |                              |                              |
| २.३.१   | श्रम सहभागिता दर (१५ वर्ष माथि)   | प्रतिशत | ३८.५                         | ४८.५                         |
| २.३.२   | बेरोजगारी दर  | प्रतिशत | ११.४                         | ६                            |
| २.३.३   | रोजगारीमा औपचारिक क्षेत्रको हिस्सा  | प्रतिशत | ३६.५                         | ५०                           |
| ३       | सर्वसुलभ आधुनिक पूर्वाधार एवम् सघन अन्तरआबद्धता                               |         |                              |                              |
| ३.१     | सर्वसुलभ, सुरक्षित र आधुनिक यातायात   |         |                              |                              |
| ३.१.१   | राष्ट्रिय र प्रादेशिक लोकमार्ग (स्तरोनति/कालोपत्रे)                           | कि.मि.  | ६,९७९                        | १५,०००                       |
| ३.१.२   | द्रुत लोकमार्ग (भूमिगत मार्ग समेत)  | कि.मि.  | ०                            | ७६                           |
| ३.१.३   | रेलमार्ग  | कि.मि.  | ४२                           | २००                          |
| ३.२     | पूर्वाधारमा पहुँच तथा आबद्धता   |         |                              |                              |

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक   | एकाई                    | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२०८०/८१<br>को लक्ष्य |
|---------|--|-------------------------|------------------------------|------------------------------|
| ३.२.१   | ३० मिनेट सम्मको दुरीमा यातायात पहुँच भएको परिवार                                     | प्रतिशत                 | ७८.९                         | ९५                           |
| ३.२.२   | विद्युतमा पहुँच प्राप्त परिवार   | प्रतिशत                 | ९०.७                         | ९९                           |
| ३.२.३   | आधारभूत खानेपानी सुविधा पुगेको जनसंख्या  | प्रतिशत                 | ८८                           | ९९                           |
| ३.२.४   | उच्च मध्यम स्तरको खानेपानी सुविधा पुगेको जनसंख्या                                    | प्रतिशत                 | २०                           | ४०                           |
| ३.२.५   | इन्टरनेट प्रयोगकर्ता (कुल जनसंख्यामा)  | प्रतिशत                 | ५५.४                         | ८०                           |
| ४       | <b>उच्च र दिगो उत्पादन तथा उत्पादकत्व</b>  |                         |                              |                              |
| ४.१     | <b>अर्थतन्त्रमा क्षेत्रगत योगदान</b>   |                         |                              |                              |
| ४.१.१   | प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, वन र खानि) <sup>१</sup>                                      | प्रतिशत                 | २७.६                         | २३.०                         |
| ४.१.२   | द्वितीय क्षेत्र (उत्पादनमूलक उद्योग, विद्युत, ग्यास र पानी तथा निर्माण) <sup>२</sup> | प्रतिशत                 | १४.६                         | १८.१                         |
| ४.१.३   | तृतीय क्षेत्र (सेवा) <sup>३</sup>  | प्रतिशत                 | ५७.८                         | ५८.९                         |
| ४.२     | <b>स्वच्छ ऊर्जाको उत्पादन तथा उपभोग</b>  |                         |                              |                              |
| ४.२.१   | जलविद्युत उत्पादन (जडित क्षमता)  | मेगावाट                 | १,०२०                        | ५,०००                        |
| ४.२.२   | प्रतिव्यक्ति विद्युत उपभोग   | किलोवाट घण्टा           | १९८                          | ७००                          |
| ४.२.३   | ऊर्जा उपभोगमा नवीकरणीय ऊर्जाको अनुपात  | प्रतिशत                 | ५                            | १२                           |
| ४.३     | <b>व्यापार सन्तुलन</b>   |                         |                              |                              |
| ४.३.१   | वस्तु तथा सेवाको निर्यात (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा)                         | अनुपात                  | ९.०                          | १५.७                         |
| ४.३.२   | वस्तु तथा सेवाको आयात (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा)                            | प्रतिशत                 | ५०.८                         | ५१.०                         |
| ४.४     | <b>राष्ट्रिय तथा क्षेत्रगत उत्पादकत्व</b>  |                         |                              |                              |
| ४.४.१   | श्रम उत्पादकत्व  | रू. हजारमा              | १८४.६                        | २७६                          |
| ४.४.१   | कृषि उत्पादकत्व (प्रमुख बाली)  | मेट्रिक टन प्रति हेक्टर | २.९७                         | ४                            |

स्रोत: १. आ.व. २०७५/७६ को प्रारम्भिक अनुमान, राष्ट्रिय लेखा; २. केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको आ.व. २०७५/७६ को अनुमान; ३. नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण-२०१६; ४. राष्ट्रिय जनगणना, २०६८।

**तालिका ३.२ सुखका राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक**

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक   | एकाई    | आ.व. २०७४/७५ को यथार्थ | आ.व. २०८०/८१ को लक्ष्य |
|---------|--|---------|------------------------|------------------------|
| १       | परिष्कृत तथा मर्यादित जीवन   |         |                        |                        |
| १.१     | नागरिक स्वस्थता तथा सन्तुष्टि  |         |                        |                        |
| १.१.१   | ५ वर्ष मुनिका कम तौल भएका बालबालिका <sup>१</sup>                                 | प्रतिशत | २७                     | १५                     |
| १.१.२   | मानव विकास सूचकांक <sup>२</sup>  | सूचकांक | ०.५७४                  | ०.६२४                  |
| १.१.३   | नागरिक सन्तुष्टिको अनुभूति सूचकांक <sup>३</sup>                                  | सूचकांक | ४.७                    | ५.१                    |
| १.१.४   | बहुआयामिक गरिबीमा रहेको जनसंख्या <sup>३</sup>                                    | प्रतिशत | २८.६                   | १३                     |
| १.२     | सुरक्षित तथा सुविधासम्पन्न आवास  |         |                        |                        |
| १.२.१   | सुरक्षित (भवन आचार संहिताको मापदण्ड अनुसार निर्मित) आवासमा बसोबास गर्ने जनसंख्या | प्रतिशत | ३७.८                   | ६०                     |
| १.३     | भौतिक तथा आधुनिक सम्पत्ति माथिको समतामूलक पहुँच वा स्वामित्व                     |         |                        |                        |
| १.३.१   | आफ्नै स्वामित्वको आवासमा बसोबास गर्ने परिवार <sup>४</sup>                        | प्रतिशत | ८५.३                   | ८९                     |
| १.३.२   | सार्वजनिक धितोपत्रमा लगानी गर्ने जनसंख्या  | प्रतिशत | ४.४                    | २०                     |
| १.३.३   | लैंगिक विकास सूचकांक <sup>३</sup>  | सूचकांक | ०.९२५                  | ०.९६३                  |
| २       | सुरक्षित, सभ्य र न्यायपूर्ण समाज   |         |                        |                        |
| २.१     | विभेद, हिंसा र अपराधमुक्त समाज   |         |                        |                        |
| २.१.१   | जीवनकालमा शारीरिक वा मानसिक वा यौन हिंसा पीडित महिला                             | प्रतिशत | २६.३                   | १३                     |
| २.१.२   | दर्ता भएका लैंगिक हिंसा लगायतका अपराधका घटना र अनुसन्धानको अनुपात                | अनुपात  | ८६.७                   | १००                    |
| २.२     | सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता   |         |                        |                        |
| २.२.१   | मातृभाषामा पठन-पाठन हुने विद्यालय  | संख्या  | २७०                    | ३२४                    |
| २.३     | सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण  |         |                        |                        |

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक                              | एकाई                            | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२०८०/८१<br>को लक्ष्य |
|---------|---|---------------------------------|------------------------------|------------------------------|
| २.३.१   | राष्ट्रिय बजेटमा सामाजिक सुरक्षा खर्च                         | प्रतिशत                         | ११.३                         | १३.७                         |
| २.३.२   | आधारभूत सामाजिक सुरक्षामा आबद्ध जनसंख्या                      | प्रतिशत                         | १७                           | ६०                           |
| ३       | स्वस्थ र सन्तुलित पर्यावरण                                    |                                 |                              |                              |
| ३.१     | प्रदूषणमुक्त र स्वच्छ वातावरण                                 |                                 |                              |                              |
| ३.१.१   | वायु प्रदूषणको औसत मात्रा (पि पि एम २.५)                      | माइक्रोग्राम<br>प्रति<br>घनमिटर | ५३                           | ४०                           |
| ३.२     | जैविक विविधता संरक्षण र पर्यावरणीय सन्तुलन                    |                                 |                              |                              |
| ३.२.१   | लोपोन्मुख, सड्कटापन्न र जोखिममा परेका प्रजाति/वनस्पति संरक्षण | संख्या                          | ५८९                          | ५८९                          |
| ३.३     | जलवायु परिवर्तन अनुकूलनशीलता                                  |                                 |                              |                              |
| ३.३.१   | अनुकूलन योजना तयार भई कार्यान्वयन भएका स्थानीय तह             | संख्या                          | २१७                          | ५५०                          |
| ३.४     | विपद् उत्थानशील समाज र अर्थतन्त्र                             |                                 |                              |                              |
| ३.४.१   | विपद्का घटनाबाट प्रभावित जनसंख्या                             | प्रति हजार                      | १९.५                         | ५                            |
| ३.४.२   | विपद्का घटनाबाट मृत्यु हुने जनसंख्या                          | प्रति लाख                       | १.७                          | १.०९                         |
| ४       | सुशासन  |                                 |                              |                              |
| ४.१     | कानुनी शासन   |                                 |                              |                              |
| ४.१.१   | कानुनी शासन सूचकांक <sup>५</sup>                              | सूचकांक                         | ०.५३                         | ०.५८                         |
| ४.२     | सार्वजनिक सदाचार, पारदर्शिता र जवाफदेहिता                     |                                 |                              |                              |
| ४.२.१   | भ्रष्टाचार अनुभूति सूचकांक                                    | सूचकांक                         | ३१                           | ४१                           |
| ४.२.२   | 'हेलो सरकार'मा प्राप्त उजुरीको फछ्यौट                         | प्रतिशत                         | ४८.१३                        | ९८                           |
| ५       | सबल लोकतन्त्र   |                                 |                              |                              |
| ६       | राष्ट्रिय एकता, सुरक्षा र सम्मान                              |                                 |                              |                              |
| ६.१     | नेपालीत्वको उच्च भावना  |                                 |                              |                              |
| ६.१.१   | राष्ट्रिय परिचयपत्र प्राप्त गरेका नेपाली नागरिक               | प्रतिशत                         | -                            | १००                          |

| क्र.सं. | राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक                                       | एकाई    | आ.व.<br>२०७४/७५<br>को यथार्थ | आ.व.<br>२०८०/८१<br>को लक्ष्य |
|---------|--|---------|------------------------------|------------------------------|
| ६.२     | मानव तथा अन्य सुरक्षा  |         |                              |                              |
| ६.२.१   | पाँच वर्षमुनिका बालबालिकाको जन्म दर्ता <sup>१</sup>                    | प्रतिशत | ५६                           | १००                          |
| ६.२.२   | आधारभूत खाद्य सुरक्षाको स्थितिमा रहेका परिवार <sup>१</sup>             | प्रतिशत | ४८.२                         | ८०                           |
| ६.३     | अत्यावश्यक वस्तु र सेवामा आत्मनिर्भरता                                 |         |                              |                              |
| ६.३.१   | कुल आयातमा अत्यावश्यक वस्तु (कृषि उपज, जीवजन्तु र खाद्य पदार्थ) को अंश | प्रतिशत | १४.७                         | ५                            |

स्रोत: १. नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण-२०१६; २. मानव विकास प्रतिवेदन-२०१८; ३. बहुआयामिक गरिबीको प्रतिवेदन, २०१८; ४. राष्ट्रिय जनगणना-२०६८; ५. कानुनी शासन सूचकांक-२०१८।

योजनाले परिलक्षित गरेका माथि उल्लेखित राष्ट्रिय लक्ष्यहरू हासिल गर्न समष्टिगत आर्थिक खाका सहितको खण्डीकृत प्रादेशिक लक्ष्यहरू योजनाको विस्तृत दस्तावेजमा समावेश गरिनेछन्।

### ३.५ राष्ट्रिय उद्देश्य

१. सर्वसुलभ, गुणस्तरीय र आधुनिक पूर्वाधार निर्माण, उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारी अभिवृद्धि, उच्च, दिगो र समावेशी आर्थिक वृद्धि तथा गरिबी निवारण गर्दै समृद्धिको आधार निर्माण गर्नु।
२. गुणस्तरीय स्वास्थ्य तथा शिक्षा, स्वस्थ तथा सन्तुलित वातावरण, सामाजिक न्याय र जवाफदेही सार्वजनिक सेवा कायम गरी संघीय शासन व्यवस्थाको सुदृढीकरण गर्दै नागरिकलाई मर्यादित र परिष्कृत जीवनयापनको अनुभूति गराउनु।
३. सामाजिक-आर्थिक रूपान्तरण तथा स्वाधीन राष्ट्रिय अर्थतन्त्र निर्माण गरी देशको स्वाभिमान, स्वतन्त्रता र राष्ट्रिय हितको संरक्षण गर्नु।

### ३.६ राष्ट्रिय रणनीति

#### १. तीव्र, दिगो र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि गर्ने

आधारभूत तथा बृहत् पूर्वाधार निर्माण, स्वच्छ ऊर्जाको उत्पादन तथा उपयोग, उच्च मूल्य तथा व्यावसायिक कृषि, उत्पादनमूलक उद्योग र पर्यटन विकास तथा व्यापार विस्तार मार्फत तीव्र, दिगो र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि हासिल गरिनेछ। सार्वजनिक क्षेत्रको प्रभावकारिता अभिवृद्धिसँगै निजी, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको वृहत्तर परिचालन तथा सुदृढीकरण, प्रादेशिक तथा स्थानीय अर्थतन्त्रको विकास तथा आयोजना सुशासन (Project Governance) मा सुधार गर्दै मुलुकलाई अन्तर्राष्ट्रिय/क्षेत्रीय आर्थिक (पर्यटकीय, व्यापारिक, शैक्षिक र वित्तीय)

केन्द्रको रूपमा विकास गरिनेछ । साथै, पुँजी, श्रम तथा प्राकृतिक स्रोत-साधनको महत्तम उपयोग गर्न समष्टिगत तथा विषय क्षेत्रगत रणनीति अवलम्बन गरिनेछ ।

## २. सुलभ तथा गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा र शिक्षाको सुनिश्चितता गर्ने

स्थानीय स्तरसम्म आधारभूत स्वास्थ्य सेवा सहितको स्वास्थ्य पूर्वाधारहरूको विकास गर्दै स्वास्थ्य सेवामा नागरिकको समतामूलक पहुँच स्थापित गरिनेछ । औषधि तथा उपचार पद्धति, चिकित्सक र सेवा प्रभावमा नवीनतम प्रविधिको उपयोग र जनशक्तिको उपलब्धता तथा दक्षता अभिवृद्धि गरी गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवाको सुनिश्चितता कायम गरिनेछ । स्वास्थ्य सेवा प्राप्तिको लागतमा न्यूनीकरण गर्ने र जोखिम व्यवस्थापनको नीति अवलम्बन गरिनेछ । यसको लागि स्वास्थ्य बिमाको विस्तार गर्दै स्वास्थ्य प्रणालीमा सुधार गरिनेछ । स्वास्थ्यप्रति नागरिकलाई जिम्मेवार बनाउँदै स्वस्थ जीवनशैली प्रवर्द्धन गरिनेछ ।

निःशुल्क र अनिवार्य आधारभूत शिक्षा तथा निःशुल्क माध्यमिक शिक्षामा सुनिश्चितताका साथै गुणस्तरीय शिक्षामा सर्वसुलभ पहुँच, प्रविधिमैत्री, रोजगारमूलक र जीवनोपयोगी शिक्षाको विकास र विस्तार गरिनेछ । स्थानीय स्तरसम्म प्राविधिक शिक्षा एवम् प्रदेश स्तरसम्म विशिष्टीकृत तथा उच्च शिक्षाको विस्तार तथा सुदृढीकरण गरिनेछ । शैक्षिक तथा शिक्षण संस्थाको सुदृढीकरण, गुणस्तरीय पूर्वाधार निर्माण, सुशासन र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।

शिक्षा र स्वास्थ्य क्षेत्रको समग्र विकासमा सरकारको लगानी र भूमिका नेतृत्वदायी रहनेछ । साथै निजी, सहकारी र समुदायिक क्षेत्रको भूमिकालाई परिपूरकको रूपमा विकास गरिनेछ । गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा तथा प्राविधिक तथा विशिष्टीकृत उच्च शिक्षा प्रदान गर्ने क्षेत्रीय केन्द्रको रूपमा नेपाललाई विकास गरिनेछ ।

## ३. आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय अन्तरआबद्धता एवम् दिगो शहर/बस्ती विकास गर्ने

आर्थिक वृद्धिको प्रमुख सम्वाहकको रूपमा रहेको यस क्षेत्रमा लगानी केन्द्रित गरिनेछ । राष्ट्रिय, प्रादेशिक तथा स्थानीय सडक सञ्जाल, सुरूडमार्ग, द्रुतमार्ग, रेलमार्ग, जलमार्ग र विमानस्थल निर्माणको लागि एकीकृत यातायात प्रणालीमा आधारित अन्तरआबद्धता विकास, उत्पादन लागत कटौती र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ । यसले आन्तरिक र अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार र गुणस्तरीय पर्यटन वृद्धिमा समेत सहयोग पुग्नेछ । पुनर्निर्माण लगायत बृहत् तथा निर्माणाधीन ठूला पूर्वाधार सम्पन्न गरिनेछ । यस क्षेत्रको विकासका लागि आधुनिक प्रविधि र उपकरणमा लगानी वृद्धि गर्दै निर्माण व्यवसायको क्षमता र दक्षता अभिवृद्धि गरिनेछ ।

ऊर्जा उत्पादन तथा वितरण, खपत र दक्षता अभिवृद्धि गर्न पूर्वाधार विकास गरिनेछ । यसका लागि बृहत्, जलाशययुक्त र निर्यातयोग्य आयोजनाहरूको निर्माण गर्दै आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय विद्युत प्रसारण लाइन निर्माण गरिनेछ । साथै, सौर्य, वायु, बायोग्यास लगायतका नवीकरणीय ऊर्जामा जोड दिँदै विद्युतीय उपकरण तथा सवारी साधनको उपयोगलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ । ऊर्जा दक्षता र प्रतिव्यक्ति विद्युत खपत वृद्धि गर्न आधुनिक विद्युतीय उपकरणको प्रयोगलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।

सूचना प्रविधिमा आधारित अर्थतन्त्र प्रवर्द्धन गर्न सूचना महामार्ग तथा सूचना प्रविधि सम्बन्धी आधुनिक पूर्वाधार निर्माण र विद्युतीय सेवा प्रवाह अभिवृद्धि गरिनेछ। सरकारी सेवालाई आगामी पाँच वर्षभित्र सम्पूर्ण रूपमा विद्युतीय प्रणालीमा आबद्ध गरिनेछ।

बढ्दो बसाइँसराइ तथा शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्न आधुनिक, सुरक्षित र दिगो शहर एवम् एकीकृत बस्ती विकास गरिनेछ। आधुनिक पूर्वाधार सहितको सघन शहर, शहरी कोरिडोर, विशिष्टीकृत र पर्वतीय शहरहरू निर्माण तथा प्रदूषणमुक्त शहरी पर्यावरण सहितको व्यवस्थित बस्ती विकास गरिनेछ। खानेपानी क्षेत्रमा बृहत् आयोजना निर्माण गर्दै प्रादेशिक तथा स्थानीय स्तरमा खानेपानी तथा फोहोर व्यवस्थापन र प्रशोधन गर्न आवश्यक पूर्वाधार निर्माण गरिनेछ। एकीकृत बस्ती विकास, नागरिक आवास योजना निर्माणका साथै ग्रामीण र शहरी क्षेत्रबीच अन्तरआबद्धता अभिवृद्धि गरिनेछ। स्थानीय आर्थिक गतिविधिमा विस्तार र रोजगारीका अवसर सिर्जना हुनेगरी नयाँ शहर निर्माण गरिनेछ।

#### ४. उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्ने

सिँचाइ सुविधाको तीव्र र सघन विस्तार, भू-उपयोग नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन, जमिनको एकीकरण तथा चक्लाबन्दी, उन्नत बीउ-बीजन, मल तथा आधुनिक प्रविधिको अवलम्बन, कम तौल/आयतन उच्च मूल्य तथा अर्गानिक कृषि उत्पादन र प्रशोधनमा जोड दिँदै कृषिको यान्त्रिकीकरण, आधुनिकीकरण, व्यावसायिकीकरण र औद्योगिकीकरण गरिनेछ। यसका लागि कृषि अनुसन्धान तथा प्रविधि विकास, सहूलियतपूर्ण कृषि कर्जा, कृषि बिमा, कृषि प्रसार सेवा, मल तथा बीउको उपलब्धताको सुनिश्चितता, स्थानीय र प्रादेशिक तहबाट कृषिको प्रवर्द्धन, लगानी र बजार व्यवस्थापन गरिनेछ। प्रमुख खाद्यान्न बालीहरूसँगै मत्स्य तथा पशुजन्य उत्पादनमा आत्मनिर्भर हुने गरी रणनीतिक हस्तक्षेप गरिनेछ। बाली उत्पादनपूर्व नै प्रमुख कृषि उत्पादनको न्यूनतम समर्थन मूल्य तोकी सोको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ।

औद्योगिक क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र, आर्थिक कोरिडोर तथा औद्योगिक ग्रामहरूको स्थापना, विद्यमान उद्योगहरूको पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन, साना तथा मझौला उद्योगहरूको प्रवर्द्धन र उत्पादनमा आधारित प्रोत्साहन तथा सहूलियत एवम् नियमन गरी उत्पादन अभिवृद्धि गरिनेछ। कृषि तथा वनजन्य, निर्माणजन्य, औषधिजन्य, हस्तकला, तयारी पोसाक लगायतका उच्च आन्तरिक माग तथा तुलनात्मक लाभ भएका अन्य उत्पादनमूलक उद्योगहरूको विकास, पुनर्स्थापना र विस्तार एवम् क्षेत्रीय र विश्व मूल्य शृंखलामा आबद्धता कायम गरिनेछ। ऊर्जाको सहज र सुलभ आपूर्ति, पारवहन तथा भण्डारण लागत कटौती, स्वच्छ, परिष्कृत तथा आधुनिक प्रविधिको प्रयोग, अध्ययन अनुसन्धान, उद्यमशीलता विकास, सामाजिक सुरक्षा योजना, असल श्रमसम्बन्ध तथा पर्यावरणीय सन्तुलनको माध्यमबाट प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरिनेछ।

विमानस्थल निर्माण तथा स्तरोन्नति र अन्य प्रमुख पर्यटकीय पूर्वाधार निर्माण, पर्यटकीय गन्तव्य विकास, नेपाल भ्रमण वर्षको आयोजना र गुणस्तरीय पर्यटन प्रवर्द्धन गरी पर्यटन क्षेत्रको तीव्र विकास गरिनेछ। यातायात, व्यापार, वित्तीय सेवा लगायत सेवा क्षेत्रको आधुनिकीकरण, विकास र विस्तार गर्न रणनीतिक हस्तक्षेप गरिनेछ। वित्तीय पहुँच,

समावेशिता र साक्षरताको माध्यमबाट वित्तीय सेवाको प्रभावकारिता अभिवृद्धि गरिनेछ। साथै, यातायात तथा पारवाहन लागत तथा समय न्यूनीकरण, नियमन प्रणालीमा सुधार र व्यावसायिक लागतमा कटौती गरी अर्थतन्त्रको उत्पादकत्व वृद्धि गरिनेछ।

#### ५. पूर्ण, दिगो र उत्पादनशील सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण प्रदान गर्ने

सबै नागरिकले संविधानप्रदत्त अवसर, राज्यबाट प्रदान गरिने सेवा सुविधा, पूर्ण सुरक्षा तथा सम्मान र सामाजिक संरक्षण प्राप्त गर्ने गरी उपलब्ध गराइनेछ। समावेशी आर्थिक वृद्धि, निरपेक्ष गरिबीको अन्त्य र आयको न्यायोचित वितरणका लागि उत्पादनका साधन, रोजगारी र अवसरमा न्यायोचित पहुँच, वितरण र उपयोग सुनिश्चित गरिनेछ। संगठित तथा असंगठित क्षेत्रका रोजगारदाता, श्रमिक र नागरिकको सहभागिता एवम् योगदानमा आधारित बृहत् तथा एकीकृत सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणको कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिनेछ। राज्यले सीमान्तीकृत तथा जोखिममा रहेका समुदाय तथा नागरिकको विशेष संरक्षणका कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नेछ। सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी कोषहरूलाई राष्ट्रिय आय वृद्धि तथा समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम हुने गरी परिचालन गरिनेछ।

#### ६. गरिबी निवारण र आर्थिक सामाजिक समानता सहितको न्यायपूर्ण समाज निर्माण गर्ने

लैंगिक समानता अभिवृद्धि तथा सबै प्रकारका हिंसा, विभेद, बहिष्करण र विकृतिको अन्त्य गर्दै सुरक्षित, सभ्य र समतामूलक समाज निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिनेछ। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी, प्रतिनिधित्व लगायत सबै प्रकारका अवसरहरूमा समान पहुँच र वितरणमा जोड दिइनेछ। सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता संरक्षण तथा प्रवर्द्धन, सामाजिक तथा सामुदायिक क्रियाकलाप एवम् सामाजिक पुँजी परिचालनद्वारा स्वस्थ र गतिशील सामाजिक जीवनको स्थापनामा जोड दिइनेछ। संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीचको अन्तरआबद्धता र सहकार्यद्वारा स्वाधीनता, राष्ट्रिय एकता एवम् सामूहिक भावनाको अभिवृद्धि गरिनेछ। नैतिक तथा नागरिक शिक्षा एवम् सामाजिक-सांस्कृतिक जागरणलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ। न्याय व्यवस्था सरल, कम खर्चिलो र समयमै न्याय प्राप्त गर्न सकिने गरी विकास गरिनेछ।

#### ७. प्राकृतिक स्रोतको संरक्षण र परिचालन तथा उत्थानशीलताको विकास गर्ने

भूमि, वन, जलस्रोत तथा खनिज स्रोतको कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रमा योगदान वृद्धि हुने गरी संरक्षण र परिचालन गरिनेछ। वन क्षेत्रतर्फ व्यापारिक तथा कृषि वन र गैरकाष्ठ वनजन्य उत्पादन अभिवृद्धि गरिनेछ। वन पैदावारको वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा सन्तुलित उपयोग र पुनःवृक्षारोपण गरी काष्ठजन्य उत्पादनमा आत्मनिर्भर हुने गरी रणनीतिक हस्तक्षेप गरिनेछ। खानि र खानिजन्य क्षेत्रको सम्भाव्यता अध्ययन र विकास गरी मूल्य शृंखलामा आबद्ध गरिनेछ। प्रचुर मात्रामा रहेको जलस्रोतको बहुपक्षीय उपयोगका लागि लागत प्रभावी हुनेगरी एकीकृत आयोजना सञ्चालनमा ल्याइनेछन्। साथै, प्राकृतिक स्रोतको उपयोग गर्दा जैविक विविधता संरक्षण र पर्यावरणीय सन्तुलनमा जोड दिइनेछ। जलवायु परिवर्तन अनुकूलन र विपद्को जोखिम न्यूनीकरण गर्ने रणनीति लिइनेछ। विपद् व्यवस्थापनको पूर्वतयारी, उद्धार, राहत र पुनर्स्थापनाका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको संस्थागत र संरचनागत सुधार एवम् विकास प्रक्रियामा मूलप्रवाहीकरण गरिनेछ।

## ८. सार्वजनिक सेवाको सुदृढीकरण, प्रादेशिक सन्तुलन र राष्ट्रिय एकता सम्बर्द्धन गर्ने

संघीय शासन व्यवस्थामा सहकारिता, सहअस्तित्व र समन्वयका आधारमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट प्रदान गरिने सार्वजनिक सेवालाई चुस्त, पारदर्शी र जवाफदेही बनाइनेछ । नागरिकसँग प्रत्यक्ष सरोकार राख्ने सेवा र सुविधा स्थानीय तहबाट प्रदान गरिनेछ । सन्तुलित प्रादेशिक विकासका लागि उत्पादन, पूर्वाधार निर्माण र गुणस्तरीय सेवाको वितरण प्रदेश तहबाट गरिनेछ । रणनीतिक विकास, उत्पादन, सेवाको सुनिश्चितता र अनुसन्धान तथा विकास संघको प्राथमिकतामा रहनेछ । तीन तहका सरकारको सेवा प्रवाहलाई आधुनिकीकरण गर्न विद्युतीय प्रणाली अवलम्बन तथा अन्तरआबद्धता विकास गरिनेछ । राष्ट्रिय एकता, सुरक्षा र स्वाभिमानलाई सुदृढ बनाउँदै विकास र समृद्धिका लागि सुशासनका बहुआयामिक पक्षहरूमा सुधार गरिनेछ । वित्तीय सेवामा पहुँच, समावेशिता र साक्षरता अभिवृद्धि गरी संघीय शासन प्रणाली सुदृढ तुल्याइनेछ ।

## ३.७ दिगो विकास लक्ष्यको आन्तरिकीकरण

पन्ध्रौँ योजनाको समष्टिगत राष्ट्रिय लक्ष्य, गन्तव्य, सूचक र अपेक्षित उपलब्धि लगायत क्षेत्रगत नीति, रणनीति र कार्यनीति तर्जुमा गर्दा दिगो विकासका लक्ष्यसँग सामन्जस्य हुने गरी तर्जुमा गरिएको छ । खण्ड ३.४ मा उल्लेखित परिमाणात्मक लक्ष्य र खण्ड ३.६ मा उल्लेखित रणनीतिहरूले दिगो विकास लक्ष्यका तीन आयामलाई समेटेका छन् । साथै, समष्टिगत आर्थिक नीति, आर्थिक वृद्धिदरको लक्ष्य, कुल लगानीको अनुमान, सार्वजनिक, निजी तथा सहकारी क्षेत्रको लगानी, कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत योगदान लगायतका नीति तथा लक्ष्य तय गर्दा दिगो विकास लक्ष्य आवश्यकता पहिचान, लागत अनुमान तथा वित्तीय रणनीतिलाई समेत आधार बनाइएको छ । योजना अवधिमा दिगो विकास लक्ष्यहरूको आन्तरिकीकरण तथा स्थानीयकरणमा विशेष जोड दिइनेछ ।

दिगो विकासका लागि आवश्यक पर्ने आर्थिक वृद्धि, रोजगारी, उत्थानशील पूर्वाधार, औद्योगिकीकरण, शहर र बस्ती, उपभोग तथा उत्पादनको दिगोपनासँग सम्बन्धित यस योजनाका लक्ष्य र रणनीतिहरूको कार्यान्वयनबाट दिगो विकासका लक्ष्य ८, ९, ११, १२ हासिल गर्न सहयोग पुग्नेछ । त्यस्तै, लैङ्गिक समानता, सुशासन तथा सामाजिक सुरक्षा जस्ता विषयमा तर्जुमा गरिएका लक्ष्य र रणनीतिहरूको कार्यान्वयनबाट दिगो विकासका लक्ष्य ५, १० र १६ हासिल हुन सहयोग पुग्नेछ । यस योजनामा गरिबी घटाउने, भोकमरी अन्त्य गर्ने, सबैको निम्ति खानेपानीको व्यवस्था र आधुनिक ऊर्जा उपलब्ध गराउने जस्ता मानव सभ्यताका आधारभूत पक्ष सम्बन्धमा तय गरिएका लक्ष्य र रणनीतिहरूले दिगो विकासका लक्ष्यहरू १, २, ६ र ७ लाई समेटेका छन् । यस्तै, स्वास्थ्य तथा शिक्षा क्षेत्रसँग सम्बन्धित रणनीतिहरू दिगो विकास लक्ष्य ३ र ४ हासिल गर्न सहयोग पुग्ने गरी तर्जुमा गरिएका छन् । यस योजनाले प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन र उत्थानशीलता विकास गर्ने रणनीतिहरू पनि तय गरेको छ । यी रणनीतिहरूको कार्यान्वयनबाट दिगो विकास लक्ष्य १३ र १५ हासिल गर्न सहयोग पुग्नेछ । साथै, दिगो विकास लक्ष्य १७ ले परीकल्पना गरे अनुरूप विकासका लक्ष्य प्राप्त गर्न सार्वजनिक, निजी, सहकारी, सामुदायिक क्षेत्र लगायत आन्तरिक तथा बाह्य सरोकारवालाहरूसँगको साझेदारीलाई यस योजनाले महत्त्व दिएको छ ।

## ३.८ विकासमा क्षेत्रगत भूमिका

### ३.८.१ सार्वजनिक क्षेत्र

'समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली' को राष्ट्रिय सोच सहितको विकासका लक्ष्यहरू हासिल गर्न सार्वजनिक क्षेत्रले अग्रणी भूमिका निर्वाह गर्नेछ। तीव्र, दिगो र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि हासिल गर्दै समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्र निर्माणमा यस क्षेत्रको अहम् भूमिका रहनेछ। यस क्षेत्रले समग्र विकास प्रयासमा निजी, सहकारी र सामुदायिक तथा गैरसरकारी क्षेत्रको लगानी र सहभागिताका लागि उत्प्रेरित गर्नेछ।

सार्वजनिक क्षेत्रले समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्र निर्माण गर्नका लागि आवश्यक नीति, योजना, रणनीति तथा मापदण्डको तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन र नियमन गर्नेछ। नियमनकारी निकायहरूको संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। उच्च, दिगो र समावेशी आर्थिक वृद्धि र स्थायित्व कायम गर्न लगानीको वातावरण निर्माण, पूर्वाधार विकास एवम् उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धिमा राज्यले महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गर्नेछ। वित्तीय स्थायित्व कायम गर्दै समष्टिगत आर्थिक क्षेत्रमा नीतिगत उत्प्रेरणा प्रदान गर्ने नीति लिइनेछ।

सामाजिक न्याय, प्रादेशिक सन्तुलन, सभ्य र समतामूलक समाज निर्माण गर्न सार्वजनिक क्षेत्रले अग्रणी भूमिका निर्वाह गर्नेछ। आर्थिक उपलब्धिको समन्यायिक वितरण र पुनर्वितरण गर्दा आर्थिक सबलीकरणमा जोड दिइनेछ। सुशासन, शान्ति र सुव्यवस्था कायम, सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण, मानव अधिकार संरक्षण र उत्पादनशील रोजगारीको प्रत्याभूति गर्दै संघीय शासन प्रणालीको सुदृढीकरण गरिनेछ। नागरिकको परिष्कृत र मर्यादित जीवनको अनुभूति गराउन समेत सार्वजनिक क्षेत्रले अहम् भूमिका निर्वाह गर्नेछ।

### संघ

नेपालको संविधानले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीचको सम्बन्ध सहकारिता, सहअस्तित्व र समन्वयको सिद्धान्तमा आधारित हुने व्यवस्था गरेको छ। राष्ट्रिय सोच, लक्ष्य, उद्देश्य तथा प्राथमिकता कार्यान्वयन गर्न संघले प्रदेश तथा स्थानीय तहसँग सहकार्य, समन्वय र साझेदारी गर्नेछ। यस योजना तर्जुमा गर्दा संवैधानिक प्रावधान र अनुसूचीमा निर्दिष्ट कार्य जिम्मेवारी, संविधानको कार्यान्वयन सम्बन्धी कानून, सरकारको नीति तथा प्राथमिकता एवम् अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा गरिएका प्रतिबद्धता समेतलाई आधार लिइएको छ। यस योजनाका सोच, लक्ष्य, उद्देश्य र रणनीतिसँग सामञ्जस्य र परिपूरक हुने गरी प्रदेश र स्थानीय तहका योजना, नीति तथा कार्यक्रम तर्जुमा तथा कार्यान्वयन हुनेछन्। प्रदेश तथा स्थानीय तहको सहकार्य र सहयोगमा उपलब्ध उत्पादनका साधनको कुशल परिचालन गरी आर्थिक समृद्धि तथा नागरिक सुखका राष्ट्रिय लक्ष्य हासिल गरिनेछ।

संघले केन्द्रीय योजना, नीति निर्माण, नियमन, समन्वय, मापदण्ड निर्माण तथा ठूला र बृहत् प्रभाव पार्ने आयोजना एवम् कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नेछ। साथै, रणनीतिक विकास, उत्पादन, सेवाको सुनिश्चितता र अनुसन्धान तथा विकासमा संघले जोड दिनेछ। कृषि, उद्योग, निर्माण र सेवा क्षेत्रको उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि तथा जनताको आयस्तर वृद्धि गर्न समावेशी र सन्तुलित विकासको अवधारणा बमोजिम कार्य गर्नेछ। यसको लागि

नेपालको संविधान र अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन बमोजिम समानीकरण, सशर्त, सम्पूरक र विशेष अनुदानका साथै राजस्व बाँडफाँट सहित वित्तीय हस्तातरण गर्नेछ। संघले योजनाका समष्टिगत र विषय क्षेत्रगत सोच लक्ष्य उद्देश्य हासिल गर्न आवश्यक क्षमता विकास र सहजीकरणको कार्य समेत गर्नेछ। यसको लागि नमुना योजना, नीति, कानून तथा कार्यविधि तयार गर्नेछ। साथै, राष्ट्रिय योजना आयोगले प्रदेश तथा स्थानीय तहको दीर्घकालीन सोच, योजना, वार्षिक बजेट तथा मध्यमकालीन खर्च संरचना अनुगमन तथा मूल्याङ्कन लगायतका विकास योजनासँग सम्बन्धित विषयमा आवश्यक ज्ञान, सीपको हस्तान्तरण गर्नेछ। प्रदेश र स्थानीय अर्थतन्त्रको बलियो आधार निर्माण गर्न संघले आवश्यक सहयोग गर्नेछ।

## प्रदेश

प्रदेशले नेपाल सरकारको विकासको सोच, लक्ष्य, उद्देश्य तथा रणनीति प्राप्तिसमा समन्वय, सहकार्य र सहयोगी भूमिका निर्वाह गरी नीति तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन र विकास निर्माणको कार्य गर्नेछ। सहभागितात्मक विकासको अवधारणा अनुरूप विकास प्रक्रिया अगाडि बढाउन प्रदेश तहको योजना, नीति, कार्यक्रमको तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन गर्नेछ। साथै, प्रदेश तहमा लगानीको उपयुक्त वातावरण सिर्जना गरी प्रादेशिक महत्त्व र प्राथमिकताका कार्यक्रम/आयोजनाको छनोट तथा कार्यान्वयन गर्दै जनताको जीवनस्तरमा सुधार ल्याइनेछ। प्रदेशहरू बीचमा विकास र समृद्धिका लागि सहकार्य, समन्वय र प्रतिस्पर्धाको वातावरण निर्माणमा जोड दिइनेछ।

सुशासन, शान्ति सुरक्षा, रोजगारी अभिवृद्धि एवम् सार्वजनिक सेवा प्रवाहमा गुणस्तर र प्रभावकारिता अभिवृद्धि गर्न प्रदेश तहले प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्नेछ। प्रदेश स्तरीय आर्थिक सामाजिक विकासको लागि निजी, गैरसरकारी, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रसँग सहकार्य, समन्वय र साझेदारी गरिनेछ। जनशक्ति तथा संस्थागत क्षमता विकास गर्दै प्रदेश तहलाई समावेशी, व्यवसायिक, प्रतिस्पर्धी, सेवामुखी र स्वावलम्बी बनाइनेछ। प्रदेशस्तरीय स्रोत-साधनको दिगो व्यवस्थापन गरी अधिकतम उपयोग गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। प्रदेश तहबाट योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कनमा क्षमता अभिवृद्धिका कार्य सञ्चालन गरिनेछ। साथै, वस्तुगत आधार र मापदण्ड बमोजिम वित्तीय हस्तान्तरण हुने व्यवस्था मिलाइनेछ।

## स्थानीय तह

स्थानीय तहले संघ र प्रदेश सरकारको विकास सम्बन्धी सोच, लक्ष्य र उद्देश्य प्राप्त गर्न समन्वय, सहयोग र सहकार्य गर्दै स्थानीय अर्थतन्त्रको विकास र विस्तारबाट समृद्धिको आधार निर्माण गर्नेछ। यसका लागि समावेशी प्रतिनिधित्व, साधन-स्रोतमा बढोत्तरी, सेवा प्रदायक निकायमा सहज पहुँचसँगै अन्तरतह साझेदारी कायम गरिनेछ। नागरिकलाई आधारभूत सेवा प्रवाह गर्ने कार्यमा स्थानीय तहको प्रमुख भूमिका रहनेछ। यस तहले संघ तथा प्रदेश तहको योजना तथा नीति अनुरूप नीति, योजना र कार्यक्रमको तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गर्नेछ। आवश्यकता बमोजिमका स्रोत र साधनको परिचालन तथा लगानीको उपयुक्त वातावरण सिर्जना गरी नागरिकको जीवनस्तर सुधारका आयोजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नेछ। स्थानीय तहमा एकीकृत सोचका साथ ग्रामीण विकास र स्थानीय पूर्वाधार निर्माणका कार्यमा लगानी अभिवृद्धि गरिनेछ। साथै, सामाजिक जागरणका अभियान सञ्चालन, विकास र सुशासन अभिवृद्धिका लागि संयुक्त रूपमा कार्यक्रम सञ्चालन गर्न वित्तीय प्रोत्साहन गर्ने नीति लिइनेछ।

प्रभावकारी सेवा प्रवाह र विकास व्यवस्थापनको आधार केन्द्रको रूपमा स्थापना गर्दै जनतालाई पुऱ्याउनुपर्ने शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत, खानेपानी तथा सरसफाई लगायतका सार्वजनिक सेवा सुविधाको प्रत्याभूति दिन यस तहको मुख्य भूमिका रहनेछ। यसको लागि स्थानीय तहले निजी, गैरसरकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रसँग साझेदारी र सहकार्य गर्नेछ। शान्ति सुरक्षा, रोजगारी अभिवृद्धि तथा मानव स्रोतको क्षमता विकासमा स्थानीय तहको सहयोगी भूमिका रहनेछ। स्थानीय तहबाट प्रवाह हुने सेवालालाई समावेशी, व्यवसायिक, प्रतिस्पर्धी, सेवामुखी र स्वावलम्बी बनाउँदै स्थानीय सुशासन कायम गरिनेछ।

### ३.८.२ निजी क्षेत्र

निजी क्षेत्रले समग्र विकास प्रक्रियामा अहम् भूमिका निर्वाह गर्नेछ। नेपालको संविधानले अंगीकार गरेका नीति तथा कानुनी व्यवस्थाले निर्दिष्ट गरेबमोजिम निजी क्षेत्रले आफ्नो भूमिका निर्वाह गर्नेछ। सरकारको विकास सम्बन्धी सोच, नीति र योजना बमोजिम लक्ष्य तथा उद्देश्य हासिल गर्न लगानीमैत्री वातावरण अभिवृद्धि गरी देशको आर्थिक-सामाजिक विकासमा सहयोग र सहकार्य गर्ने निजी क्षेत्रको भूमिका हुनेछ। निजी क्षेत्रले प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि गर्दै सार्वजनिक-निजी साझेदारीको अवधारणा अनुरूप जोखिमको न्यायोचित बाँडफाँट गरी विकास निर्माण कार्य सञ्चालन गर्नेछ। कृषि, उद्योग, निर्माण र सेवा क्षेत्रमा निजी क्षेत्रको लगानी अभिवृद्धि गर्न आवश्यक प्रोत्साहनको व्यवस्था गरी दिगो विकासको लक्ष्य हासिल गरिनेछ।

यस क्षेत्रले गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवा उत्पादन, सहज र सुलभ आपूर्ति व्यवस्थापन, गुणस्तरीय पूर्वाधार निर्माण, आयात व्यवस्थापन, निर्यात प्रवर्द्धन तथा उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारी सिर्जना गर्नमा सहयोग गर्नेछ। संस्थागत सुशासन, सुमधुर औद्योगिक सम्बन्ध, बालश्रम निवारण, सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणमा सहभागिता एवम् संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व वहन गर्दै निजी क्षेत्रको प्रतिष्ठा अभिवृद्धि गर्नेछ। वित्तीय क्षेत्रमा स्थायित्व र सुशासन कायम गर्न सहयोग पुऱ्याउनेछ। स्वदेशी तथा वैदेशिक लगानी अभिवृद्धि गर्दै द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय प्रतिबद्धता तथा सम्झौता बमोजिम अवसरको प्राप्ति तथा चुनौती सामना गर्न सहयोग गर्नेछ।

### ३.८.३ सहकारी क्षेत्र

नेपालको संविधानले अंगीकार गरेका नीति तथा कानुनी व्यवस्थाले निर्दिष्ट गरे बमोजिम सहकारी क्षेत्रले सहकारी मूल्य-मान्यता र सिद्धान्तको अनुशरण तथा पारस्परिकता र स्वावलम्बनको संस्कार विकास गर्दै समग्र विकास प्रक्रियामा सहयोगी भूमिका निर्वाह गर्नेछ। विकास सम्बन्धी सोच, नीति र योजना बमोजिम लक्ष्य तथा उद्देश्य हासिल गर्न देशको आर्थिक-सामाजिक विकासमा सहयोग र सहकार्य गर्ने यस क्षेत्रको भूमिका हुनेछ। यस क्षेत्रले सहकारी संस्थामा सुशासन कायम गर्दै स्थानीय स्रोत-साधन, श्रम, सीप र पुँजीलाई व्यापक रूपमा परिचालन गरी रोजगारी तथा आय वृद्धि र गरिबी निवारणमा गर्न सहयोग पुऱ्याउनेछ। साथै, यस क्षेत्रले मानवीय आवश्यकताका वस्तु तथा सेवाको उत्पादन, प्रशोधन र बजारीकरण गर्दै सदस्यहरूको सामाजिक-आर्थिक र सांस्कृतिक रूपान्तरण तथा समावेशी आर्थिक वृद्धि हासिल गर्न सहयोग गर्नेछ।

### ३.८.४ गैरसरकारी संस्था, नागरिक समाज र सामुदायिक क्षेत्र

गैरसरकारी संस्था, नागरिक समाज र सामुदायिक क्षेत्रले समग्र विकास प्रयासमा सहयोगी भूमिका निर्वाह गर्नेछ। यस क्षेत्रले सरकारको विकास लक्ष्य तथा प्राथमिकता अनुरूपका क्षेत्रमा कार्यक्रम सञ्चालन गरी गरिबी निवारण, क्षमता अभिवृद्धि, नागरिक सचेतना तथा कर्तव्यबोध र सशक्तीकरणमा सहयोग पुऱ्याउनेछ। साथै, दुर्गम तथा पछाडि परेको क्षेत्रको विकास, उत्पादन वृद्धि र सेवा प्रवाहमा सहयोग गर्नेछ। यस क्षेत्रले पारदर्शिता, जवाफदेहिता र मितव्ययीता कायम गर्दै संस्थागत सुशासन कायम गरी आफ्नो भूमिका निर्वाह गर्नेछ।

### ३.९ समष्टिगत आर्थिक खाका

#### ३.९.१ आर्थिक वृद्धिदर

मुलुक नीतिगत स्थायित्वको दिशामा अगाडि बढेसँगै योजना अवधिमा विकास तथा आयोजना सुशासनमा उल्लेख्य रूपमा सुधार भई निर्माणाधीन अधिकांश राष्ट्रिय गौरवका आयोजना र बृहत् प्रकृतिका कार्यक्रम तथा आयोजना सम्पन्न भएका हुनेछन्। साथै, ऊर्जा उत्पादनमा उल्लेख्य वृद्धि भई अर्थतन्त्रका समग्र क्षेत्रमा विद्युतीय ऊर्जाको खपत तथा उपयोगमा वृद्धि र योजनाले पहिचान गरेका रूपान्तरणकारी कार्यक्रम/आयोजना प्रभावकारी कार्यान्वयन भएका हुनेछन्। उल्लेखित प्रयासहरूबाट कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रको उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि भई तीव्र आर्थिक वृद्धि हुने अनुमान गरिएको छ। आर्थिक वृद्धिको लक्ष्य हासिल गर्न लगानीमा उच्च वृद्धिका अतिरिक्त श्रमशक्तिको उत्पादनशील उपयोग र जलस्रोत, भूमि, वन सम्पदा, खनिज पदार्थ लगायतका प्राकृतिक स्रोत-साधनको दिगो परिचालन गरिनेछ। संघीय शासन प्रणालीको प्रभावकारी कार्यान्वयनबाट प्रदेश र स्थानीय अर्थतन्त्रमा गतिशीलता आउनुका साथै निजी, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको परिपूरकात्मक सहकार्य मजबुत एवम् सुदृढ भई राष्ट्रिय पुँजी निर्माण हुनेछ।

आर्थिक वृद्धिका लागि कृषि तथा वन, खानि तथा उत्पादनमूलक उद्योग, विद्युतीय ऊर्जा, निर्माण, पर्यटन, यातायात तथा सूचना प्रविधि, शिक्षा र स्वास्थ्य प्रमुख हस्तक्षेपका क्षेत्र हुन्। यी क्षेत्रमा भएको लगानीको कारण अर्थतन्त्रका अन्य क्षेत्रमा समेत सकारात्मक प्रभाव पर्न गई लक्षित आर्थिक वृद्धि हासिल हुने अनुमान गरिएको छ। योजना अवधिमा औसत ९.६ प्रतिशतको वार्षिक आर्थिक वृद्धि हासिल गर्ने लक्ष्य राखिएको छ। कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रमा क्रमशः ५.४, १४.६ र ९.९ प्रतिशतको औसत वृद्धि हुने अनुमान रहेको छ। उल्लेखित आर्थिक वृद्धि हासिल गर्नको लागि समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्दै लगानी आकर्षण तथा परिचालन गरिनेछ। पन्ध्रौं योजनाको क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धि सहितको कुल गार्हस्थ्य उत्पादन तालिका ३.३ र ३.४ मा उल्लेख गरिएको छ।

तालिका ३.३ : कुल गार्हस्थ्य उत्पादन तथा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिको लक्ष्य  
(२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

(रु. करोडमा)

| क्र.सं. | क्षेत्रहरू                | आधार वर्ष<br>२०७५/७६ | पन्ध्रौं योजना  |         |         |         |         |         |
|---------|---------------------------|----------------------|-----------------|---------|---------|---------|---------|---------|
|         |                           |                      | औसत<br>वृद्धिदर | २०७६/७७ | २०७७/७८ | २०७८/७९ | २०७९/८० | २०८०/८१ |
| १.      | कृषि                      | ८२,६०१               | ५.४             | ८६,४८७  | ९०,८५६  | ९६,००९  | १०१,५७१ | १०७,४३६ |
| १.१     | कृषि तथा वन               | ८१,१३५               | ५.२             | ८४,८६७  | ८९,०२५  | ९३,९२२  | ९९,१८१  | १०४,७३६ |
| १.२     | मत्स्यपालन                | १,४६६                | १२.९            | १,६२०   | १,८३१   | २,०८७   | २,३८९   | २,७००   |
| २.      | गैरकृषि                   | २२३,५२२              | ११.०            | २४५,६२१ | २७२,९२८ | ३०३,५४७ | ३३६,००३ | ३७४,८४९ |
| २.१     | उद्योग                    | ४६,५५८               | १४.६            | ५३,२७५  | ६१,३९९  | ७०,३५२  | ७९,४३४  | ९०,९४५  |
| २.१.२   | खानि तथा उत्खनन           | १,८५१                | १५.६            | २,०९१   | २,४०५   | २,८०२   | ३,२७८   | ३,८३६   |
| २.१.२   | उत्पादनमूलक उद्योग        | १७,११९               | १२.७            | १९,०८८  | २१,५६९  | २४,३७३  | २७,२९८  | ३१,१२०  |
| २.१.३   | विद्युत, ग्यास तथा पानी   | ३,८१६                | ३०.०            | ५,४९५   | ७,४१९   | ९,५७०   | १२,०५८  | १४,५९१  |
| २.१.४   | निर्माण                   | २३,७७२               | ११.७            | २६,६०१  | ३०,००६  | ३३,६०६  | ३६,७९९  | ४१,३९९  |
| २.२     | सेवा                      | १७६,९६४              | ९.९             | १९२,३४६ | २११,५२९ | २३३,१९६ | २५६,५७० | २८३,९०४ |
| २.२.१   | थोक तथा खुद्रा व्यापार    | ४३,९९३               | १०.८            | ४८,१७२  | ५३,६१६  | ५९,७८२  | ६६,१७८  | ७३,६५६  |
| २.२.२   | होटेल तथा रेस्टुरेण्ट     | ६,२८२                | १७.०            | ७,३१८   | ८,७८२   | १०,२७५  | ११,९१९  | १३,८२६  |
| २.२.३   | यातायात, भण्डारण र सञ्चार | २२,१३५               | १०.८            | २४,१२७  | २६,६६१  | २९,८६०  | ३३,१४५  | ३७,१२२  |
| २.२.४   | वित्तीय मध्यस्थता         | १९,३४७               | ९.४             | २०,९९१  | २२,९८६  | २५,१६९  | २७,४३४  | ३०,३१५  |

| क्र.सं. | क्षेत्रहरू  | आधार वर्ष<br>२०७५/७६ | पन्ध्रौं योजना  |                |                |                |                |                |
|---------|---|----------------------|-----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|
|         |   |                      | औसत<br>वृद्धिदर | २०७६/७७        | २०७७/७८        | २०७८/७९        | २०७९/८०        | २०८०/८१        |
| २.२.५   | घरजग्गा, बहाल तथा व्यापारिक क्रियाकलाप  | ३५,३०८               | ७.४             | ३७,६७३         | ४०,४९९         | ४३,३३४         | ४६,८००         | ५०,५९१         |
| २.२.६   | सामान्य प्रशासन तथा रक्षा   | ८,२९८                | ८.६             | ९,०६१          | ९,७४०          | १०,६१७         | ११,५२०         | १२,५५६         |
| २.२.७   | शिक्षा  | २१,६११               | ९.९             | २३,४४७         | २५,६७५         | २८,३७१         | ३१,२०८         | ३४,६४१         |
| २.२.८   | स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य   | ५,३४९                | १०.५            | ५,८१५          | ६,४१४          | ७,०८७          | ७,८८८          | ८,८३५          |
| २.२.९   | अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप                                | १४,६४२               | ८.८             | १५,७४०         | १७,१५७         | १८,७०१         | २०,४७८         | २२,३६२         |
|         | <b>कुल मूल्य अभिवृद्धि (अप्रत्यक्ष रूपमा मापन गरिएको वित्तीय मध्यस्थता सेवा समेत)</b> | <b>३०६,१२३</b>       | <b>९.७</b>      | <b>३३२,१०८</b> | <b>३६३,७८४</b> | <b>३९९,५५६</b> | <b>४३७,५७४</b> | <b>४८२,२८४</b> |
|         | अप्रत्यक्ष रूपमा मापन गरिएको वित्तीय मध्यस्थता सेवा                                   | १२,८४९               | ७.८             | १३,८१२         | १४,९१७         | १६,१११         | १७,३१९         | १८,७०४         |
|         | <b>कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (आधारभूत मूल्यमा)</b>                                       | <b>२९३,२७४</b>       | <b>९.६</b>      | <b>३१८,२९६</b> | <b>३४८,८६६</b> | <b>३८३,४४५</b> | <b>४२०,२५५</b> | <b>४६३,५८०</b> |
|         | खुद वस्तु तथा सेवा उत्पादन कर   | ५३,१५७               | १३.०            | ६०,०६८         | ६७,८७७         | ७६,७०१         | ८६,६७२         | ९७,९३९         |
|         | <b>कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)</b>                                     | <b>३४६,४३२</b>       | <b>१०.१</b>     | <b>३७८,३६४</b> | <b>४१६,७४३</b> | <b>४६०,१४६</b> | <b>५०६,९२७</b> | <b>५६१,५१९</b> |

तालिका ३.४ : कुल गार्हस्थ्य उत्पादन तथा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिदरको लक्ष्य  
(२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

(प्रतिशतमा)

| क्षेत्रहरू   | आधार वर्ष<br>२०७५/७६ | पन्ध्रौँ योजना |         |         |         |         | योजनाको<br>औसत |
|--|----------------------|----------------|---------|---------|---------|---------|----------------|
|  |                      | २०७६/७७        | २०७७/७८ | २०७८/७९ | २०७९/८० | २०८०/८१ |                |
| कृषि   | ४.८                  | ४.७            | ५.१     | ५.७     | ५.८     | ५.८     | ५.४            |
| उद्योग   | १२.२                 | १५.१           | १५.६    | १४.८    | १३.२    | १४.६    | १४.६           |
| उत्पादनमूलक उद्योग   | ५.८                  | ११.५           | १३.०    | १३.०    | १२.०    | १४.०    | १२.७           |
| विद्युत, ग्यास तथा पानी  | १२.४                 | ४४.०           | ३५.०    | २९.०    | २६.०    | २१.०    | ३०.०           |
| निर्माण  | ८.९                  | ११.९           | १२.८    | १२.०    | ९.५     | १२.५    | ११.७           |
| सेवा   | ७.९                  | ८.७            | १०.०    | १०.३    | १०.०    | १०.७    | ९.९            |
| होटेल तथा रेस्टुरेण्ट  | ८.३                  | १६.५           | २०.०    | १७.०    | १६.०    | १६.०    | १७.०           |
| यातायात, भण्डारण र सञ्चार  | ५.९                  | ९.०            | १०.५    | १२.०    | ११.०    | १२.०    | १०.८           |
| शिक्षा   | ५.२                  | ८.५            | ९.५     | १०.५    | १०.०    | ११.०    | ९.९            |
| स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य  | ६.७                  | ८.७            | १०.३    | १०.५    | ११.३    | १२.०    | १०.५           |
| कुल मूल्य अभिवृद्धि (अप्रत्यक्ष रूपमा मापन गरिएको वित्तीय मध्यस्थता सेवा समेत) | ६.८                  | ८.७            | ९.७     | १०.०    | ९.६     | १०.३    | ९.७            |
| कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (आधारभूत मूल्यमा)                                       | ६.८                  | ८.५            | ९.६     | ९.९     | ९.६     | १०.३    | ९.६            |
| कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)                                     | ७.१                  | ९.२            | १०.१    | १०.४    | १०.२    | १०.८    | १०.१           |

द्रष्टव्यः उद्योग तथा सेवा क्षेत्रमा केही महत्वपूर्ण क्षेत्रको मात्र वृद्धिदर उल्लेख गरिएको छ ।

योजना अवधिमा उद्योग र सेवा क्षेत्रमा उच्च मूल्य अभिवृद्धिदरको कारण अर्थतन्त्रमा उल्लेखनीय संरचनात्मक परिवर्तन हुनेछ। कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको योगदान २७.० प्रतिशतबाट २२.३ प्रतिशतमा कायम हुने अनुमान छ। सेवा क्षेत्रको योगदान वृद्धि भई ५७.८ प्रतिशतबाट ५८.९ प्रतिशत पुग्ने अनुमान छ। उद्योग क्षेत्रको योगदान उल्लेख्य रूपमा वृद्धि भई १५.२ प्रतिशतबाट १८.८ प्रतिशत पुग्ने अनुमान छ। यसबाट कृषि क्षेत्रमा आश्रित श्रमशक्तिको ठूलो हिस्सा उद्योग र सेवा क्षेत्रमा स्थानान्तरण हुने देखिन्छ। क्षेत्रगत योगदानको अनुमान तालिका ३.५ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ३.५ : कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत योगदान

(प्रतिशतमा)

| क्षेत्रहरू                  | आधार वर्ष<br>२०७५/७६ | पन्ध्रौं योजना |         |         |         |         |
|-----------------------------|----------------------|----------------|---------|---------|---------|---------|
|                             |                      | २०७६/७७        | २०७७/७८ | २०७८/७९ | २०७९/८० | २०८०/८१ |
| कृषि                        | २७.०                 | २६.०           | २५.०    | २४.०    | २३.२    | २२.३    |
| उद्योग                      | १५.२                 | १६.०           | १६.९    | १७.६    | १८.२    | १८.८    |
| उत्पादनमूलक उद्योग          | ५.६                  | ५.७            | ५.९     | ६.१     | ६.२     | ६.५     |
| विद्युत, ग्यास तथा पानी     | १.२                  | १.७            | २.०     | २.४     | २.८     | ३.०     |
| निर्माण                     | ७.८                  | ८.०            | ८.२     | ८.४     | ८.४     | ८.६     |
| सेवा                        | ५७.८                 | ५७.९           | ५८.१    | ५८.४    | ५८.६    | ५८.९    |
| होटेल तथा रेस्टुरेण्ट       | २.१                  | २.२            | २.४     | २.६     | २.७     | २.९     |
| यातायात, भण्डारण र सञ्चार   | ७.२                  | ७.३            | ७.३     | ७.५     | ७.६     | ७.७     |
| शिक्षा                      | ७.१                  | ७.१            | ७.१     | ७.१     | ७.१     | ७.२     |
| स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य | १.७                  | १.८            | १.८     | १.८     | १.८     | १.८     |
| जम्मा                       | १००                  | १००            | १००     | १००     | १००     | १००     |

द्रष्टव्यः उद्योग तथा सेवा क्षेत्रमा केही महत्त्वपूर्ण क्षेत्रको मात्र वृद्धिदर उल्लेख गरिएको छ।

### ३.९.२ उत्पादकत्व

अर्थतन्त्रको तीव्र वृद्धिको लागि लगानीको साथै उपलब्ध मानवीय तथा प्राकृतिक स्रोत-साधनको परिचालन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्नु समेत अपरिहार्य छ। विगतमा उत्पादनका साधनहरूको उत्पादकत्व अपेक्षित वृद्धि नभएकाले

छिमेकी लगायतका अन्य विकासशील मुलुकको तुलनामा नेपालको उत्पादकत्व न्यून रहेको छ । न्यून उत्पादकत्वको विद्यमान प्रवृत्ति कायम रहेमा स्रोत तथा लगानीको उपलब्धता र सोको प्रतिफलको आधारमा हुने स्रोत परिचालनबाट मात्र मुलुकको समृद्धि हासिल हुन कठिन छ ।

त्यसैले, यस योजनामा राष्ट्रिय, क्षेत्रगत र व्यावसायिक एकाई तहको उत्पादकत्व अभिवृद्धिमा मुख्य ध्यान दिइनेछ । राष्ट्रिय अर्थतन्त्रको समग्र उत्पादकत्व वृद्धिका लागि उच्च गुणस्तरको स्वास्थ्य, शिक्षा र पोषण सहितको मानव पुँजी निर्माण गरी स्वदेशमा नै यसको उपयोग, यातायात तथा सञ्चार पूर्वाधारको अन्तरआबद्धता एवम् व्यवस्थित शहरीकरण, विद्युतीय ऊर्जाको उत्पादन र प्रसारणमा लागत मितव्ययिता तथा औद्योगिक उत्पादन र सेवा क्षेत्रमा ऊर्जाको कुशल उपयोग र तोकिएको समयमा आयोजना सम्पन्न गर्न योजनामा जोड दिइनेछ । मुलुकका लागि उपयोगी अनुसन्धान, उन्नत तथा आधुनिक प्रविधिको विकास र अवलम्बन सहित अर्थतन्त्रको आधुनिकीकरणमा जोड दिइनेछ । यसबाट मध्यम तथा दीर्घकालमा उत्पादकत्व वृद्धिमा सहयोग पुग्नेछ । साथै, सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सुशासन, आयोजना सुशासन र कार्य संस्कृतिमा समेत सुधार गरी सजिलै प्राप्त हुने लाभको उपयोग गरिनेछ ।

क्षेत्रगत रूपमा कृषि तथा वन सम्बन्धी अनुसन्धान तथा विकास, कृषकमा नवीनतम ज्ञान तथा सीप विकास, यान्त्रिकीकरण, सिँचाइ, भूमि विकास, चक्लाबन्दी र सघन उत्पादन र उच्च मूल्यका कृषि तथा वन पैदावरको विकास गरी कृषि क्षेत्रको उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरिनेछ । उद्योग क्षेत्रमा ऊर्जाको सहज र सुलभ उपलब्धता, आधुनिक प्रविधिको अवलम्बन र दक्षता वृद्धि, उद्यमशीलता विकास, सीपयुक्त जनशक्तिको विकास र उपयोग, असल श्रमसम्बन्ध र उद्योगको क्षमता उपयोगमा प्रोत्साहन गरी उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरिनेछ । सेवा क्षेत्रतर्फ व्यवस्थापनमा सुधार, आधुनिक तथा सूचना प्रविधिको अवलम्बन र उच्च प्रविधि तथा ज्ञानमा आधारित सेवा उद्योगको विकासमा जोड दिइनेछ । साथै, क्षेत्रगत उत्पादकत्व अभिवृद्धि हुनेगरी वैदेशिक लगानीलाई राष्ट्रिय प्राथमिकताका क्षेत्रमा परिचालन गरिनेछ । व्यावसायिक एकाई स्तरमा समेत पुँजीको विनियोजन कुशलतामा सुधार, जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि, श्रमको उत्पादनसँग आबद्धता र उत्पादनका साधनको अनावश्यक प्रयोग र खेर फाल्ने प्रवृत्तिलाई निरूत्साहन गर्न रणनीतिक हस्तक्षेप गरिनेछ ।

### ३.९.३ सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र लगानी

मुलुक स्थायित्व र समृद्धिको दिशामा अघि बढे अनुरूप सुशासन कायम हुने, कार्यक्रम/आयोजना निर्धारित समय र लागतमा सम्पन्न भई लक्षित उपलब्धि हासिल हुने वातावरणको सिर्जना हुने अपेक्षा गरिएको छ । विगतमा थालनी गरिएका सडक तथा हवाई यातायात, जलविद्युत र सिँचाई क्षेत्रका बृहत् कार्यक्रम/आयोजना यस योजना अवधिमा सम्पन्न भई सञ्चालनमा आउनेछन् । संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकार क्षेत्र बमोजिम सार्वजनिक खर्चमा उल्लेख्य वृद्धि हुनेछ । अर्थतन्त्रको लागत कटौती तथा उत्पादन अभिवृद्धि भई पुँजीको उत्पादकत्वमा वृद्धि हुने अनुमान छ । यसका लागि कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रमा उन्नत तथा आधुनिक प्रविधि, सूचना प्रविधि र विद्युतीय शासनको अवलम्बन सहित अर्थतन्त्रको यान्त्रिकीकरण तथा आधुनिकीकरण गर्नु आवश्यक छ ।

साथै, संघीय शासन प्रणाली बमोजिम सबै स्थानीय तहसम्म यातायात, सञ्चार, शिक्षा तथा स्वास्थ्य र सार्वजनिक सेवा सम्बन्धी पूर्वाधारको निर्माण तथा विस्तार गर्नुपर्ने छ। नवीनतम, दीर्घकालीन तथा रणनीतिक प्रकृतिका रेलमार्ग, विमानस्थल, जलाशययुक्त जलविद्युत, प्राविधिक शिक्षा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी पूर्वाधार लगायतका कार्यक्रम/आयोजनामा ठूलो परिमाणमा लगानी गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ।

पुँजीको उत्पादकत्वमा सुधार हुने अनुमान गरिए तापनि उल्लेखित बृहत् प्रकृतिका नयाँ आयोजनाहरू सम्पन्न भई प्रतिफल आउन समय लाग्ने भएकाले गत योजनाको तुलनामा यस योजनामा सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपातमा सामान्य कमी आई ४.९ : १ रहने अनुमान छ। उल्लेखित सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपातको आधारमा योजना अवधिको औसत ९.६ प्रतिशतको आर्थिक वृद्धिदरको लक्ष्य हासिल गर्न कुल स्थिर लगानी आ.व. २०७५/७६ को मूल्यमा रु. ९२ खर्ब २९ अर्ब २९ करोड आवश्यक पर्ने अनुमान गरिएको छ। यसमध्ये सार्वजनिक क्षेत्रबाट रु ३५ खर्ब ९८ अर्ब ३२ करोड, निजी क्षेत्रबाट रु. ५१ खर्ब ३४ अर्ब ९ करोड र सहकारी क्षेत्रबाट रु. ४ खर्ब ९६ अर्ब ८७ करोड लगानी हुने अनुमान गरिएको छ। कुल लगानीमा यी तीन क्षेत्रको क्रमशः ३९.० प्रतिशत, ५५.६ प्रतिशत र ५.४ प्रतिशत योगदान हुनेछ। अनुमानित लगानीको विषयगत बाँडफाँट अनुसार कृषि, उत्पादनमूलक उद्योग, विद्युत, निर्माण, शिक्षा तथा स्वास्थ्यमा सरकारी लगानी उल्लेख्य वृद्धि हुने प्रक्षेपण गरिएको छ।

क्षेत्रगत सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र लगानी सम्बन्धी विवरण तालिका ३.६ र ३.७ मा दिइएको छ :

तालिका ३.६: सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र कुल लगानी (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

(रु करोडमा)

| क्र सं | लगानीका क्षेत्रहरू      | अनुमानित सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात | पन्ध्रौँ योजनामा प्रक्षेपित लगानी |         |         |         |         | योजना अवधि |
|--------|-------------------------|---------------------------------------|-----------------------------------|---------|---------|---------|---------|------------|
|        |                         |                                       | २०७६/७७                           | २०७७/७८ | २०७८/७९ | २०७९/८० | २०८०/८१ |            |
| १      | कृषि                    |                                       | १२७०१                             | १४२४९   | १६७९९   | १८११३   | १९१०५   | ८०९६८      |
| १.१    | कृषि तथा वन             | ३.३                                   | १२३१६                             | १३७२३   | १६१५८   | १७३५७   | १८३२९   | ७७८८३      |
| १.२    | मत्स्यपालन              | २.५                                   | ३८५                               | ५२७     | ६४१     | ७५६     | ७७७     | ३०८५       |
| २      | गैरकृषि                 |                                       | १२२६११                            | १४९९२३  | १७०४२०  | १८४२८२  | २१४७२५  | ८४१९६१     |
| २.१    | उद्योग                  |                                       | ४९३०२                             | ५८४१०   | ६५०९८   | ७०६३१   | ८१०४०   | ३२४४८१     |
| २.१.१  | खानि तथा उत्खनन         | ६.१                                   | १४६८                              | १९१४    | २४२१    | २९०६    | ३४००    | १२१०७      |
| २.१.२  | उद्योग                  | ५.२                                   | १०२३७                             | १२९०३   | १४५८१   | १५२०९   | १९८७३   | ७२८०३      |
| २.१.३  | विद्युत, ग्यास तथा पानी | १७.०                                  | २८५४५                             | ३२६९७   | ३६५७४   | ४२३००   | ४३०४८   | १८३१६४     |
| २.१.४  | निर्माण                 | ३.२                                   | ९०५२                              | १०८९६   | ११५२२   | १०२१६   | १४७२०   | ५६४०६      |
| २.२    | सेवा                    |                                       | ७३३०९                             | ९१५१३   | १०५३२२  | ११३६५२  | १३३६८५  | ५१७४८०     |
| २.२.१  | थोक तथा खुद्रा व्यापार  | २.१                                   | ८७७७                              | ११४३१   | १२९४८   | १३४३३   | १५७०४   | ६२२९३      |
| २.२.२  | होटेल तथा रेस्टुरेण्ट   | ६.१                                   | ६३२२                              | ८९२८    | ९१०७    | १००२८   | ११६३३   | ४६०१८      |

| क्र सं | लगानीका क्षेत्रहरू                                     | अनुमानित सीमान्त<br>पुँजी उत्पादन<br>अनुपात | पन्ध्रौं योजनामा प्रक्षेपित लगानी |               |               |               |               | योजना<br>अवधि |
|--------|--|---|-----------------------------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|
|        |  |   | २०७६/७७                           | २०७७/७८       | २०७८/७९       | २०७९/८०       | २०८०/८१       |               |
| २.२.३  | यातायात, भण्डारण र सञ्चार                              | ११.५  | २२९१०                             | २९१३४         | ३६७९२         | ३७७७३         | ४५७४०         | १७२३४९        |
| २.२.४  | वित्तीय मध्यस्थता                                      | ३.१   | ५०९८                              | ६१८२          | ६७६९          | ७०२२          | ८९३०          | ३४००१         |
| २.२.५  | घरजग्गा, बहाल तथा व्यावसायिक क्रियाकलाप                | ५.१   | १२०६५                             | १४४१०         | १४४५८         | १७६८०         | १९३३३         | ७७९४६         |
| २.२.६  | सामान्य प्रशासन तथा रक्षा                              | ४.५   | ३४३५                              | ३०५८          | ३९४५          | ४०६१          | ४६६५          | १९१६५         |
| २.२.७  | शिक्षा   | ४.१   | ७५३१                              | ९१३३          | ११०५३         | ११६३२         | १४०७५         | ५३४२४         |
| २.२.८  | स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य                            | ८.८   | ४०९६                              | ५२७१          | ५९२६          | ७०४७          | ८३३०          | ३०६७०         |
| २.२.९  | अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप | २.८   | ३०७५                              | ३९६७          | ४३२४          | ४९७४          | ५२७५          | २१६१४         |
|        | <b>कुल लगानी</b>                                       | <b>४.९</b>                                  | <b>१३५३१२</b>                     | <b>१६४१७३</b> | <b>१८७२१९</b> | <b>२०२३९५</b> | <b>२३३८३०</b> | <b>९२२९२९</b> |

तालिका ३.७: सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रबाट हुने लगानी (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

(रु करोडमा)

| क्र सं | लगानीका क्षेत्रहरू      | सार्वजनिक |         | निजी   |         | सहकारी |         | जम्मा  |         |
|--------|-------------------------|-----------|---------|--------|---------|--------|---------|--------|---------|
|        |                         | रकम       | प्रतिशत | रकम    | प्रतिशत | रकम    | प्रतिशत | रकम    | प्रतिशत |
| १      | कृषि                    | ४१८६४     | ५१.७    | २८७०१  | ३५.४    | १०४०२  | १२.८    | ८०९६८  | १००.०   |
| १.१    | कृषि तथा वन             | ४१२७८     | ५३.०    | २६४८०  | ३४.०    | १०१२५  | १३.०    | ७७८८३  | १००.०   |
| १.२    | मत्स्यपालन              | ५८६       | १९.०    | २२२१   | ७२.०    | २७८    | ९.०     | ३०८५   | १००.०   |
| २      | गैरकृषि                 | ३१७९६८    | ३७.८    | ४८४७०७ | ५७.६    | ३९३८५  | ४.७     | ८४१९६१ | १००.०   |
| २.१    | उद्योग                  | १३८१४७    | ४२.६    | १७५४७६ | ५४.१    | १०८५८  | ३.३     | ३२४४८१ | १००.०   |
| २.१.१  | खानि तथा उत्खनन         | ३१४८      | २६.०    | ८७१७   | ७२.०    | २४२    | २.०     | १२१०७  | १००.०   |
| २.१.२  | उद्योग                  | ८७३६      | १२.०    | ५८२४२  | ८०.०    | ५८२४   | ८.०     | ७२८०३  | १००.०   |
| २.१.३  | विद्युत, ग्यास तथा पानी | १०२५७२    | ५६.०    | ७६९२९  | ४२.०    | ३६६३   | २.०     | १८३१६४ | १००.०   |
| २.१.४  | निर्माण                 | २३६९१     | ४२.०    | ३१५८८  | ५६.०    | ११२८   | २.०     | ५६४०६  | १००.०   |
| २.२    | सेवा                    | १७९८२२    | ३४.७    | ३०९२३१ | ५९.८    | २८४२७  | ५.५     | ५१७४८० | १००.०   |
| २.२.१  | थोक तथा खुद्रा व्यापार  | ३७३८      | ६.०     | ५२३२६  | ८४.०    | ६२२९   | १०.०    | ६२२९३  | १००.०   |

| क्र सं | लगानीका क्षेत्रहरू                                     | सार्वजनिक     |             | निजी          |             | सहकारी       |            | जम्मा         |              |
|--------|--|---------------|-------------|---------------|-------------|--------------|------------|---------------|--------------|
|        |  | रकम           | प्रतिशत     | रकम           | प्रतिशत     | रकम          | प्रतिशत    | रकम           | प्रतिशत      |
| २.२.२  | होटेल तथा रेस्टुरेण्ट                                  | ३६८१          | ८.०         | ४१४१६         | ९०.०        | ९२०          | २.०        | ४६०१८         | १००.०        |
| २.२.३  | यातायात, भण्डारण र सञ्चार                              | ९८२३९         | ५७.०        | ६५४९३         | ३८.०        | ८६१७         | ५.०        | १७२३४९        | १००.०        |
| २.२.४  | वित्तीय मध्यस्थता                                      | ३०६०          | ९.०         | २६५२१         | ७८.०        | ४४२०         | १३.०       | ३४००१         | १००.०        |
| २.२.५  | घरजग्गा, बहाल तथा व्यावसायिक क्रियाकलाप                | ३८९७          | ५.०         | ७०१५२         | ९०.०        | ३८९७         | ५.०        | ७७९४६         | १००.०        |
| २.२.६  | सामान्य प्रशासन तथा रक्षा                              | १९१६५         | १००.०       | ०             | ०.०         | ०            | ०.०        | १९१६५         | १००.०        |
| २.२.७  | शिक्षा   | २९९१७         | ५६.०        | २१९०४         | ४१.०        | १६०३         | ३.०        | ५३४२४         | १००.०        |
| २.२.८  | स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य                            | १३८०१         | ४५.०        | १५६४२         | ५१.०        | १२२७         | ४.०        | ३०६७०         | १००.०        |
| २.२.९  | अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप | ४३२३          | २०.०        | १५७७९         | ७३.०        | १५१३         | ७.०        | २१६१४         | १००.०        |
|        | <b>कुल लगानी</b>                                       | <b>३५९८३२</b> | <b>३९.०</b> | <b>५१३४०९</b> | <b>५५.६</b> | <b>४९६८७</b> | <b>५.४</b> | <b>९२२९२९</b> | <b>१००.०</b> |

### ३.९.४ स्रोत-साधनको अनुमान तथा बाँडफाँटका आधार

नेपालको संविधान कार्यान्वयनलाई प्रमुख आधार लिँदै यस योजनाको लक्ष्य तथा उद्देश्य हासिल गर्ने गरी स्रोत-साधनको आकलन तथा बाँडफाँट गरिएको छ। समृद्धि र सुखको आधार निर्माण गर्न सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रबीचको सहकार्य तथा परिपूरक भूमिका एवम् संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीचको सहकार्यबाट अर्थतन्त्रमा उल्लेखनीय परिपूरकता (Synergy) ल्याउने गरी स्रोत अनुमान गरिएको छ। योजनाले निर्धारण गरेका रूपान्तरणका सम्वाहकका क्षेत्रमा आवश्यक स्रोत-साधनको बाँडफाँट गरिएको छ। राष्ट्रिय रणनीति बमोजिम पहिचान गरिएका विषय क्षेत्रमा रणनीतिक हस्तक्षेप गरी लगानीको उच्चतम प्रतिफल हासिल हुने अपेक्षा गरिएको छ। निर्माणाधीन राष्ट्रिय स्तरका कार्यक्रम/आयोजना संघबाट, प्रदेश र स्थानीय स्तरका कार्यक्रम/आयोजना क्रमशः प्रदेश र स्थानीय तहबाट नै सम्पन्न गर्ने गरी स्रोत आकलन तथा बाँडफाँट गरिएको छ। साथै, भूकम्पपछिको पुनर्निर्माणलाई पूर्णता दिने, आधारभूत पूर्वाधार निर्माण तथा प्रवर्द्धन हुने र अभियानका रूपमा सञ्चालन हुने कार्यक्रम तथा दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्न सघाउ पुग्ने गरी स्रोत बाँडफाँट गरिएको छ।

योजनाले लिएको आर्थिक वृद्धिको लक्ष्य हासिल गर्न सार्वजनिक लगानीलाई कृषि तथा वन, औद्योगिक पूर्वाधार निर्माण, प्रोत्साहन र सहजीकरण सहित औद्योगिक उत्पादन, विद्युत उत्पादन, प्रसारण तथा वितरण, पूर्वाधार निर्माण जस्ता क्षेत्रमा लगानी केन्द्रित गरिएको छ। निजी क्षेत्रको लगानी रोजगारी सिर्जना, अर्थतन्त्रको औद्योगिकीकरण र आधुनिकीकरण, ऊर्जा उत्पादन, शहरी क्षेत्रमा लगानी, पर्यटन, व्यापार, यातायात र सञ्चार क्षेत्रमा लक्षित हुने अनुमान गरिएको छ। कृषि, उत्पादनमूलक क्षेत्र, साना तथा मझौला उद्योग र ग्रामीण तथा सामाजिक विकासमा सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्र परिचालित हुने विश्वास लिइएको छ। मानव पुँजी निर्माण र सोको उच्चतम उपयोगले उत्पादकत्व अभिवृद्धि, उच्च आयको आधार निर्माण र सुखको अनुभूति हुने अपेक्षा गरिएको छ। साथै, पर्यावरण संरक्षण, सभ्य र न्यायपूर्ण समाज निर्माण तथा सुशासन, लोकतन्त्र र राष्ट्रिय एकतालाई थप सुदृढ बनाउने गरी सार्वजनिक, निजी तथा सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको स्रोत परिचालनको अनुमान र सोको बाँडफाँट गरिएको छ।

### ३.९.५ सार्वजनिक स्रोत व्यवस्था तथा खर्चको अनुमान

आधारभूत सार्वजनिक सेवा प्रवाह, तीव्र आर्थिक वृद्धिको लक्ष्य तथा दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्ने दिशामा अग्रसर हुन सरकारी लगानी तथा खर्चको महत्त्वपूर्ण भूमिका हुन्छ। साथै, घर परिवार, निजी, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको लगानी आकर्षण गरी योजनाको निर्धारित लक्ष्य हासिल गर्न समेत सार्वजनिक खर्चको आवश्यकता पर्दछ। योजना अवधिमा रू. ९९ खर्ब ५८ अर्ब ३३ करोड सरकारी खर्च हुने अनुमान गरिएको छ। यस अनुमानित खर्चमध्ये रू. ४५ खर्ब ९६ अर्ब ८२ करोड चालु खर्च, रू. ४० खर्ब १५ अर्ब ५२ करोड पुँजीगत खर्च, रू. १३ खर्ब ४५ अर्ब ९९ करोड वित्तीय व्यवस्था र वित्तीय हस्तान्तरण (अनुदान) रू. १७ खर्ब १ अर्ब ३ करोड हुने अनुमान गरिएको छ। योजनाको अन्तिम वर्षमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा पुँजीगत खर्च र कुल खर्च क्रमशः १८.६ प्रतिशत र ४३.३ प्रतिशत हुने प्रक्षेपण गरिएको छ।

उल्लिखित सरकारी खर्च ब्यहोर्ने प्रमुख स्रोतको रूपमा रहने राजस्व कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ३२.४ प्रतिशत अर्थात् रू. ७२ खर्ब ४७ अर्ब ६२ करोड परिचालन हुने अनुमान गरिएको छ । योजना अवधिमा रु ३ खर्ब २१ अर्ब ४६ करोड बराबर अनुदान (वैदेशिक) प्राप्त हुने अनुमान गरिएको छ ।

राजस्व तथा अन्य आन्तरिक आम्दानी र वैदेशिक अनुदान परिचालन गर्दा न्यून हुने योजनाको अनुमानित खर्च रू. २३ खर्ब ८९ अर्ब २५ करोड मध्ये रू. १३ खर्ब ९३ अर्ब १० करोड वैदेशिक ऋण र बाँकी न्यून हुने रू. ९ खर्ब ९६ अर्ब १५ करोड आन्तरिक ऋणबाट ब्यहोर्नुपर्ने प्रक्षेपण गरिएको छ । सरकारी बजेट (खर्च) तथा ब्यहोर्ने स्रोतहरूको विवरण तालिका नं. ३.८ मा उल्लेख गरिएको छ ।

तालिका ३.८ सार्वजनिक वित्तको प्रक्षेपण (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

रकम रू. करोडमा

| क्र.सं. | विवरण              | २०७५/७६ को अनुमान | २०७६/७७ | २०७७/७८ | २०७८/७९ | २०७९/८० | २०८०/८१ | योजना अवधिको कुल जम्मा |
|---------|--------------------|-------------------|---------|---------|---------|---------|---------|------------------------|
|         | सार्वजनिक आय       | १३९५७१            | १५९३२२  | १७७६२९  | १९७३१८  | २१८३८८  | २४३१७६  | ९९५८३३                 |
| १       | राजस्व             | १०२०७२            | ११२७६६  | १२७४३३  | १४३३४०  | १६०५५१  | १८०६७२  | ७२४७६२                 |
| २       | वैदेशिक सहायता     | २०२९९             | ३०५३०   | ३२३७०   | ३४२३०   | ३६०९६   | ३८२३०   | १७१४५६                 |
|         | वैदेशिक अनुदान     | ३९९९              | ६४७२    | ६४५१    | ६४२९    | ६४०८    | ६३८७    | ३२१४६                  |
|         | वैदेशिक ऋण         | १६३००             | २४०५८   | २५९१९   | २७८०१   | २९६८८   | ३१८४४   | १३९३१०                 |
| ३       | आन्तरिक ऋण         | १७२००             | १६०२६   | १७८२७   | १९७४८   | २१७४१   | २४२७३   | ९९६१५                  |
|         | सार्वजनिक व्यय     | १३९५७१            | १५९३२२  | १७७६२९  | १९७३१८  | २१८३८८  | २४३१७६  | ९९५८३३                 |
| १       | चालू खर्च          | ७८९४०             | ८५४७२   | ८५२९८   | ९१५७२   | ९६६७९   | १००६६१  | ४५९६८२                 |
| २       | पूँजीगत खर्च       | ४७०८७             | ५८०३७   | ६९९४९   | ८०१६२   | ८९०६१   | १०४३४३  | ४०१५५२                 |
| ३       | वित्तीय व्यवस्था   | १३५४५             | १५८१३   | २२३८२   | २५५८३   | ३२६४७   | ३८१७३   | १३४५९९                 |
|         | लगानी              | ७६७८              | ९४८८    | १०१०५   | ११३२३   | १२४००   | १३६२७   | ५६९४३                  |
|         | ऋण भुक्तानी        | ५८६६              | ६३२५    | १२२७७   | १४२६०   | २०२४८   | २४५४५   | ७७६५६                  |
| ४       | वित्तीय हस्तान्तरण | ३२८४९             | ३१०३२   | ३३०२६   | ३४१८०   | ३५३२४   | ३६५४१   | १७०१०३                 |

द्रष्टव्यः आधार वर्ष आ.व. २०७५/७६ मा चालु खर्च अन्तर्गत प्रदेश र स्थानीय तहलाई हस्तान्तरण गरिएको अनुदान (वित्तीय समानीकरण, सशर्त, समपूरक र विशेष अनुदान) रकम समावेश भएको भए तापनि पन्ध्रौँ योजना अवधिमा यस्तो हस्तान्तरणलाई वित्तीय हस्तान्तरण अन्तर्गत समावेश गरिएको छ ।

### ३.९.६ अन्तरसरकारी वित्त

अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापनतर्फ योजना अवधिमा कुल रकम रू. २३ खर्ब ७० अर्ब ४० करोड हस्तान्तरण हुने प्रक्षेपण गरिएको छ। जसमध्ये, राजस्व बाँडफाँट तर्फ रू. ६ खर्ब ६९ अर्ब ३६ करोड र अनुदान तर्फ रू. १७ खर्ब १ अर्ब ३ करोड रकम हस्तान्तरण हुने अनुमान गरिएको छ। यसको विस्तृत विवरण तालिका ३.९ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ३.९ अन्तरसरकारी वित्तको प्रक्षेपण (२०७५/७६ को मूल्यमा)

रकम रू. करोडमा

| क्र.सं. | विवरण                                | आ.व. २०७५/७६ को अनुमान |              |              | आ.व. २०७६/७७ |              |              | आ.व. २०७७/७८ |              |              | आ.व. २०७८/७९ |              |              |
|---------|--------------------------------------|------------------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|
|         |                                      | प्रदेश                 | स्थानीय तह   | कुल          | प्रदेश       | स्थानीय तह   | कुल          | प्रदेश       | स्थानीय तह   | कुल          | प्रदेश       | स्थानीय तह   | कुल          |
| १       | संघीय विभाज्य कोषबाट राजस्व बाँडफाँट | ४९४३                   | ४३५९         | ९३०३         | ५५३७         | ४८८३         | १०४२०        | ६२५४         | ५५१६         | ११७७०        | ७०३५         | ६२०४         | १३२३९        |
| २       | अनुदान                               | १२३४३                  | २०५०५        | ३२८४९        | ११११८        | १९९१४        | ३१०३२        | १२०२७        | २०९९९        | ३३०२६        | १२५११        | २१६६९        | ३४१८०        |
|         | वित्तीय समानीकरण अनुदान              | ५०३०                   | ८५२१         | १३५५१        | ५२४९         | ८५३८         | १३७८७        | ५५३१         | ८९९६         | १४५२६        | ५८२७         | ९४७८         | १५३०५        |
|         | सशर्त अनुदान                         | ६३१४                   | १०९८५        | १७२९८        | ४९२०         | १०४२७        | १५३४७        | ४९२०         | १०४२७        | १५३४७        | ४९२०         | १०४२७        | १५३४७        |
|         | समपूरक अनुदान                        | ५००                    | ५००          | १०००         | ४७५          | ४७५          | ९४९          | ९०१          | ९०१          | १८०२         | १०२६         | १०२६         | २०५३         |
|         | विशेष अनुदान                         | ५००                    | ५००          | १०००         | ४७५          | ४७५          | ९४९          | ६७६          | ६७६          | १३५२         | ७३८          | ७३८          | १४७५         |
|         | <b>जम्मा</b>                         | <b>१७२८७</b>           | <b>२४८६५</b> | <b>४२१५१</b> | <b>१६६५५</b> | <b>२४७९७</b> | <b>४१४५२</b> | <b>१८२८१</b> | <b>२६५१५</b> | <b>४४७९६</b> | <b>१९५४६</b> | <b>२७८७३</b> | <b>४७४१९</b> |

| क्र.सं. | विवरण                                | आ.व. २०७९/८० |              |              | आ.व. २०८०/८१ |              |              | योजना अवधि   |               |               |
|---------|--------------------------------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|---------------|---------------|
|         |                                      | प्रदेश       | स्थानीय तह   | कुल          | प्रदेश       | स्थानीय तह   | कुल          | प्रदेश       | स्थानीय तह    | कुल           |
| १       | संघीय विभाज्य कोषबाट राजस्व बाँडफाँट | ७८८०         | ६९४९         | १४८२९        | ८८६३         | ७८१६         | १६६७९        | ३५५६८        | ३१३६८         | ६६९३६         |
| २       | अनुदान                               | १२९८५        | २२३३९        | ३५३२४        | १३४९१        | २३०५१        | ३६५४१        | ६२१३२        | १०७९७२        | १७०१०३        |
|         | वित्तीय समानीकरण अनुदान              | ६१४०         | ९९८७         | १६१२६        | ६४६९         | १०५२२        | १६९९१        | २९२१५        | ४७५२१         | ७६७३६         |
|         | सशर्त अनुदान                         | ४९२०         | १०४२७        | १५३४७        | ४९२०         | १०४२७        | १५३४७        | २४५९९        | ५२१३४         | ७६७३३         |
|         | समपूरक अनुदान                        | ११२०         | ११२०         | २२४१         | १२२३         | १२२३         | २४४६         | ४७४५         | ४७४५          | ९४९०          |
|         | विशेष अनुदान                         | ८०५          | ८०५          | १६१०         | ८७९          | ८७९          | १७५८         | ३५७२         | ३५७२          | ७१४४          |
|         | <b>जम्मा</b>                         | <b>२०८६५</b> | <b>२९२८८</b> | <b>५०१५२</b> | <b>२२३५४</b> | <b>३०८६७</b> | <b>५३२२१</b> | <b>९७७००</b> | <b>१३९३३९</b> | <b>२३७०४०</b> |

### ३.९.७ समष्टिगत अर्थतन्त्रमा पर्ने प्रभाव

संघ, प्रदेश र स्थानीय तह तथा निजी, सहकारी एवम् सामुदायिक क्षेत्रको लगानी तथा अन्य प्रयासबाट यस अवधिमा अर्थतन्त्रका प्रमुख तथा समष्टिगत परिसूचकहरूमा सकारात्मक प्रभाव पर्न गई समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम भई आर्थिक समृद्धिको आधार निर्माण गर्न सहयोग पुग्नेछ। यस अवधिमा बचत तथा लगानी, सार्वजनिक वित्त, मौद्रिक तथा बाह्य क्षेत्रमा देहाय बमोजिम उपलब्धि हासिल हुने अनुमान छ।

तालिका ३.१० बचत तथा लगानी, सार्वजनिक वित्त र मौद्रिक तथा बाह्य क्षेत्र  
(कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा)

| क्र.सं. | सूचक/लक्ष्य                      | एकाई    | आ.व.<br>२०७५/७६ को<br>अनुमान | पन्ध्रौं योजनाको लक्ष्य<br>(२०८०/८१ मा) |
|---------|----------------------------------|---------|------------------------------|---|
| १       | <b>बचत तथा लगानी</b>             |         |                              |   |
|         | कुल गार्हस्थ्य बचत               | प्रतिशत | २०.५                         | २२.०                                    |
|         | कुल राष्ट्रिय बचत                | प्रतिशत | ५२.४                         | ४७.५                                    |
|         | कुल स्थिर पुँजी लगानी            | प्रतिशत | ३६.९                         | ४१.६                                    |
| २       | <b>सार्वजनिक वित्त</b>           |         |                              |   |
|         | कुल बजेट                         | प्रतिशत | ४०.३                         | ४३.३                                    |
|         | चालु खर्च                        | प्रतिशत | २२.८                         | १७.९                                    |
|         | पुँजीगत खर्च                     | प्रतिशत | १३.६                         | १८.६                                    |
|         | वित्तीय व्यवस्था                 | प्रतिशत | ३.९                          | ६.८                                     |
|         | राजस्व                           | प्रतिशत | २९.५                         | ३२.२                                    |
|         | संघले संकलन गर्ने राजस्व         | प्रतिशत | २६.५                         | ३०.२                                    |
|         | वैदेशिक ऋण                       | प्रतिशत | ४.७                          | ५.७                                     |
|         | आन्तरिक ऋण                       | प्रतिशत | ५.०                          | ४.३                                     |
| ३       | <b>मौद्रिक तथा बाह्य क्षेत्र</b> |         |                              |   |
|         | मुद्रास्फीति*                    | प्रतिशत | ५.५                          | ६.०                                     |
|         | वस्तु तथा सेवाको निर्यात         | प्रतिशत | ९.०                          | १५.७                                    |
|         | वस्तु तथा सेवाको आयात            | प्रतिशत | ५०.८                         | ५१.०                                    |
|         | विप्रेषण                         | प्रतिशत | २६.१                         | २२.१                                    |
|         | वैदेशिक लगानी                    | प्रतिशत | ०.५                          | ४.६                                     |

\* वार्षिक औसत वृद्धिदर ।

माथि उल्लेख भए बमोजिमका समष्टिगत आर्थिक परिसूचकहरूमा हुने उपलब्धिबाट तीव्र, दिगो र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि हासिल भई अर्थतन्त्रको संरचनात्मक परिवर्तन हुनेछ । साथै, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा हुने सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनबाट संघीय संरचनाको सुदृढीकरण भई आमनागरिकको जीवनस्तरमा अपेक्षित सुधार गर्न मद्दत पुग्ने विश्वास लिइएको छ ।

## परिच्छेद – ४

# समष्टिगत अर्थतन्त्र

### ४.१ बचत

#### १. पृष्ठभूमि

तीव्र आर्थिक वृद्धि र समृद्धिका लागि आवश्यक लगानी जुटाउन बचत परिचालनको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ। नेपालको संविधानमा परिलक्षित आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र तथा उन्नतिशील राष्ट्रिय अर्थतन्त्र निर्माण गर्दै समाजवाद उन्मुख, स्वतन्त्र र समृद्ध अर्थतन्त्र विकास गर्ने आर्थिक उद्देश्य हासिल गर्न आन्तरिक स्रोत खासगरी बचत परिचालन गरी पुँजी निर्माण गर्नुपर्ने हुन्छ। तर, नेपाली जनताको आयस्रोत कम भएका कारण बचत गर्ने क्षमतामा अपेक्षाकृत वृद्धि हुन सकेको छैन। कुल गार्हस्थ्य बचतको परिमाण कम भए तापनि वैदेशिक रोजगारीबाट प्राप्त विप्रेषण आयका कारण कुल राष्ट्रिय बचत परिचालन भने उल्लेखनीय रहेको छ। विगत १० वर्षमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा कुल गार्हस्थ्य र राष्ट्रिय बचत क्रमशः औसत ११.५ प्रतिशत र ४२.६ प्रतिशत रहेको थियो। एकातिर उत्पादनमा वृद्धि गरी नागरिकको आय र बचत गर्ने क्षमता बढाउनु पर्नेछ भने अर्कोतर्फ उच्च बचत परिचालन गर्दै लगानी र आयमा उल्लेख्य वृद्धि गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ। यो योजना आय र बचत गर्ने क्षमता अभिवृद्धि, व्यवस्थित र सन्तुलित उपभोग, बचतको संरचनात्मक परिवर्तन र बचत परिचालनको उपयुक्त वातावरण निर्माणमा केन्द्रित रहनेछ।

#### २. प्रमुख समस्या

प्रतिव्यक्ति आय न्यून भएका कारण आयको ठूलो हिस्सा उपभोगमा खर्च हुनु, जीवन निर्वाह लागत उच्च रहेकाले न्यून आय भएका वर्गले अपेक्षित बचत गर्न नसक्नु, भड्किलो सामाजिक संस्कृति र बढ्दो सामाजिक खर्चका कारण मध्यम वर्गमा समेत उपभोग दर उच्च रहनु, सबै वर्ग तथा क्षेत्रमा वित्तीय पहुँच पुग्न नसक्नु, बचत सम्बन्धी उपकरणहरूको कमी हुनु, वित्तीय साक्षरताको कमी रहनु र पुँजी बजारको आधार साँघुरो रहनु बचत सम्बन्धी प्रमुख समस्या हुन्।

#### ३. चुनौती तथा अवसर

नागरिकमा बचतको महत्व तथा बचत गर्ने क्षमताको विकास गर्नु, आयातमुखी अर्थतन्त्रलाई उत्पादनमुखी अर्थतन्त्रमा रूपान्तरण गर्नु, बचत तथा लगानीमा महत्तम प्रतिफलको सुनिश्चितता गर्नु, मुद्रास्फीतिलाई वाञ्छित सीमाभित्र राख्नु, बचत परिचालन सम्बन्धी नवीनतम उपकरणको अवलम्बन, आकर्षण र विस्तार गर्नु, विप्रेषण आयलाई उत्पादनशील लगानीमा रूपान्तरण गर्नु र उपभोगलाई व्यवस्थापन गर्नु बचत सम्बन्धी प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

बैंक तथा वित्तीय संस्थाको विस्तार र पहुँच वृद्धि हुनु तथा वित्तीय उपकरणको तीव्र विस्तार हुनु, पछिल्ला वर्षमा बचतको उच्च ब्याजदर रहनु, विप्रेषण आप्रवाह उल्लेख्य हुनु, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयनका कारण स्थानीय तहसम्म विकास/निर्माणमा सार्वजनिक खर्च वृद्धि हुनु र कुल राष्ट्रिय बचत उच्च भएकाले राष्ट्रिय पुँजी निर्माणको लागि स्रोतको उपलब्धता हुनु बचत सम्बन्धी अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

बचत परिचालन मार्फत आत्मनिर्भर र समुन्नत अर्थतन्त्र निर्माण ।

##### ४.२ लक्ष्य

बचत परिचालनमा संरचनात्मक सुधार गरी लगानी वृद्धि गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

बचत गर्ने क्षमता अभिवृद्धि र बचत परिचालनको वातावरण निर्माण गरी गार्हस्थ्य तथा राष्ट्रिय बचत अभिवृद्धि गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. रोजगारी र आय-आर्जनका अवसर वृद्धि गरी बचत गर्ने क्षमता वृद्धि गर्ने ।                         | १. समतामूलक आयवृद्धि तथा आर्थिक जोखिम न्यूनीकरण गर्ने समष्टिगत आर्थिक नीति अवलम्बन गरिनेछ ।<br>२. न्यूनतम मूल्यमा गुणस्तरीय दैनिक उपभोग्य वस्तु र आधारभूत तथा सामाजिक सेवा सुविधाको सुनिश्चितता कायम गरी बचतको दायरा विस्तार गरिनेछ ।<br>३. राष्ट्रिय बचत नीति तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।   |
| २. घरपरिवार, निजी क्षेत्र र सहकारी तथा सामुदायिक संस्थालाई बचत गर्न प्रोत्साहन र आकर्षण गर्ने । | १. घरपरिवार तथा सार्वजनिक क्षेत्रको अनुत्पादक खर्चलाई निरुत्साहित गरी उत्पादनशील खर्चमा प्रोत्साहित गरिनेछ ।<br>२. बचत तथा लगानीमा उच्चतम प्रतिफलको सुनिश्चितता हुने वातावरण निर्माण गरिनेछ ।<br>३. बचत परिचालन गरी आर्थिक वृद्धि गर्न राजस्व प्रणाली तथा वित्तीय क्षेत्रमा आवश्यक सुधार गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ३. वित्तीय प्रणालीको विकास तथा अनौपचारिक क्षेत्रको नियमन मार्फत व्यक्तिगत, संस्थागत र वैदेशिक रोजगारीको बचत परिचालन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. बचत तथा लगानी सम्बन्धी विद्यमान उपकरणको प्रभावकारी उपयोग तथा नवीनतम उपकरणहरूको अवलम्बन र विस्तार गरिनेछ ।</li> <li>२. पुँजी बजारलाई एकीकृत तथा सघनीकृत गरी पुँजी निर्माणमा बचत आकर्षण गरिनेछ ।</li> <li>३. सम्झौतीत बचत कोष तथा निवृत्तिभरण कोषको व्यवस्थापन र विप्रेषणको उत्पादनशील परिचालन गर्न विशेष बचत तथा लगानी योजना सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</li> <li>४. अनौपचारिक क्षेत्रको औपचारिकीकरण गरी वित्तीय सेवा विस्तार र बचत अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> <li>५. वैदेशिक रोजगारीको बचत परिचालन गर्न आवश्यक उपकरणहरू कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</li> </ol>   |
| ४. बचत अभिवृद्धि तथा परिचालनमा अन्तरसरकारी समन्वय तथा निजी, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको सहकार्य अभिवृद्धि गर्ने ।        | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. वित्तीय प्रणालीको विस्तार गरी सम्पूर्ण नागरिकमा वित्तीय पहुँच पुऱ्याइनेछ ।</li> <li>२. बैंक तथा वित्तीय क्षेत्रको पहुँच र सेवा विस्तार गरिनेछ ।</li> <li>३. सहकारी तथा सामुदायिक संस्था मार्फत न्यून आय भएका तथा साना बचतकर्ताको बचत तथा लगानी अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> <li>४. वित्तीय संस्था, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रसँगको सहकार्यमा स्थानीय तहबाट बचत (खासगरी दीर्घकालीन बचत) को महत्वबारे वित्तीय सचेतना र साक्षरता कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>५. स्थानीय तहमा वित्तीय संस्थाको विस्तार एवम् प्रदेश राजधानीमा प्रादेशिक समन्वय गर्ने गरी वित्तीय प्रणालीको संरचनात्मक सुधार गरिनेछ ।</li> </ol> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा कुल गार्हस्थ्य बचत २०.५ प्रतिशतबाट २२ प्रतिशत तथा कुल राष्ट्रिय बचत ४७.५ प्रतिशत पुगेको हुनेछ ।

## ४.२ सार्वजनिक वित्त

### ४.२.१ सार्वजनिक खर्च

#### १. पृष्ठभूमि

उपलब्ध स्रोत र साधनको कुशल तथा प्रभावकारी उपयोग गरी समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्रको आधार निर्माण गर्न सार्वजनिक खर्चको प्रभावकारी परिचालन आवश्यक हुन्छ। नागरिकका बढ्दो आवश्यकता र अपेक्षालाई उपलब्ध स्रोत र साधनको सीमाभित्र रही सम्बोधन गर्नुपर्ने अवस्था छ। साथै, संविधानले प्रत्याभूत गरेका मौलिक हक कार्यान्वयन गर्न बनेका कानूनले सिर्जना गरेका आर्थिक दायित्वहरूको व्यवस्थापन गर्नुपर्ने छ। संघीय प्रणाली अनुरूप सार्वजनिक खर्चको संरचना र खर्च गर्ने भूमिका एवम् जिम्मेवारीमा परिवर्तन भएकोले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आ-आफ्नो खर्च जिम्मेवारी बमोजिम सार्वजनिक स्रोतको सन्तुलित र न्यायोचित विनियोजन गरी कार्यान्वयन गर्नुपर्नेछ। समग्र सार्वजनिक खर्च प्रणालीलाई पारदर्शी, जवाफदेही र नतिजामूलक बनाउन तीन तहमा सार्वजनिक खर्चको उपयोग गर्ने क्षमता अभिवृद्धि गर्नु अपरिहार्य हुन्छ। विगत १० वर्षमा सार्वजनिक खर्च कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा १९.८ प्रतिशतबाट ४०.३ प्रतिशत पुगेको छ। तसर्थ सार्वजनिक खर्चको कुशलता, प्रभावकारिता र दिगोपना, उच्च तथा गुणस्तरीय पुँजीगत खर्च र राष्ट्रिय पुँजी निर्माण र वित्तीय संघीयता कार्यान्वयनमा यो योजना केन्द्रित छ।

#### २. प्रमुख समस्या

चालु खर्चको तुलनामा पुँजीगत खर्च अपेक्षित रूपमा बढ्न नसक्नु, विनियोजन कुशलता र कार्यान्वयन दक्षताको कमी हुनु, प्रतिबद्धता अनुरूप विकास सहायता परिचालन हुन नसक्नु र आर्थिक अनुशासनको पालनमा कमी हुनु सार्वजनिक खर्च व्यवस्थापनका प्रमुख समस्या हुन्। खर्च गर्ने क्षमताभन्दा बढी बजेट माग हुनु, निर्धारित समय, लागत, परिमाण र गुणस्तरमा आयोजना सम्पन्न नहुनु, क्रमागत आयोजनाको संख्या अधिक हुनु र आयोजना सुशासन कायम हुन नसक्नु जस्ता थप समस्या रहेका छन्।

#### ३. चुनौती तथा अवसर

नेपालको दीर्घकालीन सोच, दिगो विकास लक्ष्यको मार्गचित्र र पन्ध्रौं योजनाको लक्ष्य हासिल हुने गरी सार्वजनिक खर्च व्यवस्थापन गर्नु, सार्वजनिक खर्चको बढ्दो मागलाई कुशलतापूर्वक व्यवस्थापन गर्दै वित्तीय संघीयता कार्यान्वयन गर्नु, विनियोजन कुशलता र खर्च गर्ने दक्षता अभिवृद्धि गर्नु र चालु खर्चलाई वाञ्छित सीमामा राखी पुँजीगत खर्चमा बढोत्तरी गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन्। राष्ट्रिय आवश्यकता र प्राथमिकताका क्षेत्रमा विकास सहायता परिचालन गर्नु, सार्वजनिक खर्च प्रणालीलाई प्रदेश र स्थानीय तहमा संस्थागत गर्नु र प्रदेश तथा स्थानीय तहको आवश्यकता र उपलब्ध स्रोतबीच सन्तुलन कायम गर्नु जस्ता थप चुनौती रहेका छन्।

सार्वजनिक खर्च प्रणालीमा भएका नीतिगत, कानुनी, प्रक्रियागत एवम् प्रविधिजन्य सुधार, तीन तहमा निर्वाचित सरकारको क्रियाशीलता र प्रादेशिक तथा स्थानीय अर्थतन्त्रको विकास, स्थानीय स्रोत र साधनको उच्चतम परिचालनको सम्भावना र विकास साझेदारहरूको सहायता प्रतिको प्रतिबद्धता प्रमुख अवसर हुन्। साथै, नेपालको

दीर्घकालीन सोच, दिगो विकासका लक्ष्यको मार्गचित्र तथा वित्तीय रणनीति र मध्यमकालीन खर्च संरचनाले सार्वजनिक खर्चलाई थप प्रभावकारी बनाउने अवसर प्राप्त भएको छ ।

#### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

सार्वजनिक खर्चको कुशल र नतिजामूलक व्यवस्थापनद्वारा समृद्ध अर्थतन्त्र निर्माण ।

##### ४.२ लक्ष्य

सार्वजनिक खर्चको कुशल, समन्यायिक र नतिजामूलक व्यवस्थापन गरी उच्च आर्थिक वृद्धि हासिल गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

सार्वजनिक खर्चको विनियोजन दक्षता, कार्यान्वयन कुशलता र वित्तीय अनुशासन कायम गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको सार्वजनिक खर्च प्रणाली सुदृढ गरी दक्षता, पारदर्शिता र जवाफदेहिता कायम गरी नतिजामूलक बनाउने । | १. वित्तीय उत्तरदायित्व सहितको संघीय आर्थिक कार्यविधि कानून लगायत सार्वजनिक खर्च प्रणालीसँग सम्बन्धित कानूनको तर्जुमा तथा परिमार्जन गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।<br>२. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको सार्वजनिक खर्च सम्बन्धी एकीकृत प्रणाली विकास गरिनेछ ।<br>३. आवधिक योजना र वार्षिक योजना तथा बजेटबीच तादात्म्य कायम गर्न, कार्यक्रम/आयोजनाको प्राथमिकीकरण र स्रोतको सुनिश्चितता गर्न र सार्वजनिक खर्चलाई नतिजासँग आबद्ध गर्न मध्यमकालीन वित्तीय खाका, मध्यमकालीन बजेट खाका र मध्यमकालीन नतिजा खाका सहित मध्यमकालीन खर्च प्रणालीलाई तीन तहमा संस्थागत गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।<br>४. आर्थिक वर्षको सुरुआतदेखि नै पुँजीगत खर्च गर्न प्रोत्साहनको व्यवस्था गरिनेछ ।<br>५. वित्तीय जोखिम न्यूनीकरण गर्न तीन तहको आन्तरिक नियन्त्रण प्रणालीलाई सुदृढ गरिनेछ ।<br>६. बजेट तथा कार्यक्रम/आयोजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयनसँग सम्बन्धित कर्मचारीको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| २. सार्वजनिक खर्चलाई आर्थिक तथा सामाजिक पुँजी निर्माणका क्षेत्रमा कुशल र प्रभावकारी विनियोजन गर्ने। | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. चालु खर्च व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड बनाइनेछ। साथै, गैरबजेटरी खर्चलाई नियन्त्रण गर्दै लगिनेछ।</li> <li>२. चालु खर्चलाई पुँजीगत खर्चको उत्पादनशील क्षमता अभिवृद्धि गर्न आबद्ध गरिनेछ। निर्मित पुँजीगत संरचनाहरूको मर्मत-सम्भारमा आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ।</li> <li>३. राजस्वको आधार वृद्धि गर्ने एवम् उच्च प्रतिफल दिने र उत्पादन वृद्धिसँग सम्बन्धित पूर्वाधारका क्षेत्रमा सार्वजनिक स्रोतको विनियोजन गरिनेछ।</li> <li>४. शिक्षा, स्वास्थ्य, खानेपानी तथा सरसफाई र सामाजिक सुरक्षा एवम् संरक्षणमा आवश्यक बजेट विनियोजन गरी सामाजिक विकासमा जोड दिइनेछ।</li> <li>५. विकास कार्यक्रम/आयोजनालाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्न आयोजना व्यवस्थापन निर्देशिका तर्जुमा गरी संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा कार्यान्वयन गरिनेछ।</li> <li>६. आन्तरिक ऋणलाई उत्पादनमूलक र पुँजी निर्माण हुने क्षेत्रमा उपयोग गर्न प्राथमिकता दिइनेछ।</li> <li>७. आयोजनाको आर्थिक सामाजिक लाभ लागत विश्लेषण गरी उपयुक्त आयोजनाहरूको राष्ट्रिय आयोजना बैंक स्थापना गरिनेछ। सो बैंकमा सूचीकृत कार्यक्रम/आयोजनालाई अपेक्षित प्रतिफल, प्रादेशिक सन्तुलन र स्थानीय आवश्यकताका आधारमा प्राथमिकताक्रम बमोजिम बजेट विनियोजन गरी कार्यान्वयन गर्ने व्यवस्था गरिनेछ।</li> <li>८. आयोजना सुशासनमा सुधार गरी क्रमागत आयोजनाहरू निर्धारित समयमै सम्पन्न गरिनेछ।</li> <li>९. अनुदानलाई उत्पादनशील र पारदर्शी रूपमा प्रदान गर्न राष्ट्रिय अनुदान नीति तर्जुमा गरिनेछ।</li> <li>१०. एकद्वार प्रणाली मार्फत अनुदान वितरण गर्ने नीति लिइनेछ।</li> </ol> |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| ३. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको विकासको आवश्यकतालाई सम्बोधन गर्ने गरी न्यायोचित, सन्तुलित र परिपूरक रूपमा अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>तीन तहका सरकारबीचमा हुने स्रोतको बाँडफाँट एवम् वित्तीय हस्तान्तरणलाई पारदर्शी, न्यायसंगत र सन्तुलित बनाउन विस्तृत आधार, मार्गचित्र र एकीकृत ढाँचा तयार गरिनेछ ।</li> <li>विकास र उपलब्ध स्रोत बीचको असन्तुलन कम गर्न समन्यायिक रूपमा आर्थिक तथा सामाजिक पूर्वाधारका क्षेत्रमा लगानी केन्द्रित गरी प्रदेश र स्थानीय तहबीच सन्तुलन कायम गरिनेछ ।</li> <li>तीन तहका सरकारबीचको सहलगानी र द्विपक्षीय लगानी सम्बन्धी सम्झौताका ढाँचा तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ४. सार्वजनिक खर्च प्रणालीलाई आधुनिक सूचना प्रविधिमा आधारित बनाई थप पारदर्शी बनाउने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>बजेट तर्जुमा, कार्यान्वयन, लेखाङ्कन र प्रतिवेदनमा तीन तहकै सरकारबीच एकरूपता कायम गर्न आधुनिक सूचना प्रविधिको अवलम्बन गरी एकीकृत सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन सूचना प्रणाली विकास गरिनेछ ।</li> <li>सार्वजनिक भुक्तानी व्यवस्थालाई पूर्ण रूपमा विद्युतीय प्रणालीमा आधारित बनाइनेछ ।</li> <li>मन्त्रालयगत बजेट सूचना प्रणाली (LMBIS) लाई एकलकोष खाता प्रणालीसँग आबद्ध गरी थप सुदृढ बनाइनेछ ।</li> <li>सार्वजनिक खर्च तथा राजस्व सम्बन्धी जानकारी विद्युतीय माध्यमबाट सार्वजनिकीकरणको व्यवस्था गरिनेछ । सार्वजनिक खर्चको अनुगमन गर्ने प्रणाली स्थापना गरिनेछ ।</li> </ol> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

बजेट विनियोजनमा कुशलता, सरकारी कोषको प्रभावकारी उपयोग र बजेटको अपेक्षित नतिजा प्राप्त भएको हुने, सार्वजनिक खर्चमा पुँजीगत खर्चको हिस्सा उल्लेख्य बढेको हुने, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच वित्तीय अन्तरआबद्धता सुदृढ भई वित्तीय संघीयता कार्यान्वयन प्रभावकारी भएको हुने, बजेट प्रणाली पारदर्शी, वैज्ञानिक र सूचना प्रणालीमा आधारित भएको हुने र आयोजना तोकिएको गुणस्तर, परिमाण, लागत र समयमा सम्पन्न भएको हुनेछ ।

## ४.२.२ राजस्व

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानमा उल्लेख भएका मौलिक हक, राज्यका निर्देशक सिद्धान्त र नीतिको कार्यान्वयन गर्न, मुलुकको विकास र समृद्धिको लागि सार्वजनिक खर्चको बढ्दो आवश्यकता पूरा गर्न र वैदेशिक सहायतामाथिको निर्भरता कम गर्न आन्तरिक स्रोत परिचालनमा वृद्धि गर्न आवश्यक छ। विगत १० वर्षमा राजस्वको औसत वृद्धिदर २०.४ प्रतिशत र आ.व. २०७४/७५ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा २४.६ प्रतिशत पुगेको छ। संघीय प्रणाली अनुरूप सार्वजनिक वित्त संरचना सुदृढ गरी लगानी, व्यवसाय र करदातामैत्री कर प्रशासन मार्फत उत्पादन वृद्धिलाई सहयोग पुऱ्याउँदै अधिकतम राजस्व परिचालनतर्फ यो योजना निर्देशित छ।

### २. प्रमुख समस्या

आर्थिक क्रियाकलापमा अनौपचारिक क्षेत्रको हिस्सा उच्च हुनु, राजस्वको ठूलो हिस्सा आयातमा निर्भर रहनु, राजस्वमा आय करको अंश अपेक्षित रूपमा बढाउन नसकिनु, मूल्य अभिवृद्धि कर प्रणालीलाई राष्ट्रिय कराधार संरक्षण गर्न सक्ने गरी सुदृढ गर्न नसक्दा अपेक्षित राजस्व संकलन हुन नसक्नु, करको दायरा अपेक्षित रूपमा विस्तार हुन नसक्नु तथा सम्भावना र क्षमता अनुरूप राजस्व परिचालन हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

कर परिपालनमा देखिएको अन्तरमा सुधार गर्नु प्रमुख चुनौतीको रूपमा रहेको छ। सम्पूर्ण आर्थिक कारोबारहरूलाई करको दायरामा ल्याउनु, कर सङ्कलन लागत र करदाताको कर परिपालन लागत घटाउँदै कर कानूनको पूर्ण पालना गर्नु गराउनु, उत्पादन (खासगरी सेवा क्षेत्र) तथा आर्थिक वृद्धि र राजस्वबीच सबल अन्तरसम्बन्ध कायम गर्नु र करदाता तथा कर प्रशासन दुवै पक्षमा व्यावसायिकता, पारदर्शिता र सदाचारिता कायम गर्नु यस क्षेत्रका सहायक चुनौती हुन्। साथै, संघीय संरचना बमोजिम राजस्व संरचनामा सामञ्जस्य ल्याउनु, राजस्व चुहावट नियन्त्रण गर्नु, कारोबार मूल्यलाई भन्सार जाँचपास प्रणालीको आधार बनाउनु, कारोबारको यथार्थ बिल बीजक अनिवार्य रूपमा दिने/लिने व्यवस्था गर्नु र राजस्व संकलन तथा व्यापार सहजीकरण बीच सन्तुलन कायम गर्नु यस क्षेत्रका थप चुनौती हुन्।

नीतिगत स्थिरता र स्थायित्व भई सहज व्यावसायिक वातावरण निर्माण हुनु, उच्च आर्थिक वृद्धि र अर्थतन्त्रको आकारमा विस्तार हुँदै जानु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्यक्षेत्र बमोजिम राजस्व परिचालनको सम्भावना वृद्धि हुनु, यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन्। साथै, कर सहभागितामा भएको बढोत्तरीसँगै करको दायरा विस्तार हुँदै जानु, कर प्रणाली थप प्रगतिशील हुनु, स्वदेशी उद्योग व्यवसायको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्ने नीतिगत व्यवस्था हुनु, कर प्रशासनको संस्थागत विस्तार तथा करदाताको पहुँचमा वृद्धि हुनु र राजस्व प्रशासन सूचना तथा प्रविधिमा आधारित बनाउँदै जानु समेत थप अवसर हुन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

सुदृढ र प्रगतिशील राजस्व प्रणालीको विकास गरी समृद्ध अर्थतन्त्र निर्माण ।

### ४.२ लक्ष्य

आन्तरिक उत्पादन र आयमा आधारित करको वृद्धि गर्दै राजस्व कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको एक तिहाइ पुऱ्याउने ।

### ४.३ उद्देश्य

उत्पादन, लगानी, व्यवसाय तथा करदातामैत्री एवम् स्वच्छ, तटस्थ, पारदर्शी र प्रगतिशील कर प्रणालीको विकास तथा स्वैच्छिक कर सहभागिताबाट अधिकतम राजस्व परिचालन गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. सबै किसिमका आर्थिक क्रियाकलापलाई करको दायरामा ल्याई राजस्वको आधार फराकिलो बनाउने । | १. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय कराधारको संरक्षण गरी राजस्व संरक्षण गरिनेछ । राजस्वको राष्ट्रिय ढाँचा तयार गरिनेछ ।<br>२. सबै प्रकारका आर्थिक तथा व्यावसायिक कारोबारमा संलग्न व्यक्ति तथा फर्मलाई स्थायी लेखा नम्बर प्रदान गरी करको दायरामा ल्याइनेछ ।<br>३. विद्युतीय माध्यमबाट बीजक जारी गर्ने व्यवस्था अवलम्बन गरी बिल बीजक दिने-लिने प्रणालीमा सुधार गरी मूल्य अभिवृद्धि कर प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।<br>४. करको दायरामा सबैको सहभागिता बढाउन करदाता शिक्षालाई विस्तार गरी कर सचेतना अभिवृद्धि गरिनेछ । |
| २. राजस्व प्रशासनको विस्तार तथा आधुनिकीकरण गरी कुशल, व्यावसायिक र स्वच्छ बनाउने ।     | १. करको दायरा विस्तार तथा करदाताको पहुँच अभिवृद्धि गर्न आन्तरिक राजस्व प्रशासन सुदृढीकरण तथा विस्तार गरिनेछ ।<br>२. सबै किसिमका राजस्वलाई समेट्ने गरी विद्यमान विद्युतीय राजस्व भुक्तानी प्रणालीको सुदृढीकरण र विस्तार गरिनेछ ।<br>३. विश्व कर प्रणालीमा प्रयोगमा आएका नवीनतम विधि, अभ्यास, प्रविधि र उपकरणको प्रयोग गरी कर प्रशासनको आधुनिकीकरण गरिनेछ ।<br>४. बारकोड सहितको अन्तःशुल्क टिकटको प्रयोग र टूयाकिड प्रणाली अवलम्बन गरी अन्तःशुल्क प्रशासनलाई आधुनिकीकरण गरिनेछ ।                                     |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ३. आर्थिक विस्तारमा सहयोग पुग्ने गरी कर प्रणालीलाई थप लगानी/व्यवसायमैत्री बनाउने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. भन्सारमा मालवस्तुको घोषणा, वर्गीकरण र मूल्याङ्कनलाई यथार्थपरक बनाइनेछ ।</li> <li>२. भन्सार जाँचपास प्रणालीलाई प्रविधि तथा जोखिम व्यवस्थापनमा आधारित बनाइनेछ । भन्सार जाँचपासमा विश्वसनीय व्यापारी (Trusted traders) को अवधारणालाई अवलम्बन गरिनेछ ।</li> <li>३. नेपालसँग बढी आर्थिक तथा व्यावसायिक कारोबार भएका र लगानी सम्भावना भएका मुलुकहरूसँग नेपालको आर्थिक हित अभिवृद्धि र लगानी प्रवर्द्धन हुने गरी दोहोरो कर मुक्ति तथा वित्तीय छल निरोध सम्झौता गरिनेछ ।</li> <li>४. कर प्रणालीलाई उत्पादनमूलक उद्योगको उत्प्रेरकका रूपमा विकास गरिनेछ ।</li> </ol>                        |
| ४. कर संरचना र दरमा सामयिक सुधार गरी कर प्रणालीलाई थप सरल र समन्यायिक बनाउने ।     | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. कर सम्बन्धी नवीनतम अवधारणा तथा अभ्यास अवलम्बन गरी कर प्रणालीलाई थप प्रगतिशील तथा सार्वजनिक वित्तलाई दिगो बनाइनेछ ।</li> <li>२. सामाजिक सुरक्षा कर प्रणाली सुरुआत गरिनेछ ।</li> <li>३. अन्तर्राष्ट्रिय परिवेश र प्रतिबद्धता अनुरूप आयकर र भन्सार महसुल दरको पुनरावलोकन गरिनेछ ।</li> <li>४. गैरकर राजस्वको क्षेत्र विस्तार एवम् करका दरहरूलाई लागत प्रभावी हुने गरी समय सापेक्ष परिमार्जन गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ५. संघीय प्रणाली अनुरूप राजस्व प्रशासनको संरचनागत र प्रणालीगत पक्षमा सुधार गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. राजस्व प्रशासनको कार्य विशिष्टीकरणको लागि संगठन संरचनामा सुधार तथा विस्तार गरी थप जनशक्ति परिचालन गरिनेछ ।</li> <li>२. प्रदेश र स्थानीय तहको राजस्व सङ्कलन, कार्यकुशलता तथा कराधार पहिचान र विस्तार सम्बन्धी क्षमता अभिवृद्धिको लागि आवश्यक समन्वयात्मक र सहयोगात्मक भूमिका निर्वाह गरिनेछ ।</li> <li>३. नियमनकारी निकायमा रहेका करदाता सम्बन्धी सूचनालाई एकीकृत गरी करदाता सूचना व्यवस्थापन प्रणाली विकास गरिनेछ ।</li> <li>४. करदाता र कर प्रशासन दुवै पक्षमा व्यावसायिकता, इमान्दारिता, पारदर्शिता, स्वच्छता र सदाचारिता कायम गर्न आवश्यक उपायहरूको अवलम्बन गरिनेछ ।</li> </ol> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

राजस्व प्रणाली लगानी, व्यवसाय र करदातामैत्री भएको हुने, सबै किसिमको राजस्व विद्युतीय माध्यमबाट भुक्तानी गरी कर संकलन लागत र करदाताको सहभागिता लागत घटेको हुने र कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा राजस्व ३२.२ प्रतिशत र आयकर १० प्रतिशत पुगेको हुनेछ ।

## ४.२.३ अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायता

### १. पृष्ठभूमि

लगानीका क्षेत्रमा रहेको स्रोतको न्यूनता पूर्ति गर्न, व्यापार सन्तुलन कायम गर्न र नवीनतम ज्ञान तथा प्रविधिको अवलम्बन/हस्तान्तरण मार्फत विकास गर्न अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायता आवश्यक पर्दछ । विगत ६ दशकदेखि नेपालले वैदेशिक सहायता लिँदै आएको भए तापनि यसको प्रभावकारी उपयोग हुन सकेको छैन । नागरिकका मौलिक हक अधिकारहरूको प्रचलन गराउन र संघीय प्रणाली अनुरूप समन्वयात्मक रूपमा विकासका क्रियाकलाप सञ्चालन गर्न थप विकास सहायताको परिचालन र व्यवस्थापन गर्नुपर्ने हुन्छ । साथै, वि.सं. २०७९ सम्ममा विकासशील मुलुकको रूपमा स्तरोन्नति हुन र वि.सं. २०८७ सम्ममा मध्यम आय भएको मुलुकमा स्तरोन्नति सहित दिगो विकासका लक्ष्य हासिल गर्न आवश्यक सार्वजनिक लगानी जुटाउन समेत वैदेशिक सहायता परिचालन गर्नुपर्नेछ । विगत १० वर्षमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा वैदेशिक सहायता औसत ३.३ प्रतिशत रहेको र सार्वजनिक खर्चमा यसको अंश १३ प्रतिशत मात्र रहेको छ ।

### २. प्रमुख समस्या

अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायता सम्झौता पूर्व पर्याप्त तयारी नहुनु, आयोजना व्यवस्थापन तथा अनुगमन प्रणाली कमजोर हुनु, विकास सहायताको न्यून ग्रहण क्षमता रहनु र सबै वैदेशिक सहायता राष्ट्रिय प्राथमिकता तथा प्रणालीमा आबद्ध हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन् । साथै, सहायतालाई परियोजना र कार्यक्रमको आधारमा भन्दा बजेट सहायतामा आबद्ध गर्न नसक्नु, द्विपक्षीय सहायतालाई राष्ट्रिय बजेट प्रणालीमा ल्याउन नसक्नु पनि समस्याको रूपमा रहेको छ ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वयात्मक रूपमा विकास सहायता परिचालन गर्नु, प्रदेश र स्थानीय तहमा सञ्चालन हुने कार्यक्रमहरूको खण्डीकरणमा कमी ल्याउनु, सबै तहको सहायता व्यवस्थापनमा अपनत्व, आबद्धता, जवाफदेहिता, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता जस्ता असल अभ्यास सुनिश्चित गर्नु, सहायताको प्रतिबद्धता र उपयोग बीचको अन्तर घटाउनु र स्थापित प्रणाली तथा संरचना मार्फत सहायता परिचालन गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन् ।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकार गठन भई क्रियाशील रहनु, राजनैतिक स्थायित्वबाट आम जनतामा उत्साह र आकाँक्षा बढ्नु, सहायता प्रभावकारिताका लागि भइरहेका अन्तर्राष्ट्रिय अभियानमा नेपालको सहभागिता तथा

प्रतिबद्धता रहनु, दिगो विकासका लक्ष्य प्राप्ति र दीर्घकालीन सोच साकार पार्नका लागि विकास सहायता प्रवाह गर्न विकास साझेदार तत्पर रहनु र विकास सहायताका नवीनतम एवम् गैर-परम्परागत स्रोत विकसित हुँदै जानु विकास सहायताको प्रभावकारी परिचालनका अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायताको प्रभावकारी परिचालन मार्फत विकास र समृद्ध अर्थतन्त्र निर्माण ।

##### ४.२ लक्ष्य

मुलुकको आवश्यकता र प्राथमिकताका क्षेत्रमा अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायताको परिचालन अभिवृद्धि गरी राष्ट्रिय क्षमता अभिवृद्धि गर्दै विकास लक्ष्य हासिल गर्न सहयोग पुऱ्याउने ।

##### ४.३ उद्देश्य

अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायताको छनोटपूर्ण उपयोग मार्फत उत्पादन, उत्पादकत्व तथा रोजगारी बढाउँदै मुलुकलाई विकास वित्तमा क्रमशः आत्मनिर्भरता उन्मुख बनाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. राष्ट्रिय आवश्यकता, नीति तथा प्राथमिकताका आधारमा अन्तर्राष्ट्रिय विकास सहायताको परिचालन गर्ने ।                          | १. वैदेशिक सहायतालाई राष्ट्रिय, प्रादेशिक तथा स्थानीय आवश्यकता र प्राथमिकता अनुरूप उच्च आर्थिक प्रतिफल प्राप्त हुने राष्ट्रिय पुँजी निर्माणका क्षेत्रमा केन्द्रित गरिनेछ ।<br>२. सहायताको उच्चतम मूल्य प्राप्त गरी विकास सहायता परिचालनमा प्रभावकारिता हासिल गरिनेछ ।<br>३. विकास साझेदारहरूलाई तुलनात्मक विशेषज्ञता र अनुभव हासिल गरेको क्षेत्रमा सहायता परिचालन गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ । विकास सहायताको खण्डीकरणलाई निरुत्साहित गरिनेछ ।                               |
| २. विकास सहायता प्रभावकारिता सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता एवम् राष्ट्रिय नीति अनुरूप विकास सहायताको परिचालन गर्ने । | १. सहायता रकम स्थानान्तरण गर्ने प्रवृत्तिलाई निरुत्साहन गर्दै सामान्यतया एक विकास साझेदारको रकम अर्को विकास साझेदार वा निकाय मार्फत सञ्चालन नगर्ने नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. वैदेशिक सहायताको प्रभावकारिताका लागि अन्तर्राष्ट्रिय जगतमा विकास भएका सम्मिश्रित वित्त, दक्षिण/दक्षिण सहयोग, आन्तरिक स्रोत परिचालन क्षमता अभिवृद्धि र विकासका लागि कर जस्ता विकास सहायता सम्बन्धी नवीनतम अवधारणा तथा उपकरणको सान्दर्भिकता अध्ययन गरी उपयुक्तताको आधारमा उपयोग गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>३. राष्ट्रिय बजेट प्रणालीमा आबद्ध हुने गरी विकास सहायता लिने र सहायता व्यवस्थापन सूचना प्रणालीलाई सुदृढ गरी विकास सहायतामा पारदर्शिता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>४. अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता र कानूनको ढाँचाभिन्न रही वैदेशिक सहायता परिचालन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>३. संघीय संरचना बमोजिम विकास सहायता प्रणाली रूपान्तरण गरी प्रादेशिक सन्तुलन र समन्यायिकताको सिद्धान्त अनुरूप विकास सहायता उपयोग गर्ने ।</p> | <p>१. संघीय संरचना अनुरूप विकास सहायता परिचालन गर्न नीतिगत, कानुनी र संस्थागत व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>२. प्रादेशिक सन्तुलन र स्थानीय आवश्यकता परिपूर्ति हुने गरी विकास सहायता परिचालन गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>३. आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टिकोणबाट पछाडि परेका क्षेत्र, वर्ग र समुदायका विकासको लागि सहायता परिचालन गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सबै प्रकारका विकास सहायता राष्ट्रिय सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन प्रणालीमा आबद्ध भएको हुने, राष्ट्रिय आवश्यकता, नीति र प्राथमिकताका क्षेत्रहरूमा परिचालन भएको हुने र संघीय प्रणाली बमोजिम विकास सहायता परिचालन भएको हुनेछ ।

#### ४.२.४ सार्वजनिक ऋण

##### १. पृष्ठभूमि

सरकारको न्यून वित्त परिचालन, समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व, वैदेशिक पुँजी तथा प्रविधिको उपयोग र अन्तरपुस्ता समता कायम गर्न सार्वजनिक ऋणको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । निजी क्षेत्रमा प्रवाह हुने कर्जामा संकुचन हुन नदिई समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम हुने गरी राष्ट्रिय आवश्यकता र प्राथमिकताका क्षेत्रमा सार्वजनिक ऋण परिचालन गर्नु आवश्यक हुन्छ । बढ्दो सार्वजनिक खर्च र सीमित राजस्व तथा अनुदानका बीचमा तादात्म्यता कायम गर्न नेपाल सरकारले आन्तरिक एवम् वैदेशिक ऋणको परिचालन गर्दै आएको छ । पछिल्ला वर्षमा आन्तरिक ऋणको परिचालन लक्ष्य बमोजिम हुँदै आएको भए तापनि बाह्य ऋण अपेक्षाकृत रूपमा परिचालन हुन सकेको छैन । आ.व. २०७४/७५ सम्म कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा २९.७ प्रतिशत तिर्न बाँकी ऋण मध्ये आन्तरिक ऋण १३ प्रतिशत र वैदेशिक ऋण १६.७ प्रतिशत रहेको छ । संघीय संरचना बमोजिम दिगो र उच्च प्रतिफलयुक्त क्षेत्रमा सार्वजनिक ऋण परिचालन गरी उच्च आर्थिक वृद्धिको लागि आवश्यक न्यून वित्त परिचालनमा योजना केन्द्रित छ ।

## २. प्रमुख समस्या

सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन सम्बन्धी रणनीति नहुनु र राष्ट्रिय आवश्यकता तथा प्राथमिकताका क्षेत्रमा अपेक्षित रूपमा सार्वजनिक ऋण परिचालन नहुनु सार्वजनिक ऋण सम्बन्धी प्रमुख समस्या हुन्। साथै, आन्तरिक ऋण परिचालनका उपकरण सम्बन्धी जनचेतनाको कमी हुनु र उत्पादनमूलक क्षेत्रमा ऋण परिचालन गर्न नसक्नु आन्तरिक ऋण परिचालनमा समस्या रहेका छन् भने प्रतिबद्धता बमोजिम ऋण प्राप्त गर्न नसक्नु, सहुलियतपूर्ण ऋणको अंश क्रमशः कम हुँदै जानु, ऋणको परिचालन र उपयोग क्षमतामा कमी हुनु र विदेशी विनिमय सम्बन्धी जोखिम अधिक भई लागत बढ्नु वैदेशिक ऋण परिचालनमा देखिएका समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

सार्वजनिक ऋणलाई उत्पादन तथा पूर्वाधार निर्माणको क्षेत्रमा परिचालन गरी दिगो र उच्च प्रतिफलमुखी बनाउनु, सार्वजनिक ऋणको प्रभावकारी रूपमा जोखिम व्यवस्थापन गर्नु, निजी क्षेत्रको लगानी निरूत्साहित नहुने गरी आन्तरिक ऋण परिचालन गर्नु र आन्तरिक पुँजी परिचालन क्षमता बढाई विदेशी ऋणको भार कम गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्। साथै, समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्नु, आन्तरिक ऋणको परिचालनका अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन उपकरणप्रति लगानीकर्ताको आकर्षण बढाउनु, दीर्घकालीन ऋणपत्रको उपयोग बढाई पुँजी बजारको विकास गर्नु र संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले परिचालन गर्ने सार्वजनिक ऋणको समन्वयात्मक रूपमा व्यवस्थापन गर्नु समेत यस क्षेत्रका थप चुनौती हुन्।

संघीय प्रणाली बमोजिम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा विभिन्न उपकरण मार्फत आन्तरिक ऋण परिचालन हुने व्यवस्था रहनु, सार्वजनिक ऋण कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा कम रहेकाले थप परिचालनको सम्भावना कायम रहनु, सार्वजनिक ऋणको व्यवस्थापनका लागि छुट्टै कार्यालय स्थापना भई सञ्चालनमा आउनु, पुँजी बजारको विकास तथा विस्तार र सूचना प्रविधिको बढ्दो उपयोगले वित्तीय प्रणालीमा लगानीकर्ताको पहुँच अभिवृद्धि हुनु र दिगो विकास लक्ष्यको कार्यान्वयनका लागि विकासका साझेदारहरूको प्रतिबद्धता रहनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

सार्वजनिक ऋणको प्रभावकारी परिचालन गरी सबल अर्थतन्त्र निर्माण।

### ४.२ लक्ष्य

समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्दै राष्ट्रिय पूर्वाधार र उत्पादनशील क्षेत्रमा सार्वजनिक ऋण परिचालन गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

सार्वजनिक ऋणको प्रभावकारी व्यवस्थापन गरी रोजगारी सिर्जना, राष्ट्रिय पुँजी निर्माण र आर्थिक वृद्धिमा योगदान पुऱ्याउनु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. मुलुकले धान्न सक्ने गरी उच्च प्रतिफलयुक्त क्षेत्रमा सार्वजनिक ऋण परिचालन गर्ने ।          | १. समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम हुने गरी सार्वजनिक ऋणको परिचालन तथा उत्पादनशील र पूर्वाधार निर्माणका क्षेत्रमा उपयोग गरिनेछ ।<br>२. सार्वजनिक ऋण परिचालनका जोखिम न्यूनीकरण हुनेगरी उपयुक्त स्रोत पहिचान तथा व्यवस्थापन गरिनेछ ।<br>३. आन्तरिक स्रोत परिचालन, आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धनमा योगदान पुग्ने गरी सार्वजनिक ऋणको परिचालन गरिनेछ ।<br>४. बृहत् पूर्वाधार निर्माण र नेपाल सरकारले तोकेको क्षेत्र बाहेकका क्षेत्रमा परिचालन हुने ऋणमा सरकार जमानत नबस्ने नीति अङ्गीकार गरिनेछ । |
| २. सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन सम्बन्धी नीतिगत, कानुनी र संरचनागत सुधार गर्ने ।                  | १. सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन सम्बन्धी मध्यमकालीन तथा दीर्घकालीन रणनीति तर्जुमा गरिनेछ ।<br>२. संघीय संरचना अनुरूप सार्वजनिक ऋणको परिचालन गर्न ऐन/नियममा संशोधन गरी कानुनी आधार स्पष्ट गरिनेछ ।<br>३. सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन कार्यालयलाई आधुनिक, सूचना प्रविधिमैत्री र अनुसन्धानमूलक बनाइनेछ ।<br>४. सार्वजनिक ऋण परिचालन सम्बन्धी आधारहरूलाई समयानुकूल पुनरावलोकन तथा परिमार्जन गरिनेछ ।<br>५. पुँजी बजारको विकासमा सहयोग गर्न आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।   |
| ३. संघीय प्रणाली अनुरूप सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन सम्बन्धी उपकरण तथा स्रोतको विविधीकरण गर्ने । | १. सरकारी ऋणपत्रमा लगानीकर्ताको आकर्षण बढाउन वित्तीय साक्षरता प्रवर्द्धन, प्रोत्साहनको व्यवस्था, सरकारी ऋणपत्रको उपकरणमा विविधीकरण र स्वचालित कारोबार संयन्त्रको विकास गरी दोस्रो बजारलाई सक्रिय बनाइनेछ ।<br>२. वैदेशिक ऋण सम्बन्धी नवीनतम अवधारणा, स्रोत तथा उपकरणको सान्दर्भिकता अध्ययन गरी उपयुक्तताको आधारमा परिचालन गरिनेछ ।<br>३. प्रदेश र स्थानीय तहको आर्थिक सम्भावना र वित्तीय क्षमता, अपेक्षित प्रतिफलको आधारमा उपयुक्त उपकरण मार्फत सार्वजनिक ऋण परिचालन हुने व्यवस्था गरिनेछ ।        |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

सार्वजनिक ऋण कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ४.३ प्रतिशत भित्र रहेको हुने र राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त पुँजी निर्माण तथा उत्पादनशील क्षेत्रमा सार्वजनिक ऋणको परिचालन भई उच्च आर्थिक वृद्धिमा योगदान पुगेको हुनेछ।

### ४.२.५ अन्तर-सरकारी वित्त

#### १. पृष्ठभूमि

वित्तीय संघीयता संविधान र कानून बमोजिम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले कार्य जिम्मेवारी पूरा गर्न आवश्यक स्रोत परिचालन सहितको अधिकारको प्रयोगका लागि आवश्यक हुन्छ। नेपालको संविधानले धारा ५७ बमोजिम राज्यशक्तिको प्रयोग र अनुसूची ५, ६, ७, ८ र ९ बमोजिमका एकल र साझा अधिकार प्रदान गरी तीन तहलाई कार्य जिम्मेवारी तोकेको छ। यी जिम्मेवारी पूरा गर्न कर्राधिकार बाहेक प्रदेश र स्थानीय तहलाई संघीय सञ्चित कोषबाट र स्थानीय तहलाई प्रदेश सञ्चित कोषबाट राजस्व बाँडफाँटसहित वित्तीय समानीकरण, सशर्त, समपूरक र विशेष अनुदानबाट वित्तीय हस्तान्तरण मार्फत स्रोत उपलब्ध गराउनुपर्ने व्यवस्था संविधानको धारा ६० ले गरेको छ। साथै, तीन तहका सरकारले घाटा बजेट प्रस्तुत गर्न पाउने भएकाले वित्त व्यवस्थापनका लागि आन्तरिक ऋण समेत उठाउन पाउने व्यवस्था रहेको छ। पारदर्शी र न्यायपूर्ण वित्तीय हस्तान्तरण गर्दै वित्तीय संघीयतालाई संस्थागत गर्ने, सन्तुलित र समन्यायिक ढंगमा प्रादेशिक र स्थानीय अर्थतन्त्रको विकास गर्दै विकास र समृद्धिको आधार सिर्जना गर्ने गरी अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन गर्नमा योजना केन्द्रित छ।

#### २. प्रमुख समस्या

प्रदेश र स्थानीय तहको विश्वसनीय र तहगत रूपमा खण्डीकृत तथ्याङ्क नहुनु, प्रदेश र स्थानीय तहमा वित्त व्यवस्थापन सम्बन्धी अनुभवको कमी हुनु, प्रदेश र स्थानीय तहको खर्चको आवश्यकता पहिचान हुन नसक्नु, प्रदेश र स्थानीय तहको राजस्व अधिकार भए तापनि तिनको वास्तविक राजस्व क्षमता पहिचान नहुनु प्रमुख समस्या हुन्। साथै, तीन तहका सरकारले आन्तरिक ऋण परिचालनको लागि उपलब्ध बजार र समग्र वित्तीय स्थायित्वमा पार्ने प्रभाव आकलन गर्न कठिन हुनु, तीन तहका आर्थिक पक्षहरूको सम्बन्धमा आवश्यक कानून तथा नीतिहरूको अभाव रहनु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्यसम्पादनमा दोहोरोपना कायमै रहनु र वित्तीय हस्तान्तरणका विभिन्न स्वरूप र उपयोगबारे बुझाइमा एकरूपता नहुनु समेत समस्या रहेका छन्।

#### ३. चुनौती तथा अवसर

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले संविधानप्रदत्त कार्य जिम्मेवारी पूरा गर्न आवश्यक स्रोत पहिचान गरी व्यवस्थापन गर्नु, प्रदेश र स्थानीय तहको तथ्याङ्कलाई विश्वसनीय र भरपर्दो बनाउनु, प्रदेश र स्थानीय तहको खर्चको आवश्यकता पूर्ति गर्नका लागि विभिन्न प्रकारका वित्तीय हस्तान्तरणको उपयोग तत् तत् प्रयोजनका लागि हुने सुनिश्चित गर्नु र प्रदेश र स्थानीय तहमा खर्च र स्रोतको उपयोग सम्बन्धी क्षमता विकास गर्नु अन्तर-सरकारी वित्त सम्बन्धी प्रमुख चुनौती हुन्।

तीन तहमा आर्थिक-सामाजिक क्रियाकलाप विस्तार भई थप स्रोतका लागि आधार तयार हुनु, तीन तहका सरकारले आ-आफ्नो राजस्व अधिकार प्राप्त गरेकाले राजस्व परिचालनमा बढोत्तरी हुने अवस्था रहनु, स्थानीय तह सेवा प्रवाहका अतिरिक्त स-साना पूर्वाधार निर्माण, उद्योग व्यवसाय विस्तार र कृषि उत्पादन वृद्धिमा समेत संलग्न हुने हुँदा स्थानीय अर्थतन्त्र विकासको सम्भावना हुनु र समग्र आर्थिक विकासमा तीन तहका सरकारको अपनत्व कायम हुनु यस क्षेत्रका अवसर हुन्। साथै, विगतमा केन्द्रबाट सञ्चालन भइरहेका कार्यक्रम/आयोजना प्रदेश तथा स्थानीय तहमा हस्तान्तरण भई प्रदेश र स्थानीय तहमा रोजगारीका अवसर सिर्जना हुने अवस्था रहनु, संघीय सञ्चित कोषबाट प्रदेश र स्थानीय तहमा तथा प्रदेश सञ्चित कोषबाट स्थानीय तहमा हुने वित्तीय हस्तान्तरणको उपयोग तोकिएको प्रयोजनका लागि मात्र गर्नुपर्ने भएको हुँदा अनावश्यक रूपमा स्रोत छरिने प्रवृत्तिमा कमी आउने र उपलब्ध वित्तीय स्रोतको महत्तम उपयोग गर्दै प्रदेश र स्थानीय तहहरूबीच विकासमा प्रतिस्पर्धा गर्ने वातावरण निर्माण हुनु यस क्षेत्रका अन्य अवसर हुन्।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

वित्तीय संघीयता मार्फत समृद्ध र समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्र निर्माण।

##### ४.२ लक्ष्य

संघीय प्रणाली बमोजिम देशभित्र उपलब्ध सबै प्रकारका वित्तीय स्रोत र साधनको समतामूलक र न्यायोचित परिचालन गरी सन्तुलित र न्यायपूर्ण विकास गर्ने।

##### ४.३ उद्देश्य

- संघ, प्रदेश र स्थानीय तहलाई खर्चको आवश्यकता सम्बोधन हुने गरी न्यायोचित, सन्तुलित र परिपूरक रूपमा स्रोत उपलब्ध गराउनु।
- तीन तहको वित्तीय आधार (Fiscal Space) वृद्धि गर्नु।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. तीन तहका एकल तथा साझा कार्य जिम्मेवारीहरू सामञ्जस्यपूर्ण ढङ्गबाट पूरा गर्न स्रोत व्यवस्थापन गर्ने। | १. तीन तहबाट कार्यान्वयन हुने कार्यक्रम एकअर्कासँग नदोहोरिने र परिपूरक हुने गरी सञ्चालन गरिनेछ।<br>२. प्रदेश र स्थानीय तहबाट परिचालन हुने साझा अधिकार क्षेत्रका करको एकल कराधिकार र प्रशासन हुने व्यवस्था कायम गरिनेछ।<br>३. अन्तर-प्रदेश परिषद्, अन्तर-सरकारी वित्त परिषद्, प्रदेश समन्वय परिषद्को भूमिका बढाउँदै अन्तर-सरकारी समन्वय प्रभावकारी बनाइनेछ। |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>४. राजस्व तथा खर्च गर्ने अधिकार क्रमशः प्रदेश र स्थानीय तहमा हस्तान्तरण गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>५. कार्यक्रम तथा आयोजना वर्गीकरणका साथै कार्यक्षेत्र अनुसार हस्तान्तरण र सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>६. राष्ट्रिय विकास कार्यक्रमहरूमा समेत प्रदेश र स्थानीय तहको स्वामित्वबोध बढाउने गरी सहभागिताको वातावरण निर्माण गरिनेछ ।</p>   |
| २. अन्तर-सरकारी वित्त हस्तान्तरणलाई पारदर्शी, अनुमानयोग्य र न्यायोचित बनाउने ।         | <p>१. प्रदेश तथा स्थानीय तहको राजस्व क्षमता र सम्भाव्यताको अध्ययन गरी राजस्व परिचालनमा थप सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. अन्तर-सरकारी वित्तीय हस्तान्तरणलाई वस्तुगत र पारदर्शी बनाउन आवश्यक तथ्याङ्कीय आधार तयार गरिनेछ ।</p> <p>३. प्रदेश तथा स्थानीय तहबाट प्रवाह हुने सेवा र विकास निर्माणको लागत एकिन गरी त्यसका लागि आवश्यक पर्ने स्रोत सुनिश्चितता गरिनेछ ।</p> <p>४. प्रदेश र स्थानीय तहमा भएको वित्तीय हस्तान्तरणको कार्यसम्पादन र उपयोगको प्रभावकारिताका आधारमा अन्तर-सरकारी वित्त हस्तान्तरण हुने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>५. राजस्व परिचालन र स्रोतको बाँडफाँटमा अन्तर-सरकारका बीचमा विवाद हुन नदिन पूर्व सावधानी अपनाइनेछ ।</p> <p>६. नियमित अध्ययन, अनुसन्धान गरी संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट गरिने राजस्व असुलीमा गर्नुपर्ने सुधारका क्षेत्र पहिचान गरिनेछ ।</p> |
| ३. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन सम्बन्धी क्षमता विकास गर्ने । | <p>१. प्रदेश र स्थानीय तहबाट हुने सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनका लागि प्रदेश र स्थानीय तहको संस्थागत क्षमता विकास गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>२. राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको संस्थागत क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>३. वित्तीय संघीयताका विविध क्षेत्रमा संघ, प्रदेश, स्थानीय तह र अन्य सरोकारवालाको क्षमता विकास गरिनेछ ।</p>   |
| ४. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा वित्तीय सुशासन कायम गर्ने ।                              | <p>१. समष्टिगत आर्थिक परिसूचक, ऋण लिने र उपयोग गर्ने क्षमताको आधारमा आन्तरिक ऋण परिचालनलाई वैज्ञानिक र वस्तुगत बनाइनेछ ।</p>   |

| रणनीति | कार्यनीति  |
|--------|--|
|        | <p>२. प्रदेश तथा स्थानीय तहको वित्तीय सुशासनको जोखिम विश्लेषण विधिको विकास र अवलम्बन गरी वित्तीय जोखिम न्यूनीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. अन्तर-सरकारी वित्त हस्तान्तरणलाई समन्यायिक, पूर्वानुमानयोग्य र पारदर्शी बनाउन विद्युतीय प्रणाली कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

तीन तहका सरकारका एकल तथा साझा कार्य जिम्मेवारीहरू सामञ्जस्यतापूर्ण रूपमा सम्पादन हुनेगरी स्रोत व्यवस्था भएको हुने, अन्तर-सरकारी वित्त हस्तान्तरण पारदर्शी, अनुमानयोग्य र न्यायोचित भएको हुने, प्रदेश र स्थानीय तहको संस्थागत क्षमता विकास भएको हुने, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको वित्तीय सुशासन कायम भएको हुने र तीन तहमा वित्तीय अन्तरआबद्धता सुदृढ भएको हुनेछ ।

#### ४.३ सार्वजनिक संस्थान

##### १. पृष्ठभूमि

अत्यावश्यक, सार्वजनिक र एकाधिकार रहेका वस्तु तथा सेवाको उत्पादन, वितरण र व्यवस्थापन गर्न सार्वजनिक संस्थानको भूमिका रहेको हुन्छ । निजी क्षेत्रको न्यून उपस्थिति वा लगानी भएको क्षेत्रमा अग्रणी एवम् उदाहरणीय भूमिका प्रदर्शन गर्न, राष्ट्रिय उद्योगधन्दा र साधन स्रोतको उपयोग र संरक्षण गर्न, रणनीतिक महत्वका क्षेत्रमा राज्यको उपस्थिति सुदृढ तुल्याउन समेत सार्वजनिक संस्थान स्थापना र सञ्चालन गर्नुपर्ने हुन्छ । विशेष ऐन, संस्थान ऐन, सञ्चार संस्थान ऐन र कम्पनी ऐन अन्तर्गत स्थापित भई हाल ३५ वटा सार्वजनिक संस्थान र १४ वटा सहायक संस्था सञ्चालनमा छन् । व्यावसायिक कुशलता अभिवृद्धि र लागत न्यूनीकरण, सञ्चालन तथा व्यवस्थापनमा व्यावसायिक स्वायत्तता, शेयर स्वामित्व तथा जोखिम बाँडफाँटमा स्पष्टता, उत्पादनमा प्रतिस्पर्धा र व्यवस्थापनमा पारदर्शिता एवम् जवाफदेहिता र संघीय प्रणाली बमोजिम सार्वजनिक संस्थानको पुनर्संरचना तथा स्थापना सम्बन्धी विषयमा यो योजना केन्द्रित रहेको छ ।

##### २. प्रमुख समस्या

संस्थानहरूको व्यावसायिकता र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता कमजोर रहनु, सञ्चालन र व्यवस्थापनमा एकरूपता नहुनु, कतिपय संस्थानले नियामक एवम् वस्तु/सेवा प्रदायकको दोहोरो भूमिका निर्वाह गर्नु, संस्थानको नियमन, समन्वय र सुपरीवेक्षण फरक-फरक निकायबाट हुनु, बन्द संस्थानका सम्पत्तिको उचित संरक्षण तथा उपयोग नहुनु, स्रोत व्यवस्था नभएको दायित्व उच्च रहनु यस क्षेत्रमा प्रमुख समस्या रहेका छन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

अत्यावश्यक, सार्वजनिक र एकाधिकार रहेका वस्तु तथा सेवाको उत्पादन, वितरण, गुणस्तर तथा मूल्यमा आमनागरिकलाई सन्तुष्टि प्रदान गर्नु, संस्थानहरूको प्रतिस्पर्धी र व्यावसायिक क्षमता बढाउनु, आर्थिक अनुशासन कायम गरी सरकार माथिको व्ययभार कम गर्नु, बन्द संस्थानका सम्पत्तिको व्यवस्थापन एवम् वैकल्पिक उपयोग गर्नु, विनिवेश गरिएका संस्थानका विवादित विषय टुङ्गो लगाउनु तथा विनिवेश पश्चात सञ्चालनको सुनिश्चितता कायम गर्न नियमन गर्नु र संघीय प्रणाली बमोजिम सञ्चालनमा रहेका संस्थानको व्यवस्थापन गर्नु यस क्षेत्रका मूलभूत चुनौती हुन्।

नीतिगत स्पष्टता, स्थायित्व र स्थिरता कायम हुनु, संघीय प्रणाली बमोजिम विशिष्टीकृत रूपमा संस्थानहरूको पुनर्संरचना र स्थापना गर्नुपर्ने स्थिति रहनु, कतिपय क्षेत्रमा निजी क्षेत्र प्रभावकारी नभएकाले सार्वजनिक संस्थानले प्रतिस्पर्धात्मक बजार सिर्जना गर्नुपर्ने भूमिका विद्यमान रहनु र सार्वजनिक-निजी साझेदारीको अवधारणालाई सरकारले अगाडि बढाउनु यस क्षेत्रका अवसर हुन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सबल र प्रतिस्पर्धी सार्वजनिक संस्थान मार्फत आत्मनिर्भर र समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्र निर्माण।

#### ४.२ लक्ष्य

सार्वजनिक संस्थानको कुशल र प्रभावकारी व्यवस्थापन गरी अत्यावश्यक, सार्वजनिक र एकाधिकार रहेका वस्तु तथा सेवाको गुणस्तरीय तथा सर्वसुलभ उपलब्धता कायम गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

१. सार्वजनिक संस्थानको स्थापना, सञ्चालन र व्यवस्थापन प्रणालीमा सुधार गरी गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवाको उत्पादन, वितरण र उपभोगमा नागरिकको पहुँच स्थापित गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. आवश्यकता र उपादेयताका आधारमा संघीय प्रणाली बमोजिम उपयुक्त ठहरिएका सार्वजनिक संस्थानको पुनर्संरचना र स्थापना तथा | १. हाल सञ्चालनमा रहेका संस्थानहरूको उद्देश्य, कार्यक्षेत्र र कार्यप्रकृति अनुसार संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा रहने गरी पुनर्संरचना गरिनेछ।<br>२. रणनीतिक रूपमा संस्थानको आवश्यकता, उद्देश्य तथा कार्यक्षेत्रका आधारमा एक अर्कोमा गाभ्ने/गाभिने तथा प्राप्ति गर्ने व्यवस्था गरिनेछ। |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| सान्दर्भिक नदेखिएका संस्थानको विनिवेश गर्ने ।  | <p>३. राज्यले सञ्चालन गर्न आवश्यक नदेखिएका सार्वजनिक संस्थानहरूको उपयुक्त नीति, विधि र प्रक्रियाबाट विनिवेश वा खारेजी गरिनेछ ।</p> <p>४. निजीकरण गरिएका संस्थानका विवादित विषयलाई निष्कर्षमा पुऱ्याउन र नियमन गर्न आवश्यक संयन्त्र निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>५. खारेजी गरिएका संस्थानको स्वामित्वमा रहेका सम्पत्तिको सुरक्षा, व्यवस्थापन एवम् वैकल्पिक उपयोग गरिनेछ ।</p>  |
| २. कानुनी तथा संस्थागत सुधार र आधुनिकीकरण गरी सार्वजनिक संस्थानको सञ्चालन, व्यवस्थापन र नियमनलाई प्रभावकारी बनाउने । | <p>१. संस्थान नियमन, सञ्चालन र व्यवस्थापन सम्बन्धमा एकीकृत ऐन तर्जुमा लगायत आवश्यक कानुनी व्यवस्था तथा परिमार्जन गरिनेछ ।</p> <p>२. सार्वजनिक संस्थान नियमन, सञ्चालन र व्यवस्थापन सम्बन्धमा आवश्यक संस्थागत एवम् संरचनागत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा सार्वजनिक संस्थान सञ्चालन तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी अध्ययन गरी प्राप्त सुझाव अनुसार आवश्यक कानुनी एवम् संस्थागत व्यवस्था गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>४. सार्वजनिक संस्थानको व्यावसायिकता अभिवृद्धि गर्न जनशक्ति क्षमता विकासका कार्यक्रम सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>५. सार्वजनिक संस्थानको व्यवस्थापकीय क्षमता अभिवृद्धि सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>६. सार्वजनिक संस्थानले प्रवाह गर्ने सेवा, उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्न सूचना प्रविधि लगायतका नवीनतम प्रविधिको प्रयोग गरी आधुनिकीकरण गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सार्वजनिक संस्थान सुधारका लागि आवश्यक कानुनी व्यवस्था तयार भएको हुने, सार्वजनिक संस्थानको नियमकारी निकायको स्थापना भएको हुने, संस्थानको व्यवस्थापन र सञ्चालनमा सुधार भै संस्थानबाट उत्पादित र वितरित वस्तु तथा सेवाको गुणस्तरमा सुधार आउनुका साथै यसको उपभोगमा नागरिकको पहुँच अभिवृद्धि भएको हुनेछ ।

## ४.४ मौद्रिक तथा वित्तीय क्षेत्र

### १. पृष्ठभूमि

दिगो आर्थिक विकासका लागि मूल्य स्थिरता, बाह्य स्थिरता तथा वित्तीय क्षेत्र स्थायित्व कायम गर्नु मौद्रिक तथा वित्तीय नीतिको प्रमुख उद्देश्य हो। उपलब्ध वित्तीय स्रोत-साधनको उचित परिचालन मार्फत आर्थिक वृद्धिमा योगदान पुऱ्याउन मौद्रिक नीतिले जोड दिंदै आएको छ। बैंक तथा वित्तीय संस्था गाभ्ने/गाभिने एवम् पुँजीगत आधार सुदृढ गर्ने नीति कार्यान्वयनको परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र सुदृढ हुन गई अर्थतन्त्रको आन्तरिक लगानी क्षमतामा वृद्धि हुँदै गएको छ। साथै, सबै स्थानीय तहमा वाणिज्य बैंकको शाखा स्थापना गर्ने अभियानले वित्तीय पहुँच विस्तारमा महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याएको छ। चौधौँ योजनाको पहिलो दुई वर्षमा मुद्रास्फीति र निजी क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको औसत वृद्धिदर क्रमशः ४.३ प्रतिशत र २०.२ प्रतिशत रहेको छ। मूल्य नियन्त्रण तथा ब्याजदर स्थायित्व, तरलता व्यवस्थापन, प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्रतर्फ कर्जा विस्तार, वित्तीय क्षेत्रको संस्थागत तथा संरचनागत सुधार, वित्तीय समावेशीकरण र बाह्य क्षेत्र तथा समग्र वित्तीय स्थायित्व कायम गर्न यो योजना केन्द्रित रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

कृषि, ऊर्जा, पर्यटन लगायतका राष्ट्रिय प्राथमिकताका क्षेत्रमा अपेक्षित रूपमा कर्जा विस्तार हुन नसक्नु, पूर्वाधार क्षेत्रमा आवश्यक ठूलो र दीर्घकालीन लगानी परिचालन गर्ने बैंकिंग संरचनाको विकास भइनसक्नु, बैंकिंग क्षेत्रमा दुर्गम स्थानहरूमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाको शाखा सञ्चालनको लागि आवश्यक पूर्वाधारहरू जस्तै: सडक, यातायात, विद्युत, सञ्चार, इन्टरनेट र सुरक्षा लगायत संरचनाको विकास नहुनुका साथै त्यस्ता स्थानहरूमा सञ्चालित बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूको सञ्चालन लागत उच्च भएको कारण अपेक्षित रूपमा वित्तीय पहुँच विस्तार नहुनु, वित्तीय साक्षरताको कमीका कारण वित्तीय सेवाको माग पक्ष कमजोर रहनु र विद्युतीय कारोबारको दायरा अपेक्षित रूपमा विस्तार गर्न नसक्नु मौद्रिक तथा वित्तीय क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

गैरमौद्रिक तथा आपूर्तिजन्य कारणले हुने मुद्रास्फीतिलाई वाञ्छित सीमाभित्र राख्नु, बढ्दो आयातलाई व्यवस्थापन गरी सुदृढ शोधनान्तर स्थिति कायम गर्नु, वित्तीय पहुँच विस्तार गर्दै लगानीयोग्य साधनको व्यवस्थापन गर्नु, अनौपचारिक वित्तीय कारोबारलाई न्यूनीकरण गर्नु, ब्याजदर स्थायित्व कायम गर्नु र वित्तीय क्षेत्रमा सुशासन अभिवृद्धि गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

संघीयताको कार्यान्वयनसँगै आर्थिक विकास र समृद्धि उन्मुख अर्थतन्त्र, अन्तर्राष्ट्रिय एवम् क्षेत्रीय संगठनसँगको बढ्दो आर्थिक सम्बन्ध, व्यावसायिक वातावरणमा आएको सुधार, आन्तरिक मागमा भएको वृद्धि, बैंक तथा वित्तीय

संस्थाहरूको सुदृढ पुँजीगत आधार एवम् शाखा विस्तार र भुक्तानी प्रणालीको आधुनिकीकरणका कारण मौद्रिक तथा वित्तीय नीतिको बढ्दो प्रभावकारिता यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

गतिशील, विश्वसनीय र उत्पादनशील मौद्रिक तथा वित्तीय क्षेत्र ।

##### ४.२ लक्ष्य

उच्च, दिगो र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि हासिल गर्न आन्तरिक तथा बाह्य स्थायित्व कायम गर्दै आवश्यक वित्तीय स्रोत सुनिश्चित गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. मुद्रास्फीति नियन्त्रण, शोधनान्तर बचत एवम् वित्तीय स्थायित्व हासिल गर्नु ।
२. वित्तीय पहुँच अभिवृद्धि गरी प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्रमा वित्तीय साधनको उपलब्धता बढाउनु ।
३. भुक्तानी प्रणालीलाई सुरक्षित, स्वस्थ र विश्वसनीय बनाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. मौद्रिक तथा वित्तीय नीतिको प्रभावकारिता अभिवृद्धि गर्ने ।                         | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. वित्तीय क्षेत्र र विदेशी विनिमयसँग सम्बन्धित कानून तथा प्रणालीमा पुनरावलोकन गरिनेछ ।</li> <li>२. खुला बजार कारोबार र समष्टिगत विवेकशील नियमनलाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> <li>३. वित्तीय क्षेत्रका नियामकबीच प्रभावकारी समन्वय अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> <li>४. बचत अभिवृद्धि तथा उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी परिचालनको लागि वित्तीय क्षेत्रमा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण सिर्जना गरी बचतकर्ता तथा लगानीकर्तालाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> <li>५. वित्तीय मध्यस्थता लागत न्यूनीकरण गर्दै स्रोत-साधनको महत्तम परिचालन गरिनेछ ।</li> </ol> |
| २. राष्ट्रिय प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्रमा पर्याप्त वित्तीय स्रोत-साधन परिचालन गर्ने । | १. राष्ट्रिय प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्रमा कर्जा विस्तारका लागि बैंक तथा वित्तीय संस्था र पूर्वाधार विकास बैंकलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | २. भौतिक संरचना निर्माणमा लगानी आकर्षित गरी पुँजी निर्माणमा वित्तीय स्रोत-साधन परिचालन गरिनेछ। यसका लागि उपयुक्त वित्तीय उपकरणको विकास गरिनेछ।<br>३. सहुलियतपूर्ण कर्जा तथा पुनर्कर्जालाई थप प्रभावकारी बनाउन आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ।  |
| ३. वित्तीय साक्षरता अभिवृद्धि र वित्तीय प्रविधिको प्रयोग मार्फत दुर्गम तथा पिछडिएका क्षेत्रसम्म वित्तीय पहुँच विस्तार गर्ने। | १. स्थानीय तह, बैंक तथा वित्तीय संस्था एवम् सहकारी संस्था एवम् सामुदायिक संस्थाको सहकार्यमा वित्तीय साक्षरता अभिवृद्धि गरिनेछ।<br>२. वित्तीय सेवाको पहुँच विस्तारमा सूचना प्रविधिको अधिकतम उपयोग गरिनेछ।<br>३. स्थानीय तहमा उपयुक्त वित्तीय उपकरणहरूको विकास तथा विस्तार गरिनेछ।<br>४. दुर्गम तथा पिछडिएको क्षेत्रमा वित्तीय पहुँच विस्तार गर्न लघुवित्त वित्तीय संस्थालाई सामाजिक बैंकिङ्ग अवधारणामा वित्तीय सेवा प्रवाह गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। |
| ४. सुरक्षित, आधुनिक र विद्युतीय भुक्तानी प्रणालीको विकास गर्ने।  | १. वास्तविक समयमा कारोबार राफसाफ प्रणालीको स्थापना गरी भुक्तानी सेवा प्रदायकहरूको नियमनलाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ।<br>२. भुक्तानी प्रणालीमा आधुनिक उपकरणहरूको उपयोगलाई प्रवर्द्धन गर्दै वित्तीय कारोबारलाई विद्युतीय प्रणालीमा रूपान्तरण गरिनेछ।<br>३. सम्पत्ति शुद्धीकरण, वित्तीय अपराध एवम् अनौपचारिक वित्तीय कारोबार न्यूनीकरण गर्दै नगदरहित कारोबारलाई अभिवृद्धि गरिनेछ।  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

वार्षिक औसत मुद्रास्फीति दर ६ प्रतिशतमा सीमित रहेको हुने, विस्तृत मुद्राप्रदायको औसत वृद्धिदर १७ प्रतिशत कायम रहेको हुने, कम्तीमा ७ महिनाको वस्तु तथा सेवाको आयात धान्न सक्ने विदेशी मुद्रा संचिति कायम रहेको हुने, निजी क्षेत्रतर्फको कर्जा वृद्धि औसतमा २० प्रतिशत भएको हुने, वित्तीय सेवाको पहुँच विस्तार भई प्रति बैंक शाखा जनसंख्या ३ हजार पुगेको हुने, स्थानीय तहका सबै वडामा ई-बैंकिंग सुविधा पुगेको हुने र सबै नागरिकको बैंक खाता भएको हुनेछ।

## ४.५ मूल्य नीति

### १. पृष्ठभूमि

सामान्यतः वस्तु तथा सेवाको माग र आपूर्तिले मूल्य निर्धारण गर्ने गर्दछ। मूल्य स्थितिले लगानी, रोजगारी, उत्पादन, वितरण जस्ता अर्थतन्त्रका समग्र पक्षमा असर गर्ने गर्दछ। उत्पादनका साधनको उपलब्धता तथा मूल्यमा आउने परिवर्तन, सरकारले अवलम्बन गर्ने नीति, बाह्य मुलुकको मूल्यवृद्धिको अवस्था, बजार प्रतिस्पर्धाको अवस्था, मानवीय तथा अन्य कारणले समष्टिगत मागमा आउने परिवर्तन जस्ता पक्षले मूल्य स्थितिमा प्रभाव परेको हुन्छ। मुद्रास्फीति दरलाई वाञ्छित सीमामा राखी समग्र लगानी तथा रोजगारी, उत्पादन, आपूर्ति तथा माग जस्ता पक्षको अभिवृद्धि मार्फत उच्च र दिगो आर्थिक वृद्धि हासिल गर्ने दिशामा यो योजना केन्द्रित रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

वस्तु तथा सेवाको मागमा विस्तार भएअनुरूप आपूर्ति हुन नसक्नु, कालोबजारी, सिन्डिकेट तथा कार्टेलिङ्ग जस्ता कारण बजार प्रतिस्पर्धामा समस्या उत्पन्न भई अनुचित मूल्य वृद्धिको अवस्था सिर्जना हुनु र अनौपचारिक क्षेत्रमा रहेको मूल्य स्थितिको मापन हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

मुद्रास्फीति दरलाई वाञ्छित सीमाभित्र राख्नु यस क्षेत्रको मुख्य चुनौती रहेको छ। साथै, भारतीय मूल्यवृद्धि एवम् अन्तर्राष्ट्रिय मूल्यमा आउने उतार-चढावको प्रभाव कम गर्नु, मौसमी प्रतिकूलताका कारण कृषिजन्य उत्पादन तथा आपूर्तिमा आउने उतार-चढावको प्रभाव कम गर्नु र कालो बजारी तथा सिन्डिकेट जस्ता पक्षको पूर्ण रूपमा अन्त्य गरी बजार प्रतिस्पर्धाबाट मूल्य स्थिति कायम हुने व्यवस्था मिलाउनु यस क्षेत्रमा रहेका चुनौती हुन्।

नीतिगत स्थायित्व मार्फत उत्पादन र उत्पादकत्वसँगै लगानी वृद्धि हुँदै गएकोले समष्टिगत मागमा वृद्धि हुँदै जानु, एकाधिकार, कालोबजारी तथा सिन्डिकेट अन्त्यका लागि नीतिगत, संरचनागत तथा संस्थागत व्यवस्था हुनुका साथै प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विस्तार हुनु र यातायात क्षेत्र विस्तार हुँदै गएकोले आपूर्ति व्यवस्था सहज हुनु यस क्षेत्रको अवसरका रूपमा रहेका छन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

मूल्य स्थिरता मार्फत समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व।

### ४.२ लक्ष्य

उच्च मूल्य वृद्धिलाई नियन्त्रण गर्दै बजार प्रतिस्पर्धाको सुदृढीकरण मार्फत मूल्य स्थिरता कायम गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

मूल्य वृद्धिलाई वाञ्छित सीमामा राखी आन्तरिक बजारमा नेपाली मुद्राको क्रयशक्ति खस्कन नदिनु र निर्यातयोग्य वस्तु तथा सेवाको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. नीतिगत, कानुनी र संरचनागत व्यवस्था मार्फत मुद्रास्फीतिलाई बाञ्छित सीमाभित्र राख्ने ।                    | १. बजार मूल्य र तरलताको स्थिति अनुसार मौद्रिक नीति तर्जुमा गरिनेछ ।<br>मूल्य स्थायित्व कायम गर्ने गरी सरकारी वित्त तथा मौद्रिक नीति तय गरिनेछ ।<br>२. मूल्य नीतिमा स्थायित्व कायम गर्न र स्वायत्तता प्रदान गर्न संरचनागत परिवर्तन गरिनेछ ।<br>३. विदेशी विनिमय नीति मार्फत मूल्य स्थिरता कायम गरिनेछ ।<br>४. मूल्य सूचकाङ्कलाई परिमार्जित गरी मूल्य स्थितिको नियमित अनुगमन गर्ने व्यवस्था गरिनेछ । ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रको उपभोक्ता मूल्यलाई समेटेर राष्ट्रिय स्तरको मूल्य सूचकांक तयार गरिनेछ । |
| २. उत्पादन तथा उत्पादकत्व वृद्धि गरी आपूर्ति व्यवस्थालाई सहज बनाउने ।                                      | १. कृषि र सेवा क्षेत्रको उत्पादनलाई बजारसँग आबद्ध गरी वस्तु तथा सेवाको सहज उपलब्धतालाई सुनिश्चित गरिनेछ ।<br>२. उत्पादनशील क्षेत्रमा कर्जा प्रवाह सुनिश्चित गर्न बैंक तथा वित्तीय संस्थालाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।<br>३. उत्पादन, नियमन प्रणाली तथा व्यावसायिक लागतमा सुधार गरी उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरिनेछ ।  |
| ३. अत्यावश्यक वस्तु तथा सेवाको सहज आपूर्तिको व्यवस्था गर्दै उपभोक्ताको क्रयशक्तिमा सुधार ल्याइने ।         | १. न्यूनतम मूल्यमा गुणस्तरीय दैनिक उपभोग्य वस्तु र आधारभूत तथा सामाजिक सेवा सुविधाको सुनिश्चितता कायम गरिनेछ ।<br>२. आधारभूत आवश्यकताका वस्तुहरूको उत्पादन, भण्डारण र वितरण क्षमता अभिवृद्धि गरी आपूर्ति व्यवस्थालाई सहज र सुलभ बनाइनेछ ।<br>३. सार्वजनिक वितरण प्रणाली सुदृढ गरिनेछ ।<br>४. मूल्य तथा बजार सूचना प्रणालीलाई सुदृढ बनाई प्रचार-प्रसारको व्यवस्था मिलाइनेछ ।   |
| ४. बजार अनुगमन तथा नियमन प्रणालीलाई सुदृढ गरी एकाधिकार, कालोबजारी, सिन्डिकेट तथा बिचौलियाको अन्त्य गर्ने । | १. बजार अनुगमन तथा नियमनलाई नियमित बनाई आपूर्तिसँग सम्बन्धित अवाञ्छित क्रियाकलापलाई निरूत्साहित तथा नियन्त्रण गरिनेछ ।<br>२. कृषिजन्य तथा अन्य उत्पादन तथा वस्तुको मूल्यका बारेमा जानकारी उपलब्ध गराउन प्रत्येक स्थानीय तहमा बजार सूचना केन्द्र स्थापना सम्बन्धी व्यवस्था गरिनेछ ।<br>३. कृषि क्षेत्रमा बिचौलियाको प्रभावलाई अन्त्य गरी सहकारी बजार र प्रत्यक्ष बजारका माध्यमबाट उत्पादक र उपभोक्ताबीच सोझो सम्बन्ध स्थापित गरी प्रतिस्पर्धी मूल्य प्रणाली कायम गरिनेछ ।                            |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

बजार अनुगमन प्रभावकारी भएको हुने, बजार सूचना केन्द्र स्थापना भएको हुने, वार्षिक औसत मूल्य वृद्धिदर ६ प्रतिशतमा सीमित रहेको हुनेछ।

## ४.६ वैदेशिक व्यापार, शोधनान्तर र विदेशी विनिमय

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको शोधनान्तर स्थिति र विदेशी विनिमय सञ्चितिको स्थिति मुख्य रूपमा आयातमा हुने भुक्तानी र विप्रेषण आप्रवाहले निर्धारण गर्ने गरेको छ। नेपालको संविधानले आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धनको क्षेत्रमा वैदेशिक पुँजी र प्रविधिको लगानीलाई प्रोत्साहन गर्ने नीति लिएको छ। वस्तु तथा सेवा निर्यातको तुलनामा आयातको आकार ठूलो र फराकिलो रहेको तथा निर्यातको विस्तार प्रायः स्थिर भएकाले व्यापार घाटा निरन्तर बढिरहेको भए तापनि विप्रेषण आयका कारण नेपालको शोधनान्तर स्थिति विगतका अधिकांश वर्षहरूमा बचतमा रहेको थियो। आ.व. २०७४/७५ मा व्यापार घाटा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ३८.६ प्रतिशत पुगेको थियो। विप्रेषण आप्रवाह कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको २५.१ प्रतिशत रहेको थियो। अर्थतन्त्र विस्तारका क्रममा रहेकाले आन्तरिक उत्पादनमा वृद्धि नभएसम्म निर्यात-आयात अनुपातमा अपेक्षित सुधार नहुने र उत्पादनशील क्षेत्रको विकासका लागि चालु खातामा अत्यधिक दबाव पर्न सक्ने अवस्था आउन सक्छ। अल्पकालीन, मध्यमकालीन र दीर्घकालीन नीति तथा कार्यक्रमबाट सम्बोधन गरी सन्तुलित बनाउनु पर्ने देखिन्छ। व्यापार घाटा कम गरी शोधनान्तर स्थिति सकारात्मक बनाउँदै वस्तु तथा सेवा आयात धान्न आवश्यक विदेशी विनिमय सञ्चिति कायम गर्न यस योजनामा केन्द्रित गरिनेछ।

### २. प्रमुख समस्या

व्यापार घाटा उच्च हुनु, कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन न्यून हुनु, स्वदेशी वस्तुको उत्पादनमा वृद्धि गर्न नसकिनु, निर्यात प्रवर्द्धन गर्न देशगत तथा वस्तुगत विविधीकरण गर्न नसक्नु, खुला सीमानाका कारण चोरी निकासी पैठारी नियन्त्रणमा कमी ल्याउन नसकिनु, सेवा व्यापारमा अपेक्षित वृद्धि नहुनु र औद्योगिक पूर्वाधारहरूको विकास गर्न नसकिनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

निर्यात प्रवर्द्धनको लागि वस्तु र देशगत विविधीकरण गर्नु, निर्यातयोग्य कृषिजन्य वस्तुहरूको उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्नु, स्वदेशमा नै उत्पादन प्रोत्साहन तथा वैकल्पिक वस्तुको प्रयोग गरी आयात व्यवस्थापन गर्नु, पर्यटन लगायतका सेवा व्यापार तथा ऊर्जाको निर्यातबाट विदेशी मुद्रा आर्जन गर्नु, विप्रेषण आयलाई उत्पादनसँग जोड्नु, राष्ट्रिय प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्रको उत्पादन अभिवृद्धि गर्न लगानी आर्कषित गर्नु, उच्च व्यापार घाटा कम गर्नु, शोधनान्तर बचत कायम गर्नु र विदेशी विनिमय सञ्चितिको पर्याप्तता कायम राख्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

लगानीको वातावरण सुधार हुनु, भारतसँग थप बन्दरगाह उपयोग सम्बन्धी सम्झौता र चीनसँग पारवहन सम्झौता हुनु, कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन वृद्धि गरी छिमेकी मुलुक लगायत विकसित मुलुकतर्फ निर्यातको सम्भावना हुनु, जलविद्युत उत्पादन गरी छिमेकी देशहरूमा निर्यात गर्न सकिने सम्भावना बढ्नु, कृषि तथा वन पैदावर र खनिज पदार्थमा आधारित वस्तुहरू स्वदेशमा नै उत्पादन अभिवृद्धि गरी स्वदेशी वस्तुको उपयोग वृद्धि गर्नु, पर्यटनलाई विदेशी मुद्रा आर्जनको आधारको रूपमा विकास गर्न सकिने सम्भावना बढ्नु, विदेश जाने कामदारको सीप र दक्षता अभिवृद्धि गरी विप्रेषण आप्रवाह वृद्धि गर्ने सम्भावना बढ्नु, ऊर्जा, पर्यटन, खनिज र औद्योगिक उत्पादनका क्षेत्रमा उल्लेख्य विदेशी लगानी भित्र्याउन सकिने सम्भावना रहनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन्।

#### ४. विषय क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

सन्तुलित वैदेशिक व्यापार, पर्याप्त विदेशी मुद्रा सञ्चिति र बाह्य क्षेत्र स्थायित्व सहितको सुदृढ अर्थतन्त्र।

##### ४.२ लक्ष्य

निर्यात प्रवर्द्धन, वैदेशिक व्यापार सन्तुलन र शोधानान्तर बचत कायम गर्ने।

##### ४.३ उद्देश्य

१. उत्पादन अभिवृद्धि, आयात व्यवस्थापन तथा निर्यात प्रवर्द्धनको लागि देशगत तथा वस्तुगत विविधीकरण गरी व्यापार घाटा कम गर्नु।
२. विदेशी विनिमय स्थिरता, बाह्य क्षेत्र स्थिरता तथा लक्षित विदेशी मुद्रा सञ्चिति कायम गर्नु।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. तुलनात्मक लाभ भएका कृषि, जडीबुटी, जलविद्युत तथा पर्यटन जस्ता क्षेत्रको विकास गरी वस्तु र सेवाको उत्पादन अभिवृद्धि गर्ने। | १. कृषि तथा वनपैदावारमा आधारित उद्योगलाई प्रोत्साहित गरिनेछ।<br>२. पर्याप्त जलविद्युत उत्पादनबाट आन्तरिक विद्युत माग पूरा गरी सोको निर्यात गर्ने व्यवस्थाद्वारा विदेशी मुद्रा आर्जनमा वृद्धि गरिनेछ।<br>३. अन्तर्राष्ट्रिय आबद्धता विस्तार र नयाँ पदमार्ग तथा थप पर्यटकीय स्थलको विकास गरी पर्यटन क्षेत्रबाट विदेशी मुद्राको आर्जन वृद्धि गरिनेछ।<br>४. निर्यातयोग्य वस्तु लगायतका उत्पादनशील क्षेत्रमा कर्जा प्रवाहलाई सुलभ, सरल र सस्तो बनाई यी क्षेत्रमा कर्जा विस्तार गरिनेछ। |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>५. निर्यात गर्न सकिने वस्तुको पहिचान गरी उत्पादन बढाइनेछ ।</p> <p>६. आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धन गर्ने वस्तु तथा सेवाको उत्पादन वृद्धि गरिनेछ ।</p>  |
| २. वस्तु र सेवाको उत्पादन अभिवृद्धि र अनावश्यक आयात नियन्त्रण गरी आयात व्यवस्थापन गर्ने । | <p>१. दलहन, तेलहन, फलफूल, छालाजुत्ता, सिमेन्ट, कपडा, फलाम जस्ता कृषि तथा औद्योगिक वस्तुहरूको उत्पादनलाई बढावा दिइनेछ ।</p> <p>२. विद्युत उत्पादनमा वृद्धि गरी विद्युतीय उपकरणको प्रयोगमा सहूलियतको व्यवस्था गरी पेट्रोलियम पदार्थ, ग्यास तथा कोइलाको आयातलाई व्यवस्थापन गरिनेछ ।</p> <p>३. कम गुणस्तर र अनावश्यक वस्तु तथा सेवाको आयातलाई निरुत्साहित गर्न कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. वैदेशिक व्यापार सम्बन्धी नीतिहरूलाई अद्यावधिक गरिनेछ ।</p>   |
| ३. वस्तुगत तथा देशगत निर्यात बजार विस्तार तथा विविधीकरण गर्ने ।                           | <p>१. औद्योगिक क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र, निर्यात प्रशोधन क्षेत्र र क्वारेन्टाइन सेवाको विकास गरी निर्यात अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>२. एकीकृत व्यापार रणनीतिले पहिचान गरेका वस्तु तथा सेवा र अन्य प्रशोधित कृषिजन्य वस्तु तथा जडिबुटीको निर्यातलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>३. निर्यातकर्ताहरूको क्षमता अभिवृद्धि र निर्यात व्यापार सरलीकरण गरी निर्यातलाई विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>४. आर्थिक कूटनीति र बजार अध्ययनका माध्यमबाट थप नयाँ अन्तर्राष्ट्रिय बजारहरूको पहुँचमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>५. श्रमिकको सीप र क्षमता वृद्धि गरी विप्रेषण रकममा वृद्धि गरिनेछ ।</p> |
| ४. शोधनान्तर स्थिति र बाह्य क्षेत्र सन्तुलन कायम गर्ने ।                                  | <p>१. औपचारिक माध्यमबाट विप्रेषण आप्रवाहमा वृद्धि तथा विप्रेषण र विदेशी लगानीलाई प्राथमिकता क्षेत्रमा परिचालन गर्न कानुनी, संरचनागत र प्रक्रियागत सुधार र प्रोत्साहनको व्यवस्था गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति                           | कार्यनीति  |
|----------------------------------|--|
|                                  | २. पुँजी खातालाई सम्भाव्यता अध्ययनका आधारमा छनोटपूर्ण रूपमा क्रमशः परिवर्त्य बनाउँदै लगिनेछ ।<br>३. सम्भाव्यताका आधारमा मुलुकको हित हुनेगरी विदेशमा लगानी क्रमशः खुला गर्दै लगिनेछ ।   |
| ५. विदेशी विनिमय सञ्चिति गर्ने । | १. विदेशी विनिमय नीतिलाई पुनरावलोकन गर्दै लगिनेछ ।<br>२. भारतीय मुद्राको विनिमय सञ्चिति वृद्धि गर्न भारततर्फको निर्यात प्रवर्द्धन र भारतीय पर्यटक आगमनमा अभिवृद्धि गर्न जोड दिइनेछ ।<br>३. विदेशी विनिमयलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा उपयोग गर्न जोड दिइनेछ । |

#### ५. अपेक्षित प्रतिफल

निर्यात वृद्धि र आयात व्यवस्थापनमा सुधार भई कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा वस्तु तथा सेवाको निर्यात १५.७ प्रतिशत र आयात ५१ प्रतिशत पुगेको हुने, शोधनान्तर स्थिति बचतमा रहेको हुने र विदेशी विनिमय सञ्चिति कम्तीमा ७ महिनाको वस्तु तथा सेवाको आयात धान्न सक्ने स्तरमा कायम भएको हुनेछ ।

#### ४.७ बिमा

##### १. पृष्ठभूमि

प्राकृतिक र मानव सिर्जित जोखिमबाट मानव जीवन, सम्पत्ति र दायित्वको रक्षावरण गरी वित्तीय सुरक्षा प्रदान गर्न बिमा क्षेत्रको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । सरकारले बिमाको पहुँच विस्तार गर्ने नीतिका साथै पशु तथा बाली बिमा, सहूलियतपूर्ण कर्जा बिमा र स्वास्थ्य बिमामा सरकारबाट अनुदानको व्यवस्था, वि.सं. २०७२ सालको विनाशकारी भूकम्पपश्चात् बिमा सम्बन्धी जनचेतना अभिवृद्धिका कारण अर्थतन्त्रमा यो क्षेत्रको योगदान क्रमशः वृद्धि हुँदै गएको छ । बिमा क्षेत्रमा प्रविधिको प्रयोग, नवप्रवर्तन तथा अन्तर्राष्ट्रिय आबद्धताले सेवाको गुणस्तर अभिवृद्धि भएको छ । साथै, विभिन्न प्रकारका बिमालेखहरूको विकास भएको छ भने शीघ्र दाबी भुक्तानी प्रणाली अगाडि बढेको छ । जीवन बिमामा आबद्ध जनसंख्या १४ प्रतिशत रहेको छ ।

##### २. प्रमुख समस्या

बिमाको दायरा साँघुरो हुनु, ग्रामीण क्षेत्र, न्यून आय र विपन्न वर्गसम्म बिमाको पहुँच न्यून हुनु, बिमा जोखिम न्यूनीकरणको उपायको रूपमा सर्वसाधारणमाझ परिचित नहुनु, कृषि क्षेत्रलाई अपेक्षित रूपमा समेट्न नसकिनु, सर्वसाधारण नागरिकलाई बिमाप्रति विश्वस्त बनाउन नसक्नु र सरल तथा शीघ्र दाबी भुक्तानी प्रणालीको अपेक्षित रूपमा विकास नहुनु बिमा क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

बिमाको दायरालाई विस्तार गर्दै दुर्गम क्षेत्र, विपन्न परिवार र सबै क्षेत्रसम्म पहुँच पुऱ्याउनु, स्वास्थ्य बिमा, लघु बिमा, कृषि बिमा र सहुलियतपूर्ण कर्जा बिमाको विस्तार गर्नु, संघीय संरचना अनुरूप नियमनकारी निकायको विस्तार गर्नु, सरल र शीघ्र दाबी भुक्तानी प्रणालीको तीव्र विस्तार गर्नु, बिमा जालसाजी नियन्त्रण गर्न संरचनागत व्यवस्था गर्नु र बिमा सम्बन्धी जानकारी सर्वसाधारण नागरिकको पहुँचमा पुऱ्याउनु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

स्वास्थ्य बिमा, लघु बिमा र सहुलियतपूर्ण कर्जा बिमा मार्फत जोखिम न्यूनीकरण राज्यको प्राथमिकतामा पर्नु, बिमाप्रति आमनागरिकको चेतना, विश्वास र भरोसा बढ्दै जानु, जीवन तथा निर्जीवन बिमा कम्पनीहरूले तीव्र बजार विस्तार गर्ने नीति अबलम्बन गर्नु, भूकम्प तथा विभिन्न प्राकृतिक प्रकोपको कारणले जनमानसमा बिमाप्रतिको आकर्षण बढ्नु, युवा पुस्तामा बिमा क्षेत्रप्रति आकर्षण बढ्दै जानु र बिमा क्षेत्रमा थप रोजगारी वृद्धि हुनु बिमा क्षेत्रको अवसरका रूपमा रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सुदृढ र विस्तारित बिमा सेवाबाट जोखिम न्यूनीकरण मार्फत उत्थानशील समाज र अर्थतन्त्र निर्माण।

#### ४.२ लक्ष्य

अन्तर्राष्ट्रिय प्रचलन र अभ्यास अनुरूप बिमा सेवाको विकास एवम् विस्तार गरी आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक एवम् अन्य कारणबाट उत्पन्न हुने जोखिमलाई बिमाको दायरामा ल्याई वित्तीय जोखिम न्यूनीकरण गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

बिमा क्षेत्रलाई प्रभावकारी र दिगो बनाई दुर्गम तथा न्यून आय भएका वर्ग लगायत समाजका सबै तह र कारोबारमा बिमा सेवाको पहुँच पुऱ्याउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. बिमा सेवालाई प्रभावकारी र प्रतिस्पर्धी बनाउन तथा बीमितको हकहित सुनिश्चित गर्न नीतिगत, कानुनी र संस्थागत सुधार गर्ने। | १. बिमा सम्बन्धी विद्यमान कानुनी व्यवस्थालाई समय सापेक्ष परिमार्जन गरी लागू गरिनेछ।<br>२. विद्यमान अन्तर्राष्ट्रिय परिवेश अनुरूप बिमकहरूको जोखिम न्यूनीकरणका लागि जोखिममा आधारित सुपरीवेक्षण प्रणाली लागू गरिनेछ। |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>३. बिमा क्षेत्रको नियमनलाई सबल, प्रभावकारी र व्यावसायिक बनाउन नियामक निकायको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>४. संघीय संरचना बमोजिम नियामक तथा बिमा कम्पनीको पुनर्संरचना तथा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>५. पुनर्बिमाको संस्थागत क्षमता वृद्धि गरिनेछ ।</p>   |
| <p>२. बिमा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रचलन, अभ्यास तथा मापदण्डको आधारमा बिमा सेवा प्रदान गर्ने ।</p>  | <p>१. बिमक तथा बिमा मध्यस्थकर्ताहरूको निरीक्षण तथा अनुगमन कार्यलाई थप प्रभावकारी बनाई अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको बिमा सेवा प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>२. स्वास्थ्य बिमालाई सस्थागत व्यवस्था गरी विस्तार गरिनेछ । मध्यस्थकर्ताको रूपमा रहेको तेस्रो पक्ष सहजकर्ता विकास सम्बन्धी कानुनी व्यवस्था गरी लागू गरिनेछ ।</p> <p>३. बाली तथा पशुपन्छी बिमा लगायतका मौसमी बिमालाई सबलीकृत गर्दै थप विस्तार गरिनेछ । निवृत्तिभरण योजना, सरकारी भवन एवम् सम्पत्तिको बिमा लगायतका बिमा सम्बन्धी अध्ययन गरी उपयुक्त लागू गरिनेछ ।</p> <p>४. बिमा दाबी प्रक्रियालाई सरलीकरण गर्न शीघ्र दाबी भुक्तानी प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. बिमकको लगानीयोग्य रकमलाई सुरक्षित तथा प्रतिफलमुखी क्षेत्रमा लगानी गर्ने वातावरण तयार गरिनेछ ।</p> |
| <p>३. सामाजिक संरक्षणको एक महत्वपूर्ण आधारस्तम्भको रूपमा बिमा व्यवसायलाई विकास गर्ने । साथै, बिमा सेवाको विस्तार गरी न्यून आय भएका वर्ग लगायत सम्पूर्ण नागरिक एवम् क्षेत्रमा पहुँच पुऱ्याउनका लागि उपयुक्त संयन्त्रको विकास गर्ने ।</p> | <p>१. बिमाको पहुँच पुग्न नसकेका क्षेत्र लगायत प्रत्येक स्थानीय तहमा जीवन तथा निर्जीवन बिमा कम्पनीको शाखा कार्यालय विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>२. स्थानीय तह तथा सामुदायिक संस्थासँगको सहकार्यमा दुर्गम तथा ग्रामीण क्षेत्रहरूमा बिमा सम्बन्धी चेतना अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>३. दुर्गम, पिछडिएको क्षेत्र तथा न्यून आय भएका वर्गका लागि लक्षित गरी प्रोत्साहन सहितको लघु बिमा लागू गरिनेछ ।</p>   |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

बिमा सम्बन्धी नियामक संस्थाको क्षमता अभिवृद्धि भएको हुने, न्यून आय भएका, दुर्गम र पिछडिएका क्षेत्र लगायत हरेक स्थानीय तहसम्म बिमा सेवाको पहुँच विस्तार भएको हुने, सम्पत्तिमा आधारित बिमामा आबद्ध जनसंख्या ५० प्रतिशत पुगेको हुने, जीवन बिमा र स्वास्थ्य बिमामा आबद्ध जनसंख्या ६० प्रतिशत पुगेको हुने र कृषि बिमाको पहुँच १० प्रतिशत कृषकमा पुगेको हुनेछ ।

## ४.८ पुँजी बजार

### १. पृष्ठभूमि

स-सानो रूपमा छरिएर रहेको बचतलाई उत्पादनशील क्षेत्रतर्फ प्रवाहित गरी राष्ट्रिय पुँजी निर्माण, औद्योगिकीकरण तथा अर्थतन्त्रको विकास र विस्तार गर्न पुँजी बजारको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ । संविधानले परिलक्षित गरेको स्वतन्त्र र स्वाधीन अर्थतन्त्र निर्माण गर्न आन्तरिक तथा बाह्य पुँजी परिचालन गर्नुपर्ने भएकाले पुँजी बजारको स्वच्छ, प्रतिस्पर्धी र दिगो विकास आवश्यकता रहेको छ । नेपालमा पुँजी बजारको विकास क्रमिक रूपमा अगाडि बढेको तथा वस्तु विनिमय बजार प्रारम्भिक चरणमा रहेकाले नीतिगत तथा संरचनागत परिवर्तन गरी बजारलाई थप स्वच्छ, प्रतिस्पर्धी तथा विश्वसनीय बनाउँदै धितोपत्र बजार तथा वस्तु विनिमय बजारमा लगानीकर्ताको पहुँच अभिवृद्धि गर्नुपर्ने भएको छ । सो अनुसार राष्ट्रिय पुँजी निर्माण हुने गरी पुँजी बजारको विकासमा योजना केन्द्रित रहेको छ ।

### २. प्रमुख समस्या

धितोपत्रको प्राथमिक बजार देशभर विस्तार भए तापनि दोस्रो बजार विस्तार हुन नसक्नु, धितोपत्र बजारमा उत्पादनमूलक र वास्तविक क्षेत्रका संस्थाहरूको सहभागिता न्यून हुनु, गैरआवासीय नेपाली तथा विदेशी संस्थागत लगानीकर्तालाई धितोपत्र बजारमा आकर्षित गर्न आवश्यक नीतिगत तथा कानुनी व्यवस्था नहुनु, धितोपत्र व्यवसायीमा व्यवसायिकता तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताको अभाव हुनु, संस्थागत सुशासनको अभ्यास कमजोर हुनु, लगानीकर्तामा वित्तीय साक्षरताको कमी हुनु, धितोपत्र सम्बन्धी उपकरणको विविधीकरण हुन नसक्नु, धितोपत्र कारोबारको लागत उच्च हुनु र दोस्रो बजारमा धितोपत्रको मूल्यमा अस्वभाविक र अत्याधिक उतार चढाव हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

धितोपत्रको दोस्रो बजार देशव्यापी रूपमा विस्तार गर्नु, संस्थागत लगानीकर्ता भित्र्याउनु, धितोपत्र बजारलाई पारदर्शी, प्रतिस्पर्धी, स्वच्छ र विश्वसनीय बनाउनु, बण्ड, डिवेन्चर लगायत पुँजी बजारका उपकरणको विस्तार गर्नु, उत्पादनमूलक र वास्तविक क्षेत्रलाई पुँजी बजारमा भित्र्याउनु, वैकल्पिक लगानी कोष (Private Equity, Venture capital and Hedge Fund) को विकास गर्नु र वस्तु विनिमय बजारलाई स्थानीय वस्तुसँग आबद्ध गराई देशको कृषि क्षेत्रको समेत स्तरोन्नति हुने गरी बजारको विकास गर्नु यस क्षेत्रको प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन् ।

राजनीतिक तथा नीतिगत स्थिरता र स्थायित्वको वातावरण, वास्तविक क्षेत्रका संगठित संस्थाको प्रवेशलाई प्रोत्साहित गर्न आवश्यक कानुनी तथा नीतिगत व्यवस्था हुनु, पुँजी बजारमा गैरआवासीय नेपालीको आकर्षण बढ्दै जानु, धितोपत्र बजारमा सर्वसाधारण लगानीकर्ताको आकर्षण बढ्दै जानु, सूचीकृत कम्पनी तथा धितोपत्र व्यवसायीको संख्या वृद्धि हुनु, प्राथमिक बजार देशव्यापी रूपमा विस्तार हुनु र स्वचालित कारोबार प्रणालीको विकास हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

स्वच्छ, प्रतिस्पर्धी र फराकिलो धितोपत्र तथा वस्तु विनिमय बजार मार्फत राष्ट्रिय पुँजी निर्माण ।

##### ४.२ लक्ष्य

सबल, गतिशील र विश्वसनीय धितोपत्र तथा वस्तु विनिमय बजारको विकास मार्फत लगानी आकर्षित गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

धितोपत्र तथा वस्तु विनिमय बजारलाई पहुँचयोग्य, स्वच्छ र विश्वसनीय बनाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. धितोपत्र तथा वस्तु विनिमय बजारलाई स्वच्छ, प्रतिस्पर्धी र विश्वसनीय बनाउनुका साथै यसको क्षेत्र तथा दायरा अभिवृद्धि गर्ने । | १. बजारको स्वस्थ विकासका लागि प्राथमिक निष्काशनमा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्रचलित मूल्य निर्धारण प्रणाली र दोस्रो बजारको प्रणाली परीक्षण (System Audit) लगायतको व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. क्रेडिट रेटिङ्ग एजेन्सी स्थापना सम्बन्धी संस्थागत व्यवस्था गरिनेछ ।<br>३. धितोपत्र बजारमा वास्तविक क्षेत्रका कम्पनीलाई भित्र्याउन आवश्यक प्रोत्साहनमूलक व्यवस्था गरिनेछ ।<br>४. नेपाली स्थानीय वस्तुको समेत प्रवर्द्धन हुने गरी वस्तु विनिमय बजारको विकास गरिनेछ ।<br>५. ऋणपत्रको दोस्रो बजारलाई सक्रिय एवम् प्रभावकारी बनाइनेछ ।<br>धितोपत्र बजारमा सूचना प्रविधि लगायत नवीनतम प्रविधिको उपयोग गरी आधुनिकीकरण गरिनेछ । |
| २. कानुनी, संस्थागत र संरचनागत सुधार गरी धितोपत्र तथा वस्तु  | १. धितोपत्र बजार सम्बन्धी विद्यमान कानुनी व्यवस्थाहरूको पुनरावलोकन, ट्रष्ट ऐनको तर्जुमाका साथै वैकल्पिक लगानी कोष नियमन व्यवस्था सुदृढ गरिनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| विनिमय बजार सञ्चालन तथा नियमन प्रणालीलाई अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको बनाउने।           | <p>२. वस्तु विनियम बजारको दक्ष एवम् प्रभावकारी सञ्चालनका लागि आवश्यक कानुनी पूर्वाधार तथा अन्य आधारभूत संरचनाको विकास गरिनेछ।</p> <p>३. नेपाल धितोपत्र बोर्डको क्षमता अभिवृद्धि गरी बजार नियमनलाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ।</p> <p>४. पुँजी बजारसम्बन्धी अध्ययन, अनुसन्धान तथा प्रशिक्षणका लागि संस्थागत प्रबन्ध गरिनेछ।</p>   |
| ३. धितोपत्र बजारमा साना र स्वदेशी तथा विदेशी संस्थागत लगानीकर्ताको आकर्षण बढाउने। | <p>१. पुँजी बजार सम्बन्धी नियामक संस्था, सूचीकृत कम्पनी, धितोपत्र व्यवसायी र स्थानीय तहको सहकार्यमा पुँजी बजार तथा वस्तु विनिमय सम्बन्धी साक्षरता अभिवृद्धि गरिनेछ।</p> <p>२. सबै स्थानीय तहमा प्राथमिक निष्काशनको पहुँच विस्तार गरिनेछ।</p> <p>३. धितोपत्र बजारमा गैरआवासीय नेपाली तथा अन्तर्राष्ट्रिय वित्तीय संस्थाको सहभागिता गराउन आवश्यक कानुनी व्यवस्था गरिनेछ।</p> <p>४. धितोपत्र बजारमा लगानी तथा जोखिम न्यूनीकरणका लागि आवश्यक वित्तीय उपकरणहरूको विकास गरिनेछ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यसम्ममा सार्वजनिक धितोपत्रमा लगानी गर्ने जनसंख्या ४.४ प्रतिशतबाट २० प्रतिशत पुगेको हुनेछ। नेपाल धितोपत्र बोर्डको नियमन तथा सुपरीवेक्षण क्षमता अभिवृद्धि भएको हुने, धितोपत्र तथा वस्तु विनिमय बजार सम्बन्धी कानुनी व्यवस्था सुदृढ भई धितोपत्र कारोबार लागत कम भएको हुने, धितोपत्र बजारमा वास्तविक क्षेत्रको सूचीकृत संस्थाको संख्या वृद्धि भएको हुने, पुँजी बजारसम्बन्धी साक्षरता व्यापक र सुदृढ भएको हुने, लगानी तथा जोखिम न्यूनीकरणको लागि विभिन्न वित्तीय उपकरणहरूको व्यवस्था भएको हुने, स्वतन्त्र मूल्य निर्धारणको विधि लागू भएको हुने र धितोपत्र बजारमा राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय संस्थागत लगानीकर्ताको प्रवेश भएको हुनेछ।



# निजी तथा सहकारी क्षेत्र

## ५.१ निजी क्षेत्र

### १. पृष्ठभूमि

लगानी, उत्पादन, वितरण र रोजगारी सिर्जना गरी आर्थिक गतिविधिको विस्तार गर्न निजी क्षेत्रको प्रमुख भूमिका रहेको हुन्छ। नेपालको संविधानले तीव्र आर्थिक वृद्धि हासिल गर्न तथा स्वतन्त्र र समृद्ध अर्थतन्त्र निर्माण गर्न निजी क्षेत्रलाई प्रमुख सम्वाहकको रूपमा आत्मसात गर्दै स्रोत-साधनको महत्तम परिचालन गर्ने नीति अंगीकार गरेको छ। सो बमोजिम राज्यका नीति तथा कानूनको परिधिमा रही सार्वजनिक क्षेत्रसँग समन्वय, साझेदारी र सहकार्य गर्दै समग्र विकास प्रक्रियामा सहभागी हुने सर्वाधिक अधिकार निजी क्षेत्रले प्राप्त गरेको छ। निजी क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धी, सबल, उत्पादनशील र उत्तरदायी बनाउन राज्यले सहजीकरण र नियमनकारी भूमिका खेल्नेछ। यस योजना अवधिमा निजी क्षेत्रबाट ५५.६ प्रतिशत लगानी हुने अपेक्षा गरिएको छ। सो अनुसार खानि तथा उत्खनन, उत्पादनमूलक उद्योग, निर्माण, व्यापार, होटल तथा रेष्टुरेन्ट, वित्तीय मध्यस्थता, घर-जग्गा बहाल तथा व्यावसायिक क्रियाकलाप लगायतका क्षेत्रको लगानीको मुख्य हिस्सा निजी क्षेत्रबाट हुने अनुमान गरिएको छ। यसका लागि निजी क्षेत्रको सहजीकरण र प्रोत्साहन सहित लगानी मैत्री वातावरण सुनिश्चित गरी निजी क्षेत्रको प्रतिस्पर्धी क्षमता र लगानी अभिवृद्धिमा योजना केन्द्रित छ।

### २. प्रमुख समस्या

स्वदेशी वस्तु तथा सेवाको उत्पादन लागत वृद्धिले निजी क्षेत्रको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता कमजोर हुनु, प्रक्रियागत जटिलता अझै रहनु, प्रादेशिक सन्तुलन सहितको औद्योगिक पूर्वाधारको विकास हुन नसक्नु, लागत बढोत्तरीले गर्दा निजी क्षेत्र उत्पादनशील क्षेत्रमा भन्दा आयातीत वस्तु तथा सेवा व्यापारमा केन्द्रित रहनु, विशेष आर्थिक क्षेत्र र औद्योगिक क्षेत्र प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन हुन नसक्नु, अपेक्षित रूपमा उद्यमशीलता प्रवर्द्धन हुन नसक्नु, निजी क्षेत्रको विकासमा देखिएका प्रमुख समस्या हुन्। त्यसैगरी, दक्ष तथा अर्धदक्ष जनशक्तिको अभाव रहनु, एकाधिकार, अवैध व्यापार र सिन्डिकेट जस्ता विकृति अन्त्य हुन नसक्नु, बजारमा गुणस्तरको वस्तु तथा सेवा उपलब्धता नहुनु, उपभोक्ता हित संरक्षण र सामाजिक उत्तरदायित्व कमजोर हुनु, निजी क्षेत्र सबल, सक्षम र सुदृढ हुन नसक्नु र नियमन प्रणाली कमजोर हुनु लगायतका समस्या समेत यस क्षेत्रमा विद्यमान छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

निजी क्षेत्रको लगानीको विविधीकरण तथा विशिष्टीकरण गर्दै उत्पादन र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि गर्नु, उपलब्ध साधन-स्रोतको महत्तम उपयोग हुनेगरी निजी क्षेत्रलाई परिचालन गर्नु तथा उत्पादनमूलक क्षेत्रमा निजी क्षेत्रलाई आकर्षित एवम् केन्द्रित गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्। साथै, लघु, साना र मझौला उद्यमीको व्यावसायिक क्षमता अभिवृद्धि तथा व्यवसायको स्तरोन्नति गर्नु, वस्तु तथा सेवाको गुणस्तर अभिवृद्धि गर्नु, मध्यस्थकर्ता लागत कटौती गर्नु, नवीनतम सीप तथा प्रविधिको उपयोग गर्दै अर्थतन्त्रको आधुनिकीकरण गर्नु, अनौपचारिक क्षेत्रको अर्थतन्त्रलाई औपचारिकीकरण गर्नु, निजी क्षेत्रमा स्वच्छता र प्रतिस्पर्धा कायम गराउनु, द्विपक्षीय र बहुपक्षीय व्यापार सम्झौताबाट सिर्जित अवसरको उपयोग गर्नु र आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धन गर्नु यस क्षेत्रका अन्य चुनौती हुन्।

संघीयताको कार्यान्वयनसँगै नीतिगत स्थिरता कायम हुँदै जानु, अर्थतन्त्रको समग्र मागमा वृद्धि हुनु, लगानीमैत्री वातावरण सिर्जना गर्न नीतिगत, कानुनी, संरचनागत र प्रक्रियागत सुधारको थालनी हुनु, आर्थिक समृद्धिको लागि निजी क्षेत्रको अहम् भूमिका रहनु, ऊर्जा तथा निर्माण लगायतका क्षेत्रमा निजी क्षेत्र प्रतिस्पर्धी र कुशल ढंगबाट विकसित हुँदै जानु, आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय आबद्धताका पूर्वाधारको विकाससँगै छिमेकी मुलुकको बजारको उपयोग गर्न सक्ने सम्भावना रहनु र लगानीका प्राथमिकता र सम्भावनाका क्षेत्रको पहिचान हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

आर्थिक समृद्धिको सम्वाहकका रूपमा निजी क्षेत्र।

#### ४.२ लक्ष्य

निजी क्षेत्रको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरी तीव्र आर्थिक वृद्धि र रोजगारी सिर्जना गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

- लगानी अभिवृद्धि तथा उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारी सिर्जना गर्दै वस्तु तथा सेवा उत्पादन गर्न निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन र सहजीकरण गर्नु।
- निजी क्षेत्रको व्यावसायिक र प्रतिस्पर्धी क्षमता अभिवृद्धि गर्दै आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धन गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. निजी क्षेत्रलाई उद्योग क्षेत्रको अग्रणी भूमिकामा स्थापित गर्ने। | १. खानि, उत्पादनमूलक उद्योग र विद्युत उत्पादनका लागि आवश्यक सडक, प्रसारण तथा वितरण लाइन जस्ता आधारभूत पूर्वाधार सरकार र निजी क्षेत्रको साझेदारीमा निर्माण गरिनेछ। |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>२. निजी क्षेत्रको सहभागितामा अन्तरदेशीय आर्थिक क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक ग्राम सम्बन्धी पूर्वाधार निर्माण गरी सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>३. उद्योगको लागि आवश्यक दक्ष जनशक्ति उत्पादन सम्बन्धी व्यवस्था गरिनुका साथै निजी क्षेत्रबाट दक्ष जनशक्ति विकासका लागि वित्तीय उत्प्रेरणा दिइनेछ ।</p> <p>४. ऊर्जा, यातायात तथा ढुवानी मध्यस्थता लगायतका औद्योगिक उपभोगको लागत न्यूनीकरण सम्बन्धी व्यवस्था गरी उद्योग क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धी बनाइनेछ ।</p> <p>५. निजी क्षेत्रको सहभागितामा बहुमूल्य पत्थर, फलाम, युरेनियम, तामा, सुन, प्राकृतिक ग्यास तथा पेट्रोलियम पदार्थ लगायतका खनिज पदार्थको अन्वेषण, प्रशोधन तथा उत्पादनमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>६. सिमेन्ट, चिनी, फुटवेयर, औषधि, जुस, डेरी, चिया, पश्मिना, हस्तकला लगायतका स्वदेशी कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगको प्रवर्द्धनका लागि वित्तीय लगानी सहजता र पूर्वाधार निर्माणमा सहयोग गरिनेछ ।</p> <p>७. उत्पादनमूलक उद्योगको विकास र विस्तार गर्न आवश्यक प्रोत्साहनको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>८. आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धन सम्बन्धी वस्तु तथा सेवा उत्पादनमा प्रोत्साहन र सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>९. उद्योगको लागि आवश्यक पर्ने जग्गा सहज रूपमा लिजमा उपलब्ध गराउने नीति लिइनेछ ।</p> <p>१०. निजी क्षेत्रबाट उत्पादित वस्तु र सोको बजार प्रवर्द्धनका लागि अनुसन्धान तथा विकासमा वित्तीय उत्प्रेरणा प्रदान गर्ने नीति लिइनेछ ।</p> <p>११. औद्योगिक क्षेत्रको उत्पादन वृद्धिका लागि लागतमैत्री र उत्पादन संरक्षणको नीति लिइनेछ ।</p> |
| <p>२. कृषि क्षेत्रको व्यवसायीकरण, आधुनिकीकरण र औद्योगिकीकरणमा निजी क्षेत्रलाई अभिप्रेरित गर्ने ।</p> | <p>१. सार्वजनिक क्षेत्रले कृषिमा अनुसन्धान तथा प्रविधि हस्तान्तरण र सिँचाइ, कृषि सडक लगायतका पूर्वाधारको निर्माण गरी निजी लगानी आकर्षित गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | २. कृषिजन्य तथा वन पैदावार उत्पादन, यान्त्रिकीकरण, प्रशोधन उद्योग स्थापना, भण्डारण तथा बजारीकरणका लागि सहूलियतपूर्ण कर्जा, बिमा सेवा र वित्तीय उत्प्रेरणा प्रदान गरिनेछ ।   |
| ३. सार्वजनिक, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रसँगको सहकार्यमा सेवा क्षेत्रलाई गुणस्तरीय र प्रतिस्पर्धी बनाउने । | १. व्यापार व्यवसाय, होटल तथा पर्यटन र यातायात सेवा गुणस्तरीय र प्रतिस्पर्धी रूपमा प्रदान गर्न निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन र सहजीकरण गरिनेछ ।<br>२. सेवा क्षेत्रको आधुनिकीकरण तथा सूचना प्रविधिको उपयोगलाई बढावा दिइनेछ । सूचना प्रविधि पूर्वाधारजन्य लागतमा न्यूनीकरण गरिनेछ ।<br>३. शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवा खासगरी गुणस्तरीय, उच्च र विशिष्टीकृत सेवा प्रदान गर्न सरकारको परिपूरकको रूपमा निजी क्षेत्रलाई सहजीकरण गरिनेछ ।  |
| ४. निजी क्षेत्रको गुणस्तर, प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता र विश्वसनीयता अभिवृद्धि गर्ने ।                          | १. निजी क्षेत्रको संस्थागत संस्कृति (Corporate Culture), क्षमता विकास र संस्थागत सुशासन प्रवर्द्धन गरिनेछ ।<br>२. औपचारिक क्षेत्रको विस्तार गर्दै सामाजिक सुरक्षाको दायरा विस्तार गरिनेछ ।<br>३. वस्तु तथा सेवाको गुणस्तर तथा सहज र सुलभ आपूर्ति कायम गर्न नियमन प्रणालीलाई सुदृढ गराइनेछ ।<br>४. बालश्रम निवारण, गरिबी निवारण तथा सामाजिक उत्तरदायित्वमा निजी क्षेत्रलाई सहभागी गराइनेछ ।  |
| ५. पूर्वाधार निर्माण र विकासमा निजी क्षेत्रको स्रोत, सीप, प्रविधि र व्यवस्थापनको उपयोग गर्ने ।              | १. सार्वजनिक-निजी साझेदारीको माध्यमबाट पूर्वाधार र सेवा क्षेत्रको विकास र विस्तार गरिनेछ ।<br>२. स्थानीय कच्चा पदार्थ, सीप र स्रोत प्रवर्द्धन हुने गरी उत्पादनशील क्षेत्र र पूर्वाधार विकास लगायतका राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रमा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी आकर्षित गरिनेछ ।<br>३. निजी क्षेत्रलाई आवश्यक पुँजी र प्रविधिको विकास र विस्तार गर्न द्विपक्षीय र बहुपक्षीय विकास साझेदारसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ ।<br>४. बृहत् पूर्वाधार निर्माण कार्य समयमै सम्पन्न गर्ने गरी बजारमा प्रभावकारी माग सिर्जना गरिनेछ ।<br>५. निजी क्षेत्रबाट निर्मित सार्वजनिक पूर्वाधार सरकारले खरिद गर्ने सम्बन्धी कानुनी व्यवस्था गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ६. निजी क्षेत्रको लगानी, उत्पादन र रोजगारी अभिवृद्धि गर्न नीतिगत, कानुनी र प्रक्रियागत सुधार गर्ने। | <p>१. सुमधुर औद्योगिक सम्बन्ध प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक कानुनी तथा प्रक्रियागत सुधार गरिनेछ।</p> <p>२. क्षेत्रगत लगानीका आधार र प्राथमिकता सहितको लगानी नीति तर्जुमा गरिनेछ।</p> <p>३. लगानीसँग सम्बन्धित लगानी, रोजगारी, वैदेशिक लगानी, पूर्वाधार निर्माण लगायतका विषयमा विद्यमान कानूनको परिमार्जन तथा नयाँ कानून तर्जुमा गरिनेछ।</p> <p>४. व्यवसाय/लगानीको दर्ता प्रणाली तथा व्यवसायसँग सम्बन्धित सबै सेवालाई एकद्वार प्रणालीबाट एकीकृत रूपमा उपलब्ध गराउन अन्तरनिकाय आबद्धता सहितको एकल बिन्दु सेवा प्रणाली विकास गरी लागू गरिनेछ।</p> <p>५. अनुसन्धान तथा विकास खर्च, वातावरण प्रदूषण खर्च लगायतका जिम्मेवार पुँजी निर्माणका लागि मूल्य अभिवृद्धि कर फिर्ता, आयकर छुट लगायतका सुविधाबाट प्रतिस्पर्धा, उत्पादन, उत्पादकत्व र प्रादेशिक सन्तुलन अभिवृद्धि गरिनेछ।</p> <p>६. निजी क्षेत्रको लगानी, उत्पादन र रोजगारीको अनुगमनको संयन्त्र विकास गरिनेछ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा निजी क्षेत्रले कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रमा आ.व. २०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा क्रमशः रू. २ खर्ब ८७.०१ अर्ब, रू. १७ खर्ब ५४.७६ अर्ब र रू. ३० खर्ब ९२.३१ अर्ब लगानी गरेको हुने र निजी क्षेत्रमा वार्षिक ३ लाख ५० हजार थप रोजगारी सिर्जना भएको हुनेछ।

#### ५.२ सहकारी क्षेत्र

##### १. पृष्ठभूमि

सार्वजनिक र निजी क्षेत्रका साथै सहकारी क्षेत्रको सहभागिता र स्वतन्त्र विकास मार्फत राष्ट्रिय अर्थतन्त्र सुदृढ गर्ने नीति राज्यले लिएको छ। सहकारी क्षेत्रले छरिएर रहेको श्रम, सीप, प्रविधि र पुँजीलाई एकत्रित गरी उत्पादन, उत्पादकत्व र रोजगारी वृद्धि गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा योगदान गर्न सक्दछ। हाल ३४,५१२ विभिन्न प्रकृतिका प्रारम्भिक सहकारी संस्था, ७७ जिल्ला सहकारी संघ, ३२८ विषयगत जिल्ला सहकारी संघ, २० विषयगत केन्द्रीय सहकारी संघ, राष्ट्रिय सहकारी बैंक र राष्ट्रिय सहकारी महासंघ रहेका छन्। अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी महासंघमा नेपाल आबद्ध भएको

छ। प्रारम्भिक सहकारी संस्थामा करिब ६३ लाख सदस्य रहेका छन्। सहकारी संघसंस्थाको कुल शेयर पुँजी ७३ अर्ब र परिचालित बचत रू. ३ खर्ब २ अर्ब रहेको छ। सहकारी संघ संस्थाबाट रू. २७३ अर्ब ऋण परिचालन भएको छ। सहकारी संस्थामा करिब ५२ प्रतिशत महिला सदस्य रहेका छन् भने सञ्चालकमा महिला सहभागिता ४० प्रतिशत रहेको छ। यस क्षेत्रले ६१ हजार जनालाई प्रत्यक्ष रोजगारी दिनुका साथै लाखौंको संख्यामा अप्रत्यक्ष रोजगारी सिर्जना गरेको छ। वित्तीय पहुँच अभिवृद्धि, महिला सशक्तीकरण, नेतृत्व विकास तथा क्षमता विकास, सामाजिक एकीकरण, उद्यमशीलता प्रवर्द्धन र गरिबी न्यूनीकरणमा यस क्षेत्रको महत्वपूर्ण योगदान रहेको छ। यस क्षेत्रमा प्राप्त उपलब्धिको सम्बर्द्धन गर्दै सहकारी आन्दोलनको स्वस्थ विकासलाई प्रोत्साहित गर्नु वाञ्छनीय भएको छ।

## २. प्रमुख समस्या

सहकारी सम्बन्धी शिक्षा र चेतनाको विस्तार अपेक्षित रूपमा हुन सकेको छैन। सहकारी क्रियाकलापको सघनता उत्पादन तथा स्वरोजगारको क्षेत्रमा नभई बचत तथा ऋणको कारोबारमा बढी देखिएको छ। केही सहकारी संस्थाहरूमा सहकारीका सिद्धान्त, मूल्य, मान्यताको अनुशरणको अवस्था कमजोर रहेको छ। कतिपय सहकारी संस्था सुशासनको अभावले गर्दा समस्याग्रस्त अवस्थामा रहेका छन्। अत्याधिक संख्यामा सहकारी संघसंस्थाको विस्तार, दोहोरो सदस्यता, वित्तीय सुशासनको कमी जस्ता कारणले यस क्षेत्रमा वित्तीय जोखिम रहेको छ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

सहकारी संघ संस्थाको संख्यात्मक विस्तारभन्दा गुणात्मक विकास गरी समुदायमा आधारित र सदस्य केन्द्रित बनाउनु, सहकारीमैत्री नीतिहरूको प्रवर्द्धन गर्नु, सहकारीलाई ग्रामीण विपन्न समुदायसम्म विस्तार गर्नु, संविधानले निर्दिष्ट गरेअनुसार सहकारीलाई मुलुकको समृद्धिको आधारको रूपमा स्थापित गर्नु, सहकारी संस्थामा स्वनियमनलाई सुदृढ तुल्याउँदै सुशासन कायम गराउनु, सहकारी आन्दोलनका प्रतिनिधिमूलक संघ तथा प्रवर्द्धन र नियमनमा संलग्न निकायबीच प्रभावकारी समन्वय कायम गर्नु, महिला तथा सीमान्तीकृत वर्गमा सहकारीको पहुँच अभिवृद्धि गर्दै गरिबी निवारणतर्फ केन्द्रित गर्नु, यस क्षेत्रबाट परिचालन हुने बचत तथा ऋणको सुरक्षाका लागि नीतिगत र संस्थागत प्रबन्ध मजबुत तुल्याउनु, सहकारी क्षेत्रमा ऋण प्रस्तुता अन्त्य गर्नु, विपन्न समुदायलाई आर्थिक सुरक्षाको प्रत्याभूति दिने माध्यमका रूपमा विकास गर्नु, सहकारी मार्फत परिचालित पुँजीलाई उत्पादनमूलक क्षेत्रमा परिचालन गर्नु, उत्पादन र रोजगारीका क्षेत्रमा सहकारीको योगदान अभिवृद्धि गर्नु र सहकारी संघ संस्थाको नियमनलाई थप प्रभावकारी बनाउनु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकार सूचीमा सहकारी विषय समावेश भएकोले तीन तहबाट नियमन तथा प्रवर्द्धनका कार्य सम्पादन भई यस क्षेत्रको विकासमा थप योगदान पुग्ने अवस्था सृजना हुनु, सहकारी अभियानको स्थानीय तहदेखि संघसम्मको संरचना निर्माण हुनु, अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी अभियानसँग सम्बन्ध विस्तार भइ सबल प्रतिनिधित्व हुनु, कृषिको मूल्य शृंखलामा सहकारी संस्थालाई परिचालन गर्ने वातावरण तयार हुनु, सहकारी आन्दोलनमा महिला तथा विपन्न वर्गको सहभागिताबाट सशक्तीकरण र गरिबी निवारण गर्ने माध्यमको रूपमा स्थापित हुँदै जानु, सहकारी क्षेत्रबाट परिचालित बचत तथा ऋण सदस्यको प्राथमिकतानुसार आय-आर्जन, रोजगारी सिर्जना,

आकस्मिक आवश्यकता, उपभोग जस्ता क्रियाकलापमा उपयोग गर्न सकिने अवस्था विद्यमान रहनु, अर्थतन्त्रमा सहकारीको भूमिकालाई संवैधानिक रूपमै महत्त्व दिइनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसरको रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

आर्थिक समृद्धि र सामाजिक रूपान्तरणका लागि गुणात्मक एवम् दिगो सहकारी ।

##### ४.२ लक्ष्य

स्वावलम्बन तथा पारस्परिकताको आधारमा उत्पादनमुखी, दिगो एवम् न्यायोचित आर्थिक सम्बन्धको विकास गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. सहकारी मार्फत लक्षित तथा विपन्न वर्गलाई आर्थिक तथा सामाजिक सशक्तीकरणको प्रक्रियामा सहभागी गराउनु ।
२. सहकारी मूल्य र सिद्धान्तको अनुशरण तथा पारस्परिकता र स्वावलम्बनको संस्कार विकास र सुशासन कायम गर्नु ।
३. सहकारी संघसंस्थाहरूलाई बहुउत्पादन, प्रशोधन तथा बजारीकरणतर्फ उन्मुख गराउन ती संस्थाको संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. सहकारी क्षेत्रलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा केन्द्रित गर्न प्रोत्साहन गर्ने । | १. उद्यमशीलता विकास र स्थानीय पर्यटन प्रवर्द्धनमा सहकारीको भूमिकालाई बढाउँदै लगिनेछ ।<br>२. वित्तीय पहुँच विस्तार र आर्थिक सामाजिक समावेशीकरणमा सहकारी क्षेत्रलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।<br>३. दिगो विकास लक्ष्य प्राप्तिका लागि योगदान पुऱ्याउन सहकारी संघ संस्थालाई अभिप्रेरित गरिनेछ ।<br>४. उत्पादनमूलक क्षेत्रमा क्रियाशील रहेका प्रत्येक प्रदेशका कम्तीमा २ वटा सहकारी संस्थालाई नमुना सहकारी संस्था बनाउने व्यवस्था मिलाइनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| <p>२. सहकारीको माध्यमबाट गरीब तथा विपन्न वर्गको संलग्नतामा सञ्चालन हुने व्यावसायिक आयोजनालाई वित्तीय र प्राविधिक सहयोग उपलब्ध गराउने ।</p> | <p>१. सहकारी मार्फत स्वरोजगार सिर्जनामा सहयोगी हुने युवा तथा श्रमिकद्वारा सञ्चालित एवम् अन्य सहकारी संघ संस्थालाई आयोजना सञ्चालनका लागि बीउ पुँजी तथा पुँजीगत अनुदान उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>२. सहकारी संघ संस्था मार्फत उत्पादित वस्तुको प्रशोधन, भण्डारण, बजारीकरण र विविधीकरण सम्बन्धी आयोजनाका लागि वित्तीय तथा प्राविधिक सहयोग उपलब्ध गराइनेछ । साथै, सहकारी मार्फत कर्जा तथा बिमा सम्बन्धी क्रियाकलापलाई सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. कृषिलाई आधुनिकीकरण र व्यवसायीकरण गर्न साना किसानहरूलाई सहकारीको माध्यमबाट एकीकृत गरी ठूलो आकारको खेती गर्दै बृहत् परिमाणमा कृषि उत्पादन, प्रशोधन र बजारीकरण गर्न आवश्यक सेवा तथा सुविधा उपलब्ध गराइनेछ ।</p>  |
| <p>३. सहकारी क्षेत्रको प्रवर्द्धनका लागि नीतिगत र संस्थागत प्रबन्ध मजबुत बनाउने ।</p>  | <p>१. उत्पादन, मूल्य शृंखला विकास तथा निर्यातमूलक वस्तु उत्पादन गर्ने आयोजनालाई विशिष्टीकृत सहकारी संघ मार्फत सञ्चालन गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>२. सहकारी संस्थाबाट उत्पादित वस्तु तथा सेवाको बजारीकरणको लागि ब्राण्डिङ गर्ने व्यवस्था गरिनेछ । उपभोक्ता सहकारी संस्थालाई क्रियाशील बनाउन प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>३. पुराना साझा सहकारी संस्थाको सम्पत्ति संरक्षण गर्नुका साथै निष्क्रिय अवस्थामा रहेका संस्थाको पुनर्सञ्चालनको व्यवस्था मिलाइनेछ । नेपाल सरकार वा राष्ट्रिय सहकारी विकास बोर्डको ५१ प्रतिशत वा सोभन्दा बढी स्वामित्व भएका साझा संस्थाको पुनर्संरचना गरिनेछ ।</p> <p>४. सहकारी क्षेत्रमा विशिष्टीकृत सहकारी संघको ढाँचामा बचत तथा कर्जा सुरक्षण कोष र कर्जा सूचना केन्द्रको स्थापना गरिनेछ । यस क्षेत्रबाट लगानी भएको कर्जा असुलीलाई प्रभावकारी बनाउन कर्जा असुली न्यायाधीकरण गठन गरिनेछ ।</p> <p>५. सहकारीको सन्तुलित वितरण सुनिश्चित गरी प्रभावकारी सेवा प्रवाह गर्न आवश्यकतानुसार एकीकरण तथा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>६. विस्तारित लेखा तयार गरी कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सहकारी क्षेत्रको योगदान मापन गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ४. सहकारी संघ संस्थाको क्षमता अभिवृद्धिका लागि सहकारी शिक्षा, नेतृत्व विकास एवम् व्यवस्थापन तालिमलाई व्यापक तुल्याउने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विद्यालयको पाठ्यक्रममा सहकारी विषय समावेश गर्नुका साथै विश्वविद्यालयमा सहकारिता विषयको शैक्षिक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>२. सहकारी शिक्षा तथा तालिम सञ्चालन गर्ने विभिन्न संस्था तथा निकायको न्यूनतम मापदण्डको व्यवस्था मिलाइनेछ ।</li> <li>३. सहकारी प्रशिक्षण तथा अनुसन्धान केन्द्रको पुनर्संरचना एवम् सांगठनिक क्षमता विकास गरिनेछ ।</li> <li>४. सबै तहका सहकारी संघसंस्था मार्फत वित्तिय साक्षरता, सहकारी शिक्षा, तालिम र क्षमता अभिवृद्धिका कृयाकलापहरू विस्तार गरिनेछ ।</li> </ol>           |
| ५. सहकारी क्षेत्रको प्रभावकारी नियमनका लागि एकीकृत अनुगमन प्रणालीको विकास गर्ने ।                                       | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. सहकारी संघसंस्थामा सम्पत्ति शुद्धीकरण निवारण सम्बन्धी कानुनको पालनालाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> <li>२. सहकारीको नियमन क्षेत्राधिकार अनुसार संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट एकल तथा संयुक्तरूपमा अनुगमन प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</li> <li>३. सहकारी सम्बन्धी एकीकृत आधारभूत तथ्याङ्क तयार गर्न तथा नियमनलाई प्रभावकारी बनाउन सहकारी तथा गरिबी निवारण सम्बन्धी व्यवस्थापन सूचना प्रणाली (CoPoMIS) को प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>४. सहकारी संघ संस्थामा पारदर्शिता प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ६. कृषि, बायोग्यास प्लान्ट स्थापना र सहकारी क्षेत्रबाट उत्पादित वस्तुको प्रयोगको लागि प्रोत्साहन गर्ने ।                | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. सहकारी संघ/संस्था, कृषक समूह, व्यावसायिक फर्मको संलग्नतामा पशुपालन लगायतका अन्य माध्यमबाट बायोग्यास प्लान्टको स्थापना तथा सञ्चालन र प्राङ्गारिक खेतीलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> <li>२. सहकारी संघ/संस्था/समूहलाई प्राङ्गारिक खेती, बायोग्यास तथा अन्य प्लान्ट स्थापना तथा सञ्चालनको लागि क्षमता अभिवृद्धिका क्रियाकलाप सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>३. सहकारी संघ संस्थाबाट उत्पादित वस्तुको प्रयोगलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> </ol>  |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

विद्यालय तहको शिक्षामा सहकारी विषय समावेश भई पठनपाठन थालिएको हुनेछ। विश्वविद्यालय तहमा सहकारिता विषयको शैक्षिक कार्यक्रम सञ्चालन भएको हुनेछ। स्थानीय तह, प्रदेश र संघबाट एकल तथा संयुक्त रूपमा अनुगमन प्रणालीको कार्यान्वयनबाट सहकारी सुशासनमा थप योगदान पुगेको हुनेछ। सहकारी तथा गरिबी निवारण सम्बन्धी व्यवस्थापन सूचना प्रणाली (CoPoMIS) को प्रभावकारी कार्यान्वयन भएको हुनेछ। कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सहकारी क्षेत्रको योगदान निर्धारण भएको हुनेछ। सहकारी सम्बन्धी दीर्घकालीन रणनीतिक योजना तर्जुमा गरिएको हुनेछ। सहकारी प्रशिक्षण तथा अनुसन्धान केन्द्रको पुनर्संरचना भएको हुनेछ। निष्क्रिय अवस्थामा रहेका पुराना साझा सहकारी संस्थाको सम्पत्ति संरक्षणका साथै पुनर्सञ्चालन भएको हुनेछ। सहकारीमा महिला सदस्यता ५३ प्रतिशत पुगेको हुनेछ। सञ्चालकमा महिला सहभागिता ४३.५ प्रतिशत पुगेको हुनेछ। सहकारी मार्फत परिचालित शेयर पुँजी रु. ८६ अर्ब र बचत रु. ३८४ अर्ब पुगेको हुनेछ। सहकारी मार्फत रु. ३९३ अर्ब ऋण परिचालन भएको हुनेछ। यस क्षेत्रमा वार्षिक थप १७ हजार प्रत्यक्ष रोजगारी सिर्जना भएको हुनेछ।

### ५.३ सार्वजनिक-निजी साझेदारी

#### १. पृष्ठभूमि

विकास र समृद्धिको लक्ष्य हासिल गर्न आवश्यक लगानी जुटाउन सार्वजनिक-निजी साझेदारी अपरिहार्य हुन आएको छ। सार्वजनिक-निजी साझेदारी मार्फत लगानीको वातावरण तयार गरी त्यसको प्रविधियुक्त व्यवस्थापनबाट यस अवधारणालाई अगाडि बढाउन जरूरी छ। सार्वजनिक लगानीलाई मुख्यतया: आर्थिक विकासको पूर्वशर्तको रूपमा रहेको आधारभूत सेवा प्रदान गर्न विशेषतः केन्द्रित गरिनेछ। निजी क्षेत्र एकलैले लगानी गर्न नसक्ने अवस्थामा सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रको सहकार्य, साझेदारी र सहभागिताका आधारमा लगानी जुटाई थप स्रोत व्यवस्थापन गरिनेछ।

संघीयतामा तीन तहका सरकारकाबीचमा स्रोतको बाँडफाँट तथा हस्तान्तरण गरिने हुँदा लगानीको स्रोतको व्यवस्थापनका लागि अन्तर-सरकार तथा निजी क्षेत्र समेतको साझेदारीमा आयोजना कार्यान्वयन गर्न आवश्यक हुन्छ। तीन तहका सरकारले सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रसँगको सहकार्य, साझेदारी र सहभागितालाई उच्च प्राथमिकता दिनुपर्नेछ। सार्वजनिक-निजी साझेदारीको लगानीलाई भौतिक तथा शहरी पूर्वाधार निर्माण तथा सञ्चालन, सेवा क्षेत्र व्यवस्थापन, कृषि तथा वन र औद्योगिकीकरणमा प्राथमिकता दिइनेछ। साथै, जलविद्युत, सिँचाई, सतह, हवाई र जल यातायात, सूचना महामार्ग र प्रविधि पूर्वाधारको क्षेत्रमा पनि सार्वजनिक-निजी साझेदारीको लगानीबाट आयोजनाको विकास तथा निर्माण गर्न सकिनेछ। सार्वजनिक-निजी साझेदारीसम्बन्धी स्पष्ट नीतिगत व्यवस्था सहित संस्थागत संरचना निर्माण गरी कार्यान्वयनका क्षेत्रमा स्वदेशी निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहित गरिनेछ। ठूला पूर्वाधार तथा बृहत् उत्पादनका क्षेत्रमा स्वदेशी लगानीकर्तासँग साझेदारी गर्नेगरी प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानीलाई आकर्षित गरिनेछ। निजी क्षेत्रको ज्ञान, प्रविधि, व्यवस्थापकीय सीप र कुशलताका साथै जोखिम वहन गर्नसक्ने क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ।

पूर्वाधार निर्माणका क्रममा राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा सफल अभ्यासको अनुशरण र उपयोगबाट क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।

## २. प्रमुख समस्या

विकासका लागि मुलुकमा वित्तीय स्रोतको कमी हुनु, सार्वजनिक र निजी क्षेत्रबीचमा आकर्षण हुन नसक्नु प्रमुख समस्याको रूपमा रहेको छ । यसका अतिरिक्त सार्वजनिक-निजी साझेदारी सम्बन्धित कानुनी एवम् नीतिगत संरचना पर्याप्त नहुनु, नीतिगत स्थायित्व नहुनु, एकद्वार प्रणालीको कमजोर कार्यान्वयन हुनु, प्रक्रियागत ढिलाई हुनु प्रमुख समस्या रहेका छन् । सम्बन्धित निकायबीच समन्वयमा कमी र विदेशी मुद्रा विनिमय लगायतका जोखिम रहनु र सरकार र निजी क्षेत्रबीचका लाभ, लागत, जोखिम र प्रतिफलको बाँडफाँट लगायत लगानीमैत्री वातावरणमा यथेष्ट सुधार हुन नसक्नु समेत समस्याका रूपमा रहेका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

राष्ट्रले अंगीकार गरेका विकास लक्ष्य र उद्देश्य हासिल गर्न उल्लेख्य रूपमा थप लगानीको परिचालन गर्नका लागि लगानीको उचित वातावरण सिर्जना गर्नु, व्यवसाय सञ्चालनमा सहजता र कुशलता कायम गर्नु र लगानी सुरक्षाको प्रत्याभूति दिई आर्थिक विकासमा परिचालन गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण छ । निजी क्षेत्रको विद्यमान स्रोत साधन, श्रम, सीप, प्रविधि, व्यावसायिक क्षमताको अधिकतम उपयोग गर्ने वातावरण सुनिश्चित गर्नु र पुँजीगत लगानी वृद्धि गर्नु चुनौतीपूर्ण छ ।

संविधानको पूर्ण कार्यान्वयन, संघीयतामा थप वित्तीय लगानीको माग र तीन तहका सरकारहरूका बीचमा सहकार्य प्रमुख अवसरको रूपमा रहेका छन् । विकासमा निजी क्षेत्रको भूमिका अभिवृद्धि गर्न सरकार र निजी क्षेत्र बीचको सहकार्यद्वारा सामाजिक आर्थिक रूपान्तरणको अवसर प्राप्त भएको छ । विकासका गतिविधिहरूमा निजी क्षेत्रलाई आकर्षण गर्ने लगानीमैत्री वातावरणको सिर्जना गरी लगानी सुरक्षाको प्रत्याभूति र तीव्र रूपमा भइरहेको शहरीकरण समेत अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

सार्वजनिक-निजी साझेदारीको माध्यमद्वारा उत्पादनशील र रोजगारमूलक आर्थिक वृद्धि ।

### ४.२ लक्ष्य

सार्वजनिक-निजी साझेदारीको लगानी अभिवृद्धि गरी थप स्रोत एवम् व्यवस्थापकीय सीप परिचालन गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

सार्वजनिक-निजी साझेदारीलाई प्रोत्साहन गरी पूर्वाधार र सेवाका क्षेत्रमा सार्वजनिक-निजी साझेदारी अभिवृद्धि गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. सार्वजनिक-निजी साझेदारीका लागि नीति, कानून र संस्थागत संरचनाको प्रवन्ध गर्ने ।   | <p>१. आयोजना सञ्चालनका लागि आवश्यक पर्ने जग्गा प्राप्ति लगायत अन्य सम्बन्धित कानूनलाई समसामयिक परिमार्जन गरी लगानीमैत्री बनाई सरोकारवाला निकायबीच प्रभावकारी समन्वय संयन्त्र बनाइनेछ ।</p> <p>२. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा सञ्चालन हुने आयोजनाको वर्गीकरण र मापदण्ड (जोखिम बाँडफाँट मापदण्ड सहित) एवम् उपकरण निर्धारण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा सञ्चालन हुने आयोजनाको सहजीकरणका लागि एकल बिन्दु सेवाको स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>४. सार्वजनिक-निजी साझेदारीका आयोजना तीन तहका सरकारबाट कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>५. सार्वजनिक-निजी साझेदारीको प्रभावकारी कार्यान्वयनको लागि संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम सम्बन्धित क्षेत्र र तहमा सञ्चालन गरिनेछ ।</p>  |
| २. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट सार्वजनिक-निजी साझेदारी प्रवर्द्धन गरी लगानीको वृद्धि गर्न लगानी वातावरण र लगानी सुरक्षाको प्रत्याभूति गर्ने । | <p>१. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा सञ्चालन हुने आयोजनाका लागि लगानीकर्ताहरूलाई लगानीको सुरक्षा र उचित प्रतिफलको प्रत्याभूति दिने गरी कार्यविधि तयार गरी आर्थिक वा गैरआर्थिक सुविधा उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>२. सार्वजनिक-निजी साझेदारी तथा निजी लगानी सम्बन्धी अनुकूल वातावरण तयार गरिनेछ ।</p> <p>३. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा सञ्चालन हुने आयोजनाका लागि आन्तरिक एवम् बाह्य ऋण प्रवाहको लागि सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>४. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा आधारित आयोजना विकास, लगानी प्रवर्द्धन तथा आयोजना कार्यान्वयनमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वय गरिनेछ ।</p> <p>५. सार्वजनिक, निजी, सहकारी, समुदाय र नागरिकबीच सहकार्य, समन्वय र साझेदारीलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> <p>६. ठूला पूर्वाधार निर्माणका क्षेत्रमा निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यलाई विशेष महत्त्व दिइनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| ३. सार्वजनिक-निजी साझेदारीको लगानीमा स्वदेशी पुँजी परिचालनलाई प्रोत्साहन गर्ने ।             | १. आयोजनामा संलग्न हुने स्वदेशी बैंक तथा वित्तीय संस्थाको वित्तीय, प्राविधिक, जोखिम वहन गर्न सक्ने क्षमता अभिवृद्धि गर्ने नीतिगत व्यवस्था गरी आवश्यक वित्तीय उपकरण अवलम्बन गरिनेछ ।   |
| ४. राष्ट्रिय आयोजना बैंकबाट सार्वजनिक-निजी साझेदारीका आयोजना कार्यान्वयनमा प्राथमिकता दिने । | १. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा कार्यान्वयन गरिने आयोजनालाई पहिचान गरी विषय क्षेत्रगत योजनाहरूमा समावेश गरिनेछ ।<br>२. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा कार्यान्वयन हुने आयोजनाको विवरण संकलन गरी सोको अध्ययन गरी/गराई आयोजना बैंक मार्फत् प्राथमिकताका आधारमा कार्यान्वयन गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सार्वजनिक-निजी साझेदारी सम्बन्धी कानून तयार भई सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा क्षेत्रगत आयोजना कार्यान्वयनमा आएका हुने र योजना अवधिमा रू. ७ खर्ब ५० अर्ब लगानी भएको हुनेछ ।

#### ५.४ वैदेशिक लगानी

##### १. पृष्ठभूमि

आर्थिक समृद्धि हासिल गर्न तीव्र औद्योगिकीकरणको माध्यमबाट तुलनात्मक लाभ र प्रतिस्पर्धी क्षमता भएका क्षेत्रहरूमा स्वदेशी एवम् विदेशी पुँजी परिचालन गर्नुपर्ने हुन्छ । आन्तरिक पुँजी परिचालन र विदेशी सहायताले मात्र लगानीको आवश्यकता र उपलब्ध स्रोत-साधनबीचको अन्तरलाई पूर्ति गर्ने नदेखिएकोले ठूला परियोजनाहरूमा प्रत्यक्ष विदेशी लगानी परिचालन गर्नु अपरिहार्य छ । सन् २०३० सम्ममा दिगो विकासका लक्ष्य र नेपाल सरकारले लिएको “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली” को लक्ष्य हासिल गर्न पूर्वाधारयुक्त ठूला परियोजनाहरू र प्रविधिको क्षेत्रमा विदेशी लगानी परिचालन गर्नुपर्ने हुन्छ । लगानीसँग सम्बन्धित नीति, कानून एवम् संरचनामा समयानुकूल परिमार्जन, सुविधा सम्पन्न पूर्वाधार निर्माण, प्रक्रियागत सरलीकरण र लगानी सुरक्षाको प्रत्याभूति गरी लगानीमैत्री वातावरण सिर्जना गर्न सकेमा वैदेशिक लगानीकर्ताहरूको रोजाइमा नेपाल पर्न सक्ने सम्भावना रहेको छ ।

विदेशी लगानी तथा प्रविधि हस्तान्तरण सम्बन्धी कानूनको समसामयिक परिमार्जन, बौद्धिक सम्पत्ति र ज्ञानमा आधारित उद्यमशीलता सम्बन्धी कानुनी व्यवस्था, विदेशी लगानीको प्रवेश, लगानीका लागि योग्य परियोजना प्रोफाइल, लगानी सम्बन्धी सूचना चुस्त दुरुस्त गरी विदेशी लगानीको प्रवेश, अनुमति, उद्योग/व्यवसाय दर्ता, सञ्चालन, बहिर्गमन र लगानी तथा मुनाफाको रिपोर्टिङसन सम्मका सेवा सुविधा सरल र सहज प्रक्रियाबाट एकै स्थानबाट उपलब्ध गराउनु, लगानीका संभावित मुलुकसँग द्विपक्षीय लगानी सम्झौता गरी लगानीको सुरक्षा प्रत्याभूति गराउनु अत्यावश्यक छ ।

## २. प्रमुख समस्या

लगानीका प्रशस्त सम्भावना भए तापनि वैदेशिक लगानी कम आकर्षित हुनु, वैदेशिक लगानी सम्बन्धी कानूनको समसामयिक परिमार्जन नहुनु, औद्योगिक पूर्वाधारको विकास कम हुनु, उद्योगहरू छरिएर रहँदा सुरक्षा, सेवा, सुविधा र सहूलियत उपलब्ध गराउन कठिनाई हुनु, पर्याप्त दक्ष जनशक्तिको अभाव हुनु, उद्योग तथा बजार अनुसन्धान र विकास नहुनु, उद्योग र लगानी सम्बन्धी विषय धेरै निकायसँग सम्बन्धित हुँदा अन्तर-निकायगत र नीतिगत समन्वय हुन नसक्नु, अन्तर्राष्ट्रिय वित्त बजारमा पर्याप्त बजारीकरण गर्न नसकिनु र लगानीको सम्भावना भएका मुलुकसँग द्विपक्षीय लगानी संरक्षण सम्झौता हुन नसक्नु प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन् ।

## ३. चुनौती र अवसर

तुलनात्मक लाभ र प्रतिस्पर्धी क्षमता भएका क्षेत्रको पहिचान गरी लगानीयोग्य आयोजना समावेश गरी आयोजना बैंक तयार गर्नु, विश्वव्यापीकरणसँगै अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा आफ्नो प्रतिस्पर्धी क्षमता बढाउनु, व्यापारलाई लगानीसँग आबद्ध गर्नु, परिवहन सुविधाको सीमित उपलब्धता हुनु, सूचना प्रविधिमा आएको तीव्र विकास र परिवर्तनसँगै अद्यावधिक हुनु, समय अनुकूल प्रविधिमा फड्को मार्नु, बौद्धिक सम्पत्तिको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता प्राप्त हुने गरी सुविधा सम्पन्न प्रयोगशालाको निर्माण र एन्क्रिडिटेसन, आधुनिक र सुविधा सम्पन्न पूर्वाधार विकास गर्नु, उदीयमान दुई ठूला अर्थतन्त्रमा आफ्नो बजार विस्तार गर्नु, दक्ष जनशक्ति उपलब्ध गराउनु, लगानीको लागि पुँजीको सुनिश्चितता हुनु, औद्योगिक श्रम सम्बन्धलाई व्यवस्थापन गर्नु, बहुपक्षीय व्यापार सम्झौताबाट सिर्जित अवसरहरूको उपयोग गर्न लगानी आकर्षित गर्नु जस्ता विषय चुनौतीका रूपमा रहेका छन् ।

खुल्ला र आर्थिक उदारीकरणसँगै नेपाल विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय र क्षेत्रीय संगठनको सदस्य रहनु, साना, मझौला तथा ठूला सबै प्रकारका उद्योगको सम्भावना रहनु, लामो राजनीतिक संक्रमणको व्यवस्थापनसँगै आर्थिक समृद्धिको विषय सबैको साझा एजेण्डाको रूपमा अगाडि बढनु, लगानीमैत्री वातावरण सृजना गर्न नीतिगत, कानुनी, संरचनागत तथा प्रक्रियागत सुधारको सुरुआत हुनु, औद्योगिक पूर्वाधारको निर्माण भइरहनु, तीव्र रूपमा आर्थिक विकास भइरहेका र धेरै जनसंख्या भएका दुई ठूला मुलुकबीचको रणनीतिक भौगोलिक अवस्थिति हुनु, जनसंख्याको ठूलो हिस्सा काम गर्ने उमेरको युवा जनशक्ति रहनु र अनुकूल हावापानी विदेशी लगानी आकर्षित गर्ने अवसर हुनु ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

वैदेशिक लगानी परिचालन मार्फत् प्रतिस्पर्धी एवम् गतिशील राष्ट्रिय अर्थतन्त्र निर्माण ।

### ४.२ लक्ष्य

वैदेशिक लगानीको आकर्षण र अभिवृद्धि गरी उत्पादन, उत्पादकत्व, प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकास गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. नेपालमा भित्रिने प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानीलाई उच्च र दिगो बनाउनु ।
२. वैदेशिक लगानीको माध्यमबाट पुँजी, प्रविधि, प्राविधिक सीप तथा व्यवस्थापकीय कौशल भित्र्याउनु ।
३. उपयोगमा नआएका प्राकृतिक स्रोतको उपयोग र पूर्वाधार विकास गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्न आवश्यक कानुनी, संरचनागत तथा प्रक्रियागत सुधार र सरलीकरण गरी लगानीमैत्री वातावरण सिर्जना गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. वैदेशिक लगानीसँग सम्बन्धित कानून समसामयिक संशोधन तथा परिमार्जन गरिनेछ ।</li> <li>२. वैदेशिक लगानी प्रक्रियालाई प्रविधिमैत्री बनाउनका लागि कम्पनी रजिष्टार कार्यालय र उद्योग विभागमा शुरु गरिएको अनलाईन प्रणालीलाई पूर्ण स्वचालित बनाइनेछ ।</li> <li>३. विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, अन्तरदेशीय अर्थिक क्षेत्र र औद्योगिक क्लष्टरको निर्माण गर्नुका साथै उक्त क्षेत्रमा उद्योग स्थापना गर्न प्राथमिकता र प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> <li>४. विशेष आर्थिक क्षेत्र, निर्यात प्रवर्द्धन गृह, औद्योगिक क्लष्टर र औद्योगिक क्षेत्रमा औद्योगिक पूर्वाधार (सडक, विद्युत, पानी, बैंक र बिमा सेवा) लगायतका आवश्यक सेवा उपलब्ध गराइनेछ ।</li> <li>५. वैदेशिक लगानी सम्बन्धी कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>६. वैदेशिक लगानी सम्बन्धी नेपालको अवस्था देखाउने गरी राष्ट्रिय क्रेडिट रेटिङ (Sovereign Credit Rating) गरिनेछ ।</li> </ol> |
| २. तुलनात्मक लाभ, उत्पादनमूलक तथा रोजगारमूलक क्षेत्रमा लगानी आकर्षित गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त उद्योग, उत्पादनमूलक उद्योग एवम् रोजगारमूलक उद्योगमा वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्न प्रोत्साहन, सुविधा तथा सहूलियत उपलब्ध गराइनेछ ।</li> <li>२. तुलनात्मक लाभ तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता भएका वस्तु र सेवाको उत्पादनलाई प्राथमिकता दिइनेछ ।</li> <li>३. उल्लेख्य परिमाणमा आयात भइरहेका वस्तु तथा सेवा नेपालमै उत्पादन गर्न त्यस्ता वस्तु तथा सेवा उत्पादक अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त उत्पादक कम्पनीको लगानी आकर्षित गरिनेछ ।</li> </ol>  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ३. स्थानीय स्रोत-साधन र सीपको उपयोग तथा प्रादेशिक सन्तुलन कायम हुने गरी प्राथमिकताका क्षेत्रमा वैदेशिक लगानी परिचालन गर्ने । | १. प्रविधि हस्तान्तरण, प्रविधिक सीप एवम् व्यवस्थापकीय कार्य कौशलताको प्रवर्द्धन र प्रोत्साहन गरिनेछ ।<br>२. वैदेशिक लगानीलाई ठूला पूर्वाधार परियोजना र प्रविधिको क्षेत्रमा केन्द्रित गरिनेछ ।<br>३. वैदेशिक लगानीका क्षेत्रहरूको पहिचान गर्न तुलनात्मक लाभका आधारमा अध्ययन तथा अनुसन्धान गरिनेछ ।  |
| ४. वैदेशिक लगानी परिचालनको लागि आर्थिक कूटनीतिलाई उपयोग गर्ने ।  | १. वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्न आर्थिक कूटनीति एवम् विदेशस्थित नेपाली नियोगको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाई परिचालन गरिनेछ ।<br>२. विदेशी लगानीको प्रवर्द्धनको लागि लगानीको स्रोत मुलुकमा लगानीकर्तासँग अन्तर्क्रिया तथा छलफल आयोजना गरी लगानी आकर्षित गरिनेछ ।<br>३. वैदेशिक लगानीका सम्भावना भएका मुलुकसँग द्विपक्षीय लगानी सम्झौता तथा दोहोरो कर मुक्ति सम्झौता गरी लगानी सुरक्षाको प्रत्याभूति दिइनेछ ।<br>४. वैदेशिक लगानी भित्र्याउन विश्वभर छरिएर रहेका गैरआवासीय नेपाली तथा लगानीदूतको परिचालन गरिनेछ । |
| ५. लगानीको प्रवेश, अनुमति, सञ्चालन, बहिर्गमन सम्मका सेवा र सुविधा सरल र सहज तरिकाले एकै स्थानबाट उपलब्ध गराउने ।             | १. विदेशी लगानीलाई धितोपत्रको दोश्रो बजार खुल्ला गर्दै लगिनेछ ।<br>२. लगानीकर्तालाई सहजीकरण गर्न लगानी सहजीकरण केन्द्रको स्थापना गरिनेछ।<br>३. वैदेशिक लगानी प्रशासनलाई सरल एवम् सहज बनाउन एकल बिन्दु सेवा केन्द्र स्थापना गरी सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।<br>४. वैदेशिक लगानीको प्रतिफल लैजाने सहज वातावरण सिर्जना गरिनेछ ।  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा रू. २६० अर्ब वैदेशिक लगानी भएको हुनेछ। विदेशी लगानीमैत्री कानूनको संशोधन, परिमार्जन तथा नयाँ ऐन तर्जुमा भई उत्पादनमूलक र तुलनात्मक लाभ तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता भएका क्षेत्रमा उल्लेख्य मात्रामा वैदेशिक लगानी वृद्धि भएको हुनेछ। वैदेशिक लगानीसँगै औद्योगिक क्षेत्रमा उच्चस्तरीय प्रविधि, प्राविधिक सीप, व्यावसायिक कौशल तथा नवप्रवर्तन हस्तान्तरण भएको हुनेछ। एकल बिन्दु सेवा सञ्चालन केन्द्रको स्थापना र सञ्चालन हुनेछ। लगानीको सम्भावना भएका विभिन्न मुलुकसँग द्विपक्षीय लगानी सम्झौता भएको हुनेछ।

## ५.५ विप्रेषण

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले वैदेशिक रोजगारीबाट आर्जन भएको पुँजी, सीप, प्रविधि र अनुभवलाई स्वदेशमा उत्पादनमूलक क्षेत्रमा लगाउन प्रोत्साहन गर्ने नीति अंगीकार गरेको छ। श्रम आप्रवासनबाट मौद्रिक विप्रेषण मात्र नभई सामाजिक पुँजीको रूपमा सीप, प्रविधि र अनुभवलाई पनि आर्थिक-सामाजिक विकासमा उपयोग गर्ने गरी वैदेशिक रोजगार नीति र राष्ट्रिय रोजगार नीति कार्यान्वयनमा आएका छन्। विप्रेषण आयलाई बचत गरी पुँजी निर्माण गर्न, रोजगारी सिर्जना गर्न, उत्पादन र उत्पादकत्व बढाई राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा योगदान दिने गरी उपयोग गर्न सकिन्छ। विप्रेषणले अर्थतन्त्रमा पार्ने प्रभाव यसको उपयोग प्रवृत्तिमा निर्भर रहन्छ।

आर्थिक नीतिमा विश्वव्यापी रूपमा भएको परिवर्तन र नेपालले अंगीकार गरेको खुला अर्थव्यवस्थाको परिणाम स्वरूप वैदेशिक रोजगारीका लागि नेपालीहरू अन्तर्राष्ट्रिय श्रम बजारमा प्रवेश गर्ने क्रम बढेको हो। फलतः विगत दुई दशकदेखि श्रम आप्रवासन दर तीव्र रूपमा वृद्धि भई विप्रेषण आप्रवाह उल्लेख्य रूपमा वृद्धि भएको छ। एकातर्फ, विप्रेषण आप्रवाहले न्यून र न्यून-मध्यम आयस्तर भएका परिवारको आय वृद्धि भई गरिबी निवारण र आर्थिक-सामाजिक विकासमा सकारात्मक प्रभाव पारेको छ। अर्कोतर्फ, राष्ट्रिय उत्पादन वृद्धिमा नकारात्मक असर परी कृषि वस्तुका साथै अनुत्पादक वस्तुको आयात वृद्धि भई व्यापार असन्तुलन बढ्दै गएको छ। विप्रेषण आप्रवाहले बाह्य क्षेत्र सन्तुलनमा सकारात्मक योगदान दिएको छ तर विप्रेषण आयलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा उपयोग गर्न सरकारी प्रयास त्यति सफल हुन सकिरहेको छैन।

गत आ.व. २०७४/७५ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँगको विप्रेषण आयको अनुपात २५.१ प्रतिशत र कुल विप्रेषण आप्रवाह रु. ७५५ अर्ब रहेको थियो। दक्षिण एसियामा विप्रेषण पठाउने औसत लागत ५.२३ प्रतिशत रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

विप्रेषण आयको उल्लेख्य हिस्सा अनौपचारिक माध्यमबाट भित्रिनु, उपभोगमुखी प्रवृत्ति बढ्दै जानु, विप्रेषण आयलाई उत्पादनशील क्षेत्रको लगानीमा रूपान्तरण गर्न नसकिनु, विप्रेषण आय प्राप्त गर्न सहज बैंकिंग पहुँच विस्तार गर्न नसकिनु र विप्रेषण आयका कारण आयात वृद्धि भई व्यापार घाटा बढ्दै जानु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

विलासी तथा अनुत्पादक उपभोग प्रवृत्ति निरूत्साहित गरी विप्रेषण आयको उल्लेख्य अंश बचत गर्नु, विप्रेषणबाट पुँजी निर्माण गर्न सह-लगानी र साझेदारी लगानीको मोडेल विकास गर्नु, औपचारिक बैंकिंग प्रणाली मार्फत विप्रेषण भित्र्याउनु, विप्रेषण आयबाट उपभोगमा भएको बढोत्तरीसँगै बाह्य सन्तुलनमा परेको दबाव कम गर्नु, वैदेशिक रोजगारीमा जाने व्यक्तिको क्षमता र दक्षता एवम् सीप बढाई विप्रेषण आयमा वृद्धि गर्नु र विप्रेषण लागत कम गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

विप्रेषण आयको माध्यमबाट आन्तरिक उत्पादन तथा उत्पादकत्व बढाउन उपयोगी हुने अवस्था रहनु, विदेशी मुद्रा संचितिमा विप्रेषणले सकारात्मक योगदान गर्ने स्थिति रहनु, विप्रेषण आय गरिबी निवारण र मानव विकासमा सहयोगी हुनु र विप्रेषण प्राप्त गर्ने परिवारको जीवनस्तर सुधार हुनु अवसर रहेका छन्।

#### ४. दीर्घकालीन सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

विप्रेषण आयको दिगो र उत्पादनमूलक उपयोगबाट गरिबी निवारण र आर्थिक समृद्धि।

##### ४.२ लक्ष्य

विप्रेषण आयलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा उपयोग गरी तीव्र आर्थिक वृद्धि र आन्तरिक रोजगार अभिवृद्धिमा सहयोग पुऱ्याउने।

##### ४.३ उद्देश्य

१. विप्रेषण आयलाई अधिकतम बचत गरी उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी वृद्धि गर्नु।
२. विप्रेषण आयलाई औपचारिक बैकिङ्ग प्रणाली मार्फत भित्र्याउनु।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. विप्रेषण आयको महत्तम बचत गरी पुँजी निर्माण गर्न नीतिगत तथा संस्थागत व्यवस्था गरी प्रवर्द्धनात्मक र सचेतनामूलक कार्य गर्ने। | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विप्रेषण आयलाई बचत तथा लगानीमा रूपान्तरण गर्न सह-लगानी तथा साझेदारी लगानीका क्षेत्रहरूको पहिचान गरिनेछ।</li> <li>२. विप्रेषण आयको उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी बढाउन विप्रेषण बन्डको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ।</li> <li>३. विप्रेषण सेवाप्रदायक बैंक तथा वित्तीय संस्था र मुद्रा कारोबार संस्थासँग रणनीतिक सहकार्य गरी विप्रेषणको उत्पादनशील क्षेत्रमा उपयोग गरिनेछ।</li> <li>४. वैदेशिक रोजगारमा संलग्न परिवारका सदस्यहरूमा वित्तीय साक्षरता तथा वित्तीय पहुँच अभिवृद्धि गरिनेछ।</li> </ol> |
| २. विप्रेषणलाई औपचारिक बैकिङ्ग प्रणाली मार्फत भित्र्याई पुँजीको उपलब्धता बढाउने।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. अनौपचारिक विप्रेषण आप्रवाह कम गरिनेछ।</li> <li>२. विप्रेषण आयको बचतमा प्रिमियम ब्याजदर उपलब्ध गराउन बैंक तथा वित्तीय संस्थालाई प्रोत्साहित गरिनेछ।</li> <li>३. विप्रेषण आय प्राप्त गर्ने परिवार लक्षित उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।</li> <li>४. विप्रेषण आप्रवाह लागत कम गर्न आवश्यक कार्य गरिनेछ।</li> </ol>   |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा रू. ५५ खर्ब ९२ अर्ब विप्रेषण आप्रवाह भएको हुने र योजनाको अन्तिम वर्षमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा विप्रेषणको अनुपात २२.१ प्रतिशत भएको हुनेछ। उत्पादनशील क्षेत्रमा विप्रेषण आयको लगानीमा उच्च वृद्धि भएको हुनेछ।

## ५.६ उद्यमशीलता विकास

### १. पृष्ठभूमि

उद्यमशीलतालाई उत्पादनको महत्वपूर्ण साधन मानिन्छ। खासगरी नवीन व्यवसायहरूको तयारी, स्थापना र सञ्चालनका लागि इच्छाशक्ति र क्षमता अभिवृद्धि गर्न उद्यमशीलता आवश्यक हुन्छ। उद्यमशील संस्कृतिको विकासले नागरिकहरूलाई पेसा व्यवसायप्रति आकर्षित गराई जोखिम वहन गर्न र सिर्जनशील कार्यलाई आर्थिक क्रियाकलापमा आबद्ध गर्न मद्दत गर्दछ। स्थानीय स्तरदेखि नै उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि तथा रोजगारी सिर्जना गरी अर्थतन्त्रलाई गतिशीलता दिन उद्यमशीलता विकास महत्वपूर्ण आयाम हो। नवप्रवर्द्धनात्मक तथा अन्वेषणात्मक वस्तु तथा सेवाको उत्पादन, स्थानीय स्तरमा उपलब्ध श्रम, साधनस्रोत, पुँजी र प्रविधिको उपयोग एवम् सीपमूलक तालिम र वित्तीय पहुँचको विस्तारबाट उद्यमशीलता विकास गर्न सकिन्छ। उद्यमशील जनशक्तिलाई सरकारको तर्फबाट लगानीको वातावरण, विभिन्न किसिमका व्यवसायजन्य कोष तथा व्यवसाय सिर्जना गर्ने केन्द्रहरूको स्थापना र व्यवसाय सञ्चालनको लागि बीउ पुँजी उपलब्ध गराई साना तथा मझौला व्यवसायको थालनी गरिएको पाइन्छ। क्रमशः यस्ता साना उद्योगहरू व्यावसायिक एवम् राष्ट्रिय तथा बहुराष्ट्रिय व्यवसायको रूपमा विकास भएका पनि उदाहरणहरू छन्। नेपालमा पनि स्वरोजगार तथा उद्यमशीलता प्रवर्द्धनबाट उत्पादन र रोजगारी सिर्जना गर्ने रणनीति सरकारले लिएको छ। यसै अनुरूप लघु, घरेलु तथा साना उद्योगहरूको स्थापना तथा सञ्चालन गर्न प्रोत्साहित गर्ने तथा वित्तीय पहुँच बढाउने उद्देश्यले विभिन्न कोषहरूको स्थापना र कर्जा कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिएको छ।

### २. प्रमुख समस्या

उद्यमशील संस्कृतिको कमी, लक्षित समूहको पहिचान हुन नसक्नु, तालिमलाई उद्यमसँग आबद्ध गर्न नसकिनु, सरकारले घोषणा गरेको प्रतिस्पर्धी खुला कोष (Challenge Fund) कार्यान्वयनमा नआउनु, व्यवसाय शुरु गर्न आधार पुँजी (Startup fund) को अपर्याप्तता हुनु, वित्तीय पहुँचको कमी हुनु, व्यवसाय विकास केन्द्र (Business Incubation Center) को स्थापना नहुनु, जोखिम आंकलन गर्ने क्षमताको अभाव हुनु, उत्पादनको मूल्यशृंखलामा उद्यमीको न्यून आबद्धता रहनु, बजारको माग अनुरूप उद्यमशील र नाफामूलक क्षेत्रको पहिचानको कमी हुनु र विश्वव्यापीकरणले सिर्जना गरेका अवसर र नवीन प्रविधि अवलम्बन गर्न नसकिनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

शिक्षालाई व्यावसायिक बनाई युवा पुस्तामा उद्यमशील संस्कृतिको विकास गर्नु, उद्यमीलाई नवीन प्रविधि तथा बजार मूल्यशृंखलासँग आबद्ध गराउनु, सीपमूलक तथा व्यवसायिक तालिमलाई उद्यमशीलतासँग आबद्ध गर्नु, छरिएर रहेका उद्यम विकाससँग सम्बन्धित कार्यक्रमलाई एकीकृत र प्रभावकारी बनाउनु, लघु, घरेलु तथा साना उद्यमीको वित्तीय स्रोतमा पहुँच सुनिश्चित गर्नु, व्यवसायीको जोखिम बहन क्षमता अभिवृद्धि गर्नु, परियोजना प्रस्ताव विश्लेषण र मूल्याङ्कनका आधारमा उत्पादनमूलक उद्योग व्यवसायमा ऋण लगानीका लागि बैंक तथा वित्तीय क्षेत्र अग्रसर नहुनु र व्यवसाय कर्जा सुरक्षण एजेन्सी नहुनु तथा व्यवसाय जोखिम बिमा प्रभावकारी नहुनु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन् ।

संघीयताको कार्यन्वयनसँगै प्रदेश र स्थानीय तहसम्म उद्योग दर्ता तथा उद्यमशीलता र रोजगार सम्बन्धी सेवा तथा नीति, कानून र संस्थागत संरचनाहरूको स्थायी व्यवस्था हुनु, वित्तीय क्षेत्रको विस्तार र दायरा बढ्दै जानु, स्वरोजगारी र आन्तरिक रोजगारी सिर्जना राष्ट्रिय प्राथमिकतामा पर्नु, मुलुकमा सक्रिय उमेरका जनसंख्याको अनुपात वृद्धि हुनु, युवा जनशक्तिको उद्यमप्रतिको आकर्षण बढ्नु, लघु वित्तीय संस्थाहरू स्थानीय स्तरसम्म पुग्नु र यसको दायरा वृद्धि हुँदै जानु, जनस्तरमा स्वरोजगार तथा उद्यम सञ्चालन गर्ने प्रवृत्ति बढ्दै जानु, औद्योगिक पूर्वाधारको विकास र विस्तार हुँदै जानु, निजी क्षेत्रको विस्तार हुनु र अर्थतन्त्रमा साना तथा मझौला उद्योगहरूको योगदान वृद्धि हुँदै जानु उद्यमशीलता विकासका लागि अवसर हुन् ।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

उद्यमशील संस्कृति: उद्यमी जनता ।

#### ४.२ लक्ष्य

सीपको विकास, प्रविधिको उपयोग र स्रोतको परिचालन गरी उद्यमशीलताको विकास गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

१. उद्यमशील र स्वरोजगारमूलक सीपको विकास गर्नु ।
२. नवीनतम र परम्परागत प्रविधिको उपयोग गर्न सक्ने उद्यमशील जनशक्तिको विकास गर्नु ।
३. उपलब्ध स्रोत-साधन, स्थानीय पुँजी र प्रविधिको परिचालन गरी स्वरोजगार र रोजगारीका अवसर वृद्धि गर्दै गरिबी निवारणमा योगदान पुऱ्याउनु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. युवा उद्यमीलाई स्वदेशमा उद्यम गर्न आकर्षित गर्न | १. उद्यमशीलता विकास, नवप्रवर्तन र परम्परागत ज्ञानको उपयोगमा सहयोग पुग्ने गरी विद्यमान नीति तथा कानून परिमार्जन गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| तीनै तहका सरकारमा नीतिगत, संस्थागत, कानुनी तथा प्रक्रियागत सुधार गर्ने ।   | <p>२. नवीन आविष्कारजन्य ज्ञान, सीप र क्षमता सम्बन्धी उद्यम प्रवर्द्धन गर्न तहगत सरकारको सह-लगानीमा बैंक र वित्तीय संस्थाहरू मार्फत सिर्जनशील वित्तीय कोष (Innovative Financing Fund) को स्थापना र प्रतिस्पर्धी खुला कोष (Challenge Fund) को प्रभावकारी उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>३. उद्यमीहरूलाई लगानी तथा कर्जा सुरक्षण (Credit Guarantee) उपलब्ध गराउन आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. उद्यमीहरूको सिर्जनशीलता र नवप्रवर्तनको बौद्धिक सम्पत्ति अधिकार संरक्षणको सुनिश्चितता गरिनेछ ।</p> <p>५. उद्यम-व्यवसाय विकास र स्थापना गर्न सम्भाव्य उद्यमीका लागि व्यवसाय विकास केन्द्र (Business Incubation Center) स्थापना गरी सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>६. गरिबी निवारण कोष, राष्ट्रिय युवा परिषद्, भगत सर्वजीत सीप विकास कार्यक्रम, प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम लगायतका लक्षित कार्यक्रमहरूलाई उद्यमशीलता विकाससँग रणनीतिक आबद्धता गर्न आवश्यक समन्वय गरिनेछ ।</p>  |
| २. निजी, सहकारी एवम् गैरसरकारी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा स्थानीय स्तरका स्रोत-साधन र सीपको पहिचान र विकास गरी परिचालन गर्ने । | <p>१. श्रम गरी विदेशबाट फर्केका नेपालीहरूलाई प्रविधि, विज्ञता र वित्तीय सहयोग गरी उद्योग व्यवसाय स्थापना गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रदेश र स्थानीय तहबाट लक्षित समूहलाई एकीकृत तथा क्रमबद्ध सेवा प्रवाह गरी लघु उद्यम विकासमा प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>३. व्यावसायिक तथा प्राविधिक जनशक्ति विकासमा संलग्न प्रतिष्ठानहरूले युवाहरूलाई व्यवसाय-जोखिम विश्लेषण, परियोजना विकास र लगानीका स्रोतहरू पहिचान गर्न संस्थागत सुदृढीकरण र क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>४. विद्यालय स्तरबाट व्यावहारिक एवम् व्यावसायिक शिक्षाको पाठ्यक्रम राखिनेछ । साथै, उच्च शिक्षा अध्यापन गराउने शैक्षिक संस्थाहरूमा विद्यार्थीहरूलाई उद्यमशीलता विकास गर्न गराउन प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>५. पूर्व-प्राथमिक तहदेखि बालबालिकाको क्षमता पहिचान गरी उद्यमशीलता विकास गर्न निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>६. सूचना तथा सञ्चार प्रविधि, अतिसूक्ष्म प्रविधि (Nano Technology) जस्ता नवीन प्रविधिहरूको अध्ययन तथा अनुसन्धान र प्रयोग गर्न उच्च शिक्षालय र विश्वविद्यालयहरूसँग सहकार्य गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ३. परम्परागत ज्ञान र सीपलाई नवीनतम प्रविधि र उद्योग व्यवसायसँग आबद्ध गर्ने गरी युवा उद्यमशीलता प्रवर्द्धन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>स्थानीय तहमा रहेका महिला तथा युवा समूहहरूलाई उद्यमशील समूहको रूपमा विकास गर्दै लगिनेछ ।</li> <li>महिला उद्यमीहरूको सीप तथा क्षमता विकास गर्न र व्यवसाय स्थापनामा सहयोग गर्न लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>नवप्रवर्तन, सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको प्रयोग र नवीन प्रयोगमूलक व्यवसाय गर्न उद्यमशील प्रतिभाहरूको पहिचान गरिनेछ ।</li> <li>अपाङ्गता भएका व्यक्तिको क्षमता विकास र उद्यमशीलताको प्रवर्द्धनमा प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| ४. लघु, घरेलु तथा साना उद्योगमा उद्यमशीलताको लागि वित्तीय पहुँच र लगानीको वातावरण सिर्जना गर्ने ।                 | <ol style="list-style-type: none"> <li>संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका नीतिहरूमा उद्यमशीलता विकासलाई प्राथमिकतामा राखी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>स्थानीयस्तरमा उपलब्ध स्रोत, साधन र सीपको सम्भाव्यता र बजार मागको आधारमा लघु, घरेलु तथा साना उद्योगको प्रवर्द्धन र विकास गरिनेछ ।</li> <li>परम्परागत सीप र ज्ञान (Traditional Knowledge) को आधुनिकीकरण एवम् स्तरोन्नति गरी स्वदेशी उपज उत्पादन गर्ने कार्यलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> <li>युवा नव-उद्यमीहरूलाई व्यवसाय सुरु गर्न आवश्यक व्यवसाय सुरुआती कोष र व्यवसाय प्रस्तावनाका आधारमा सहुलियतपूर्ण कर्जा, समूह सुरक्षण कर्जा (Group Collateral Loan) जस्ता कर्जा प्रवाह गरी वित्तीय पहुँच सुनिश्चित गर्न बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूसँग सहकार्य गरिनेछ ।</li> <li>बैंक, वित्तीय संस्था तथा लघुवित्त संस्थाहरूबाट क्षेत्रगत रूपमा लघु, घरेलु, साना तथा मझौला उद्योगहरूमा हुने अनिवार्य कर्जा प्रवाहको सीमा निर्धारण गरिनेछ ।</li> <li>उद्यमशीलता प्रवर्द्धनको लागि सरकारबाट उचित सुविधा, अनुदान र सहुलियतको व्यवस्था गरिनेछ ।</li> </ol> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

काम गर्ने उमेर समूहका प्राविधिक र व्यावसायिक क्षेत्रमा तालिम प्राप्त जनसंख्याको हिस्सा ६० प्रतिशत पुगेको हुनेछ । वार्षिक १५ हजार लघु, घरेलु तथा साना उद्योगहरूको स्थापना भई वार्षिक ६० हजार थप रोजगारी तथा स्वरोजगारी सिर्जना भएको हुनेछ । बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूबाट लघु, घरेलु, साना र मझौला उद्योगहरूमा प्रवाह हुने कर्जामा उल्लेख्य वृद्धि भएको हुनेछ । प्रत्येक प्रदेशमा १/१ वटा बिजनेस इन्कुबेसन सेन्टरको स्थापना, चुनौती कोषको परिचालन, सिर्जनशील वित्तीय कोष (Innovative Financing Fund) को स्थापना र कर्जा सुरक्षण आरम्भ भएको हुनेछ ।

## परिच्छेद – ६

# आर्थिक क्षेत्र

### ६.१ कृषि तथा प्राकृतिक स्रोत

#### ६.१.१ कृषि

##### १. पृष्ठभूमि

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा २७ प्रतिशत योगदान रहेको र ६०.४ प्रतिशत जनसंख्या आबद्ध भएको कृषि क्षेत्र आर्थिक समृद्धि हासिल गर्ने मूल आधार हो। उच्च र समावेशी आर्थिक वृद्धिमा योगदान पुऱ्याउने क्षेत्र भएकोले यसको वैज्ञानिक ढङ्गले सुधार तथा रूपान्तरण गर्ने विगतका प्रयासलाई सघन बनाई उत्पादन र उत्पादकत्वमा वृद्धि गर्नुपर्ने हुन्छ।

नेपालको संविधानले खाद्यसम्बन्धी अधिकारलाई मौलिक हकका रूपमा प्रत्याभूत गरेको छ। यसै सन्दर्भमा विभिन्न कारणले उत्पन्न हुनसक्ने खाद्य तथा पोषण सङ्कटको अवस्थालाई मध्यनजर गर्दै प्रमुख खाद्यान्न, फलफूल, तरकारी र माछामासु उत्पादनमा आत्मनिर्भरताका लागि कृषिमा नीतिगत, संरचनागत र संस्थागत सुधारको आवश्यकता छ। देशलाई खाद्य सम्प्रभु तुल्याउन र स्वाधीन अर्थतन्त्रको विकास गर्न कृषि क्षेत्रमा उल्लेख्य मात्रामा लगानी बढाउन आवश्यक छ। नेपालको संविधानका अधिकार सूची, कृषि क्षेत्रको समग्र विकासका लागि मार्गचित्रको रूपमा रहेको कृषि विकास रणनीति (सन् २०१५ - २०३५) र दिगो विकास लक्ष्यलाई मार्गदर्शनको रूपमा लिइएको छ। उक्त रणनीतिले कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादनको व्यावसायीकरण, यान्त्रिकीकरण र विविधीकरण गरी यस क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धी बनाउन जोड दिएको छ। यसैगरी दिगो विकास लक्ष्यले लिएको भोकमरीको अन्त्य गर्ने, खाद्य सुरक्षा तथा पोषण सुनिश्चित गर्ने तथा दिगो कृषिको प्रवर्द्धन गर्ने लक्ष्य हासिल गर्ने गरी यस क्षेत्रमा स्रोत र साधनको परिचालन गरिनेछ। विशेषतः कृषि क्षेत्रको औद्योगीकरणका माध्यमबाट थप रोजगारी सिर्जना गरी आय-आर्जन, गरीबी निवारण तथा आयात व्यवस्थापनलाई समेत सम्बोधन गरिनेछ। संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको लगानीलाई कृषि क्षेत्रको समग्र विकासमा परिचालन गरिनेछ।

##### २. प्रमुख समस्या

कृषि उत्पादकत्व वृद्धि गर्न अपरिहार्य स्रोत-साधन र सामग्रीहरूको न्यून उपलब्धता, आवश्यक भौतिक पूर्वाधारहरू जस्तै सिँचाई, सडक, कृषि बजार, शीत भण्डार, गोदाम घर, चिस्यान केन्द्र, संकलन केन्द्र तथा बिजुली आदिको अपर्याप्तता मूल समस्याका रूपमा देखिएका छन्। कृषिजन्य उत्पादनमा आशातीत उपलब्धि हासिल गर्न

अत्यावश्यक उन्नत नश्ल तथा बीउको प्रतिस्थापन दर पनि अत्यन्तै कम छ । यसको अतिरिक्त जमिनको तीव्र खण्डीकरण प्रमुख समस्याको रूपमा रहेको छ ।

अनुसन्धानबाट विकास भएका प्रविधि पर्याप्त मात्रामा विस्तार नहुनु, वैज्ञानिक जनशक्ति व्यवस्थापन कमजोर हुनु, अनुसन्धानको लागि प्रयोगशाला लगायत अन्य पूर्वाधारहरूको कमी हुनुले कृषिको आधुनिकीकरण, यान्त्रिकीकरण, व्यवसायीकरण तथा औद्योगिकीकरणमा थप बाधा पुगेको छ । यसले गर्दा भूमि तथा श्रमशक्तिको उत्पादकत्व निकै न्यून रहेको छ । फलस्वरूप, देशमा खाद्यान्नको आयात अपेक्षित रूपमा घट्न सकेको छैन । उत्पादित खाद्यवस्तुहरू पनि समुचित भण्डारण, प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धि गरी प्रतिफल यथोचित रूपमा बढाउन सकिएको छैन । जलवायु परिवर्तनबाट यस क्षेत्रमा पर्न गएको प्रभावलाई कम गर्न अनुकूलनको माध्यमबाट जलवायु उत्थानशील तथा वातावरणमैत्री कृषि प्रणालीको विकास गर्न पनि समस्या रहेको छ ।

व्यावसायिक पकेट क्षेत्रहरूमा अनियन्त्रित र असन्तुलित रूपमा जीवनाशक विषादी, एण्टिबायोटिक्स तथा रासायनिक पदार्थको प्रयोगले मानव तथा वातावरणीय स्वास्थ्यमा असर पुगेको छ । खाद्य स्वच्छता, खाद्य पदार्थहरूमा पौष्टिक तत्वहरूको स्रोत र उचित उपयोगबारे चेतना र ज्ञानको कमीले गर्दा स्वस्थकर खानपान तथा सोको लागि व्यवहार परिवर्तन गर्न कठिनाई देखिएको छ । साथै, खाद्यवस्तुको गुणस्तर नियमन प्रणाली पनि कमजोर रहेको छ ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

कृषि उत्पादकत्व वृद्धि गर्न अपरिहार्य स्रोत-साधन र सामग्रीहरूको न्यून उपलब्धता, आवश्यक भौतिक पूर्वाधारहरू जस्तै सिँचाई, सडक, कृषि बजार, शीत भण्डार, गोदाम घर, चिस्यान केन्द्र, संकलन केन्द्र तथा बिजुली आदिको अपर्याप्तता मूल समस्याका रूपमा देखिएका छन् । कृषिजन्य उत्पादनमा आशातीत उपलब्धि हासिल गर्न अत्यावश्यक उन्नत नश्ल तथा बीउको प्रतिस्थापन दर पनि अत्यन्तै कम छ । यसको अतिरिक्त जमिनको तीव्र खण्डीकरण प्रमुख समस्याको रूपमा रहेको छ ।

अनुसन्धानबाट विकास भएका प्रविधि पर्याप्त मात्रामा विस्तार नहुनु, वैज्ञानिक जनशक्ति व्यवस्थापन कमजोर हुनु, अनुसन्धानको लागि प्रयोगशाला लगायत अन्य पूर्वाधारहरूको कमी हुनुले कृषिको आधुनिकीकरण, यान्त्रिकीकरण, व्यवसायीकरण तथा औद्योगिकीकरणमा थप बाधा पुगेको छ । यसले गर्दा भूमि तथा श्रमशक्तिको उत्पादकत्व निकै न्यून रहेको छ । फलस्वरूप, देशमा खाद्यान्नको आयात अपेक्षित रूपमा घट्न सकेको छैन । उत्पादित खाद्यवस्तुहरू पनि समुचित भण्डारण, प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धि गरी प्रतिफल यथोचित रूपमा बढाउन सकिएको छैन । जलवायु परिवर्तनबाट यस क्षेत्रमा पर्न गएको प्रभावलाई कम गर्न अनुकूलनको माध्यमबाट जलवायु उत्थानशील तथा वातावरणमैत्री कृषि प्रणालीको विकास गर्न पनि समस्या रहेको छ ।

व्यावसायिक पकेट क्षेत्रहरूमा अनियन्त्रित र असन्तुलित रूपमा जीवनाशक विषादी, एण्टिबायोटिक्स तथा रासायनिक पदार्थको प्रयोगले मानव तथा वातावरणीय स्वास्थ्यमा असर पुगेको छ । खाद्य स्वच्छता, खाद्य पदार्थहरूमा

पौष्टिक तत्वहरूको स्रोत र उचित उपयोगबारे चेतना र ज्ञानको कमीले गर्दा स्वस्थकर खानपान तथा सोको लागि व्यवहार परिवर्तन गर्न कठिनाई देखिएको छ । साथै, खाद्यवस्तुको गुणस्तर नियमन प्रणाली पनि कमजोर रहेको छ ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

खाद्य र पोषण सुरक्षा तथा खाद्य संप्रभुता सहितको दिगो, प्रतिस्पर्धी एवम् समृद्ध कृषि अर्थतन्त्र ।

##### ४.२ लक्ष्य

प्रतिस्पर्धी, जलवायु अनुकूल, आत्मनिर्भर एवम् निर्यातमुखी उद्योगको रूपमा कृषिक्षेत्रलाई रूपान्तरण गर्दै समावेशी र दिगो आर्थिक वृद्धि हासिल गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. कृषि क्षेत्रको उत्पादन तथा उत्पादकत्वको वृद्धि गरी खाद्य तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित गर्नु ।
२. कृषिमा आधारित उद्योगको विकास गरी रोजगारी र आमदानी वृद्धि गर्नु ।
३. व्यवसायीकरण तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकास गरी कृषि क्षेत्रको व्यापार सन्तुलन गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. संघ, प्रदेश र स्थानीय तह तथा सम्बन्धित सरोकारवालासँगको समन्वय तथा सहकार्यमा कृषि सम्बन्धी नीति, कानून तथा योजना निर्माण गरी कृषिको उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने ।          | १. संघीय प्रादेशिक र स्थानीय तहको कृषि अनुसन्धान र विकासमा क्षमता वृद्धि गरिनेछ ।<br>२. संघीय, प्रादेशिक र स्थानीय प्राथमिकता तथा नीति, कानून र योजना निर्माणमा दोहोरोपना नहुने गरी समन्वय र सहजीकरण गर्ने संयन्त्र विकास गरिनेछ ।<br>३. संघीय संरचनामा कृषि तथा पशु सेवा प्रसारको तीनै तहका लागि उपयुक्त मोडेल तयार गर्न नीतिगत, संरचनागत तथा मानव संसाधन व्यवस्थापनमा सुधार गरिनेछ ।  |
| २. कृषि क्षेत्रको उत्पादकत्व वृद्धि गर्न शिक्षा, अनुसन्धान र प्रसार पद्धतिलाई एकीकृत गर्दै प्रभावकारी बनाउने र गुणस्तरीय उत्पादन सामग्री तथा सेवाको उपलब्धताको सुनिश्चितता गर्ने । | १. समस्या समाधानमा केन्द्रित र प्रविधि उत्पादन गर्ने प्रमुख थलोको रूपमा विकास गर्न कृषि अनुसन्धानलाई साधन र स्रोत सम्पन्न बनाइनेछ । अनुसन्धानको संरचनालाई प्रभावकारी बनाउन समसामयिक नीति एवम् कानून संशोधन गर्नुका साथै तत्सम्बन्धी अध्ययन र अनुसन्धान गर्न कृषि नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठानको स्थापना गरिनेछ ।<br>२. कृषि शिक्षा, अनुसन्धान र प्रसारलाई प्रभावकारी बनाउन नेपाल कृषि अनुसन्धान परिषद्को अगुवाईमा मानित विश्वविद्यालयको स्थापना गरिनेछ । |

| रणनीति | कार्यनीति   |
|--------|---|
|        | <p>३. प्रमुख स्थानहरूमा आवश्यकताका आधारमा रासायनिक मलको ब्लेण्डिङ कारखाना स्थापना गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>४. कृषिलाई जीवन पद्धतिको रूपमा स्थापित गर्न कृषि शिक्षालाई विद्यालयस्तरदेखि नै समाहित गरी कृषि पेसालाई आकर्षित र मर्यादित बनाइनेछ । कृषकहरूलाई उत्पादन सामग्री र प्राविधिक सेवा स्थानीय स्तरमा नै आपूर्ति गर्न मौजुदा कृषि ज्ञान केन्द्र र भेटेरीनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्रलाई एकीकृत कृषि तथा पशुपन्छी ज्ञान केन्द्रको रूपमा रूपान्तरण गरी स्थानीय तहका जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि गर्दै कृषकहरूलाई सेवा र सुविधा उपलब्ध गराइनेछ । साथै, कृषि सामग्री आपूर्ति, कृषि अनुसन्धान, कृषि प्रसार, कृषि शिक्षा, कृषि ऋण, कृषि बिमा जस्ता उत्पादनका अपरिहार्य तत्वहरू यसै थलोबाट उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>५. बीउबिजन क्षेत्रको दीर्घकालीन सोचले परिलक्षित गरे अनुरूप अनुसन्धान, निजी क्षेत्र तथा कृषकहरूको क्षमता अभिवृद्धिका माध्यमबाट उन्नत तथा वर्णसंकर जातको विकास गरी बालीहरूको बीउ प्रतिस्थापन दरमा उल्लेख्य वृद्धि गर्दै आत्मनिर्भर उन्मुख बनाइनेछ । साथै दुध, अण्डा तथा मासुको उपलब्धता बढाउन नश्ल सुधार कार्यक्रमलाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ । सरकारी कृषि फर्म तथा केन्द्रहरूमा उपयोगमा ल्याउन नसकिएको जमिन बीउ, बेर्ना, भूरा उत्पादन तथा नश्ल सुधार कार्यमा उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>६. कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रहरूमा सम्भाव्यता र आवश्यकताको आधारमा कृषि यान्त्रिकीकरणलाई निजी क्षेत्र तथा सहकारीसँगको सहकार्यमा उत्पादन, सुधार तथा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>७. निजी तथा सहकारी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा स्वदेशमा नै उत्पादन गर्ने प्राथमिकतासहित गुणस्तरीय कृषि सामग्रीको उपलब्धता सुनिश्चिता गरिनेछ ।</p> <p>८. कृषिको व्यवसायीकरणका लागि भूमिको उपलब्धताको सुनिश्चिता गरिनुका साथै करार, समूह वा सहकारी खेतीका लागि एकीकृत भूमि व्यवस्थापन प्रणालीलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>९. देशभित्र उत्पादन भएका खाद्यान्नहरूको उपलब्धता सुनिश्चित गर्न तथा प्रतिएकाइ प्रतिफल अभिवृद्धि गर्न उत्पादनोपरान्त भण्डारण, प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>१०. समग्र कृषि क्षेत्रको तथ्याङ्क संकलन, विश्लेषण तथा प्रकाशनलाई भरपर्दो एवम् विश्वसनीय बनाइनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| <p>३. कृषिमा निजी क्षेत्रको लगानी वृद्धिको उचित वातावरण सिर्जना गर्न नीति तथा संरचनागत सुधार र कार्यक्रमगत सहयोग तथा सहजीकरण गर्ने ।</p>  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. बजार सूचनाको एकीकृत केन्द्र र बजार सूचना प्रणाली स्थापना तथा सञ्चालन गरी सम्भाव्य क्षेत्रमा निजी र सहकारीलाई बजारीकरणमा संलग्न गर्ने विषयमा प्राथमिकता दिइनेछ ।</li> <li>२. कृषि उत्पादनको अग्र एवम् पृष्ठ सम्बन्धको आधार तयार गरी सहकारी तथा निजी क्षेत्रको संलग्नतामा कृषि प्रशोधन तथा अन्य कृषिजन्य उद्योग स्थापना तथा विस्तारमा वित्तीय उत्प्रेरणा दिइनेछ ।</li> <li>३. कृषिजन्य वस्तुको उत्पादन र उत्पादित वस्तुको निर्यातलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</li> <li>४. कृषि क्षेत्रमा लगानी वृद्धि गर्न सहूलियतपूर्ण दरमा कर्जा लगानी गरिनेछ ।</li> <li>५. कृषि उत्पादनको उपभोग बढाउन कर प्रणालीबाट राष्ट्रिय उत्पादनको संरक्षण प्रदान गरिनेछ । साथै, खास खास बाली र वस्तुमा न्यूनतम समर्थन मूल्य तोकी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>६. कृषि उत्पादन, प्रशोधन, भण्डारण तथा बजारीकरण प्रक्रियामा आवश्यक ऋणको व्यवस्था र बिमा सेवाको विस्तार गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| <p>४. कृषि पूर्वाधारको विकास, बजार सूचना प्रणालीको स्थापना, साना तथा मझौला कृषि उद्यमशीलताको विकास, खाद्य स्वच्छता तथा गुणस्तर अभिवृद्धि गर्दै प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता वृद्धि गर्ने ।</p> | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. यन्त्र, उपकरण एवम् प्रविधिहरूलाई मुख्य आधार मानी कृषि उत्पादन एवम् युवा लक्षित मर्यादित रोजगारीको समेत अभिवृद्धि गर्ने गरी मूल्य शृंखला विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. कृषकको परिभाषा गरी परिचयपत्रका आधारमा वित्तीय उत्प्रेरणा, उत्पादनमा आधारित प्रोत्साहन तथा सामाजिक संरक्षणका कार्यक्रममा जोड दिइनेछ ।</li> <li>३. सिँचाई, कृषि सडक तथा बजार पूर्वाधारहरूको विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।</li> <li>४. प्रत्येक संघीय निर्वाचन क्षेत्रमा संभाव्यताका आधारमा निजी क्षेत्र/सहकारीको सहकार्यमा कृषि उपज भण्डारण/शीतघर स्थापना गरिनेछ ।</li> <li>५. कृषि उद्यम विकासलाई टेवा पुऱ्याउन त्यस्ता उद्योगको लागि चाहिने कच्चा पदार्थको स्वदेशमै उत्पादन गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ । साथै, देशभित्र आवश्यक पशुपन्धी रोग विरुद्धका खोपहरू स्वदेशमै उत्पादन गर्न प्राथमिकता दिइनेछ ।</li> <li>६. "एक प्रदेश, एक नमुना पशुपन्धी वधशाला" को अवधारणालाई निजी क्षेत्र/सहकारीको सहकार्यमा कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> </ol> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>७. बजार प्रणालीमा सहकारीको संलग्नता प्रोत्साहन गर्नुका साथै मध्यस्थकर्तालाई स्थानीय तहमा दर्ता गर्ने व्यवस्था गरी उनीहरूको कार्य र अतिरिक्त नाफालाई नियमन र व्यवस्थित गरिनेछ ।</p> <p>८. खाद्य स्वच्छता तथा गुणस्तरको अभिवृद्धि गर्ने कार्यलाई विकेन्द्रित संरचनामा विस्तार गर्दै क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>९. कृषि प्रविधिको विस्तारमा एकीकृत एवम् आधुनिक सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको अधिकतम प्रयोग गरिनेछ ।</p>  |
| <p>५. स्थानीय सम्भाव्यताको आधारमा उत्पादनशील कृषकहरूको प्राविधिक, व्यावसायिक तथा संस्थागत क्षमता अभिवृद्धिका साथै उनीहरूको अधिकार सुनिश्चित गर्दै उत्पादन र बजारीकरणलाई नाफामूलक बनाउने ।</p> | <p>१. स्थानीय तहका वडालाई एक विकास एकाइ मानी सम्भाव्यताको आधारमा बाली, पशुपन्छी तथा मत्स्य पकेट क्षेत्रको पहिचान गरी कृषकलाई आवश्यक पर्ने उत्पादन सामग्री र सेवा एकद्वार प्रणालीबाट स्थानीय तह मार्फत उपलब्ध गराउने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रत्येक प्रदेशमा कम्तीमा दुई वटाको दरले निजी/सहकारी क्षेत्रको सहकार्यमा नमुना एकीकृत अर्गानिक फर्म स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>३. एकीकृत कृषि खेती, सामूहिक तथा सहकारी खेती प्रणाली र पर्यापर्यटनीय तथा वातावरणमैत्री कृषि प्रणालीलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>४. मूल्य शृंखलाका उत्पादन एवम् कृषि भण्डारणको लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट थप लगानी गरिनेछ ।</p> <p>५. उत्पादन क्षेत्रलाई स्थानीय, प्रादेशिक र राष्ट्रियस्तरको बजारमा जोड्न सम्बन्धित तहले आपसमा समन्वय तथा सहकार्य गरी उपयुक्त स्तरको मूल्य शृंखला विकास गरिनेछ ।</p> <p>६. कृषि उत्पादन क्षेत्रको अतिरिक्त श्रमशक्तिलाई कृषि तथा गैरकृषि जन्य उद्योगमा परिचालन गरी उच्च आय सहित रोजगारीको सिर्जना गरिनेछ ।</p> <p>७. बाँझो तथा सीमान्त जमिन विशेषतः पहाडी तथा भिरालो धरातलको संरक्षण तथा उत्पादकत्व वृद्धिका लागि सदुपयोगको सिद्धान्त अनुसार बहुउपयोगी एवम् उच्चमूल्य बाली सहितको कृषिवन प्रणालीको प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> <p>८. सहकारी मार्फत कृषकहरूले सेवाको माग गर्ने, योजना तयार गर्ने, उत्पादन क्षमता वृद्धि गर्ने र बजारीकरण गर्न सक्ने गरी संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>९. समुचित सदुपयोगको सिद्धान्त बमोजिम स्थानीय तहको समन्वयमा राजमार्ग किनारका क्षेत्रहरूमा फलफूल तथा अन्य उपयुक्त बालीको खेती प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| ६. तुलनात्मक लाभ एवम् उच्च मूल्य बाली तथा वस्तुको बजारीकरण गरी निर्यात प्रवर्द्धन गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. नेपालको विशिष्ट पहिचान भएका विद्यमान निर्यातजन्य उत्पादनको पहिचान तथा प्रवर्द्धन गर्ने एवम् त्यस्ता उत्पादनलाई आवश्यक प्रोत्साहनसहित ब्राण्डिङ र बजार सुदृढ गरिनेछ ।</li> <li>२. विशिष्टकृत उत्पादन क्षेत्र, बाली र पशुवस्तुमा आधारित प्रविधिको सुनिश्चितता गरिनेछ ।</li> <li>३. कृषिजन्य उद्योगको स्थापना तथा विस्तारका लागि क्षेत्र र स्थान विशेष औद्योगिक बाली, वस्तु, फलफूल तथा पुष्प व्यवसायको उत्पादन, प्रशोधन र बजारीकरणको प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li> <li>४. कृषिजन्य उपजहरूको व्यापार प्रवर्द्धन एवम् विषादिजन्य पदार्थको प्रयोगको नियमन र व्यवस्थापन गर्नका लागि प्रदेशस्तरमा मानक प्रयोगशाला (Accredited Lab) स्थापना गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ७. जलवायु परिवर्तन र प्रकोपबाट पर्ने नकारात्मक असर न्यूनीकरण गर्दै जलवायु अनुकूलन तथा उत्थानशील प्राङ्गारिक लगायतका कृषि प्रविधिको विकास र विस्तार गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. प्राङ्गारिक खेतीका सम्भावित वस्तु र क्षेत्रहरूको पहिचान एवम् उत्पादन वृद्धि गरी उत्पादित प्राङ्गारिक वस्तुको प्रमाणीकरण तथा ब्राण्ड प्रवर्द्धन गर्दै राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा बजारीकरण गरिनेछ ।</li> <li>२. लोपोन्मुख बीउबिजन, नशल र कृषि तथा पशुपन्छीजन्य जैविक विविधता संरक्षणमा स्थानीय तह तथा समुदायको अग्रसरतालाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> <li>३. कृषिमा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन तथा उत्थानशील प्रविधिको प्रयोग गर्दै कृषकको जलवायु परिवर्तनसँग जुध्ने क्षमता बढाउन जलवायु परिवर्तनलाई कार्यक्रम र बजेटमा यकीन गरी कृषि जैविक विविधताको संरक्षण, संवर्द्धन तथा दिगो उपयोग गरिनेछ ।</li> <li>४. प्राङ्गारिक खेतीको प्रवर्द्धनको लागि प्राङ्गारिक कृषि क्षेत्रको घोषणा, वायोग्यास तथा अन्य स्रोतहरूबाट उत्पादन भएका प्राङ्गारिक मलको प्रयोगलाई सहकारी तथा निजी क्षेत्रको सहकार्यमा विस्तार गरिनेछ ।</li> </ol> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिको अन्त्यसम्ममा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि, वन तथा खानि क्षेत्रको योगदान २७.६ प्रतिशतबाट घटेर २३ प्रतिशत कायम रहेको हुनेछ । कृषि क्षेत्रको उत्पादकत्व २.९७ बाट ४ मेट्रिक टन प्रतिहेक्टर पुगेको हुनेछ । योजना अवधिको अन्तिममा प्रमुख बालीहरूको बीउ प्रतिस्थापन दर २५ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । आ.व. २०७४/७५ मा प्रमुख बालीहरूको प्रतिहेक्टर उत्पादकत्व धान ३.५ मेट्रिक टन, मकै २.७ मेट्रिक टन, गहुँ २.८ मेट्रिक टन, तरकारी १४.० मेट्रिक टन, आलु १६.० मेट्रिक टन, फलफूल ८.९ मेट्रिक टन, माछा ४.९ मेट्रिक टन प्रति हेक्टर, दुध १,०१२ लिटर प्रति दुधालु पशु प्रति वेत, मासु ७२ केजी प्रतिबध गरिएको पशु, तथा अण्डा २४० वटा प्रति पन्छी

रहेकोमा योजना अवधिको अन्तिम वर्ष २०८०/८१ मा धान ४.५ मेट्रिक टन, मकै ४.० मेट्रिक टन, गहुँ ३.५ मेट्रिक टन, तरकारी २०.० मेट्रिक टन, आलु २२.० मेट्रिक टन, फलफूलको १२.० मेट्रिक टन, माछा ६ मेट्रिक टन प्रति हेक्टर, दुध १,४८७ लिटर प्रति दुधालु पशु प्रतिबेत, मासु ९२ केजी प्रति बध गरिएको पशु, अण्डा २६० वटा प्रतिपन्छी पुगेको हुनेछ। जमिनको उत्पादकत्व अमेरिकी डलर ५,३३९ प्रति हेक्टर, कृषि श्रमको उत्पादकत्व अमेरिकी डलर १,२६० प्रतिश्रमिक पुगेको हुनेछ। यस योजना अवधिभित्र प्रमुख कृषि उत्पादनमा आत्मनिर्भर भई कृषि क्षेत्रको व्यापार सन्तुलन कायम भएको हुनेछ।

## ६.१.२ खाद्य सुरक्षा तथा पोषण

### १. पृष्ठभूमि

खाद्य तथा पोषण सुरक्षाको महत्वलाई हृदयंगम गरी नेपालको संविधानले खाद्य सम्प्रभुताको प्रत्याभूति हुने व्यवस्था गरेको छ। यसको कार्यान्वयनका लागि खाद्य अधिकार तथा खाद्य सम्प्रभुता ऐनको व्यवस्था गरिएको छ। खाद्य सुरक्षा बहुआयामिक विषय भएको र यसको उद्देश्य प्राप्त गर्न बहुपक्षीय प्रयास आवश्यक छ। दिगो विकास लक्ष्यमा “भोकमरीको अन्त्य गर्ने, खाद्य सुरक्षा तथा पोषणको अवस्था सुधार गर्ने तथा दिगो कृषि प्रणालीको प्रवर्द्धन गर्ने” उल्लेख भएको छ। साथै, कृषि विकास रणनीति शून्य भोकमरी चुनौती एवम् बहुक्षेत्रीय पोषण योजना दोस्रो लगायत क्षेत्रगत नीति र योजनाले लिएका लक्ष्य र उद्देश्य अनुसार खाद्य तथा पोषण सुरक्षा हासिल गर्न उपयुक्त रणनीति र कार्यनीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु अपरिहार्य छ।

### २. प्रमुख समस्या

खाद्य तथा पोषण सुरक्षा बहुक्षेत्रगत विषय भएको सन्दर्भमा नीतिगत कमीका कारण सरोकारवालाहरूबीच प्रभावकारी समन्वय तथा सहकार्यको न्यूनता खाद्य र पोषण सुरक्षाको क्षेत्रमा समस्याको रूपमा रहेको छ।

खाद्य तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित गर्न प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्ने कृषि क्षेत्रको उत्पादन तथा उत्पादकत्व कम रहेको र उपलब्ध खाद्यको आपूर्ति तथा वितरण प्रणालीमा रहेको कमजोरीले गर्दा दुर्गम, हिमाली र केही तराई क्षेत्रमा खाद्य उपलब्धता तथा पहुँचको अवस्था कमजोर रहेको छ। त्यसै गरी विभिन्न समयमा खाद्यवस्तुको अनियन्त्रित मूल्यवृद्धिले खाद्यको पहुँचमा अझै समस्या थपेको छ। जलवायु परिवर्तन तथा अन्य प्राकृतिक विपत्तिका कारणले उत्पादकत्वमा आएको हासले जीविकोपार्जन र खाद्य तथा पोषण सुरक्षाको लक्ष्य हासिल गर्नु थप जटिल तुल्याएको छ।

स्वास्थ्य, सरसफाई तथा खाने व्यवहार सम्बन्धी जनचेतनाको कमी खाद्य सुरक्षा र पोषणका क्षेत्रमा जटिलता बढाउँदै गएका छन्। उवा, कोदो, जौ, चिनो, कागुनो तथा फापर जस्ता स्थानीय पोषिलो रैथाने बालीको उत्पादन तथा उपभोगमा पनि कमी आएको छ। केही व्यवसायिक पकेटहरूबाट उत्पादन हुने कृषि उपजहरूमा अनियन्त्रित विषादी, एन्टिबायोटिक, हार्मोन तथा खाद्यमा गैरखाद्यवस्तुको मिसावटले सुरक्षित, स्वच्छ तथा पोषणयुक्त खाद्यवस्तुको आपूर्ति तथा उपलब्धता सुनिश्चित गर्न सकिएको छैन।

### ३. चुनौती तथा अवसर

खाद्य उपलब्धता, खाद्यमा पहुँच, खाद्य उपयोग र स्थिरतामा समयानुकूल सुधार गर्नु, झन्डै ८.१ प्रतिशत जनसङ्ख्याले दैनिक निर्धारित क्यालोरीको न्यूनतम मात्रा उपभोग गर्नबाट वञ्चित रहेको अवस्थामा सुधार ल्याउनु, खाद्य सुरक्षाका दृष्टिले जोखिममा रहेका समूह र क्षेत्रको पहिचान गरी तिनको खाद्यवस्तुमा पहुँच सुधार गर्दै खाद्यवस्तुमा आत्मनिर्भर बनाउनु चुनौतीपूर्ण छ। स्वस्थकर र पोषणयुक्त खाना र व्यवहार परिवर्तन गर्नु, अनियन्त्रित रूपमा बढेको जीवनाशक विषादि तथा एन्टिबायोटिकको प्रयोग घटाई खाद्य गुणस्तरमा सुधार गर्नु तथा जलवायु परिवर्तनका कारणले खाद्य सुरक्षामा हुने जोखिम न्यून गर्नु यस क्षेत्रका मुख्य चुनौती हुन्। खाद्य सुरक्षा अवस्थाको तथ्याङ्कको अभावले गर्दा मुलुकमा खाद्य सुरक्षाको दृष्टिले अति जोखिममा रहेको समुदाय तथा क्षेत्रको पहिचान चुनौतीपूर्ण रहेको छ। उक्त समुदायका लागि लक्षित प्रयासमा समान पहुँच सुनिश्चित गर्नुका साथै आपतकालीन अवस्थामा खाद्य आवश्यकतालाई पूरा गर्न खाद्यवस्तुको जगेडा भण्डारलाई कायम राख्न सबै प्रदेशमा आधुनिक भण्डारण संरचना विकास गर्नु पनि चुनौती छ। उन्नत बीउ, मल तथा सुहाउँदो कृषि यन्त्र सरकारी अनुदान, बिमा तथा वित्तीय उत्प्रेरणा लगायतका सरकारी सेवा तथा सुविधामा साना किसान एवम् अति विपन्न तथा जोखिममा रहेका जनताको पहुँचमा सुनिश्चितता गर्नु थप चुनौतीपूर्ण रहेको छ।

नेपालको संविधानमा खाद्य सम्प्रभुतालाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गरिनु र सोको कार्यान्वयनका लागि ऐनको व्यवस्था समेत हुनुले प्रत्येक नागरिकको खाद्य तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित गर्न ठूलो अवसर प्रदान गरेको छ। दिगो विकास लक्ष्यले भोकमरी अन्त्य गर्ने उद्देश्य लिनु, कृषि विकास रणनीतिमा खाद्य तथा पोषण सुरक्षाका कार्यक्रमलाई महत्व दिइनुका साथै बहुक्षेत्रीय पोषण योजना (दोस्रो) लागू हुनु समेत अवसर हुन्।

संघीय संरचना अनुरूप संघीय, प्रादेशिक तथा स्थानीय तहले स्थानीय परिवेश तथा विशिष्टतामा आधारित योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गर्नुबाट खाद्य सुरक्षाको उद्देश्य प्राप्तमा थप अवसर सिर्जना गरेको छ। खाद्य अधिकार, खाद्य सुरक्षा एवम् खाद्य सम्प्रभुता सम्बन्धी अधिकारको संरक्षण, र परिपूर्ति गर्ने कार्यलाई व्यवस्थित गर्न तीन तहमा स्थायी संयन्त्रको व्यवस्था हुनु र कृषि प्रसार, कृषि उत्पादन तथा आधारभूत स्वास्थ्य एवम् सरसफाइ स्थानीय तहका अधिकार सूचीमा रहने संवैधानिक प्रावधानबाट साना किसान तथा खाद्य सुरक्षा र पोषणको दृष्टिकोणबाट जोखिममा रहेका समूहमा प्रभावकारी तथा समयमै सम्बोधनका कार्यक्रम सञ्चालन गर्न अवसर बढेको छ।

आम जनतामा खानपान तथा पोषण सम्बन्धी चेतनामा आइरहेको सकारात्मक परिवर्तन, क्रयशक्तिमा देखिएको वृद्धि, बजार लगायत कृषि पूर्वाधारमा भएका क्रमिक सुधारहरू र यातायात तथा सञ्चारमा भइरहेको विकासले खाद्यवस्तुको पहुँचमा वृद्धि हुनु खाद्य तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित गर्ने थप अवसर हुन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

खाद्य सम्प्रभुता, दिगो खाद्य तथा पोषण सुरक्षा सहितको समाज।

## ४.२ लक्ष्य

स्वच्छ र पोषणयुक्त खाद्य उपलब्धता तथा पहुँचको वृद्धि गर्दै खाद्य तथा पोषण सुरक्षाको सुनिश्चितता गर्ने ।

## ४.३ उद्देश्य

१. खाद्य असुरक्षा तथा पोषणको जोखिममा रहेका क्षेत्र र समूहको आधारभूत खाद्य उपलब्धता सुनिश्चित गर्नु ।
२. कृषि तथा गैहकृषिजन्य उद्यम मार्फत आय-आर्जनमा सुधार गरी खाद्यमा पहुँच वृद्धि गर्नु ।
३. खाद्यवस्तुको स्वच्छता अभिवृद्धि गर्दै गुणस्तरयुक्त खाद्यवस्तुको वितरण प्रणालीमा सुधार गर्नु ।

## ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. संघ, प्रदेश तथा स्थानीय तहमा खाद्य तथा पोषण असुरक्षित क्षेत्र र समूहमा तथ्यमा आधारित एकीकृत योजना सहित खाद्य सङ्कट समाधान गर्न आवश्यक व्यवस्था मिलाउने ।  | १. खाद्य अधिकार र खाद्य सुरक्षाको सुनिश्चितताका लागि विद्यमान खाद्य सुरक्षा तथा खाद्य सम्प्रभुता ऐनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. खाद्य असुरक्षाबाट प्रभावित घरधुरीहरूको खाद्यसंकटजन्य अवस्थाको सामनाका लागि उत्थानशीलता विकास गरिनेछ । साथै, सामाजिक एवम् आर्थिक रूपले अशक्त समूहलाई सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम अन्तर्गत खाद्यमा पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ ।<br>३. सीमान्तीकृत तथा खाद्य असुरक्षाको जोखिममा रहेका घरधुरीहरूलाई समूह तथा सहकारीमा आबद्ध गराई करार तथा सामुहिक खेती गर्न प्रोत्साहन गरी खाद्य उपलब्धता वृद्धि गरिनेछ । |
| २. कृषि जैविक विविधताको संरक्षण, संवर्द्धन र सदुपयोग, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन प्रविधिको विकास र विस्तार गरी खाद्य वस्तुको उपलब्धता, उपयोगमा स्थिरता र प्रवर्धन कायम गरी खाद्य तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित गर्ने । | १. खाद्य तथा पोषण सुरक्षाका प्रतिकूल क्रियाकलापहरू कृषियोग्य भूमि खण्डीकरण र जग्गा बाँझो राख्ने कार्यलाई निरूत्साहित गरिनेछ ।<br>२. शिक्षा, अनुसन्धान र प्रसारसँगको समन्वय तथा सहकार्यमा जलवायु परिवर्तनको प्रभाव न्यूनीकरण गर्न उत्थानशील प्रविधिको विकास र विस्तार गरिनेछ । साथै, बायोफोर्टीफाईड बाली र वस्तुको विकास तथा उपयोगमा विस्तार गरिनेछ ।<br>३. खाद्य सुरक्षा तथा पोषणका कार्यक्रमहरूबीच समन्वय तथा सहकार्य मार्फत पोषण विशेष तथा पोषण सम्वेदनशील क्रियाकलापमा सुदृढीकरण गरिनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ३. रैथाने खाद्यबाली तथा पशुपन्छीको संरक्षण, प्रवर्धन र प्रचार प्रसार गर्दै समुदायको पोषण अवस्था सुधारका लागि खानपानको बानी ब्यवहारमा सुधार ल्याउने ।  | १. प्रत्येक स्थानीय तहमा खाद्यवस्तुमा आत्मनिर्भर उन्मुख योजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ । स्थानीयस्तरमा उत्पादन हुने रैथाने लगायतका खाद्य उपभोगमा जोड दिँदै सम्भाव्य कृषि वस्तुको उत्पादन र उपयोगका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. अध्ययन, अनुसन्धान र नतिजामा आधारित सुरक्षित र सन्तुलित खाद्य ब्यवहारलाई प्रवर्धन गर्दै समुदायको पोषण अवस्था सुधारका लागि खानपानको बानी ब्यवहारमा समेत सुधार ल्याइनेछ ।   |
| ४. गैहकृषिमा आबद्ध नागरिकका लागि आय-आर्जन बढाई खाद्यमा पहुँच बढाउने ।   | १. रोजगारीका अवसर सिर्जना गरी खाद्यको पहुँचमा विस्तार गरिनेछ ।<br>२. गैहकृषिजन्य उद्यम तथा व्यवसाय विस्तार गरी आय-आर्जन मार्फत क्रयशक्ति वृद्धि गरिनेछ ।<br>३. खाद्यवस्तुको बजार अनुगमन प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाई मूल्य उतार चढावलाई व्यवस्थित गरिनेछ ।  |
| ५. वितरण प्रणाली व्यवस्थित गर्नका लागि तीनै तहका सरकारको समन्वयात्मक सञ्जालको विकास गर्दै खाद्य आवश्यकतालाई पूरा गर्न सबै प्रदेश तथा स्थानीय स्तरमा जगेडा भण्डार (Buffer Storage) को व्यवस्था गर्ने । | १. खाद्य जोखिम क्षेत्रमा रहेका परिवारको प्रभावकारी रूपमा खाद्यमा पहुँच बढाउन निजी, सामुदायिक र सहकारी क्षेत्रको साझेदारीमा सर्वसुलभ वितरण प्रणालीको सुदृढीकरण एवम् विकास गरिनेछ ।<br>२. वितरण प्रणालीलाई व्यवस्थित गर्नका लागि तीन तहको समन्वयात्मक सञ्जालको विकास गरी स्थानीय खाद्य आवश्यकताको अनुपातमा खाद्य भण्डार गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।   |
| ६. संघ, प्रदेश तथा स्थानीय तहमा खाद्य तथा पोषण स्थिति एवम् खाद्यवस्तुको गुणस्तर र स्वच्छता सुनिश्चित गर्न नियमन प्रणाली विकास तथा संस्थागत गर्ने ।  | १. खाद्यवस्तुको स्वच्छता तथा गुणस्तर सुनिश्चित गर्न नियमन कार्य प्रभावकारी बनाइनेछ ।<br>२. खाद्य वस्तुको गुणस्तर परीक्षण, प्रमाणीकरण तथा नियमनलाई प्रभावकारी बनाउन प्रयोगशाला सेवालाई थप सुदृढ गर्दै स्थानीय तहसम्म पहुँच विस्तार गरिनेछ ।<br>३. खाद्यवस्तुको स्वच्छता तथा गुणस्तरबारे जनचेतना अभिवृद्धि गर्न उपभोक्ता हकहितसँग सम्बन्धी त संस्थाहरूसँग सहकार्य गरिनेछ ।<br>४. खाद्य तथा पोषण स्थितिको नियमित अनुगमनका लागि प्रदेश तथा स्थानीय तहमा नेपाल खाद्य सुरक्षा अनुगमन प्रणालीलाई संस्थागत गरिनेछ । |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्तमा आधारभूत खाद्य सुरक्षाको स्थितिमा रहेका परिवार हालको ४८.२ प्रतिशतबाट ८० प्रतिशत पुगेको हुनेछ । सो अवधिमा खाद्य गरिबी १० प्रतिशत तथा मौजुदा गम्भीर खाद्य असुरक्षित (खाद्य असुरक्षा अनुभव मापन अनुसार) जनसङ्ख्या ७.८ प्रतिशतबाट घटेर २ प्रतिशत भएको हुनेछ । त्यसैगरी विश्वव्यापी खाद्य सुरक्षा सूचकाङ्क (सन् २०१८) ४६ बाट ६६ मा पुगेको हुनेछ । दैनिक निर्धारित क्यालोरीको न्यूनतम मात्रा उपभोग गर्नबाट वञ्चित रहेको जनसङ्ख्या ८.१ प्रतिशतबाट घटेर ४ प्रतिशत भएको हुनेछ ।

## ६.१.३ सिँचाइ

### १. पृष्ठभूमि

कृषियोग्य भूमिमा बाह्र महिना सिँचाइ सुविधा पुऱ्याई कृषिको उत्पादकत्व बढाउन सिँचाइको दिगो व्यवस्था गर्न आवश्यक छ । कुल २६ लाख ४१ हजार हेक्टर कृषियोग्य जमिन मध्ये २२ लाख ६५ हजार हेक्टर सिँचाइयोग्य जमिन रहेको छ । आ.व. २०७४/७५ को अन्त्यसम्म १४ लाख ७३ हजार हेक्टरमा सिँचाइ सुविधाका लागि पूर्वाधार विकास भएको छ । परम्परागत सिँचाइ प्रणालीको मर्मत-सम्भार र नयाँ प्रविधिमा आधारित सिँचाइ प्रणालीको माध्यमबाट सिंचित कृषि क्षेत्रको विस्तार भइरहेको छ । सिँचाइ पूर्वाधार निर्माणमा रणनीतिक महत्वका ठूला सिँचाइ संघबाट, मझौला सिँचाइ प्रदेशबाट र साना सिँचाइ आयोजनामा स्थानीय तहबाट लगानी परिचालन गर्ने व्यवस्था मिलाउन आवश्यक छ । सिँचाइ प्रणालीको निर्माण पछिको मर्मत-सम्भार, व्यवस्थापन एवम् सञ्चालनमा उपभोक्ता समुदायको सक्रिय सहभागितालाई थप सुदृढ गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ । सिँचाइको थप पूर्वाधार विकास र सम्पन्न सिँचाइ प्रणालीको सुदृढीकरण गरी व्यवस्थित बनाउन लगानी वृद्धि गर्न आवश्यक छ ।

### २. प्रमुख समस्या

अधिकांश सिँचाइ योजना प्राकृतिक नदी प्रणाली (रन अफ द रिभर) अवधारणामा निर्माण गरिएकोले वर्षै भरी एकैनासले सिँचाइको भरपर्दो सेवा पुऱ्याउन नसक्नु, निर्माण सम्पन्न भइसकेका सिँचाइ प्रणालीको पर्याप्त मर्मत-सम्भार हुन नसक्नु, सिँचाइ सुविधा पुगेको वा पुग्नसक्ने भूमिमा खण्डीकरण र अव्यवस्थित शहरीकरण हुनु, सतह सिँचाइ र भूमिगत सिँचाइको संयोजनात्मक उपयोग नहुनु, प्राकृतिक मूल तथा मुहानहरू सुक्दै जानु, उपलब्ध पानीको स्रोतमाथिको चाप बढ्नु, सिँचाइ तथा जल उपयोग दक्षता न्यून हुनु, नदी जन्य निर्माण सामग्रीको अत्यधिक दोहन हुनगई नदीको बेड लेभल घट्दै जानु र ठूला तथा बहुउद्देश्यीय आयोजनामा पर्याप्त लगानी हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

देशको सम्पूर्ण कृषियोग्य भूमिमा सिँचाइ सुविधा उपलब्ध गराउने गरी निर्माणाधीन आयोजना समयमै सम्पन्न गर्नु, सिँचाइ पूर्वाधार विकासका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले लगानीको प्राथमिकता तय गर्नु, उपयुक्त तथा गुणस्तरिय प्रविधिको विकास एवम् छनोट गर्नु, निर्माण सम्पन्न भएका सिँचाइ प्रणालीहरूको नियमित रूपमा मर्मत-सम्भार गर्नु, सिँचाइ प्रणालीबाट बाह्र महिना सिँचाइ सेवा उपलब्ध गराउने गरी दीर्घकालीन रूपमा ठूला नदीहरूको जल स्थानान्तरण तथा जलाशययुक्त योजना निर्माण गर्नु, सिँचाइ सुविधा उपलब्ध भएका वा निकट भविष्यमा उपलब्ध हुने कृषिभूमि कृषि क्षेत्रका लागि संरक्षण गर्नु, जलवायु परिवर्तनबाट पानीको उपलब्धतामा हुनसक्ने

प्रतिकूल असरलाई न्यूनीकरण गर्ने उपाय समयमै अवलम्बन गरी जोखिम व्यवस्थापन गर्नु र उपलब्ध जलस्रोतको संरक्षण गर्दै सिँचाइ सहितको बहुआयमिक उपयोग गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन् ।

सतह र भूमिगत जलस्रोतको ठूलो भण्डार उपलब्ध हुनु, सिँचाइ विकास र विस्तारका लागि दक्ष जनशक्ति स्वदेशमै उपलब्ध हुनु, सिँचाइ सम्बन्धी नयाँ प्रविधिको आविष्कार तथा विस्तार हुनु, सिँचाइ विकास र व्यवस्थापनमा कृषक उपभोक्ताको पहुँच र सहभागिता बढ्दै जानु र सिँचाइ प्रणाली विस्तारका लागि कृषकहरूको माग बढ्दै जानु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

##### ४.१ सोच

दिगो एवम् भरपर्दो सिँचाइ सुविधा उपलब्ध गराई कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धिमा योगदान ।

##### ४.२ लक्ष्य

कृषियोग्य भूमिमा दिगो एवम् भरपर्दो सिँचाइ सुविधा उपलब्ध गराउने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. उपयुक्त प्रविधि मार्फत थप कृषियोग्य भूमिमा सिँचाइ सेवा विस्तार गर्नु ।
२. ठूला, जलाशययुक्त तथा जलस्थानान्तरण बहुउद्देश्यीय आयोजनाको विकास गरी कृषियोग्य भूमिमा वर्षे भरी भरपर्दो रूपमा सिँचाइ सुविधा उपलब्ध गराउनु ।
३. सम्पन्न सिँचाइ प्रणालीको मर्मत-सम्भार एवम् व्यवस्थापनलाई सुदृढ तुल्याई दिगोपन बढाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. सिँचाइ विकासको गुरुयोजना र कृषि विकास रणनीति अनुसार जलवायु परिवर्तन अनुकूलन हुने गरी सिँचाइ योजनाहरूको विकास एवम् विस्तार गर्ने । | १. प्राविधिक, आर्थिक र वातावरणीय पक्षबाट सम्भाव्य साना, मझौला र ठूला सतह सिँचाइ आयोजना प्राथमिकीकरण, निर्माण तथा विस्तार गरिनेछ ।<br>२. प्रदेश र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा सम्भाव्य स्थानमा भूमिगत जलस्रोतमा आधारित स्यालो तथा डीप ट्युबबेल कार्यक्रम प्राथमिकताका साथ कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>३. सिँचाइमा जलवायु परिवर्तनबाट हुने प्रभावको अध्ययन गरी सोही अनुरूप प्रणाली डिजाइन एवम् सञ्चालनमा आवश्यक सुधार गर्दै लगिनेछ । |
| २. नयाँ प्रविधिमा आधारित सिँचाइको विकास गर्नुका साथै सिँचाइ दक्षता वृद्धि गर्ने ।  | १. प्रदेशसँगको सहकार्यमा कृषियोग्य भूमिमा व्यवसायिक कृषिलाई प्रोत्साहन गर्नका लागि सौर्य ऊर्जा एवम् अन्य प्रविधिमा आधारित भूमिगत तथा लिफ्ट सिँचाइ प्रणालीको विकास गरिनेछ ।<br>२. मध्य तथा उच्च पहाडी क्षेत्रमा उपयुक्त प्रविधि सहितको सिँचाइ सुविधा विस्तार गरिनेछ ।   |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| ३. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको समन्वय र सहकार्यमा सिँचाइ प्रणालीको विकास गर्ने तथा बाह्रै महिना सिँचाइ सेवा उपलब्ध गराउनका लागि ठूला बहुउद्देश्यीय, अन्तर जलाधार र जलाशययुक्त आयोजनालाई प्राथमिकताका साथ अघि बढाउने । | <p>१. संघबाट तीन तहको समन्वय र साझेदारीमा आधारित भई बाह्रै महिना सिँचाइ सुविधा उपलब्ध गराउन प्राविधिक, सामाजिक, आर्थिक तथा वातावरणीय पक्षबाट सम्भाव्य अन्तर जलाधार र जलाशययुक्त बहुउद्देश्यीय आयोजनाको प्राथमिकताका साथ अध्ययन तथा कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. पानीको स्रोत न्यून हुने तथा वर्षेभरी सिँचाइ उपलब्ध हुन नसक्ने क्षेत्रमा सिँचाइ सेवा पुऱ्याउन भूमिगत जलस्रोत र आकाशे पानीको सङ्कलन, पोखरी वा जलाशयमा भण्डारण गरी थोपा, फोहोरा जस्ता प्रविधि समेत उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>३. ठूला सिँचाइ प्रणालीहरूमा पानीको थप स्रोत बढोत्तरीको लागि स्थानीय स्रोतहरूको समेत अधिकतम उपयोग गरिनेछ । साथै, मूल एवम् पोखरी, तालतलैयाहरूको संरक्षण तथा सुदृढीकरण गरी सिँचाइको लागि समेत उपयोग गरिनेछ ।</p> |
| ४. भूमिगत सिँचाइ योजनाको विस्तार सहित उपयोगमा जोड दिने ।   | <p>१. सिँचाइ प्रणालीहरूको दिगो व्यवस्थापनका लागि सेवा शुल्कको सुनिश्चितता सहित निजी क्षेत्रको समेत संलग्नताको लागि प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>२. सिँचाइ सेवाको दक्षता सहित कृषि उत्पादकत्व तथा उत्पादन वृद्धि एवम् कृषि विकास रणनीति र कृषि विकास केन्द्रित विशेष कार्यक्रमका लागि समन्वयात्मक रूपमा एकीकृत बाली तथा जल व्यवस्थापनमा जोड दिइनेछ ।</p>   |
| ५. सिँचाइ प्रणालीको मर्मत-सम्भार एवम् दिगो व्यवस्थापनका लागि स्रोत सहित उपभोक्ता सहभागिता सुनिश्चित गर्ने ।  | <p>१. संघीय संरचना अनुरूप संस्थागत विकास तथा जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>२. सहकारी तथा समुदायको सहभागितामा सिँचाइ प्रणालीको व्यवस्थापन गरिनेछ ।</p> <p>३. सिँचाइ प्रणालीको दिगोपनाका लागि उपभोक्ताहरूको स्रोतसहितको सहभागितामा सोको नियमित मर्मत-सम्भार, व्यवस्थापन र उपयोग गर्ने पद्धतिमा सुधार गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ६. नीतिगत सुधार एवम् विद्यमान संस्थागत संरचनाको क्षमता र जनशक्तिको दक्षता अभिवृद्धि गर्ने । | १. संघीयता अनुकूलको सिँचाइ नीति, रणनीति, प्राथमिकता, कार्यसूची र मापदण्ड बनाई तीन तहका सरकारको कार्य जिम्मेवारी निर्धारण गरिनेछ ।<br>२. सिँचाइ आयोजनाको स्वीकृत सिँचित क्षेत्रमा हुनसक्ने अतिक्रमण रोक्न विद्यमान कानूनमा आवश्यक परिमार्जन गरी कृषियोग्य भूमिको संरक्षण गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सिँचाइ विकासको राष्ट्रिय गुरूयोजना तर्जुमा भई सो अनुसार सतह, भूमिगत तथा अन्तर जलाधार आयोजनाको कार्यान्वयनबाट थप ३ लाख हेक्टर भूमिमा सिँचाइ सुविधा पुगेको हुनेछ । सिँचाइ सेवाका लागि पूर्वाधार विकास भएको क्षेत्रमध्ये करिब ५० प्रतिशत क्षेत्रमा वर्षैभरी सिँचाइ सुविधा उपलब्ध भएको हुनेछ । ९८,५०० हेक्टर भूमिमा सिँचाइ सुविधा पुऱ्याएको विद्यमान सिँचाइ प्रणालीको प्रभावकारी व्यवस्थापन सहित सञ्चालन भएको हुनेछ ।

#### ६.१.४ भूमि व्यवस्था

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानमा व्यवस्था भएको सम्पत्तिको हक, खाद्य सुरक्षा र सम्पन्नताको हक, महिलाको हक र भूमिहीन दलितको हक कार्यान्वयन गर्न तथा सन् २०३० सम्ममा हासिल गरिसक्नुपर्ने दिगो विकासका लक्ष्य प्राप्त गर्न उपलब्ध सीमित भूमि तथा भूमिस्रोतको दिगो व्यवस्थापन गर्न आवश्यक रहेको छ । भूमिको समुचित उपयोग सुनिश्चित गर्न भूमि वर्गीकरण गरी भू-उपयोग योजना तयार गर्न, आधुनिक प्रविधिको प्रयोग मार्फत नापनक्सामा शुद्धता कायम गर्दै परम्परागत जग्गा प्रशासनको शैलीमा समय सापेक्ष सुधार गरी भूमि व्यवस्थालाई सुरक्षित, पारदर्शी, विश्वसनीय बनाउन र देशको सम्पूर्ण भूमिलाई नापनक्सा तथा भू-सूचना प्रणालीमा आबद्ध गरी अनलाइन सेवा प्रवाह तथा डिजिटल अभिलेख तयार गर्न आवश्यक नीति, कानून, पूर्वाधार तयारी तथा स्रोत साधन परिचालन अपरिहार्य देखिन्छ ।

यसै सन्दर्भमा हालसम्म देश भरमा करिब ७ हजार नियन्त्रण बिन्दुको राष्ट्रिय सञ्जाल स्थापना, देशको सम्पूर्ण भूभाग समेट्ने गरी ७०६ स्थलरूप नक्सा, सबै प्रदेश, र जिल्ला र सबै स्थानीय तहको प्रशासनिक नक्सा तयार भएको छ । देशको कुल आवादी क्षेत्रको करिब ७५ प्रतिशत कित्ता नापी-नक्सा, सोको डिजिटल अभिलेख, जग्गा दर्ता तथा जग्गाधनी पूर्जा वितरण भइसकेको र नक्सामा आधारित जग्गा प्रशासन प्रणाली लागू भई ५० मालपोत कार्यालयहरूमा अनलाइन सेवा समेत सुरु भइसकेको छ । भू-उपयोग नीति लागू भई भूमिको वर्गीकरण गर्ने र भू-उपयोग नक्सा तथा डाटाबेस तयार गर्ने कार्य ३५५ स्थानीय तहमा सम्पन्न भइसकेको छ । करिब २७ हजार मुक्त कर्मैया र करिब ७ हजार मुक्त हलियाहरूको पुनर्स्थापनाको कार्य सम्पन्न भएको छ । अन्तर्राष्ट्रिय सीमातर्फ सर्वेक्षण, नाप नक्साङ्कन तथा विद्युतीय अभिलेखनको कार्य नेपाल-चीन सीमामा शत प्रतिशत र नेपाल भारत सीमामा ९८ प्रतिशत कार्य सम्पन्न भएको छ ।

## २. प्रमुख समस्या

भू-उपयोग नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्न भू-उपयोग ऐन लागू नहुनु, कृषियोग्य जग्गाको खण्डीकरण बढ्दै जानु र गैहकृषि क्षेत्रमा प्रयोग बढ्दै जानु, सुकुम्बासी, मोही तथा गुठी किसान, भूमिहीन, अव्यवस्थित बसोबासीहरूको बसोबास सम्बन्धी उचित व्यवस्था हुन नसक्नु, देशको कुल भू-भागको करिब ७० प्रतिशत क्षेत्रलाई भूमि प्रशासनको आधिकारिक अभिलेखभित्र ल्याउन नसकिनु, परम्परागत कित्ता नापी र जग्गा प्रशासन प्रणालीलाई पूर्ण रूपमा आधुनिक प्रविधियुक्त बनाई सेवा प्रवाहलाई सरल, सहज र पारदर्शी बनाउन नसकिनु, नापनक्सा पद्धतिलाई आधुनिक प्रविधियुक्त बनाई योजना तर्जुमा र विकास निर्माण कार्यको लागि शुद्ध र विश्वसनीय भौगोलिक सूचना उपलब्ध गराउन नसकिनु र आवश्यकता अनुसार पेसागत दक्ष जनशक्ति उपलब्ध नहुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

भूमिमा सबै नागरिकको समन्यायिक पहुँच स्थापित गर्नु, भू-उपयोग योजना तयार गरी कार्यान्वयन गर्नु, भूमि प्रशासन प्रणालीलाई समयानुकूल बनाई प्रभावकारी सेवा प्रवाह गर्नु, भूमि सम्बन्धी सम्पूर्ण अभिलेख डिजिटाइज गरी एकीकृत भूसूचना प्रणाली लागू गर्नु र नापनक्सा कार्यमा समयानुकूल आधुनिक प्रविधिको अवलम्बन, दक्ष जनशक्ति प्राप्त गरी टिकाइराख्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

संविधानतः भूमि व्यवस्थापन संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारको साझा अधिकारको विषय हुनु र भूमि सम्बन्धी सम्पूर्ण अभिलेखलाई डिजिटाइज गरी केन्द्रीय अभिलेख तयार गर्न तदारुकता देखाइनु, सबै राजनैतिक दलहरूले वैज्ञानिक भूमि व्यवस्थापनको विषयमा प्रतिबद्धता जनाउनु, सूचना प्रविधिको विकास तथा सेवा प्रवाहमा यसको प्रयोगको आरम्भ हुनु, संघीय संरचना अनुसार भूमिसँग सम्बन्धित कानून संशोधनको कार्य अगाडि बढ्नु, देशको सम्पूर्ण प्रशासनिक र स्थलरूप आधार नक्सा तयार हुनु, मालपोत कार्यालयमा अनलाइन सेवाको सुरुआत हुनु, दक्ष जनशक्ति तथा आधुनिक प्रविधिको उपलब्धताको सुरुआत हुनु र भू-उपयोग योजना तर्जुमाको काम चालू हुनु यस क्षेत्रका अवसर हुन्।

## ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

### ४.१ सोच

समन्यायिक, उत्पादनमुखी र दिगो भूमि व्यवस्था।

### ४.२ लक्ष्य

दिगो विकासको अवधारणा अनुरूप भूमि व्यवस्थालाई राष्ट्रको समृद्धिको आधार बनाउने।

### ४.३ उद्देश्य

१. भूमिको समुचित उपयोग मार्फत उत्पादन वृद्धि र यसबाट प्राप्त लाभको समन्यायिक वितरण सुनिश्चित गर्नु।
२. योजना तर्जुमा र विकास निर्माणको लागि आवश्यक शुद्ध एवम् विश्वसनीय नापनक्सा र भौगोलिक सूचना सर्वसुलभ बनाउनु।
३. भूमि व्यवस्थालाई आधुनिक प्रविधियुक्त, सरल, र पारदर्शी बनाउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>१. भू-उपयोग नीति बमोजिम क्षमता, उपयुक्तता र आवश्यकताको आधारमा भूमिको वर्गीकरण तथा उपयोग सुनिश्चित गरी उत्पादन वृद्धि गर्ने ।</p>                    | <p>१. भू-उपयोग नीति अनुसार भूमिको वर्गीकरण गरी आवश्यकता अनुसार नक्सा डाटा तयार गरिनेछ ।</p> <p>२. भू-उपयोग नक्सा तथा डाटासमेतको आधारमा भू-उपयोग योजना तर्जुमा गरी आवश्यकता अनुसार कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>३. कृषियोग्य जग्गाको खण्डीकरण नियन्त्रण गर्ने, जग्गा बाँझो नराख्न उत्प्रेरित गर्ने, भू-उपयोग परिवर्तन गर्न नपाइने, कृषि प्रयोजनको लागि कम उपयोगी र जोखिमरहित जग्गालाई मात्र आवासीय र व्यवसायिक क्षेत्रको रूपमा विकास गर्न पाइने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. भू-उपयोग ऐन संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p>  |
| <p>२. भूमिहीन दलित, कृषक, सुकुम्बासी, मोही तथा गुठी किसान, अव्यवस्थित बसोबासी लगायत सीमान्तीकृत वर्गको भूमिमाथिको अधिकार र पहुँच सुनिश्चित गर्ने ।</p> | <p>१. अनौपचारिक भूसम्बन्धको पहिचान, सत्यापन (Verification) तथा विस्तृत अभिलेख तयार गरी भूमिहीन, सुकुम्बासी र अव्यवस्थित बसोबासीको व्यवस्थित बसोबास र जीविकोपार्जनको कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. मुक्त कर्मैया तथा मुक्त हलियाको जीविकोपार्जन केन्द्रित पुनर्स्थापना कार्यक्रम तथा मोही र जग्गाधनीबीच जग्गा बाँडफाँट गरी लगतकट्टा गर्ने कार्य सम्पन्न गरिनेछ ।</p> <p>३. महिलाको भूमिमाथिको अधिकार र नियन्त्रणको अवस्थालाई सुधार गरिनेछ ।</p> <p>४. भूमिहीन दलितलाई आवास प्रयोजनको लागि एकपटक जग्गा उपलब्ध गराउने व्यवस्था कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>५. बृहत् परिमाणमा व्यावसायिक रूपमा कृषि उत्पादन गर्न भूमि बैंकको अवधारणा अनुरूप सहकारी संस्था समेत परिचालन गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>६. भूमि नीति र भू-उपयोग गुरूयोजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ३. आधुनिक प्रविधिमा आधारित नापनक्साका आधारभूत पूर्वाधारहरू तयार गर्ने र शुद्ध तथा विश्वसनीय भू-सूचना संकलन गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. भू-मापनका आधुनिक सिद्धान्त र प्रविधि अनुसार नापनक्साको आधारभूत नियन्त्रण बिन्दुको सञ्जाल सुदृढ तुल्याइनेछ ।</li> <li>२. नापनक्सा सम्बन्धी अत्याधुनिक प्रविधिको प्रयोग गरी शुद्ध र विश्वसनीय भू-सूचना संकलन तथा विश्लेषण गरी डाटाबेस तयार गरिनेछ ।</li> <li>३. राष्ट्रको आवश्यकता अनुसार विभिन्न किसिमका विषयगत नापनक्सा तयार तथा अद्यावधिक गरिनेछ ।</li> </ol>                         |
| ४. भौगोलिक सूचना पूर्वाधारको अवधारणा बमोजिम आधारभूत भौगोलिक सूचना तथा विभिन्न क्षेत्रका विषयगत सूचना तयार गरी उपलब्ध गराउने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. बहुउद्देश्यीय भौगोलिक सूचना प्रणाली तयार गरिनेछ ।</li> <li>२. अनलाइन जियोपोर्टल मार्फत आधारभूत भौगोलिक सूचना तथा विभिन्न क्षेत्रका विषयगत सूचना प्राप्त गर्न सकिने प्रविधि विकास गरिनेछ ।</li> <li>३. विश्वविद्यालयहरूसँगको सहकार्यमा नापनक्सा, भौगोलिक सूचना, भू-उपयोग तथा भूमि व्यवस्थापन जस्ता विषयका दक्ष जनशक्ति उत्पादन, शोध तथा अनुसन्धान कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ५. कित्तानापी हुन बाँकी रहेका भू-भागमा नापनक्सा गरी सम्पूर्ण जमिनलाई जग्गा प्रशासन प्रणालीमा आबद्ध गर्ने र सरकारी, सार्वजनिक, सामुदायिक तथा गुठी जग्गाको विस्तृत अभिलेख तयार गरी संरक्षण गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. द्वन्द्वबाट क्षति भएका, नापी हुन बाँकी रहेका, विगतमा गाउँ बलकमा रहेका छुट जग्गा नापजाँच गरी दर्ता स्रेस्ता कायम गरिनेछ ।</li> <li>२. प्रत्येक प्रदेशमा नापनक्सा निर्देशनालय गठन गरी सम्पूर्ण सरकारी, सार्वजनिक, सामुदायिक तथा गुठी जग्गाको यकिन अभिलेख तयार गरी सुरक्षित गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ६. वैज्ञानिक सूचकका आधारमा अचल सम्पत्तिको वस्तुपरक मूल्याङ्कन गर्ने प्रणाली स्थापना गर्ने र सबै सरोकारवालाहरूले सोही मूल्याङ्कन प्रयोग गर्नुपर्ने व्यवस्था गर्ने ।                               | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. घर जग्गाको एकीकृत मूल्याङ्कनको लागि वैज्ञानिक आधार तथा मापदण्ड तयार गरिनेछ ।</li> <li>२. एकीकृत मूल्याङ्कन प्रणाली सबै सरोकारवालाहरूले कार्यान्वयन गर्नु पर्ने गरी कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>३. औद्योगिक विकास र सार्वजनिक निर्माणका लागि आवश्यक जग्गा प्राप्ति गर्न नीतिगत सुधार र सहजीकरण गरिनेछ ।</li> </ol>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| <p>७. आधुनिक प्रविधिमा आधारित भूमि सम्बन्धी अभिलेखहरूको व्यवस्थित भण्डारण गर्ने र जग्गा प्रशासन सेवालाई सहज, सरल, विश्वसनीय र पारदर्शी बनाउने ।</p> | <p>१. कित्ता नापी नक्सा, फिल्डबुक, प्लट रजिस्टर, मोठ सेस्ता, रजिष्ट्रेसन तथा मिसिल तामेली लगायत जग्गा प्रशासन सम्बन्धी सम्पूर्ण अभिलेखहरूलाई डिजिटलाइज गरिनेछ र भू-सूचना अभिलेख व्यवस्थापन प्रणालीलाई सबै मालपोत कार्यालयहरूमा लागू गरिनेछ ।</p> <p>२. कित्तानापीको डिजिटल अभिलेख अद्यावधिक गरी अनलाइन प्रविधिमा आधारित डाटाबेस निर्माण गरिनेछ र मालपोत कार्यालयहरूमा रहेको भू-सूचना अभिलेख व्यवस्थापन प्रणालीसँग समन्वय गरी एकीकृत प्रणाली तयार गरिनेछ ।</p> <p>३. भूमि व्यवस्थापन सेवा क्षेत्रमा आधुनिक प्रविधिको व्यवस्था गरिनेछ । प्रदेश र स्थानीय तहमा समेत दक्ष जनशक्तिको विकास गर्न आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>४. जग्गा प्रशासन सम्बन्धी सम्पूर्ण सेवा अनलाइन प्रणाली मार्फत सहज, सरल, विश्वसनीय र पारदर्शी तरिकाले एकद्वार प्रणालीबाट उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>५. नागरिकको जग्गा प्रशासन सेवामा पहुँच विस्तार गरी सेवा प्रवाहलाई सहज बनाउन रिमोट एक्सेस मोडल तथा भू-सेवा केन्द्र स्थापना गरी सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा देश भरका १३१ वटै नापी र मालपोत तथा भूमिसुधार कार्यालयमा रहेका नक्सा तथा सेस्ता डिजिटलाइज भई केन्द्रीय डाटाबेस तयार हुने र अनलाइन प्रणालीबाट सरल तथा प्रभावकारी जग्गा प्रशासन सम्बन्धी सेवा उपलब्ध गराइएको हुनेछ । देशभरीका सबै ७०६ वटै स्थलरूप आधार नक्साहरू अद्यावधिक भएका हुनेछन् । नापनक्साका करिब ५ सय प्रथम र दोस्रो दर्जाका आधार बिन्दुहरूको राष्ट्रिय सञ्जालको सुदृढीकरण कार्य भएको हुनेछ । नाप नक्साको कार्य गर्न प्रत्येक प्रदेशमा नाप नक्सा निर्देशनालय स्थापना भएको हुनेछ । हालसम्म पहिचान भएका २७५०० मुक्त कर्मैया तथा १६९०० मुक्त हलियाको पुनर्स्थापना भएको हुनेछ । जग्गा माथिको द्वैध स्वामित्वको अन्त्य भई करिब ३ लाख मोहिले जग्गाधनी प्रमाणपूर्जा प्राप्त गर्नेछन् । भू-उपयोग ऐन तर्जुमा भई ७५३ वटै स्थानीय तहहरूको भू-उपयोग नापनक्सा तयार भएको हुने, भू-उपयोग योजना तर्जुमा हुने र कार्यान्वयनको सुरुवात भएको हुनेछ । भूमि व्यवस्थासँग सम्बन्धित करिब २ हजार दक्ष जनशक्ति उत्पादन भएको हुनेछ । गुणस्तरीय भौगोलिक सूचना पूर्वाधारको विकास भई नीति निर्माण, योजना तर्जुमा, विकास निर्माण लगायतका प्रयोजनका लागि सरल, सहज र प्रभावकारी ढंगले भौगोलिक सूचना उपलब्ध गराइएको हुनेछ ।

## ६.१.५ जलस्रोत

### १. पृष्ठभूमि

मुलुकको विकास र समृद्धिका लागि जलस्रोतको बहुउपयोगलाई प्रवर्द्धन गर्नु आवश्यक छ। जलस्रोतको समुचित व्यवस्थापन र विकास मार्फत नै जलविद्युत, सिँचाइ, खानेपानी जस्ता क्षेत्रको विकासलाई अगाडि बढाउन सकिन्छ। संविधानले जनसहभागितामा आधारित स्वदेशी लगानीलाई प्राथमिकता दिदै जलस्रोतको बहुउपयोगमा जोड दिएको छ। जलस्रोतको उपयोग गरी जलविद्युत, सिँचाइ, खानेपानी जस्ता विकासका कार्यलाई दिगो बनाउन जलस्रोतका मुहान, जलप्रवाह, भूमिगत जलस्रोत, हिमनदी र हिमताल सम्बन्धी अध्ययन, अनुसन्धान सहित तथ्याङ्कको सूक्ष्म विश्लेषण गर्नु आवश्यक छ। विभिन्न कारणबाट सिर्जना हुने जलउत्पन्न विपद्बाट मानवबस्ती, खेतीयोग्य जमिन, मौजुदा भौतिक पूर्वाधारको संरक्षण गर्नुका साथै यस प्रकारका विपद्हरूको न्यूनीकरण गर्न वैज्ञानिक अध्ययन, अनुसन्धान गरी नवीन प्रविधिको विकास र विस्तार गर्नु अपरिहार्य रहेको छ। जलस्रोतको गुणस्तर संरक्षण गर्दै यसको व्यवस्थापन र बहुउपयोगका लागि नीतिगत मार्गदर्शन गर्न एकीकृत जलस्रोत नीति आवश्यक रहेको छ। जलस्रोतको समुचित विकास तथा उपयोगका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको सक्रियता, समन्वय एवम् सहकार्यको आवश्यकता रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

जलवायु परिवर्तन तथा अन्य प्राकृतिक प्रकोपबाट सिर्जित असरका कारण पानीको उपलब्धतामा आएको अनिश्चितता, अव्यवस्थित भू-उपयोग र सडक सञ्जालको निर्माण तथा विस्तारले गर्दा पहिरो तथा भू-क्षयमा वृद्धि भई नदीको बहावमा परिवर्तन आएको छ। नदीको पिँधको सतह (रिभर वेड) मा घटबढ भई बाढीजन्य समस्या आउनु र जलस्रोतको उपयोगमा नकरात्मक असर पर्नुका साथै खोला नालाको प्राकृतिक बहावमा अतिक्रमण भई तराई, भित्री मधेस तथा पहाडी क्षेत्रका शहरी बस्ती बाढी तथा डुवानको जोखिममा रहेका छन्। एकीकृत जलस्रोत नीति तथा नदी बेसिन गुरुयोजना अद्यावधिक हुन नसक्दा जलविद्युत, सिँचाइ, खानेपानी लगायतका क्षेत्रमा जलस्रोतको एकीकृत तथा समन्वयात्मक व्यवस्थापन तथा उपयोग नहुनु, विभिन्न किसिमका जलस्रोतको परिमाण तथा गुणस्तर सम्बन्धी तथ्याङ्कहरूको संकलन तथा व्यवस्थापन पर्याप्त नभएको कारण अध्ययन, अनुसन्धान तथा योजना प्रभावकारी रूपले कार्यान्वयन हुन नसक्नु आदि यस क्षेत्रका मुख्य समस्या रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

उपलब्ध जलस्रोतको समुचित, बहुआयामिक र समन्वयात्मक उपयोग सहित एकीकृत जलाधार व्यवस्थापन गर्नु, जलवायु परिवर्तनको असरलाई ध्यानमा राखी जलस्रोतको समुचित उपयोग गर्नु, जलवायु परिवर्तनका नकरात्मक असरलाई न्यूनीकरण गर्ने उपाय समयमै अवलम्बन गरी जोखिम व्यवस्थापन गर्नु, जलउत्पन्न विपद्बाट सिर्जित क्षतिलाई न्यूनीकरण गर्नु, जलाधार क्षेत्रको बढ्दो क्षयीकरणका कारण गेग्रान बहाव अत्यधिक हुन गई नदीको पिँधको सतह बढ्दै जाने क्रमलाई रोकथाम गर्नु, नदी किनारालाई संरक्षण गर्न रेखाङ्कन गरी जोनिङ्ग गर्नु तथा जोखिमयुक्त

स्थानको पहिचान गरी दिगो व्यवस्थापन गर्नु, अध्ययन अनुसन्धानको लागि आवश्यक जनशक्ति र पूर्वाधारको विकास गर्नु, जलस्रोतको व्यवस्थापन, विकास र उपयोग सम्बन्धमा अन्तरनिकाय एवम् संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वय गर्नु, द्विपक्षीय लाभ हुने गरी अन्तरदेशीय नदीको व्यवस्थापन र उपयोग गर्नु प्रमुख चुनौती हुन् ।

जलस्रोतको पर्याप्त उपलब्धता हुनु, जलस्रोतको बहुआयामिक उपयोगको आवश्यकता महसुस तथा सम्भावना हुनु, नदी व्यवस्थापन कार्यबाट उकास भएको जमिनको कृषिजन्य र अन्य उपयोगको सम्भावना रहनु, नदी किनारामा निर्माण गरिएको तटबन्धलाई सडकको रूपमा प्रयोग गर्न सकिनु, यस क्षेत्रमा गर्नु पर्ने अनुसन्धान र विकासलाई संस्थागत गर्न जलस्रोत अनुसन्धान तथा विकास केन्द्रको स्थापना हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

जलस्रोतको दिगो उपयोगबाट समृद्ध नेपाल निर्माणमा योगदान ।

##### ४.२ लक्ष्य

जलस्रोतको समन्वयात्मक विकास र बहुआयामिक तथा समन्यायिक उपयोगबाट आर्थिक समृद्धि हासिल गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

- जलस्रोतको बहुआयामिक तथा समन्यायिक उपयोग मार्फत आर्थिक, सामाजिक र वातावरणीय क्षेत्रको विकास गर्नु ।
- जलाधार व्यवस्थापन तथा जलउत्पन्न विपद् न्यूनीकरण एवम् व्यवस्थापनबाट आर्थिक तथा सामाजिक क्षति न्यूनीकरण गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. जलस्रोतको बहुआयामिक तथा समन्वयात्मक विकासको लागि नीतिगत तथा संरचनागत सुधार गर्ने । | १. जलस्रोत क्षेत्रको एकीकृत, बहुउद्देश्यीय एवम् बहुआयामिक उपयोगको लागि विद्यमान नीतिगत तथा कानुनी प्रावधानलाई परिमार्जन तथा तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. जलाशययुक्त बहुउद्देश्यीय आयोजनाहरूको विकास मार्फत ऊर्जा उत्पादन, सिँचाई र जलस्रोतको अन्य उपयोगमा जोड दिइनेछ ।<br>३. जलस्रोतको विकास र उपयोगका लागि आवश्यक मापदण्ड, नर्म्स, निर्देशिका/कार्यविधिको परिमार्जन तथा विकास गरिनेछ । |
| २. अन्तरदेशीय नदीको द्विपक्षीय लाभ हुने गरी व्यवस्थापनमा जोड दिने ।                   | १. नेपाल भारतबीच जलस्रोत सम्बन्धी विभिन्न तहका संयन्त्रलाई प्रभावकारी बनाई जलस्रोतको बहुउद्देश्यीय उपयोग गरिनेछ ।   |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ३. जलस्रोत सम्बन्धी अनुसन्धान र विकासलाई गतिशील बनाउन आवश्यक पर्ने पूर्वाधार र क्षमताको विकास र विभिन्न अनुसन्धानमूलक संस्था र विश्वविद्यालयसँग सहकार्य गर्दै यस क्षेत्रको अध्ययन अनुसन्धान कार्यलाई प्रभावकारी बनाउने। | १. जलस्रोत क्षेत्रमा काम गर्ने निकायहरूको क्षमता विकासको लागि अध्ययन अनुसन्धानलाई प्राथमिकता दिनुका साथै प्रविधि प्रवर्द्धन तथा विस्तार गर्न विश्वविद्यालय र निजी क्षेत्रका संस्थासँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ।<br>२. अन्तरजलाधार जल स्थानान्तरण तथा जलाशययुक्त बहुउद्देश्यीय आयोजना लगायत बृहत् प्रकृतिका सिँचाइ तथा जल उत्पन्न विपद् व्यवस्थापन सम्बन्धी मोडलिङ्ग (Physical and Numerical Modeling) को कार्य गरिनेछ।  |
| ४. जलाधार व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी बनाउनुको साथै बाढी पहिरोजन्य विपद्को दिगो एवम् भरपर्दो व्यवस्थापनका लागि संरचनागत तथा गैरसंरचनागत प्रविधिको उपयोग र जनचेतना अभिवृद्धिका कार्य गर्ने।                                 | १. योजनाबद्ध नदी नियन्त्रण तथा व्यवस्थापनको लागि गुरुयोजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ।<br>२. जोखिमयुक्त बाढी तथा पहिरो क्षेत्रको पहिचान एवम् लगत संकलन गरी जोखिम नक्सा (Hazard Map) तयार गरिनेछ।<br>३. नदी किनारा तथा प्रवाह क्षेत्रको रेखाङ्कन तथा त्यस्ता क्षेत्रहरूको भू-उपयोग योजना तयार गरी कृषि, उद्योग र पर्यटनको विकासमा उपयोग गरिनेछ।<br>४. एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनलाई प्राथमिकताका साथ अघि बढाई ऊर्जा, सिँचाइ र कृषिमा उपयोग गरिनेछ।<br>५. गैरसंरचनागत प्रविधितर्फ बायो इन्जिनियरिङ्गको कार्य तथा जल विपद् सम्बन्धी तालिम कार्यहरूलाई अगाडि बढाइनेछ। |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

एकीकृत जलस्रोत नीति तर्जुमा भई कार्यान्वयनमा आएको हुने, नयाँ जलस्रोत ऐन बनेको हुने, जलस्रोतको विकास तथा उपयोगका लागि आवश्यक मापदण्ड, निर्देशिका/कार्यविधि बनेको हुने, नदी बेसिनको एकीकृत विकास तथा व्यवस्थापनका लागि नदी बेसिनहरूको योजना तयार भएको हुने, जोखिमयुक्त बाढी तथा पहिरो क्षेत्रको पहिचान गरी जोखिम नक्सा तयार भएको हुने, करिब ३०० कि.मि. तटबन्ध तथा नदी नियन्त्रण संरचना निर्माण भई करिब १,१०० हेक्टर जमिन उकास भएको हुनेछ।

#### ६.१.६ वन, जैविक विविधता तथा जलाधार

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको कुल भू-भागको ४४.७४ प्रतिशत ओगटेको वन क्षेत्र महत्वपूर्ण प्राकृतिक सम्पदा हो। वन, वनस्पति, वन्यजन्तु, जैविक विविधता र जलाधार व्यवस्थापनलाई समेट्ने यो क्षेत्र प्रत्यक्ष रूपमा पर्यापर्यटन, जलविद्युत, कृषि, पशुपालन, स्वच्छ पर्यावरण र वन तथा जडिबुटीमा आधारित उद्योगसँग गाँसिएको छ। यस क्षेत्रबाट प्राप्त हुने काठ,

दाउरा, जडिबुटी, हरित उद्यम र पर्यापर्यटनको विस्तार समृद्धिका आधार हुन् भने स्वच्छ पर्यावरण, हरियाली, जैविक विविधता, प्राकृतिक रमणीयता, समुन्नत जलाधार, प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापनमा महिला, आदिवासी तथा स्थानीय समुदायको सहभागिता एवम् पहुँच र लाभको निष्पक्ष र न्यायोचित वितरण सुखी नेपालीका महत्वपूर्ण सूचक हुन्। नेपालमा उपलब्ध वानस्पतिक स्रोत तथा जडिबुटीको अध्ययन, अनुसन्धान, अभिलेखीकरण तथा दर्ता र गुण पहिचान गर्दै मुलुकभित्र नै मूल्य अभिवृद्धि गरी तुलनात्मक लाभ लिन सकिने प्रचुर सम्भावना रहेको छ।

जैविक विविधताको दृष्टिले नेपाल सम्पन्न मुलुक हो। नेपालमा ११८ प्रकारका पारिस्थितिकीय प्रणाली, ७५ प्रकारका वनस्पति वर्ग, ३५ प्रकारका वन, ११,९७१ वनस्पति प्रजाति र ११,८६१ प्राणी प्रजाति पहिचान भएका छन्। २० वटा संरक्षित क्षेत्र, १० वटा अन्तर्राष्ट्रिय महत्वका सिमसार क्षेत्र, ११ वटा वनस्पति उद्यान, २२,६०० वटा सामुदायिक वन र १० हजार भन्दा बढीको संख्यामा रहेका अन्य समुदायमा आधारित वनहरू र वन बाहिर ग्रामीण महिला, किसान वा परिवारका निजी खेतबारीमा लाखौंको संख्यामा रहेका निजी/पारिवारिक वन, कृषि वनमा जैविक विविधताको संरक्षण भइरहेको छ। सिमसार संरक्षण, नदी किनार संरक्षण, क्षतिग्रस्त भूमिको पुनर्स्थापना, पानीको मुहान संरक्षण जस्ता कार्य मार्फत बृहत् जलाधार व्यवस्थापनमा टेवा पुगिरहेको छ। नेपालमा भित्रिने विदेशी पर्यटकमध्ये ६० प्रतिशतभन्दा बढीले संरक्षित क्षेत्र र सामुदायिक वनमा भ्रमण गर्ने गरेको पाइएको छ।

## २. प्रमुख समस्या

वनक्षेत्रको अर्थतन्त्रमा उल्लेख्य रूपमा योगदान पुग्ने गरी व्यवसायिक व्यवस्थापन र उपयोग गर्न नसक्नु, यस क्षेत्रले प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्ष रूपमा समग्र अर्थतन्त्रमा पुर्‍याएको योगदानलाई राष्ट्रिय लेखा प्रणालीमा गणना गर्न नसक्नु, पूर्वाधार विकास र पर्यावरणीय प्रणालीबीच योजनाबद्ध तरिकाले सन्तुलन कायम गर्न नसक्नु, वन अतिक्रमण, वन्यजन्तुको चोरी शिकार तथा अवैध व्यापार, वन्यजन्तुको प्रकोप र मानव वन्यजन्तु द्वन्द्वलाई प्रभावकारी रूपमा नियन्त्रण एवम् व्यवस्थापन गर्न नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

उपलब्ध वन, वनस्पति तथा जैविक विविधताको पूर्ण क्षमतामा सदुपयोग गर्नु, वन, जैविक विविधता तथा जलाधार व्यवस्थापनको कार्यमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकार, वन समूह र निजी क्षेत्र बीच प्रभावकारी समन्वय र सहकार्यको वातावरण निर्माण गर्नु, वन, वन्यजन्तु लगायत जैविक विविधता संरक्षण, जलाधार व्यवस्थापनका कार्य र मुलुकको भौतिक एवम् आर्थिक विकासबीच उत्पन्न हुने द्वन्द्व व्यवस्थापन गर्नु, आनुवंशिक स्रोतमाथि पहुँच र लाभ बाँडफाँट गर्न आवश्यक कानून निर्माण र प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु, यस क्षेत्रबाट उत्पादित वस्तु तथा सेवाहरूको विस्तार र तिनबाट प्राप्त लाभको वर्गीय, लैंगिक तथा सामाजिक रूपमा समन्यायिक बाँडफाँट गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

नेपालको प्राकृतिक स्रोतमध्ये वन, जैविक विविधता तथा जलाधार क्षेत्र प्रत्यक्ष रूपमा जनताको जीविकोपार्जनसँग जोडिएको महत्वपूर्ण विषय हुनाले भूपरिधिस्तर सुधारसहित यिनको दिगो व्यवस्थापन मार्फत आय र

रोजगारी वृद्धि गरी मुलुकको समृद्धिमा महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउने सम्भावना रहेको छ । संघीय संरचना अनुसार संघ, प्रदेश र स्थानीय तह क्रियाशील रहेका हुँदा वन तथा जैविक विविधता संरक्षण र व्यवस्थापनमा स्रोत, साधनको उपलब्धता सहज हुनका साथै अपनत्वमा समेत वृद्धि हुने देखिन्छ । महिला, दलित, आदीवासी तथा स्थानीय समूह सम्मिलित सामुदायिक वन लगायतका समुदायमा आधारित ३० हजार भन्दा बढी वन समूह मार्फत वनको व्यवस्थापन, वनमा आधारित उद्योग र पर्या-पर्यटन प्रवर्द्धन, वातावरण व्यवस्थापन र जलवायु परिवर्तनको असर न्यूनीकरण गर्न सकिने र वनको संरक्षण एवम् विकास मार्फत कार्बन संरक्षण र सञ्चितीबाट अन्तर्राष्ट्रिय भुक्तानीमा पहुँच पुऱ्याउन सकिने अवसर छ । जैविक विविधता र प्राकृतिक रमणीयता सहितका संरक्षित क्षेत्र, समुदायद्वारा व्यवस्थित वन, कबुलियती वन र कृषि वनमा पर्यटन विकास र विस्तार गर्दै वन्यजन्तु र वनस्पतिबाट देशलाई विश्वमा चिनाउन सकिने अवसर रहेको छ । मुलुकको झण्डै ६० लाख हेक्टर राष्ट्रिय वन क्षेत्रमध्ये एक तिहाइलाई मात्र दिगो वन व्यवस्थापनमा लैजाँदा हालको करिब १.५ करोड घन फिट प्रतिवर्ष काठको उत्पादनलाई बढाएर प्रतिवर्ष १० करोड घन फिट भन्दा बढी पुऱ्याउन सकिने अध्ययनले देखाएको छ । बहुमूल्य जडिबुटीहरू देशभित्रै प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धिका चरण पूरा गरी “नेपालमा बनाउँ (Make in Nepal), प्रयोग र निर्यात गरौं” भन्ने अभियानका साथ उत्पादनहरूको व्यावसायिकरण गर्न सक्ने सम्भावना रहेको छ ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

वन क्षेत्रको दिगो व्यवस्थापन र उद्यमशीलताबाट समृद्धि र सुखमा योगदान ।

##### ४.२ लक्ष्य

वन, जैविक विविधता तथा जलाधारको दिगो र सहभागितामूलक व्यवस्थापनबाट वातावरणीय सन्तुलन र दिगो विकास कायम राख्दै वनजन्य उद्यम तथा पर्यापर्यटनको विकास एवम् वनजन्य वस्तु तथा सेवाको उत्पादन, मूल्य अभिवृद्धि एवम् न्यायोचित वितरण मार्फत अर्थतन्त्रमा यस क्षेत्रको योगदान वृद्धि गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. वन, जैविक विविधता तथा जलाधार सम्पदाको उत्पादकत्व, उत्पादन र वातावरणीय सेवामा अभिवृद्धि गर्नु ।
२. वन, जैविक विविधता र जलाधारको संरक्षण, पुनर्स्थापना र दिगो उपयोग गर्नु ।
३. वन, जैविक विविधता तथा जलाधार सम्पदाबाट प्राप्त लाभको न्यायोचित वितरण गर्नु ।
४. वन, जैविक विविधता तथा जलाधार क्षेत्रमा अध्ययन, अनुसन्धानलाई प्रवर्द्धन गरी वनमा आधारित उद्यम विकासमा उपयोग गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. वन क्षेत्रको पूर्ण क्षमताको उपयोग हुने गरी सहभागितामूलक व्यवस्थापन र प्रकृतिमा आधारित पर्यटनको विकासवाट वस्तु र सेवाको विस्तार र विविधीकरण गर्ने । | <p>१. प्राकृतिक तथा वृक्षारोपण गरिएको वनको अवस्था अनुसार दिगो रूपमा पूर्ण क्षमतामा काष्ठ र गैरकाष्ठ वन पैदावार (आयुर्वेद चिकित्सा प्रणालीमा उपयोगी हुने समेत) को उत्पादन वृद्धि हुने गरी राष्ट्रिय (सामुदायिक वन लगायतका समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन समेत), निजी र सार्वजनिक वनहरूको व्यवस्थापन योजनाहरूलाई परिमार्जन गरी प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. सामुदायिक वन व्यवस्थापन मार्फत वन नर्सरी, कृषि वन र वनजन्य उद्यम विकासमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>३. सबै संरक्षित क्षेत्र, सामुदायिक वन र समुदायमा आधारित व्यवस्थित वनहरूलाई प्रकृतिमा आधारित पर्यटनको गन्तव्य बनाउँदै गुणस्तरीय पर्यटकहरूको संख्यामा उल्लेख्य वृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>४. पर्सा र शुक्लाफाँटा राष्ट्रिय निकुञ्जलाई प्राकृतिक चिडियाखानाको रूपमा निरन्तरता दिइनेछ ।</p> <p>५. व्यवसायीकरण हुन सक्ने जडिबुटी एवम् गैरकाष्ठ वन पैदावारहरूको पकेट क्षेत्र निर्धारण गरी व्यावसायिक योजना सहितको खेती प्रविधिको विकास र विस्तार एवम् जडिबुटी प्रशोधन केन्द्रको स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>६. हिमाली क्षेत्रदेखि तराई क्षेत्रसम्मका खाली निजी/पारिवारिक वन वा सार्वजनिक/सामुदायिक, सरकारी जग्गाहरूमा कृषि वनको विकासका लागि सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>७. वनमा आधारित कार्बन व्यापारका लागि रेडप्लस तयारी कार्यक्रम सम्पन्न गरी अन्तर्राष्ट्रिय संयन्त्र मार्फत भुक्तानी दाबी गरिनेछ ।</p> <p>८. महिला, दलित, आदिवासी तथा स्थानीय समुदाय सम्मिलित वन उपभोक्ता समूहद्वारा सहकारी निर्माण र समुदाय, सरकारी र निजी क्षेत्रको साझेदारीमा पुँजी वृद्धि गरी वन पैदावारलाई नतिजामा आधारित पर्यापर्यटन, काष्ठ फर्निचर लगायतका उद्योगमा लगाउने वातावरण निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>९. नेपालका वनस्पति स्रोतको सारतत्वबाट उत्पादित वस्तु तथा फर्मुलालाई सदुपयोग, बजारीकरण, व्यावसायिक रण र निर्यात गरिनेछ ।</p> <p>१०. नरम प्रजातिको काठको स्तरोन्नति, काष्ठ प्रविधिको विकास र उत्पादनमा विविधीकरण तथा गैह्रकाष्ठ वन पैदावारको गुणस्तर निर्धारण र वन प्रमाणीकरण गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>११. निजी वन एवम् परिवारिक निजी वनको जमिनमा वृक्षारोपण र खेतीका लागि व्यावसायिक योजना निर्माण, सहूलियत ऋण अनुदान, बिमा र हरित सम्पत्ति धितो राख्न सकिने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>१२. क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण, वन सम्बर्द्धन, कृषि वनको विस्तार, वन उद्यमको विकास र वन पैदावारको सहज आपूर्तिको लागि नेपाल वन निगम र वन विकास कोषको स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>१३. काष्ठजन्य वन पैदावारको स्वदेशी उत्पादन र आपूर्ति बढाई विदेशबाट हुने आयातलाई प्रतिस्थापन गरिनेछ ।</p> <p>१४. सरकार, सामुदायिक वन र निजी क्षेत्रको सहभागितामा वन्यजन्तुको पालन, प्रजनन, व्यावसायिकरण र विदेश निकासीका लागि आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>१५. प्रत्येक प्रदेशमा कम्तीमा एउटा काठ र एउटा गैरकाष्ठ वा जडिबुटीमा आधारित मझौला वा ठूलो उद्योगको स्थापना गरिनेछ । यसका लागि आवश्यकता अनुसार सार्वजनिक, सामुदायिक, सहकारी तथा निजी क्षेत्रसँग साझेदारी गरिनेछ ।</p>   |
| <p>२. वन, वनस्पति, वन्यजन्तु तथा जैविक विविधताको भूपरिधिस्तर र एकीकृत रूपमा संरक्षण र व्यवस्थापन गर्ने ।</p> | <p>१. संरक्षणका कार्यलाई भू-परिधिस्तर र चरन क्षेत्र समेतमा रणनीतिक योजना निर्माण र संरक्षित क्षेत्रहरूको महिला, दलित, आदीवासी सहित स्थानीय समुदायको सहभागितामा एकीकृत व्यवस्थापन योजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. सरकारद्वारा व्यवस्थित, सामुदायिक, साझेदारी, कबुलियती, लगायत सबै वन व्यवस्थापन पद्धतिमा वन, चरनक्षेत्र, सिमसार र जैविक विविधता संरक्षणलाई समेत सम्बोधन हुने गरी दिगो वन व्यवस्थापन योजना निर्माण र रैथाने (इन्डेमिक) तथा संकटापन्न अवस्थामा रहेका प्रजातिको संरक्षण कार्ययोजना बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. ताल तथा तलैयाको संरक्षण र विकास गरी पर्यटन प्रवर्द्धनसँग आबद्ध गरिनेछ ।</p> <p>४. उपयुक्त प्रजातिको पहिचान गरी सबै स्थानीय तहमा वन नर्सरी स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>५. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको समन्वयमा चुरेको संरक्षण र सम्बर्द्धनका लागि मौजुदा 'चुरे क्षेत्र संरक्षण कार्यक्रम'लाई पुनर्संरचना गरी प्राथमिकताका साथ सहभागितामूलक व्यवस्थापन सहित थप प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>६. मौजूदा सिमसारको संरक्षण, पहिचान र अभिलेखिकरण गर्दै रामसार सूचीमा सूचीकृत सिमसार क्षेत्रको सहभागितामूलक व्यवस्थापन योजना बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>७. वन्यजन्तु र तिनको वासस्थान तथा दुर्लभ वनस्पतिको संरक्षण र व्यवस्थापनको लागि विद्यमान संरक्षित क्षेत्रलाई कायम राख्दै संवेदनशील जैविक विविधता क्षेत्रको पहिचान र विस्तार गर्ने गरी परस्थानीय एवम् स्वस्थानीय स्तरमा सम्भाव्यता र आवश्यकताको आधारमा जैविक स्रोत संरक्षणलाई निरन्तरता दिइनेछ ।</p>   |
| <p>३. भौतिक पूर्वाधार विकासका लागि वन क्षेत्रको उपयोग गर्दा एकीकृत प्रणालीको अवलम्बन गर्ने र यसको संरक्षण र विकासमा एकीकृत सोच बनाउने ।</p> | <p>१. वन क्षेत्र भएर जाने पूर्वाधार विकासका लागि निश्चित क्षेत्र (Corridor) को व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. संरक्षित क्षेत्रहरू तथा महत्वपूर्ण जैविक मार्गहरूमा भौतिक पूर्वाधार निर्माण गर्दा संरक्षणमैत्री संरचना निर्माण गर्न आवश्यक समन्वय र सहकार्य गरिनेछ ।</p> <p>३. मानव-वन्यजन्तु द्वन्द्व न्यूनीकरणका लागि चेतनामूलक कार्यक्रम, उचित क्षतिपूर्तिको व्यवस्था र आवश्यक भौतिक संरचना निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>४. भौतिक पूर्वाधार निर्माण र विकास आयोजनाहरूको दिगोपनको लागि बायो ईन्जिनियरिङ्ग कार्यलाई अभिन्न अंग बनाइनेछ ।</p>   |
| <p>४. नदी प्रणालीमा आधारित एकीकृत जलाधार व्यवस्थापन गर्ने ।</p>   | <p>१. कोशी, गण्डकी, कर्णाली र महाकाली नदी बेसिन लगायत नदी प्रणालीको विभिन्न तहको समन्वयमा एकीकृत जलाधार व्यवस्थापन नीति र योजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. भू-कम्पबाट प्रभावित क्षेत्रका बस्ती नजिकको पहिरो तथा क्षतिग्रस्त भूमिहरूको पुनरुत्थानको लागि कम खर्चिलो प्रविधि र कृषि वन प्रणालीको विकास गरी प्रविधि हस्तान्तरण गरिनेछ ।</p> <p>३. नदी प्रणाली लगायत मध्यवर्ती क्षेत्रको नदी जन्य वन पैदावार, ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको आकलन गरी निर्दिष्ट क्षेत्रहरूबाट त्यस्ता वस्तुहरूको उत्खनन, संकलन, प्रशोधन, ओसार पसार र बिक्री वितरणलाई व्यवस्थित एवम् प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>४. जलाधार संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्न सार्वजनिक र निजी जग्गामा जल पुनर्भरणका लागि विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>५. वन, जैविक विविधता तथा जलाधार व्यवस्थापनमा लैंगिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरणलाई संस्थागत गरी यस क्षेत्रबाट प्राप्त लाभको न्यायोचित वितरण गर्ने ।</p> | <p>१. वन क्षेत्रमा सामुदायिक वन लगायतका वन व्यवस्थापन पद्धतिमा लैंगिक तथा सामाजिक समावेशीकरण रणनीतिलाई समयसापेक्ष परिमार्जन गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. सबै स्थानीय तहमा रहेका जैविक विविधता र त्यससँग जोडिएका आदिवासी जनजाति तथा स्थानीय समुदायका परम्परागत ज्ञान, सीप, अभ्यास, सामाजिक-सांस्कृतिक पद्धति, कला, बौद्धिक सम्पत्तिको अभिलेखीकरण तथा दर्ता गरिनेछ ।</p> <p>३. एक वडा एक स्थानीय वन तथा जलाधार व्यवस्थापन स्रोत व्यक्ति परिचालनको अवधारणा लागू गरिनेछ ।</p>  |
| <p>६. अनुसन्धान निकाय, विश्वविद्यालय र गैरसरकारी संस्थाबीच समन्वय तथा सहकार्य गरी शोध, अध्ययन, अनुसन्धान, जनचेतना र क्षमता अभिवृद्धि गर्ने ।</p>             | <p>१. वन क्षेत्रसँग सम्बन्धित विश्वविद्यालय, अध्ययन संस्थान, प्राविधिक शिक्षालयहरूसँग सहकार्य गरी विद्यार्थीहरूलाई वन व्यवस्थापन, वन उपभोक्ता समूहहरू परिचालन, वनमा आधारित उद्योगहरूमा इन्टरनशिप गराउने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>२. राष्ट्रिय वनस्रोत सर्वेक्षण (राष्ट्रिय तथा निजी पारिवारिक वन) लाई निरन्तरता दिई वन क्षेत्रको सूचना प्रणालीलाई संस्थागत गर्दै अनुगमन तथा मुल्यांकन पद्धतिलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>३. वन क्षेत्रसँग सम्बन्धित शोध, अध्ययन अनुसन्धान, अनुगमन तथा मूल्याङ्कनमा लगानी वृद्धि गर्दै विश्वविद्यालय तथा संघ संस्थाहरूसँग आपसी समन्वय र साझेदारी गरिनेछ ।</p> <p>४. नेपालमा रहेका रैथाने (इन्डेमिक) वनस्पति लगायत उपयोगी जडिबुटीको अध्ययन, अनुसन्धान तथा विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. वन क्षेत्रको उत्पादकत्व वृद्धि र जैविक विविधता संरक्षण गर्न स्थानीय वन सहजकर्ता समेतको क्षमता र सीप विकास तथा प्रचार प्रसार कार्यका लागि राष्ट्रिय रणनीति निर्माण गरिनेछ ।</p> |
| <p>७. वन क्षेत्रको दिगो व्यवस्थापनका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वय गरी आवश्यक कानून निर्माण र कार्यान्वयन गर्ने ।</p>                              | <p>१. सामुदायिक वन लगायत समुदायमा आधारित वन, सरकारद्वारा व्यवस्थित वन समेतमा वन उद्यम विकास गर्दै निजी तथा पारिवारिक वनबाट उत्पादित वन पैदावारहरूको संकलन, ओसारपसार, प्रशोधन, बिक्री वितरण र बजारीकरणलाई सरलीकरण गर्ने गरी संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा नियमन गर्न आवश्यक नीति, कानून तथा कार्यविधि निर्माण तथा परिमार्जन गरिनेछ ।</p> <p>२. संस्थागत तथा व्यक्तिगत तवरबाट गरिने वन अतिक्रमण, चोरी निकासी, वन डढेलो जस्ता अपराधलाई निरुत्साहन र मिचाह बाह्य प्रजातिको नियन्त्रण</p>  |

| रणनीति | कार्यनीति  |
|--------|--|
|        | <p>गरी वन हासलाई रोक्दै संवेदनशील वासस्थान संरक्षण गर्नका लागि मौजुदा रणनीतिमा समयसापेक्ष परिमार्जन सहित कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. आनुवंशिक स्रोतमा पहुँच र लाभको न्यायोचित बाँडफाँटका लागि कानुनी व्यवस्था र संरचना निर्माण गरी कार्यान्वयनमा लगिनेछ ।</p> <p>४. वन क्षेत्रका सरोकारवाला निकायहरूको स्वरूप, कार्यशैली र आचरणलाई रूपान्तरण गरी पारदर्शी, नतिजामुखी र जवाफदेही बनाइनेछ ।</p> <p>५. तीन तहका सरकारबीच वन सम्बन्धी अनुगमन र समन्वयका लागि उपयुक्त कानुनी संरचना निर्माण गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यसम्ममा लोपोन्मुख, संकटापन्न र जोखिममा परेका प्रजाति/ वनस्पतिको संरक्षित संख्या ५८९ कायम भएको हुनेछ । महिला, दलित, आदिवासी तथा स्थानीय समुदायको सहभागितामा वन संरक्षणका सघन क्रियाकलाप सञ्चालन भई वन क्षेत्र ४४.७४ प्रतिशत नै कायम भएको हुनेछ । थप २ हजार सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन भई सामुदायिक वनको संख्या २४ हजार पुगेको हुनेछ । सामुदायिक, साझेदारी, कबुलियती लगायत समुदायमा आधारित व्यवस्थापन अन्तर्गत रहेको राष्ट्रिय वनको हिस्सा ४५ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । वन डढेलो, वन पैदावारको अवैध संकलन तथा ओसारपसार र अतिक्रमण, रोकथाम र नियन्त्रण गर्दै वनको स्वास्थ्यमा सुधार भएको हुनेछ । तराईमा ३० हजार हेक्टर निजी वन/पारिवारिक वन स्थापना भएको हुनेछ । राष्ट्रिय वन र सामुदायिक वन तथा निजी/पारिवारिक वन दुवैतर्फ गरी एक लाख हेक्टर कृषि वन विस्तार भएको हुनेछ । तराईमा थप २० हजार हेक्टर सार्वजनिक वन विकास भएको हुनेछ । ठूला नदी प्रणालीको एकीकृत बृहत् जलाधार (वेसिन) व्यवस्थापन नीति तथा योजना तयार भई लागू भएको हुनेछ । विद्यमान संरक्षित क्षेत्रलाई कायम राख्दै त्यस्ता क्षेत्रको बृहत् भूपरिधीय क्षेत्रसँग एकीकृत व्यवस्थापन भएको हुनेछ । संरक्षित क्षेत्र २३.४ प्रतिशत कायम भएको हुने तथा सात वटै प्रदेशमा वनस्पति प्रयोगशला स्थापना भएको हुनेछ । १० वटा वन्यजन्तु पालनको फार्म स्थापना भई सञ्चालन भएका हुनेछन् । काठ तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारमा आधारित ठूला वा मझौला १४ वटा उद्योग स्थापना भएका हुनेछन् । हाल प्रतिवर्ष करिब १ करोड ५० लाख घन फिट काठ उत्पादन हुँदै आएकोमा योजनाको अन्तमा प्रतिवर्ष कम्तीमा ३ करोड घन फिट काठ उत्पादन भई काष्ठजन्य पैदावारमा आत्मनिर्भर भएको हुनेछ ।

#### ६.२ उद्योग, वाणिज्य, आपूर्ति र पर्यटन

##### ६.२.१ उद्योग

##### १. पृष्ठभूमि

उद्योग क्षेत्र आर्थिक विकासको प्रमुख आधार स्तम्भको रूपमा रहेको छ । तीव्र औद्योगिकीकरणले मुलुकको आर्थिक समुन्नतिमा सहयोग पुऱ्याउँदछ । नेपालको संविधानले अर्थतन्त्रको विकासका लागि उद्योगधन्दा र स्रोत-

साधनको संरक्षण र प्रवर्द्धन गरी नेपाली श्रम, सीप र कच्चा पदार्थमा आधारित स्वदेशी लगानीलाई प्राथमिकता दिने र राष्ट्रिय हित अनुकूल आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धनका क्षेत्रमा वैदेशिक पुँजी तथा प्रविधिको लगानीलाई आकर्षित गर्दै औद्योगिक पूर्वाधार विकासमा प्रोत्साहन र परिचालन गर्ने नीति लिइएको छ। समग्र उद्योग क्षेत्रको विकासमा निजी क्षेत्रको नेतृत्वदायी भूमिका रहने र सरकारले प्रभावकारी उत्प्रेरक, नियामक र सहजकर्ताको भूमिका निर्वाह गरिरहेको अवस्था छ। औद्योगिक नीतिले सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सहकार्यमा दिगो एवम् बृहत् आधारसहितको औद्योगिक विकासको माध्यमबाट राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा उल्लेख्य योगदान पुऱ्याउने लक्ष्य लिएको छ। लगानीमैत्री वातावरण निर्माण गरी औद्योगिकीकरणलाई तीव्रता दिन बौद्धिक सम्पत्ति ऐन तथा विदेशी लगानी सम्बन्धी ऐन परिमार्जन तथा औद्योगिकीकरण सम्बन्धी कानून तर्जुमाको क्रममा रहेका छन्।

संघीय संरचनाले आर्थिक गतिविधिको विस्तार र प्रभावकारी मागको सिर्जना गर्ने हुँदा यो अवसरलाई उपयोग गर्दै अन्तरदेशीय आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक करिडोर, विशेष आर्थिक क्षेत्र र उद्योग ग्राम लगायत पूर्वाधार विकास गर्नुपर्नेछ। औद्योगिकीकरणका लागि स्थानीय श्रम, सीप र कच्चा पदार्थमा आधारित साना उद्योगहरूको संरक्षण गरी ठूला र आयात व्यवस्थापन गर्ने क्षेत्रमा वैदेशिक लगानी भित्र्याउन लगानीमैत्री वातावरण तयार गर्नुपर्नेछ। साथै, अन्तरप्रदेश र संघ बीच समन्वय स्थापित गराई औद्योगिक विकासलाई गतिशिलता प्रदान गर्नु पर्नेछ। यसैगरी, उद्योगमा नयाँ प्रविधिहरूको प्रयोग गरी उत्पादन लागत कम गर्दै उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि र रोजगारीका अवसर सिर्जना गर्नुपर्ने भएको छ। श्रमिक, रोजगारदाता र सरकारबीचको सम्बन्ध सहज बनाउँदै राष्ट्रिय उद्योग धन्दाको संरक्षणका साथै स्वदेशी तथा विदेशी लगानी अभिवृद्धि गरी कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको योगदान अभिवृद्धि गर्नुपर्ने भएको छ। आर्थिक वृद्धिको सम्वाहकको रूपमा रहेको कृषि, पर्यटन, पूर्वाधार र जलविद्युत्को विकासको परिपूरकको रूपमा औद्योगिकीकरणलाई अग्र तथा पृष्ठ सम्बन्धका आधारमा निर्यात प्रवर्द्धन गर्ने गरी विकास गर्नुपर्ने हुन्छ।

आ.व. २०७४/७५ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा द्वितीय क्षेत्रको योगदान १४.१८ प्रतिशत र उत्पादनमूलक उद्योग क्षेत्रको योगदान ५.४ प्रतिशत रहेको छ। मुलुकमा स्थापित ११ औद्योगिक क्षेत्रमध्ये हाल १० वटा सञ्चालनमा छन्। कुल राष्ट्रिय रोजगारीमा यस क्षेत्रको योगदान ८.१ प्रतिशत रहेको छ।

## २. प्रमुख समस्या

उद्यमशील सोचको विकास हुन नसक्नु, उत्पादनशील क्षेत्र र उद्योगमा पुँजीको परिचालन र उपलब्धता हुन नसक्नु, उद्योग र लगानीका विषयहरू एकद्वार प्रणालीमा आबद्ध नहुनु, औद्योगिक उत्पादनहरू लागत प्रतिस्पर्धी तथा गुणस्तरीय नहुनु र निर्यातयोग्य वस्तुहरूको उत्पादन र विविधीकरण नहुनु यस क्षेत्रमा प्रमुख समस्या रहेका छन्। लघु, घरेलु तथा साना उद्योग प्रवर्द्धनमा पुँजी, सीप, कच्चा पदार्थ र प्रविधिको संयोजन गराउन निजी क्षेत्रले नेतृत्व लिन नसक्नु, औद्योगिकीकरणमा नवीन प्रविधि र उपकरणहरूको प्रयोग गर्न नसकिनु, उद्योग क्षेत्रमा औद्योगिक मूल्य शृंखला (Industrial Value Chain) को विकासमा सार्वजनिक-निजी-सहकारी साझेदारी नहुनु, साथै खुला सीमाना र अत्यधिक उदार नीतिका कारण अल्पकालीन मुनाफाको लागि आयात व्यापारमा व्यवसायीहरू आकर्षित हुनु यस क्षेत्रका थप समस्या हुन्। उद्योग तथा बजार अनुसन्धान र विकास नहुनु, दक्ष औद्योगिक प्राविधिक जनशक्ति पर्याप्त

मात्रामा नहुनु र उद्योगलाई अन्तर्निर्भर क्षेत्रहरू जस्तै कृषि, वन, खानि तथा खनिजजन्य क्षेत्रसँग एकीकृत र समन्वयात्मक रूपमा लैजान नसक्नु, स्वदेशी कच्चा पदार्थको कम उपयोग हुनु, उद्योगी एवम् लगानीकर्तालाई प्रोत्साहित गर्न सहूलियत प्रदान गर्न नसक्नु, औद्योगिक पूर्वाधारको कमी हुनु र उत्पादन तथा बजार अनुसन्धान र विविधीकरण नहुनु यस क्षेत्रका अन्य समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

लगानीमैत्री वातावरण सिर्जना गरी तुलनात्मक लाभ र प्रतिस्पर्धी क्षमताका उद्योग क्षेत्रमा स्वदेशी तथा वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्नु, आर्थिक उदारीकरण, विश्वव्यापीकरण र बहुपक्षीय व्यापार सम्झौताबाट सिर्जित चुनौती तथा अवसरको विश्लेषण गरी व्यापार र लगानीका क्षेत्रमा प्राथमिकता र आवश्यकता निर्धारण गर्नु पेट्रोलियम, धातु तथा बहुमूल्य खनिज पदार्थको उत्खनन तथा उपयोग गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्। औद्योगिक पूर्वाधारको विकास गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता प्राप्त हुने गरी उत्पादित वस्तु एवम् सेवाको गुणस्तर कायम गर्नु, नेपाली वस्तुलाई लेबलिङ र ब्राण्डिङको माध्यमबाट निर्यात वृद्धि गर्नु, बन्द भएका तथा रुग्ण उद्योगको व्यवस्थापन गर्नु, बौद्धिक सम्पत्तिको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्नु र कर प्रणालीबाट उत्पादनशील क्षेत्रका उद्योगमा वित्तीय उत्प्रेरणा भए तापनि कच्चा पदार्थ, अर्धप्रशोधित वस्तु र पार्टपुर्जामा रहेको उच्च भन्सार दर कम गर्नु यस क्षेत्रका थप चुनौती रहेका छन्।

आर्थिक समृद्धिको विषय साझा एजेण्डाको रूपमा रहनु, तुलनात्मक लाभका क्षेत्रको पहिचान हुनु, लचिलो श्रम नीति एवम् एकद्वार प्रणालीप्रति प्रतिबद्धता व्यक्त हुनु, खुला अर्थतन्त्र र अन्तर्राष्ट्रिय तथा क्षेत्रीय संगठनमा आबद्ध हुनु र लगानीमैत्री वातावरण सिर्जना हुने गरी नीतिगत, कानुनी, संरचनागत तथा प्रक्रियागत सुधारको सुरुआत हुनु, सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको विस्तार हुँदै जानु यस क्षेत्रका अवसर रहेका छन्। दुई ठूला निकटतम छिमेकी मुलुकको तीव्र आर्थिक वृद्धि र विस्तारको कारणले औद्योगिक वस्तु तथा सेवाको बजार उपलब्ध हुनु, औद्योगिक सम्बन्ध क्रमशः सुधार हुनु र गैरआवासीय नेपालीहरूलाई औद्योगिक विकासमा परिचालन गर्ने सम्भावना हुनु, ऊर्जाको उपलब्धता बढ्दै जानु, औद्योगिक उत्पादन एवम् खनिजजन्य वस्तुको उत्खनन हुँदै जानु, वन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवम् पर्यटन क्षेत्रलाई उद्योगसँग आबद्ध गरी विस्तार गर्ने प्रचुर सम्भावना हुनु, युवाको उद्योग व्यवसायप्रति आकर्षण बढ्दै जानु तथा गैरआवासीय नेपालीलाई नेपालको औद्योगिक विकासमा सहभागी गराउने सम्भावना बढ्दै जानु थप अवसरका रूपमा रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

आर्थिक समृद्धिका लागि दिगो, रोजगारमूलक र उच्च प्रतिफलयुक्त औद्योगिक विकास।

#### ४.२ लक्ष्य

औद्योगिक क्षेत्रको विकास र विस्तारद्वारा राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा उद्योग क्षेत्रको योगदान बढाउने।

#### ४.३ उद्देश्य

१. औद्योगिक उत्पादन वृद्धि गरी कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको योगदान बढाउनु।

२. उद्योगको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता वृद्धि गरी निर्यात प्रवर्द्धन र आयात व्यवस्थापन गर्नु ।
३. लगानीमैत्री वातावरण सिर्जना गरी उद्योग क्षेत्रमा स्वदेशी र वैदेशिक लगानी बढाउँदै रोजगारीका थप अवसर सिर्जना गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. औद्योगिक क्षेत्रको विकासका लागि नीतिगत, कानुनी र संस्थागत सुधार गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. उद्योग क्षेत्रलाई चौथो पुस्ताको औद्योगिक अवधारणा (Industry 4.0) अनुरूप रूपान्तरण गर्न संस्थागत र नीतिगत सुधार गरिनेछ ।</li> <li>२. उद्योग र लगानीसँग सम्बन्धित नीति तथा कानूनलाई आवश्यकतानुसार परिमार्जन र एक्रिडीटेशन कानून तर्जुमा एवम् कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>३. अनौपचारिक क्षेत्रको कारोबारलाई औपचारिकीकरण गरी कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा गणना गरिनेछ ।</li> <li>४. उत्पादकत्व अभिवृद्धि र गुणस्तरमा सुधार ल्याउन समग्र गुणस्तर व्यवस्थापन, निरन्तर सुधार, गुण चक्र जस्ता व्यवस्थापकीय ज्ञान र सीप प्रदान गर्ने गरी उद्यमी तथा व्यवसायीहरूको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> <li>५. उद्योग व्यवसाय स्थापना तथा सञ्चालनमा सहजता बनाउन प्रणालीगत सुधार गरिनेछ ।</li> <li>६. औद्योगिक बौद्धिक सम्पत्तिको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्न कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्थालाई सुदृढ बनाइनेछ ।</li> <li>७. औद्योगिक क्षेत्रमा वैदेशिक लगानी भित्र्याउनका लागि विदेश स्थित कूटनीतिक नियोगहरूको सघन रूपमा परिचालन गरिनेछ ।</li> <li>८. रोजगारी सिर्जना र गरिबी निवारण गर्न प्रदेश तथा स्थानीय तहसँगको सहकार्य र समन्वयमा लघु, घरेलु तथा साना उद्योगको संरक्षण र संवर्द्धन गरिनेछ ।</li> <li>९. स्थानीय तह मार्फत गरिबी निवारणका लागि लघु उद्यम विकास कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>१०. उद्योग स्थापना र उत्पादित वस्तुको बजारीकरणको लागि अन्तरसरकार समन्वय गरिनेछ ।</li> <li>११. स्थानीय स्रोत साधन र सम्भावना तथा तुलनात्मक लाभको आधारमा प्रादेशिक सन्तुलन कायम हुने गरी औद्योगिक क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र र औद्योगिक ग्राम निर्माण र सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | १२. औद्योगिक क्षेत्रमा सेवा प्रवाह गर्दा विद्युतीय माध्यमबाट सेवा प्रवाह गरी समय र लागतलाई न्यून गरिनेछ ।   |
| २. लगानीमैत्री वातावरण तयार गर्न प्रविधि प्रयोग, एकद्वार प्रणालीको विकास र औद्योगिक पूर्वाधार विकास गर्ने । | <p>१. सिमेन्ट, चिनी, फुटवेयर, औषधि, जुस, डेरी, चिया, पशिमना, हस्तकला लगायतका स्वदेशी कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगको प्रवर्द्धन र पूर्वाधार निर्माणमा सहयोग र सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>२. औद्योगिक क्षेत्रमा आवश्यक भौतिक पूर्वाधार निर्माण तथा विस्तार गर्न निजी क्षेत्रसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ ।</p> <p>३. अन्तरदेशीय आर्थिक क्षेत्र, विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक ग्रामहरूमा निजी क्षेत्रको उल्लेख्य संलग्नतामा पूर्वाधार निर्माण गरी सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>४. गैरआवासीय नेपालीको ज्ञान, सीप, पुँजी र प्रविधिलाई राष्ट्रिय उद्योग विकासमा उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>५. महिला उद्यमशीलता विकास गर्न महिला उद्यमी औद्योगिक क्षेत्र तथा उद्योग ग्राम स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>६. उद्योग/लगानीको दर्ता प्रणाली तथा उद्योगसँग सम्बन्धित सबै सेवालाई एकीकृत रूपमा उपलब्ध गराउन अन्तरनिकाय आबद्धता सहितको एकल बिन्दु सेवा प्रणाली विकास गरी प्रयोग गरिनेछ ।</p> <p>७. प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी भित्र्याउन सकिने सम्भावना भएका मुलुकसँग औचित्यताको आधारमा द्विपक्षीय लगानी सम्झौता गरी वैदेशिक सहायता माथिको निर्भरता क्रमशः हटाउँदै लगिनेछ ।</p> <p>८. वैदेशिक लगानीलाई क्षेत्रीय आबद्धता तथा उत्पादन र रोजगारमूलक क्षेत्रमा परिचालन गरिनेछ ।</p> |
| ३. उद्योग क्षेत्रलाई अन्य उत्पादनमूलक क्षेत्रको अन्तरसम्बन्धको आधारमा विकास र विस्तार गर्ने ।               | <p>१. उद्योगलाई कृषि, पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य उद्यमशील क्षेत्रसँग आबद्ध गर्ने गरी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. पर्वतीय अर्थतन्त्र (Mountain Economy) र औद्योगिक उत्पादन आदानप्रदान (Industrial product sharing) का अवधारणालाई कार्यान्वयन गर्न आवश्यक कार्यक्रम तर्जुमा गरिनेछ ।</p> <p>३. राष्ट्रसेवक तथा विद्यार्थीहरूले प्रयोग गर्ने लत्ता कपडा स्वदेशमै उत्पादन गरिनेछ र सम्पूर्ण नेपाली जनताहरूलाई स्वदेशमै उत्पादित वस्तुहरूको प्रयोग गर्न विशेष व्यवस्था मिलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>४. हरेक प्रदेशमा कम्तीमा एक आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र स्थापना गर्ने नीति अनुरूप सबै प्रदेशमा औद्योगिक क्षेत्र स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>५. सात वटै प्रदेशमा औद्योगिक तथा व्यावसायिक क्षेत्रमा उत्पादकत्व वृद्धि गरी आगामी पाँच वर्ष भित्रमा धेरै जस्तो अत्यावश्यक उपभोग्य वस्तु तथा सेवाहरूको उत्पादनमा आत्मनिर्भरता कायम गरिनेछ ।</p> <p>६. वातावरणमैत्री कृषिमा आधारित उद्योग स्थापनामा जोड दिइनेछ ।</p>   |
| <p>४. खानि तथा खनिजजन्य उद्योगको लागत प्रभावी र तुलनात्मक लाभका आधारमा विकास गर्ने ।</p>  | <p>१. खनिज र पेट्रोलियम पदार्थको उत्खनन, प्रशोधन र प्रयोग गर्न यस सम्बन्धी कानून संशोधन र सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. निजी क्षेत्रसँगको सहकार्य समेतमा वन पैदावार र बहुमूल्य पत्थर लगायत अन्य खनिजको प्रशोधन एवम् अन्वेषण सम्बन्धी अध्ययन अनुसन्धान गरिनेछ ।</p> <p>३. खानि तथा निर्माणजन्य उद्योगको स्थापना, विकास र विस्तारमा सहजीकरण तथा प्रवर्द्धन गरिनेछ । स्थानीय उपलब्धता र लागत प्रभावकारिताका आधारमा निर्दिष्ट स्थानहरूको पहिचान गरी ढुङ्गा, गिटी, चोकर, बालुवा लगायतका निर्माण सामग्री उत्खनन, प्रशोधन र उपयोगका लागि आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. स्थानीय स्तरका उद्योग ग्राममा वन पैदावार र खनिज पदार्थमा आधारित प्रशोधन उद्योग सञ्चालन गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> |
| <p>५. प्रतिस्पर्धी क्षमता र तुलनात्मक लाभ भएका स्वदेशी कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगमा सार्वजनिक-निजी-सहकारी साझेदारीमा लगानी परिचालन गर्दै आयात व्यवस्थापनमा जोड दिने ।</p> | <p>१. प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी, प्राविधिक जनशक्ति तथा आधुनिक प्रविधिको उपयोग गरी युरेनियम, फलाम, तामा, सुन, प्राकृतिक ग्यास तथा पेट्रोलियम पदार्थको अन्वेषण, प्रशोधन तथा उत्पादनमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>२. उच्च मूल्य कम आयतन (High value low volume) भएका वस्तुको उत्पादन वृद्धि गरी निर्यातमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>३. सूचना प्रविधिजन्य वस्तुहरूको उत्पादन गर्ने उद्योगलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>४. नेपालको उच्च हिमाली भेगमा उपलब्ध जडिबुटी तथा विभिन्न स्थानमा उपलब्ध किमती एवम् अर्धकिमती पत्थरको प्रशोधनका लागि प्रशोधन केन्द्रको स्थापना गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>५. अल्लो, केरा, वेत, बाँस जस्ता प्राकृतिक रेसामा आधारित वस्तुहरूको उद्यमशीलता प्रवर्द्धनका लागि यस्ता वस्तुको संकलन तथा प्रशोधन केन्द्रको स्थापना गरी प्रविधि सहयोग गरिनेछ ।</p> <p>६. लघु, घरेलु, साना तथा मझौला उद्योगमा सहूलियतपूर्ण कर्जा र अन्य उद्योगमा कर्जा प्रवाहलाई प्राथमिकता दिइनेछ ।</p> <p>७. कृषिजन्य, वनजन्य र खनिजजन्य उद्योगहरूमा स्थानीय स्रोत र कच्चा पदार्थको दिगो उपयोग उपयोगमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>८. तुलनात्मक लाभ भएका र प्रतिस्पर्धी वस्तु तथा सेवा पहिचान, प्रवर्द्धन र विकास गरिनेछ ।</p> <p>९. आयात व्यवस्थापन गर्ने तथा अत्यावश्यक वस्तु तथा सेवा उत्पादन गर्ने रूग्ण उद्योग पुनर्स्थापन गरी सञ्चालन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>६. उद्योगधन्दाको विकास र विस्तारका लागि क्षमता विकास, वित्तीय पहुँच र प्रवर्द्धनात्मक उपाय अवलम्बन गर्ने ।</p> | <p>१. औद्योगिक क्षमता अभिवृद्धि गर्न उद्योगमा नयाँ प्रविधिको प्रयोगलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>२. व्यवसाय सञ्चालनको लागि आवश्यक पुँजी उपलब्ध गराउन बैंक तथा वित्तीय संस्थासँग समन्वय गरी सहूलियत ब्याजदरमा कर्जा उपलब्ध गराउने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. द्विपक्षीय, क्षेत्रीय र बहुपक्षीय व्यापार सम्झौता अन्तर्गत रहेर स्वदेशी उद्योग धन्दालाई संरक्षण गरिनेछ ।</p> <p>४. नेपाली उत्पादनको तोकिएको गुणस्तर कायम गरी उद्योगको प्रतिस्पर्धी क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>५. व्यावसायिक किसान र महिला उद्यमीलाई सहूलियत सहितको वित्तीय पहुँचमा सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> <p>६. करार गरी वस्तु उत्पादन गर्ने उद्योगको स्थापना र सञ्चालनमा वित्तीय उत्प्रेरणा र सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>७. नवनिर्माणको लागि आवश्यक पर्ने निर्माण सामग्रीहरू सहज उपलब्ध हुने गरी निर्माण सामग्री उद्योगहरू स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ ।</p> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उत्पादनमूलक उद्योगको योगदान ६.५ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । औद्योगिक पूर्वाधारको स्थापना भई १४० वटा उद्योग ग्राम, १९ औद्योगिक क्षेत्र र १५ विशेष आर्थिक क्षेत्रको स्थापना भई उद्योग सञ्चालनमा आएको हुनेछ ।

## ६.२.२ वाणिज्य

### १. पृष्ठभूमि

विश्वव्यापीकरण तथा यातायात र सञ्चारको संजालले एकीकृत तथा अन्तर्निर्भर वर्तमान विश्व अर्थतन्त्रमा व्यापार र वाणिज्य क्षेत्रले तीव्र आर्थिक वृद्धि र विकासमा महत्वपूर्ण भूमिका खेल्दछ । उत्पादनका साधनको रूपमा विश्वबजारमा उपलब्ध सीप, पुँजी र प्रविधिको उपयोग गरी प्रतिस्पर्धी र तुलनात्मक लाभ भएका वस्तुको उत्पादन, आन्तरिक उपभोग तथा विश्व बजारमा प्रवेश गराउन सकेमा बढ्दो व्यापार घाटा न्यून गर्दै सबल राष्ट्रिय अर्थतन्त्र निर्माण गर्न सकिन्छ । यसका लागि आन्तरिक रूपमा पूर्वाधारको विकास र व्यापार तथा लगानीको वातावरण एवम् बाह्य रूपमा व्यापारिक साझेदार राष्ट्रसँगको द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय व्यापार सम्झौताको कार्यान्वयन मुख्य रूपमा महत्वपूर्ण हुन्छन् । संविधानले राष्ट्रिय हित अनुकूल निर्यात प्रवर्द्धन तथा आयात व्यवस्थापनका क्षेत्रमा वैदेशिक पुँजी तथा प्रविधिको लगानीलाई आकर्षित गर्ने नीति लिनुका साथै आन्तरिक व्यापारमा कुनै प्रकारको अवरोध गर्न नपाइने कुराको प्रत्याभूति गरेको छ ।

यस क्षेत्रको विकास तथा विस्तार र निर्यात प्रवर्द्धनका लागि वाणिज्य नीति तथा नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति जस्ता क्षेत्रगत नीति र रणनीति राज्यले अवलम्बन गरेको छ । नेपालको विश्व व्यापार संगठन, दक्षिण एसियाली स्वतन्त्र व्यापार सम्झौता र बहुक्षेत्रीय प्राविधिक तथा आर्थिक सहायता सम्बन्धी बङ्गालको खाडीको प्रयत्न जस्ता क्षेत्रीय र अन्तर्राष्ट्रिय संघ, संस्थासँगको आबद्धता र कतिपय देशसँग द्विपक्षीय व्यापार सम्झौता भई बजार पहुँचमा विस्तार भए तापनि आन्तरिक अर्थतन्त्रका संरचनागत अवरोध र यी सम्झौताबाट सिर्जित अधिकार र सुविधाको उपयोग गर्न नसकिएको कारण निर्यात प्रवर्द्धनमा अपेक्षित उपलब्धि हासिल गर्न सकेको छैन । यसर्थ, व्यापार घाटा कम गर्न निर्यातजन्य वस्तुहरूको पहिचान, विकास र उत्पादन वृद्धि गर्दै निर्यात प्रवर्द्धन तथा आयात व्यवस्थापन गर्नुपर्ने तत्कालको आवश्यकता छ । साथै, कृषि, इन्धन, औषधी लगायत आधारभूत आवश्यकताका वस्तुमा मुलुकलाई आत्मनिर्भर गर्नुपर्नेछ ।

आ.व. २०७४/७५ मा थोक तथा खुद्रा व्यापार क्षेत्रको अंश कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा १४.४ प्रतिशत रहेको छ । निर्यात वृद्धि दर न्यून छ भने आयात वृद्धिदर उच्च छ । वस्तुको व्यापार घाटा बढ्दै निर्यात-आयात अनुपात १ : १५.३ र व्यापार घाटा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा ३८.७ प्रतिशत पुगेको छ । आयातको ठूलो हिस्सा उच्च मूल्य भएका र अन्तिम उपभोग्य वस्तु छन् भने कृषिजन्य र कम मूल्य भएका वस्तु मुख्य रूपमा निर्यात हुन्छन् ।

## २. प्रमुख समस्या

नागरिकको क्रयशक्ति वृद्धिसँगै उपभोग्य सामग्री र विलासिताका वस्तुको मागमा उच्च वृद्धि भए पनि उक्त माग धान्ने गरी आन्तरिक उत्पादन बढ्न नसक्नु, खनिज ऊर्जाको बढ्दो आयातलाई प्रतिस्थापन गर्ने गरी वैकल्पिक ऊर्जा उत्पादन गर्न नसक्नु, कृषि क्षेत्रलाई यान्त्रिकीकरण, औद्योगिकीकरण तथा व्यवसायीकरण गर्न नसक्दा यसको उत्पादन तथा उत्पादकत्व न्यून हुन भई कृषिजन्य आयात वृद्धि हुनु, उत्पादन शृंखलामा अग्र र पृष्ठ सम्बन्ध विकास गर्न नसकिनु, निर्यातजन्य तुलनात्मक तथा प्रतिस्पर्धी लाभका वस्तु तथा सेवाको अपेक्षित विकास र मूल्य अभिवृद्धि हुन नसक्नु, विश्व समुदाय तथा बजारमा उपलब्ध सुविधा तथा अवसरलाई व्यापार विकासमा पर्याप्त उपयोग गर्न नसकिनु, औद्योगिक लगानीमा भन्दा आयात व्यापारमा व्यावसायिक आकर्षण बढ्दै जानु प्रमुख समस्या रहेका छन्। साथै, निर्यातमा कच्चा पदार्थ, प्राथमिक वस्तु र अर्धप्रशोधित वस्तुको मात्रा बढी हुनु, व्यापार तथा पारवहन लागत उच्च हुनु र द्विपक्षीय र बहुपक्षीय व्यापार सम्झौताबाट उल्लेख्य लाभ लिन नसकिनु यस क्षेत्रका थप समस्या हुन्। त्यसैगरी, मानव, पशु तथा वनस्पतिजन्य स्वास्थ्यमा प्रतिकूल असर गर्ने सामानको आयात नियन्त्रण गर्न नसकिनु, खुला सीमानाका कारण वैदेशिक व्यापारमा विचलन आउनु, देशगत र वस्तुगत व्यापार विविधीकरण गर्न नसकिनु र आयात व्यवस्थापन गर्न कानुनी व्यवस्था तथा नियामक क्षमता कमजोर हुनु व्यापार क्षेत्रका अन्य समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

उत्पादकत्व र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमतामा वृद्धि गरी व्यापार क्षेत्रमा संरचनागत परिवर्तन गर्नु, निर्यात प्रवर्द्धन गर्दै उच्च व्यापार घाटालाई कम गर्नु, बहुपक्षीय, क्षेत्रीय र द्विपक्षीय व्यापार सम्झौताबाट सिर्जित अवसरबाट अधिकतम लाभ लिँदै त्यसका नकारात्मक असर कम गर्दै जानु, सस्तो श्रम र कच्चा पदार्थको अधिकतम उपयोग गरी प्रतिस्पर्धी वस्तु तथा सेवा उत्पादन वृद्धि गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्। नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति, २०७३ ले पहिचान गरेका वस्तु तथा सेवाको उत्पादन र निकासी वृद्धि गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारलाई प्रतिस्पर्धी र व्यापक गराउन देशगत र वस्तुगत व्यापार विविधीकरण तथा वस्तुको प्रमाणीकरण, लेबलिङ्ग, ब्राण्डिङ्ग गरी गुणस्तरीयता अभिवृद्धि गर्नु, व्यापार कूटनीतिको उपयोग गरी प्राप्त बजार पहुँचको सुविधा उल्लेख्य रूपमा उपयोग गर्नु यस क्षेत्रका थप चुनौती रहेका छन्।

विश्वव्यापीकरण र विश्व व्यापार प्रणालीबाट सिर्जित बजारको उपलब्धता, दुई ठूला अर्थतन्त्र भएका छिमेकी मुलुकहरूसँगको व्यापार तथा पारवहन सम्झौता र शून्य भन्सार प्रवेशको सुविधा प्राप्त हुनु मुख्य अवसर हुन्। औद्योगिक श्रम तथा कच्चा पदार्थको उपलब्धता हुनु, व्यापार घाटा न्यूनीकरण सबै क्षेत्रको रणनीतिगत प्राथमिकतामा पर्नु, विश्व व्यापार संगठन, दक्षिण एसियाली स्वतन्त्र व्यापार सम्झौता र बहु-क्षेत्रीय प्राविधिक तथा आर्थिक सहयोगका लागि बङ्गालका खाडीको प्रयास जस्ता क्षेत्रीय र अन्तर्राष्ट्रिय संघ-संस्थाहरूसँगको आबद्धता, ट्रान्जिट अर्थतन्त्रको प्रबल सम्भावना थप अवसरको रूपमा रहेका छन्।

स्वदेशी तथा वैदेशिक लगानी र व्यापारलाई एकीकृत ढंगबाट हेर्ने नीतिगत व्यवस्था हुँदै जानु, अन्तरदेशीय र क्षेत्रीय अन्तरआवद्धता सम्बन्धी पूर्वाधारहरूमा व्यापक लगानी हुँदै जानु साथै वस्तु तथा सेवाको उत्पादनमा गुणस्तर र प्रतिस्पर्धी क्षमता वृद्धि हुँदै जानुलाई ठूलो अवसरको रूपमा लिइएको छ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

आर्थिक समृद्धिका लागि निर्यात प्रवर्द्धन, आयात व्यवस्थापन र व्यापार सन्तुलन ।

### ४.२ लक्ष्य

अर्थतन्त्रमा वाणिज्य क्षेत्रको योगदान अभिवृद्धि गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. खाद्यान्न तथा आधारभूत उपभोगका वस्तुहरू तथा तुलनात्मक लाभका निर्यातजन्य वस्तु तथा सेवाको उत्पादन वृद्धि गर्नु ।
२. आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार लागत कम गर्नु ।
३. नेपाली वस्तु तथा सेवाको अन्तर्राष्ट्रिय मूल्य शृंखलामा आबद्धता अभिवृद्धि गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. खाद्यान्न तथा आधारभूत उपभोगका र तुलनात्मक लाभ र प्रतिस्पर्धी क्षमता भएका वस्तु तथा सेवाहरूको पहिचान, विकास, विविधीकरण तथा उत्पादन र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरी आयात व्यवस्थापन तथा निर्यात प्रवर्द्धन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"><li>१. वाणिज्य क्षेत्रसँग सम्बन्धित विद्यमान कानूनहरूको संघीय संरचना अनुरूप तर्जुमा एवम् समसामायिक परिमार्जन गरी लागू गरिनेछ ।</li><li>२. एण्टिडम्पिङ, काउण्टरभेलिङ र सेफगार्डस् सम्बन्धी कानूनको तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li><li>३. निर्यात व्यापार अभिवृद्धि गर्न वस्तुगत एवम् देशगत व्यापारको विविधीकरणसँगै प्रक्रियागत सरलीकरण गरिनेछ ।</li><li>४. उच्च मूल्य अभिवृद्धि हुने वस्तु तयारी पोशाक, गलैँचा, फुटवेयर छाला जुत्ता, कफी, फेल्ट, हाते कागज लगायतका र उच्च मूल्य कम आयतन भएका वस्तु उत्पादन र निर्यात प्रवर्द्धनका लागि निर्यात पूर्वाधारहरूको विकास गरिनेछ ।</li><li>५. निर्यातमूलक उद्योगहरूलाई आधुनिक प्रविधिहरूको प्रयोगमा प्रोत्साहन, उत्पादक तथा निकासीकर्ताहरूलाई मूल्य अभिवृद्धिका आधारमा छुट, सहूलियत र प्रोत्साहनको व्यवस्था गरिनेछ ।</li><li>६. जीवजन्तु तथा वनस्पति स्वास्थ्य (Sanitary and Phytosanitary) मा असर गर्ने वस्तुहरूको आयात प्रभावकारी रूपमा नियन्त्रण गरिनेछ ।</li></ol> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| <p>२. व्यापारजन्य प्रविधि र पूर्वाधारको विकास र उपयोग, सूचना प्रविधिको प्रयोग एवम् विस्तार, सुशासन र प्रभावकारी नियमन, व्यापार सहजीकरण र संस्थागत सुदृढीकरण गरी आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार लागत कम गर्ने ।</p> | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विश्व बजारमा आएको परिवर्तनसँगै व्यापारलाई समयानुकूल सरल र मितव्ययी बनाई विद्युतीय व्यापार (ई-कमर्स) को माध्यमबाट व्यापारको प्रवर्द्धन र विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. पारवहन ढुवानीमा विविधीकरण गर्न जलमार्ग यातायात (Inland Waterways) को प्रयोगका लागि आवश्यक नीतिगत, संस्थागत र प्रक्रियागत व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>३. व्यापार पूर्वाधारहरूको विकासमा निजी क्षेत्रको सहभागितालाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li> <li>४. निर्यात व्यापार प्रवर्द्धनका लागि एकीकृत भन्सार जाँच चौकी, गुणस्तरीय क्वारेन्टाइन सेवा, एकीकृत सेवा केन्द्र र सुख्खा बन्दरगाह लगायतका वाणिज्य पूर्वाधारहरू निर्माण र सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>५. तेस्रो मुलुकसँगको व्यापारका लागि कोलकाता र विषाखापटनम बन्दरगाहबाट हुने ढुवानीमा ट्रान्ससिपमन्ट मोडालिटी अवलम्बन गरिनेछ । साथै, चीनसँगको पारवहन सम्झौताको कार्यान्वयन गरी बन्दरगाह र पारवहन सुविधा उपयोग गरिनेछ ।</li> <li>६. स्थानीय उत्पादनको विकास, भण्डारण र बजारीकरणको लागि आवश्यक पूर्वाधारको विकास गरिनेछ ।</li> <li>७. स्वदेशी कच्चा पदार्थमा आधारित निकासीजन्य वस्तुहरूको उत्पादन गर्ने उद्योगहरूमा नयाँ प्रविधि अपनाउन र उत्पादन प्रक्रिया सुधार गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ ।</li> <li>८. स्वदेशी उत्पादनको व्यापार एवम् बजार प्रवर्द्धन गर्न सूचना प्रविधि तथा ई-कमर्सको उपयोग गरिनेछ ।</li> <li>९. प्रदेश राजधानी र मुख्य शहरमा बजार व्यवस्थापन तथा प्रवर्द्धन केन्द्र स्थापना गर्न प्रदेश र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ ।</li> <li>१०. राष्ट्रिय हित अनुकूल निर्यात प्रवर्द्धन तथा आयात व्यवस्थापनका क्षेत्रमा वैदेशिक पुँजी तथा प्रविधि आकर्षित गरी पूर्वाधार निर्माणमा जोड दिइनेछ ।</li> <li>११. व्यापार क्षेत्रमा देखिएका भौगोलिक तथा सामाजिक असमानता कम गर्दै लगिनेछ ।</li> </ol> |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>१२. आन्तरिक तथा वैदेशिक व्यापार व्यवसायलाई सरल, मितव्ययी र प्रभावकारी बनाउन विद्युतीय सेवा लागू गरिनेछ ।</p> <p>१३. हरेक प्रदेशमा अन्तर्राष्ट्रिय प्रदर्शनीस्थल निर्माण गरी उक्त प्रदेशका संभावित वस्तु तथा सेवाको निर्यात प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p>   |
| ३. व्यापार सम्बद्ध बौद्धिक सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकारको अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्ने ।  | <p>१. स्थानीय तथा परम्परागत ज्ञान र सीपमा आधारित वस्तुहरूको बौद्धिक सम्पत्ति संरक्षणका लागि आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. निर्यात सम्भाव्य वस्तुहरूको बौद्धिक सम्पत्ति अन्य मुलुकमा दर्ता, संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक सहयोग गरिनेछ ।</p>   |
| ४. आर्थिक कूटनीतिलाई सुदृढ तुल्याउँदै व्यापार सम्बद्ध द्विपक्षीय, क्षेत्रीय र बहुपक्षीय संयन्त्रको माध्यमबाट व्यापारजन्य क्षमता बढाउँदै अन्तर्राष्ट्रिय मूल्य शृंखलामा आबद्धता र नेपाली सामानको बजार विस्तार गर्ने । | <p>१. नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति, २०७३ ले पहिचान गरेका तुलनात्मक लाभ र प्रतिस्पर्धी क्षमताका वस्तु तथा सेवाहरूको प्रतिस्पर्धी क्षमता र मूल्य शृंखला विकास गरी अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा निर्यात प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> <p>२. विश्व व्यापार संगठन र क्षेत्रीय व्यापार सम्झौताहरूद्वारा नेपालको हित संरक्षण हुने व्यवस्था गर्न जोड दिइनेछ । यसमा भएका प्रावधान अनुरूप मोड ४ (Mode-4) अन्तर्गतको सेवा व्यापार विस्तार गर्न दक्ष जनशक्ति तयार गरिनेछ ।</p> <p>३. विश्व व्यापार संगठनको सेवा व्यापार सम्बन्धी प्रावधान बमोजिम विकसित मुलुकले अति कमविकसित मुलुकलाई दिने सेवा व्यापारमा छुट (Service Waiver) बाट अधिकतम फाईदा लिन सो सम्बन्धी क्षेत्र/उपक्षेत्र/मोडको पहिचान गरी वार्ता तथा सम्झौता गरिनेछ ।</p> <p>४. वाणिज्य क्षेत्रका आन्तरिक एवम् बाह्य गतिविधिमा स्वअनुशासन र प्रतिस्पर्धा कायम गर्न नियमनको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>५. आर्थिक कूटनीति तथा विदेशस्थित नेपाली नियोगहरू र गैरआवासीय नेपालीहरूको संयन्त्रहरूलाई निर्यात प्रवर्द्धनमा परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>६. विभिन्न निकायसँगको समन्वयमा निर्यात वृद्धि, देशगत व्यापार विविधीकरण र आयात व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी बनाउन हालको व्यापार तथा निर्यात प्रवर्द्धन केन्द्रलाई स्तरोन्नति गरी अधिकार सम्पन्न “वैदेशिक व्यापार व्यवस्थापन केन्द्र” गठन गरिनेछ ।</p> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

वस्तुको निर्यात-आयात अनुपात १:१०.५ भएको हुनेछ। खाद्यान्न, तरकारी र आधारभूत उपभोग्य वस्तुको आयात १४.७ प्रतिशतबाट ५ प्रतिशतमा झरेको हुनेछ। अर्थतन्त्र आत्मनिर्भरतातर्फ उन्मुख भएको हुनेछ। व्यापारजन्य पूर्वाधारको विकास तथा विस्तार र जल यातायात सञ्चालन भई व्यापार र पारवहन लागत कम भएको हुनेछ।

## ६.२.३ आपूर्ति

### १. पृष्ठभूमि

दुर्गम तथा ग्रामीण क्षेत्र लगायत मुलुकभर नागरिकको दैनिक जीवनयापनमा अत्यावश्यक वस्तु तथा सेवाको सहज र निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित गर्नु राज्यको दायित्व हो। नेपालको संविधानले उपभोक्ताको हकको सुनिश्चिता गर्न प्रत्येक उपभोक्तालाई गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवा प्राप्त गर्ने हक र गुणस्तरहीन वस्तु वा सेवाबाट क्षति पुगेको व्यक्तिलाई कानून बमोजिम क्षतिपूर्ति पाउने हकको व्यवस्था गरेको छ। साथै, कालोबजारी, एकाधिकार, कृत्रिम अभाव सिर्जना, प्रतिस्पर्धा नियन्त्रण जस्ता कार्यको पूर्ण अन्त्य गर्दै राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई प्रतिस्पर्धी बनाई व्यापारिक स्वच्छता र अनुशासन कायम गरी उपभोक्ताको हकहित संरक्षण गर्ने राज्यको नीति रहेको छ। यसका लागि उपभोक्ता संरक्षण ऐन लगायतका कानुनी व्यवस्था गरिएको छ। आपूर्ति व्यवस्थामा सुधार गरी उपभोक्ताको हकहित संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्दै गुणस्तरीय वस्तु र सेवामा पहुँच पुऱ्याउन विद्यमान कानूनको समयसापेक्ष सुधार र प्रभावकारी कार्यान्वयन तथा विद्यमान आपूर्तिसँग सम्बन्धित संस्थानको पुनर्संरचना गर्न आवश्यक छ।

पेट्रोलियम पदार्थको मूल्यमा स्थिरता कायम गर्न मूल्य स्थिरीकरण कोषको स्थापना गरिएको छ जसमा हाल रु. ३ अर्ब ५५ करोड रकम रहेको छ। खरिद मूल्यका आधारमा पेट्रोलियम पदार्थको मूल्य समायोजन हुने प्रणाली लागू गरिएको छ। पेट्रोलियम पदार्थको भण्डारण क्षमता वृद्धि गर्न र आयात सहज गर्न भण्डारण केन्द्रको स्थापनाको तयारी एवम् पेट्रोलियम पाइपलाइन विस्तार कार्य भइरहेको छ। हाल पेट्रोलियम पदार्थको भण्डारण क्षमता करिब ७१ हजार कि.लि. रहेको छ। दुर्गम क्षेत्रका नागरिकको खाद्यान्न माथिको पहुँच सुनिश्चित गर्न खाद्यान्नको आपूर्ति ढुवानी र अनुगमन कार्यलाई प्राथमिकता दिइएको छ। खाद्यान्नको आपतकालीन आपूर्तिको लागि राष्ट्रिय खाद्यान्न भण्डार र सार्क खाद्यान्न बैंकमा गरी ३३ हजार मे.ट. खाद्यान्न चक्रीय रूपमा भण्डारण गर्ने गरिएको छ।

### २. प्रमुख समस्या

अत्यावश्यक वस्तु तथा सेवा गुणस्तरीय एवम् सहज रूपमा उपलब्ध हुन नसक्नु, खाद्यान्नमा हुने मिसावट, ठगी, कालोबजारी कार्टेलिङ्ग र सिण्डिकेट जस्ता विकृतिका कारण बजारमा कृत्रिम अभाव सिर्जना हुनु, अवाञ्छित मूल्य वृद्धि गरिनु साथै, बजार अनुगमन प्रभावकारी हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्। अत्यावश्यक खाद्य वस्तु भण्डारणको लागि निर्माण भएका गोदामघर जीर्ण अवस्थामा रहनु, पेट्रोलियम पदार्थको पर्याप्त भण्डारण क्षमता नहुनु, आपूर्ति व्यवस्था तथा उपभोक्ता हित सम्बन्धी विद्यमान कानून प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्न नसक्नु, संघीय संरचनामा अत्यावश्यक औषधिको आपूर्ति तथा भण्डारणको जिम्मेवारी स्थानीय तहमा रहेकोमा स्थानीय तहको भौतिक तथा

संस्थागत क्षमता कमजोर हुनु यस क्षेत्रका अन्य समस्या हुन्। साथै, हरेक स्थानीय तहमा उत्पादन हुने अतिरिक्त खाद्यवस्तुको संकलन र उचित व्यवस्थापन एवम् भण्डारण गरी अभाव भएका स्थानमा सहजै पैठारी गर्ने सरल र छिटो तथा भरपर्दो निकायको संरचना नहुनु अर्को समस्या हो।

### ३. चुनौती तथा अवसर

नियमित र प्रभावकारी रूपमा बजारको अनुगमन गरी व्यापारिक स्वच्छता र अनुशासन कायम गरी उपभोक्ताको हित संरक्षण गर्नु, कृत्रिम अभाव, चुहावट, अस्वभाविक मूल्यवृद्धि, कार्टेलिङ्ग र सिण्डिकेट अन्त्य गरी प्रतिस्पर्धा कायम गर्नु, खाद्य वस्तु, अत्यावश्यक औषधि तथा स्वास्थ्य उपकरण र पेट्रोलियम पदार्थको सहज आपूर्ति तथा खाद्य सुरक्षाको प्रत्याभूति बनाइराख्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती रहेका छन्। दुर्गम एवम् विकट भौगोलिक क्षेत्रमा अत्यावश्यक खाद्यान्नमाथि पहुँच अभिवृद्धि गर्नु, नेपाल खाद्य संस्थान, साल्ट ट्रेडिङ कर्पोरेशन लिमिटेड र नेपाल आयल निगम लि. लगायतका संस्थानहरूको पुनर्संरचना गरी प्रभावकारिता अभिवृद्धि गर्नु आदि विषयहरू आपूर्ति व्यवस्थापनका थप चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

खाद्य तथा पोषण सचेतनाको अभिवृद्धि भई स्थानीय उत्पादनको माग र महत्व अत्यधिक रूपमा बढ्दै जानु, सरकारले कृषि वस्तुमा आत्मनिर्भर हुने नीति अवलम्बन गर्नु, तीन तहका सरकार आपूर्ति अनुगमनमा क्रियाशील हुनु, भण्डारण क्षमता वृद्धि र पेट्रोलियम पाईपलाईनको विस्तार कार्य सुचारू हुनु, विद्युत उत्पादनमा वृद्धि र आपूर्तिमा नियमितता हुनु, उपभोक्ता सचेतनामा अभिवृद्धि भई वस्तु तथा सेवाको गुणस्तरप्रति चासो राख्नु, निजी क्षेत्रको आपूर्ति प्रणालीमा अग्रणी भूमिका देखिनु, यातायात सञ्जालको देशव्यापी विस्तार हुनु र सूचना प्रणालीको पहुँचमा बढोत्तरी हुनु यस क्षेत्रका अवसर हुन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

प्रभावकारी, सहज, स्वचालित र जिम्मेवार आपूर्ति प्रणाली तथा उपभोक्ता हकको संरक्षण।

#### ४.२ लक्ष्य

गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवाको सहज, सर्वसुलभ र नियमित आपूर्ति व्यवस्था सुनिश्चित गरी उपभोक्ता हित संरक्षण तथा आपूर्ति प्रणालीमा नागरिकको पहुँच सहज बनाउने।

#### ४.३ उद्देश्य

१. उपभोग्य वस्तु, अत्यावश्यक वस्तु तथा सेवा, अत्यावश्यक औषधि तथा उपकरण, पेट्रोलियम पदार्थ लगायतका वस्तु तथा सेवाको देशव्यापी सर्वसुलभ आपूर्ति सुनिश्चित गर्नु।
२. बजार प्रणालीलाई स्वच्छ, प्रतिस्पर्धी र उपभोक्ताप्रति जिम्मेवार बनाउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. आपूर्ति व्यवस्था, प्रतिस्पर्धा प्रवर्द्धन र उपभोक्ता हितसँग सम्बन्धित नीति, ऐन कानूनहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने । | १. आपूर्ति नीतिको समयानुकूल परिमार्जन गरी प्रभावकारी आपूर्ति व्यवस्थापन गरिनेछ ।<br>२. कालाबजारी, एकाधिकार, कृत्रिम अभाव सिर्जना गर्ने र प्रतिस्पर्धा नियन्त्रण जस्ता कार्यको अन्त्य गर्दै व्यापारिक नैतिकता र अनुशासन कायम गरिनेछ ।<br>३. प्रतिस्पर्धा प्रवर्द्धन तथा उपभोक्ता हित संरक्षण सम्बन्धी कानुनी व्यवस्थाको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि सम्बद्ध निकायको संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।  |
| २. आपूर्ति व्यवस्थामा संलग्न संस्थानहरूको संस्थागत तथा संरचनागत सुदृढीकरण गर्ने ।   | १. पेट्रोलियम पदार्थको आपूर्ति र वितरण व्यवस्थालाई सुदृढीकरण तथा विविधीकरण गर्न आवश्यक कानुनी र संस्थागत सुधार गरिनेछ ।<br>२. बजार अनुगमन सघन एवम् नियमित बनाउनका लागि आवश्यक कानुनी, संस्थागत तथा प्रक्रियागत सुधार गरिनेछ ।<br>३. खाद्यान्न तथा अत्यावश्यक वस्तुको आपूर्ति सुनिश्चितताका लागि आपूर्ति सम्बद्ध निकायहरूको पुनर्संरचना गरी आपूर्ति कम्पनीको स्थापना गरिनेछ ।<br>४. विपन्न वर्गको लागि सुपथ मूल्यमा खाद्यान्न आपूर्ति गर्ने स्थायी संयन्त्रको विकास गरिनेछ ।<br>५. आपूर्ति सम्बन्धी तथ्याङ्क व्यवस्थापनको लागि तीन तहका सरकारबीच समन्वय गरी आपूर्ति सूचना व्यवस्थापन प्रणालीको विकास गरिनेछ । |
| ३. आपूर्ति अनुगमन प्रणालीको विकास गरी प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने ।  | १. खाद्य सम्प्रभुताको कानुनी आधारलाई मध्यनजर गरी खाद्यान्नको बीउबीजन तथा मलको आपूर्ति निश्चित मापदण्ड, गुणस्तर र तौल अनुसारको हुने व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा उपभोक्ता हित संरक्षण सम्बन्धी नियमन निकाय स्थापना गरिनेछ ।<br>३. उपभोक्ताको खाद्यवस्तु सम्बन्धी मौलिक हकलाई प्रभावकारी ढंगबाट कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>४. मानव, पशु तथा वनस्पतिजन्य स्वास्थ्य र पर्यावरणमा पार्ने प्रभावका आधारमा वस्तु तथा सेवाको गुणस्तर मापदण्ड तोकी लागत मूल्य निर्धारण गरिनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| <p>४. आधारभूत आवश्यकता तथा अत्यावश्यक वस्तु लगायतका सबै वस्तु तथा सेवाको बजारमा उपलब्धता तथा गुणस्तर, मूल्य र आपूर्तिमा पारदर्शिता कायम गरी कृत्रिम अवरोध र अभावको अन्त्य गर्ने ।</p> | <p>१. आधारभूत आवश्यकताका वस्तुहरूको उत्पादन, भण्डारण र वितरण क्षमता अभिवृद्धि गरी आपूर्ति व्यवस्था सहज एवम् सुलभ तुल्याइनेछ ।</p> <p>२. सार्वजनिक आपूर्ति प्रणालीलाई सुलभ, पारदर्शी र प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>३. सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धात्मक बनाउँदै गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवाको आपूर्तिलाई सहज र सर्वसुलभ बनाइनेछ ।</p> <p>४. निजी तथा सार्वजनिक यातायात, शिक्षा तथा स्वास्थ्य क्षेत्रका सेवाहरूमा सिन्डिकेट र कार्टेलिङ्ग प्रथा अन्त्य गरी स्वस्थ, स्वच्छ एवम् प्रतिस्पर्धी बनाई नियमित र सर्वसुलभ ढंगबाट सेवाप्रवाह सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

दुर्गम तथा आंशिक दुर्गम जिल्लाका विभिन्न क्षेत्रमा वार्षिक रूपमा ७२ हजार क्वीन्टल आयोडिनयुक्त नुन र १ लाख ५२ हजार क्वीन्टल खाद्यान्न ढुवानी भएको हुनेछ । राष्ट्रिय खाद्य सुरक्षा भण्डारमा २५ हजार मे.टन र सार्क खाद्य सुरक्षा बैंकमा ८ हजार मे.टन खाद्यान्न संचित भएको हुने, तथा देशको पेट्रोलियम पदार्थ भण्डारण क्षमता ९० दिनको माग धान्न सक्ने भएको हुनेछ । पेट्रोलियम पाइपलाइन चितवनसम्म विस्तार भएको हुने, दैनिक उपभोग्य वस्तु तथा सेवाको सहज आपूर्ति हुने र आम उपभोक्ताले उचित मूल्यमा गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवाको उपभोग गर्न पाउने अवस्था सिर्जना भएको हुनेछ ।

#### ६.२.४ पर्यटन

##### १. पृष्ठभूमि

पर्यटन क्षेत्र नेपालको अर्थतन्त्रको विकासका लागि उच्च सम्भावना बोकेको क्षेत्र हो । अद्वितीय प्राकृतिक एवम् सांस्कृतिक सम्पदा र विविधताको कारण यस क्षेत्रमा तुलनात्मक लाभ रहेको छ । खासगरी, हिमाली प्राकृतिक सुन्दरता, महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटकीय गन्तव्य तथा मौलिक सांस्कृतिक तथा पुरातात्विक सम्पदा नेपालको पर्यटन क्षेत्रमा प्रचुर सम्भावना बोकेका निधि हुन् । यी स्थल र सम्पदाको संरक्षण, प्रवर्द्धन र विविधीकरण गर्दै पर्यटकीयस्थलको रूपमा विकास गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रको प्रमुख आधारको रूपमा यस क्षेत्रलाई विकसित गर्ने नीति नेपालको संविधानले अंगीकार गरेको छ । पर्यटन प्रवर्द्धनको माध्यमबाट रोजगारीका अवसर वृद्धि, गरिबी निवारण र जनताको जीवनस्तरमा सुधार ल्याई आर्थिक समृद्धिको लक्ष्य हासिल गर्न यस क्षेत्रको महत्वपूर्ण योगदान रहने भएकोले पर्यटन अर्थतन्त्रको प्रमुख सम्वाहक पनि हो ।

विश्व बजार र खासगरी छिमेकी मुलुकको ठूलो जनसंख्या एवम् पर्यटन बजार समेतबाट लाभ प्राप्त गरी नेपालमा पर्यटन आगमन र बसाइ अवधिमा वृद्धि हुने सम्भावना छ। आ.व. ०७४/७५ मा पर्यटक आगमन ९ लाख ४० हजार रहेको, पर्यटन क्षेत्रबाट कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा २.६ प्रतिशत योगदान पुगेको, ३१ हजार रोजगारी सिर्जना भएको तथा प्रति पर्यटक खर्च प्रति दिन ५४ अमेरिकी डलर र औसत बसाइ १३ दिन रहेको छ।

## २. प्रमुख समस्या

नेपालको पर्यटन विकासमा पर्यटन उपज र क्रियाकलापको अपेक्षित विकास र विविधीकरण हुन नसक्नु, अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा पर्यटन प्रवर्द्धन अपेक्षित रूपमा गर्न नसकिनु, पर्यटन पूर्वाधारको कमी हुनु, धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण सम्बर्द्धन र पर्यटन विकासमा निजी क्षेत्रलाई पर्याप्त सहभागी गराउन नसक्नु, पर्यटन क्षेत्रको विकासमा उद्यमशीलता विकासलाई जोड्न नसकिनु, पर्यटन क्षेत्रबाट प्राप्त लाभको न्यायोचित वितरण हुन नसक्नु र पर्यटकीय गतिविधि प्रविधिमैत्री नहुनु जस्ता प्रमुख समस्या रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

विश्व पर्यटन बजारमा नेपाललाई प्रमुख आकर्षक पर्यटकीय गन्तव्यको रूपमा स्थापित गर्नु, हवाई सेवाको सुरक्षा, विश्वसनीयता र विस्तार गर्नु, पर्यटकीय सेवा सुविधाको गुणस्तर वृद्धि गर्नु, नयाँ गन्तव्य स्थलहरूको पहिचान र विविधीकरण गर्नु, पर्यटकीय पूर्वाधार विकासमा निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्नु, पर्यटन उद्योग र पर्यटन अर्थतन्त्रको रूपमा नेपाललाई विकास गर्ने सोच तयार गर्नु र यस क्षेत्रमा आवश्यक दक्ष जनशक्तिको पर्याप्तता कायम राख्नु, यस क्षेत्रमा जलवायु परिवर्तनजन्य जोखिमबाट आउने असर कम गर्नु चुनौतीको रूपमा रहेका छन्। यसैगरी पर्यटकको खर्च र बसाइ अवधि वृद्धि गर्ने गरी पर्यटन उपजको विविधीकरण र प्याकेजिङ्ग गर्नु, गुणस्तरीय पर्यटक आगमन वृद्धि गर्नु, पर्यटन सेवालाई छरितो, पर्यटकमैत्री, सुरक्षित र विश्वासिलो बनाउनु, आधुनिक प्रविधि र उपकरणको प्रयोग गरी पर्यटन उपजहरू चित्ताकर्षक र मनोरञ्जनात्मक बनाई पर्यटकलाई व्यस्त बनाउनु पनि यस क्षेत्रका चुनौती हुन्।

संघीय संरचना अनुरूप तीन तहका सरकारबाट पर्यटन क्षेत्रमा उत्साहजनक काम गर्ने वातावरण तयार हुनु, भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त सांस्कृतिक सम्पदाहरूको पुनर्निर्माणले गति लिनु, नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरूको विकास हुँदै जानु, अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलहरू लगायत पर्यटन पूर्वाधारहरूको निर्माणले गति लिनु, द्रुत विकास भइरहेका छिमेकी राष्ट्रहरूको नेपालसँग सन्निकटता हुनु, प्राकृतिक सुन्दरता, अनन्त शान्तिआभाष, सौम्यता, आध्यात्मिकता, प्राचीन ज्ञान र दर्शनको उद्गमस्थल, जैविक विविधता, विशिष्ट प्रकृतिका पर्यटकीय गन्तव्य र उपजहरूका कारण पर्यटन केन्द्र (Tourism Hub) बन्न सक्ने प्रबल सम्भावनाले समृद्धिको एउटा प्रमुख सम्वाहकको रूपमा पर्यटन क्षेत्र स्थापित हुन सक्ने अवसर रहेको छ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

नेपाल एक आकर्षक, सुरक्षित र मनोरम पर्यटकीय गन्तव्य।

### ४.२ लक्ष्य

विश्व पर्यटन बजारमा नेपाललाई अग्रणी स्थानमा स्थापित गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. नेपाललाई सुरक्षित, गुणस्तरीय र पर्यटनमैत्री बनाई आकर्षक पर्यटन केन्द्रको रूपमा विकास गर्नु ।
२. पर्यटकीय गन्तव्य स्थल तथा उपजमा विविधीकरण गरी पर्यटन क्षेत्रको अर्थतन्त्रमा योगदान वृद्धि गर्नु ।
३. पर्यटकीय क्षेत्रबाट प्राप्त लाभलाई समन्यायिक रूपले जनस्तरसम्म पुऱ्याउनु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. छिमेकी मुलुक तथा प्रमुख पर्यटन बजारमा नेपाली पर्यटनको व्यापक प्रचारप्रसार र प्रवर्द्धन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"><li>१. नेपाल प्रतिको अन्तर्राष्ट्रिय पर्यटकको धारणा र छवि निर्माण गर्न अन्तर्राष्ट्रिय पर्यटन बजारमा नेपाल चिनाउने सामग्रीको विकास, उत्पादन र प्रचार प्रसार गरिनेछ ।</li><li>२. दोहोऱ्याएर नेपाल प्रवेश गर्ने पर्यटकलाई नेपाल चिनाउने दूत (ब्राण्ड एम्बासाडोर) बनाई सम्मान गरिनेछ ।</li><li>३. सूचना तथा सञ्चार र अन्य प्रविधिको उपयोग गरी स्वदेश तथा विदेशमा पर्यटन प्रचार प्रसार गर्नुका साथै 'नेपाल भ्रमण वर्ष, २०२०' लगायतका प्रवर्द्धनात्मक कार्यक्रम गरिनेछ ।</li><li>४. प्रादेशिक सन्तुलनलाई ध्यानमा राखी नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरूको पहिचान, विकास र प्रवर्द्धन गरी आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटन प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li><li>५. तीन तहका सरकार, निजी क्षेत्र र समुदाय समेतको सहकार्यमा पर्यटन क्षेत्रको समग्र विकासका लागि गुरुयोजना तयार गरी लागू गरिनेछ ।</li><li>६. मनोरञ्जनात्मक, फुर्सदको उपयोग गर्ने (Leisure) तथा गर्मी छल्ने पर्यटकलाई ध्यानमा राखी पहाडी शीतल आराम क्षेत्र (Hill Station) लगायत मानव-निर्मित पर्यटकीय उपज/संरचना विकासमा निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन गरी पर्यटकीय क्रियाकलापहरूलाई बढी लाभ लिन सकिने क्षेत्रको रूपमा सञ्चालन र प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li><li>७. पर्यटन क्षेत्रबाट प्राप्त हुने लाभलाई न्यायोचित वितरण गर्न सभा, सम्मेलन, गोष्ठी तथा प्रदर्शनी लक्षित पर्यटकीय उपज र पर्यटकीय गन्तव्यको विविधीकरण तथा सौन्दर्यीकरण गरिनेछ ।</li><li>८. आधुनिक पर्यटकीय उपज जस्तै: सिनेमा पर्यटन, साहसिक पर्यटन, मनोरञ्जनात्मक पर्यटन, शोध पर्यटन, व्यापारिक पर्यटन, पर्यापर्यटन, पर्वतारोहण तथा पदयात्रा र कृषि पर्यटन आदिको विकासका लागि निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरिनेछ ।</li><li>९. संवेदनशील एवम् जलवायु संकटासन्न र जोखिममा रहेका पर्यटन स्थल एवम् सांस्कृतिक सम्पदाको पहिचान गरी संरक्षण गरिनेछ ।</li></ol> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>१०. पर्यटकीय क्रियाकलापबाट सिर्जित फोहरमैला एवम् प्रदूषण नियन्त्रण गर्न मापदण्ड बनाई नियमन र नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> <p>११. पर्यटन सेवा सुविधालाई विविधीकरण, वर्गीकरण तथा प्रभावकारी नियमन गरी गुणस्तर अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>१२. साहसिक पर्यटन पदमार्गको पहिचान र विकास गरिनेछ ।</p> <p>१३. पर्यटन क्षेत्रलाई वातावरणमैत्री, ऊर्जा किफायती एवम् जलवायु उत्थानशील बनाउन नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।</p>  |
| २. पर्यटनको सम्भावना बोकेका शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकुद जस्ता क्षेत्र समेटेर एकीकृत पर्यटन विकास गर्ने ।   | <p>१. पर्यटन सम्बद्ध नीति तथा कानूनको समसामयिक सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकुदका क्षेत्रहरू समेटेर एकीकृत पर्यटन विकास मोडेल विकास गरिनेछ ।</p> <p>३. राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा पर्यटन क्षेत्रको योगदानको सही लेखांकन गर्न विस्तारित लेखा (Tourism Satellite Account) तयार गरिनेछ ।</p> <p>४. पर्यटन क्षेत्रमा हुने जलवायु परिवर्तन संकटासन्नता र जोखिम न्यूनीकरण गरी पर्यटन उपज र उद्यमलाई दिगो बनाइनेछ ।</p> <p>५. मौसम पूर्वानुमान प्रविधिको सुदृढीकरण गर्दै विपद् व्यवस्थापन गरिनेछ ।</p> <p>६. प्रमुख पर्यटकीय स्थलमा एकीकृत स्वास्थ्य पूर्वाधार विकास गरिनेछ ।</p> <p>७. पर्यटन विकासमा तहगत सरकार र अन्तर मन्त्रालय तथा निकायगत समन्वय र सहकार्यलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p>   |
| ३. स्वदेशी तथा विदेशी लगानी प्रोत्साहित गर्दै सार्वजनिक-निजी-सहकारी साझेदारीको अवधारणा अनुरूप आधुनिक पर्यटन पूर्वाधारको विकास, बजारीकरण र प्रवर्द्धन गर्ने । | <p>१. पर्यटन क्षेत्रमा सार्वजनिक-निजी-साझेदारी प्रवर्द्धन र प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्न पहल गरिनेछ ।</p> <p>२. पर्यटन पूर्वाधार विकासमा प्रदेश, स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र समुदायको लगानीका लागि साझेदारी मोडल विकास गरिनेछ ।</p> <p>३. क्षेत्रीय पर्यटन सञ्जाल विकासको अवधारणा अनुरूप बुद्ध सर्किट, शिव सर्किट र पूर्व ऐतिहासिक मिथिला संस्कृति, रामायण सर्किट र यस्तै अन्य परियोजना विकासमा स्थानीय तथा राष्ट्रिय पूर्वाधारलाई आबद्ध गराइनेछ ।</p> <p>४. प्रमुख राजमार्ग एवम् पर्यटन मार्गमा पर्यटकमैत्री पूर्वाधार विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. पर्यटकीय सम्पदा र पर्यटन स्थलहरूलाई पहुँचयोग्य र पर्यटकमैत्री बनाइनेछ ।</p> <p>६. पर्यटन विकासका लागि आधुनिक मनोरञ्जनात्मक यातायात पूर्वाधार विकास गरिनेछ ।</p> <p>७. नेपालको प्राचीन सभ्यतासँग जोडिएका अनन्त शान्ति तथा स्वर्गीयता, आध्यात्मिकता, ज्ञान तथा दर्शन, किल्ला, धार्मिक तथा पुरातात्विक महत्वका सम्पदाको पहिचान र विकास गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | ८. मुलुकका संरक्षित क्षेत्रमा पर्यटकीय क्रियाकलापको प्रवर्द्धन गरिनेछ ।   |
| ४. पर्यटन क्षेत्रलाई अर्थतन्त्रको सम्वाहकको रूपमा विकास गरिनेछ । पर्यटकीय गन्तव्य स्थलको पहिचान, विकास तथा विविधीकरण गर्न प्रदेश र स्थानीय तहले अग्रणी रूपमा निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गर्ने । | १. पर्यटन क्षेत्रमा रणनीतिक हिसाबले लाभ अभिवृद्धि गर्न अध्ययन, अनुसन्धान, अन्वेषण तथा तथ्याङ्क व्यवस्थापन गरिनेछ ।<br>२. पर्वतीय अर्थतन्त्र मोडेलभित्रको पर्यटन अर्थतन्त्रसँग सम्बन्धित सबै कार्यक्रमलाई प्रभावकारी ढंगबाट अगाडि बढाइनेछ ।<br>३. पर्यटनसँग सम्बन्धित प्रतिष्ठानहरूलाई नवीकरणीय ऊर्जाको प्रयोग गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।<br>४. पर्यटनसँग सम्बन्धित प्रतिष्ठानहरूलाई हरित अर्थतन्त्रका आयामको उपयोग गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।<br>५. पर्यटन क्षेत्रमा पर्याप्त दक्ष जनशक्तिको विकास गरिनेछ । यसका लागि पर्यटन मानित विश्वविद्यालयको स्थापना गर्ने, शैक्षिक पाठ्यक्रममा पर्यटन विषयलाई समावेश गर्ने र निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा निश्चित मापदण्ड कायम गरी तालिम सञ्चालन गरिनेछ । |
| ५. पर्यटकीय उपजलाई मूल्य शृंखलामा आबद्ध गरी स्थानीय स्तरसम्म यस क्षेत्रको लाभ वितरण गर्ने ।  | १. पर्यटन उपजको विकासमा स्थानीय साधन र उत्पादनलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।<br>२. पर्यटकीय क्षेत्रको दिगो तथा प्रभावकारी व्यवस्थापनका लागि प्रदेश, स्थानीय तह र समुदायसँग सहकार्य गरिनेछ । साथै, ती क्षेत्रमा फोहरमैला र प्रदूषण नियन्त्रण गरिनेछ ।<br>३. समुदायमा आधारित ग्रामीण एवम् होमस्टे पर्यटनको विस्तार गरी यस क्षेत्रबाट प्राप्त लाभलाई जनस्तरसम्म पुऱ्याइनेछ । प्रत्येक स्थानीय तहमा स्थानीय विशेषता सहितको पर्यटकीय गन्तव्यको विकास र होमस्टेको व्यवस्था गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ ।<br>४. ताप्लेजुडदेखि दार्चुलासम्मको हिमालयन पदमार्ग र हिमाली क्षेत्रमा केबलकार लगायतका पूर्वाधार विकास गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

नेपालमा विदेशी पर्यटक आगमन संख्या ३५ लाख पुगेको हुनेछ । विदेशी पर्यटकको सरदर बसाई अवधि १५ दिन पुगेको र विदेशी पर्यटकको सरदर दैनिक खर्च १०० अमेरिकी डलर पुगेको हुनेछ । योजना अवधिमा ४ लाख ९० हजार थप प्रत्यक्ष रोजगारीका अवसर सिर्जना भएको हुने र कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा पर्यटन क्षेत्रको योगदान १० प्रतिशत पुगेको हुनेछ ।

## परिच्छेद – ७

# सामाजिक क्षेत्र

### ७.१ जनसंख्या तथा बसाइँसराइ

#### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले जनसंख्या व्यवस्थापनको कार्यलाई संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्य जिम्मेवारीमा राखेको छ। समतामूलक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संरचना निर्माणमा योगदान गर्दै हरेक नागरिकलाई गुणस्तरीय जीवनयापनको लागि अवसरको वृद्धि गर्न जनसंख्या सम्बन्धी दीर्घकालीन योजना, (२०६७-२०८७), जनसंख्या र विकास सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनका कार्ययोजना, दिगो विकास लक्ष्य र राष्ट्रिय जनसंख्या नीति, २०७१ कार्यान्वयनमा आएका छन्। संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको एकल तथा साझा अधिकारको कार्य विस्तृतीकरणले योजना, परिवार नियोजन र जनसंख्या व्यवस्थापनलाई संघ र प्रदेशको साझा जिम्मेवारीको रूपमा लिएको छ भने व्यक्तिगत घटना (जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध बिच्छेद र बसाइँसराइ) सम्बन्धित तथ्याङ्क व्यवस्थापन गर्ने कार्य संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकारको राष्ट्रिय कार्यसूचीमा रहेको छ। राष्ट्रिय नीति, कार्यक्रम तथा योजनाबद्ध विकासको फलस्वरूप जनसंख्याको वार्षिक वृद्धिदर १.३५ प्रतिशत (राष्ट्रिय जनगणना, २०६८), प्रजननशील महिलाको कुल प्रजनन दर २.३ प्रति महिला (नेपाल जनसांख्यिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण, २०७३), जनसांख्यिक लाभांशको रूपमा रहेको उत्पादनशील जनसंख्या ५७ प्रतिशत र विदेशमा रहेको उत्पादनशील जनशक्ति ७.३ प्रतिशत रहेको छ। यस परिप्रेक्षमा जनसंख्या तथा बसाइँसराइ बहुसरोकारको विषय भएकाले सबै सार्वजनिक नीतिमा पहिलो प्राथमिकताका साथ व्यवस्थापन गर्नु महत्वपूर्ण मानिन्छ। जनशक्ति विकासको परिचालक तथा प्रयोगकर्ताका साथै उत्पादक र उपभोक्ता समेत हो। एकातिर प्रजनन दर घट्दै गएको, औसत आयुमा वृद्धि हुँदै गएको र युवा जनशक्ति विदेशिने क्रम जारी छ भने अर्कोतिर ज्येष्ठ नागरिकको जनसंख्या बढ्दो क्रममा रहेको छ। बाह्य तथा आन्तरिक बसाइँसराइ उच्च रहेको कारण जनसंख्याको वितरणमा असमानता बढ्दै गएकोले यसबाट आर्थिक उत्पादन र वितरणमा प्रत्यक्ष प्रभाव पर्न नदिन जनसंख्या तथा बसाइँसराइलाई अन्तरसम्बन्धित विषयको रूपमा व्यवस्थापन गर्नु अपरिहार्य मानिन्छ।

#### २. प्रमुख समस्या

जनसंख्या व्यवस्थापनका नीति तथा कार्यक्रमलाई सरकारी, गैरसरकारी, निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाजबाट आन्तरिकीकरण र समन्वय गर्न नसक्नु, तथ्यमा आधारित राष्ट्रिय नीति निर्माण गर्न प्रतिनिधिमूलक अनुसन्धान कार्यलाई प्रभावकारी रूपमा अगाडि बढाउन नसक्नु, गरिबी, अशिक्षा, भौगोलिक विकटता, अव्यवस्थित बसोबास र

बसाइँसराइ तथा आप्रवासन र सामाजिक कुरीतिका कारण जनसंख्या र विकासकाबीच असन्तुलन हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्। स्थिर संगठनात्मक संरचनाको अभाव हुनु, विस्तृत एवम् खण्डीकृत तथ्याङ्क सहितको जनसंख्या व्यवस्थापन सूचना प्रणाली स्थापना हुन नसक्नु, जनसांख्यिक लाभांशको रूपमा रहेको उत्पादनशील जनशक्तिको आन्तरिक तथा बाह्य आप्रवासनले कृषि तथा गैरकृषि क्षेत्रको उत्पादनमा नकारात्मक असर पर्नु, विकासको असन्तुलित वितरण तथा जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक प्रकोप जस्ता कारणहरूले मानिसहरूको स्वःस्फूर्त बसाइँसराइ प्रभावित भई जनसंख्याको वितरणमा प्रतिकूल प्रभाव पर्नु, तीव्र रूपमा बढ्दै गएको शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्न नसकिनु, जनसंख्या व्यवस्थापन, बसाइँसराइ, आप्रवास र विकासकाबीचमा समन्वयात्मक रूपमा कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्न नसक्नु जस्ता समस्या समेत यस क्षेत्रमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

राष्ट्रिय नीति तथा कार्यक्रमहरू तर्जुमा गर्दा जनसांख्यिक सूचक र आर्थिक तथा भौतिक विकासका सूचकहरूबीच तादात्म्यता तथा सन्तुलन कायम गर्नु, उत्पादनशील जनशक्तिलाई रोजगारीका माध्यमबाट स्वदेशमै उपयोग गर्ने वातावरण निर्माण गर्नु, स्वदेशबाट विदेश र विदेशबाट स्वदेशमा आई बसोबास गर्नेहरूको समुचित व्यवस्थापन गर्नु, उच्चदरमा बढ्दो ज्येष्ठ नागरिकको जनसंख्याको व्यवस्थापन गर्नु, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगारी र खानेपानी जस्ता आधारभूत सुविधा सहितको एकीकृत बस्ती विकास गर्नु, सन्तुलित तथा समानुपातिक विकास मार्फत आन्तरिक बसाइँसराइलाई व्यवस्थित गर्नु तथा स्थानीय तहमा जनसांख्यिक सूचना बैंकको निर्माण र विस्तार गर्नु जस्ता चुनौती रहेका छन्।

जनसंख्या सम्बन्धी दीर्घकालीन योजना रहनु, कुल जनसंख्यामा १५ देखि ५९ वर्ष उमेरका जनसंख्याको प्रतिशत उच्च रही जनसांख्यिक लाभको उच्चतम उपयोग गरी देशको आर्थिक र सामाजिक विकासमा योगदान पुऱ्याउन सकिने अवस्था रहनु, सानो तथा गुणस्तरीय परिवारको अवधारणालाई अधिकांश नागरिकले आत्मसात गर्नु, जनसंख्या र बसाइँसराइको व्यवस्थापन एवम् विकासलाई एकसाथ लैजाने कार्य राज्यको उच्च प्राथमिकतामा रहनु, वैदेशिक रोजगारीबाट प्राप्त विप्रेषण एवम् सीपलाई राज्यको प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रमा लगानी हुने अनुकूल वातावरण बन्दै जानु, पूर्वाधार विकास, हिमाल र पहाडी क्षेत्रमा साना शहर निर्माण, रोजगारीका अवसरको सिर्जना, एकीकृत बस्ती विकास लगायतका कार्यक्रमहरू मार्फत बसाइँसराइको व्यवस्थापन गर्नुपर्छ भन्ने कुरामा सबैको मतैक्यता रहनु, जनसंख्या र बसाइँसराइ व्यवस्थापनमा अन्तर्राष्ट्रिय समुदायहरूको चासो बढ्दै जानु तथा राज्यका संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट जनसंख्या र बसाइँसराइ सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिने जस्ता अवसर रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

उत्पादनशील जनसांख्यिक स्रोत।

## ४.२ लक्ष्य

जनसंख्या तथा बसाइँसराइको उचित व्यवस्थापन गर्ने ।

## ४.३ उद्देश्य

१. सबै नागरिकलाई स्वस्थ, सबल र सक्रिय बनाई औसत आयुमा वृद्धि गर्नु ।
२. बसाइँसराइ तथा शहरीकरणको व्यवस्थापन र जनसांख्यिक लाभांशको सदुपयोग गर्नु ।
३. जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धानलाई संस्थागत गर्नु ।

## ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. किशोर-किशोरी तथा युवाहरूको सुरक्षित यौन तथा प्रजननस्वास्थ्य, परिवार नियोजन, सुरक्षित मातृत्व र सुरक्षित गर्भपतन लगायतका सेवालार्ई अधिकारमुखी कार्यक्रमको रूपमा विकास गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"><li>१. सुरक्षित यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्य लगायतका सेवालार्ई अधिकारका रूपमा विकास गरी गुणस्तरीय बनाउँदै पहुँच बढाइनेछ ।</li><li>२. किशोरी आमाबाट हुने जन्मदर तथा कम उमेरमा हुने गर्भधारणलाई घटाउन, सुरक्षित गर्भपतन तथा यौन शिक्षा र प्रजनन स्वास्थ्य सेवालार्ई विस्तार गरिनेछ ।</li><li>३. किशोर-किशोरी तथा युवाहरूको सुरक्षित एवम् जिम्मेवार चालचलन र बानी-व्यहोरा प्रवर्द्धन तथा उनीहरूको जीवनोपयोगी क्षमता विकासको लागि विशेष कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ ।</li><li>४. बाल विवाह न्यूनीकरण गर्न किशोर-किशोरी तथा युवाहरूको लागि आवश्यक, उपयुक्त र सर्वसुलभ शैक्षिक वातावरणको विकासमा जोड दिइनेछ ।</li><li>५. किशोर-किशोरी तथा युवाहरूको रोजगारमूलक तथा जीवनोपयोगी शिक्षाको माध्यमबाट क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li></ol> |
| २. जनसांख्यिक लाभांश सदुपयोग गर्न ज्ञान र सीपमा आधारित रोजगारीका अवसर सिर्जना गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"><li>१. विकास कार्यक्रम र जनसंख्याबीच सामञ्जस्यता कायम गर्दै जनसंख्या व्यवस्थापनलाई समन्वयात्मक रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।</li><li>२. प्रदेश र स्थानीय तहमा जनसंख्या व्यवस्थापन कार्यलाई स्थानीय आवश्यकतानुसार सञ्चालन गर्न संस्थागत संयन्त्रको विकास गरिनेछ ।</li><li>३. जनसंख्या व्यवस्थापनका लागि विकास साझेदार, सरकारी निकाय, गैरसरकारी संस्था, निजी क्षेत्र, सहकारी तथा सामुदायिक संस्थासँगको साझेदारी र सहकार्यलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li><li>४. मानव संसाधन विकासका लागि विस्तृत कार्य योजना बनाई जनसांख्यिक लाभांशको सदुपयोग गरिनेछ ।</li></ol>  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>५. वैदेशिक रोजगारीबाट फर्केका जनशक्ति तथा संगठित युवा जनशक्तिले आर्जन गरेको सीप, ज्ञान, क्षमता, संस्कृति तथा साधन स्रोतलाई उद्यमशीलता, स्वरोजगार र व्यावसायिक कार्य मार्फत उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>३. अधिकारमा आधारित लैंगिक समानता र समावेशीकरणको माध्यमबाट जनसङ्ख्या र विकासमा मूलप्रवाहीकरण गर्ने नीति लिंदै विद्यमान कानून तथा संस्थागत व्यवस्थामा सुधार गर्ने ।</p> | <p>१. लैंगिक समानता र सामाजिक समावेशीकरणको मान्यता अनुरूप जनसङ्ख्या तथा दिगो विकासका कार्यक्रमहरूमा गरिब, सीमान्तीकृत, दलित, महिला, बालबालिका, किशोर-किशोरी, असक्त तथा अपांगता भएका व्यक्ति तथा जेष्ठ नागरिकको सहभागितालाई सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> <p>२. परम्परागत रूपमा नेपाली समाजले अवलम्बन गर्दै आएको पारिवारिक मूल्य र मान्यतालाई सम्मान गर्दै व्यवस्थित परिवारको अवधारणालाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>३. ज्येष्ठ नागरिकको अनुभव, ज्ञान, क्षमता र सीपलाई समाज र राष्ट्र विकासमा लगाउने वातावरण सिर्जना गरिनेछ ।</p> <p>४. क्रमिक रूपमा नेपालमा ज्येष्ठ नागरिकहरूको संख्यामा वृद्धि भइरहेको सन्दर्भमा उनीहरूको लागि सामाजिक सुरक्षा तथा सामाजिक संरक्षणका कार्यक्रमहरू तयार गरी सम्वोधन गरिनेछ ।</p> <p>५. केन्द्रीय र प्रादेशिक अस्पतालहरूमा जेरियाट्रिक वार्डहरूको विकास र विस्तार गरिनेछ साथै अन्य अस्पताल एवम् स्वास्थ्य संस्थाहरूमा पनि ज्येष्ठ नागरिकहरूको सहज पहुँचको लागि सामाजिक संघसंस्थाहरूसँग समन्वय र सहकार्य गरी दिवा स्याहार तथा प्रवर्द्धन कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>६. सीमान्तकृत एवम् लोपोन्मुख जाति (राउटे, कुसुण्डा, चेपाङ्ग, राजवंशी, चमार, मुसहर, वादी, राजी आदि) को संरक्षण गर्न विशेष कार्यक्रम सञ्चालन र संस्थागत समेत गरिनेछ ।</p> <p>७. राज्यका सबै संरचना र कार्यक्रमहरू अपाङ्गमैत्री बनाइनेछ ।</p> |
| <p>४. ग्रामीण तथा दुर्गम क्षेत्रमा एकीकृत बस्ती विकासको माध्यमबाट आन्तरिक बसाइँसराइ र शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्ने ।</p>   | <p>१. आन्तरिक बसाइँसराइबाट स्थानीय बासिन्दा/रैथानेहरूको आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकासमा विचलन हुन नदिन स्थानीय तहको आवश्यकता अनुसार जनशक्तिको नक्सांकन गरी विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. सातै प्रदेशमा शहरी विकासका सम्भाव्यता भएका स्थानहरूको पहिचान गरी तिनलाई शहरका पूर्वाधारसहित यातायात तथा सूचनाका सञ्जालले</p>   |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>जोडिनेछ भने ग्रामीण समुदायमा बसोबास गर्नेलाई संजालमा जोडिन प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>३. ग्रामीण, दुर्गम तथा पछाडि परेका क्षेत्रमा शिक्षा, स्वास्थ्य, भौतिक पूर्वाधार निर्माणको सामनुपातिक विकासमा जोड दिँदै, रोजगारी र अवसरको सिर्जना गरिनेछ ।</p> <p>४. जनसंख्या तथा बसाइँसराइ सम्बन्धी एकीकृत विकास प्याकेज तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>५. विकास आयोजनाको सञ्चालन पूर्व नै जनसांख्यिक प्रभाव मूल्याङ्कन गरिनेछ ।</p> <p>६. विदेशी नागरिकहरूको आप्रवास, तिनको संख्या र विशेषता समेतका आधारमा आप्रवास प्रवृत्तिलाई नियमन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>५. जनसंख्या तथा बसाइँसराइ सम्बन्धी तथ्याङ्क व्यवस्थापनलाई गुणस्तरीय तथा प्रविधिमैत्री बनाई अध्ययन, अनुसन्धान, सर्वेक्षण, प्रक्षेपण, विश्लेषण गरी जनसंख्या सूचनालाई व्यवस्थित गर्ने ।</p> | <p>१. जन्म, विवाह, बसाइँसराइ र मृत्युजस्ता व्यक्तिगत घटनाको दर्ता प्रणालीलाई प्रोत्साहन गर्नुका साथै कानुनी रूपमा समेत अनिवार्य गराइनेछ ।</p> <p>२. मृत्युको कारण परीक्षण गर्ने व्यवस्थाको विकासका साथै स्वास्थ्य संस्थामा हुने मृत्यु तथा जन्मलाई समेत विद्युतीय-व्यक्तिगत घटना दर्तासँग आबद्धता गरिनेछ ।</p> <p>३. स्थानीय तहमा राखिने तथ्याङ्कलाई राष्ट्रिय मूल सञ्जालसँग आबद्ध गरी हरेक समयमा जनसांख्यिक सूचना अद्यावधिक हुने प्रणालीको विकास तथा सम्प्रेषणको व्यवस्था समेत गरिनेछ ।</p> <p>४. विकास आयोजना तर्जुमा गर्दा पूर्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रणालीलाई पारदर्शी र वैज्ञानिक बनाइनेछ ।</p> <p>५. आन्तरिक र बाह्य बसाइँसराइ सम्बन्धी अभिलेखन र तथ्याङ्क प्रणालीलाई व्यवस्थित गरिनेछ ।</p> <p>६. जनसंख्या तथा बसाइँसराइ, विकास र वातावरणबीच समन्वय र सहकार्य गर्दै जनसङ्ख्या व्यवस्थापनलाई समग्र विकासको अभिन्न अंगको रूपमा संस्थागत गरिनेछ ।</p> <p>७. जनसंख्या र विकासका विविध क्षेत्रमा हुने अध्ययन र अनुसन्धानहरूको नियमितता, एकरूपता तथा गुणस्तरीयता कायम गर्न एवम् तिनका निष्कर्षहरूको राष्ट्रिय नीति निर्माण एवम् योजना तर्जुमामा उपयोग गर्नका लागि केन्द्रीय तहमा एक नियामक निकायको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

मानव विकास सूचकांक ०.५७४ बाट ०.६२४ पुगेको र नागरिक सन्तुष्टिको अनुभूति सूचकांक ४.७ बाट ५.१ पुगेको हुनेछ । कुल प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर (२.१) कायम भएको हुनेछ । पाँच वर्ष मुनिका बालबालिकाको जन्मदरता ५६ प्रतिशतबाट शत प्रतिशत पुगेको हुनेछ । जनसंख्या व्यवस्थापन सूचना प्रणाली मार्फत जनसंख्याको अद्यावधिक तथ्याङ्क उपलब्ध भएको हुनेछ ।

## ७.२ शिक्षा

### १. पृष्ठभूमि

शिक्षा विकासको आधार हो । साथै, मर्यादित एवम् परिष्कृत जीवन र सम्मानित रोजगारी तथा उद्यम विकासको आधार समेत हो । ज्ञानमा आधारित समाजको माध्यमबाट मुलुकको दिगो शान्ति र समृद्धिका लागि शिक्षालाई महत्वपूर्ण माध्यमको रूपमा स्वीकार गरिँदै आएको छ । नेपालको संविधानले शिक्षा सम्बन्धी हकलाई मौलिक हकका रूपमा प्रत्याभूत गरेको छ । संविधानले आधारभूत तहसम्मको शिक्षामा पहुँच, आधारभूत तहसम्मको अनिवार्य र निःशुल्क शिक्षा तथा माध्यमिक तहसम्मको निःशुल्क शिक्षा पाउने हक प्रत्याभूत गरेको छ । अपांगता भएका र आर्थिक रूपले विपन्न नागरिकलाई कानुन बमोजिम निःशुल्क उच्च शिक्षा पाउने, प्रत्येक नेपाली समुदायलाई कानुन बमोजिम आफ्नो मातृभाषामा शिक्षा पाउने र त्यसका लागि विद्यालय तथा शैक्षिक संस्था खोल्ने र सञ्चालन गर्ने हक प्रत्याभूत गरेको छ । साथै, शिक्षालाई वैज्ञानिक, प्राविधिक, व्यावसायिक, सीपमूलक तथा रोजगारमूलक बनाउँदै शिक्षामा राज्यको लगानी अभिवृद्धि गर्दै निजी क्षेत्रको लगानीलाई नियमन र व्यवस्थापन गरी सेवामूलक बनाउने नीति अवलम्बन गरेको छ ।

आ.व. २०७४/७५ को अन्त्यसम्ममा १५ वर्ष माथिको जनसङ्ख्याको साक्षरता दर ५८ प्रतिशत पुगेको छ भने १५ देखि २४ वर्ष उमेर समूहको युवा साक्षरता दर ८५ प्रतिशत पुगेको छ । पूर्व प्राथमिक शिक्षामा कुल भर्नादर ८४.१ प्रतिशत, पूर्व प्राथमिक शिक्षाको अनुभव सहित कक्षा १ मा भर्नाहुने बालबालिकाको संख्या ६६.३ प्रतिशत पुगेको छ । कक्षा १ देखि ५ सम्मको खुद भर्नादर ९७.२ प्रतिशत र कक्षा १ देखि ८ सम्मको खुद भर्नादर ९२.३ प्रतिशत र माध्यमिक तह (कक्षा ९-१२) को खुद भर्नादर ४३.९ प्रतिशत रहेको छ । अध्ययनको क्रममा बीचैमा विद्यालय छाड्ने दर कक्षा १ देखि ५ मा ३.८ प्रतिशत, कक्षा ६ देखि ८ मा ४.४ प्रतिशत र कक्षा ९ देखि १० मा ३.७ प्रतिशत छ । यसैगरी प्राथमिक तह र माध्यमिक तह (११-१२) को लैङ्गिक समता सूचकाङ्क क्रमशः १.० र १.०२ रहेको छ । उच्च शिक्षामा सहजै देखिने भर्ना दर करिब १२.४ प्रतिशत रहेको छ । विदेशमा पढ्न जाने एवम् वैदेशिक संस्थामा पढ्ने समेत गर्दा यो करिब १५ प्रतिशत पुगेको देखिन्छ । वार्षिक झण्डै ५ लाख युवाहरू श्रम बजारमा प्रवेश गर्दछन तर करिब एक लाख पचास हजारले मात्र प्राविधिक तथा व्यावसायिक तालिम प्राप्त गर्ने गरेका छन् । जनसांख्यिक संरचनालाई विश्लेषण गर्दा हाल किशोर एवम् युवा (१०-२४ वर्ष) समूहको हिस्सा सर्वाधिक रहेकोले आगामी वर्षहरूको लागि शिक्षाको व्यवस्थापनमा यसलाई ध्यान दिनु जरुरी देखिन्छ । राज्यको नेतृत्वदायी र निजी क्षेत्रको परिपूरक भूमिकामा गुणस्तर अभिवृद्धि गर्दै समग्र शिक्षा क्षेत्रको विकास गर्ने मुलभूत सोच यस योजनाले राखेको छ ।

## २. प्रमुख समस्या

सबैका लागि गुणस्तरीय शिक्षामा पहुँच सुनिश्चित गर्न नसकिनु, विशेष तथा लक्षित समूहका बालबालिकाको पहुँच सुनिश्चित गर्न नसकिनु, भर्ना भएका विद्यार्थीको निरन्तरता कायम गर्दै अपेक्षितरूपमा सिकाइ उपलब्धि हासिल हुन नसक्नु, तहगत, क्षेत्रगत एवम् विषयगत रूपमा सबै विद्यालयमा शिक्षक व्यवस्थापन गर्न नसक्नु, प्राविधिक शिक्षालाई शिक्षाको मूल धारको रूपमा विकास गर्न नसकिनु, प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकास एवम् शिक्षा सम्बन्धी अधिकार कार्यान्वयन गर्नका लागि पर्याप्त स्रोतको व्यवस्थापन गर्न नसकिनु, विश्वविद्यालय शिक्षालाई अनुसन्धानमा आधारित बनाई ज्ञानमा आधारित अर्थतन्त्रमा टेवा पुऱ्याउन सक्ने जनशक्ति उत्पादनमा केन्द्रित गर्न नसकिनु, तोकिएको शैक्षिक वर्षमा तह पार गर्नेको सङ्ख्या कम हुनु, बजारको माग अनुसार जनशक्ति उपलब्ध नहुनु, उत्पादित जनशक्तिले पनि योग्यता अनुसारको रोजगारी प्राप्त गर्न नसक्नु, पठन संस्कृतिको विकास तथा जीवनपर्यन्त शिक्षाका लागि सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणालीको विकास नहुनु, शिक्षा क्षेत्रका सबै तहमा सुशासनको प्रत्याभुति गर्न नसकिनु, सार्वजनिक र निजी लगानीका शैक्षिक संस्थाको उचित व्यवस्थापन, प्रतिभाहरूको पलायन नियन्त्रण जस्ता विषयहरू शिक्षा क्षेत्रमा प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

## ३. चुनौती र अवसर

विद्यालय शिक्षाको सर्वसुलभता, उपयुक्त पूर्वाधारको विकास, समन्यायिकता, गुणस्तरको सुनिश्चितता सहित सार्वजनिक शिक्षा प्रतिको आकर्षण अभिवृद्धि गर्नु, विद्यार्थी संख्याको अनुपातमा शिक्षक दरबन्दी मिलान तथा पुनर्वितरण गर्नु, शैक्षिक सुशासन र उत्तरदायित्व अभिवृद्धि गर्नु, सबै प्रकारका विद्यालयमा भौतिक पूर्वाधार सहितको आकर्षक सिकाइ वातावरण विकास गर्नु, शिक्षण सिकाइ पद्धतिलाई व्यावहारिक, बालमैत्री एवम् प्रविधिमा आधारित बनाउनु, उद्यमशील, समालोचनात्मक र अन्वेषणकारी नागरिक तयार गर्नु, विद्यालय बाहिर रहेका सबै बालबालिकालाई विद्यालयमा भर्ना गर्नु, कक्षा छाड्ने दर शून्यमा झारी अपेक्षित सिकाइ उपलब्धि हासिल गर्नु, प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक तालिमको विकासको लागि भौतिक पूर्वाधार, प्राविधिक जनशक्तिको उपलब्धता र समन्यायिक पहुँच सुनिश्चित गर्न आवश्यक पर्ने स्रोत-साधनको उपलब्धता र व्यवस्थापन गर्नु, सबै विश्वविद्यालयबाट उत्पादन हुने जनशक्तिलाई अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा समकक्षी र प्रतिस्पर्धी बनाउनु, प्राविधिक उच्च शिक्षाको अवसर विस्तार गर्दै ज्ञान र प्रविधिमा आधारित अर्थतन्त्र प्रवर्द्धन गर्ने नवीन सोचलाई वास्तविकतामा उतार्नु, शिक्षा क्षेत्रमा सुशासन र उत्तरदायित्व अभिवृद्धि गर्नु, क्षमतावान् युवालाई स्वदेशमै सेवा गर्ने अवसरको सिर्जना गर्नु, शैक्षिक प्रशासनको समयसापेक्ष पुनःसंरचना, जनसाङ्ख्यिक बनोट, आन्तरिक र बाह्य बसाइँसराइको प्रवृत्ति समेतको अध्ययन गरी शैक्षिक संस्थाहरूको नक्साङ्कन गर्नु र सूचना तथा सञ्चार प्रविधिले ल्याएका विविध अवसरको सदुपयोग गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

शिक्षालाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गर्दै अधिकार र जिम्मेवारी सहित स्थानीय तहलाई जिम्मेवार गराउने संवैधानिक आधार भएकाले शिक्षामा सहभागिता र पहुँचमा वृद्धि गरी गुणस्तर सुधार गर्न सकिने अवसर सिर्जना हुनु, साक्षरता दरमा भएको वृद्धि, विद्यालय तहको खुद भर्नादर र लैङ्गिक समता सूचकाङ्कमा प्रगति देखिनु, शिक्षामा

समावेशी सहभागिता अभिवृद्धि हुनु, सार्वजनिक विद्यालय प्रतिको चासो र जनअपेक्षा बढ्दै जानु, प्राविधिक शिक्षालाई हरेक स्थानीय तहसम्म सर्वसुलभ गराउने तथा प्राविधिक उच्च शिक्षालाई प्रवर्द्धन गर्दै रोजगारीका अवसरमा वृद्धि गर्ने सरकारको नीति रहनु, शिक्षा तीनवटै तहका सरकारको साझा अधिकार क्षेत्रको रूपमा रहेकोले आपसी साझेदारीमा लगानी अभिवृद्धि गर्न सकिने अवस्था देखिनु, तीन तहका सरकारको क्षमता विकास गर्दै शिक्षाको व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी तुल्याई शैक्षिक सेवा प्रवाहमा सुधार गर्न सकिने अवसर रहनु, प्राविधिक शिक्षा विस्तार मार्फत स्वदेशमा नै रोजगारीका अवसर सिर्जना गरी देशको आर्थिक विकासमा टेवा पुऱ्याउन सक्ने एवम् रोजगारीको खोजिमा बाहिर पलायन भएका युवा जनशक्तिलाई स्वदेशमा नै फिर्ता गर्न सकिने वातावरण तयार हुनु र गुणस्तरीय शैक्षिक वातावरण सिर्जना गर्दै खोज र अनुसन्धानमा आधारित उच्च शिक्षाको विकास गरी नेपाललाई विविध विषयमा उच्च शिक्षाको अध्ययन केन्द्र बनाउन सकिने वातावरण तयार हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

सामाजिक आर्थिक रूपान्तरणका लागि मानव संसाधनको विकास ।

##### ४.२ लक्ष्य

गुणस्तरीय शिक्षा मार्फत सिर्जनशील, दक्ष, प्रतिस्पर्धी, उत्पादनशील र नवप्रवर्तनशील मानव स्रोतको विकास गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. सबै बालबालिकालाई प्रारम्भिक बालशिक्षाको अनुभवसहित आधारभूत शिक्षा अनिवार्य तथा निःशुल्क र माध्यमिक शिक्षामा निःशुल्क पहुँच सुनिश्चित गरी शिक्षालाई गुणस्तरीय, जीवनोपयोगी र प्रविधिमैत्री बनाउनु ।
२. प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक सीप विकासमा समावेशी र समतामूलक पहुँच विस्तार र गुणस्तर सुनिश्चित गर्नु ।
३. पहुँच र गुणस्तर अभिवृद्धि गरी उच्च शिक्षालाई वैज्ञानिक, नवप्रवर्तनात्मक, अनुसन्धानात्मक, प्रविधिमैत्री र रोजगारमूलक बनाउदै ज्ञानमा आधारित समाज र अर्थतन्त्र निर्माण गर्नु ।
४. सबै नागरिकका लागि जीवन पर्यन्त शिक्षाको अवसर सुनिश्चित गर्नु ।
५. संघीय संरचना अनुरूप सबै तहका शैक्षिक-प्रशासनिक निकाय र शिक्षण संस्थामा सुशासन कायम गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| <p>१. प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षा कार्यक्रमलाई विद्यालय शिक्षाको अभिन्न अङ्गको रूपमा विकास गरी यसलाई सबै बालबालिकाका लागि अनिवार्य गर्ने ।</p>         | <p>१. कम्तीमा एक विद्यालय एक बालविकास केन्द्रको अवधारणा अन्तर्गत स्थानीय तह मार्फत् बालविकास केन्द्रहरूको पुनर्वितरण गरी संघीय सरकारबाट हाल दिइँदै आएको अनुदानलाई निरन्तरता दिँदै प्रदेश तथा स्थानीय तहबाट समेत लगानी गरी बालविकास केन्द्रको विकासका लागि लागत साझेदारी गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षाका शिक्षकको न्यूनतम शैक्षिक योग्यता र तालिम अवधिको पुनरावलोकन गरी योग्य शिक्षकबाट सेवा प्रवाह हुने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. प्रारम्भिक बाल कक्षामा निर्धारित मापदण्ड अनुरूप बसाइँ व्यवस्था र सरसफाईलाई ध्यान दिई खेलसामग्री, सिकाइ सामग्री, मनोरञ्जन सामग्री, अडियो भिडियो सामग्री सहित आकर्षक, मनोरञ्जक र बालमैत्री कक्षाकोठा व्यवस्थापन गरिनेछ ।</p>   |
| <p>२. अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षाको मापदण्डको आधारमा विद्यालय शिक्षामा समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्न सरकारका सबै तहलाई क्षमतावान र जवाफदेही बनाउने ।</p> | <p>१. विद्यालय बाहिर रहेका सबै बालबालिकालाई विद्यालय भर्ना गर्ने अभियानलाई सबै तहको सरकार, राजनीतिक दल, स्थानीय बुद्धिजीवी, समाजसेवी, सरकारी तथा गैरसरकारी निकायहरूको साझेदारीमा निरन्तरता दिई सबै बालबालिकालाई विद्यालय भर्ना गरी प्रत्येक स्थानीय तहले आफ्नो भौगोलिक क्षेत्रभित्र विद्यालय बाहिर बालबालिका नभएको घोषणा गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. सबैका लागि अनिवार्य तथा निःशुल्क आधारभूत शिक्षा सुनिश्चित गर्न जोखिममा परेका, अल्पसंख्यक तथा लोपोन्मुख समुदायका विद्यार्थीहरू तथा सीमान्तीकृत समूहका विद्यार्थीको सिकाइ आवश्यकता सम्बोधन गर्न खुला एवम् वैकल्पिक शिक्षाको व्यवस्था गरिनुका साथै अपाङ्गता भएका बालबालिकाको पहिचान एवम् लेखाजोखा गर्ने र उचित शैक्षिक अवसरको सिर्जना गर्न अपाङ्गता अनुकूल सिकाइ सामग्रीको प्रबन्ध र आवश्यकताका आधारमा आवासीय तथा विशेष शिक्षाको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. कक्षा छाड्ने समस्या समाधान गर्न र विद्यालयमा विद्यार्थी टिकाइ राख्नका लागि आधारभूत तहका बालबालिकालाई दिवा खाजा, अपाङ्गता भएका बालबालिका एवम् विपन्न लक्षित छात्रवृत्ति र स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्रमा</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>आधारित स्वास्थ्य परीक्षण र उपचार जस्ता प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. सबै प्रकारका विपद्बाट क्षतिग्रस्त शिक्षण संस्थाहरूको पुनःनिर्माण गरी शिक्षण संस्थाहरूलाई भौतिक पूर्वाधार सम्पन्न गर्ने तथा बहुप्रकारका विपद्प्रति संवेदनशील र अपाङ्गमैत्री बनाइनेछ ।</p> <p>५. दुर्गम तथा हिमाली क्षेत्रका, विशेष आवश्यकता भएका बालबालिका अध्ययन गर्ने विद्यालय तथा नमुनाको रूपमा विकास गरिने विद्यालयमा आवासीय सुविधा सहितको शैक्षिक प्रवन्ध गरिनुका साथै स्थानीय आवश्यकताका आधारमा विपन्न, सीमान्तकृत तथा लोपोन्मुख समुदायका बालबालिकालाई लक्षित गरी आवासीय सुविधा सहितका विद्यालय सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>६. प्रत्येक गाउँपालिका र नगरपालिकामा नपुग विषयगत शिक्षक दरबन्दी व्यवस्था गर्न संघीय, प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वय र सहकार्य गरी सबै विद्यालयमा न्यूनतम शिक्षक सुनिश्चित नहुँदासम्मका लागि एकमुष्ट अनुदान तथा पटके अनुदान जस्ता वैकल्पिक विधिहरूबाट शिक्षक व्यवस्थापन गरिनेछ ।</p> <p>७. शिक्षण संस्थाहरूको प्रविधि सहितको भौतिक पूर्वाधार विकासको लागि सघं, प्रदेश र स्थानीय तहको लगानीमा प्राथमिकता दिइनेछ ।</p> <p>८. जनसाङ्ख्यिक बनोट, भौगोलिक अवस्थाको आधारमा विद्यालय नक्साङ्कन गरी विद्यालय गाभ्ने, सार्ने तथा नयाँ स्थापना गरिनेछ ।</p> |
| <p>३. विद्यालय शिक्षामा गुणस्तर मापदण्ड र प्रत्यायन प्रणाली (Accreditation System) विकास गरी विद्यालयमा समान गुणस्तर कायम गर्ने ।</p> | <p>१. पढ्नका लागि सिक्ने तथा सिक्नका लागि पढ्ने प्रक्रियालाई प्रोत्साहित गर्न विद्यालयमा उचित प्रयोगशाला र पुस्तकालय तथा सिकाइ कुनाको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. शिक्षण सिकाइ क्रियाकलापलाई प्रभावकारी बनाउन विद्यार्थी संख्या कम भएका विद्यालयमा बहुकक्षा शिक्षण व्यवस्था, कक्षा शिक्षण पद्धति मार्फत पढाइ सीप प्रवर्धन गर्न उपयुक्त पाठ्यसामग्री, सन्दर्भ सामग्री, स्रोतसामग्री, प्रयोगात्मक सामग्री, उपयुक्त कक्षाकोठा व्यवस्थापन लगायतको व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>३. शिक्षकको न्यूनतम शैक्षिक योग्यतामा पुनरावलोकन तथा आवधिक रूपमा योग्यता परीक्षण गर्ने प्रणाली स्थापना गरिनुका साथै शिक्षकको निरन्तर</p>  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | पेसागत क्षमता विकासका लागि शिक्षक पेसागत विकास कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।  |
| <p>४. मानव संसाधन, पूर्वाधार तथा प्रविधिको विकास र जीवनोपयोगी ज्ञान र सीपमा आधारित पाठ्यक्रम मार्फत् सबै तहको शिक्षामा गुणस्तर सुनिश्चित गर्ने ।</p> | <p>१. प्रदेश र स्थानीय तहबाट समेत आवधिक रूपमा विद्यार्थी उपलब्धि परीक्षण गरी स्तरीकृत परीक्षणबाट प्राप्त नतिजाका आधारमा परिमार्जित विद्यालय सुधार योजना कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>२. विद्यालय शिक्षाको पाठ्यक्रम र पाठ्यपुस्तक समयानुकूल परिमार्जन गर्नुका साथै आधारभूत तहको कक्षा १ देखि ३ सम्मको एकीकृत पाठ्यक्रम कार्यान्वयन गर्दै आधारभूत तहको शिक्षण सिकाइका लागि आवश्यकता अनुसार माध्यम भाषाको रूपमा मातृभाषा वा स्थानीय भाषा वा नेपाली भाषा प्रयोग गर्ने व्यवस्था मिलाई संघबाट तोकिएको मापदण्ड बमोजिम विद्यालय तहको स्थानीय पाठ्यक्रम तथा पाठ्यसामग्री स्थानीय तहबाट विकास गर्ने गरी स्थानीय तहको क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>३. प्रारम्भिक कक्षामा अन्तरसम्बन्धित ज्ञान र सीपलाई एकीकृत गर्दै विद्यालय तह (कक्षा १-१२) को पाठ्यक्रमलाई सक्षमतामा आधारित हुने गरी परिवर्तन गरिनेछ । साथै, विद्यालय तहमा नागरिक शिक्षालाई समेत समावेश गरिनेछ ।</p> <p>४. शिक्षण सिकाइमा टेवा पुग्ने खालका विशेषतः अंग्रेजी, गणित, विज्ञान र प्राविधिक विषयमा डिजिटल पाठ्यसामग्रीहरू विकास गरी प्रयोगमा ल्याइनेछ ।</p> <p>५. विज्ञान शिक्षालाई व्यावहारिक र रुचिकर तुल्याउन सबै माध्यमिक विद्यालयहरूमा विज्ञान प्रयोगशाला तथा आधारभूत विद्यालयमा विज्ञान कक्ष निर्माणमा जोड दिँदै निर्धारित मापदण्ड अनुसारको पूर्वाधार, जनशक्ति, विद्यार्थी संख्या, जनघनत्व लगायतका पक्षमा उपयुक्त देखिएका र उच्च शैक्षिक उपलब्धि हासिल गर्ने अवस्था रहेका सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालयमा कक्षा १२ सम्म विज्ञान विषयमा कार्यक्रम सञ्चालन गरी नमुना विद्यालयको रूपमा विकास गरिनेछ ।</p> <p>६. शिक्षण पेसामा अब्बल प्रतिभाहरूलाई प्रवेश गराउन विश्वविद्यालयबाट उत्कृष्ट अङ्क हासिल गरेका प्रतिभालाई सोझै शिक्षण पेसामा प्रवेश गर्न पाउने कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| <p>५. निजी लगानीका विद्यालयको प्रभावकारी नियमन गर्ने व्यवस्था मिलाई नाफामूलकबाट सेवामूलकमा रूपान्तरण गर्ने ।</p>  | <p>१. स्थानीय तहद्वारा निजी लगानीका विद्यालय सहित सबै विद्यालयको पाठ्यक्रम, भौतिक वातावरण, शिक्षक तथा कर्मचारी एवम् आर्थिक व्यवस्थापन लगायतका विषयमा नियमन गरिनेछ ।</p> <p>२. निजी लगानीका विद्यालयहरूको प्रभावकारिताका लागि आवश्यक नीतिगत र कानुनी व्यवस्था गरी त्यस्ता शैक्षिक संस्थालाई सेवामूलक बनाइनेछ ।</p>   |
| <p>६. युवाका लागि स्थानीय तहमै प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक सीप विकासको अवसर र पहुँच सुनिश्चित गर्न व्यापक रूपमा प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र तालिम कार्यक्रमको विस्तार गर्ने ।</p> | <p>१. सीप नक्साङ्कन (Skills Mapping) र मापदण्डका आधारमा स्थानमान ग्रिड (Distribution Grid) को ढाँचा तयार गरी प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकासमा पहुँच र अवसरमा व्यापकता ल्याउन तथा सार्वजनिक, सहकारी र औद्योगिक तथा निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरी कार्यस्थलको सिकाइ सहित रोजगार सुनिश्चित गर्न औद्योगिक प्रशिक्षार्थी कार्यक्रम (Apprenticeship) सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक सीप विकासका लागि गुरुयोजना स्वीकृत गरी एकीकृत प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकास ऐन तर्जुमा र एकीकृत कोष निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>३. प्रत्येक स्थानीय तहमा दक्ष शिक्षक तथा आवश्यक पूर्वाधार सहितको कम्तीमा एउटा प्राविधिक शिक्षालय तथा व्यावसायिक सीप विकास तालिम केन्द्र क्रमशः स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>४. संरचनागत विकास तथा नियमनकारी व्यवस्था मिलाई साधारण एवम् प्राविधिक दुवै धारका कक्षा सञ्चालन गर्ने माध्यमिक विद्यालयहरूलाई आवश्यक स्रोत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>५. बहुआयामिक गरिबीको क्षेत्रभित्र परेका, बहुवञ्चितिकरणमा परेका (Multiple Disadvantaged), आर्थिक-सामाजिक रूपमा पछाडि परेका, अपाङ्गता भएका र औपचारिक शिक्षा हासिल गर्ने अवसरबाट वञ्चित नागरिकहरूका लागि आवश्यकताका आधारमा प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकासको समन्यायिक अवसर प्रदान गर्न विद्यार्थी वित्तीय सहायता प्रणाली लागू गरिनेछ ।</p> <p>६. प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकासमा तोकिएको गुणस्तर सुनिश्चित हुने गरी घुम्ती सीप विकास तथा तालिम (Mobile Skill Development and Training) को व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>७. प्रत्येक स्थानीय तहबाट सीपको बदलिँदो आवश्यकतालाई परिपूर्ति गर्ने र वृत्ति (पेसा वा व्यवसाय) सँग सम्बन्धित सल्लाह (Career Counseling) सेवा प्रवाह गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | ८. प्रत्येक सामुदायिक विद्यालयमा एउटा प्राविधिक धारको शिक्षा सञ्चालन गरिनेछ ।   |
| ७. सिकाइका सबै विधि र मार्गहरू खुला गर्दै राष्ट्रिय योग्यता प्रणाली (National Qualifications System) को माध्यमबाट साधारण शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक सीप विकासको गतिशीलता (Mobility) र पारगम्यता (Permeability) को सिद्धान्तको आधारमा शिक्षा, तालिम, सीप र सिकाइको योग्यता निर्धारण गर्ने । | १. साधारण शिक्षा र प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा र सीप विकासको गतिशीलता (Mobility) र पारगम्यता (Permeability) को आधारमा शिक्षा, तालिम, सीप र सिकाइको योग्यता निर्धारण गर्ने संयन्त्र र कार्यक्रम विकास गरिनेछ ।<br>२. प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकास तालिम प्राप्त जनशक्तिलाई उनीहरूले हासिल गरेका सीप र दक्षता उल्लेख भएको सीप-राहदानी (Skills Passport) उपलब्ध गराउने व्यवस्था गरिनेछ ।<br>३. राष्ट्रिय पेसागत सक्षमता मानक (National Occupational Competency Standard) को आधारमा पाठ्यक्रम, सिकाइ सामग्री र प्रशिक्षक तयार गरी सीप विकास तालिम प्रदायक संस्थाहरूले अनिवार्य रूपमा राष्ट्रिय मान्यता प्राप्त गुणस्तर मानकमा आधारित प्रत्यायन प्रमाणपत्र (Quality Assurance and Accreditation) लिनु पर्ने कानुनी व्यवस्था गरिनेछ । |
| ८. उच्च स्तरको प्राविधिक जनशक्ति उत्पादन गर्न उच्च शिक्षा प्रदायक शिक्षण संस्थालाई प्रतिस्पर्धी एवम् नतिजामुखी बनाउने ।   | १. प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक तालिम प्रदायक सार्वजनिक शैक्षिक संस्थालाई आवश्यक पर्ने उच्च स्तरीय जनशक्ति उत्पादनका लागि विश्वविद्यालय तथा क्याम्पसहरूसँगको साझेदारीमा कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. विज्ञान क्षेत्रमा प्रतिभावान विद्यार्थीको छनोट गरी विज्ञान प्रतिको रुचीलाई निरन्तरता दिन हरेक प्रदेशमा सङ्घीय सरकारको लगानीमा राष्ट्रिय विज्ञान माध्यमिक विद्यालयको विकास गरी यस्ता विद्यालयमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थी राष्ट्रिय प्रतिस्पर्धाका आधारमा छनोट गरिनेछ ।<br>३. उच्च शिक्षाको पहुँच पुग्न नसक्ने दुर्गम स्थान र वैकल्पिक पहुँचको आवश्यकता पर्नेहरूलाई ध्यानमा राखी खुला विश्वविद्यालय लगायत खुला एवम् दूर शिक्षा प्रणालीको विस्तार र सुदृढीकरण गरिनेछ ।  |
| ९. शिक्षण पेसामा दक्ष जनशक्ति उत्पादनका लागि विश्वविद्यालय अन्तर्गतका संकायहरू तथा शिक्षण   | १. उच्च शिक्षा नीति अनुरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोगलाई उच्च शिक्षा आयोगका रूपमा पुनःसंरचना गरी उच्च शिक्षाको सुधार र विकासका लागि क्रियाशील बनाइनेछ ।  |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| तालिम प्रदायक संस्थाको पुनर्संरचना गर्ने ।   | <p>२. राष्ट्रिय प्राथमिकताका आधारमा कृषि तथा वन, पर्यावरण, विज्ञान तथा प्रविधि, चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, पर्यटन, इञ्जिनियरिङ्, जलविद्युत, नवीकरणीय ऊर्जा, उद्योग तथा व्यापार लगायतका प्राविधिक विषय क्षेत्रलाई उच्च शिक्षामा सम्बद्ध गरी बाहिर जाने जनशक्तिलाई देशमा नै रहने वातावरण सिर्जना गर्न कार्यमूलक एवम् रोजगारमूलक उच्च शिक्षाको विकास र विस्तारमा प्राथमिकता दिइनेछ ।</p> <p>३. उच्च शिक्षाका पाठ्यक्रम तथा कार्यक्रमलाई राष्ट्रिय आवश्यकतासँग आबद्ध गरी अनुसन्धानमूलक एवम् प्रवर्तनात्मक बनाउन प्रोत्साहित गर्दै क्रेडिट ट्रान्सफरको व्यवस्था गरी गुणस्तर सुधारका लागि गुणस्तर प्रत्यायन सुनिश्चितता गरिनेछ ।</p> <p>४. उच्च शिक्षामा प्रवेश गर्ने जनशक्तिको पूर्वयोग्यता परीक्षा प्रणाली कार्यान्वयन गरिनेछ । साथै, विदेशी विश्वविद्यालयमा अध्यापन गर्ने जनशक्ति नेपाली विश्वविद्यालयमा भित्र्याउन उत्प्रेरित गरिनेछ ।</p> |
| १०. ज्ञानमा आधारित अर्थतन्त्रमा टेवा पुऱ्याउन सक्ने जनशक्ति उत्पादन गर्न तथा रोजगार प्रवर्द्धन गर्न नवीनतम खोज र अनुसन्धानमा आधारित उच्च शिक्षाको विकास गर्न नतिजामा आधारित लगानी पद्धति विकास गर्ने । | <p>१. स्नातक र स्नातकोत्तर तहका विद्यार्थीहरूलाई कार्यस्थलमा व्यवहारिक अभ्यासका लागि स्वयम् सेवकको रूपमा स्थानीयतहसम्म परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>२. उच्च शिक्षा अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूका लागि शैक्षिक प्रमाणपत्र धितो राखी सहुलियतपूर्ण कर्जाको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकासमा औद्योगिक प्रशिक्षार्थी कार्यक्रम विस्तार गर्न तथा विद्यालय, शिक्षालय, तालिम प्रदायक संघ संस्था र शिक्षार्थीका लागि आर्थिक सहजीकरणका लागि औद्योगिक प्रशिक्षार्थी सहुलियत ऋण उपलब्ध गराउन सीप विकास बैङ्कको अवधारणा लागू गरिनेछ ।</p>   |
| ११. ज्ञानको स्थानान्तरण र विकासका लागि उच्च शिक्षा प्रदायक विश्वविद्यालय तथा शिक्षण संस्थाहरूलाई प्रविधियुक्त सिकाइ केन्द्रको रूपमा विकास गर्दै गुणस्तर सुनिश्चितता एवम् प्रत्यायन                     | <p>१. उच्च शिक्षाको गुणस्तर निर्धारण तथा प्रत्यायन गर्न एक स्वतन्त्र गुणस्तर निर्धारण तथा प्रत्यायन प्राधिकरण रहनेछ र निश्चित मापदण्डमा आधारित स्वचालित प्रणाली विकास गरी उच्च शिक्षा प्रदान गर्ने संस्थाहरूको गुणस्तर प्रत्यायन गरिनेछ ।</p> <p>२. उच्च शिक्षा प्रदान गर्ने संस्थाहरूलाई प्रदान गरिने अनुदान तथा थप सुविधालाई गुणस्तर मापदण्डसँग आबद्ध गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| प्रणाली (Quality Assurance and Accreditation System) लाई सुदृढ, सबल एवम् अनिवार्य बनाउने ।  | ३. सबै किसिमका शैक्षिक कार्यक्रमहरूलाई सूचना तथा सञ्चार प्रविधिले ल्याएका अवसरको उपयोग गरी अध्ययन अनुसन्धान कार्यमा सहयोग गर्न केन्द्रीय डाटासेन्टर बनाइनेछ र इ-पुस्तकालयको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ ।   |
| १२. अनौपचारिक शिक्षा तथा वैकल्पिक सिकाइ मार्फत् सिकेका ज्ञान तथा सीपलाई आयमूलक कार्यक्रमसँग आबद्ध गरी जीवन पर्यन्त सिकाइलाई सुनिश्चित गर्ने ।   | १. औपचारिक, अनौपचारिक र अतिरिक्त माध्यमबाट सिकाइ सुनिश्चित गर्ने गरी सिकाइका सबै विधि र मार्गहरू खुला गर्न राष्ट्रिय योग्यता प्रणाली (National Qualifications System) विकास गरी अनौपचारिक क्षेत्रमा विद्यमान सीपहरूको अभिलेखीकरण, सीप परीक्षण र प्रमाणीकरणका लागि कार्यविधि, प्रक्रिया र संयन्त्रहरूलाई सुदृढ गरिनेछ ।<br>२. पठन संस्कृतिको विकास तथा जीवनपर्यन्त शिक्षाका लागि सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणालीको विकास गरी प्रदेश र स्थानीय तहमा आधारभूत सुविधा सहितको पुस्तकालय र विद्युतीय-पुस्तकालय सेवा विस्तार गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ । |
| १३. परम्परागत र स्थानीय ज्ञान, सीप र प्रविधिको सम्बर्द्धन र संरक्षण गर्दै वैज्ञानिक खोज र अनुसन्धानबाट प्रतिपादित नवीनतम प्रविधिलाई मुलुकको समग्र विकास प्रक्रियामा उपयोग गर्ने ।             | १. परम्परागत र स्थानीय प्रविधिको सम्बर्द्धन र संरक्षण गर्दै वैज्ञानिक खोज र अनुसन्धानलाई उच्च शिक्षाको कार्यक्रममा आबद्ध गरी नवीनतम प्रविधिलाई मुलुकको समग्र विकास प्रक्रियामा उपयोग गर्न अनुसन्धान गरी उपयुक्तताको आधारमा विद्यालय र विश्वविद्यालयको पाठ्यक्रममा समावेश गरिनेछ ।<br>२. नेपालको आफ्नै मौलिक कला र संस्कृति समेटिएको र विशिष्टतामा आधारित उच्च शिक्षण संस्थाको स्थापना र विकास मार्फत विदेशी विद्यार्थीहरूलाई समेत आकर्षित गरिनेछ ।   |
| १४. संरचना तथा कानुनी आधार तयार गरी सुशासन, पारदर्शिता र जवाफदेहिता कायम गर्न शिक्षा र विज्ञान तथा प्रविधि सम्बद्ध सबै तह र निकायलाई तोकिएको कार्य सम्पादन र उपलब्धि प्रति जिम्मेवार बनाउने । | १. सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालयमा क्रमशः अलग्गै प्रधानाध्यापकहरूको व्यवस्था गरी सबै प्रधानाध्यापकहरूको व्यवस्थापकीय एवम् नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. शैक्षिक सूचना व्यवस्थापन प्रणालीलाई थप व्यवस्थित, प्रभावकारी र प्रविधियुक्त बनाई विद्यालय एवम् उच्च शैक्षिक संस्थाबाटै अनलाइन प्रणाली मार्फत सूचना प्रवाह हुने व्यवस्था गरी प्रणालीलाई स्थानीय, प्रदेश र संघमा योजना निर्माण, कार्यान्वयन र अनुगमनमा उपयोग गरिनेछ ।  |

| रणनीति | कार्यनीति   |
|--------|---|
|        | <p>३. शिक्षकले कक्षा कोठामा बिताउने समयलाई नियमित पठन पाठनसँग सुनिश्चितता गरी कार्यसम्पादनलाई अनुदानसँग आबद्ध गर्दै शिक्षकहरूलाई पेसाप्रति समर्पित बनाई शिक्षाको गुणस्तर सुधारका लागि स्थानीय तहमा उत्प्रेरणाका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. संघीय शासन प्रणाली अनुरूप शिक्षा र विज्ञान तथा प्रविधिसँग सम्बन्धित ऐन तथा नियमावलीहरू आवश्यकता अनुसार तर्जुमा तथा संशोधन गरी विद्यालयबाट हुने सेवा प्रवाहलाई थप प्रभावकारी बनाई जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्न विद्यालयहरूको सञ्चालन तथा कार्यसम्पादन स्तरको वार्षिक रूपमा कार्य सम्पादन परीक्षण गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>५. आधारभूत, माध्यमिक र उच्च शिक्षा सम्बन्धी शैक्षिक संस्था सञ्चालन तथा नियमनका लागि छाता ऐन तर्जुमा गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यमा १५ वर्ष माथिको साक्षरता दर ५८ बाट ९० प्रतिशत पुगेको हुने, युवा साक्षरता दर ८५ बाट ९९ प्रतिशत पुगेको हुने, आधारभूत तहमा खुद भर्नादर ९२.३ बाट ९९.५ प्रतिशत र माध्यमिक तह (९-१२) मा खुद भर्नादर ४३.९ बाट ६५ पुगेको हुनेछ । प्रारम्भिक बालविकासमा खुद भर्ना दर शत प्रतिशत पुगेको हुनेछ । उच्च शिक्षाको कुल भर्ना दर २२ प्रतिशत र काम गर्ने उमेर समूहका प्राविधिक तथा व्यावसायिक क्षेत्रमा तालिम प्राप्त जनसंख्या २५ बाट ६० प्रतिशत पुगेको हुनेछ । मातृभाषामा पठनपाठन हुने विद्यालय संख्यामा २० प्रतिशतले वृद्धि भएको हुनेछ । आधारभूत तहमा महिला शिक्षकको अनुपात कम्तीमा ५० प्रतिशत कायम भएको हुनेछ । माध्यमिक शिक्षामा अध्ययन गर्नेमध्ये ३० प्रतिशत प्राविधिक धारमा र १५ प्रतिशत विज्ञान विषय अध्ययन गरेका हुनेछन् । कक्षा ५, ८, १० र १२ मा विद्यार्थी उपलब्धि परीक्षण भएको हुनेछ ।

#### ७.३ स्वास्थ्य तथा पोषण

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले प्रत्येक नागरिकलाई राज्यबाट आधारभूत स्वास्थ्य सेवा निःशुल्क प्राप्त गर्ने मौलिक हकको व्यवस्था गरेको छ । देश विकासमा स्वस्थ र उत्पादनशील नागरिकको महत्वलाई दृष्टिगत गरी यस क्षेत्रमा लगानी वृद्धि मार्फत गुणस्तरीय तथा सर्वसुलभ स्वास्थ्य सेवामा समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्नु राज्यको दायित्व हो । यसै सन्दर्भमा लोककल्याणकारी राज्यको अवधारणा अनुरूप स्वास्थ्य क्षेत्रलाई नाफामूलकबाट क्रमशः सेवामूलक क्षेत्रमा रूपान्तरण गर्दै लैजानु पर्ने आवश्यकता छ । संविधानको एकल तथा साझा अधिकार सूची अनुसार संघ, प्रदेश र स्थानीय तहलाई स्वास्थ्य सेवाको जिम्मेवारी दिँदै स्वास्थ्य नीति, मापदण्ड, गुणस्तर, अनुगमन, परम्परागत उपचार सेवा र सरुवा रोग

नियन्त्रण लगायतको कार्यलाई संघको अधिकार भित्र राखिएको छ। यसको प्रभावकारी कार्यान्वयनको लागि अन्तरमन्त्रालय समन्वय तथा सहकार्यको अपरिहार्यता रहेको हुन्छ।

स्वास्थ्य सेवामा कार्यान्वयन भएका विभिन्न कार्यक्रमको फलस्वरूप प्रतिहजार जीवित जन्ममा शिशु मृत्युदर ३२, नवजात शिशु मृत्युदर २१, पाँच वर्ष मुनिको बाल मृत्युदर ३९ (प्रतिहजार जीवित जन्ममा) तथा मातृ मृत्युदर २३९ (प्रतिलाख जीवित जन्ममा) मा झरेको छ भने कुल प्रजनन दर २.३ प्रति महिला रहेको छ। त्यसैगरी पाँच वर्ष मुनिका बालबालिकामा पुङ्कोपना घटेर ३६ प्रतिशतमा सीमित भएको हुनेछ। यस परिप्रेक्षमा नेपालले विभिन्न समयमा गरेको अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता, नेपाल सरकारका विद्यमान नीति एवम् स्वास्थ्य तथा पोषण क्षेत्रका प्रमुख समस्या, चुनौती र अवसरलाई समेत आधार बनाउँदै दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्ने राष्ट्रिय कार्यसूची रहेको छ। नागरिकलाई स्वस्थ बनाउन आधुनिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक, प्राकृतिक, होमियोपेथिक चिकित्सा क्षेत्र, स्वास्थ्य सुशासन र अनुसन्धानमा लगानी बढाउन आवश्यक देखिएको छ। यस योजनामा स्वास्थ्य सेवालालाई जनताको घरदैलोसम्मै पुऱ्याउन राज्यको नेतृत्वदायी र निजी तथा सहकारी क्षेत्रको परिपूरक भूमिका रहनेछ।

## २. प्रमुख समस्या

जनताले अपेक्षा गरे अनुरूप गुणस्तर सहितको स्वास्थ्य सेवाको पहुँच र एकरूपता कायम गर्न नसक्नु, सेवामूलक तथा जनस्वास्थ्यप्रति उत्तरदायी सेवा तथा जनशक्ति पर्याप्त विकास गर्न नसक्नु, स्वास्थ्य सेवामा लगानी अनुसारको प्रतिफल प्राप्त नहुनु, सरकारी स्वास्थ्य संस्थामा आवश्यकता अनुसारको आधुनिक उपकरण र विशेषज्ञ चिकित्सकहरूको अभाव हुनु, सर्ने तथा नसर्ने रोगहरू, कुपोषण, दुर्घटना तथा विपद्जन्य स्वास्थ्य समस्या विद्यमान रहनु, विश्वव्यापीकरणसँगै खानपान तथा जीवनशैलीमा आएको परिवर्तनले नसर्ने रोगहरूको भार तथा मानसिक स्वास्थ्य समस्याहरू बढ्दै जानु प्रमुख समस्या हुन्। स्वास्थ्य सेवासँग सम्बन्धित जनशक्ति उत्पादन र उपयोगबीच सामन्जस्यता हुन नसक्नु, जलवायु परिवर्तन, बढ्दो खाद्य असुरक्षा तथा प्राकृतिक विपद्ले हुने मानवीय स्वास्थ्य समस्याहरू उत्पन्न हुनु, एन्टिबायोटिकको समुचित प्रयोग नहुँदा त्यसबाट हुने प्रति-जैविक प्रतिरोध (Anti-Microbial resistance) बढ्दै जानु, मातृ मृत्युदर घटने क्रममा भए पनि गति न्यून रहनु, ५ वर्ष मुनिका करिब एक तिहाइभन्दा बढी बालबालिका र प्रजनन उमेर समूहका महिलामा न्यून पोषण हुनु, समुदायमा प्रदान गरिने स्वास्थ्य सेवामा निजी क्षेत्रको सहभागिता, यथोचित सहकार्य तथा प्रभावकारी नियमन हुन नसक्नु जस्ता समस्या समेत रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

स्वास्थ्यका सबै क्षेत्रमा नागरिकको समतामूलक पहुँच स्थापित गर्नु, निःशुल्क गुणस्तरीय आधारभूत स्वास्थ्य सेवालालाई सबै स्थानीय तहबाट सर्वसुलभ रूपमा उपलब्ध गराउनु, अति विपन्न र जोखिममा परेका नागरिकलाई उच्च प्राथमिकतामा राख्दै स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध गराउनु, स्वास्थ्य उपचारमा उच्च रहेको व्यक्तिगत खर्च घटाउनु, वित्तीय स्रोतको परिमाण निर्धारण र उपलब्धता सुनिश्चितता गर्नु, संघीय प्रणाली अनुरूप स्वास्थ्य संस्थाको व्यवस्थापन गर्नु, स्वास्थ्य बिमालाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गराउनु, नाफामूलक स्वास्थ्य क्षेत्रलाई क्रमशः सेवामूलक क्षेत्रमा रूपान्तरण गरी स्वास्थ्य क्षेत्रलाई मानवीय स्वास्थ्यप्रति जिम्मेवार बनाउनु, स्वास्थ्य सेवा र सामाजिक उत्तरदायित्व

वहन गर्ने सीप-मिश्रित दक्ष स्वस्थ जनशक्तिको सन्तुलित व्यवस्थापन गर्नु, औषधि उत्पादनमा आत्मनिर्भर बन्नु, जलवायु परिवर्तन र बढ्दो शहरीकरणसँगै सिर्जना भएका जीवनशैलीसँग सम्बन्धित स्वास्थ्य समस्याहरूको समाधान गर्नु, औषधि तथा औषधिजन्य सामग्रीको प्रभावकारी व्यवस्थापन तथा नियमन गर्नु, स्वास्थ्य सूचना प्रणालीलाई थप व्यवस्थित, एकीकृत र प्रविधिमैत्री बनाउँदै सबै तहको स्वास्थ्य सूचनाको मागलाई यथोचित सम्बोधन गरी अनुमगन, मूल्याङ्कन, समीक्षा, नीति निर्माण तथा निर्णय प्रक्रियामा तथ्याङ्कको प्रयोग बढाउनु, मृत्युको कारणको अभिलेख राख्ने पद्धतिको विकास र नियमित अनुसन्धान गर्नु, स्वास्थ्य सेवामा गुणस्तरको सुनिश्चितता तथा नियमन गरी समग्र स्वास्थ्य तथा पोषण क्षेत्रमा सुशासन कायम गर्नु जस्ता प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

संविधान प्रदत्त राज्यका संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच स्वास्थ्य सेवासम्बन्धी अधिकारको सूची बाँडफाँट हुनु, नीति र कानून मार्फत स्वास्थ्य बिमा कार्यक्रम कार्यान्वयनमा रहनु, प्रदेश तथा स्थानीय तहले आफ्नै स्रोतको प्रयोग गरी स्वास्थ्यमा लगानी वृद्धि गर्दै कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु, नयाँ सूचना प्रविधि, औषधि तथा उपकरणहरूको उपलब्धता बढ्दै जानु, पूर्वाधारको विकाससँगै नागरिकहरूमा चेतना तथा चासो निरन्तर बढ्दै जानु, समुदायस्तरसम्म स्वास्थ्य संजालको विस्तार हुनुका साथै विद्यमान स्वास्थ्य नीति तथा कार्यक्रमले स्वास्थ्य सेवालार्ई व्यवस्थित तथा गुणस्तरीय बनाउने कार्यमा जोड दिनु एवम् नीति निर्माण तथा निर्णय प्रक्रियामा तथ्याङ्कको प्रयोग सबै तहका सरकारहरूको प्राथमिकतामा पर्नु जस्ता अवसर रहेका छन्।

#### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

स्वस्थ, उत्पादनशील, जिम्मेवार र सुखी नागरिक।

##### ४.२ लक्ष्य

सबै तहमा सबल स्वास्थ्य प्रणालीको विकास र विस्तार गर्दै जनस्तरमा गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवाको पहुँच सुनिश्चित गर्ने।

##### ४.३ उद्देश्य

१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा सबै किसिमका स्वास्थ्य सेवाहरूको सन्तुलित विकास र विस्तार गर्नु।
२. सर्वसुलभ र गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवाको लागि सरकारको उत्तरदायित्व र प्रभावकारी नियमन अभिवृद्धि गर्दै नाफामूलक स्वास्थ्य क्षेत्रलाई सेवामूलक क्षेत्रको रूपमा क्रमशः रूपान्तरण गर्नु।
३. बहुक्षेत्रीय समन्वय तथा साझेदारी सहित स्वास्थ्य सेवामा नागरिकको पहुँच तथा उपभोग बढाई सेवा प्रदायक र सेवाग्राहीलाई थप जिम्मेवार बनाउँदै स्वस्थ जीवनशैली प्रवर्द्धन गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>१. प्रतिकारात्मक, प्रवर्द्धनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्स्थापनात्मक तथा प्रशामक (Palliative Care) लगायतका आधारभूतदेखि विशिष्टीकृत र गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवामा सबै नागरिकको पहुँच सुनिश्चित गर्ने ।</p> | <p>१. निःशुल्क आधारभूत स्वास्थ्य सेवामा नागरिकको सर्वसुलभ पहुँचको लागि प्याकेज र प्रोटोकल तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. ग्रामीण क्षेत्रका नागरिकको स्वास्थ्य सेवामा पहुँच विस्तार गर्दै गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवालाई सर्वसुलभ रूपमा प्रवाह गर्न टेलीमेडिसिन लगायत आधुनिक प्रविधिको विकास र विस्तार तथा गैह्रसरकारी र निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा घुम्ती स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रमको कार्यविधि बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. स्वास्थ्य सेवामा साझेदारीको कार्यविधि तयार गरी निजी तथा गैरसरकारी संस्थासँगको सहकार्यमा सबै तहमा पुनर्स्थापना केन्द्र स्थापना गर्दै समुदायमा आधारित पुनर्स्थापनात्मक तथा प्रशामक सेवालाई विकास र विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>४. रोगको भार तथा लागत प्रभावकारिताको आधारमा समयानुकूल खोप सेवाहरू प्रदान गरिनेछ । खोप सेवालाई दिगो बनाउन खोप कोषलाई सुदृढ बनाइनेछ ।</p> <p>५. आचारसंहिता मार्फत चिकित्सक/स्वास्थ्यकर्मी र बिरामी बीचको असल र सुमधुर सम्बन्ध कायम गर्दै सद्भावपूर्ण व्यवहार सुनिश्चित गर्न प्रवर्द्धनात्मक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>६. सबै तहका स्वास्थ्य संस्थाहरूबाट प्रदान गरिने स्वास्थ्य सेवाको गुणस्तरलाई सुधार गर्न नेपाल स्वास्थ्य पूर्वाधार विकास मापदण्ड एवम् न्यूनतम सेवा मापदण्डलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्दै आवश्यक बजेट सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> |
| <p>२. आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा तथा अन्य चिकित्सा पद्धतिहरूको योजनाबद्ध विकास र विस्तार गर्ने ।</p>   | <p>१. स्थानीय स्तरमा उपलब्ध औषधिजन्य जडीबुटी, खनिज एवम् जान्तब द्रव्यको पहिचान, संकलन, संरक्षण र प्रवर्द्धनको लागि संरचना निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रचलित प्राकृतिक चिकित्सा, वैकल्पिक तथा अन्य चिकित्सा पद्धति तथा सेवाहरूलाई निश्चित मापदण्डका आधारमा सूचीकृत तथा व्यवस्थित गर्दै आयुर्वेद, पञ्चकर्म, योग र प्राकृतिक चिकित्साको विशिष्टीकृत सेवा सहितको राष्ट्रिय आयुर्वेद, योग, ध्यान, प्रणायाम, मनोपरामर्श, पञ्चकर्म तथा प्राकृतिक चिकित्सा सेवा केन्द्रको स्थापना गरी स्वास्थ्य पर्यटनलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| <p>३. जीवनपथको अवधारणा (Life Course Approach) अनुरूप सबै उमेर समूहका नागरिकहरूको स्वास्थ्य आवश्यकतालाई सम्बोधन गरी मातृशिशु, बालबालिका, र किशोरकिशोरीको सर्वाङ्गीण विकास र परिवार व्यवस्थापन सेवालाई थप सुधार तथा विस्तार गर्ने ।</p> | <p>१. जीवनचक्रको अवधारणा अनुरूप मातृशिशु, बालबालिका, किशोरकिशोरीको सर्वाङ्गीण विकास र परिवार व्यवस्थापन सेवालाई थप सुधार तथा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>२. सबै उमेर समूहका नागरिकहरूको स्वास्थ्य आवश्यकतालाई सम्बोधन गर्न जीवनपथको अवधारणा अनुरूप स्वास्थ्य सेवाहरूलाई जेष्ठ नागरिक, लैंगिक तथा अपाङ्गमैत्री बनाइनेछ ।</p> <p>३. विभिन्न उमेर समूहमा हुनसक्ने स्वास्थ्य जोखिम शीघ्र पहिचान गर्न नियमित रूपमा स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. महिलाहरूमा बढ्दो क्रममा रहेको स्तन क्यान्सर र सर्भाइकल क्यान्सर जस्ता रोगहरूको निःशुल्क परीक्षण गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>५. मातृ मृत्युदरलाई घटाउन तथ्यमा आधारित मिडवाइफ शिक्षा तथा सेवा लगायत विशेष कार्यक्रमहरू तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>४. जनसंख्याको वितरण, भौगोलिक अवस्थिति एवम् आवश्यकताको आधारमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा अस्पताल र स्वास्थ्य संस्थाहरू तथा सीप-मिश्रित सामाजिक उत्तरदायित्व वहन गर्न सक्ने दक्ष जनशक्तिको विकास तथा विस्तार गर्ने ।</p>             | <p>१. स्थानीय तहका हरेक वडामा कम्तीमा एक आधारभूत स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, हरेक स्थानीय तहमा आधारभूत आकस्मिक शल्यक्रिया र प्राथमिक ट्रमा केयर सहितको स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित हुने गरी प्राथमिक अस्पताल, प्रदेश अन्तर्गत द्वितीय तहको अस्पताल, प्रादेशिक अस्पतालहरू र संघ अन्तर्गत रहने गरी अति-विशिष्टीकृत अस्पताल र संघ अन्तर्गत नै रहने गरी हरेक प्रदेशमा कम्तीमा एक विशिष्टीकृत अस्पताल र एक स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. सरकारी स्वास्थ्य संस्थाहरूमा कार्यरत चिकित्सक/स्वास्थ्यकर्मी एक मात्र स्वास्थ्य संस्थामा रहने “एक चिकित्सक/स्वास्थ्यकर्मी-एक स्वास्थ्य संस्था” को अवधारणालाई सबै सरकारी स्वास्थ्य संस्थाहरूमा क्रमशः लागू गरिनेछ र यस अवधारणालाई प्रभावकारी रूपमा लागू गर्न तथा सेवाको पहुँच विस्तार गर्नका लागि सरकारी अस्पतालहरूमा अतिरिक्त सुविधा सहितको विस्तारित स्वास्थ्य सेवा कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. आधुनिक विधि र निश्चित मापदण्ड विकास गरी स्वास्थ्य संस्थाको संख्या, प्रकार, स्थान तथा आवश्यक स्वास्थ्य जनशक्तिको निर्धारण गर्न गुरुयोजना तयार गरी लागू गरिनेछ ।</p> <p>४. देशको आवश्यकता र वित्तीय स्रोतको उपलब्धता हेरी प्राथमिकताको आधारमा स्वास्थ्यका विभिन्न विधामा छात्रवृत्ति प्रदान गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ५. स्वास्थ्यमा राष्ट्रिय लगानी वृद्धि गर्दै दिगो स्वास्थ्य वित्तीय प्रणालीको विकास गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>स्वास्थ्य सेवामा सबैको समतामूलक पहुँच वृद्धि, स्वास्थ्य सेवामा व्यक्तिगत खर्चको न्यूनीकरण र लागत प्रभावकारिताका आधारमा स्वास्थ्यमा वित्तीय स्रोतको परिचालन गर्ने विषयलाई समेट्दै एकीकृत राष्ट्रिय स्वास्थ्य वित्तीय रणनीति तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</li> <li>गुणस्तरीय आधारभूत स्वास्थ्य सेवालाई सबै स्थानीय तहमा निःशुल्क र विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवा लगायत अन्य स्वास्थ्य सेवालाई समतामूलक स्वास्थ्य बिमा मार्फत उपलब्ध गराइनेछ ।</li> </ol>   |
| ६. स्वास्थ्य सेवामा सरकारको नेतृत्वदायी भूमिका सुनिश्चित गर्दै सरकारी, निजी तथा गैरसरकारी क्षेत्रबीचको सहकार्य तथा साझेदारीलाई व्यवस्थापन तथा नियमन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>शिक्षा क्षेत्रसँग आवश्यक समन्वय गरी “एक विद्यालय-एक स्वास्थ्यकर्मी नीति” कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमनकारी निकायहरूको जनशक्ति, संरचना र कार्यक्षेत्रलाई सुधार गर्दै सो सम्बन्धी व्यवसायी परिषद्हरूको छाता संरचनाको विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।</li> <li>स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठानहरूलाई थप व्यवस्थित गर्न एकीकृत छाता ऐनको तर्जुमा गरी आवश्यक संरचनाको विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।</li> <li>निश्चित उद्देश्य प्राप्तिका लागि स्पष्ट मापदण्ड र कार्यविधि तर्जुमा गरी निजी, सामुदायिक तथा गैर सरकारी क्षेत्रका स्वास्थ्य संस्थाहरूसँग सहकार्य तथा साझेदारी गरिनेछ ।</li> <li>सरकारी, निजी, सामुदायिक एवम् सहकारी क्षेत्रलाई समेट्दै चिकित्सा सुशासन कायम गर्नुको साथै स्वास्थ्य सेवा मूल्यलाई निश्चित मापदण्ड बनाई नियमन गरिनेछ ।</li> <li>प्रदेश तथा स्थानीय तहलाई जिम्मेवार बनाई अस्पताल तथा अन्य स्वास्थ्य संस्था एवम् प्रयोगशालाबाट सिर्जना हुने फोहोर र औषधिजन्य फोहोर (Pharmaceutical Waste) को उचित व्यवस्थापनको लागि नियमनका साथै निरन्तर अनुगमन गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ७. नयाँ प्रविधिजन्य स्वास्थ्य सामग्रीहरूका साथै औषधि तथा औषधिजन्य सामग्रीको उत्पादन, आयात, भण्डारण, वितरण तथा प्रयोगको नियमन तथा                            | <ol style="list-style-type: none"> <li>नेपाल सरकारबाट निःशुल्क प्रदान गरिने औषधिलाई मध्यनजर गर्दै औषधि उत्पादनमा मुलुकलाई क्रमशः आत्मनिर्भर बनाइनेछ ।</li> <li>औषधिजन्य जडीबुटिको व्यावसायिक खेती र औषधि उद्योगको विकास र प्रवर्द्धनमा जोड दिदै औषधि तथा प्रविधिजन्य स्वास्थ्य सामग्रीको उत्पादन, भण्डारण र वितरणको प्रभावकारी व्यवस्थापन गरिनेछ ।</li> </ol>   |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| व्यवस्थापन गर्ने ।   | ३. जेनेरिक प्रेस्क्रिप्सनको कार्यान्वयन, औषधिको मूल्य तथा गुणस्तर निर्धारण, प्रति-जैविक प्रतिरोधको न्यूनीकरण, एन्टिबायोटिक दुरुपयोगको नियन्त्रण र औषधिको अनुसन्धान लगायतका विषयलाई प्रभावकारी बनाउन नियमनकारी निकायको विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।  |
| ८. सर्ने तथा नसर्ने रोग नियन्त्रण तथा जनस्वास्थ्य विपद् व्यवस्थापन पूर्वतयारी तथा प्रतिकार्यका लागि सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणाली सहितका एकीकृत उपाय अवलम्बन गर्ने ।   | <p>१. सर्ने तथा नसर्ने रोगहरूको अध्ययन, अनुसन्धान, निगरानी, रोकथाम, नियन्त्रण, निवारण, उन्मूलन तथा नियमनका लागि राष्ट्रिय स्तरमा एकीकृत निकायको विकास गरी कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. नसर्ने तथा दीर्घ रोगहरूको रोकथाम, नियन्त्रण तथा उपचार सेवालाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्न बहुक्षेत्रीय समन्वय मार्फत दीर्घकालीन रणनीति तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. सिकल सेल एनिमिया र थालेसेमिया लगायतका वंशानुगत रोगहरूको भार र वितरण सम्बन्धमा जनसंख्यामा आधारित अनुसन्धानको आधारमा कार्ययोजना बनाई रोकथाम तथा उपचारका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. मानसिक स्वास्थ्य सेवाको पहुँचलाई सबै तहमा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>५. आँखा, नाक, कान, घाँटी तथा मुख सम्बन्धी स्वास्थ्य सेवालाई संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा क्रमशः विकास र विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>६. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा विपद् तथा महामारीको तत्काल सम्बोधन, एम्बुलेन्स सेवाको एकीकृत विकास, साधन सम्पन्न तालिम प्राप्त चिकित्सक र स्वास्थ्यकर्मीको टोलीलाई परिचालन गर्न कार्यविधि बनाई लागू गरिनेछ ।</p> |
| ९. स्वास्थ्य सूचना प्रणालीहरूलाई थप व्यवस्थित, एकीकृत र प्रविधिमैत्री बनाउँदै सबै तहको स्वास्थ्य सूचनाको मागलाई यथोचित सम्बोधन गरी अनुमगन, मूल्याङ्कन, समीक्षा, नीति निर्माण तथा निर्णय प्रक्रियामा तथ्याङ्कको प्रयोग बढाउने । | <p>१. स्वास्थ्य तथ्याङ्क व्यवस्थापनलाई गुणस्तरीय तथा प्रविधिमैत्री बनाई अध्ययन, अनुसन्धान, सर्वेक्षण, प्रक्षेपण, विश्लेषण गरी सबै तहमा हुने नीति निर्माण तथा निर्णय प्रक्रियामा तथ्याङ्कको प्रयोगलाई बढावा दिइनेछ ।</p> <p>२. स्वास्थ्य संस्था तहमा तथ्याङ्क व्यवस्थापनलाई प्रविधिमैत्री बनाई स्वास्थ्य संस्थाबाट नै विद्युतीय प्रतिवेदन गर्ने र क्रमशः विद्युतीय स्वास्थ्य अभिलेखलाई सबै स्वास्थ्य संस्थामा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>३. स्थानीय तहमा उत्पादन हुने स्वास्थ्य तथ्याङ्कलाई आवश्यकता अनुरूप राष्ट्रिय मूल संजालसँग आबद्ध गरी हरेक समयमा सूचना अद्यावधिक हुने प्रणालीको विकास तथा सम्प्रेषणको व्यवस्था गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | ४. राष्ट्रिय आवश्यकता तथा प्राथमिकताका आधारमा अध्ययन, अनुसन्धान, सर्वेक्षण गर्ने र आएका नतिजालाई नीति निर्माण तथा कार्यक्रम निर्धारण गर्नमा प्रयोग गरिनेछ ।  |
| १०. नेपाल स्वास्थ्य अनुसन्धान परिषद्को कार्यक्षेत्रलाई समयानुकूल परिमार्जन गर्दै प्रदेशस्तरसम्म विकास र विस्तार गर्ने । | १. तथ्यमा आधारित स्वास्थ्य नीति तथा योजना तर्जुमा गर्न स्वास्थ्य अनुसन्धानलाई विश्वविद्यालय तथा प्राज्ञिक क्षेत्रसँग सहकार्य गर्दै नेपाल स्वास्थ्य अनुसन्धान परिषद्को संरचनालाई प्रदेशस्तरसम्म विस्तार गरिनेछ ।  |
| ११. आप्रवास प्रक्रियाबाट जन स्वास्थ्यमा हुनसक्ने जोखिमलाई न्यूनीकरण गर्ने व्यवस्था मिलाउने ।                            | १. आप्रवास स्वास्थ्य व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास गर्दै आप्रवासीको प्रस्थान पूर्व, गन्तव्य स्थानमा र आगमन पश्चातको स्वास्थ्य परीक्षण तथा स्वास्थ्य सेवामा सहज पहुँच र उपयोगका लागि नीतिगत तथा संस्थागत व्यवस्था गरिनेछ ।   |
| १२. बहुक्षेत्रीय पोषण योजनाको समन्वय र साझेदारी मार्फत प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्ने ।                             | १. बहुक्षेत्रीय पोषण योजना (दोस्रो) ले परिलक्षित गरे अनुरूप प्रदेश र स्थानीय तहमा गठित पोषण सम्बद्ध संयन्त्रलाई पोषण सुधार योजना सहित सुदृढ बनाउँदै "पोषण-लक्षित तथा पोषण संवेदनशील कार्यक्रमलाई सबै तहका स्वास्थ्य संस्थाबाट सञ्चालन गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. कुपोषण न्यूनीकरण गर्न गुणस्तरीय एवम् स्वास्थ्यवर्द्धक खाद्य पदार्थको पहुँच र उपभोग बढाउँदै स्वस्थ बानी-व्यवहारलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।  |
| १३. बहुक्षेत्रीय समन्वय मार्फत सबै नीतिमा स्वास्थ्यलाई समावेश गर्ने ।   | १. जनस्वास्थ्य समस्यालाई सम्बोधन गर्न, खानेपानी, वातावरणीय सरसफाई, वायु तथा ध्वनि प्रदूषण, खाद्य सुरक्षा, शिक्षा, सडक लगायतका विषयमा बहुक्षेत्रीय समन्वयलाई सुदृढीकरण गर्दै "सबै नीतिमा स्वास्थ्य" को अवधारणालाई कार्यान्वयनमा ल्याउन पैरवी गर्दै सम्बन्धित सरोकारवालासँग समन्वय गरी एक स्वास्थ्य अवधारणालाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. स्वास्थ्यलाई प्रतिकूल असर पार्ने सुर्तीजन्य, मदिरा, रासायनिक पदार्थ, विषादी तथा अखाद्य वस्तुहरूको मिसावट र प्रयोगलाई नियन्त्रण तथा नियमन गरिनेछ । जनस्वास्थ्यलाई हानी गर्ने प्रशोधित तथा तयारी खाद्यपदार्थहरू प्रवर्द्धन गर्ने खालका तथ्यहीन र भ्रमपूर्ण सन्देश एवम् विज्ञापनलाई निरुत्साहित तथा नियन्त्रण गर्न स्वास्थ्य सम्बन्धी सन्देश र सामग्री उत्पादन, प्रसारण र सम्प्रेषणलाई वैज्ञानिक, व्यवस्थित र प्रभावकारी बनाइनेछ । |

| रणनीति | कार्यनीति   |
|--------|---|
|        | <p>३. “मेरो स्वास्थ्य, मेरो जिम्मेवारी” लाई प्रभावकारी बनाउन स्वस्थ भान्साको अवधारणा अनुरूप स्वस्थ खानाको प्रयोग गर्न हरेक नागरिकलाई सुसूचित गर्दै स्वस्थ वातावरण र सक्रिय जीवनशैलीको प्रवर्द्धन गर्न साइकल लेन, एक घर-एक करेसाबारी, सार्वजनिक पार्क, व्यायाम हल, योगाभ्यास तथा पञ्चकर्म केन्द्रको निर्माण र स्थापनाको लागि सरोकारवालासँग समन्वय तथा पैरवी गरिनेछ ।</p> <p>४. तोकिएका उद्योग, व्यवसाय तथा आयोजनाको स्वीकृति पूर्व व्यवसायजन्य स्वास्थ्य र सुरक्षालाई मध्यनजर गरी जनस्वास्थ्य प्रभाव मूल्याङ्कनको लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा मापदण्ड र संयन्त्रको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

स्वस्थ, सबल र सक्रिय जीवन सहितको नेपालीको औसत आयु ७२ वर्ष पुगेको हुनेछ । प्रतिलाख जीवित जन्ममा मातृ मृत्यु अनुपात ९९, प्रति हजार जीवित जन्ममा नवजात शिशु मृत्युदर १४ र पाँच वर्ष मुनिको बाल मृत्युदर २४ मा झरेको हुनेछ । पाँच वर्ष मुनिका कम तौल भएका बालबालिका २७ बाट १५ प्रतिशतमा र पुङ्कोपना भएका बालबालिका ३६ बाट २० प्रतिशतमा झरेको हुनेछ । नागरिकले आधारभूत स्वास्थ्य सेवा निशुल्क प्राप्त गरेका हुनेछन् । स्वास्थ्य बिमामा आबद्ध भएको जनसंख्या ६० प्रतिशत, स्वास्थ्य उपचारमा व्यक्तिगत खर्च घटेर ४० प्रतिशत, स्वास्थ्यमा सरकारी लगानी ८ प्रतिशत र ३० मिनेटको दुरीमा स्वास्थ्य संस्था भएका घरधुरी ८० प्रतिशत पुगेको हुनेछ । प्रोटोकल अनुसार कम्तीमा चार पटक गर्भवती जाँच गराउने महिला ८१ प्रतिशत, दक्ष स्वास्थ्यकर्मीको उपस्थितिमा जन्मिएका बच्चाहरू ७९ प्रतिशत र पूर्ण खोप पाउने बच्चाहरू ९५ प्रतिशत पुगेका हुनेछन् । मलेरिया, कालाज्वर र हात्तीपाइले रोग निवारण भएका हुनेछन् ।

#### ७.४ खानेपानी तथा सरसफाई

##### १. पृष्ठभूमि

खानेपानी तथा सरसफाई सेवाले मानव जीवनमा बहुआयामिक प्रभाव पार्दछ । त्यसैले यस सेवालालाई नेपालको संविधानले मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था गरेको छ । साथै, अन्तर्राष्ट्रिय रूपमा समेत दिगो विकास लक्ष्यले खानेपानी तथा सरसफाई सम्बन्धी स्पष्ट लक्ष्यहरू निर्धारण गरेको छ । नेपालमा व्यवस्थित खानेपानी प्रणालीको शुरुआत वि.सं. १९५१ मा वीरधाराबाट सुरु भएको हो । हालसम्म ८८ प्रतिशत जनसंख्यालाई आधारभूत स्तरको र २० प्रतिशत जनसंख्यालाई सुधारिएको (उच्च तथा मध्यम स्तर) खानेपानी सेवामा पहुँच पुगिसकेको अवस्था छ । सरसफाईतर्फ हालका वर्षहरूमा उल्लेख्य प्रगति भई ९८ प्रतिशत घरधुरीले आधारभूतस्तरको सरसफाई सेवा उपयोग गरिरहेका छन् । यसबाट बालमृत्युदर कम गर्न तथा सरदर आयु वृद्धि गर्न सहयोग पुगेको, नागरिकको समग्र स्वास्थ्य स्थितिमा सुधार

भई उत्पादनशील समयमा वृद्धि भएको तथा सामाजिक रहन सहन र बालबालिकाको विद्यालय उपस्थिति दरमा अनुकूल सुधार गर्न योगदान पुगेको छ ।

## २. प्रमुख समस्या

विभिन्न प्राकृतिक तथा मानवजन्य कारणले पानीका स्रोतहरूमा आएको हासका कारण पानीको उपलब्धतामा कमी आएको छ । अपेक्षा अनुरूप खानेपानी सेवालार्ई सुरक्षित, भरपर्दो र दिगो बनाउन सकिएको छैन । मानव बस्तीको विस्तार र विकाससँगै मानव मल-मुत्रजन्य फोहोरको उचित व्यवस्थापनको अभावमा बस्ती, नदीनाला, जलाशय तथा वातावरण क्रमश प्रदूषित हुँदै गएका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

नेपालको संविधानद्वारा प्रदत्त खानेपानी तथा सरसफाईको अधिकार अनुरूप सबैलाई स्वच्छ र सुरक्षित खानेपानीको आपूर्ति व्यवस्था गर्नु, हास हुँदै गएका सतहगत र भूमिगत खानेपानीका स्रोतको जगेर्ना गर्नु, खानेपानी तथा सरसफाईका संरचनालाई जलवायु परिवर्तन अनुकूल तथा विपद् व्यवस्थापनमैत्री बनाउँदै लैजानु, अव्यवस्थित शहरीकरणका कारण खानेपानी तथा सरसफाईको सेवामा परेको चापलाई व्यवस्थित गर्नु, परिवर्तित संस्थागत संरचनाको सन्दर्भमा खानेपानी तथा सरसफाई क्षेत्रको व्यवस्थित विकासको लागि तीन तहमा क्षमता अभिवृद्धि गर्नु, शहर तथा बस्तीमा उपयुक्त आर्थिक तथा प्राविधिक उपायद्वारा मानव सिर्जित मल मूत्र लगायतका औद्योगिक र कृषिजन्य फोहोर पानीको संकलन र प्रशोधन गरी उचित व्यवस्थापन गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन् ।

परिवर्तित सन्दर्भमा समुदाय स्तरमा आयोजना पहिचान, तर्जुमा र कार्यान्वयनबाट उत्तरदायित्व वृद्धि हुने, जीवन शैलीमा आएको सुधारसँगै गुणस्तरयुक्त खानेपानी र सरसफाई सेवाको बढ्दो माग, नदीनाला, तालतलैया तथा जलाशय लगायत अन्य वातावरणीय स्वच्छताका विषयमा जनचेतनामा आएको सकारात्मक अभिवृद्धि, खानेपानी र सरसफाईको सेवा प्रवाहमा निजी क्षेत्रको बढ्दो आकर्षण, सामुदायिक, गैरसरकारी तथा विकास साझेदारको सहयोग र सहभागिता, विदेशमा समेत खानेपानी निर्यात गर्न सकिने सम्भावना यस क्षेत्रका अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

## ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

स्वच्छ, सुरक्षित, सर्वसुलभ र दिगो खानेपानी तथा सरसफाई सेवा ।

### ४.२ लक्ष्य

सबैलाई आधारभूत स्तरको खानेपानी तथा सरसफाई सेवाको पहुँच सुनिश्चित गर्दै गुणस्तरीय सेवा अभिवृद्धि गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. खानेपानी र सरसफाई सेवाको पर्याप्त, सुरक्षित र सर्वसुलभ रूपमा उपलब्धताबाट जनस्वास्थ्यमा सुधार गर्नु ।

२. सबै नागरिकलाई आधारभूत स्तरको सरसफाई सेवामा पहुँच तथा मानव मल मूत्र र फोहोर पानीको उचित व्यवस्थापन गरी वातावरणीय स्वच्छता कायम गराउनु ।
३. जलवायु परिवर्तन अनुकूल तथा विपद् व्यवस्थापनमैत्री खानेपानी तथा सरसफाई सेवा सुनिश्चित गर्नु ।
४. खानेपानी तथा सरसफाईको दिगो सेवा प्रवाहमा संघीय, प्रादेशिक र स्थानीय तहको भूमिका सबलीकरण गर्दै क्षमता अभिवृद्धि गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. आधारभूत खानेपानी तथा सरसफाई सेवाबाट वञ्चित रहेका समुदायको सहभागितामा खानेपानी तथा सरसफाई सेवा पुऱ्याउने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. आधारभूत खानेपानी तथा सरसफाई सेवाबाट विमुख समुदायको पहिचान र नक्शाङ्कन गरिनेछ ।</li> <li>२. आधारभूत खानेपानी तथा सरसफाई सेवाबाट वञ्चित रहेका क्षेत्रमा खानेपानी तथा सरसफाई सेवा पुऱ्याउने कार्यक्रमलाई उच्च प्राथमिकता दिई सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>३. "एक घर, एक धारा" को अवधारणा अनुरूप खानेपानी अयोजना निर्माण गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| २. आयोजना समयमै निर्माण सम्पन्न गर्ने तथा सेवा सञ्चालनमा समस्या भएका आयोजनाको उचित मर्मत-सम्भार, पुनर्स्थापना तथा समयसापेक्ष सेवास्तर अभिवृद्धि गर्दै जाने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. दिगो उपलब्धिका लागि लाभान्वित समुदायको सहभागितामा आयोजना निर्माण गरिनेछ । यस्ता कार्यक्रम स्थानीय तह र समुदायको सक्रियतामा सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>२. पुराना र सञ्चालनमा अन्य समस्या भएका तथा भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त आयोजनाको उचित मर्मत-सम्भार तथा पुनर्स्थापन गरी भरपर्दो सेवाको प्रत्याभुति गरिनेछ ।</li> <li>३. निर्माणाधीन तथा तराई-मधेस केन्द्रित आर्सेनिकमुक्त खानेपानी आयोजना यथाशीघ्र सम्पन्न गर्न तीन तहको सरकारबीच आवश्यक समन्वय, सहकार्य तथा सहजीकरण गरिनेछ ।</li> <li>४. सेवा सञ्चालनमा समयसापेक्ष सुधार गर्न आयोजनाको भौतिक संरचनागत सुधारका साथै उपभोक्ता समितिको क्षमता विकासका कार्यलाई प्रभावकारी रूपमा अघि बढाइनेछ ।</li> </ol> |
| ३. सुधारिएको खानेपानी सेवा विस्तारको लागि मागको आधारमा सहलगानी, लागत साझेदारी, लागत उठ्तीको सिध्दान्त अनुरूप   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. खानेपानी तथा सरसफाईको सर्वसुलभता कायम राख्दै गुणात्मक सेवा अभिवृद्धिको लागि माग र स्थानीय क्रयशक्तिका आधारमा लागत उठ्तीको सिध्दान्त अनुरूप खानेपानी सेवा सुधारका आयोजना तथा फोहोर पानी व्यवस्थापनका आयोजना सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol>  |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| खानेपानी आयोजना सञ्चालन गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>२. उच्चस्तरीय खानेपानी तथा सरसफाई सेवाको विकासका लागि आवश्यक पर्ने आर्थिक स्रोत व्यवस्थापन गर्न वैकल्पिक स्रोत पहिचान गरी परिचालन गरिनेछ ।</li> <li>३. लाभान्वित समुदायसंगको पुँजीगत लागत सहभागिताका आधारमा सेवा बिस्तार र सुधार गर्ने आयोजनाको निर्माण गरिनेछ ।</li> <li>४. शहरी क्षेत्रमा खानेपानी आपूर्ति गर्दै आइरहेका सेवाप्रदायकहरूको उत्पादन, वितरण, नियमन तथा गुणस्तरको सुनिश्चितता गर्ने तथा स्वदेश र विदेशमा समेत खानेपानीको व्यापार तथा निर्यात गर्न सम्भाव्यता अध्ययन गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| ४. फोहोर पानीको उत्सर्जन कम गर्ने र उत्पादित फोहोर पानीको व्यवस्थापन गरी लाभ प्राप्त गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. गार्हस्थ्य, औद्योगिक तथा कृषिजन्य फोहोर पानी निष्काशन सम्बन्धी मापदण्ड तयार गरी लागू गर्दै लगिनेछ ।</li> <li>२. शहरी क्षेत्रका घना बस्तीमा ढल प्रणालीको विस्तार गरिनेछ। सबै घना बस्तीबाट अप्रशोधित ढल खुला निष्काशन गर्ने कार्यलाई निरुत्साहित गरिनेछ । कम जनघनत्व भएका स्थानहरूमा स्थलगत सरसफाई सुविधा प्रवर्धन गरिनेछ ।</li> <li>३. साना शहर तथा नगरोन्मुख क्षेत्रमा ढल प्रणालीमा आबद्ध नभएका शौचालयमा संकलन हुने दिसाजन्य लेदो पदार्थको उचित व्यवस्थापन गर्न प्रशोधन प्रणालीको निर्माण गरिनेछ ।</li> <li>४. ढल प्रणालीको नियमित मर्मत तथा सञ्चालन खर्च सम्पूर्ण रूपमा स्थानीय तह र लाभग्राही समूहको लागत सहभागितामा व्यहोरिनेछ । ठूला मर्मतकार्य र प्रशोधन प्रणालीका लागि तोके बमोजिम सघ तथा प्रदेश सरकारबाट आंशिक ऋण तथा अनुदान प्राप्त हुने व्यवस्थाका लागि सहजीकरण गरिनेछ ।</li> <li>५. स्थानीय तहहरूको सहकार्यमा प्रत्येक वडाहरूमा शौचालयहरू निर्माण गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ५. मानवजन्य फोहोर पानी प्रशोधन सहित व्यवस्थापन तथा दिसाजन्य लेदो व्यवस्थापन गर्दै नदी-नाला, जलाशय, जलाधार तथा ताल-तलैयाको पर्यावरणीय | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. खोलानालामा वातावरणीय बहाव कायम राख्न सकिने गरी आवश्यकता अनुसार विकेन्द्रित प्रशोधन प्रणाली निर्माण गर्न प्राथमिकता दिइनेछ ।</li> <li>२. फोहोर पानी संकलन गर्ने प्रणालीको निर्माण र प्रशोधन केन्द्रको स्थापना गर्न पुँजीगत खर्चको व्यवस्था गर्दा आवश्यकता र महत्वका आधारमा संघ र प्रदेशले स्थानीय तह र लाभग्राही समूहको सहलगानीमा ऋण वा अनुदान लगानी गर्न सक्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</li> </ol>   |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| स्वच्छता तथा सौन्दर्यता कायम गर्ने ।   | ३. फोहोर पानी व्यवस्थापनमा निजी लगानी आकर्षित गर्न आवश्यकता र वित्तीय स्रोतको उपलब्धताका आधारमा परियोजनाहरूमा सम्भाव्यता न्यून परिपूरक कोषको व्यवस्था गर्दै लगिनेछ ।   |
| ६. खानेपानी तथा सरसफाई आयोजनाहरूलाई जलवायु अनुकूलन तथा विपद् जोखिम न्यूनीकरण हुने गरी दिगोपना कायम गर्ने ।   | १. खानेपानी तथा सरसफाई सेवाको डिजाइन तथा निर्माणमा जलवायु परिवर्तन प्रभाव न्यूनीकरण तथा प्राकृतिक विपद् व्यवस्थापन अनुकूलनका अवयवलाई समेत समावेश गरिनेछ ।<br>२. जलवायु अनुकूलन कोष तथा अन्य उपलब्ध अन्तर्राष्ट्रिय कोषमा पहुँच स्थापित गरी राष्ट्रिय हित अनुकूलन उपयोग गरी खानेपानी तथा सरसफाई सेवामा सुधार गरिनेछ ।   |
| ७. खानेपानीका स्रोत तथा जलाधार क्षेत्रको पहिचान र संरक्षण, भूमिगत पानीको पुनर्भरण तथा जलस्रोतको बहु उपयोग, एकीकृत उपयोग तथा पुनरूपयोगलाई प्रोत्साहन र प्रवर्धन गर्ने । | १. ठूला शहरी क्षेत्रमा खानेपानी आपूर्ति गर्न जलाधारको पहिचान गरी यस्ता क्षेत्रको विशेष संरक्षण र विकास गरिनेछ ।<br>२. भूमिगत पानीको पुनर्भरण गर्ने उपाय र प्रविधिको विकास गरिनेछ ।<br>३. परम्परागत पानी पोखरी, ढुंगेधारा र मूलको संरक्षण गर्न कार्यक्रम सञ्चालन गरी भौगोलिक र प्राकृतिक स्वरूपको समेत जगेर्ना गरिनेछ ।<br>४. जलस्रोतको बहु उपयोग, एकीकृत उपयोग तथा पुनरूपयोगलाई प्रोत्साहन र प्रवर्द्धन गरिनेछ । |
| ८. खानेपानी तथा सरसफाई सेवा प्रदायक निकायहरूको समयानुकूल सुधार, सुदृढीकरण तथा समायोजन गर्ने ।  | १. प्रदेश र स्थानीय तहमा आयोजना छनोट, तर्जुमा तथा कार्यान्वयन सम्बन्धी क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. उपभोक्ता तथा सेवा प्रदायकहरूको क्षमता वृद्धि कार्यक्रम सञ्चालन गरी सेवास्तरमा अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>३. खानेपानी तथा सरसफाई सेवासँग सम्बन्धीत नीति, नियम, मापदण्ड तथा निर्देशिका तर्जुमा तथा समयानुकूल परिमार्जन गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्य सम्ममा ८८ प्रतिशतबाट ९९ प्रतिशत नागरिकमा आधारभूत स्तरको खानेपानी सेवा पुगेको हुने, करिब ४० प्रतिशत नागरिकहरूलाई सुधारिएको (उच्च तथा मध्यम स्तर) खानेपानी सेवा उपलब्ध हुने, खुला दिसामुक्त क्षेत्र घोषणा भएका क्षेत्रहरूमा पूर्ण सरसफाई उन्मुख क्रियाकलापहरूले निरन्तरता पाउने र घरायसी, औद्योगिक र अन्य मानवजन्य गतिविधिहरूबाट उत्सर्जित करिब २० प्रतिशत फोहोर पानी प्रशोधन गरी निष्काशन तथा विसर्जन भएको हुनेछ ।

## ७.५ युवा

### १. पृष्ठभूमि

राष्ट्रिय विकासमा युवा सहभागिता अभिवृद्धि गर्दै राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक र आर्थिक अधिकारहरूको पूर्ण उपयोग गर्ने वातावरण तयार गरी युवाको सर्वाङ्गीण विकास, सशक्तीकरण र युवा उद्यमशीलताका लागि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी लगायतका क्षेत्रमा विशेष अवसर प्रदान गर्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ। संयुक्त राष्ट्रसंघीय सुरक्षा परिषद्को प्रस्ताव नं. २२५०, दिगो विकास लक्ष्यहरू र युथ भिजन-२०२५ ले युवाको विकास र सहभागितामा जोड दिएको छ। यसका लागि एकीकृत कार्यढाँचा निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याउन आवश्यक छ। नेपालको कुल जनसङ्ख्याको ४०.३५ प्रतिशत युवा (१६ देखि ४० वर्ष) रहेको जनसाङ्ख्यिक लाभको अवसरलाई पुँजीकृत गरी मुलुकको आर्थिक समृद्धिमा युवाको योगदान सुनिश्चित गर्नु जरूरी छ।

### २. प्रमुख समस्या

युवा लक्षित नीति, योजना तथा कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन हुन नसक्नु, बजारको माग र जनशक्तिको आपूर्तिबीच सामञ्जस्य नहुनु, युवा विकासको लागि ठोस योजना नहुनु, युवासँग सम्बन्धित तथ्याङ्कीय आधार नहुनु, युवाको सर्वाङ्गीण विकास, उद्यमशीलता र रोजगारीका अवसर सीमित हुनु, ठूलो सङ्ख्यामा युवा शक्ति विदेश पलायन हुनु, विभेद, कुरीति र अन्धविश्वासजन्य चिन्तन तथा अभ्यास समाजमा विद्यमान रहनु युवा विकासका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

युवा क्षमताको विकास गर्नु, युवा प्रतिभा पलायनलाई रोक्नु, युवा लक्षित जीवनोपयोगी, प्राविधिक र व्यवसायिक शिक्षा सर्वसुलभ रूपमा उपलब्ध गराउनु, स्वदेशमा रोजगारीका अवसर वृद्धि गर्नु, युवामा सकारात्मक सोचको निर्माण गरी स्वयंसेवी संस्कृतिको विकास र श्रमको सम्मान गर्ने संस्कृतिको विकास गर्नु, वित्तीय स्रोतमा युवाको सहज पहुँच सुनिश्चित गर्नु, युवा सशक्तीकरण गर्दै राष्ट्रको, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक रूपान्तरण गर्नु, विद्यमान जनसाङ्ख्यिक लाभलाई उपयोग गर्नु र स्काउटलाई विद्यालय तहसम्म विस्तार गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्।

युवा विकासका लागि संवैधानिक व्यवस्था हुनु, युवाहरूको समग्र विकासका लागि विभिन्न संरचनागत प्रवन्ध हुनु, युवा विकासमा राजनैतिक इच्छाशक्ति वृद्धि हुनु, तीन तहका सरकारमा युवाको प्रतिनिधित्व रहनु, विश्वव्यापीकरण र सूचना प्रविधिको विकासका अवसर प्राप्त हुनु, स्वदेशमा रोजगार र स्वरोजगारका अवसर अभिवृद्धिका लागि सरकारको उच्च प्राथमिकता रहनु र जनसाङ्ख्यिक लाभको अवस्था विद्यमान रहनु युवा विकासका अवसर हुन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

युवाको सर्वाङ्गीण विकास राष्ट्र निर्माणको प्रमुख आधार।

## ४.२ लक्ष्य

स्वस्थ, सकारात्मक सोचयुक्त, उद्यमशील, सिर्जनशील, अधिकारप्रति सचेत र कर्तव्यप्रति प्रतिबद्ध युवा शक्तिको विकास र परिचालन गर्ने ।

## ४.३ उद्देश्य

१. युवामा दक्षता र क्षमताको विकास गर्नु ।
२. युवालाई उद्यमशील, रोजगारमूलक र स्वरोजगार बनाउनु ।
३. शासकीय प्रक्रिया एवम् सामाजिक, सांस्कृतिक र आर्थिक रूपान्तरणमा युवाको सार्थक सहभागिता अभिवृद्धि गर्नु ।
४. युवालाई आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी र चरित्रवान बनाउनु ।

## ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा र सीप विकासका अवसर विस्तार गर्ने । | १. प्राविधिक तथा व्यावसायिक तालिमका अवसर अभिवृद्धि गरी युवा उद्यमशीलताका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच सहकार्य गरिनेछ ।<br>२. व्यावसायिक सीप विकासका लागि आवश्यक पर्ने प्राविधिक तथा व्यावसायिक तालिमको पाठ्यक्रम विकास र तर्जुमा गर्दा तालिम प्रदायक निकाय, प्रदेश र स्थानीय तहसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ ।   |
| २. युवालाई उद्यम र व्यवसाय सञ्चालनमा प्रोत्साहन गर्ने ।               | १. युवामा उद्यमशीलता विकासका लागि बजारको माग अनुरूप परामर्श सेवा तथा पैरवी सेवा र प्राविधिक सहयोग विस्तार गरिनेछ ।<br>२. युवालाई उद्यमशील, रोजगार र स्वरोजगार बनाउन आवश्यक सहयोग उपलब्ध गराउन हरेक स्थानीय तहमा संयन्त्रहरू विकास गरिनेछ ।<br>३. वैदेशिक अध्ययन तथा रोजगारीबाट आर्जन भएका, ज्ञान, सीप, प्रविधि, पुँजी र अनुभवलाई स्वदेशमा उत्पादनमूलक क्षेत्रमा लगाउन प्रोत्साहन गरिनेछ ।<br>४. परम्परागत पेसा र व्यवसायको जगेर्ना, परिष्कृत, प्रवर्द्धन र व्यावसायीकरणमा युवा सहभागिता अभिवृद्धि गरिनेछ । |
| ३. युवाद्वारा सञ्चालित उद्यम, व्यवसाय तथा उद्योगको प्रवर्द्धन गर्ने । | १. युवामैत्री उद्यमशीलता सम्बन्धी परामर्श तथा पैरवी सेवा र प्राविधिक सहयोग उपलब्ध गराइनेछ ।<br>२. युवा उद्यमशीलता तथा रोजगार अभिवृद्धिको लागि अन्तरनिकाय समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | ३. युवाद्वारा सञ्चालित उद्यम तथा व्यवसायको बिमा र कर्जा सुरक्षणको व्यवस्था गरिनेछ ।  |
| ४. वित्तीय स्रोत-साधनमा युवाको पहुँच विस्तार गर्ने ।  | १. बैंक तथा वित्तीय संस्थाबाट उद्यम तथा व्यवसाय सञ्चालनका लागि युवालाई सहज रूपमा सहूलियतपूर्ण कर्जाको सुविधा उपलब्ध गराइनेछ ।<br>२. सार्वजनिक-निजी साझेदारीको माध्यमबाट युवा लक्षित उद्यम व्यवसायको प्रवर्द्धन गरिनेछ ।<br>३. युवामा सिर्जनशीलता एवम् उद्यमशीलताको विकास गर्न युवाद्वारा सञ्चालित नवप्रवर्तनीय (Innovative) आयोजनामा प्रतिस्पर्धाको माध्यमबाट लगानी गरिनेछ । |
| ५. तीन तहको नीति निर्माणदेखि कार्यान्वयनसम्म युवाको समावेशी र सार्थक सहभागिता सुनिश्चित गर्ने । | १. प्रत्येक प्रदेशमा एक-एक वटा युवा नवप्रवर्तन केन्द्र स्थापना गरिनेछ ।<br>२. हरेक स्थानीय तहमा नमुना युवा संसदको अभ्यास र युवा क्लबको गठन तथा परिचालन गरिनेछ ।<br>३. शासकीय प्रक्रिया, नीति निर्माण तथा कार्यान्वयनमा युवाको समावेशी सहभागिता अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>४. तीन तहका सरकार, निजी क्षेत्र र गैरसरकारी क्षेत्रबाट निर्माण गरिने नीति नियमहरू युवामैत्री बनाइनेछ ।  |
| ६. युवामा स्वयंसेवी संस्कृतिको विकास गर्ने ।  | १. मुलुकको आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा युवालाई जिम्मेवार बनाउन स्वयंसेवा कार्यलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. सामाजिक कुरीति, अन्धविश्वास, विभेद र असमानता विरुद्ध युवा परिचालन गरिनेछ ।  |
| ७. स्काउटको संरचनालाई विकास र विस्तार गर्ने ।   | १. स्काउट मार्फत युवामा असल आचरण, स्वावलम्बन र स्वयंसेवी भावनाको विकास गर्दै नेपाल स्काउटलाई मानवीय सेवा र विपद् व्यवस्थापन जस्ता क्षेत्रमा परिचालन गरिनेछ ।<br>२. प्रदेश र स्थानीय तहको सहकार्यमा स्काउटको आधारभूत मूल्य र मान्यताको विस्तार गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सीपमूलक तालिम र वित्तीय स्रोतमा युवाको पहुँच वृद्धि भई मुलुकको उद्यम र व्यवसायमा युवाको संलग्नता बढेको हुनेछ । युवा रोजगारी र स्वरोजगारीको अवस्थामा उल्लेखनीय सुधार हुनुका साथै जोखिमपूर्ण काममा विदेशिने

युवाको सङ्ख्यामा सारभूत रूपमा कमी आएको हुनेछ। शासकीय प्रणालीमा युवाको अर्थपूर्ण सहभागिता अभिवृद्धि भई सुशासनको प्रवर्द्धनमा टेवा पुगेको हुनेछ। विकास निर्माण, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, वातावरण र सामाजिक विकास, विपद् व्यवस्थापन कार्यमा व्यापक रूपमा युवा स्वयंसेवक परिचालन भएका हुनेछन्।

## ७.६ लैङ्गिक समानता तथा महिला सशक्तीकरण

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले लैङ्गिक विभेदको अन्त्य गर्ने संकल्प सहित महिलालाई लैङ्गिक भेदभावविना समान वंशीय हक, सुरक्षित मातृत्व र प्रजनन स्वास्थ्य सम्बन्धी हक, राज्यका सबै निकायमा समानुपातिक समावेशी सिद्धान्तको आधारमा सहभागी हुने हक लगायत मौलिक हकको प्रत्याभूति गरेको छ। हाल महिला र पुरुषको साक्षरता दर क्रमशः ५७.७ प्रतिशत र ७५.६ प्रतिशत, सम्पत्तिमा स्वामित्व पुगेको महिला २६ प्रतिशत र मातृ मृत्यु दर प्रतिलाख जीवित जन्ममा २३९, महिला र पुरुषको श्रमशक्ति सहभागिता दर क्रमशः २६.३ र ५३.८ प्रतिशत तथा बेरोजगारी दर क्रमशः १३.१ र १०.३ प्रतिशत रहेको छ। त्यसैगरी कुल प्रजनन दर २.३ प्रतिमहिला रहेको छ। नेपालले महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने सम्बन्धी महासन्धि, १९७९ को अनुमोदन गरी सोही अनुरूप नीति तथा कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन गर्दै आएको छ। त्यसैगरी दिगो विकासका लक्ष्यमा लैङ्गिक समानता तथा बालिका सशक्तीकरणको विषय समावेश भएको छ। महिलाको क्षमता, श्रम, सीप र सिर्जनालाई विकास प्रक्रियामा लगाई संविधानको मर्म अनुरूप सामाजिक समानता कायम गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

महिलामाथि हुने व्यवहारगत विभेद हट्न नसक्नु, अशिक्षा, हानिकारक अभ्यास, लैङ्गिक विभेद तथा हिंसालाई बढावा दिने सामाजिक संरचना, सोच, मूल्य, मान्यता, प्रथा, परम्परा कायमै रहनु, महिला तथा बालिकाहरू माथि घरेलु, यौनजन्य तथा लैङ्गिकतामा आधारित हिंसा विद्यमान हुनु, लैङ्गिक समानता प्रष्ट्याउने पर्याप्त खण्डीकृत तथ्याङ्कको कमी हुनु, जोखिम/सामाजिक र पारिवारिक वहिष्करणमा परेका तथा हिंसा पीडित महिलालाई पूर्णरूपमा संरक्षण, पुनर्स्थापना, सशक्तीकरण र स्वावलम्बी बनाउन नसकिनु, सरकारी तथा विकास साझेदार संस्थाहरूबाट हुने कार्यक्रममा समन्वयको कमी हुनु यस क्षेत्रका समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

आर्थिक तथा सामाजिक जीवनमा सारभूत लैङ्गिक समानता कायम गर्नु, राज्यको सबै तह र निकायहरूमा लैङ्गिक दृष्टिकोणलाई मूलप्रवाहीकरण गरी लैङ्गिक उत्तरदायी शासन पद्धति संस्थागत गर्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच लैङ्गिक समानता सम्बन्धी नीति, योजना तथा कार्यक्रमहरूमा सामाज्यस्यता कायम गर्नु, पारिवारिक र सामाजिक मूल्य, मान्यता र लैङ्गिक भूमिकामा परिवर्तन ल्याउनु, महिलाको घरेलु श्रम र हेरचाह कार्यलाई मूल्य कायम गरी राष्ट्रिय आर्थिक आयमा महिलाको योगदानको गणना गर्नु, महिलामाथि हुने सबै किसिमका हिंसा, विभेद र

शोषणको अन्त्य गर्नु, सम्पत्तिमाथि महिलाको पहुँच स्थापित गर्नु र ग्रामीण महिला सहित समग्र महिलाको जीवन स्तरमा सुधार ल्याउनु यस क्षेत्रका चुनौती हुन् ।

नेपालको संविधानले समानताको हक सुनिश्चित गर्नु, लैङ्गिकमैत्री संविधान तथा ऐन-कानूनहरू निर्माण हुनु, राज्यका तीन तहमा महिलाको राजनैतिक सहभागिता उत्साहजनक रहनु, राष्ट्रिय महिला आयोगको संवैधानिक अधिकार सहित क्षेत्राधिकारमा वृद्धि हुनु, केन्द्रमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट प्रणाली संस्थागत हुनु, विद्यालय शिक्षामा लैङ्गिक समदर कायम हुनु र समाजको मूल्य, मान्यता र व्यवहारमा क्रमशः सकारात्मक परिवर्तन हुँदै आउनु यस क्षेत्रका अवसर हुन् ।

#### ४. सोच, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

##### ४.१ सोच

लैङ्गिक समानतामूलक राष्ट्र ।

##### ४.२ लक्ष्य

महिलाको समान तथा अर्थपूर्ण सहभागिता सहित सारभूत समानता कायम गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. लैङ्गिक उत्तरदायी शासन व्यवस्थालाई संस्थागत गर्दै महिलाको सम्मानित जीवनयापनको वातावरण सुनिश्चित गर्नु ।
२. महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव, हिंसा र शोषणको अन्त्य गर्नु ।
३. आर्थिक समृद्धि र दिगो विकासका लागि महिलाको समान अग्रसरता र नेतृत्वदायी भूमिका स्थापित गर्दै स्रोत, साधन, अवसर तथा लाभमा महिलाको समान पहुँच सुनिश्चित गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | रणनीति   |
|---|--|
| १. राज्यका सबै तह र क्षेत्रले लैङ्गिक समानता सम्बन्धी क्षेत्रगत नीति, कानून तथा कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने । | १. लैङ्गिक समानता सम्बन्धी नीति तर्जुमा, विद्यमान कानून तथा कार्यक्रममा पुनरावलोकन गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. संघीय, प्रादेशिक तथा स्थानीय तहबाट सबै क्षेत्रमा समान रूपमा अवसर, पहुँच, प्रतिफल र लाभ सुनिश्चित गर्न लैङ्गिक समानताको नीति अवलम्बन गरिनेछ । |

| रणनीति  | रणनीति   |
|---|--|
| २. राज्यका सबै तहको सरकार, क्षेत्र तथा निकायहरूमा लैङ्गिक उत्तरदायी शासन पद्धति अवलम्बन गर्ने । | <p>१. राज्यका सबै तह, संरचना तथा विकास प्रक्रियाका प्रत्येक चरणमा क्रमशः महिलाको सहभागिता ५० प्रतिशत हुने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. राज्यको सबै तह र क्षेत्रको नीति निर्माण तहमा महिलाको सहभागिता वृद्धि गरी कार्यक्रम कार्यान्वयन, अनुगमन/मूल्याङ्कन लगायत लाभ तथा प्रतिफलमा महिलाको सारभूत सहभागिता सुनिश्चित गरी असल अभ्यासको अनुकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. महिलाको श्रम र समयको बचत गर्ने प्रविधिको प्रयोगमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>४. सारभूत लैङ्गिक समानता प्राप्तिको लागि पुरुषको सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> <p>५. सामाजिक उत्तरदायित्व कोष अर्न्तगतको निश्चित रकम महिला सशक्तीकरणमा उपयोग गर्ने नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>६. सार्वजनिक निकायलाई लैङ्गिक संवेदनशिल तुल्याउन नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |
| ३. राज्यका सबै तहको सरकारमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट विनियोजन पद्धतिलाई संस्थागत गर्ने ।          | <p>१. लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट प्रणालीलाई प्रदेश र स्थानीयतहसम्म संस्थागत गर्दै लैङ्गिक बजेट विनियोजन अनुपात वृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>२. लैङ्गिक सशक्तीकरण सूचकाङ्क समेतलाई आधार लिई प्रदेश तथा स्थानीय तहलाई वित्तीय हस्तान्तरण गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. राज्यका सबै तहमा लैङ्गिक सम्पर्क बिन्दु तोकी महिला लक्षित बजेट विनियोजन व्यवस्था अनिवार्य गरिनेछ ।</p> <p>४. लैङ्गिक सम्पर्क बिन्दु तथा अन्य सम्बद्ध व्यक्तिहरूको लागि लैङ्गिक आचारसंहिता बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>५. लैङ्गिक लेखापरीक्षण पद्धतिलाई राज्यका सबै तहमा लागू गरिनेछ ।</p>  |
| ४. लैङ्गिक समानता तथा सशक्तीकरण मापन गर्ने तथ्याङ्क प्रणालीको विकास गर्ने ।                     | <p>१. लैङ्गिक समानता तथा सशक्तीकरण मापन सूचकहरू तयार गरी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>२. नेपालमा हुने सबै किसिमका सर्वेक्षण तथा तथ्याङ्क संकलन गर्दा लैङ्गिक खण्डीकृत विषय अनिवार्य रूपमा समावेश गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. प्रदेश तथा स्थानीय तहबाट तयार गरिएको प्रतिवेदनको आधारमा संघबाट महिला सम्बन्धी एकीकृत बार्षिक प्रतिवेदन तयार गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति   | रणनीति  |
|--|---|
| <p>५. आर्थिक रूपले विपन्न र सामाजिक रूपले पछाडि परेका महिलालाई विशेष प्राथमिकता दिई आर्थिक सशक्तिकरण र सामाजिक रूपान्तरण गर्ने ।</p> | <p>१. उद्यमशीलताको माध्यमबाट पिछडिएका तथा विपन्न महिलाको आर्थिक सशक्तिकरण गर्नको लागि जीविकोपार्जन सुधार कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. महिलाको घरेलु श्रम तथा पारिवारिक हेरचाह सम्बन्धी क्रियाकलापको मूल्य कायम गरी राष्ट्रिय आयमा महिलाको योगदानको गणना गरिनेछ ।</p> <p>३. सुरक्षित मातृत्व र प्रजनन स्वास्थ्य अधिकारलाई थप सुनिश्चित गर्न विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. प्राविधिक शिक्षामा रहेको लैङ्गिक खाडल कम गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>५. विपन्न तथा ग्रामीण महिलाको आर्थिक तथा सामाजिक रूपान्तरणका लागि राष्ट्रपति महिला उत्थान कार्यक्रमलाई देशव्यापी बनाइनेछ ।</p> <p>६. महिला विकास कार्यक्रमलाई परिमार्जन गरी विगतका असल अभ्यास र उपलब्धिलाई स्थानीय तहमा संस्थागत गर्दै महिला समूहद्वारा प्रवर्द्धित महिला सहकारी संस्थालाई महिलाहरूका उत्पादनमूलक व्यवसाय तथा स्वरोजगारको क्षेत्रमा परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>७. यौनिक तथा लैङ्गिक अल्पसंख्यकप्रति सामाजिक विभेद हटाउन सचेतनामूलक तथा क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>८. गरिब तथा विपन्न दलित, आदिवासी जनजाति, एकल तथा अपाङ्गता भएका महिला, बादी, कमलरी, कमैया, चेपाङ जस्ता वञ्चितमा परेका सबै समुदायका महिला तथा किशोरीको आय-आर्जन, क्षमता विकास र सशक्तिकरण गर्ने गरी आर्थिक सामाजिक विकासका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>९. महिलालाई व्यवसाय सञ्चालन तथा आयमूलक कार्य गरी स्वरोजगार तथा उद्यमशीलता विकास गर्न सहूलियतपूर्ण ऋण तथा वित्तीय पहुँचको व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> |

| रणनीति   | रणनीति  |
|--|---|
| <p>६. महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका हिंसा, शोषण र भेदभाव अन्त्यका लागि निरोधात्मक, संरक्षणात्मक उपायद्वारा न्यायमा पहुँच अभिवृद्धि गर्ने ।</p> | <p>१. महिलामाथि हुने सबै किसिमका हिंसा विरुद्ध शून्य सहनशीलताको नीति प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>२. लैङ्गिक हिंसा, बोक्सीको आरोप, छाउपडी जस्ता कुरीति, कुप्रथा अन्त्यका लागि लैङ्गिक हिंसा विरुद्धको वर्ष घोषणा गरी राज्यका सबै तहसम्म सचेतना अभिवृद्धिको लागि सामाजिक अभियान सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>३. हिंसा पीडित तथा प्रभावित महिलाको लागि प्रदेश तथा स्थानीय तहसम्म एकीकृत सेवा सहितको दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन पुनर्स्थापना केन्द्र सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. लैङ्गिक हिंसा अन्त्यको लागि आवश्यक संयन्त्र निर्माण गरी हिंसाविरुद्ध निगरानी बढाइने र पीडित तथा प्रभावित महिलालाई न्याय प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>५. महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका हिंसा, शोषण र विभेद रोकथाम एवम् नियन्त्रणका लागि कानुनी उपचार प्रणालीलाई सहज, छिटो र पहुँचयोग्य बनाइनेछ ।</p> <p>६. हिंसा पीडित तथा प्रभावितको राहत, उद्धार, निःशुल्क कानुनी सहायता, मनोसामाजिक परामर्श र सीपमूलक कार्यक्रमको लागि प्रदेश र स्थानीय तहमा आपत्कालीन पुनःस्थापना कोष स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>७. लैङ्गिक हिंसाका विविध आयामहरूको अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्ने तथा लैङ्गिक हिंसा मुक्त क्षेत्र घोषणा गर्ने सूचकको निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यसम्ममा लैंगिक विकास सूचकांक ०.९२५ बाट ०.९६३ पुगेको हुनेछ । जीवनकालमा शारीरिक, मानसिक वा यौन हिंसाबाट पीडित महिला २६.३ बाट १३ प्रतिशतमा घटेको हुनेछ । संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा लैङ्गिकमैत्री ऐन, कानून तथा नियमहरू तर्जुमा भई कार्यान्वयन भएको हुने, सबै किसिमका विभेद र शोषणमा उल्लेख्य रूपमा कमी आएको हुने, राष्ट्रिय आयमा महिलाको योगदान मूल्याङ्कन भएको हुने, सबै तहमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट प्रणाली संस्थागत भएको हुने, लैङ्गिक समानता तथा सशक्तीकरण मापन गर्ने तथ्याङ्क प्रणाली विकास भएको हुनेछ ।

## ७.७ बालबालिका तथा किशोरकिशोरी

### १. पृष्ठभूमि

संविधानले बालबालिकाको हकलाई मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था गरी बाल बचाउ, बाल संरक्षण, बालविकास र बाल सहभागिता जस्ता विषयहरू समेटी सर्वाङ्गीण विकासको प्रत्याभूत गरेको छ। संयुक्त राष्ट्र संघीय बालअधिकार सम्बन्धी महासन्धि, १९८९ तथा अन्य बालअधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि र इच्छाधीन आलेखहरूमा गरेको प्रतिबद्धतानुरूप नेपाल सरकारले बाल अधिकार सम्बन्धी नीति तथा कानून तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्दै आएको छ। दिगो विकास लक्ष्यमा बालबालिकाको गुणस्तरीय शिक्षा तथा स्वास्थ्य, सुरक्षित, पहुँचयोग्य र हरित सार्वजनिक स्थलमा पहुँच, बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने सबै प्रकारका विभेद, शोषण, दुर्व्यवहार र हिंसाको अन्त्य गरी सशक्त गर्ने जस्ता परिमाणात्मक लक्ष्य समावेश गरिएको र सोही अनुरूप उक्त विषयलाई सम्बोधन गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

सबै बालबालिकाको गुणस्तरीय शिक्षा, स्वास्थ्यमा सहज पहुँच नहुनु, मनोरञ्जन, बालसहभागिता, बालमैत्री वातावरणको अभावमा विकास र संरक्षण हुन नसक्नु, बालश्रमको अवस्था विद्यमान रहनु, अझै पनि सडक बालबालिकाको अवस्था विद्यमान रहनु, असहाय र अनाथ बालबालिकाको संरक्षण तथा उचित व्यवस्थापन हुन नसक्नु, बालविवाह, हिंसा, शोषण, यौन दुर्व्यवहार, बलात्कार, हत्या, अनधिकृत ओसारपसारको अवस्था विद्यमान रहनु, किशोरी शिक्षाको कमी हुनु, कानूनको विवाद र बाल विज्याईजस्ता समस्याको प्रभावकारी सम्बोधन गरी उनीहरूको भावी जीवनलाई सहज बनाउँदै परिवार र समाजमा पुर्नमिलन र पुर्नस्थापना गराउन नसक्नु र वैकल्पिक स्याहारको माध्यमबाट अनाथ बालबालिकाको पुनर्स्थापना गर्न नसक्नु यस क्षेत्रका समस्या हुन्।

### ३. चुनौती र अवसर

विज्ञान र प्रविधिको विकास, शहरीकरण, विकसित विश्वव्यापी मूल्य-मान्यता र बदलिँदो परिस्थितिलाई मध्यनजर गर्दै बाल अधिकारको संरक्षण र प्रवर्द्धन प्रभावकारी रूपमा गर्नु, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरञ्जन, बालसहभागिता र बालमैत्री वातावरणको विकास गर्दै संकट र जोखिममा परेका सबै बालबालिकाको संरक्षण गर्नु, बालविवाह, बालश्रम, हत्या, अपहरण, बालहिंसा, यौन दुर्व्यवहार तथा बलात्कार जस्ता घटनाको अन्त्य गर्नु र असहाय, असक्त, बाबु-आमाविहीन, जोखिममा परेका, सडक बालबालिका एवम् कुनै पनि वहानामा बालअधिकारबाट वञ्चित बालबालिकाको उचित संरक्षण र व्यवस्थापन गरी उनीहरूको भविष्य सुनिश्चित गर्नु यस क्षेत्रका चुनौती हुन्।

संविधानले बालबालिकाको हकलाई मौलिक हकको रूपमा प्रत्याभूत गर्नु, संघीय संरचना अनुसार बालबालिका सम्बन्धी कानून, नीति, योजना, कार्यक्रम तथा संस्थागत संयन्त्र स्थानीय तहदेखि संघसम्म स्थापना तथा सञ्चालन हुँदै जानु, दिगो विकास लक्ष्यमा बालबालिका तथा किशोरकिशोरी सम्बन्धी विषयहरू समावेश हुनु, बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०७५ कार्यान्वयनमा आउनु, राज्यबाट बालबालिकाको शिक्षा र स्वास्थ्यमा विशेष जोड दिइनु,

बालबालिकाको संरक्षण सम्बन्धी विषय तीन तहको सरकारको अधिकार क्षेत्रभित्र पर्नु, सरकार, संघ-संस्था र नागरिक समाजबीच समन्वय, सहयोग, सहजीकरण र सहकार्यमा अभिवृद्धि हुनु र बाल अधिकारको संरक्षण तथा प्रवर्द्धनको सवालमा सरोकारवालाहरूमा सचेतना र सहकार्य वृद्धि हुँदै जानु यस क्षेत्रका अवसर रहेका छन् ।

#### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

बालअधिकार सुनिश्चित भएको बालमैत्री समाज ।

##### ४.२ लक्ष्य

बालबालिका तथा किशोरकिशोरीलाई सबै प्रकारको हिंसा, दुर्व्यवहार र शोषणबाट मुक्त गराउँदै उनीहरूको हक अधिकार संरक्षण तथा प्रवर्द्धन गरी राष्ट्र निर्माण गर्न सक्ने योग्य र सक्षम नागरिकको रूपमा विकास गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. बालबालिका तथा किशोरकिशोरीको अधिकारको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्नु ।
२. बालबालिका तथा किशोरकिशोरीमैत्री वातावरण सिर्जना गर्नु ।
३. बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने शारीरिक र मानसिक लगायत सबै प्रकारका हिंसा, विभेद, दुर्व्यवहार, शोषण र उपेक्षाको अन्त्य गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. बाल स्वास्थ्यमा सुधार गरी बाल मृत्युदर घटाउने । | १. बालबालिका तथा किशोरकिशोरीको पोषण अवस्थामा सुधार गर्न पोषण सम्बन्धी कार्यक्रमको विस्तार गरिनेछ ।<br>२. बालबालिकाहरूमा गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवाको पहुँच बढाई बाल मृत्युदर घटाइनेछ ।<br>३. किशोरकिशोरीहरूलाई स्वास्थ्य तथा प्रजनन स्वास्थ्य शिक्षा तथा सेवा उपलब्ध गराइनेछ ।<br>४. विद्यालय तहको पाठ्यक्रममा बालअधिकार, बालबालिका सम्बन्धी कानून र यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्य विषयलाई समावेश गरिनेछ ।<br>५. विद्यालयमा अध्यापन गर्ने शिक्षक शिक्षिकाहरूलाई बालअधिकार, यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्यका विषयमा आधारभूत तहको प्रशिक्षण दिईनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| २. बालबालिकाको मानसिक तथा शारीरिक विकासका लागि प्रारम्भिक बालविकासमा पहुँच                                   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. प्रारम्भिक बालविकास कार्यक्रमलाई विस्तार गरी सबै बालबालिकाको पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ ।</li> <li>२. प्रत्येक विद्यालयमा बालबालिकाको शारीरिक र मानसिक विकासको लागि उमेर र कक्षा अनुसार खेलकुद, मनोरञ्जन तथा अतिरिक्त क्रियाकलापहरू वार्षिक क्यालेण्डर बनाई सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| ३. बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने सबै प्रकारका हिंसाको अन्त्य गरी उनीहरूको जीवनलाई सुरक्षित बनाउने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. बालबालिका तथा किशोरकिशोरीहरू विरुद्ध हुने हिंसा, यौन दुर्व्यवहार, बालश्रम, बलात्कार, बेचबिखनजस्ता अपराध विरुद्ध शून्य सहनशीलताको नीति अबलम्बन गरिनेछ ।</li> <li>२. बालबालिका तथा किशोरकिशोरीहरू विरुद्धको अपराध नियन्त्रण गर्न कानुनी सुधार गरिनेछ ।</li> <li>३. बालबालिका विरुद्ध हुने शारीरिक तथा मानसिक सजाय विरुद्ध अभियान सञ्चालन गरी विद्यालयलाई बालमैत्री तथा शान्ति क्षेत्र घोषणा गरिनेछ ।</li> <li>४. बालबालिकाको आपत्कालीन उद्धार र संरक्षणका लागि बालबालिका खोजतलास नं. १०४ र बाल हेल्पलाईन नं. १०९८ को सेवा स्थानीय तहसम्म विस्तार गरी सो सेवाबारे विद्यालयदेखि सर्वसाधारणसम्म पुग्ने गरी प्रचार प्रसार गरिनेछ ।</li> <li>५. बालबालिका खोजतलास नं. १०४ र बाल हेल्पलाईन नं. १०९८ को प्रभावकारिताका लागि सेवा सञ्चालन सम्बन्धी कानुन तथा कार्यविधि निर्माण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>६. प्रदेश तथा स्थानीय तहमा आपत्कालीन बाल उद्धारकोष स्थापना र व्यवस्थापन गरिनेछ ।</li> <li>७. अनलाईन सुरक्षालाई प्रभावकारी बनाउँदै ईन्टरनेटको दुरुपयोगबाट पर्ने सबै प्रकारका नकारात्मक असरबाट बालबालिकालाई संरक्षण गर्न राज्यसंयन्त्र र सरोकारवालाहरूसँग साझेदारी गरी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>८. बाल विवाह, बाल श्रम, बालबालिका विरुद्धको हिंसा, बाल यौन दुर्व्यवहार, बालबालिका बेचबिखन तथा गैर कानुनी ओसारपसार लगायत बालबालिका सम्बन्धी कानुनी प्रावधानका विषयहरू र नैतिक शिक्षाको विषय विद्यालयको पाठ्यक्रममा समावेश गरिनेछ ।</li> </ol> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | ९. विद्यालयमा बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने शारीरिक दण्ड, कष्ट, दुर्व्यवहार वा लैङ्गिकतामा आधारित हिंसालाई पूर्ण निरूत्साहित गरी त्यस्ता कार्यलाई दण्डका आधारमा नियन्त्रण गरिनेछ ।   |
| ४. असहाय, अनाथ, अपाङ्गता भएका, असक्त तथा बेवारिसे बालबालिका तथा किशोरकिशोरीलाई राज्यबाट संरक्षण र संवर्द्धन गर्ने । | १. अनाथ एवम् विशेष संरक्षणको आवश्यकता भएका बालबालिकाका लागि जन्मदर्ता र नागरिकता पाउने प्रक्रिया सरलीकरण गरिनेछ ।<br>२. अनाथ, असहाय, बेवारिसे, अशक्त, अपाङ्गता भएका र विशेष संरक्षणको आवश्यकता भएका बालबालिका तथा किशोरकिशोरीहरूको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्न अस्थायी संरक्षण सेवाको व्यवस्थापन गरिनेछ ।<br>३. सडक बालबालिकाको उद्धार र पुनस्थापना, रोकथाम तथा नियन्त्रणमा प्रदेश तथा स्थानीय तह समेतबाट अभियान सञ्चालन गरिनेछ ।<br>४. बालगृह, बालसुधार गृह, निगरानी कक्ष तथा अस्थायी संरक्षण सेवामा रहेका बालबालिकाहरूको खानपान, स्वास्थ्य तथा सुरक्षाको विषयमा उपयुक्त मापदण्ड निर्माण गरी सोको आधारमा सञ्चालन गर्न निरन्तर अनुगमन गरी सुधार गरिनेछ ।<br>५. अपाङ्गता भएका विशेषतः बौद्धिक अपाङ्गता भएका बालबालिकाहरूको उपचार सेवालाई प्राथमिकता दिँदै त्यस्तो सेवालाई सहज र प्रभावकारी बनाइनेछ । |
| ५. विभिन्न माध्यमबाट बालबालिकालाई सामाजिक जीवनमा सहभागी हुने वातावरण सिर्जना गर्ने ।                                | १. बाल क्लब, बाल समूह, किशोरकिशोरी समूह जस्ता संस्थाको गठन तथा सञ्चालनलाई विस्तार गरी बालबालिका तथा किशोरकिशोरीहरूको सहभागिता बढाइनेछ ।<br>२. बालबालिकाको शारीरिक, मानसिक र शैक्षिक विकासमा अवरोध तथा बाधा नपर्ने गरी बाल सहभागितालाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।<br>३. नीति निर्माण तहमा बालबालिकाको सहभागिता सुनिश्चित गरिनेछ ।   |
| ६. राज्यले सबै प्रकारको बालश्रमको अन्त्य गर्न आवश्यक व्यवस्था गर्ने ।   | १. सबै प्रकारको बालश्रमको अन्त्य गर्न आवश्यक कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. जुनसुकै क्षेत्रमा कार्यरत श्रमिकहरूको अनुगमन गरी बाल श्रमिकको उद्धार तथा पुनस्थापना गरिनेछ ।<br>३. प्रदेश तथा स्थानीय तह समेतबाट सबै प्रकारका बालश्रमको अन्त्यका लागि कानुनी, नीतिगत तथा कार्यक्रमगत व्यवस्था गरिनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ७. बालबालिकाको पहुँचयुक्त पूर्वाधारको निर्माण गरी बालमैत्री वातावरण सिर्जना गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. बालमैत्री स्थानीय शासनको आवश्यक पूर्वाधार तथा बालअधिकार सूचकहरू पूरा गर्न आवश्यक स्रोत-साधनको व्यवस्थापन, बालमैत्री वडा तथा स्थानीय तह घोषणा गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिइनेछ ।</li> <li>२. सार्वजनिक स्थल तथा विद्यालयका भौतिक संरचना(भवन, शौचालय, सडक, फर्निचर, कुर्सी, टेबुल) र अन्य संरचनालाई समेत बालमैत्री बनाइनेछ ।</li> <li>३. बाल अधिकार, बालमैत्री शासन र बाल संवेदनशीलता अभिवृद्धि सम्बन्धी विषय शिक्षक तथा सबै सरकारी निकायको तालिम पाठ्यक्रममा समावेश गरी अभिमुखीकरण तथा क्षमता अभिवृद्धि तालिम प्रदान गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ८. विद्यमान बालगृहको संस्थागत आवासीय संरक्षणलाई निरुत्साहित तथा निःसंस्थाकरण गर्दै अन्तिम विकल्पको रूपमा मात्र संरक्षण गर्ने गरी अन्य वैकल्पिक हेरचाहलाई प्रवर्द्धन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विशेष संरक्षणको आवश्यकता भएका बालबालिकालाई वैकल्पिक हेरचाहको व्यवस्था गर्ने प्रणाली स्थापना गरिनेछ ।</li> <li>२. सन्तान नभएका दम्पति, एकल महिला तथा पुरुषले धर्मपुत्र धर्मपुत्री लिन चाहेमा स्थानीय बालअधिकार समिति मार्फत दीर्घकालीन संरक्षणका लागि नियमानुसार धर्मपुत्र धर्मपुत्री सिफारिस तथा लिने दिने व्यवस्था र प्रक्रियालाई प्राथमिकतामा राखी अदालतबाट हुने लिखत प्रमाणीकरण प्रक्रिया समेतलाई सहज तथा प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> </ol>   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सरकारका तीन तहमा बालअधिकार संरक्षण तथा सम्बर्द्धन सम्बन्धी नीति, कानून, योजना तथा कार्यक्रम र मापदण्ड कार्यान्वयन भएको हुने, विशेष संरक्षणको आवश्यकता भएका बालबालिकाको अधिकार संरक्षण भएको हुने, बालबालिकाको शिक्षा, पोषण र स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवा सुविधामा पहुँच पुगेको हुने, बालबालिकाविरुद्ध हुने सबै प्रकारका शारीरिक र मानसिक शोषण, हिंसा र दुर्व्यवहार उल्लेख्य रूपमा न्यूनीकरण भएको हुने, सरकारी निकाय, संस्था, बाबुआमा तथा संरक्षकको बालबालिकाप्रतिको दायित्व अभिवृद्धि भएको हुने र बालबालिका खोजतलास नं. १०४ र बाल हेल्पलाईन १०९८ प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन भएको हुनेछ ।

## ७.८ ज्येष्ठ नागरिक

### १. पृष्ठभूमि

संविधानले ज्येष्ठ नागरिकको हकलाई मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था गरी राज्यबाट विशेष संरक्षण तथा सामाजिक सुरक्षा प्रत्याभूत गरेको छ। दिगो विकास लक्ष्यमा ज्येष्ठ नागरिकको लागि सामाजिक सुरक्षा लगायत सुरक्षित, समावेशी र पहुँचयोग्य हरित तथा सार्वजनिक खुल्ला ठाँउहरूमा पहुँच सर्वसुलभ गर्ने विषय समावेश भएको छ। सरकारले ज्येष्ठ नागरिकको संरक्षण, स्याहारसुसार र सुरक्षा गर्नको लागि वृद्धाश्रम (हेरचाह केन्द्र) र दिवा सेवा केन्द्रहरू सञ्चालन, यातायातमा विशेष सहूलियत, औषधोपचार, सामाजिक सुरक्षा भत्ता लगायतका सेवा सुविधा प्रदान गर्दै आएको छ। उनीहरूको जीवन सहज, सुरक्षित एवम् सम्मानित बनाई सामाजिक न्याय कायम गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

ज्येष्ठ नागरिकलाई सेवा सुविधा र सामाजिक सुरक्षा पर्याप्त नहुनु, उनीहरूको ज्ञान, सीप र अनुभव राष्ट्रले उपयोग र नयाँ पीढिमा हस्तान्तरण गर्न नसकिनु, शारीरिक र मानसिक रूपमा असक्त, असहाय, एकल, वेवारिसे तथा पीडामा परेका ज्येष्ठ नागरिकको उचित संरक्षण नहुनु, सन्तानले बाबु-आमा प्रति पुरा गर्नुपर्ने दायित्व वहन र हेरचाहमा क्रमशः ह्रास हुँदै जानु, बुढ्यौलीको कारणले लाग्ने विभिन्न रोगहरूको निदान तथा उपचारको यथोचित व्यवस्था नहुनु र ज्येष्ठ नागरिक प्रतिको श्रद्धा र सम्मानमा ह्रास आउनु यस क्षेत्रका समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

ज्येष्ठ नागरिकका विषयलाई समानरूपमा सम्बोधन र व्यवस्थापन गर्नु, ज्येष्ठ नागरिकको संख्यामा वृद्धि हुँदै जाँदा सो अनुसार सेवा सुविधाको पर्याप्त व्यवस्था गर्नु, ज्येष्ठ नागरिकको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई समाज विकास र पूर्वाधार निर्माणमा उपयोग गर्नु, ज्येष्ठ नागरिकमाथि हुने हिंसा र दुर्व्यवहारको अन्त्य गर्नु, उनीहरूको आर्थिक तथा सामाजिक हक अधिकारको संरक्षण गर्नु र उनीहरूका लागि उपयुक्त एवम् पर्याप्त दिवा सेवा केन्द्र, क्लब, औषधोपचार सहितको आरोग्य आश्रमको निर्माण तथा सञ्चालन गर्नु यस क्षेत्रका चुनौती रहेका छन्।

संविधानद्वारा ज्येष्ठ नागरिकको विशेष संरक्षण तथा सामाजिक सुरक्षाको हक सुनिश्चित गर्नु, ज्येष्ठ नागरिकको व्यवस्थापन स्थानीय तहको अधिकार क्षेत्रभित्र रहनु, ज्येष्ठ नागरिकको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई उपयोग गर्ने वातावरण सिर्जना हुँदै जानु र ज्येष्ठ नागरिकको हक र अधिकारको रक्षा र प्रवर्द्धन गर्न राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा सरकारको प्रतिबद्धता रहनु यस क्षेत्रका अवसर रहेका छन्।

### ४. सोच, लक्ष्य र उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

ज्येष्ठ नागरिकको संरक्षण र सम्मानित जीवनको प्रत्याभूति।

## ४.२ लक्ष्य

ज्येष्ठ नागरिकको जीवन सम्मानित, सुरक्षित र व्यवस्थित बनाई उनीहरूको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई राष्ट्रले समृद्धिका लागि उपयोग गर्ने।

## ४.३ उद्देश्य

१. पारिवारिक, आर्थिक र कानुनी संरक्षणको माध्यमबाट ज्येष्ठ नागरिकको हक अधिकारको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्नु।
२. ज्येष्ठ नागरिकलाई आवश्यक सेवा सुविधा उपलब्ध गराउनु।
३. ज्येष्ठ नागरिकको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई आर्थिक-सामाजिक रूपान्तरण र विकासमा उपयोग गर्नु।

## ४.४ रणनीति र कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. पारिवारिक र सामाजिक माध्यमबाट ज्येष्ठ नागरिकको लागि हेरचाह, स्याहार सुसार र उपयुक्त वातावरण सिर्जना गर्ने।        | १. आफना आमाबाबुलाई सन्तानले अनिवार्य हेरचाह गर्नुपर्ने पद्धतिको विकास गरिनेछ।<br>२. ज्येष्ठ नागरिकको आर्थिक तथा सामाजिक हक अधिकार संरक्षणको लागि ज्येष्ठ नागरिक संरक्षण नीति तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ।<br>३. ज्येष्ठ नागरिकप्रति हुनसक्ने विभिन्न प्रकारका हिंसा तथा दुर्व्यवहार नियन्त्रणका लागि आवश्यक संयन्त्र निर्माण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ।<br>४. ज्येष्ठ नागरिकको उपचार र हेरचाहको लागि एक सय शैया भन्दा ठूला सरकारी अस्पतालहरूमा ज्येष्ठ नागरिक वार्डको स्थापना र निजी क्षेत्रका अस्पतालमा कम्तीमा १० प्रतिशत शैयाको व्यवस्था र सहूलियत दरमा उपचार हुने व्यवस्था गरिनेछ। |
| २. असहाय, असक्त, एकल र जोखिममा परेका ज्येष्ठ नागरिकको विशेष संरक्षण र सुरक्षाको कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्था गर्ने।  | १. ज्येष्ठ नागरिकको लागि स्थानीय तहमा ज्येष्ठ नागरिक क्लब, दिवा सेवा केन्द्र र प्रदेशमा आरोग्य आश्रमको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ।<br>२. एकल तथा विधुर, शारीरिक र मानसिक रूपमा असक्त, परित्यक्त, असहाय र आफनो परिवार वा संरक्षक नभएका ज्येष्ठ नागरिकको लागि स्याहार सुसार, हेरचाह र औषधोपचारको व्यवस्था गरिनेछ।<br>३. बुढ्यौली रोग, अल्जाइमर्स तथा बिर्सने रोग आदिबाट प्रभावित ज्येष्ठ नागरिकको लागि औषधोपचारको व्यवस्था गरिनेछ।   |
| ३. ज्येष्ठ नागरिकको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई उपयोग गर्नका लागि नीति निर्माणमा सहभागिता र स्रोतमा पहुँच सुनिश्चित गर्ने। | १. ज्येष्ठ नागरिकलाई नीति निर्माणमा सहभागिता र स्रोत-साधनमा पहुँच बढाई अपनत्व वृद्धि गरिनेछ।<br>२. ज्येष्ठ नागरिकको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई उपयोग गर्न अन्तरपुस्ता सीप हस्तान्तरण, छलफल र अन्तरक्रिया कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | ३. ज्येष्ठ नागरिकले समाज र राष्ट्रको लागि पुऱ्याएको योगदानको आधारमा सम्मान र आदर गरिनेछ ।   |
| ४. ज्येष्ठ नागरिकको सुरक्षा र सहजताको लागि सामाजिक सुरक्षाका सेवालाई वृद्धि गर्ने । | १. ज्येष्ठ नागरिकलाई सम्मान, आदर र सहजताको लागि विभिन्न सेवा र सुविधामा विशेष छुट र सहूलियतको व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. सरोकारवाला निकायहरू बीच समन्वय तथा सहकार्यमा शारीरिक एवम् मानसिक रूपमा कमजोर भएका र असहाय ज्येष्ठ नागरिकलाई सेवा सुविधा प्रदान गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

ज्येष्ठ नागरिकहरूको ज्ञान, सीप र अनुभवको सामाजिक विकास र पूर्वाधार निर्माणमा उपयोग भएको हुने, असहाय, असक्त र परित्यक्त ज्येष्ठ नागरिक संरक्षित भएको हुने, ज्येष्ठ नागरिक माथि हुने हिंसा तथा दुर्व्यवहारमा कमी आएको हुने र ज्येष्ठ नागरिक क्लब, दिवा सेवा केन्द्र एवम् आरोग्य आश्रमको स्थापना र सञ्चालन भएको हुनेछ ।

#### ७.९ अपाङ्गता भएका व्यक्ति

##### १. पृष्ठभूमि

संविधानले आर्थिक समानता, समृद्धि र सामाजिक न्याय सुनिश्चित गर्न समानुपातिक समावेशी र सहभागितामूलक सिद्धान्तका आधारमा समतामूलक समाज निर्माण गर्ने संकल्प गर्दै राज्यले विशेष व्यवस्था गरेको छ । अपाङ्गता भएका व्यक्तिको नागरिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अधिकार सहितको सम्मानजनक जीवनयापनको अधिकारलाई कानूनले संरक्षण र प्रवर्द्धन गरेको छ । दिगो विकास लक्ष्यले अपाङ्गमैत्री विद्यालय लगायत सुरक्षित, समावेशी र पहुँचयोग्य सार्वजनिक खुल्ला ठाउँहरूमा विषय समावेश गरेको छ । नेपालले अपाङ्गता भएका व्यक्तिको अधिकार सम्बन्धी महासन्धि, २००६, एसिया तथा प्रशान्त क्षेत्रको क्षेत्रीय इन्चोन रणनीति (२०१३-२०२२) लगायतका अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धताहरूको कार्यान्वयन गर्दै आएको छ । विश्वव्यापी मान्यता अनुसारको समुदायमा आधारित पुनर्स्थापना कार्यक्रम कार्यान्वयनमा रहेको छ । अपाङ्गता भएका व्यक्तिको सम्मान एवम् अधिकार प्रवर्द्धनका लागि राज्यले समावेशी, समन्यायिक र सहभागितालाई जोड दिन आवश्यक रहेको छ ।

##### २. प्रमुख समस्या

अपाङ्गमैत्री शिक्षाको अभावमा अपाङ्गता भएका बालबालिका विद्यालय बाहिर रहनु, अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि रोजगारी, सामाजिक सहभागिता र आय-आर्जनका अवसरमा समान पहुँच नहुनु र विभिन्न अवरोध, विभेद र असमान व्यवहारको अवस्था विद्यमान हुनु, भौतिक संरचनाहरू अपाङ्गमैत्री नहुनु, सूचना, सञ्चार तथा प्रविधि अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको लागि पहुँचयुक्त हुन नसक्नु, सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिका लागि

नियमित स्वास्थ्य सेवा, परामर्श सेवा, प्रयोग गरिने सहायक सामग्री र पुनर्स्थापना सेवा उपलब्ध नहुनु र नदेखिने अपाङ्गता (Invisible Disability) को पहिचान र सही सम्बोधन नहुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

संघीय प्रणाली बमोजिम स्थानीय तहसम्म अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको अधिकार सम्बन्धी ऐनले निर्देशित गरेको संरचनाको निर्माण, आवश्यक नीतिको व्यवस्था र सोको लागि आवश्यक स्रोत-साधनको व्यवस्था गर्नु, सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि पूर्वाधार, आवश्यकता अनुसार सेवा सुविधा तथा उपकरणको व्यवस्थापन गर्नु, दुर्गम ग्रामीण स्थानमा सहज सेवा सुविधाको व्यवस्थापन र सबै भौतिक संरचनाहरू अपाङ्गमैत्री निर्माण गर्नु, पूर्ण अशक्त, अति अशक्त र बौद्धिक अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि सहयोगी व्यक्ति र पुनर्स्थापनाको व्यवस्था गर्नु र सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि शिक्षा, स्वास्थ्य, तालिम र आवश्यकता अनुसार रोजगारी उपलब्ध गराउनु यस क्षेत्रमा चुनौतीको रूपमा रहेका छन् ।

संविधानमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि सेवा सुविधा र सामाजिक सुरक्षाको व्यवस्था हुनु, राज्यद्वारा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको अधिकार सम्बन्धी ऐन, समावेशी शिक्षा नीति, भौतिक संरचना, सञ्चार सेवा र सुविधालाई पहुँचयुक्त बनाउने सम्बन्धी मापदण्ड लगायत अपाङ्गता सम्बन्धी विशेष कानून तथा नीतिको तर्जुमा र कार्यान्वयन हुनु, अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि, दिगो विकासको लक्ष्य आदिमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि विभिन्न प्रावधान रहनु र अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिको पक्ष राज्य भएकाले अपाङ्गताको विषयलाई सम्बोधन गर्नको लागि सरकार र सरोकारवाला निकायहरूसँग सहकार्य र साझेदारीमा वृद्धि हुनु यस क्षेत्रमा अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

अपाङ्गता भएका व्यक्तिको मर्यादित र आत्मनिर्भर जीवन ।

#### ४.२ लक्ष्य

सेवा सुविधा, साधन र स्रोतमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको पहुँच स्थापित गरी आर्थिक सामाजिक सशक्तीकरण गर्दै सम्मानपूर्वक जीवनयापनको वातावरण सिर्जना गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

१. अपाङ्गता भएका व्यक्तिको आर्थिक तथा सामाजिक सशक्तीकरण गर्नु ।
२. सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिको सहज जीवनयापनको लागि पुनर्स्थापना, स्वास्थ्योपचार र सहायक सामग्रीको व्यवस्था गर्नु ।
३. भौतिक संरचना, यातायात, सेवा सुविधा, साधन स्रोत, सूचना तथा सञ्चार र प्रविधिमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको सहज पहुँच सुनिश्चित गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. अपाङ्गता भएका व्यक्तिको हक-अधिकार संरक्षण गर्न नीति निर्माण तथा कानूनहरूको पुनरावलोकन गर्ने ।                         | १. सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिको जीवनयापनको लागि उनीहरूको सहभागितामा अपाङ्गमैत्री नीति तथा कार्यक्रम तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. अपाङ्गता भएका व्यक्तिका लागि आवश्यक पर्ने सामाजिक सुरक्षाका कार्यक्रमको दायरा विस्तार गरी प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>३. अपाङ्गता भएका व्यक्तिलाई सरकारी र निजी क्षेत्रमा रोजगारीको अवसर वृद्धि गरिनेछ ।<br>४. अपाङ्गता सम्बन्धी पहिचानका लागि आवश्यक पूर्व परीक्षण प्रणाली (Early Screening System) को विकास गरिनेछ ।  |
| २. भौतिक संरचना अपाङ्गमैत्री बनाई अपाङ्गता भएका व्यक्तिलाई सार्वजनिक सेवामा सहज पहुँच, प्राप्ति र अवसरको सिर्जना गर्ने । | १. अपाङ्गता भएका व्यक्तिको दैनिक जीवनयापन सहज बनाउन सातै प्रदेशबाट क्रमशः सहायक सामग्री उत्पादनको व्यवस्था मिलाई उनीहरूको आवागमनलाई सरल र व्यवस्थित बनाइनेछ ।<br>२. सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिका लागि सेवा सुविधा अपाङ्गमैत्री बनाई दैनिक क्रियाकलाप गर्न सरल हुने वातावरण निर्माण गरिनेछ ।<br>३. सार्वजनिक भौतिक संरचना, पूर्वाधारहरू तथा यातायातका साधन अपाङ्गमैत्री बनाइनेछ ।<br>४. अपाङ्गता भएका बालबालिकालाई विद्यालय भर्नामा प्राथमिकता र शिक्षण सिकाई पद्धति तथा पाठ्यक्रम अपाङ्गमैत्री बनाई गुणस्तरीय शिक्षामा सबै अपाङ्गता भएका बालबालिकाको पहुँच वृद्धि गरिनेछ ।<br>५. अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूका लागि आय-आर्जन गर्ने कार्यक्रम तर्जुमा गरी उनीहरूलाई आत्मनिर्भर बनाइनेछ ।<br>६. अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूका लागि सार्वजनिक सेवा प्रदान गर्न एकीकृत प्रणालीको विकास गरिनेछ । |
| ३. अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि सबै प्रकारको सुविधा सहितको पुनर्स्थापना सेवाको व्यवस्था गर्ने ।                          | १. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा विशेष प्रकारको अपाङ्गताको लागि पुनर्स्थापना सेवा र आवश्यक स्वास्थ्योपचारको व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. पूर्ण अशक्त, अति अशक्त, अटिज्म, डाउन सिन्ड्रोम, बौद्धिक अपाङ्गता भएका तथा नदेखिने अपाङ्गता भएका व्यक्तिका लागि  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | आवश्यक पर्ने विशिष्ट प्रकारको सेवा र सुविधा उपलब्ध हुने व्यवस्था मिलाइनेछ ।<br>३. पूर्ण अशक्त अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूका लागि सातै प्रदेशमा सबै प्रकारका सुविधा सहितका अपाङ्ग ग्राम स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ । |
| ४. सूचना, सञ्चार तथा प्रविधिको सुविधामा समेत अपाङ्गता भएका व्यक्तिको पहुँच सुनिश्चित गर्ने गरी सेवाको उपलब्धता र उपकरणको व्यवस्था गर्ने । | १. आमसञ्चार, सूचना र प्रविधिमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको पहुँच सुनिश्चित गर्ने गरी सेवाको उपलब्धता र उपकरणको व्यवस्था क्रमशः गर्दै लगिनेछ ।  |
| ५. अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूप्रति गरिने विभिन्न प्रकारको अन्धविश्वास, विभेद र हिंसा अन्त्य गर्ने ।   | १. अपाङ्गता भएका व्यक्ति प्रति गरिने विभिन्न प्रकारको अन्धविश्वास, विभेद र सबै प्रकारका हिंसा नियन्त्रण र निराकरण गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि आवश्यक पर्ने सेवा सुविधा सहज रूपमा उपलब्ध भएको हुने, सार्वजनिक भौतिक संरचनाहरू अपाङ्गमैत्री भएको हुने, अपाङ्गता भएका बालबालिकाको भर्नादर वृद्धि भएको हुने र अपाङ्गता भएका व्यक्ति विशेषतः पूर्ण अशक्त अपाङ्गता, अति अशक्त अपाङ्गता, अटिज्म, डाउन सिन्ड्रोम, बौद्धिक अपाङ्गता भएकाहरूका लागि शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा सहितको पुनर्स्थापना सेवा उपलब्ध भएको हुनेछ ।

#### ७.१० खेलकुद

##### १. पृष्ठभूमि

व्यक्तिको शारीरिक तन्दुरुस्ती, सामाजिक, मानसिक र संवेगात्मक पक्षको सन्तुलित विकासमा खेलकुदको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । खेलकुद राष्ट्रिय एकता सुदृढ गर्ने र अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमा राष्ट्रिय पहिचान स्थापित गर्ने प्रमुख माध्यमको रूपमा रहि आएको छ । विश्वव्यापी मूल्य मान्यता र प्रविधिको संयोजनबाट नागरिकलाई रोजगारको अवसर सिर्जना गर्न, खेल पर्यटनको माध्यमबाट दिगो विकासका शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता तथा आर्थिक वृद्धि लगायतका लक्ष्यहरू हासिल गर्न स्थानीय तहदेखि नै खेलकुदको संस्थागत विकास एवम् पूर्वाधार निर्माण गरी "सबैका लागि खेलकुद" अभियानलाई सार्थकता दिन आवश्यक छ ।

## २. प्रमुख समस्या

खेलकुद विकासका लागि पर्याप्त पूर्वाधार तथा खेल सामाग्रीको कमी हुनु, विद्यमान पूर्वाधारहरू गुणस्तरीय, आधुनिक र सुविधायुक्त नहुनु, नेपालले राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय प्रतियोगिताहरू नियमित रूपमा आयोजना गर्न नसक्नु, खेलाडी तथा प्रशिक्षकहरूलाई नियमित तथा गुणस्तरीय प्रशिक्षणको व्यवस्था र उनीहरूको मनोबल उच्च बनाई जीविकोपार्जनको आधारको रूपमा खेलकुदलाई स्थापित गर्न नसक्नु, राष्ट्रिय खेलकुद परिषद् र खेलकुद क्षेत्रका विषयगत संघहरूको क्षमता विकास एवम् संस्थागत सुशासन कायम हुन नसक्नु, खेलकुदका पूर्वाधार विकास तथा प्रतियोगिता आयोजनामा निजी तथा अन्तर्राष्ट्रिय लगानी आकर्षित गर्न नसक्नु र पर्वतीय, पर्यटकीय र साहसिक खेलकुद गतिविधि पर्याप्त मात्रामा सञ्चालन गर्न नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुकूलका सुविधा सम्पन्न भौतिक पूर्वाधारहरूको निर्माण गर्नु, समयसापेक्ष राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरको अध्ययन, अनुसन्धान, प्रशिक्षण तथा प्रतियोगिताको व्यवस्था गरी स्वच्छ खेलाडी (Clean Athlete) को विकास, प्रोत्साहन तथा सम्बर्द्धन गर्नु, खेलकुद प्रशिक्षण तथा प्रतियोगिताहरूमा नयाँ शिल्प (Technique) र विज्ञान प्रविधिको प्रयोग गर्नु, खेलकुदको विकासमा लगानी अभिवृद्धि गर्नु, गैरसरकारी र निजीक्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्नु, खेलकुदलाई जीवनको अभिन्न अङ्गको रूपमा स्थापित गर्दै व्यवसाय (Profession) र रोजगारीको रूपमा विकास गर्नु, खेलकुद सम्बद्ध निकायहरूमा व्यवस्थापकीय र संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्नु र राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरका मान्य मापदण्डका आधारमा व्यवस्थापन तथा नियमन गर्नु खेलकुद विकासका प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

खेलकुदलाई राष्ट्रिय एकता सुदृढ गर्ने र अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमा सम्मान अभिवृद्धि गर्ने माध्यमका रूपमा लिनु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहलाई खेलकुद क्षेत्रको विकासका लागि जिम्मेवार बनाइनु, शारीरिक व्यायाम, योग तथा खेलकुद गतिविधिहरूको महत्वप्रति जनमानसमा रुची र जागरुकता बढ्दै जानु, उच्च भूभागीय तथा साहसिक खेलकुद विकासका प्रचुर सम्भावना रहनु, खेलकुद गतिविधिमा निजी क्षेत्रको सहभागिता क्रमशः वृद्धि हुँदै जानु र खेलकुद पर्यटन प्रवर्द्धनको प्रचुर सम्भावना रहनु खेलकुद विकासका अवसर हुन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

स्वच्छ, व्यावसायिक र प्रविधिमैत्री खेलकुद अभिवृद्धि।

### ४.२ लक्ष्य

खेलकुदको विकास र विस्तार गरी स्वस्थ, सक्षम र अनुशासित नागरिक तयार पाउँदै अन्तर्राष्ट्रिय जगतमा राष्ट्रको सम्मान अभिवृद्धि गर्दै पहिचान स्थापित गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. खेलकुद पूर्वाधारको विकास, विस्तार र स्तरोन्नति गर्नु।
२. खेलकुद क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धी र व्यावसायिक बनाउनु।
३. सबै क्षेत्रमा खेलकुदलाई मूलप्रवाहीकरण गर्नु।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. सबै तहसँगको समन्वय र सहकार्यमा खेलकुद पूर्वाधारको निर्माण, संरक्षण र स्तरोन्नति गर्ने।           | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. प्रत्येक प्रदेशमा प्रदेश स्तरीय रङ्गशाला र सुविधा सम्पन्न खेल मैदान निर्माण गरिनेछ।</li> <li>२. प्रदेश र स्थानीय स्तरमा सुविधा सम्पन्न खेलकुद पूर्वाधारहरूको निर्माण तथा स्तरोन्नति गरिनेछ।</li> <li>३. उच्च भूभागीय खेलकुद तालिम केन्द्र (High Altitude Sports Training Centre) स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ।</li> </ol>   |
| २. खेलकुद पूर्वाधारको विकास, व्यवस्थापन र गतिविधि सञ्चालनमा निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन गर्ने।       | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा खेलकुद पूर्वाधार निर्माण तथा व्यवस्थापन गरिनेछ।</li> <li>२. निजी क्षेत्रलाई प्रतियोगिताहरू आयोजना तथा प्रशिक्षणको लागि लगानी गर्न उत्प्रेरित गरिनेछ।</li> </ol>   |
| ३. खेलकुद विकासमा आबद्ध निकाय/संघ संस्थाहरूको क्षमता विकास तथा संस्थाहरूमा सुशासन प्रवर्द्धन गर्ने। | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. खेलकुदसँग सम्बन्धित संघ संस्थाहरूको संस्थागत सुदृढीकरण तथा सुशासन अभिवृद्धि गरिनेछ।</li> <li>२. खेलकुद सम्बन्धी अध्ययन तथा विकासका लागि छुट्टै शैक्षिक संस्थाको स्थापना गरिनेछ।</li> <li>३. खेलकुदका मुख्य मुख्य विधाका प्रतिष्ठानहरूको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ।</li> <li>४. एण्टि डोपिङ्ग, म्याच फिक्सिङ्ग तथा बल टेम्परिङ्ग जस्ता गैरकानुनी कार्य निरुत्साहित गर्न सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।</li> </ol> |
| ४. प्रतिभावान खेलाडीको पहिचान, क्षमता विकास तथा प्रोत्साहनको व्यवस्था गर्ने।                        | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. स्थानीय स्तरदेखि नै प्रतियोगिताहरू आयोजना गरी प्रतिभावान् खेलाडीहरूको पहिचान तथा विकास गरिनेछ।</li> <li>२. राष्ट्रिय स्तरका प्रतिभाशाली खेलाडीहरू तथा प्रशिक्षकहरूलाई प्रोत्साहन तथा पुरस्कृत गर्दै नियमित रूपमा स्वदेशी तथा वैदेशिक प्रशिक्षणको व्यवस्था गरिनेछ।</li> <li>३. खेलकुद क्षेत्रमा अक्षय कोषको व्यवस्था गरी खेलाडीहरूको सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित गरिनेछ।</li> </ol>                                      |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | ४. अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा पदक हासिल गर्न सम्भाव्यता रहेका खेलकुदलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।   |
| ५. समाजका प्रत्येक तह र क्षेत्रमा खेलकुदको महत्व स्थापित गर्दै सबै उमेर समूहका नागरिक सहभागी हुने अवसर सिर्जना गर्ने । | १. बालबालिकालाई आफ्नो अन्तर्निहित क्षमताको विकास गर्न प्रत्येक विद्यालयमा खेलकुद विकास, प्रशिक्षण र अभ्यासलाई अभिन्न अङ्ग बनाइनेछ ।<br>२. विशेष तथा पारा खेलकुदको विकास र विस्तारमा जोड दिइनेछ ।<br>३. सम्भाव्य स्थानहरूको पहिचान गरी खेल शहर (Sports City) को विकास गरिनेछ ।<br>४. नियमित शारीरिक व्यायाम र योगसम्बन्धी क्रियाकलापलाई अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>५. आमनागरिकको रुची तथा स्वास्थ्य प्रवर्द्धन गर्ने खेलहरूको विकासका लागि विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ । |
| ६. आर्थिक तथा सामाजिक विकासका लागि खेलकुद गतिविधिलाई प्राथमिकता दिने ।   | १. खेलकुद क्लिनिकहरूको स्थापना तथा स्तरवृद्धि गरिनेछ ।<br>२. साहसिक, पर्यटकीय, मनोरञ्जनात्मक र व्यवसायिक खेलकुदलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।<br>३. नेपालमा विभिन्न खेलकुद विधाका मैत्रीपूर्ण तथा व्यावसायिक प्रतियोगिता आयोजना गरिनेछ ।<br>४. कुनै खेलमा विशेष विज्ञता हासिल गरेका देशसँग समझदारी गरी खेलाडीहरूको अनुभव, ज्ञान र सीप आदान प्रदान कार्यमा सहकार्य गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

संघमा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको राष्ट्रिय खेलकुद परिसर, सबै प्रदेशमा एक-एक वटा सुविधा सम्पन्न रङ्गशाला र सबै स्थानीय तहहरूमा खेल ग्राम निर्माण भई सञ्चालनमा आएका हुनेछन् । सबैका लागि खेलकुद (बालबालिका, युवा, ज्येष्ठ नागरिक, विशेष क्षमता भएका र पारा खेलाडीहरू) प्रतियोगिताको आयोजना गरी सबैलाई सहभागी हुने अवसर सिर्जना भएको हुनेछ । प्रतिभावान् खेलाडीको पहिचान गरी प्रविधिहरूको माध्यमबाट प्रशिक्षण दिई खेलाडीको खेल कौशलमा स्तरोन्नति भई अन्तर्राष्ट्रिय पदक हासिल दर वृद्धि भएको हुनेछ । ३ वटा उच्च भूभागीय खेल तालिम केन्द्र स्थापना र सञ्चालन हुनुका साथै साहसिक खेलकुद प्रतियोगिताको आयोजना मार्फत पर्यटन प्रवर्द्धनमा सहयोग पुगेको हुनेछ । खेलकुदको पूर्वाधार निर्माण, स्तरोन्नति र व्यवस्थापनका साथसाथै प्रतियोगिता सञ्चालनमा निजी क्षेत्रको सहभागिता अभिवृद्धि भएको हुनेछ । विद्यालयहरूमा खेलकुद विकास, प्रशिक्षण र अभ्यासमा वृद्धि भएको हुनेछ ।

## ७.११ सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण

### १. पृष्ठभूमि

गरिबी न्यूनीकरण, मर्यादित जीवन र सुरक्षित भविष्यका लागि सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण अपरिहार्य छ। नेपालमा आर्थिक, सामाजिक, प्राकृतिक र पर्यावरणीय जोखिमको विद्यमानता तथा सम्भावना रहेको र वर्तमानमा पनि यस्ता जोखिमको सामना गर्नुपरिरहेको अनुभव छ। समाजवाद उन्मुख लोक कल्याणकारी राज्यको अवधारणा बमोजिम कमजोर, विपन्न र विभिन्न जोखिममा रहेका समुदायको जीवनयापनलाई सहज बनाउन र सबै नागरिकको जीवन सुरक्षित, संरक्षित र गुणस्तरीय बनाउन सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध गराउनु राज्यको दायित्व हो। नेपालको संविधानले सामाजिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा र खाद्य सम्प्रभुता, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा र रोजगारीको हकलाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गरे अनुरूप सबै नागरिकको गुणस्तरीय जीवन सुनिश्चितताका लागि राज्यले सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणको नीति अवलम्बन गरेको छ। त्यसैगरी, अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता पूरा गर्न र दिगो विकास लक्ष्यहरूको प्राप्तिका लागि पनि नागरिकहरूलाई सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण प्रदान गर्नु आवश्यक हुन्छ। यसर्थ, विभिन्न क्षेत्रमा विभिन्न निकायबाट सञ्चालित सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणका कार्यक्रमलाई एकीकृत ढाँचामा थप विस्तार गरी सबैको पहुँचमा पुऱ्याउन र तिनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गराउन आवश्यक देखिएको छ।

आर्थिक तथा सामाजिक वञ्चितकरण तथा जोखिममा परेकाहरूको सामाजिक संरक्षणका लागि सामाजिक सुरक्षा ऐन, २०७५ जारी भएको तथा श्रमिकको सामाजिक सुरक्षाका लागि योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा ऐन, २०७४ कार्यान्वयनमा रहेको छ। क्षेत्रगत रूपमा नेपाल सरकारका विभिन्न निकायबाट विभिन्न लक्षित समूहहरूलाई खाद्यान्न, पोषण स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, श्रम तथा रोजगारीका क्षेत्रहरूमा सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणका कार्यक्रम सञ्चालित छन्। आ.व. २०७५/७६ मा कुल बजेटको ११.३ प्रतिशत रकम सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणको क्षेत्रमा विनियोजन भएको छ।

### २. प्रमुख समस्या

सामाजिक सुरक्षा योजनालाई सर्वव्यापी बनाउन नसकिनु, सामाजिक सुरक्षा योजनाको तर्जुमा, लगानीको आकलन र स्रोतमाथिको दबाव अनुमान गर्न आवश्यक पर्ने सूचना र तथ्याङ्कको कमी हुनु, सरकारका विभिन्न निकाय र तहबाट प्रदान गरिने सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणका कार्यक्रमहरूमा एकीकृत ढाँचा नहुँदा खण्डीकृत, दोहोरो र असामञ्जस्य हुनु, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रममा निजी क्षेत्रका रोजगारदाताको न्यून सहभागिता रहनु, अनौपचारिक क्षेत्रका श्रमिकलाई सामाजिक सुरक्षाको दायरामा आबद्ध गर्न नसकिनु, नागरिकहरूको सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमहरूमा सहज पहुँच स्थापित गर्न नसकिनु र सामाजिक सुरक्षा वितरण प्रणाली प्रभावकारी नहुनु र कार्यान्वयनमा सरकारी, सहकारी, निजी तथा सामुदायीक क्षेत्रहरूबीच समन्वय नहुनु जस्ता समस्या रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा सबैको आबद्धता बढाउनु, सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण सम्बन्धी योजनालाई वित्तीय रूपमा दिगो बनाउनु, सामाजिक सुरक्षालाई आर्थिक-सामाजिक विकासका अन्य क्षेत्रका नीति तथा कार्यक्रमहरूसँग आबद्ध गर्नु, वास्तविक वञ्चितीकरण र जोखिममा रहेका वर्ग र समुदायको पहिचान गरी सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणका कार्यक्रमहरूमा उनीहरूको सहज पहुँच सुनिश्चित गर्नु, ज्येष्ठ नागरिकको जनसंख्या को हिस्सा बढ्दै जाँदा राज्य कोषमा पर्ने थप सामाजिक सुरक्षा दायित्वलाई सम्बोधन गर्नु, सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणमा संगठित निजी क्षेत्र र अनौपचारिक क्षेत्रबाट ठूलो दायित्व वहन गराउनु र ठूलो राजनीतिक महत्वकांक्षा, राज्यको असीमित दायित्व र सानो वित्तीय क्षमताबीच सन्तुलन कायम गरी सामाजिक सुरक्षा योजना र कार्यक्रमको स्वचालित तथा दिगो प्रणाली स्थापना गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन् ।

श्रमिकको सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी र सबै नागरिकको सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी छुट्टाछुट्टै कानुनी व्यवस्था भई कार्यक्रम प्रारम्भ हुनु, निजी क्षेत्रका रोजगारदाताको श्रमिकप्रतिको सामाजिक सुरक्षा दायित्व किटान हुनु र प्रतिबद्धता समेत व्यक्त हुनु, सामाजिक सुरक्षा कोष लगायत विभिन्न कोषको स्थापना हुनु र सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी खर्चमा राज्यको उल्लेखनीय वृद्धि हुनु र जोखिम वहनका लागि बिमा क्षेत्रको विविधीकरण र बजार विस्तार हुनु प्रमुख अवसर हुन् ।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सबैका लागि दिगो सामाजिक सुरक्षा प्रणाली, समतामूलक समाज र लोककल्याणकारी राज्य व्यवस्थाको आधार ।

#### ४.२ लक्ष्य

सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणलाई दिगो, सर्वव्यापी र पहुँचयोग्य बनाई नागरिक हकको कार्यान्वयन गर्ने र राज्यप्रति नागरिकको विश्वास सुदृढ गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

१. सबै नागरिकलाई अनिवार्य र सर्वव्यापी सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा आबद्ध गर्नु ।
२. आर्थिक सामाजिक वञ्चितीकरण र जोखिममा परेका समुदायलाई सामाजिक संरक्षण प्रदान गर्नु ।
३. सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण मार्फत नागरिकहरूको आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय र अन्य जोखिम न्यूनीकरण गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. सामाजिक सहयोग र संरक्षणका कार्यक्रम विस्तार गरी आर्थिक सामाजिक वञ्चितीकरण तथा जोखिममा परेका क्षेत्र, लिङ्ग, वर्ग र समुदायको पहुँच बढाउने । | <p>१. जीवनयापन गर्ने आयस्रोत नभएका, सरकारले तोकेको भन्दा न्यून आय भएका, श्रम गर्न नसक्ने अशक्त र असहाय, एकल महिला, अपाङ्गता भएका, बालबालिका, आफ्नो हेरचाह आफै गर्न नसक्ने तथा लोपोन्मुख जातिका नागरिकको पहिचान गरी सामाजिक संरक्षणको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. बहुक्षेत्रीय पोषण योजना, सुरक्षित आमा कार्यक्रम, बाल संरक्षण अनुदान लगायतका सामाजिक सुरक्षाका कार्यक्रमलाई पहुँचयोग्य बनाई राष्ट्रव्यापी रूपमा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>३. सामाजिक सुरक्षा करको दायरा विस्तार र योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा प्रणालीलाई सुदृढ गरी सामाजिक सुरक्षालाई सबल र दिगो बनाइनेछ । सबैका लागि अनिवार्य स्वास्थ्य बिमा कार्यक्रम तयार गरी लागू गरिनेछ ।</p> <p>४. विपद्बाट सिर्जना हुने सम्भावित जोखिम/प्रकोपको सामना गर्न सक्ने गरी सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमलाई विपद् संवेदनशील बनाइनेछ ।</p> <p>५. अनौपचारिक क्षेत्रका श्रमिकलाई सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रममा आबद्ध गराउन लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>६. वैदेशिक रोजगारमा गएका कामदारलाई योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा आबद्ध गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>७. खाद्य सुरक्षाको हक, आवासको हक, स्वास्थ्यको हक, शिक्षाको हक, रोजगारीको हक जस्ता नागरिक हकको कार्यान्वयन गर्न एकीकृत सामाजिक सुरक्षा प्याकेज लागू गरिनेछ ।</p> <p>८. सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी विश्वव्यापी अवधारणा र अभ्यासका बारेमा अध्ययन अनुसन्धान गरी उपयुक्त योजना, प्रारूप तथा प्याकेज प्रयोगमा ल्याइनेछ ।</p> <p>९. सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी विषयलाई सहज र पारदर्शी बनाइनेछ ।</p> |
| २. योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा योजनालाई औपचारिक क्षेत्रका साथै अनौपचारिक क्षेत्रमा समेत विस्तार गरी सर्वव्यापी बनाउने ।                   | <p>१. एकीकृत सामाजिक सुरक्षा योजना र योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि नीतिगत, कानुनी तथा अन्तरनिकाय समन्वयात्मक सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. सामाजिक सुरक्षा कोषलाई सर्वव्यापी सामाजिक सुरक्षा योजना तथा योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा योजना एकीकृत रूपमा सञ्चालन गर्ने गरी पुनर्संरचना गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>३. सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक सहयोग, श्रम बजारमा हस्तक्षेप, सार्वजनिक कार्य, सामाजिक रेखदेख र सेवा कार्य आदिलाई एकीकृत सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा आबद्ध गरी विभिन्न सामाजिक सुरक्षाका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. प्रतिष्ठानहरूलाई संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व कोषको निश्चित हिस्सा सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण सम्बन्धी कार्यमा योगदान गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>५. विदेशमा काम गर्ने नेपाली कामदारको सम्बन्धित मुलुकमा गरेको सामाजिक सुरक्षा योगदानको रकम नेपालको सामाजिक सुरक्षा कोषमा हस्तान्तरण र आबद्ध गर्ने सम्बन्धमा सम्भाव्यता अध्ययन गरिनेछ ।</p> |
| ३. सामाजिक सुरक्षा, सहयोग र संरक्षणमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाउन अन्तर सरकार सूचना प्रणालीको विकास गर्ने । | <p>१. सामाजिक सुरक्षा एकीकृत सूचना प्रणालीको विकास गरिनेछ । सामाजिक सुरक्षा योजना वितरणको प्रतिवेदन प्रणाली विकास गरिनेछ ।</p> <p>२. संघीय प्रणाली अनुरूपको सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम कार्यान्वयन ढाँचा विकास गर्न अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासको अध्ययन तथा अन्तरसरकार तहगत समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>३. तीन तहकै सरकारको समन्वय र सहकार्यमा भारतमा जाने नेपाली कामदारको सुरक्षाका लागि सामाजिक सुरक्षा बिमामा आबद्ध गर्दै लगिनेछ ।</p>  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

कुल जनसंख्याको ६० प्रतिशत हिस्सा आधारभूत सामाजिक सुरक्षामा आबद्ध भएको हुनेछ । औपचारिक क्षेत्रका सबै श्रमिक योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षामा आबद्ध भएका हुनेछन् । राष्ट्रिय बजेटमा सामाजिक सुरक्षा खर्च वृद्धि भई १३.७ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । आर्थिक सामाजिक वञ्चितीकरण र जोखिममा परेका वर्ग, क्षेत्र, लिंग र समुदायलाई राज्यबाट सामाजिक संरक्षण प्रदान गरिएको हुनेछ ।

## परिच्छेद – ८

# पूर्वाधार क्षेत्र

### ८.१ ऊर्जा

#### ८.१.१ जलविद्युत

##### १. पृष्ठभूमि

जलविद्युत आर्थिक वृद्धि र आर्थिक रूपान्तरणको एक महत्वपूर्ण साधन हो। नेपालको विद्युत विकासको यात्रा वि.सं. १९६८ देखि सुरु भएको भएता पनि वित्तीय उत्प्रेरणा सहितको लगानी नीतिको प्रभावकारी समन्वय र निर्माण क्षमताको अभावले संभावित क्षमताको न्यून मात्रामा उत्पादन सम्भव हुन सकेको छ। आ.व. २०७४/७५ सम्ममा कुल जलविद्युत जडान क्षमता १,०२० मेगावाट पुगेको छ। विद्युत ग्रिडमा जनसंख्याको पहुँच ७० प्रतिशत छ। विद्युत प्रसारण लाइनको ६६ के.भी. वा सो भन्दा माथिको कुल लम्बाई ३,५३८ सर्किट किलोमिटर पुगेको छ। ६२३ स्थानीय तहमा विद्युतीय पूर्वाधार पुगेको छ। साथै, प्रतिव्यक्ति विद्युत खपत उपभोग १९८ किलोवाट घण्टा रहेको छ। हाल करिब २० प्रतिशत रहेको चुहावटलाई न्यूनीकरण गर्दै लैजानु आवश्यक छ। जलविद्युत विकासका लागि स्वदेशी तथा वैदेशिक लगानी आकर्षण भइरहेको छ। अन्तरसरकार, सार्वजनिक निजी साझेदारीमा हुने लगानी यस क्षेत्रमा प्रवाह भइरहेको छ। ऊर्जा मिश्रित गर्ने रणनीति एवम् विकासको आवश्यकता र विद्युत सेवाको माग धान्न सक्नेसम्मका लागि सार्वजनिक लगानीलाई प्राथमिकता दिइएको छ।

##### २. प्रमुख समस्या

धेरै जलविद्युत आयोजना प्राकृतिक नदी प्रणालीमा आधारित रहनु, सुख्खा याममा विद्युतको माग पुरा हुन नसक्नु, विद्युत वितरण प्रणालीको सुदृढीकरण हुन नसक्नु, विद्युत आपूर्ति भरपर्दो र गुणस्तरीय नहुनु, वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन प्रभावकारी नहुनु, जग्गा प्राप्ति सम्बन्धी कठिनाइले आयोजना कार्यान्वयनमा ढिलाई हुनु, अन्तरनिकाय समन्वयमा कमी हुनु, प्रसारण लाइन निर्माणका लागि आवश्यक निजी जग्गा प्राप्ति तथा वन क्षेत्रमा निर्माण कार्यमा ढिलाइ र व्यवस्थापनमा कठिनाइ हुनु, आयोजना व्यवस्थापनका पूर्व चरणमा गर्ने कार्य समयमै सम्पन्न हुन नसक्नु, आयोजनाको लागतमा बढोत्तरी हुनु र आयोजना बैंकको अभाव हुनु र जलविद्युत आयोजना निर्माणमैत्री पूर्वाधारको कमी हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या रहेका छन्।

##### ३. चुनौती तथा अवसर

शहरीकरण तथा आर्थिक गतिविधिको विस्तारका कारण बढ्दै गएको विद्युतको माग पुरा गर्नु, ठूला जलाशययुक्त विद्युत आयोजनाहरूको विकास गर्नु, आयोजना निर्धारित समय र लागतमा सम्पन्न गर्नु, सरोकारवाला निकायबीच

समन्वय र प्रभावकारी नियमनको व्यवस्थापन गर्नु, प्रसारण तथा वितरण प्रणाली विस्तार र सुदृढीकरण गर्नु, जलविद्युत उत्पादनमा पर्याप्त मात्रामा वैदेशिक र निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्नु, अन्तर्देशीय विद्युत प्रसारण लाईनको निर्माण मोडालिटी विकास गर्नु र संस्थागत संरचनामा उपयुक्त सुधार गर्नु जलविद्युत विकासका प्रमुख चुनौती हुन् ।

जलविद्युत उत्पादनको लागि उपयुक्त भौगोलिक अवस्था र जलस्रोतको उपलब्धता रहनु, औद्योगिकीकरण एवम् आर्थिक गतिशीलता र कृषि क्षेत्रको आधुनिकीकरणले जलविद्युत क्षेत्र आर्थिक रूपान्तरणको सम्वाहकको रूपमा पहिचान हुनु, यस क्षेत्रमा स्वदेशी तथा वैदेशिक लगानी खुला रहनु, जलविद्युत उत्पादनमा निजी क्षेत्रको लगानी बढनु, जलविद्युत आयोजनामा स्थानीय जनताको लगानी बढ्दै गई जनताको स्वामित्व कायम हुनु, जलविद्युत आयोजनाको विकासमा आन्तरिक क्षमता वृद्धि हुनु र जलविद्युत उत्पादन, प्रसारण र वितरणमा संरचनागत खण्डीकरण एवम् तिनै तहका सरकारको कार्य क्षेत्र र जिम्मेवारी स्पष्ट हुनु यस क्षेत्रको विकासका प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

##### ४.१ सोच

जलविद्युतको दिगो र भरपर्दो विकास मार्फत मुलुकको समृद्धिमा योगदान ।

##### ४.२ लक्ष्य

जलविद्युतको तीव्र उत्पादन गरी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. जलविद्युतको उत्पादनमा वृद्धि गर्दै स्वच्छ ऊर्जाको उपलब्धता सुनिश्चित गर्नु ।
२. ऊर्जा दक्षता सहित गुणस्तरयुक्त, भरपर्दो र सुलभ रूपमा सबै घर परिवार र उत्पादनशील क्षेत्रमा विद्युत सेवाको पहुँचमा विस्तार गरी विद्युत खपतमा वृद्धि गर्नु ।
३. क्षेत्रीय ऊर्जा निर्यात व्यापार अभिवृद्धि र पेट्रोलियम पदार्थको आयात क्रमशः प्रतिस्थापन गर्दै भुक्तानी सन्तुलनलाई अनुकूल बनाउन योगदान पुऱ्याउनु ।

##### ४.३ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. जलविद्युतमा आन्तरिक एवम् बाह्य क्षेत्रको लगानी आकर्षण गरी विद्युत उत्पादनमा वृद्धि गर्ने । | १. निर्माणाधीन विद्युत उत्पादन, प्रसारण तथा वितरण आयोजनाहरूलाई तोकिएको समयमा सम्पन्न गरिनेछ ।<br>२. जलविद्युत उत्पादनमा निजी तथा विदेशी लगानी आकर्षित गर्न जोखिम आकलन, निर्धारण र बाँडफाँट सम्बन्धी नीति एवम् उपयुक्त मोडल विकास गरी लागू गरिनेछ ।<br>३. नेपालभित्र तथा बाहिर रहेका नेपाली जनताको प्रत्यक्ष लगानी सहितको सहभागितामा जलविद्युत आयोजनाहरूको विकास गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | ४. विद्युत व्यापार सम्झौतामा वैदेशिक मुद्रा विनिमय जोखिम न्यूनीकरण गर्न हेजिङ्ग कोष कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।   |
| २. आन्तरिक र अन्तरदेशीय विद्युत प्रसारणलाई सुदृढ तथा विस्तार गरी विद्युत आपूर्ति प्रणालीलाई प्रभावकारी र भरपर्दो बनाउने । | १. प्रादेशिक सन्तुलन समेत कायम हुने गरी आन्तरिक विद्युत प्रसारण लाइनको निर्माणलाई तीव्रता दिइनेछ ।<br>२. अन्तरदेशीय प्रसारण लाइनहरूको अध्ययन र सर्वेक्षण गरी निर्माण कार्य प्राथमिकताका साथ सम्पन्न गरिनेछ ।   |
| ३. ऊर्जा दक्षता बढाउन वितरण प्रणालीलाई प्रभावकारी एवम् भरपर्दो बनाउने तथा विद्युत पहुँच वृद्धि गरी खपत बढाउने ।           | १. विद्युत चुहावट रोक्न र विद्युत सेवालाई प्रभावकारी बनाउन स्मार्ट मिटर तथा स्मार्ट ग्रिडको अवधारणालाई क्रमिक रूपमा लागू गर्दै लगिनेछ ।<br>२. ग्रामीण विद्युतीकरण तथा समुदायको सहभागिता सहितको सामुदायिक विद्युतीकरण विस्तार गरिनेछ ।<br>३. ऊर्जा विकास र ऊर्जा खपत अभिवृद्धि सहितको विद्युत वितरण गुरुयोजना तयार गरी कार्यान्वयनमा लगिनेछ ।<br>४. सघन शहरी क्षेत्रमा भूमिगत वितरण लाइनको निर्माण कार्य अगाडि बढाइनेछ ।<br>५. विद्युतबाट संचालित सवारी साधनको प्रवर्द्धन र महशुल दर सम्बन्धमा अध्ययन गरी उपयुक्त महशुल निर्धारण गरिनेछ ।<br>६. निजी क्षेत्र समेतको सहभागितामा विद्युतबाट संचालित सवारी साधनको प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक चार्जिङ्ग स्टेशन क्रमशः स्थापना गरिनेछ ।<br>७. खनिज ऊर्जालाई जलविद्युत ऊर्जाले प्रतिस्थापन गर्न धुँवारहित भान्छाको अवधारणा लागू गरिनेछ । साथै, खाना पकाउने प्रयोजनको लागि उपयुक्त विद्युत महशुल निर्धारण गरिनेछ ।<br>८. हरेक घर ऊर्जा घरको अवधारणा अन्तर्गत ऊर्जा दक्षता कार्यक्रम र घरघरमा राखिने रुफटप सौर्य ऊर्जालाई नेट मिटरिड तथा नेट पेमेण्टका आधारमा ग्रीडमा जोड्ने कार्यक्रमलाई अभियानका रूपमा अघि बढाइनेछ ।<br>९. विद्युतीय चुल्हो घर घरमा पुऱ्याउनको लागि चुल्होको मापदण्ड तयार गरी लागू गरिनेछ । सबै विद्युतीय उपकरणहरूको ऊर्जा दक्षता सम्बन्धी मापदण्ड तयार गरी लागू गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | १०. विद्युत खपत कम हुने समयमा खेर जान सक्ने ऊर्जालाई उपयोग गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।   |
| ४. जलविद्युत उत्पादन सहित सबै प्रकारका ऊर्जाको समिश्रण र क्षेत्रीय ऊर्जा व्यापारको माध्यमबाट ऊर्जा सुरक्षा कायम गर्ने । | १. प्रादेशिक सन्तुलन समेत कायम हुने गरी बहुउपयोगी जलाशययुक्त आयोजनाहरूको अध्ययन, अनुसन्धान र विकास गरिनेछ ।<br>२. विद्युत आयोजनाहरूको उत्पादन समिश्रणका लागि जल प्रवाहमा आधारित आयोजनाका अलावा जलाशययुक्त तथा पम्प स्टोरेज ३०-३५ प्रतिशत, अर्ध जलाशययुक्त आयोजना २५-३० प्रतिशत र अन्य वैकल्पिक स्रोत ५-१० प्रतिशतको अनुपात कायम गरी टेक अर पे सिद्धान्तको आधारमा विद्युत खरिद सम्झौता गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।<br>३. भारत र अन्य क्षेत्रीय मुलुकसँग द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय विद्युत व्यापार सम्झौता गरी क्षेत्रीय विद्युत बजारको विकास गरिनेछ । |
| ५. जलविद्युत क्षेत्रको संस्थागत संरचनाको सुदृढीकरण गर्ने ।  | १. उत्पादन, प्रसारण, वितरण, विद्युत व्यापार तथा नियमन सहितको संस्थागत पुनर्संरचना अघि बढाइनेछ ।<br>२. प्रसारण लाइनको राईट अफ वे, जग्गा अधिग्रहण र लाभ बाँडफाँट लगायत वातावरणीय तथा सामाजिक आवश्यकताका सम्बन्धमा स्पष्ट नीतिगत तथा कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।<br>३. नेपाल विद्युत प्राधिकरणका विद्यमान क्षेत्रीय कार्यालयलाई वितरण कम्पनीमा रूपान्तरण गरी क्रमशः प्रदेश सरकारलाई हस्तान्तरण गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

जलविद्युत जडित क्षमता ५ हजार मेगावाट पुगेको हुने, सबै स्थानीय तह तथा ९९ प्रतिशत (५८ लाख ५० हजार घरपरिवार) मा विद्युत पहुँच पुगेको हुने र प्रतिव्यक्ति विद्युत खपत ७०० किलोवाट घण्टा पुगेको हुनेछ । ऊर्जा उपभोगमा नवीकरणीय ऊर्जाको अनुपात ५ बाट १२ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । ६६ किलोभोल्ट (के.भी.) तथा सो भन्दा माथिका प्रसारण लाइन ८ हजार सर्किट किलोमिटर, ३३ के.भी प्रसारण लाइन ७,२७७ सर्किट किलोमिटर र ११ के.भी. लाईन ४३,३५२ किलोमिटर पुगेको हुनेछ । विद्युत चुहावट हालको २० प्रतिशतबाट १४ प्रतिशतमा सीमित भएको हुनेछ ।

#### ८.१.२ वैकल्पिक ऊर्जा

##### १. पृष्ठभूमि

दिगो विकासका लक्ष्य प्राप्तिका लागि दिगो ऊर्जाको अवधारणा, हरितगृह ग्यासबाट वातावरणमा पर्ने असर न्यूनीकरण तथा अनुकूलन मार्फत हरित अर्थतन्त्रलाई प्रवर्द्धन गर्नु आजको आवश्यकता हो । ऊर्जा मिश्रण र ऊर्जा

सुरक्षाको सुनिश्चितता तथा ऊर्जाको पहुँच वृद्धि गर्न वैकल्पिक/नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रको तीव्र विकास हुन आवश्यक छ। नेपालको संविधानले वैकल्पिक ऊर्जाको विकास गरी आधारभूत आवश्यकता परिपूर्तिका लागि सुपथ र सुलभ रूपमा भरपर्दो ऊर्जाको आपूर्ति गर्ने नीति अङ्गीकार गरेको छ। राष्ट्रिय विद्युत प्रसारण लाइन नपुगेका ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रमा प्रदेश र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा ऊर्जा सेवा पुऱ्याउन र आयातित ऊर्जा माथिको निर्भरतालाई कम गर्न वैकल्पिक ऊर्जाको प्रवर्द्धन र विकास गरी यस क्षेत्रलाई विकासको मूलप्रवाहमा ल्याउन जरुरी छ।

हालसम्म वैकल्पिक ऊर्जाको स्रोतबाट करिब ५५ मेगावाट विद्युत उत्पादन भई देशका करिब ३६ लाख घरधुरी वैकल्पिक ऊर्जा वाट लाभान्वित भएका छन। वैकल्पिक ऊर्जाको माध्यमबाट देशका १८ प्रतिशत जनतामा विद्युतको पहुँच पुऱ्युका साथै करिब ३० हजार रोजगारी सिर्जना भएको र देशको कुल उत्पादित स्वच्छ ऊर्जामा वैकल्पिक ऊर्जाको योगदान ३.२ प्रतिशत रहेको छ। राष्ट्रिय ऊर्जा दक्षता रणनीति तयार गरी कार्यान्वयन अगाडि बढाइएको छ। त्यसै गरी लघु तथा साना जलविद्युत, बायोग्यास, सुधारिएको चुल्हो र सुधारिएको पानीघट्ट जस्ता आयोजनालाई संयोजन गरी कार्बन आयोजनाको रूपमा विकास गरिएको छ।

## २. प्रमुख समस्या

ऊर्जा मिश्रणमा राष्ट्रिय ऊर्जा सुरक्षाको आधारको रूपमा रहेको वैकल्पिक ऊर्जाको योगदानको स्पष्ट लक्ष्य निर्धारण हुन नसक्नु, तुलनात्मक रूपमा सुरुवाती लागत बढी हुने वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधिको प्रवर्द्धन र विस्तारका लागि आवश्यक सहूलियत ऋण, जोखिम व्यवस्थापन तथा बिमा सम्बन्धी आवश्यक व्यवस्था नहुनु, निजी क्षेत्रले ग्रामीण क्षेत्रमा अपेक्षाकृत लगानी गर्न नसक्नु, स्थानीय तहमा वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधि प्रवर्द्धन तथा प्रयोग सम्बन्धमा क्षमताको कमी हुनु, वैकल्पिक ऊर्जा सम्बन्धी केन्द्रीय सूचना प्रणाली व्यवस्थित नहुनु र वैकल्पिक ऊर्जा घरायसी आधारभूत आवश्यकता परिपूर्तिमा मात्र केन्द्रित रहनु यस क्षेत्रका समस्या रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

करिब ७४ प्रतिशत घरधुरीमा खाना पकाउने प्रयोजनका लागि प्रयोग हुने परम्परागत ऊर्जाका स्रोतलाई स्वच्छ, क्रिफायती तथा आधुनिक ऊर्जाले प्रतिस्थापन गर्नु, साना तथा मझौला उद्योगको परम्परागत ऊर्जा प्रविधि माथिको निर्भरतालाई कम गर्दै आधुनिक प्रविधिको पहुँच बढाउनु, ऊर्जा सुरक्षा तथा ऊर्जा दक्षता अभिवृद्धिको लागि मिश्रित ऊर्जा प्रणालीको नीति अवलम्बन गर्नु, ठूला वैकल्पिक ऊर्जाका आयोजना निर्माण गरी राष्ट्रिय प्रसारण लाइनमा जडान गर्नु, वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधिबाट ऊर्जा उत्पादन, उपयोग र व्यवस्थापनका लागि सबै तहका सरकारबीच आपसी सहकार्य र समन्वय गर्नु, वैकल्पिक ऊर्जा तथा ऊर्जा दक्षता सम्बन्धी नवीनतम प्रविधि र प्रयोगको प्रवर्द्धन र विकासका लागि आवश्यक अनुसन्धान तथा विकासमा जोड दिनु, वैकल्पिक ऊर्जा क्षेत्रमा स्वदेशी तथा विदेशी लगानी प्रोत्साहित गर्नु र ऊर्जाको पहुँच नपुगेका वास्तविक लक्षित वर्ग तथा क्षेत्रमा पहुँच पुऱ्याउनु यस क्षेत्रका चुनौती रहेका छन्।

विद्युत तथा स्वच्छ ऊर्जाको पहुँच सबै क्षेत्रमा पुऱ्याउने कार्य सरकारको प्राथमिकतामा रहनु, छिमेकी देशको अनुभवका साथै असल अभ्यासबाट सिक्ने सम्भावना रहनु, प्रदेश तथा स्थानीय तह र विकास साझेदारको यस क्षेत्रमा

प्रतिबद्धता र सहभागिता बढ्दै जानु, दिगो विकासका लक्ष्यमा प्रविधि विस्तार र प्रयोगलाई जोड दिनु, वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधिको प्रवर्द्धनमा वित्तीय संस्था तथा निजी क्षेत्रको सहभागिता र लगानी बढाउँदै रोजगारीका अवसरहरू सिर्जना गर्ने सम्भावना रहनु, पेट्रोलियम पदार्थ, कोइला जस्ता खनिज इन्धनको आयात न्यून गर्ने एक आधारका रूपमा रहनु र वैकल्पिक ऊर्जा प्रणालीलाई स्वच्छ विकास संयन्त्र तथा अन्य कार्बन परियोजनाको रूपमा विकास गर्न सकिनु यस क्षेत्रका अवसर हुन् ।

#### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

##### ४.१ सोच

वैकल्पिक/नवीकरणीय ऊर्जाको प्रवर्द्धन, विस्तार र दक्षता मार्फत आधुनिक ऊर्जाको दिगो विकास ।

##### ४.२ लक्ष्य

वैकल्पिक/नवीकरणीय ऊर्जाको उत्पादन र उपयोगमा ऊर्जा दक्षता बढाई स्वच्छ ऊर्जामा सबैको पहुँच सुनिश्चित गर्ने र ऊर्जा सुरक्षामा सहयोग पुऱ्याउने ।

##### ४.३ उद्देश्य

- राष्ट्रिय प्रसारण प्रणालीको पहुँच बाहिरका क्षेत्रमा समेत वातावरणमैत्री, दिगो, भरपर्दो, सर्वसुलभ, किफायती र गुणस्तरीय आधुनिक ऊर्जाको पहुँच वृद्धि गर्नु ।
- ऊर्जाको दक्ष उपयोगबाट ऊर्जा खपत घनत्व (Energy Intensity) घटाई उत्पादकत्व बढाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. वैकल्पिक/नवीकरणीय ऊर्जाको विस्तार गरी ऊर्जा आपूर्ति प्रणालीको महत्वपूर्ण अंशको रूपमा विकास र बहुउपयोग प्रवर्द्धन गर्ने । | १. लघु तथा साना जलविद्युत, सौर्य ऊर्जा, जैविक ऊर्जा तथा वायु ऊर्जाजस्ता वैकल्पिक ऊर्जाको उपयोगको प्रवर्द्धन, विकास एवम् विस्तार गरिनुका साथै उत्पादित विद्युतको उपयोग बढाउन विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. राष्ट्रिय विद्युत प्रणालीको पहुँच नभएका तथा नियमित नभएका अस्पताल, विद्यालय, पर्यटकीय स्थल, पदमार्ग आदिमा आधारभूत ऊर्जाको आपूर्ति नियमित गर्न स्थानीय तहको सहकार्यमा सौर्य प्रणाली प्रवर्द्धन गरिनुका साथै सौर्य/वायु मिश्रित मिनिग्रिड प्रणालीको प्रवर्द्धन गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>३. राष्ट्रिय विद्युत प्रसारण लाइन पुगेका क्षेत्रहरूमा लघु तथा साना जलविद्युत, सौर्य ऊर्जा, वायु, जैविक लगायतका वैकल्पिक ऊर्जाबाट उत्पादित विद्युतलाई राष्ट्रिय विद्युत प्रसारण लाइनमा जोड्ने व्यवस्था गरिनेछ। सौर्य रुफटप कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिनेछ।</p> <p>४. बायोग्यास तथा सुधारिएको चुलो, ग्यासीफायर (तापीय तथा विद्युतीय प्रविधि), बायोब्रिकेट जस्ता किफायती जैविक ऊर्जा प्रविधि तथा विद्युतीय चुलो एवम् अन्य उपकरणको प्रवर्द्धन एवम् विस्तार गरिनेछ।</p> <p>५. सौर्य तथा वायु ऊर्जा स्रोतको स्थलगत तथ्याङ्क संकलन गरी सोको आधारमा प्रमाणीकरण गरी राष्ट्रिय ग्रीडमा समाहित गर्ने खालका सौर्य तथा वायु ऊर्जा प्रणालीको विकास गरिनेछ।</p> <p>६. वैकल्पिक ऊर्जा सम्बन्धी कार्यलाई प्रभावकारी बनाउन वैकल्पिक ऊर्जा प्रवर्द्धन केन्द्रलाई उत्कृष्टता केन्द्रको रूपमा स्थापित गरिनेछ।</p> |
| २. प्रदेश र स्थानीय तहमा सरोकारवालासँगको सहकार्यमा लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरणलाई प्राथमिकता दिँदै आधुनिक, भरपर्दो र पर्याप्त ऊर्जा सेवा उपलब्ध नभएका क्षेत्रसम्म वैकल्पिक ऊर्जाको पहुँच वृद्धि गर्ने। | <p>१. स्थानीय तहलाई वैकल्पिक ऊर्जाको उत्पादन एवम् विकासका लागि क्षमता अभिवृद्धि एवम् स्रोत परिचालन गर्न सहजीकरण गरिनेछ।</p> <p>२. जैविक स्रोतको समुचित व्यवस्थापनबाट ऊर्जा उत्पादन गर्नका लागि स्थानीय तह तथा निजी क्षेत्रसँग समन्वय गरी आवश्यक प्रविधि र प्रणालीहरूको प्रवर्द्धन र विस्तार गरिनेछ।</p>   |
| ३. नवीनतम, दिगो तथा ऊर्जा दक्ष प्रविधिहरूको प्रयोगमा जोड दिने।   | <p>१. ऊर्जा उत्पादन र प्रयोग सम्बन्धी उपकरणहरूको गुणस्तर मापन गर्ने पद्धतिलाई सुदृढ गरिनेछ।</p> <p>२. ऊर्जा दक्षताको राष्ट्रिय मापदण्ड र स्तर निर्धारणका साथै ऊर्जा दक्षता मापनका उपकरण र उपायको विकास गरिनेछ।</p>  |
| ४. वैकल्पिक ऊर्जाको क्षेत्रमा वैकिड तथा वित्तीय क्षेत्रको संलग्नता वृद्धि गर्ने तथा वैकल्पिक ऊर्जा   | १. वैकल्पिक ऊर्जा क्षेत्रमा लगानी गर्ने वातावरण सिर्जना गरिनेछ। साथै, बैंक तथा वित्तीय क्षेत्रबाट यस क्षेत्रमा सहुलियत दरमा स्थिर कर्जा प्रवाह गरिनेछ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| प्रविधिहरूलाई उपयुक्त कार्बन परियोजना तथा कार्यक्रमको रूपमा बिकास गरी अन्तर्राष्ट्रिय कार्बन बजारको साथै आन्तरिक कार्बन बजार संयन्त्र स्थापना गर्ने ।   | २. केन्द्रीय नवीकरणीय ऊर्जा कोषलाई प्रभावकारी परिचालन गर्दै प्रदेश तथा स्थानीय ऊर्जा कोष स्थापना गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।<br>३. वैकल्पिक ऊर्जा प्रवर्द्धनका लागि हरित जलवायु कोष तथा अन्य राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय वातावरण तथा जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी कोषहरूबाट स्रोत परिचालन गर्ने व्यवस्थाका लागि आवश्यक प्रक्रिया अवलम्बन गरी त्यससँग सम्बन्धित कार्यक्रम तथा आयोजनाहरू सञ्चालन गरिनेछ । |
| ५. कृषि तथा पशुपन्छी पालनमा संलग्न कृषक, व्यावसायिक समूह, फार्म र सहकारी संघसंस्था समेतको सहकार्यमा ठूला क्षमताका बायोग्यास प्लान्ट स्थापना गरी एल.पी. ग्यासको प्रयोगलाई न्यूनीकरण गर्नुका साथै बायोस्लरीबाट प्राङ्गारिक मल उत्पादन गर्ने । | १. कृषि तथा पशुपन्छी फार्म/सहकारी र उद्योगहरूसँगको सहकार्यमा सो क्षेत्रबाट उत्पादित जैविक पदार्थ/फोहोरको उपयोग गरी ठूला क्षमताका बायोग्यास प्लान्ट प्रवर्द्धनको लागि कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

लघु तथा साना जलविद्युतबाट १३ मेगावाट, सौर्य विद्युत प्रणालीबाट १२७ मेगावाट र वायु ऊर्जाबाट १० मेगावाट विद्युत उत्पादन भई थप ५ प्रतिशत जनतालाई विद्युत सेवा पुगेको हुनेछ । २ लाख घरायसी बायोग्यास प्लान्ट र ५ लाख सुधारिएको चुलो र ग्यासीफायर (तापीय विद्युतीय प्रविधि) जडान भएको हुनेछ । प्रति वर्ष कम्तीमा २० हजार मेट्रिक टनका दरले बायोब्रिकेट पेलेटहरूको उत्पादन भएको हुनेछ । वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधिबाट २ हजार लघु, साना तथा मझौला उद्योगमा ऊर्जा उपलब्ध भएको हुनेछ । २ वटा थप कार्बन आयोजनाको बिकास गरी कार्बन व्यापारमार्फत आम्दानीको परिचालन भएको हुनेछ । ५ सय ठूला क्षमताका बायोग्यास प्लान्ट जडान भई बार्षिक ४० हजार मेट्रिक टन एल.पी. ग्यासको आयात प्रतिस्थापन भएको हुनेछ ।

#### ८.२ यातायात पूर्वाधार

मुलुकको आर्थिक-सामाजिक बिकासलाई गति प्रदान गर्न, सर्वसाधारको निर्वाध पहुँचका अतिरिक्त व्यापार, व्यवसाय तथा सेवालाई सहजीकरण गर्न यातायात क्षेत्रको अहम् भूमिका छ । यातायातको व्यवस्थित संजाल र प्रणालीको बिकासबाट मात्र सामाजिक आर्थिक एकीकरण र प्रादेशिक सन्तुलन कायम राख्न संभव छ । राष्ट्रिय बिकासको लागि समग्र क्षेत्रको सन्तुलित व्यवस्थापन आफैँमा एउटा चुनौती हो । यसका लागि यातायात क्षेत्र

अन्तरगतका उपक्षेत्रलाई प्राथमिकीकरण गर्दै विकास गर्नु आवश्यक छ । दीर्घकालीन सोच प्राप्तमा यातायातका क्षेत्रको अहम् भूमिका रहनेछ ।

आर्थिक वृद्धि र उन्नतिको सम्वाहकको रूपमा रहेको यातायात क्षेत्रले भौतिक तथा सामाजिक पूर्वाधारहरू जस्तै जलविद्युत, उद्योग, सञ्चार, पर्यटन, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा एवम् शहरी तथा ग्रामीण विकास आदिमा उल्लेखनीय योगदान दिँदै आएको छ । आर्थिक वृद्धिसँग बहुआयामिक रूपमा अन्तरसम्बन्धित रहेको यस क्षेत्रको विकासमा लगानी सुनिश्चित गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ । यस्तो अवस्थामा समग्र यातायात प्रणालीको प्रभावकारी विकासका लागि यस क्षेत्रमा हुने लगानी, लगानीको प्राथमिकीकरण, सुरक्षित यातायात सेवा, न्यूनतम ढुवानी खर्च तथा दिगो संरचना निर्माण तथा योजनाबद्ध मर्मत-सम्भार हुन जरूरी छ । यसका लागि आयोजनाको सही पहिचान, छनोट, कार्यान्वयन, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन हुने गरी कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्न आवश्यक देखिन्छ । सडक सञ्जाल विस्तार, हवाई यातायात, अन्तरदेशीय रेल, जल तथा अन्य यातायात समेतको अल्पकालीन र दीर्घकालीन सोचका साथ सहज, सुरक्षित तथा गुणस्तरीय यातायात सेवा प्रदान गर्ने कार्यका लागि एकीकृत यातायात प्रणालीको अध्ययन तथा विकास हुनु अपरिहार्य छ । विगतका आवधिक योजनाहरूदेखि नै यातायात क्षेत्रलाई उच्च प्राथमिकतामा राख्ने गरिएको सन्दर्भमा नेपालको आर्थिक-सामाजिक विकासमा महत्वपूर्ण भूमिका खेल्ने रणनीतिक महत्व भएका राष्ट्रिय लोकमार्ग र अन्तरदेशीय व्यापारिक नाका जोड्ने सडकहरू, रेलमार्ग तथा जलमार्ग निर्माण, सञ्चालन तथा व्यवस्थापन लगायतका कार्यहरूलाई यस योजना अवधिमा कार्यान्वयनको लागि विशेष जोड दिन आवश्यक रहेको छ । साथै, आगामी दिनमा यातायात पूर्वाधार विकास तथा व्यवस्थापनका कार्यमा वैकल्पिक इन्धनको प्रयोग खासगरी विद्युतीय उपयोगलाई प्रोत्साहन गर्दै वातावरणमैत्री प्रविधिको प्रयोग गर्न आवश्यक देखिन्छ ।

## ८.२.१ सडक

### १. पृष्ठभूमि

विगतमा भएका प्रयासबाट ७६ जिल्लाहरूमा राष्ट्रिय यातायात सञ्जालको पहुँच पुगेको छ । आ.व. २०७४/७५ सम्ममा रणनीतिक सडकको लम्वाई १३,४४८ कि.मि. रहेको छ, सोमध्ये ६,९७९ कि.मि. कालोपत्रे, २,२७७ कि.मि. ग्राभेल र ४,१९२ कि.मि. माटे सडक रहेको छ । रणनीतिक सडक मुलुकको कुल सडक लम्बाइको करिब १९ प्रतिशत हुन आउँछ र बाँकी ८१ प्रतिशत सडक स्थानीय सडक सञ्जाल अन्तर्गत रहेका छन् । वि.स. २०७५ को सर्वेक्षण तथ्याङ्कको आधारमा रणनीतिक सडकको अवस्था ४३ प्रतिशत राम्रो, ४२ प्रतिशत औसत र १५ प्रतिशत खराब रहेको छ । नेपालको संविधानले निर्दिष्ट गरे बमोजिम तहगत सरकारको अधीनमा रहन जाने सडक सञ्जालको विकास तथा विस्तारको जिम्मेवारी सम्बन्धित सरकारको मातहत रहने व्यवस्था गरिनेछ । संघले राष्ट्रिय यातायातको सडक सञ्जालमा प्रदेश र स्थानीय तहको भूमिका र कार्यक्षेत्रको निरूपण गरी समग्र क्षेत्रगत विकासको अवधारणा ल्याउनेछ । सातै प्रदेश भएर जाने मुलुकको मेरुदण्डको रूपमा रहेको पूर्व-पश्चिम लोकमार्ग (एसियन हाइवे) लाई पश्चिमी क्षेत्रमा प्रस्तावित सुख्खा बन्दरगाहसँग आबद्ध हुने गरी तथा उत्तर-दक्षिण सडक कोरिडोरहरू, अन्तरप्रदेश लोकमार्ग र संघीय

राजधानीसँग जोड्ने लोकमार्गहरू स्तरोन्नोति कार्यलाई प्राथमिकता दिइनेछ । संघीय ढाँचा अनुरूप राष्ट्रिय लोकमार्ग, प्रादेशिक लोकमार्ग तथा स्थानीय सडकबीच सन्तुलन कायम गर्ने गरी क्रमशः जिम्मेवारी हस्तान्तरण गर्दै जाने नीति अनुरूप यसबाट राष्ट्रको सर्वाङ्गिक विकासमा यातायात क्षेत्रको महत्वपूर्ण योगदान साबित हुनेछ । लगानीको स्रोत, भौगोलिक परिवेश, सवारी चापको प्रक्षेपण, मर्मत तथा सम्भारको थप दायित्व तथा प्रमाणित प्रविधिको प्रयोग गरी लोकमार्गलाई तोकिएको मापदण्ड बमोजिम निर्माण सम्पन्न गर्नु आजको आवश्यकता हो ।

## २. प्रमुख समस्या

यातायातका पूर्वाधारको अपेक्षित एकीकृत विकास नहुनु, मापदण्ड बिना आयोजना पहिचान तथा छनोट हुनु, आवश्यक पूर्वतयारी बिना आयोजना कार्यान्वयनमा लैजानु, निजी क्षेत्रको व्यवसायिक क्षमतामा समयानुकूल वृद्धि नहुनु, दक्ष श्रमिक तथा अन्य विषयगत जनशक्तिको उपलब्धतामा कमि रहनु र गुणस्तरीय निर्माण सामग्रीका साथै स्थानीय तहको क्षेत्राधिकारमा रहेको नदीजन्य निर्माण सामग्रीको सहज उपलब्धता हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन् । साथै, बजेटको विनियोजन र सञ्चालन कुशलताको अभाव हुनु, संस्थागत, व्यवस्थापकीय तथा प्राविधिक संसाधन क्षमतामा अपेक्षाकृत वृद्धि नहुनु, सडकप्रति सर्वसाधारणको अपनत्व अपेक्षाकृत नहुनु, आयोजना व्यवस्थापनमा सुशासन कायम राख्न गर्नु पर्ने उपायहरूको अबलम्बन नहुनु, ठेक्का व्यवस्थापनमा पर्याप्त कमजोरी रहनु, सडक लम्बाइ वृद्धिका साथै मर्मत-सम्भारको दायित्व वृद्धि भएअनुरूप स्रोत व्यवस्थापन नहुनु, जग्गा अधिग्रहण कार्यमा अन्तरनिकाय समन्वयको अभाव रहनु, राष्ट्रिय लोकमार्गहरूको सीमा अतिक्रमण बढ्नु, सडक विस्तारमा सडक सीमा विवाद तथा मुआब्जाको लागि स्थानीय जनताबाट अवरोध हुनु र अनुगमन र मूल्याङ्कनलाई नतिजासँग आबद्ध गर्न नसक्नु लगायतका समस्या समेत विद्यमान छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

सीमित लगानीका कारण सडक पूर्वाधार निर्माण कार्यमा अपनाइने प्रविधि, लागत र गुणस्तरमा सन्तुलन कायम गर्नु, चुनौतीपूर्ण भौगर्भिक-भौगोलिक अवस्था रहनु, सानातिना आयोजना कार्यान्वयन गर्नुपर्ने दवावका कारण प्राथमिकता प्राप्त योजना तथा रणनीतिक गुरुयोजनाले पहिचान गरेका आयोजनाहरूमा मात्र लगानी केन्द्रित गर्नु, आयोजना बैंकको अवधारणालाई कार्यान्वयनमा ल्याउनु, सार्वजनिक-निजी-साझेदारी मार्फत लगानी आकर्षित गर्नु, तीन तहका सरकारहरूले निर्माण गर्ने सडक पूर्वाधारहरू परिपुरक हुने गरी निर्माण गर्नु, संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्नु, सन्तुलित, सुरक्षित, दिगो, वातावरणमैत्री र गुणस्तरीय सडक पूर्वाधार निर्माण गर्नु, निर्मित सडक संरचनाहरूको मर्मत-सम्भार र सम्पत्ति सुरक्षाका लागि सबै पक्षहरूको पर्याप्त ध्यान तथा लगानी सुनिश्चित गर्नु, प्राकृतिक प्रकोप एवम् जलवायु परिवर्तनको अनुकूलतालाई समेत ध्यानमा राखी सडक संरचना निर्माण गर्नु, अन्तर निकायबीच भौतिक पूर्वाधारको योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन तथा सञ्चालन सम्बन्धमा आवश्यक समन्वय कायम गर्नु, आयोजनाको पूर्व-तयारीका सम्पूर्ण चरणहरू पूरा गरी कार्यान्वयनमा लैजानु, निजी क्षेत्रको व्यवसायिक क्षमतामा वृद्धि गर्नु र निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षण गर्नु प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन् ।

नेपालको संविधानले विभिन्न तहका सरकारको सडक सञ्जालहरूको जिम्मेवारी तोकिनु, सरकारको दीर्घकालीन सोचमा सडक सञ्जालको विकास एवम् सुदृढीकरण उच्च प्राथमिकतामा रहनु, राष्ट्रिय लोकमार्गको सञ्जाल व्यवसायिक रूपमा व्यवस्थापन गर्नु, निजी क्षेत्र र द्विपक्षीय तथा बहु-पक्षीय विकास साझेदारहरूबाट सडक पूर्वाधार लगानीमा चासो रहनु र तीन तहका सरकारहरूको सहकार्यमा सडक सम्पत्ति संरक्षण तथा पूर्वाधार निर्माण गर्न सहज हुनु सडक क्षेत्रको अवसरको रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

सघन, सन्तुलित, सुलभ, सुरक्षित, गुणस्तरीय एवम् दिगो सडक पूर्वाधारको विकास ।

##### ४.२ लक्ष्य

राष्ट्रिय सडक सञ्जालको विस्तार गरी आर्थिक-सामाजिक विकास, व्यापार सहजीकरण मार्फत आर्थिक समृद्धि हासिल गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

- कुल यातायात खर्च न्यूनतम हुने गरी सडक सञ्जालको सन्तुलित विकास तथा विस्तार गर्नु ।
- सडक पूर्वाधारहरूको उचित संरक्षण, मर्मत-सम्भार र सडक सुरक्षा गरी सहज सवारी आवागमन सुनिश्चित गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. प्रादेशिक सन्तुलन समेत कायम हुने गरी उच्च क्षमताका द्रुतमार्ग, भूमिगत मार्ग, भाया-डक्ट लगायतका आधुनिक संरचना सहितको गुरुयोजनामा आधारित सडक सञ्जालको विकास गर्ने । | १. सडकले भार वहन गर्ने क्षमता, सवारी चाप र योगदान लगायत विभिन्न मापदण्डका आधारमा राष्ट्रिय लोकमार्गको वर्गीकरण गरी दीर्घकालीन गुरुयोजना तयार गरिनेछ ।<br>२. राष्ट्रिय लोकमार्ग, प्रादेशिक लोकमार्ग, शहरी सडक, स्थानीय तथा ग्रामीण सडकको वर्गीकरण तथा मापदण्ड तयार गरिनेछ ।<br>३. आयोजना बैँकको संलग्नतामा राष्ट्रिय लोकमार्गमा थप लगानीका अवसरहरू वृद्धि गरिनेछ ।<br>४. जग्गा अधिग्रहण, सडक क्षेत्राधिकार (Right of Way), रेखाङ्कन, वन क्षेत्र प्रयोग स्वीकृति लगायत पूर्व तयारीका कार्यहरूको विस्तृत कार्य-योजना तयारी पश्चात योजना कार्यान्वयन अगाडि बढाइनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>५. पूर्व-पश्चिम लोकमार्गलाई एसियन हाईवेको मापदण्डमा स्तरोन्नति गर्नुका साथै अन्तर प्रादेशिक लोकमार्गलाई सवारी चापका आधारमा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>६. सडक सञ्जाल विकासमा पछाडि परेका कर्णाली तथा सुदूर पश्चिम प्रदेशका उत्तर-दक्षिण लोकमार्गलाई आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रिय आबद्धता हुने गरी सवारी चापका आधारमा विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>७. स्थानीय तहका केन्द्रसम्म सडक पहुँच विस्तार र सुदृढ गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>८. सडक विकास तथा विस्तारमा प्रादेशिक सन्तुलन कायम, आर्थिक केन्द्र, पर्यटकीय गन्तव्य लगायतका विषयलाई ध्यान दिइनेछ ।</p> <p>९. यात्रा अवधि छोट्याउनका लागि राष्ट्रिय रणनीतिक सडक सञ्जालको विकास तथा विस्तार कार्यमा शहरी क्षेत्रमा फ्लाई-ओभर पुल तथा अन्डर-पास र मुख्य-मुख्य लोकमार्गहरूमा भूमिगत मार्ग तथा भायाडक्टहरूको प्रयोग गरी प्रभावकारी आवागमन हुने खालका आधुनिक सडक पूर्वाधार विकास गर्ने कार्य शुरु गरिनेछ ।</p> <p>१०. सवारी चाप बढी हुने सडक सञ्जालहरूमा आधुनिक सूचना-प्रविधिमा आधारित इन्टेलिजेन्ट ट्रान्सपोर्ट सिस्टमका आवश्यक पूर्वाधारको विस्तृत योजना सहित निर्माण शुरु गरिनेछ ।</p> |
| <p>२. संस्थागत क्षमताको विकासलाई उच्च प्राथमिकता दिई आधुनिक प्रविधिको अधिकतम उपयोग गर्ने ।</p> | <p>१. राष्ट्रिय लोकमार्ग निर्माणका कार्यमा अन्य पूर्वाधार निर्माण क्षेत्रसँग समन्वय गरिनेछ ।</p> <p>२. सडक उप-क्षेत्रसँग सम्बद्ध जनशक्तिलाई व्यवहारिक दक्षता हासिल हुने गरी विस्तृत र गुणस्तरीय तालिम प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>३. वैदेशिक सहायतामा सञ्चालन हुने आयोजनाहरूमा सडक-क्षेत्र सम्बद्ध निकायको आन्तरिक जनशक्तिको अधिकतम संलग्नता गरी ज्ञान, सीप तथा प्रविधि हस्तान्तरण गराइनेछ ।</p> <p>४. कानूनमा आवश्यक संशोधन, नीतिगत व्यवस्थामा परिमार्जन लगायतका कार्य उच्च प्राथमिकताका साथ गरिनेछ ।</p> <p>५. पूर्वाधार निर्माणसँग संलग्न निजी क्षेत्रको संस्थागत क्षमता विकास गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ३. परम्परागत सरकारी स्रोतमाथिको निर्भरता घटाई लगानीका वैकल्पिक स्रोतहरू जुटाउने।                                   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ठूला लागतका राष्ट्रिय लोकमार्ग तथा अन्तर प्रदेश सडक-पूर्वाधार संरचना निर्माणमा सार्वजनिक-निजी साझेदारी, ई.पी.सि., डिजाईन-बिल्ट जस्ता आधुनिक करार सम्झौता अबलम्बन गरी गुणस्तरमा सुनिश्चितता कायम गर्ने कार्य अगाडि बढाइनेछ।</li> <li>२. सडक पूर्वाधारको संरक्षण र संवर्द्धनको लागि सडक प्रयोगकर्तालाई समेत सहभागी गराई स्रोत व्यवस्थापन गरिनेछ।</li> <li>३. वित्तीय स्रोत व्यवस्थापनमा लगानीका वैकल्पिक स्रोतहरू जुटाई परम्परागत सरकारी स्रोतमाथिको निर्भरता घटाइनेछ।</li> </ol>  |
| ४. सडकको डिजाइन, निर्माण, मर्मत-सम्भार तथा सडक सुरक्षाका लागि आधुनिक प्रविधिको उपयोग तथा यान्त्रिकीकरणमा जोड दिने। | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. सडक सम्भार कार्यको मापदण्ड तथा तहगत जिम्मेवारी तोकी सोहि अनुरूप मर्मत-सम्भार कार्यको नियमित अनुगमन गरिनेछ।</li> <li>२. संलग्न संस्थागत संरचनाको पुनरावलोकन गरी उपयोगकर्ताप्रति उत्तरदायी आवश्यक संस्थागत सुधार गरिनेछ।</li> <li>३. सडक पूर्वाधारको विकास, विस्तार, मर्मत-सम्भार तथा सञ्चालनसँग सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचनाहरूको पहुँचमा सहजता ल्याई संस्थागत कार्य-प्रभावकारितालाई आधुनिक स्तरको बनाउनका लागि सूचना-प्रविधिको अधिकतम प्रयोग गरी पूर्ण-स्वचालित विद्युतीय पद्धतिको विकास गरिनेछ।</li> <li>४. बायो-इन्जिनियरिंग लगायतका उपयुक्त पद्धतिलाई सतही भू-क्षय नियन्त्रण कार्यमा प्रभावकारी ढंगले लागु गरिनेछ।</li> <li>५. दुर्घटना न्यूनीकरण तथा सुरक्षित राष्ट्रिय रणनीतिक सडक सञ्जालको लागि डिजाईन तथा निर्माणका विभिन्न चरणमा सडक सुरक्षा जाँचको व्यवस्था गरिनेछ।</li> <li>६. सडक बोर्ड मार्फत सडक सम्भारको लागि स्रोत जुटाउने कार्यलाई व्यवस्थित बनाइनेछ।</li> </ol> |
| ५. प्राकृतिक प्रकोप तथा जलवायु प्रतिकूलताका कारण हुनसक्ने सम्भाव्य असर वा हानी नोक्सानीलाई न्यूनीकरण गर्ने।        | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. पहिरो तथा आकस्मिक दुर्घटनाको कारण सडक बन्द हुने समयावधिलाई न्यूनतम राख्न वैकल्पिक उपायहरू अबलम्बन गरिनेछ।</li> <li>२. प्राकृतिक प्रकोप तथा जलवायु प्रतिकूलताका कारण हुन सक्ने असर तथा नोक्सानीलाई न्यूनीकरण गर्न सडक तथा पुल डिजाईन तथा निर्माणमा विशेष सतर्कता अपनाइनेछ।</li> </ol>   |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा ३० मिनेटसम्मको दूरीमा यातायात पहुँच भएका परिवार ७८.९ प्रतिशतबाट ९५ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । सवारी चापको आधारमा थप ८ हजार कि.मि. राष्ट्रिय लोकमार्ग स्तरोन्नति भई १५ हजार कि.मि. राष्ट्रिय लोकमार्ग कालोपत्रे भएको हुनेछ । ७६ कि.मि. द्रुतमार्ग निर्माण भएको हुनेछ । हुलाकी सडक सञ्जाल, मध्यपहाडी लोकमार्ग, उत्तर-दक्षिण लोकमार्ग (कर्णाली, कालिगण्डकी र कोशी कोरिडोर) र मदन भण्डारी लोकमार्गको दुई लेनमा कालोपत्रे गरि सकिएको हुनेछ । रणनीतिक सडकमा २०० वटा र स्थानीय सडकमा १,२५० वटा निर्माणाधीन पक्की पुलहरूको निर्माण कार्य सम्पन्न भएको हुनेछ । राष्ट्रिय लोकमार्ग, प्रदेश लोकमार्ग र स्थानीय सडक सञ्जालको मापदण्ड तयार भई कार्यान्वयन भएको हुनेछ । राष्ट्रिय लोकमार्ग तथा पुलहरूको नियमित, पटके र आवधिक मर्मत तोकिएको अवधि भित्रै सम्पन्न गर्ने गरि व्यवस्थित भएको हुनेछ । हुम्ला जिल्ला सदरमुकाम राष्ट्रिय सडक सञ्जालले जोडिएको हुनेछ भने मुस्ताङ्ग, मनाङ्ग, मुगु, हुम्ला र डोल्पा सदरमुकामसम्म पुग्ने सडक कालोपत्रे गरिएको हुनेछ । सबै स्थानीय तहका केन्द्रहरू राष्ट्रिय यातायात प्रणालीसँग जोडिएको हुनेछ ।

## ८.२.२ हवाई यातायात

### १. पृष्ठभूमि

अन्तर्राष्ट्रिय तथा क्षेत्रीय यातायात आबद्धताका लागि द्रुत र भरपर्दो साधनको रूपमा हवाई यातायातलाई लिइन्छ । नेपालको विशिष्ट भू-राजनीतिक अवस्थितिको कारण विश्व बजारमा प्रत्यक्ष पहुँच कायम गर्न हवाई सेवाको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । भौगोलिक विविधताले आन्तरिक हवाई सेवा अझ अपरिहार्य तुल्याएको अवस्था छ । सुरक्षित, विश्वसनीय र सर्वसुलभ नागरिक उड्डयन सेवाको लागि आधुनिक प्रविधियुक्त पूर्वाधार, राष्ट्रिय ध्वजाबाहक नेपाल वायुसेवा निगमको चुस्त व्यवस्थापन र यस क्षेत्रको प्रभावकारी नियमन अनिवार्य पक्षहरू हुन् ।

हाल अन्तर्राष्ट्रिय उडान गर्ने वायुसेवाको संख्या २८, आन्तरिक उडान गर्ने वायुसेवाको संख्या २० र द्विपक्षीय हवाई सेवा सम्झौता भएका देशको संख्या ३९ पुगेको छ । वर्षैभरी सञ्चालनमा आउने विमानस्थलको संख्या २९ पुगेको छ । त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको व्यवस्थापकीय सुधार गरी दैनिक २२ घण्टा सञ्चालनमा ल्याइएको छ ।

### २. प्रमुख समस्या

नागरिक उड्डयनका लागि आवश्यक पर्ने आधुनिक प्रविधि एवम् पूर्वाधारको अपर्याप्तता हुनु, उडान सुरक्षा नियमनको क्षेत्रमा दक्ष जनशक्ति अपर्याप्त रहनु, प्राविधिक तथा व्यवस्थापकीय क्षमताको कमी हुनु, अन्तर्राष्ट्रिय हवाई सेवाको अपेक्षाकृत विस्तार हुन नसक्नु, नेपाल वायुसेवा निगमको व्यवसायिक कार्यकुशलता कम हुनु, हवाई चाप बमोजिम विमानस्थल पूर्वाधार तथा प्रविधि अपर्याप्त हुनु, बजारको माग र आवश्यकता बमोजिम आन्तरिक तथा बाह्य उडानका लागि पर्याप्त संख्यामा विमान नहुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

अन्तर्राष्ट्रिय हवाई सेवाको लागि नेपाल प्रवेश गर्ने सहज मार्गहरूको विस्तार गर्नु, सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा विमानस्थलको विकास, विस्तार र व्यवस्थापन गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय तथा आन्तरिक विमानस्थललाई आर्थिक रूपले सक्षम हुने गरी सञ्चालन गर्नु र नेपाल वायुसेवा कम्पनीलाई पूर्ण व्यवसायिक रूपमा सञ्चालन गरी अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा यसको हिस्सा उल्लेख्य वृद्धि गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

अन्तर्राष्ट्रिय नागरिक उड्डयन संगठनले नेपाललाई गम्भीर उड्डयन सुरक्षा चासोको सूचीबाट हटाउनु, त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको क्षमता अभिवृद्धि भई चौबिसै घण्टा सञ्चालनमा ल्याउन सम्पूर्ण तयारी पुरा हुनु, गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको निर्माण कार्य अन्तिम चरणमा पुग्नु, पोखरा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल निर्माण कार्य शुरू हुनु, निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल निर्माणको तयारी हुनु र वायुसेवा कम्पनीहरू यस क्षेत्रमा आकर्षित हुनु जस्ता अवसर रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ दीर्घकालीन सोच

सुरक्षित, विश्वसनीय र सर्वसुलभ हवाई यातायात सेवाको सुनिश्चितता।

#### ४.२ लक्ष्य

नागरिक उड्डयन सेवा र सुरक्षालाई अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूप सञ्चालन तथा सुनिश्चित गरी हवाई यातायातको पहुँच अभिवृद्धि गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गन्तव्य संजाल विस्तार गरी नागरिक उड्डयन क्षेत्रलाई सर्वसुलभ, पहुँचयोग्य र सुरक्षित बनाउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. हवाई पूर्वाधारहरूको निर्माण, विकास तथा व्यवस्थापनमा सरकार र निजी क्षेत्रको साझेदारी र सहकार्यलाई प्रोत्साहन गर्ने। | १. विमानस्थल निर्माण, व्यवस्थापन र सञ्चालनमा निजी क्षेत्रको सहभागिता अभिवृद्धि गरिनेछ।<br>२. नेपाल वायुसेवा निगमको व्यवस्थापनलाई चुस्त, दुरुस्त र प्रतिस्पर्धी बनाउन रणनीतिक साझेदार भित्र्याइनेछ।<br>३. गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल र पोखरा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको निर्माण कार्य समयमै सम्पन्न गरी सञ्चालनमा ल्याइनेछ। |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>४. त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलमा आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रिय हवाई यातायात सेवाको बढ्दो ट्राफिक चापलाई दृष्टिगत गरी पूर्वाधार विकास तथा विस्तारका साथै क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>५. निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको निर्माण कार्यलाई तिव्रताका साथ अगाडी बढाइनेछ ।</p> <p>६. थप क्षेत्रीय विमानस्थल सम्बन्धी कार्यलाई अध्ययनका आधारमा अघि बढाइनेछ ।</p> <p>७. नियमित उडान हुन नसकेका विमानस्थलहरूमा उपयुक्त उड्डयन क्रियाकलापलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>८. बाह्य तथा आन्तरिक पर्यटन र मागको प्रक्षेपणका आधारमा नेपाल वायु सेवा निगमका विमानको संख्या बढाईने साथै प्रभावकारी सेवा प्रदायक निजी क्षेत्रका हवाई सेवा कम्पनीहरूलाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>९. आन्तरिक विमानस्थलको स्तरोन्नति गरी हवाई उडानलाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>१०. दुर्गम क्षेत्र हवाई विकास कोषलाई प्रभावकारी ढंगबाट परिचालन गरी दुर्गम क्षेत्रहरूमा हवाई यातायातलाई नियमित र सर्वसाधारणको पहुँचयोग्य बनाईनेछ ।</p> <p>११. स्थानीय तहको सहकार्यमा सबै वडामा एउटा हेलीप्याड निर्माण गरिनेछ ।</p> |
| <p>२. सुरक्षा प्रावधान सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्डको अवलम्बन र नवीन प्रविधिको उच्चतम उपयोग गरी हवाई सेवालाई थप सुरक्षित, गुणस्तरीय र विश्वसनीय बनाउने ।</p> | <p>१. हवाई सेवालाई सुरक्षित बनाउन विमानस्थलहरूमा आधुनिक उड्डयन सहायक उपकरणको व्यवस्था गरिनेछ । साथै विमानहरूको उडान सुरक्षा अनुगमन र जाँच प्रणालीलाई अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुकूल बनाइनेछ ।</p> <p>२. हवाई दुर्घटना जाँच कार्यलाई व्यवस्थित, प्रभावकारी र थप बैज्ञानिक बनाउनका लागि स्थायी र स्वतन्त्र संयन्त्रको स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>३. सामाजिक एवम् पर्यटकीय रूपले महत्त्वपूर्ण विमानस्थलहरू बाह्रै महिना सञ्चालनयोग्य हुने गरी स्तरोन्नति गरिनेछ ।</p> <p>४. आन्तरिक उडानमा हाल कायम रहेको यात्रु बिमा सीमालाई पुनरावलोकन गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ३. हवाई उड्डयन सेवा र हवाई उड्डयन नियमनका लागि नियामक निकायको संरचनात्मक सुदृढीकरण गर्ने ।  | १. नेपाल वायु सेवा निगमको संस्थागत सुदृढीकरण गरी सञ्चालनमा व्यवसायीकता तथा कार्यकुशलता अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>२. अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता र राष्ट्रिय आवश्यकतालाई मध्यनजर गर्दै नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरणलाई पुनर्संरचना गरी सेवाप्रदायक र नियामक गरी दुई छुट्टाछुट्टै निकायको व्यवस्था गर्न नेपाल नागरिक उड्डयन ऐन तर्जुमा गरिनेछ ।                        |
| ४. सेवा प्रदायक निकायहरूलाई सक्षम, प्रतिस्पर्धी र प्रभावकारी बनाई हवाई सेवालाई सर्वसुलभ बनाउने ।                                      | १. प्रदेश राजधानीका सबै विमानस्थलमा अन्तरआबद्धताका लागि हवाई सेवा सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. नागरिक उड्डयन प्राधिकरणको नियमन क्षमता अभिवृद्धि गरी हवाई सेवालाई विश्वसनीय र सर्वसुलभ बनाइनेछ ।<br>३. लागत उठ्ने अवस्थामा आन्तरिक उडानमा थप सिट क्षमताका जहाज सञ्चालनमा ल्याउन प्रोत्साहित गरिनेछ । वायुसेवा कम्पनीलाई काठमाडौं बाहिर उडान गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ । |
| ५. हवाई सम्झौता र हवाई मार्ग विस्तार र बजार प्रवर्द्धन गरी नेपाली वायुसेवा कम्पनीहरूलाई अन्तर्राष्ट्रिय बजारसम्म पहुँच वृद्धि गर्ने । | १. राष्ट्रिय हवाई सेवा सम्झौता रणनीति तर्जुमा गरी नयाँ गन्तव्य राष्ट्रहरूसँग हवाई सेवा सम्झौता गरिनेछ ।<br>२. हवाई सम्झौता भएका तर नेपाली वायुसेवा कम्पनीको उडान नभएका मुलुकहरूमा कूटनैतिक तथा व्यावसायिक संयन्त्र समेतको पहलमा अन्तर्राष्ट्रिय बजारको पहुँच वृद्धि गरिनेछ ।  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल र पोखरा अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको निर्माण सम्पन्न भई सञ्चालनमा आएको हुने, निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको निर्माण कार्य प्रारम्भ भएको हुने, त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको स्तरोन्नति कार्य सम्पन्न भई क्षमता अभिवृद्धि भएको हुनेछ । द्विपक्षीय हवाई सेवा सम्झौता भएका देशहरूको संख्या ३९ बाट ४३ पुगेको हुने, हवाई सुरक्षा अभिवृद्धि भएको हुने, सबै मौसममा सञ्चालन हुने विमानस्थलको संख्या ३९ पुगेको हुने, आन्तरिक उडान गर्ने वायुसेवाहरूको संख्या १८ बाट २५ पुगेको हुने र नेपाल आउने विदेशी विमान कम्पनी ३३ वटा र हवाई सिटको सङ्ख्या (B757 को सिट क्षमताको आधारमा) वार्षिक १ करोड पुगेको हुनेछ ।

## ८.२.३ रेल यातायात

### १. पृष्ठभूमि

मुलुकको समग्र आर्थिक, सामाजिक विकासमा यातायात क्षेत्रले खेलेको भूमिकालाई एकीकृत यातायात प्रणालीको अवधारणा अनुरूप सञ्चालन गर्ने उद्देश्यका साथ रेल यातायात विकासमा जोड दिइएको छ। लामो दुरीको मालसमान ढुवानी तथा यात्रुसेवा सञ्चालन गर्दा रेल यातायात तुलनात्मक रूपमा सडक यातायात भन्दा सस्तो पर्न जाने हुँदा रेल यातायातलाई दीर्घकालीन सोचका साथ विकास गर्नु जरूरी देखिएको छ। छिमेकी मुलुकबीच बढ्दो व्यापारलाई मध्यनजर राखी दीर्घकालीन रूपमा नेपालको रेल सेवा मार्फत छिमेकी मुलुकसँगको व्यापार ढुवानीमा सहजता आई आर्थिक विकासले ठूलो फड्को मार्ने देखिन्छ। देशमा रेलमार्ग विकास तथा विस्तारले पर्यटन विकास लगायत उद्योग, निकासी व्यापार वृद्धिमा समेत योगदान गर्दछ। रेल सेवाको महत्त्वलाई ध्यान दिई विभिन्न विकल्पको सम्भाव्यता अध्ययन गर्ने र राष्ट्रिय सीमाका व्यापारिक केन्द्रसम्म रेल सेवाले जोडने कार्यलाई प्राथमिकतामा राख्न जरूरी छ। रेल यातायात विकासको लागि ठूलो मात्रामा लगानी आवश्यक पर्ने हुँदा लगानीका स्रोतको पहिचान गरी आकर्षित गर्न आवश्यक छ।

### २. प्रमुख समस्या

रेल यातायात निर्माण र सञ्चालनको लागि नीतिगत, कानुनी तथा रेल सेवा सञ्चालनका मापदण्डको व्यवस्था नहुनु, सम्भाव्यता अध्ययन भएका रेलमार्गको रेखाङ्कनमा पर्ने जग्गाको अधिग्रहण तथा मुआब्जा निर्धारणमा कठिनाई हुनु, रेल्वे सम्बन्धी दक्ष जनशक्तिको अभाव हुनु र आवश्यक लगानी आकर्षण र प्रोत्साहनका लागि कार्ययोजनाको अभाव प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

रेलमार्ग निर्माणमा उपलब्ध स्रोत र लागत सन्तुलन कायम गर्नु, प्रस्तावित पूर्व-पश्चिम रेलमार्गको समानान्तर रूपमा पूर्व-पश्चिम लोकमार्ग र हुलाकी लोकमार्ग भएको कारण लगानीलाई प्रभावकारी बनाउनु, रेल तथा यातायात सेवामा वैकल्पिक लगानीका स्रोतलाई आकर्षित गर्नु, रेल सेवाको प्रभावकारी सञ्चालनका लागि दक्ष जनशक्तिको व्यवस्थापन गर्नु र रेल सेवाको प्रभावकारी व्यवस्थापन गर्नु चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

रेल सेवा विकास र विस्तार राज्यको उच्च प्राथमिकतामा रहनु, मेट्रो तथा मोनोरेल निर्माणको लागि विदेशी लगानीकर्ता आकर्षित हुने सम्भावना रहनु, आन्तरिक जलविद्युत उत्पादन वृद्धिले विद्युतीय रेल सञ्चालन गर्न सहज वातावरण तयार हुनु र अन्तरदेशीय रेलमार्ग विकासका लागि छिमेकी मुलुकहरूको सकारात्मक चासो रहनु अवसरको रूपमा रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

भरपर्दो, सुरक्षित, पहुँचयोग्य, वातावरणमैत्री रेल यातायात प्रणालीको विकास।

## ४.२ लक्ष्य

सुरक्षित, भरपर्दो र पर्यावरणमैत्री राष्ट्रिय रेल सञ्जाल निर्माण गरी सामाजिक, आर्थिक र भौगोलिक विकासमा सन्तुलन कायम गर्ने ।

## ४.३ उद्देश्य

१. रेल यातायात सुविधा विस्तार गरी अन्तरदेशीय व्यापार सम्बन्ध पहुँचमा विस्तार बढाउँदै आर्थिक सामाजिक एकीकरणमा योगदान गर्नु ।
२. भौगोलिक सन्तुलन र विकासमा योगदान पुग्ने गरी भरपर्दो र सुरक्षित रेलसेवा सञ्चालन गर्नु ।

## ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. रेलमार्गको सम्भाव्यता अध्ययन गरी राष्ट्रिय आवश्यकता पहिचान, विकास र विस्तार गर्ने ।           | १. गुरुयोजनामा आधारित रेलमार्गको राष्ट्रिय रणनीतिक संजालको निर्धारण गरिनेछ ।<br>२. सम्भाव्यता अध्ययनको आधारमा आयोजना बैंकमा सूचीकृत गरिए अनुसार रेलमार्ग निर्माण र विस्तार गरिनेछ ।   |
| २. रेल विभागको संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्ने ।   | १. रेलसेवा सञ्चालन गर्न आवश्यक कानुनी एवम् नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. रेलमार्ग निर्माण, सञ्चालन तथा अन्य व्यवस्थापकीय सेवासँग सम्बन्धित जनशक्तिको क्षमता विकास गरिनेछ ।   |
| ३. रेल यातायातको पूर्वाधार विकास तथा सञ्चालनमा लगानीका भरपर्दा वैकल्पिक स्रोत प्रवर्द्धन गर्ने । | १. काठमाण्डौ उपत्यका लगायत सम्भाव्य अन्य शहरी क्षेत्रमा मेट्रो तथा मोनो रेलसेवा सञ्चालनको लागि विस्तृत आयोजना प्रतिवेदन तयार गरी निर्माण कार्य अगाडि बढाउन निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्ने कार्य अगाडि बढाइनेछ ।<br>२. रेलमार्गको निर्माण र सञ्चालनमा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्दै ठेक्का व्यवस्थापनका नवीनतम विधि अवलम्बन गरिनेछ । |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

पूर्व-पश्चिम रेलमार्गको विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तयार भएको हुने, जग्गा प्राप्ति लगायत आयोजना पूर्व तयारी पूरा भएको हुने र बर्दिबास-निजगढ-वीरगञ्ज खण्डको २०० कि.मि. रेलमार्ग निर्माण भई सञ्चालन भएको हुनेछ । निर्माणाधीन जयनगर-जनकपुर-बर्दिबास, बथनाहा-विराटनगर-कटहरी, जलपाइगुडी-काँकडभिट्टा, नौतनवा-भैरहवा, नेपालगञ्ज रोड-नेपालगञ्ज रेलमार्गको निर्माण भई रेलसेवा सञ्चालन भएको हुनेछ । वीरगञ्ज-काठमाडौं, रसुवागढी-काठमाण्डौ, काठमाण्डौ-पोखरा-लुम्बिनी रेलमार्गको विस्तृत आयोजना प्रतिवेदन तथा लगानीको प्रारूप तयार भएको

हुनेछ। काठमाडौं उपत्यकाभित्र ७२ कि.मि. मेट्रो रेल निर्माण सम्बन्धी विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तयार भएको हुनेछ।

## ८.२.४ जल यातायात

### १. पृष्ठभूमि

मुलुकभित्र जलस्रोत उपयोगको अपार सम्भावना रहेको सन्दर्भमा जलयातायातको पहिचानले यातायात क्षेत्रको समग्र विकासमा एउटा नयाँ आयाम थपेको छ। यसले जल यातायातलाई अन्य यातायात सेवासँग परिपुरक हुने गरी विकास गर्नुपर्ने देखिन्छ। नेपालमा आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय यातायात सञ्चालनमा जल यातायात दरिलो विकल्पको रूपमा विकास हुनसक्ने देखिन्छ। तेस्रो मुलुकहरूसँग गर्ने वैदेशिक व्यापारका लागि जल यातायात सञ्चालनको माध्यमबाट समुद्रसम्मको पहुँचमा सहजता आउने, नेपालमा दर्ता भएका व्यापारिक पानी जहाज समुन्द्रमा सञ्चालन गर्दा नेपालमा आयात हुने र नेपालबाट निर्यात हुने सामानहरूको ढुवानी अझ सुरक्षित, सहज, भरपर्दो र व्यवस्थित हुन सक्ने र ढुवानी मूल्य घट्न जाने थप सम्भावनाहरू देखापरेका छन्। सुरक्षित, सहज, भरपर्दो र व्यवस्थित जल यातायातको सञ्चालनले देशको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमतामा बृद्धि हुने, व्यवसाय खर्चमा कमी आउने, रोजगारीमा वृद्धि हुने, आन्तरिक पर्यटनमा सघाउ पुग्नुका साथै कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सकारात्मक योगदान पुग्न सक्ने देखिन्छ।

### २. प्रमुख समस्या

जल यातायात सम्बन्धी अनुभव तथा दक्ष जनशक्ति पर्याप्त नहुनु, वर्षा याममा हुने पानीको अत्यधिक बहाव र हिउँदमा पानीको सतह न्यून हुँदै जानु, आवश्यक पूर्वाधारको अभाव रहनु र आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय समन्वय गर्न जटिल हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

सुरक्षित, सहज, भरपर्दो र व्यवस्थित जल यातायात सञ्चालनको लागि नीतिगत व्यवस्था तथा अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि, अभिसन्धि, सम्झौता तथा मापदण्डअनुरूप जल यातायात सञ्चालन हुने गरी आवश्यक कानून निर्माण गर्नु, पूर्वाधार निर्माणको लागि लगानी जुटाउनु, नदीको भिरालोपना, उपयुक्त संस्थागत संरचनाको विकास गर्नु, आवश्यक प्रविधि र जनशक्तिको उत्पादन तथा व्यवस्थापन गर्नु मुख्य चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

समुद्रमा नेपाली पानी जहाज सञ्चालन गर्न अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिले अधिकार प्रदत्त गरेको अवस्था विद्यमान रहनु, छिमेकी मुलुकहरूले आ-आफ्नो आन्तरिक जलमार्ग प्रवर्द्धन गर्न प्राथमिकताका साथ काम अगाडि बढाउनु, क्षेत्रीयस्तरमा जल यातायात सञ्जाल कायम गर्न इच्छुक रहनु, कोशी, गण्डकी र कर्णाली नदीमा जलयातायात विकासको सम्भावना रहनु, नेपालको समुद्रसम्म पहुँचको लागि वैकल्पिक यातायात विकासको सम्भावनाकाको रूपमा रहनु, पानी जहाज व्यवसाय सञ्चालन गर्न नेपाली लगानीकर्ता इच्छुक देखिनु र पर्यटकीय जलयात्राको उच्च सम्भावना रहनु प्रमुख अवसर हुन्।

## ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, र कार्यनीति

### ४.१ सोच

सुलभ र किफायती यातायातको भरपर्दो विकल्पको रूपमा जल यातायातको विकास ।

### ४.२ लक्ष्य

आन्तरिक र समुद्रसम्म जल यातायातको विकास मार्फत पर्यटन प्रवर्द्धन एवम् व्यापार सहजीकरण गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

आन्तरिक, क्षेत्रीय र अन्तर्राष्ट्रिय जलमार्गको प्रयोग गरी देशको उद्योग, व्यापार तथा पर्यटन लगायत राष्ट्रिय अर्थतन्त्रका अन्य आयाममा सकारात्मक योगदान पुऱ्याउनु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. आन्तरिक तथा समुद्रसम्म पहुँचका लागि जल यातायातको विकास र विस्तार गर्ने ।                             | १. सम्भाव्यता अध्ययनको आधारमा जल यातायातको विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।<br>२. समुद्रसम्मको पहुँचको लागि जल यातायातको आवश्यक पूर्वाधार निर्माण गर्न द्विपक्षीय तथा बहु-पक्षीय समझदारी गरिनेछ ।<br>३. पर्यटकीय जलविहारसँग आबद्ध हुने गरी आन्तरिक जल यातायात पूर्वाधार तयार गरिनेछ ।   |
| २. जल यातायात सेवा विकासको लागि निजी एवम् अन्य क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्ने ।                          | १. जल यातायात सञ्चालन विकास तथा सेवा बिस्तारका लागि निजी क्षेत्रलाई प्राथमिकता दिईनेछ ।<br>२. सार्वजनिक-निजी-साझेदारी अन्तर्गत जलयातायात विकासका लागि आवश्यक स्रोत जुटाईनेछ ।   |
| ३. जल यातायात विकास र सञ्चालनमा संस्थागत, व्यवस्थापकीय तथा प्राविधिक क्षमताको विकास र अभिवृद्धि गर्ने । | १. जल परिवहन सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि, अभिसन्धि, सम्झौताहरूको नेपाल पक्ष राष्ट्र बन्नेछ ।<br>२. जल यातायात विकास तथा सञ्चालनको लागि नीतिगत तथा कानुनी संरचनाको निर्माण लगायत विद्यमान कानुनहरूलाई अन्तर्राष्ट्रिय कानुन तथा अभ्यास अनुरूप परिमार्जन गरिनेछ ।<br>३. जल यातायातसँग सम्बन्धित जनशक्ति उत्पादन तथा क्षमता विकास गरिनेछ । |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

जल यातायात सञ्चालन गर्न कानुनी, नीतिगत र संस्थागत व्यवस्था भएको हुनेछ। राष्ट्रिय रूपमा जल यातायातको सम्भाव्यता अध्ययन भई जल यातायात मार्गको पहिचान भएको हुनेछ। कोशी, गण्डकी र कर्णाली नदीहरूमा जल यातायात सञ्चालनका लागि आवश्यक पूर्वाधार विकास भई सुरक्षित, सहज, भरपर्दो र व्यवस्थित जल यातायात सञ्चालनमा आएको हुनेछ। आन्तरिक तथा विदेशी पर्यटकको गुणात्मक तथा संख्यात्मक रूपमा वृद्धि भएको हुनेछ। वस्तु तथा सेवाको लागत घट्न गई उपभोक्ता लाभान्वित हुने एवम् निर्यात व्यापार बढेको हुनेछ। सुरक्षित, सहज, भरपर्दो र व्यवस्थित जल यातायातको सञ्चालन गर्न आन्तरिक क्षमता अभिवृद्धि भएको हुनेछ।

## ८.२.५ यातायात व्यवस्थापन

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले यातायात सुविधामा नागरिकको सरल, सहज र समान पहुँच सुनिश्चित गर्न यातायात क्षेत्रमा लगानी अभिवृद्धि गर्ने र वातावरण अनुकूल प्रविधिलाई प्राथमिकता दिँदै सार्वजनिक यातायातलाई प्रोत्साहन र निजी यातायातलाई नियमन गरी यातायात क्षेत्रलाई सुरक्षित, व्यवस्थित, समावेशी र अपाङ्गतामैत्री बनाउने परिकल्पना गरेको छ। आवश्यक पूर्वाधारको विकास केही हदसम्म भए तापनि यातायात सेवा दिगो र भरपर्दो हुन सकेको छैन। निजी क्षेत्रको प्रमुख लगानी रहेको सार्वजनिक यातायात सेवालाई व्यवस्थित र मर्यादित बनाई सहज तरिकाबाट नागरिकले निर्वाध रूपमा आवत-जावत गर्न पाउने हकको यथोचित उपयोग अझै गर्न नपाएको अवस्था छ। अतः यस तर्फको समुचित व्यवस्थापन आवश्यक रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

सर्वसाधारणले प्रयोग गर्ने सार्वजनिक यातायात पूर्णतः व्यवस्थित, सर्वसुलभ, सुरक्षित र भरपर्दो नहुनु, जीर्ण तथा पुराना सवारी साधनका कारण प्रदूषण बढ्नु, व्यावसायिक तालिम प्राप्त सवारी चालक र तिनको श्रम समय सीमा नियमन गर्ने मापदण्ड नहुनाका कारण दुर्घटना बढ्नु, अत्यधिक भार वाहनको कारण सडक छिटोछिटो बिग्रनु, ट्राफिक नियम परिपालना नहुनु, संस्थागत क्षमता तथा प्रविधिमैत्री कार्य प्रणाली नहुनु, सवारी साधनको नियमित र व्यवस्थित परीक्षण प्रणाली नहुनु प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

सवारी साधनको वृद्धिलाई नियमन गर्नु, दीर्घकालीन यातायात व्यवस्थापन तथा सडक सुरक्षा रणनीति मार्फत सडक दुर्घटना न्यूनीकरण गर्नु, शहरी क्षेत्रमा बढ्दो निजी सवारी साधनको वैज्ञानिक व्यवस्थापन गर्नु, वायु तथा ध्वनी प्रदूषण नियन्त्रण, सडक सुरक्षा लगायत नियमन तथा अनुगमन कार्यलाई प्रभावकारी बनाउँदै सर्वसुलभ र सुरक्षित सार्वजनिक यातायात सेवा प्रदान गर्नु चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

यातायात व्यवस्थापनमा प्रविधिको प्रयोग बढ्नु, व्यवहारिक तथा स्वचालित भाडादर प्रयोगमा आउनु, विद्युतीय, वातावरणमैत्री तथा ठूला सवारी साधन सञ्चालनमा आउनु, सार्वजनिक यातायात सेवामा निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षित भइरहनु अवसरको रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

प्रतिस्पर्धी, सर्वसुलभ, सुरक्षित र वातावरणमैत्री यातायात प्रणालीको विकास ।

##### ४.२ लक्ष्य

आधुनिक, सर्वसुलभ, भरपर्दो, वातावरणमैत्री र पूर्वाधारमैत्री यातायात सेवा विकास गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

यातायात सेवालार्थ प्रतिस्पर्धी, सर्वसुलभ, भरपर्दो, सुरक्षित, समावेशी र अनुशासित बनाई आवागमन र ढुवानीलाई सहज बनाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. संस्थागत सुदृढीकरण र प्रक्रियागत सरलीकरण गर्दै यातायात क्षेत्रमा सुशासन कायम गर्ने । | १. सवारीचालक अनुमतिपत्र र सवारीदर्ता सम्बन्धी सूचनामा एकद्वारको लागि डाटा सेन्टर स्थापना र विकास गरिनेछ ।<br>२. ग्लोबल पोजिसनिङ्ग सिस्टम (जिपिएस) मार्फत सवारी साधन ट्र्याकिङ्गको व्यवस्था मिलाइनेछ ।<br>३. यातायात क्षेत्रमा संलग्न जनशक्तिलाई क्षमता विकास र व्यवहार सुधार तालिम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>४. सडक दस्तुर लगायत यातायात क्षेत्रमा रहेका कर तथा दस्तुर संकलनलाई विद्युतीय प्रणालीमा आधारित बनाइनेछ ।      |
| २. दिगो तथा वातावरणमैत्री सवारी साधनको उपयोगमा जोड दिने ।                               | १. प्रदेशगत रूपमा सवारी परीक्षण कार्यालय स्थापना गरी सवारी प्रदूषण मापनका लागि स्वचालित प्रविधि स्थापना गरिनेछ ।<br>२. मास ट्रान्सपोर्टलाई जोड दिँदै बृहत् बस परिवहन प्रणालीलाई प्राथमिकता दिइनेछ ।<br>३. विद्युतीय सवारी साधनको प्रयोगलाई प्राथमिकता दिइनेछ ।<br>४. सार्वजनिक यातायातमा ज्येष्ठ नागरिक, महिला, बालबालिका, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, अति गरीब र अन्य लक्षित समूहको पहुँच र उपभोगलाई अभिवृद्धि गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ३. सार्वजनिक यातायातलाई प्रोत्साहन गर्दै निजी तथा सहकारी क्षेत्रको भूमिकालाई प्रभावकारी एवम् व्यवस्थित गर्ने। | १. सार्वजनिक यातायात सञ्चालनमा स्थानीय तह तथा सहकारी क्षेत्रको लगानीलाई प्रोत्साहन गर्दै निजी क्षेत्रलाई प्रभावकारी नियमन गरिनेछ।<br>२. सवारी साधनको परीक्षणको लागि निजी क्षेत्रबाट समेत सवारी जाँचपास केन्द्रहरू स्थापना गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ।<br>३. व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक आधारमा स्वचालित भाडादरलाई थप प्रभावकारी बनाइनेछ।  |
| ४. यातायात व्यवस्थापनमा प्रविधिको प्रयोग गर्दै सडक दुर्घटना न्यूनीकरण गर्दै जाने।                             | १. राजधानी लगायतका मुख्य शहरका सार्वजनिक यातायात प्रणालीलाई रि-रुटिङ गर्दै सडकको अवस्था एकीन गरेर मात्रै सवारी साधन सञ्चालनको रुट अनुमति दिइनेछ।<br>२. सडक दुर्घटना सूचना व्यवस्थापन प्रणालीलाई नतिजामूलक ढङ्गले लागू गरिनेछ।<br>३. प्रमुख शहरहरूमा ट्राफिक लाइटको व्यवस्था गरी सवारी चाप व्यवस्थित गरिनेछ।<br>४. घना शहर तथा बस्ती लक्षित गरेर "सवारी साधन निषेधित क्षेत्र" तोकिनेछ। |

#### ५. अपेक्षित नतिजा

यातायात क्षेत्रको व्यवस्थापनमा अत्याधुनिक प्रविधिको प्रयोग भई यात्रुले सहज, सरल र भरपर्दो सेवा पाएका हुने, सात वटै प्रदेशमा सवारी परीक्षण कार्यालय (Vehicle Fitness Test Centre) स्थापित भई सञ्चालनमा आएका हुने, यातायात सम्बन्धी सेवा प्रवाहमा अनलाइन प्रणाली प्रयोग भएको हुने र ग्लोबल पोजिसनिङ्ग प्रणाली (GPS) लागू भएको हुनेछ।

#### ८.३ सञ्चार तथा सूचना प्रविधि पूर्वाधार

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले पूर्ण प्रेस स्वतन्त्रता, वाक तथा प्रकाशन स्वतन्त्रता, सञ्चार र सूचनाको हकलाई मौलिक हकको रूपमा उल्लेख गरेको छ। आर्थिक विकासको सम्वाहक एवम् उत्प्रेरकको रूपमा रहेको सञ्चार तथा सूचना प्रविधि क्षेत्रलाई मर्यादित, व्यावसायिक, सक्षम र सबल बनाउने दायित्व र जिम्मेवारीका साथ अगाडि बढ्नुपर्ने खाँचो छ। दिगो विकास लक्ष्यले सबैले धान्न सक्ने गरी इन्टरनेटको पहुँचमा उल्लेख्य वृद्धि गर्ने उल्लेख गरेको छ। हाल नेपालमा कुल जनसंख्याको ७२ प्रतिशतमा टेलिभिजन, ८३ प्रतिशतमा रेडियो र ५५.५ प्रतिशतमा ब्रोडब्याण्ड सेवाको पहुँच पुगेको र डिजिटल साक्षरता ३१ प्रतिशत रहेको अवस्था छ। नेपाली जनतालाई सूचना तथा सञ्चारसँग

सम्बन्धित विश्वव्यापी विकास एवम् उपलब्धि अनुरूप सेवा पुऱ्याउँदै आर्थिक विकासका समग्र पक्षमा सूचना प्रविधि तथा सञ्चारको अधिकतम उपयोग बढाउन सञ्चार र सूचना प्रविधि सम्बन्धी ज्ञान, सीप र क्षमताको विकास गरी सुशासन कायम गर्नु र सूचना प्रविधिलाई अर्थतन्त्रको महत्त्वपूर्ण हिस्साको रूपमा विकास गर्नु आजको आवश्यकता हो ।

## २. प्रमुख समस्या

आमसञ्चार माध्यम पूर्ण रूपमा मर्यादित, जिम्मेवार, जवाफदेही, उत्तरदायी र विश्वसनीय हुन नसक्नु, दूरसञ्चार सेवामा सबै नागरिकको पहुँच पुग्न नसक्नु, सूचना प्रविधिको विकास र साइबर सुरक्षाको लागि पर्याप्त संरचनागत व्यवस्थाको कमी हुनु, सार्वजनिक सेवा प्रवाहमा सूचना प्रविधिको न्यून उपयोग हुनु, हुलाक सेवालाई विविधीकरण गर्न नसक्नु, नेपाललाई प्राप्त अर्बाइटल स्लटको समयमै उपयोग गर्न नसक्नु, सुरक्षण मुद्रणको पर्याप्त पूर्वाधार विकास नहुनु, सूचना प्रविधि उद्योग व्यवस्थित नहुनु, अपेक्षित रोजगारी सिर्जना नहुनु, चलचित्र क्षेत्रलाई उद्योगको रूपमा विकास गर्न नसक्नु र विज्ञापन व्यवसाय व्यवस्थित हुन नसक्नु यस क्षेत्रमा मुख्य समस्याका रूपमा रहेका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

आम सञ्चारका माध्यममा प्रसारित समाचार मर्यादित र विश्वसनीय बनाउनु, भ्रामक समाचारको नियमन एवम् नियन्त्रण गर्नु, सामाजिक सञ्जालको वृद्धिसँगै यसमा बढ्दै गएको दुरुपयोग नियन्त्रण गर्नु, सूचना तथा सञ्चार क्षेत्रमा विकसित नवीनतम प्रविधि समय सापेक्ष प्रयोग गर्नु, बढ्दो साइबर अपराधको सामना गर्नु, सूचना प्रविधिमा आधारित उद्योगहरूलाई प्रतिस्पर्धी बनाई संवर्द्धन गर्नु, परम्परागत हुलाक सेवालाई विविधीकरण गर्नु, अनुसन्धान तथा विकासमा लगानी वृद्धि गर्नु, सुरक्षण मुद्रणमा रहेको परनिर्भरता हटाउनु, सेवा प्रवाहको लागि बस्ती छरिएर रहनु, चलचित्र क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धात्मक बनाई उद्योगको रूपमा विकास गर्नु, दूरसञ्चार पूर्वाधारमा सहप्रयोगको अवस्था सिर्जना गर्नु यस क्षेत्रमा चुनौतीका रूपमा रहेका छन् ।

संविधानमा पूर्ण प्रेस स्वतन्त्रता, सञ्चार तथा सूचनाको हकको प्रत्याभूति हुनु, डिजिटल नेपालको अवधारणाले महत्त्व पाउनु, शिक्षा क्षेत्रको समग्र विकासको लागि सञ्चार तथा सूचना प्रविधिको प्रयोगमा विस्तार हुनु, सूचना प्रविधिमा निजी क्षेत्रको लगानी वृद्धि हुँदै जानु, यस क्षेत्रमा काम गर्न युवा आकर्षित हुनु, थप रोजगारीका अवसर सिर्जना हुनु, सूचना प्रविधिलाई आर्थिक विकासको सम्वाहकको रूपमा स्वीकारिनु, मोबाइल प्रयोगकर्ताको संख्यामा उल्लेख्य वृद्धि हुनु, डाटामा आधारित दूरसञ्चार सेवा, सार्वजनिक सेवामा नागरिकको पहुँच क्रमशः वृद्धि हुँदै जानु, सूचना प्रविधिको प्रयोगले सेवा प्रवाहको लागतमा कमी आउनु, डिजिटल साक्षरतामा वृद्धि हुँदै जानु, नवीनतम प्रविधिको विकास हुनु, आमसञ्चारको क्षेत्रमा बढ्दो सूचना प्रविधिको प्रयोग यस क्षेत्रमा अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

सूचना प्रविधियुक्त राष्ट्र ।

### ४.२ लक्ष्य

आमसञ्चार, दूरसञ्चार तथा सूचना प्रविधिमा सबै नागरिकको पहुँच तथा उच्चतम उपयोग सुनिश्चित गरी आमनागरिकको जीवनस्तरमा गुणात्मक परिवर्तन ल्याउने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. सबै नागरिकमा सञ्चार तथा सूचना प्रविधिको सहज पहुँच तथा उपयोग विस्तार गर्नु ।
२. सञ्चार र सूचना प्रविधिको सेवालाई सर्वसुलभ, भरपर्दो र गुणस्तरीय बनाउनु ।
३. सञ्चार र सूचना प्रविधिमा आधारित उद्योगको विकास गरी रोजगारी वृद्धि गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. सूचनामा सबै नागरिकको पहुँच तथा उपयोग सुनिश्चित गर्ने ।                                    | १. सबै नागरिकमा सूचनाको पहुँच पुऱ्याउन आवश्यक नीतिगत तथा संस्थागत व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. राष्ट्रिय सूचना आयोगलाई थप प्रभावकारी र सक्षम बनाइनेछ ।<br>३. सञ्चार माध्यमसँग साझेदारीको नीतिलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।   |
| २. पूर्ण प्रेस स्वतन्त्रताको सुनिश्चितता गर्दै आमसञ्चारमा सबै नागरिकको पहुँच विस्तार गर्ने । | १. सञ्चार क्षेत्रको समग्र विकासको लागि आवश्यक पर्ने नीतिगत, कानुनी तथा संरचनागत क्षेत्रमा समयानुकूल सुधार गरिनेछ ।<br>२. सार्वजनिक आमसञ्चार माध्यमलाई स्वायत्त, प्रतिस्पर्धी, मर्यादित, उत्तरदायी र व्यवसायिक बनाइनेछ ।<br>३. रेडियो नेपाल र नेपाल टेलिभिजनलाई एकीकृत गरी सार्वजनिक प्रसारण सेवामा रूपान्तरण गरी देशव्यापी बनाइनेछ ।<br>४. सार्वजनिक आमसञ्चार माध्यमको क्षमता अभिवृद्धि गर्दै स्थानीय तहदेखि प्रदेश, राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय स्तरसम्म क्रमशः पहुँच विस्तार गर्नुका साथै राष्ट्रिय समाचार समितिको प्रभावकारिता अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>५. प्रदेश स्तरमा आधुनिक र प्रविधियुक्त सञ्चार ग्रामको स्थापना गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | ६. प्रेस काउन्सिललाई मिडिया काउन्सिलको रूपमा रूपान्तरण गरी अनुगमन प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।  |
| ३. दूरसञ्चार एवम् ब्रोडब्याण्ड सेवाको पहुँच देशभर पुऱ्याउने ।           | <p>१. स्थानीय स्तरसम्म ब्रोडब्याण्ड सेवा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>२. भरपर्दो र गुणस्तरीय दूरसञ्चार सेवा (Seamless Connectivity) लाई सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> <p>३. ग्रामीण दूरसञ्चार कोषलाई मूलभूत रूपमा दूरसञ्चार क्षेत्रको विकास र डिजिटल नेपालका कार्यक्रम वा परियोजनामात्र कार्यान्वयन गर्न परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>४. दूरसञ्चार पूर्वाधारमा सह-प्रयोग तथा सदुपयोगको अवधारणालाई कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p>  |
| ४. डिजिटलइजेसन मार्फत सामाजिक, आर्थिक र शासकीय व्यवस्थामा सुधार गर्ने । | <p>१. डिजिटल नेपाल फ्रेमवर्क कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. आम सञ्चार माध्यमलाई डिजिटल प्रणालीमा रूपान्तरण गरिनेछ ।</p> <p>३. सार्वजनिक तथा निजी सेवाहरू क्रमशः अनलाइन मार्फत प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>४. डिजिटल नेपाल, सूचना महामार्ग, डाटा सेन्टर, इन्टरनेट एक्सचेन्ज सेन्टर, आधुनिक प्रविधिमा आधारित टेलिफोन, अनलाइन सेवा र विद्युतीय भुक्तानी (ई-पेमेन्ट गेट-वे) लगायतका सञ्चार तथा सूचना प्रविधि सम्बन्धी पूर्वाधार विकासमा जोड दिइनेछ ।</p> <p>५. राष्ट्रिय फ्रिक्वेन्सी निर्धारण योजना (Frequency Allocation Plan) र रणनीति तयार गरी फ्रिक्वेन्सी वितरण प्रणाली व्यवस्थित र पारदर्शी बनाइनेछ ।</p> <p>६. सरकारी विद्युतीय प्रणालीलाई एकीकृत तथा अन्तरआबद्ध गरिनेछ ।</p> <p>७. साइबर सुरक्षा तथा गोपनीयता सम्बन्धी कार्य गर्न साइबर सुरक्षा अनुगमन केन्द्र स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>८. डिजिटल डिभाइड कम गर्नको लागि डिजिटल साक्षरता र सचेतना अभिवृद्धिलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>९. नेपाललाई प्राप्त अर्बिटल स्लट (Orbital Slot) को प्रयोग गरी नेपालको आफ्नै स्याटलाइट स्थापना गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>१०. सूचना प्रविधिलाई शिक्षा र आधुनिक प्रविधिमा उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>११. सूचना प्रविधिको प्रयोग मार्फत स्थानीय भाषा, संस्कृति तथा मौलिकताको संरक्षण तथा प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p>   |
| ५. हुलाक सेवालाई संस्थागत पुनर्संरचना गरी स्वायत्त, प्रतिस्पर्धी र व्यावसायिक बनाउने । | <p>१. हुलाक सेवालाई प्रतिस्पर्धी र व्यावसायिक बनाउन आवश्यक नीतिगत, कानुनी तथा संस्थागत सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. हुलाक सेवा प्राधिकरण गठन गरी कार्यक्षेत्रको विविधीकरण, विशिष्टीकरण तथा आधुनिकीकरण गरिनेछ ।</p>   |
| ६. चलचित्र क्षेत्रको पूर्वाधार विकास गरी उद्योगको रूपमा विकास तथा प्रवर्द्धन गर्ने ।   | <p>१. चलचित्र सम्बन्धी नीति, ऐन, कानूनको पुनरावलोकन तथा सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. चलचित्र क्षेत्रका पूर्वाधारको विकास गरी सो मार्फत नेपालको राष्ट्रियता, संस्कृति तथा पर्यटन प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> <p>३. बक्स अफिस मुलुकभर पूर्ण रूपमा कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> |
| ७. सुरक्षण मुद्रणको व्यवस्था गर्ने ।   | <p>१. सुरक्षण मुद्रण सम्बन्धी आवश्यक नीतिगत, कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. मानव स्रोतको विकासका साथै भौतिक पूर्वाधारको विकास गरी नेपालमा सुरक्षण मुद्रणको कार्य प्रारम्भ गरिनेछ ।</p>  |
| ८. विज्ञापन बजार व्यवस्थित बनाउने ।  | <p>१. विज्ञापन बजारको व्यवस्थापन एवम् नियमन गर्न नियामक निकायको स्थापना तथा सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. सार्वजनिक क्षेत्रबाट प्रचार-प्रसार हुने विज्ञापनमा समानुपातिक वितरण प्रणालीको व्यवस्था गरिनेछ ।</p>   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्य सम्ममा कुल जनसंख्यामा इन्टरनेट प्रयोगकर्ताहरूको अंश हालको ५५.४ प्रतिशतबाट वृद्धि भई ८० प्रतिशत पुगेको हुनेछ । रेडियो, टेलिभिजन तथा मोबाइल ब्रोडब्याण्डको पहुँच सम्पूर्ण जनतामा पुगेको हुने, एकीकृत सार्वजनिक सेवा प्रसारण संस्थाको स्थापना तथा सञ्चालन भएको हुने, सातै प्रदेशमा आधुनिक र प्रविधियुक्त सञ्चारग्रामको स्थापना भएको हुने, सबै सार्वजनिक सेवा विद्युतीय माध्यमबाट प्रवाह भएको हुने, सुरक्षण मुद्रणतर्फ आत्मनिर्भर भएको हुने, चलचित्र क्षेत्र उद्योगको रूपमा स्थापित भएको हुने, हुलाक सेवा प्राधिकरण गठन भएको हुने र थप २ लाख रोजगारीको अवसर उपलब्ध भएको हुनेछ ।

## ८.४ स्थानीय पूर्वाधार

### १. पृष्ठभूमि

योजना प्रणाली र स-साना विकास निर्माणका लागि पनि केन्द्रमुखी हुनुपर्ने अवस्थाले गर्दा स्थानीय विकास निर्माणमा जनताको आवश्यकता प्रतिबिम्बित हुन सकेको छैन। फलस्वरूप, स्थानीय पूर्वाधार विकासका केही प्रयास भए तापनि योजना प्रक्रियामा जनसहभागिता र अपनत्व स्थापित हुन नसकी जनआकांक्षा अनुरूप परिणाममुखी कार्य हुन सकेको छैन। मुलुक संघीय प्रणालीको अभ्यासको क्रममा रहेको छ। विकास निर्माण र सेवा प्रवाहमा सन्निकटताको सिद्धान्त अनुसार स्थानीय तहबाट जनताको घरदैलोको सरकारको रूपमा जनचाहना अनुसार सरोकारवालाहरूको सहभागितामा स्थानीय पूर्वाधारको विकास गर्ने अभ्यासको थालनी भइसकेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

विकट भौगोलिक अवस्थिति, निर्वाहमुखी कृषिप्रणाली, छरिएको बस्ती, बसाइसराई, युवा जनशक्तिको विदेश पलायन, साधन स्रोतको उचित व्यवस्थापनमा कमी, स्थानीय क्षेत्रको आयोजना प्राथमिकीकरण कार्यमा कठिनाई हुनु, स्थानीय आयोजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यमा अन्यौलता देखिनु, आर्थिक सामाजिक विकासका पूर्वाधारको कमी हुनु, जवाफदेहिताको अभाव हुनु र भ्रष्टाचार हुनु प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

एकीकृत बस्ती विकास गर्नु, स्थानीय भौतिक पूर्वाधारको गुणस्तर कायम तथा दिगोपना अभिवृद्धि गर्नु, विनियोजित रकमको उचित प्रयोग गर्नु, स्थानीय पूर्वाधार विकास साझेदारी कार्यक्रमको रकमलाई प्रभावकारी र उपलब्धिमूलक ढङ्गले सदुपयोग गर्नु र जनशक्तिको व्यवस्थापन र क्षमता वृद्धि गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

स्थानीय तहको वित्तीय तथा प्रशासनिक स्वायत्तता, उत्साहित र सक्षम निर्वाचित जनप्रतिनिधि तथा समावेशी सहभागिता, साधन स्रोतमा बढोत्तरी, सेवा प्रदायक निकाय आमनागरिकको बीचमा पुग्नु, लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली, उदार अर्थतन्त्र निजी क्षेत्रको सहकार्य र खुला सामाजिक परिवेश एवम् साझा सरोकारका विषयमा अन्तरतह साझेदारी प्रमुख अवसरका रूपमा रहेका छन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

भरपर्दो, सुलभ एवम् पहुँचयोग्य स्थानीय पूर्वाधार विकास।

### ४.२ लक्ष्य

आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणका लागि ग्रामीण अर्थतन्त्र र सामाजिक विकासमा सघाउ पुग्ने गरी स्थानीय पूर्वाधार निर्माण एवम् विकास गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. ग्रामीण पूर्वाधार विकासलाई सन्तुलित, दिगो र वातावरणमैत्री बनाउनुका साथै स्थानीय बजार र उत्पादनलाई जोडी ग्रामीण जीवनलाई सरल, सहज र उत्पादनमूलक बनाउनु।

२. मितव्ययी र प्रभावकारी स्थानीय सेवा प्रवाहका लागि आवश्यक आधारभूत पूर्वाधारको विकास गर्नु ।
३. सघन बस्ती विकास गर्दै क्रमशः नगरोन्मुख बनाई सार्वजनिक सेवालाई सहज बनाउनु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. सेवाप्रवाह र विकास व्यवस्थापनको लागि आवश्यक कानून, कार्यविधि र मापदण्ड तयार गर्नुका साथै प्रत्येक स्थानीय तहको वडा स्तरसम्म न्यूनतम पूर्वाधार सहितको नीतिगत तथा संस्थागत प्रबन्ध गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. सेवाप्रवाह र विकास व्यवस्थापनको लागि आवश्यक कानून, कार्यविधि र मापदण्ड एक वर्षभित्रमा तयारी सक्ने गरी आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>२. प्रत्येक स्थानीय तहको वडा स्तरसम्म न्यूनतम पूर्वाधार जस्तै: शिक्षा, स्वास्थ्य, सडक, बिजुली, खानेपानी, सिँचाई, बस्ती विकास, फोहोरमैला व्यवस्थापन र सरसफाई, उद्योगग्राम, टेलिफोन, इन्टरनेट, बैंक र सामुदायिक संस्था जस्ता पूर्वाधारको प्राथमिकताका साथ निर्माण गरिनेछ ।</li> <li>३. स्थानीय पूर्वाधार निर्माण सम्बन्धी आवश्यकता पहिचान सहित गुरुयोजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>४. हाल भैरहेका तुइनलाई विस्थापन गरी पायक पर्ने स्थानहरूमा पक्की तथा झोलुङ्गे पुल निर्माण गरिनेछ ।</li> <li>५. फोहोरमैला व्यवस्थापनका लागि निश्चित तथा उपयुक्त स्थानमा बहुउद्देश्यीय प्रशोधन केन्द्र र अत्यधिक फोहोर संकलन हुने ठाउँमा वायोग्यास प्लान्ट स्थापनालाई प्राथमिकता दिइनेछ ।</li> </ol> |
| २. स्थानीय विकास व्यवस्थापनमा नागरिक र सरोकारवालाको अर्थपूर्ण सहभागितालाई सुनिश्चित गर्दै क्षमता विकास योजना तर्जुमा गरी तालिम दिने संस्थाको एकीकृत रूपमा पारदर्शिता एवम् जवाफदेहिता प्रवर्द्धन र क्षमता विकास गर्ने संयन्त्र र पद्धतिको विकास गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. स्थानीय योजनाको सबै प्रक्रियामा नागरिक र सरोकारवालाको अर्थपूर्ण सहभागितालाई सुनिश्चित गरिने र सोको विकास योजना तर्जुमा गरी विभिन्न निकाय अन्तर्गत रहेका तालिम एकाईलाई एकीकृत गर्नुका साथै तिनको पारदर्शिता एवम् जवाफदेहिता प्रवर्द्धन र क्षमता विकास कार्यक्रम सञ्चालन गर्न संयन्त्र र पद्धतिको विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. योजना कार्यान्वयनको दिगोपनाको लागि जनसहभागिता सुनिश्चित गर्न उपभोक्ता समितिको गठन गरिने र सोको नियमनको व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>३. स्थानीय कार्य सन्चालन र सेवा प्रवाहमा नव-प्रवर्तन र सूचना प्रविधिलाई अवलम्बन गर्दै इ-सेवा प्रदान गरिनेछ ।</li> </ol>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ३. स्थानीय तहको नीति, योजना, बजेट तथा कार्यक्रम तर्जुमा र कार्यान्वयनमा समावेशी सहभागिता सुनिश्चितताका साथै स्थानीय स्रोत परिचालन दक्षता अभिवृद्धि गरी स्थानीय तहलाई स्वावलम्बी बनाउने। | १. स्थानीय तहको नीति, योजना, बजेट तथा कार्यक्रम तर्जुमा र कार्यान्वयनमा सबै लिङ्ग, क्षेत्र, वर्गको समावेशी र अर्थपूर्ण सहभागितालाई सुनिश्चित गर्न कार्यविधि तर्जुमा गरिनेछ।<br>२. समावेशी क्षेत्र (महिला, दलित, आदिवासी जनजाति, ज्येष्ठ, नागरिक, बालबालिका, युवा, अपाङ्गता भएका व्यक्ति र किसान)को शासनमा पहुँच, अर्थपूर्ण सहभागिता, सशक्तीकरण र अपनत्व हुने गरी आवश्यक प्रक्रिया निर्धारण गरिनेछ। |
| ४. निजी तथा सहकारी क्षेत्रसँगको सहकार्य, कार्य सम्पादनमा स्तरीकरण र नवीनतम प्रविधिको प्रयोग गर्दै स्थानीय तहलाई व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धी बनाउने।  | १. निजी तथा सहकारी क्षेत्रसँगको सहकार्य, कार्यसम्पादनमा स्तरीकरण र नवीनतम प्रविधिको प्रयोग गर्दै स्थानीय तहलाई व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धी बनाई निजी र सहकारी क्षेत्रसँग निरन्तर संवाद तथा अन्तर्क्रिया गरी निजी र सहकारी क्षेत्रको अर्थपूर्ण विश्वास आर्जन गरिनेछ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

स्थानीय तहका केन्द्र र सबै वडा कार्यालय सडक सञ्जालबाट जोडिएका हुने, सबै स्थानीय तहमा कम्तीमा एउटा उच्च माध्यमिक तहको प्राविधिक शिक्षालय स्थापना भएको हुने, कम्तीमा ३० मिनेटको हिँडाइको फेरो भित्र पुलको सुविधा पुग्ने गरी झोलुङ्गे तथा सडक पुल निर्माण भएको हुने र बजार केन्द्रको निर्माण भई उत्पादनले बजार पाएको हुनेछ। साथै, सबै घरमा बिजुली, नगरपालिका भित्रका सबै वडामा बैंक वा वित्तीय संस्थाको शाखा पुगेको हुने र शहरी ग्रामको विकास भएको हुनेछ।

#### ६.५ विज्ञान तथा प्रविधि

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले विज्ञान तथा प्रविधिलाई देशको विकाससँग आबद्ध गर्दै वैज्ञानिक अध्ययन, अनुसन्धान एवम् विज्ञान र प्रविधिको आविष्कार, उन्नयन र विकासमा लगानी अभिवृद्धि गर्ने तथा वैज्ञानिक, प्राविधिक, बौद्धिक र विशिष्ट प्रतिभाको संरक्षण गर्ने नीति आत्मसात गरेको छ। स्वच्छ वातावरण, स्वास्थ्य, खाद्य, आवास, पूर्वाधार, सूचना-सञ्चार, शिक्षा र सामाजिक सुरक्षा लगायतका विषयमा विज्ञान प्रविधि र नव-प्रवर्तनात्मक कार्य गरी सुखी एवम् समृद्ध राष्ट्र निर्माणमा सहयोग पुऱ्याउन अत्यावश्यक छ। वैज्ञानिक अनुसन्धानबाट प्रतिपादित ज्ञान र परम्परागत एवम् उदीयमान प्रविधिका उपलब्धिलाई आधारभूत आवश्यकता परिपूर्तिमा केन्द्रित गर्ने तथा देशमा उपलब्ध प्राकृतिक स्रोत-साधनको बुद्धिमतापूर्ण उपयोगमा जोड दिनुपर्ने आवश्यकता रही आएको छ।

विज्ञान तथा प्रविधिलाई उत्पादनको साधन तथा विकासको पूर्वाधारको रूपमा अंगीकार गरी यस क्षेत्रमा राज्यको लगानीमा उल्लेख्य वृद्धि गर्दै दक्ष प्राविधिक जनशक्ति विकासका लागि समन्वयात्मक रूपमा प्राविधिक शिक्षालय तथा विश्वविद्यालय एवम् अनुसन्धान संस्थाको क्षमता अभिवृद्धि र समग्र अनुसन्धान तथा प्रविधिमा प्राथमिकता दिनु आवश्यक हुन्छ ।

## २. प्रमुख समस्या

मुलुकको समग्र विकासका लागि देशभित्र र बाहिर छरिएका जनशक्ति र प्रतिभाहरूको ज्ञान, सीप र क्षमतालाई उपयोग गर्ने वातावरण निर्माण गर्न नसकिनु, विज्ञान तथा प्रविधिसँग सरोकारवाला निकायबाट सम्पादन गरिने क्रियाकलापमा समन्वय र सहकार्यका लागि प्रभावकारी नीति तथा स्पष्ट कानुनी व्यवस्थाको कमी हुनु, विज्ञान र प्रविधिको समुचित विकास र उपयोगका लागि राज्यको लगानी सिमित हुनु, क्षमतावान युवा जनशक्तिलाई स्वदेशमा टिकाई राख्ने वातावरण तयार नहुनु, विज्ञान तथा प्रविधिको प्रतिफल जनता समक्ष पुऱ्याउन आवश्यक प्रभावकारी संयन्त्रको विकास नहुनु, विज्ञान र प्रविधिको क्षेत्रमा विभिन्न निकायबाट गरिने लगानीलाई उपलब्धिमूलक बनाउन प्रयास नहुनु जस्ता समस्या यस क्षेत्रमा विद्यमान छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

पारमाणविक प्रविधि, सूचना तथा संचार प्रविधि, नानो प्रविधि, जैविक प्रविधि, आर्टिफिसियल इन्टेलिजेन्स लगायतका उदीयमान प्रविधिको सदुपयोग गर्न प्रोत्साहित गर्नु, प्रविधि विकासले पार्ने नकारात्मक असरलाई न्यूनीकरण गर्नु, विज्ञान तथा प्रविधिको सन्तुलित विकास गर्न नीतिगत र संरचनात्मक व्यवस्था गर्नु, विज्ञान शिक्षालाई व्यवहारिक र सर्वसुलभ बनाउनु, विज्ञान तथा प्रविधि क्षेत्रका विषयमा उच्च शिक्षा हासिल गरी अनुसन्धानमा संलग्न युवा जनशक्तिलाई स्वदेशमा काम गर्ने वातावरण तयार गर्नु, देशभित्र रहेका वैज्ञानिक र प्राविधिक प्रतिभाको क्षमतालाई सदुपयोग गर्नु, अनुसन्धान क्षेत्रलाई पूर्वाधारयुक्त र सबल बनाउनु, विकसित प्रविधिलाई उद्योग र उद्यमशीलताको विकासमा उपयोग गर्नु, विज्ञान तथा प्रविधिको क्षेत्रमा भएका विकासलाई आधारभूत सेवा एवम् उत्पादनमा आबद्ध गर्नु, विज्ञान-प्रविधि तथा नव-प्रवर्तनको दूरगामी योजना र मार्गचित्र तयार गरी कार्यान्वयन गर्नु प्रमुख चुनौती हुन् ।

विज्ञान तथा प्रविधिलाई विकाससँग आबद्ध गरी यस क्षेत्रको प्रवर्द्धन गर्नु, पारमाणविक प्रविधिको शान्तिपूर्ण उपयोग सम्बन्धी अभिसन्धिको पक्ष राष्ट्र भएकोले यस प्रविधिको बृहत् उपयोग गर्न क्षमता अभिवृद्धि, प्रविधि हस्तान्तरण तथा प्रवर्द्धन गर्न अन्तर्राष्ट्रिय एवम् विश्वव्यापी सहयोग प्राप्त हुने अवसर रहनु, प्रदेशस्तरमा समेत अनुसन्धानशाला र प्रतिष्ठान स्थापना गरी वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा प्राविधिक विकासलाई अघि बढाउने वातावरण तयार हुनु, देश बाहिर छरिएर रहेका वैज्ञानिक प्रतिभालाई स्वदेश फर्काई विज्ञान र प्रविधिको उपयोग गर्ने सम्भावना रहनु, वैज्ञानिक अनुसन्धान र नवप्रवर्तनको क्षेत्रमा अनुसन्धानकर्ताको संख्या बढ्दै जानु, विज्ञान अध्ययन गरेका जागरूक युवा समूहको उल्लेख्य सङ्ख्या हुनु, आधुनिकीकरणसँगै अन्तर्राष्ट्रिय सहयोग र समन्वयको क्षेत्र फराकिलो हुनु, विश्वव्यापी रूपमा छरिएर रहेका वैज्ञानिकको ज्ञान, अनुभव र सीप नेपाल भित्र्याउने सम्भावना रहनु, विज्ञान र

प्रविधिको विकासबाट आर्थिक उन्नति हुने र आर्थिक उन्नतिबाट मुलुकको समृद्धि सम्भव हुने राजनैतिक चेतना उन्मुख हुनु जस्ता अवसर यस क्षेत्रमा विद्यमान छन् ।

#### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

##### ४.१ सोच

समाजसँग विज्ञान र उत्पादनसँग प्रविधि तथा नवप्रवर्तन ।

##### ४.२ लक्ष्य

समाजमा वैज्ञानिक संस्कारको विकास गरी उत्पादन प्रविधिमा नवप्रवर्तनलाई आबद्ध गर्दै मुलुकको समृद्धि हासिल गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

- जनताको गुणस्तरीय जीवन प्राप्ति र विज्ञानमा आधारित सोच निर्माण र विश्लेषण गर्न विज्ञान तथा प्रविधिको महत्तम उपयोग गर्नु ।
- विज्ञान शिक्षालाई व्यवहारिक बनाउँदै नवीनतम विज्ञानको उन्नयन र उदीयमान प्रविधिहरूको अंगीकार गर्दै तिनलाई आधारभूत सेवा प्रवाहमा उपयोग गर्नु ।
- उत्पादन वृद्धि तथा औद्योगिक विकासका लागि प्रकृति प्रदत्त स्रोत एवम् परम्परागत प्रविधि तथा नव-प्रवर्तनको उपयोग एवम् विकास गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. समाजमा वैज्ञानिक चेतनाको अभिवृद्धि गर्दै विज्ञानसम्मत विश्लेषण गर्ने संस्कारको विकास गर्ने । | १. उच्चस्तरीय नवीनतम वैज्ञानिक अनुसन्धान र प्रविधिको विकासलाई सबलीकरण गर्न एकीकृत अनुसन्धान तथा विकास कोषको स्थापनाका लागि कानुनी तथा संरचनात्मक आधार तयार गरिनेछ ।<br>२. मौजुदा विज्ञान तथा प्रविधि नीतिको समयसापेक्ष परिमार्जन गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>३. विज्ञान विषयको पठनपाठनलाई जोड दिइनेछ ।<br>४. पारमाणविक प्रविधिको सुरक्षित र शान्तिपूर्ण उपयोगका लागि आवश्यक ऐन, नियम, निर्देशिका र मापदण्ड तयार गरी सोको नियमन गर्न क्षमतायुक्त निकायको गठन गरिनेछ ।<br>५. विज्ञान प्रविधि तथा नवप्रवर्तन लगायत सम्बद्ध विषयको भरपर्दो सूचना र बलियो तथ्यांकीय आधार बनाउन नीति तथा कानुनी आधार तयार गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>६. योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन लागि आवश्यक तथ्याङ्क संकलन र विश्लेषणका निमित्त दक्ष जनशक्ति सहितको पूर्वाधार विकास गरी क्रियाशील बनाइनेछ ।</p> <p>७. आमसञ्चार लगायत औपचारिक तथा अनौपचारिक माध्यमबाट विज्ञान-प्रविधिको व्यापक प्रचार-प्रसार गरी देशभरी पुग्ने घुम्ती विज्ञान प्रयोगशालाको आयोजना र सहभागितामूलक विज्ञान अन्तरक्रियाहरू सञ्चालन गरिनेछ ।</p>                      |
| २. विज्ञान तथा प्रविधिका लाभ तथा उपलब्धिलाई आम जनमानसमा पुऱ्याई गुणस्तरीय जीवन हासिल गर्न सघाउने ।                                 | <p>१. वातावरण, स्वास्थ्य, खाद्य, आवास, सूचना सञ्चार, शिक्षा र सामाजिक सुरक्षाका साथै खाद्य सुरक्षाको प्रत्याभूति गर्न उपलब्ध प्रविधिको प्रयोगलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>२. विज्ञान तथा प्रविधिलाई कृषि, उद्योग, वन पैदावार र सेवा लगायत उत्पादनका सबै पक्षका साथै गुणस्तरीय पूर्वाधारको अभिन्न अङ्गका रूपमा एकीकृत गरिनेछ ।</p>  |
| ३. उदीयमान प्रविधिको प्रयोगलाई प्रोत्साहन र प्रवर्द्धन गर्दै नवप्रवर्तनलाई दिगो विकासका लक्ष्यसँग तादाम्यता कायम गर्ने ।           | <p>१. अन्तरिक्ष विज्ञान तथा प्रविधि, पारमाणविक विज्ञान तथा प्रविधि, नानो र जैविक विज्ञान तथा प्रविधि क्षेत्रको अध्ययन अनुसन्धान गरिनेछ ।</p> <p>२. दिगो विकासको मार्गचित्र अनुरूप गरीबी न्यूनीकरण लगायत अन्य लक्ष्य हासिल गर्न विज्ञान प्रविधि तथा नवप्रवर्तनको क्षमतालाई अधिकतम उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>३. वैज्ञानिक अनुसन्धानलाई प्रोत्साहन गर्न सार्वजनिक-निजी साझेदारीमा अनुसन्धान र लगानी गरिनेछ ।</p> |
| ४. देशमा उपलब्ध प्राकृतिक स्रोतहरूको प्रयोग र अधिमूल्यन (भ्यालु एडिसन) का लागि आवश्यक पूर्वाधार तथा प्राविधिक जनशक्ति तयार गर्ने । | <p>१. प्रदेशको विशिष्टताका आधारमा सुविधा सम्पन्न अनुसन्धानशाला र प्रतिष्ठान स्थापना गरी तिनलाई विषयगत विशिष्ट केन्द्र (सेन्टर अफ एक्सलेन्स) को रूपमा विकास गरी स्थानीय आवश्यकतासँग आबद्ध गरिनेछ ।</p> <p>२. राष्ट्रिय प्राथमिकताका विषयमा अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्न विश्वविद्यालयलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p>   |
| ५. युवा पिढीलाई वैज्ञानिक ज्ञान र प्राविधिक सीप हासिलमा प्रतिस्पर्धी बन्न उत्प्रेरणा दिँदै स्रोतको अधिकतम उपयोग र                  | १. विज्ञान विषयलाई व्यवहारिक, उपयोगी र प्रतिस्पर्धी बनाउने प्रदर्शनी र विविध कार्यक्रम गर्न प्रत्येक प्रदेश तथा स्थानीय तहस्तरीय विज्ञान अध्ययन केन्द्र (Science Learning Centre) को विकास गरिनेछ ।   |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| अनुसन्धानलाई परिणाममुखी बनाउन संस्थागत समन्वय कायम गर्ने ।  | २. विज्ञान र प्रविधिको युवा जनशक्तिलाई उद्यमशील भई नव-प्रवर्तनात्मक कार्यमा आफ्नो ज्ञान, सीप र क्षमता उपयोग गर्ने वातावरण सिर्जना गरिनेछ ।   |
| ६. प्राज्ञिक क्षेत्रमा हुने अनुसन्धानलाई औद्योगिक उत्पादनसँग संयोजन गर्ने तथा औद्योगिक उत्पादन वृद्धिका लागि अनुसन्धान तथा विकासमा लगानी बढाउँदै वैज्ञानिक तथा प्राविधिक जनशक्तिमा उद्यमशीलताको विकास गर्ने । | १. अनुसन्धान प्रतिष्ठान, विश्व-विद्यालय र औद्योगिक संस्थाहरूबीच समन्वय कायम गर्न प्रभावकारी संयन्त्रको विकास गरिनेछ ।<br>२. विश्वविद्यालय, अनुसन्धान प्रतिष्ठान र औद्योगिक प्रतिष्ठानबीच सहकार्यको वातावरण बनाउन आवश्यक नीति-नियम तर्जुमा गरी लागू गरिनेछ ।<br>३. औद्योगिक प्रतिष्ठानमा अनुसन्धान तथा विकास एकाइ स्थापना गरिनेछ । साथै, औद्योगिक उत्पादनको परीक्षण एवम् प्रमाणीकरणका लागि आधुनिक प्रयोगशाला निर्माण गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

राष्ट्रिय विज्ञान प्रविधि नीति एवम् रणनीति तयार भई प्राथमिकता निर्धारण भएको हुने, संघीय व्यवस्था अनुसार संस्थागत संरचनागत सुदृढीकरण भई विज्ञान तथा प्रविधिको विकास एवम् सोको उपयोगको स्पष्ट मार्गचित्र तयार भएको हुने, पारमाणविक प्रविधि र आयोनीकृत विकीरणको सुरक्षित र शान्तिपूर्ण प्रयोग गर्न आवश्यक कानुनी तथा संरचनात्मक व्यवस्था हुने, पारमाणविक ऐन र सोही बमोजिमको पारमाणविक पदार्थको व्यवस्थापन गर्ने नियमनकारी निकायको स्थापना भएको हुने, प्रत्येक प्रदेश तथा स्थानीय तहमा एक-एक ओटा विज्ञान अध्ययन केन्द्र स्थापना भएको हुने, आवश्यकतानुसार वैज्ञानिक अनुसन्धान वृत्ति उपलब्ध गराइएको हुने र वैज्ञानिक अनुसन्धानमा शैक्षिक संस्था, मन्त्रालय र उद्योगसँगको समन्वयमा बढी भन्दा बढी युवा परिचालित भएका हुनेछन् ।

#### ८.६ शहरी विकास

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले राज्यको सन्तुलित र समावेशी विकासको परिकल्पना गरेको छ । “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली” को राष्ट्रिय सोच पूरा गर्न आधुनिक पूर्वाधारयुक्त योजनाबद्ध वातावरणमैत्री विपद् प्रतिरोधी, व्यवस्थित, समावेशी, आर्थिक रूपमा गतिशील र सुरम्य शहर निर्माण गर्नुपर्दछ । शहर एवम् मानव बस्तीलाई समावेशी, सुरक्षित, उत्थानशील एवम् दिगो बनाउनु पर्नेछ । सबैका लागि दिगो मानव बस्ती र शहरको घोषणा समेत गर्नुपर्नेछ । त्यसैगरी, विपद् जोखिम न्यूनीकरणका लागि विपद्को आर्थिक, मानवीय एवम् पूर्वाधारको क्षति सारभूत रूपमा घटाउने र आधारभूत सेवामा अवरोध घटाउनु पर्नेछ । राष्ट्रिय जनगणना, २०६८ पश्चात थप भएका नयाँ नगरपालिका सहित नगरपालिकाको संख्या २९३ पुगेसँगै शहरी जनसंख्या ५९.९ प्रतिशत पुगेको छ । यस प्रकार नयाँ शहरको वृद्धिसँगै

वरिपरिका गाउँबाट शहरमा तीव्र रूपमा बसाइँसराइ भइरहेको छ। यसकारण ती शहरमा हाल उपलब्ध अपर्याप्त भौतिक, सामाजिक तथा आर्थिक पूर्वाधारमा अतिरिक्त चाप पर्न गई शहरी जीवन असहज बन्दै गएको अवस्थामा गुणस्तरीय शहरी पूर्वाधार सेवा तथा सुविधा उपलब्ध गराई शहरी वातावरण र जीवनस्तरमा सुधार ल्याउनु आवश्यक छ।

## २. प्रमुख समस्या

बहुसंख्यक नगरपालिकाको परिवेश ग्रामीण तथा शहर उन्मुख अवस्थामा रहेको र हालसम्म पनि शहरी प्रणालीको तहगत खाका (ठूला शहरदेखि बजार केन्द्रसम्म) निर्धारण गरी सो अनुरूप शहरी पूर्वाधार तथा सेवा सुविधा निर्धारण नहुनु, शहरको योजना तर्जुमा, निर्माण व्यवस्थापन, स्तरोन्नति, विस्तार तथा सुधार गर्ने कार्यमा सम्बन्धित निकायबीचको समन्वय र सहकार्यको कमी हुनु, शहर विकास तथा निर्माणमा विपद् व्यवस्थापनको अवधारणा स्थापित नहुनु, शहरको भौगोलिक, भौगर्भिक/जल प्रणालीको साथै शहरको ऐतिहासिक पृष्ठभूमि र विस्तारको प्रकृतिको गहन अध्ययन विश्लेषण नगरी परम्परागत विधि र तरिकाले शहर विकास गर्न शहरी सुविधाहरूको उपलब्धता र गुणस्तर पर्याप्त नहुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

भू-उपयोग योजनामा आधारित व्यवस्थित, नियोजित र योजनाबद्ध शहरी विकासको माध्यमबाट विकास गर्नु, शहरको वर्गीकरण गर्दै निश्चित मापदण्डको आधारमा शहरी पूर्वाधार तथा सेवाको व्यवस्था गरी वातावरणीय सुधार गर्नु, एकीकृत शहरी भौतिक पूर्वाधार विकास निर्माणका लागि सम्बन्धित निकायबीच समन्वय र सहकार्यको बाध्यकारी व्यवस्था गर्नु, राष्ट्रिय शहरी नीति तथा रणनीतिले अवलम्बन गरेका शहरी प्रणाली र अन्तरसम्बन्धलाई जीवन्तता प्रदान गर्न स्रोत-साधनको पहिचान गरी निर्देशित ठूलो लगानी गर्नु र हाल भइरहेका र निर्माणाधीन शहरलाई विपद् जोखिमबाट सुरक्षित गर्नु प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

शहरी विकास नेपाल सरकार, गैरसरकारी निकाय र दातृ निकायको प्राथमिकतामा पर्नु, निजी क्षेत्रले शहरी पूर्वाधार निर्माण तथा व्यवस्थापनमा लगानीको अभिरूची राख्नु, नयाँ नगर विकासको प्रारम्भिक चरणमा रहेकोले आधुनिक पूर्वाधार, मौलिक पहिचान सहित योजनाबद्ध विकास गर्न सकिने सम्भावना रहनु, राष्ट्रिय राजमार्ग तथा प्रस्तावित रेलमार्गको प्रभाव क्षेत्रमा शहरी विकासको सम्भावना रहनु, एकीकृत जग्गा विकास कार्यक्रममा सरकारी निकायको उल्लेख्य अनुभव र नागरिकमा समेत सचेतना र स्वीकार्यता रहनु र नयाँ आधुनिक शहर र स्मार्ट सिटी लगायतका अवधारणा कार्यान्वयनको चरणमा आउनु प्रमुख अवसरका रूपमा रहेका छन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

व्यवस्थित शहरीकरण मार्फत दिगो आर्थिक सामाजिक समृद्धि।

### ४.२ लक्ष्य

सर्वसुलभ, समृद्ध, दिगो र सुन्दर शहरको विकास गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. विपद् प्रतिरोधी, मानव केन्द्रित, सुरक्षित, आर्थिक रूपमा गतिशील, स्वच्छ, सफा र व्यवस्थित शहर निर्माण गर्नु ।
२. सन्तुलित राष्ट्रिय शहरी प्रणाली र परिष्कृत शहरी बनोट विकासका लागि हरित अर्थतन्त्र मार्फत शहर एवम् ग्रामीण-शहरी अन्तरसम्बन्धलाई जीवन्तता प्रदान गर्नु ।
३. शहरको योजना, निर्माण, व्यवस्थापन, सुधार तथा विस्तारका लागि प्राविधिक क्षमता अभिवृद्धि र शहरी पूर्वाधार सुशासनको संस्थागत विकास गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. विद्यमान शहरको वातावरणीय सुधारका लागि सामाजिक, भौतिक र आर्थिक पूर्वाधारको व्यवस्था गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"><li>१. भौगोलिक अवस्थिति, आर्थिक समृद्धि र पर्यटकीय सम्भावना तथा पहिचान र पुरातात्विक विशेषताका आधारमा शहरको विकास गरिनेछ ।</li><li>२. विपद् संवेदनशील भू-उपयोगमा आधारित रही नियन्त्रित विकासका माध्यमबाट शहरी विकास गरिनेछ ।</li><li>३. शहरी वातावरण सुधारका लागि यातायात, शहरी सडक, खानेपानी, ढल, आवास, उद्यान, खुल्ला हरित क्षेत्र, बजारक्षेत्र, बसपार्क लगायतका एकीकृत शहरी पूर्वाधारको अवधारणा अनुसार योजना तर्जुमा र निर्माण गरिनेछ ।</li><li>४. शहरी सेवासुविधालाई एकीकृत तथा व्यवस्थित गर्नको लागि यूटिलिटी कोरिडोरको अवधारणा अनुसार शहरी विकासको लागि कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्था गरिनेछ ।</li><li>५. शहरी क्षेत्रबाट उत्सर्जन हुने मानवीय मलमूत्र लगायतका फोहोरमैलाको उचित व्यवस्थापन तथा प्रदूषणको न्यूनीकरण गरी सफा शहरी वातावरण निर्माण गरिनेछ ।</li><li>६. देशका ठूला राजमार्गदेखि केही दूरीमा अवस्थित वा नोडल केन्द्र तथा औद्योगिक र व्यावसायिक क्रियाकलाप भएको स्थानमा नयाँ बस्ती, आधुनिक शहर एवम् आर्थिक कोरिडोर शहरको विकास गरिनेछ ।</li><li>७. देशका प्रमुख शहरी क्षेत्रभित्रका सडकलाई शहरी सडकको अवधारणा र मापदण्ड अनुसार विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।</li></ol> |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| २. राष्ट्रिय शहरी प्रणाली विकासको लागि सबै प्रकारका स्रोत-साधनहरूको पहिचान र समुचित उपयोग गरी निर्देशित लगानी गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. शहरी कोरिडोर विकास प्रयास (Urban Corridor Development Initiative) को अवधारणा अनुसार सातै प्रदेशमा शहरी कोरिडोरको विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. एकीकृत शहरी पूर्वाधार सेवामा निजी, सरकारी-निजी साझेदारी, अन्तरसरकार साझेदारी र सहकारी क्षेत्रको रणनीतिक लगानी गरिनेछ ।</li> <li>३. दिगो शहरी विकासको लक्ष्य हासिल गर्न शहरी विकासको क्षेत्रमा क्रियाशील तीन तहका सरकार र निजी क्षेत्रको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> <li>४. शहरी अध्ययन अनुसन्धानलाई संस्थागत बनाउन शैक्षिक संस्था एवम् अध्ययन प्रतिष्ठानसँग सहकार्य गरिनेछ ।</li> <li>५. शहरी जग्गा विकास र पूर्वाधार विकासका आयोजनाबाट सिर्जना हुने घर जग्गा मूल्य अभिवृद्धिको केही अंशले लगानीको भारवहन गर्ने "भ्यालु क्याप्चर" को अवधारणालाई कार्यान्वयनमा ल्याई शहरी विकासका लागि वैकल्पिक वित्तीय स्रोत सिर्जना गरिनेछ ।</li> <li>६. सातै प्रदेशका राजधानी निर्माणका लागि प्रादेशिक पहिचान सहितको निश्चित योजना र मापदण्ड बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ३. तीन तहको समन्वयात्मक सहकार्यमा एकीकृत शहरी पूर्वाधार विकास र शहरी सेवा प्रवाहमा शहरी सुशासन प्रवर्द्धन गर्ने ।     | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ठूला शहरी पूर्वाधार संरचनाको अन्तरप्रदेश स्तरमा समतामूलक तथा विविधतापूर्ण विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. देशका घोषित २९३ वटै नगरपालिकामा शहरी योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनका लागि चाहिने स्रोत तथा जनशक्ति व्यवस्थापनका लागि शहरी योजनाकार, वास्तुविद्, ईन्जिनियर सम्मिलित प्राविधिक विभाग स्थापना गर्न पहल गरिनेछ ।</li> <li>३. अव्यवस्थित शहरीकरणलाई नियन्त्रण गर्न नगरपालिकाहरूलाई प्रोत्साहन तथा सहजीकरण गरिनेछ ।</li> <li>४. शहरी गरीबको लागि आवास तथा आधारभूत पूर्वाधार सहितको उचित व्यवस्थापन गरिनेछ ।</li> <li>५. विद्यमान शहरको स्तरीकरण गरी सोही अनुरूप पूर्वाधार तथा सेवाको मापदण्ड तोकी विकास निर्माण कार्यलाई अगाडि बढाइनेछ ।</li> </ol>   |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | ६. शहरी पूर्वाधार निर्माण र सेवा प्रवाहमा प्रभावकारिता अभिवृद्धि गर्न अत्याधुनिक एवम् सूचना प्रविधिलाई अंगीकार गर्दै स्मार्ट शहर निर्माण गरिनेछ ।  |
| ४. काठमाडौं उपत्यकालाई आकर्षक, समृद्ध र वातावरणमैत्री अत्याधुनिक सुविधायुक्त सांस्कृतिक राजधानी शहरको रूपमा विकास गर्ने । | १. काठमाडौं उपत्यकाको ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवम् सांस्कृतिक सम्पदाको जगेर्ना गर्दै संघीय राजधानी शहरको रूपमा संरक्षण र विकास गरिनेछ ।<br>२. काठमाडौं उपत्यकाका सबै स्थानीय तहलाई आधारभूत विशेषता एवम् पहिचान झल्कने गरी सांस्कृतिक शहरको रूपमा विकास गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

२७ वटा नयाँ शहर निर्माण सम्पन्न भएको हुनेछ । सबै नगरपालिकाको एकीकृत शहरी विकास योजना तर्जुमा भएको हुनेछ । तराईका जिल्ला सदरमुकाम रहेका नगरपालिका लगायत कम्तीमा ७० नगरपालिकामा पूर्वाधार निर्माणका कार्य सम्पन्न भएको हुनेछ । तीन वटा स्मार्ट सिटीको निर्माण कार्य शुरु हुने साथै थप १० वटा शहरको अध्ययन कार्य सम्पन्न भएको हुनेछ । काठमाडौं उपत्यकाको ४ स्थानमा नयाँ शहर निर्माण/विस्तारको कार्य शुरु भएको हुनेछ । काठमाडौं उपत्यकाको बाहिरी चक्रपथका लागि जग्गा विकासको माध्यमबाट जग्गा प्राप्ति भएको हुनेछ । बागमती लगायतका नदीनालाको दार्याँबायाँ ढल, कोरिडोर सडक निर्माण तथा हरित पेटी निर्माण भएको हुनेछ ।

#### ८.७ ग्रामीण विकास

##### १. पृष्ठभूमि

ग्रामीण विकास आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक र भौतिक पूर्वाधारको बहुपक्षीय परम्परागत समाजबाट आधुनिक ढाँचामा सामाजिक रूपान्तरण हुने विकास प्रक्रिया हो । नेपालमा ग्रामीण विकासको अवधारणा वि.सं.२००७ सालको प्रजातन्त्रको उदयसँगै शुरु भए तापनि सामाजिक परिवर्तन र योजनाबद्ध ग्रामीण विकासको प्रयास भने २०१३ सालको पहिलो योजनादेखि शुरु भएको मानिन्छ । नेपालमा त्रिभुवन ग्रामीण विकासको कार्यक्रमसँगै एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम, कृषि सडक कार्यक्रम, ग्रामीण पूर्वाधार विकास कार्यक्रम, ग्रामीण पहुँच कार्यक्रम, गरीबी निवारण कार्यक्रम, दुर्गम तथा विशेष क्षेत्र विकास कार्यक्रम, ग्रामीण सामुदायिक पूर्वाधार तथा विकेन्द्रित ग्रामीण विकास कार्यक्रम निरन्तर रूपमा सञ्चालन हुँदै आएका छन् । यस परिपेक्षमा योजनाबद्ध विकासको प्रयासबाट नेपालको ग्रामीण विकास, भौतिक पूर्वाधार निर्माण लगायत सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रमा उल्लेखनीय विकास र प्रगति हासिल भएको छ । नागरिकको बढ्दो आकांक्षा, प्रविधिको प्रयोग र विश्वव्यापीकरणको प्रभावका कारण प्राप्त उपलब्धिबाट सन्तोष मान्न सकिने अवस्था छैन । उत्पादन र उत्पादकत्वमा वृद्धि, रोजगारीका अवसर सिर्जना, स्थानीय

उत्पादनलाई बजारसँगको आबद्धता, सीमान्तकृत समूहका नागरिकको अर्थपूर्ण सहभागिता र विकासको प्रतिफलको समन्यायिक वितरणका माध्यमबाट शहर र ग्रामीण क्षेत्रको विकासको अन्तरआबद्धता अभिवृद्धि गर्ने गुणस्तरीय जीवनको सुनिश्चितता गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ ।

## २. प्रमुख समस्या

ग्रामीण आवश्यकता र प्राथमिकताका आधारमा पूर्वाधार विकास हुन नसक्नु, निर्माण सम्पन्न पूर्वाधारको गुणस्तर एवम् दिगोपना कायम हुन नसक्नु, छरिएको बस्तीका कारण पूर्वाधार विकास खर्चिलो हुनु, दुर्गम क्षेत्र र भौगोलिक जटिलताका कारण पूर्वाधार विकासमा राष्ट्रिय सन्तुलन कायम गर्न नसक्नु र ग्रामीण विकासमा विनियोजित स्रोत र लगानीको महत्तम उपयोग हुन नसक्नु प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

छरिएको बस्ती र दुर्गम क्षेत्रमा रहेका नागरिकका आधारभूत आवश्यकता पूरा गर्नु, निर्मित पूर्वाधारको लागतको तुलनामा अधिक लाभ हासिल गरी पूर्वाधार विकासको औचित्य पुष्टि गर्नु, स्थानीय पूर्वाधारको छनोट, निर्माण र व्यवस्थापनमा सरोकारवालाको सहयोग, सहभागिता एवम् अपनत्व स्थापित गर्नु, ग्रामीण पूर्वाधारको गुणस्तर तथा दीगोपना कायम गर्नु, स्थानीय सेवाप्रवाहमा सहजता ल्याउनु, अत्यावश्यक पूर्वाधार विकासका लागि वित्तीय स्रोतको व्यवस्थापन गर्नु, एकीकृत बस्ती विकासको अवधारणालाई कार्यान्वयनमा ल्याउनु, स्थानीय पूर्वाधार विकासका लागि आवश्यक दक्ष प्राविधिक जनशक्तिको आपूर्तिमा सहजता ल्याई कार्यक्षेत्रमा टिकाई राख्नु, संघीय शासन प्रणाली अनुसार क्षमता विकास गर्नु र निर्मित पूर्वाधारलाई प्राकृतिक जोखिमबाट सुरक्षित राख्नु जस्ता चुनौती यस क्षेत्रमा रहेका छन् ।

निर्वाचित स्थानीय जनप्रतिनिधिको उपस्थितिले ग्रामीण विकासमा जनसहभागिता र अपनत्व वृद्धि हुनु, स्थानीय पूर्वाधार विकासमा स्थानीय तहको अगुवाई बढ्नु र योजनाबद्ध पूर्वाधार विकासका लागि पर्याप्त सम्भावना रहनु, शहरीकरणसँगै नगरपालिकाको विस्तार र विकास हुनु, वैदेशिक रोजगारबाट फर्केका युवालाई आकर्षित गर्ने कार्यक्रममा विस्तार हुनु जस्ता अवसर रहेका छन् ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

आधुनिक आधारभूत मापदण्ड र पूर्वाधार सहितका ग्रामीण बस्ती ।

### ४.२ लक्ष्य

ग्रामीण अर्थतन्त्र र सामाजिक विकासमा सघाउ पुग्ने गरी ग्रामीण पूर्वाधार निर्माण एवम् विकास गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. सन्तुलित र दिगो ग्रामीण पूर्वाधार विकास गर्नु ।

२. ग्रामीण जीवनलाई सरल, सहज र उत्पादनमूलक बनाउनु ।
३. बसाइँसराइलाई व्यवस्थित र न्यूनीकरण गर्दै गुणस्तरीय जीवनको प्रवर्द्धन गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. ग्रामीण विकास गुरूयोजनामा आधारित पूर्वाधार विकास तथा स्थानीय स्रोत-साधन र प्रविधिमा आधारित उत्पादनशील पूर्वाधार विकास, व्यवस्थापन र दिगोपनामा प्राथमिकता दिने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ग्रामीण विकासको गुरूयोजना तयार गर्न एक विज्ञ समूह गठन गरिने र प्राप्त प्रतिवेदनको आधारमा एक वर्षभित्र गुरूयोजना निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</li> <li>२. यथासम्भव स्थानीय स्रोत-साधन र प्रविधिमा आधारित र स्थानीय जनताको सक्रिय सहभागितामा क्षेत्रगत प्राथमिकता निर्धारण हुने गरी ग्रामीण पूर्वाधारको विकासमा ध्यान दिइनेछ ।</li> <li>३. मागमा आधारित एवम् लाभग्राही समुदायको प्रत्यक्ष सहभागितामा आयोजना छनोट, सञ्चालन र दिगो व्यवस्थापनका लागि सरोकारवालाको क्षमता विकास गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| २. आधारभूत सेवामा सबैको पहुँच सुनिश्चित हुने गरी स्थानीय संभाव्यताको आधारमा क्षेत्रगत प्राथमिकता निर्धारण गर्ने र ग्रामीण पूर्वाधारको विकास गर्ने।स्थानीय पूर्वाधार विकासको माध्यमद्वारा सेवाप्रवाहलाई मितव्ययी र प्रभावकारी बनाउने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ग्रामीण क्षेत्रको आर्थिक रूपान्तरणका लागि कृषिको आधुनिकीकरण तथा व्यवसायीकरण, पर्यटन प्रवर्द्धन, (पर्या-पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन) वनको संरक्षण तथा व्यवस्थापन र परम्परागत तथा प्रविधिजन्य उद्योगको स्थापना र विस्तारमा लगानी वृद्धि गर्दै ग्रामीण विकासका पूर्वाधार निर्माण, विकास तथा विस्तार गरिनेछ ।</li> <li>२. ग्रामीण क्षेत्रको सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूपान्तरणको लागि शिक्षा र स्वास्थ्य क्षेत्रमा लगानी वृद्धि र गुणस्तरमा सुधार गर्दै परम्परागत मूल्य, मान्यता र संस्कृतिको संरक्षण र प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li> <li>३. ग्रामीण क्षेत्रको राजनैतिक र प्रशासनिक रूपान्तरणको लागि ग्रामीण नागरिकको सक्रिय सहभागिता, सशक्तीकरण, समानुपातिक प्रतिनिधित्व र समावेशीकरणका कार्यक्रमलाई विकासका कार्यक्रमसँग आन्तरिकीकरण गरिनेछ ।</li> <li>४. शहरी क्षेत्रको प्रविधिमैत्री विकास र दक्ष जनशक्ति हस्तान्तरण गरी ग्रामीण क्षेत्रको श्रमशक्ति, मौलिक र स्थानीय ज्ञान, सीप र प्रविधिको प्रवर्द्धन र संरक्षणमा जोड दिइनेछ ।</li> </ol> |
| ३. आय-आर्जन र रोजगारी सुनिश्चितता गर्दै बसाइँसराइलाई व्यवस्थित र न्यूनीकरण गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ग्रामीण पर्यटन, सहकारिताको प्रवर्द्धन, स्थानीय मौलिक उत्पादन, प्राकृतिक स्रोतको उपयोग, बजार विस्तार र स्मार्ट भिलेजको विकास मार्फत गुणस्तरीय जीवनमा जोड दिइनेछ ।</li> </ol>   |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>२. ग्रामीण वातावरणलाई बिथोल्न नदिई जनताको माग र आवश्यकता बमोजिमका सुविधाको व्यवस्थापन र गाउँ-शहर बीचको अन्तरनिर्भरतालाई सम्बोधन गर्दै सेवा प्रवाहलाई सहज, सरल र मितव्ययी बनाइनेछ ।</p> <p>३. श्रममूलक प्रविधिको अनुशरण, स्थानीय श्रम सीप र साधनको उपयोग, स्थानीय उद्योग र उद्यमशीलताको प्रवर्द्धन जस्ता कार्यक्रम सञ्चालन गरी बसाइँसराइलाई व्यवस्थित गरिनेछ ।</p> |
| <p>४. जोखिमयुक्त बस्तीको व्यवस्थापन गरी नदी किनारा, भीरपाखा र खेतीयोग्य ठाउँमा हुने बस्ती विस्तारलाई निरूत्साहित गर्ने ।</p> | <p>१. स्थानीय तहबाट जोखिमयुक्त स्थानको पहिचान गरी ती ठाउँमा हुन सक्ने बस्ती विस्तार कार्यलाई निरूत्साहित गर्न कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. सुरक्षित स्थानको पहिचान गरी त्यस्ता ठाउँमा व्यवस्थित र भरपर्दो बस्ती विकासको कार्यलाई अघि बढाइनेछ ।</p>   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

ग्रामीण विकासको गुरुयोजना तर्जुमा भई कार्यान्वयनमा आएको हुनेछ । गुणस्तरीय शिक्षा, स्वास्थ्य, खानेपानी, विद्युत र सरसफाई जस्ता आधारभूत सेवाको साथै न्याय र मानव अधिकारको सेवामा सबैको पहुँच सुनिश्चित हुने गरी ग्रामीण पूर्वाधारको विकास भएको हुनेछ । स्थानीय स्रोत-साधन, सीप र प्रविधिमा आधारित उत्पादनशील पूर्वाधारको निर्माण भएको हुनेछ । योजना छनोट, सञ्चालन तथा त्यसको दिगो व्यवस्थापनमा जनसहभागिताको उच्चतम परिचालन भएको हुनेछ । अर्थतन्त्रमा टेवा पुग्ने किसिमले ग्रामीण पर्यटनको प्रवर्द्धन भएको हुनेछ । स्थानीय सेवा प्रवाह गुणस्तरीय, मितव्ययी र प्रभावकारी भएको हुनेछ । उद्यमशील कार्यक्रम मार्फत बसाइँसराइको दिगो व्यवस्थापन भएको हुनेछ ।

#### ६.८ आवास तथा बस्ती विकास

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले आवासको हकलाई मौलिक हकको रूपमा अंगीकार गरी सबै नागरिकको सुरक्षित, उपयुक्त र वातावरणमैत्री आवासको अधिकारको सम्मान, संरक्षण तथा परिपूर्ति गर्ने तथा आवासबिहीन नागरिकलाई आवास सुविधा उपलब्ध गराउने व्यवस्था गरेको छ । साथै, संविधानले अव्यवस्थित बसोबासलाई व्यवस्थापन गर्न योजनाबद्ध व्यवस्थित बस्ती विकास गर्ने नीतिगत व्यवस्था समेत गरेको छ । सरकारले नीतिगत तथा कानुनी व्यवस्थाबाट सामाजिक सुरक्षासँग आबद्ध गरी नागरिकको सुरक्षित आवासको हकको प्रत्याभूति गरेको छ । त्यस्तै, विकट, विपद्को

उच्च जोखिमयुक्त स्थानमा छरिएर बसेका घर परिवारलाई नजिकको सुरक्षित स्थानमा आर्थिक रूपले स्वावलम्बन हुने गरी एकीकृत बस्तीमा स्थानान्तरण गर्नुपर्ने अवस्था रहेको छ ।

वि.सं. २०६८ को जनगणना अनुसार कुल ५४ लाख परिवारमध्ये ८५ प्रतिशत आफ्नै स्वामित्वको, १३ प्रतिशत भाडाको घरमा बस्ने गरेको देखिन्छ । आवासको हक अन्तर्गत वि.सं. २०८० सम्ममा करिब २० लाख आवास एकाई निर्माण गर्नुपर्ने देखिएका मध्ये करिब ४ लाख आवास एकाई विपन्न, लोपोन्मुख तथा सिमान्तीकृत वर्गको लागि आवश्यक देखिन्छ । आ.व. २०७४/७५ सम्ममा जनता आवास कार्यक्रम अन्तर्गत विपन्न, लोपोन्मुख तथा सीमान्तीकृत वर्गको लागि १७ हजार आवास एकाई निर्माण सम्पन्न भइसकेको र ३८ हजार एकाई निर्माणाधीन रहेका छन् भने आ.व. २०७५/७६ मा करिब २० हजार परिवारको लागि सुरक्षित नागरिक आवास निर्माण शुरू गरिएको छ ।

## २. प्रमुख समस्या

एकीकृत तथा योजनाबद्ध बस्ती विकासमा पर्याप्त सहजीकरण हुन नसक्नु, असुरक्षित बस्ती र कमजोर आवास संरचनाका कारण वर्षेनी ठूलो धनजनको क्षति हुनु, व्यक्तिगत प्रयासबाट आवास निर्माण गर्ने परम्परा खर्चिलो र धान्न नसक्ने हुँदै गएको र निजी क्षेत्रबाट निर्माण भइरहेका सामूहिक तथा बहुतल्ले संयुक्त आवास एकाई न्यून आय वर्ग तथा शहरी गरीबको पहुँच पुग्न नसक्नु, सामूहिक आवास कार्यक्रममा जनमानसको आकर्षण कम रहनु र कम गुणस्तरका निर्माण सामग्रीको प्रयोग हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

विकट र विपद्को उच्च जोखिमयुक्त असुरक्षित स्थानमा छरिएर रहेका बस्तीलाई वैज्ञानिक भू-उपयोगमा आधारित रही एकीकृत बस्ती विकास गर्नु, स्थानीय निर्माण सामग्रीको प्रयोग गरी सुरक्षित तथा कम लागतका आवास निर्माण गर्नु, न्यून आय, सिमान्तीकृत तथा विपद् जोखिममा रहेका वर्ग र शहरी गरीबका लागि आवास सुविधा उपलब्ध गराउनु र सामूहिक आवासका कार्यक्रममा निजी क्षेत्रलाई आकर्षित गर्नु प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन् ।

आवासको अधिकार सम्बन्धी ऐन, २०७५ लागु हुनु, नेपाल सरकारबाट अति विपन्न, लोपोन्मुख र सिमान्तीकृत जातजातिका लागि सुरक्षित नागरिक आवास र जनता आवास कार्यक्रम सञ्चालन हुनु, वि.सं. २०७२ को विनाशकारी भूकम्प पश्चात सुरक्षित आवास निर्माणमा जनचेतनाका साथै प्राविधिक क्षमता अभिवृद्धि हुनु, निजी क्षेत्रबाट योजनाबद्ध आवास तथा जग्गा विकासमा लगानी बढ्नु, सहकारी एवम् कल्याणकारी कोषको रकम व्यवस्थित आवास निर्माणमा अभिप्रेरित हुनु, विकट र विपद्को उच्च जोखिमयुक्त बस्ती स्थानान्तरण तथा एकीकृत बस्ती विकास तयार हुनु, पेसागत विविधतामा आएको परिवर्तन र विप्रेषणको कारण पारिवारिक आम्दानीमा भएको वृद्धिले शहरीकरणको आवश्यकता र सम्भावना बढ्नु प्रमुख अवसरका रूपमा लिन सकिन्छ ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

सुलभ, सुरक्षित, उत्थानशील र एकीकृत आवास तथा बस्ती ।

## ४.२ लक्ष्य

एकीकृत योजनाबद्ध बस्ती विकासको माध्यमबाट नागरिकको लागि दिगो र उत्थानशील आवास व्यवस्था गर्ने ।

## ४.३ उद्देश्य

१. सबै आय वर्गका निम्ति उपयुक्त, सुरक्षित, वातावरणमैत्री, सुलभ र उत्थानशील आवास निर्माण तथा स्तरोन्नति गर्नु ।
२. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको समन्वय र सहकार्यमा एकीकृत बस्ती विकास गर्नु ।

## ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. संघीय, प्रादेशिक र स्थानीय तहको क्षेत्रगत भूमिका स्पष्ट पाउँदै संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"><li>१. आवास तथा बस्ती विकास क्षेत्रमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको भूमिका स्पष्ट पारी सुशासन कायम गर्न आवश्यक नीति, ऐन, नियमावली, कार्यविधि तर्जुमा एवम् परिमार्जन गर्दै स्थानीय तहको क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li><li>२. अव्यवस्थित पुराना घना बस्तीलाई पुनरुत्थान गरिनेछ ।</li><li>३. आवास तथा पूर्वाधार सेवाको विकास र विस्तारमा स्थानीय तह, निजी क्षेत्र तथा स्थानीय जनसहभागितालाई प्रोत्साहित गरी एकीकृत रूपमा कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li><li>४. निजी क्षेत्रबाट सञ्चालन भइरहेको आवास तथा जग्गा विकास कम्पनीलाई काठमाडौं उपत्यका बाहिरका शहरी क्षेत्रमा पनि विस्तार गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ ।</li><li>५. शहरी क्षेत्रहरूमा बढ्दो आवासको मागलाई परिपूर्ति गर्न संयुक्त र मिश्रित आवास निर्माणलाई प्रोत्साहित गर्न विद्यमान नीतिहरूमा पुनरावलोकन गरिनेछ ।</li><li>६. सरकारी निकायको संलग्नतामा भाडाको आवास सरल रूपमा उपलब्ध हुने व्यवस्था गरी अस्वस्थकर बस्ती विकासलाई नियन्त्रण गरिनेछ ।</li><li>७. सरल ऋण, अनुदान र वित्तीय सम्भावनाको अध्ययन गरी नगर विकास कोष लगायतका शहरी विकासको क्षेत्रमा क्रियाशील वित्तीय निकायहरूले आवास लगानी प्रवर्द्धन तथा परिचालन गर्न नीति एवम् मापदण्ड तयार गरी लागू गरिनेछ ।</li></ol> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| २. भौगोलिक रूपमा विकट, विकासको लागि बाधक, अपायक र विपद्को उच्च जोखिमयुक्त स्थानमा रहेका बस्तीहरूलाई निरुत्साहित गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>देशभरी रहेका भौगोलिक रूपमा विकट, विकासको लागि बाधक, अपायक र विपद्को उच्च जोखिमयुक्त स्थान तथा चुरे क्षेत्रमा रहेका बस्तीहरू तथा स्थानान्तरण गर्न सकिने नजिकको सुरक्षित बस्ती पहिचान तथा विकास गरी स्थानान्तरण गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</li> <li>घनत्व र जनसंख्याका आधारमा आधारभूत सेवा सुविधा सहितको एकीकृत बस्ती विकास गरिनेछ ।</li> <li>शारीरिक अपाङ्गता भएका व्यक्ति, ज्येष्ठ नागरिक लगायत विपद्को उच्च जोखिममा रहेका व्यक्तिका लागि विशेष सामाजिक आवासको विकास गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ३. वातावरणीय दृष्टिले सन्तुलित, वित्तीय दृष्टिले सम्भाव्य र प्राविधिक दृष्टिले उपयुक्त एवम् सुरक्षित तथा व्यवस्थित एकीकृत बस्तीहरूको विकास गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>बसोबासको लागि नयाँ जग्गाको विकास गर्दा पूर्वाधार सेवाको निर्माण र वितरण व्यवस्था सकभर न्यूनतम लागतमा सम्पन्न गराउने उपयुक्त प्रविधि र डिजाइनलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</li> <li>सार्वजनिक-निजी साझेदारी लगायत लगानीका वैकल्पिक स्रोतहरू पहिचान गरी न्यून लागत प्रविधि तथा स्थानीय निर्माण सामग्री प्रयोग गरी न्यून लागतका आवास एकाई तथा आवास निर्माण गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ४. कमजोर आर्थिक अवस्थामा रहेका, दलित, मुस्लिम, लोपोन्मुख र सीमान्तीकृत जातजाति तथा समुदाय एवम् विपद्को उच्च जोखिममा रहेका नागरिकका लागि सुरक्षित, किफायती र वातावरणमैत्री आवासको व्यवस्था गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>अति विपन्न, लोपोन्मुख र अति सीमान्तीकृत जातजाति, समुदाय र शहरी गरिबको लागि सुरक्षित आवास उपलब्ध गराइनेछ ।</li> <li>सहकारी आवास निर्माणलाई प्राथमिकताका साथ अगाडि बढाइनेछ ।</li> </ol>  |
| ५. जमिनको प्रभावकारी उपयोग हुने गरी आवासको लागि आवश्यक जग्गा लगायत योजनाबद्ध भौतिक पूर्वाधार सेवाको एकीकृत रूपमा विकास गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>एकीकृत बस्ती विकास गर्न जग्गा प्राप्ति व्यवस्थालाई सरल बनाइनेछ ।</li> <li>स्वयम् आवास निर्माण गर्न चाहने परिवारहरूको निमित्त विकसित घडेरी जग्गाको आपूर्तिमा वृद्धि गर्न स्वीकृत मापदण्डका आधारमा शहरी क्षेत्रमा पनि निजी क्षेत्रको संलग्नता</li> </ol>   |

| रणनीति | कार्यनीति  |
|--------|--|
|        | <p>वा सहकार्यमा जग्गा एकीकरण कार्यक्रम तथा अन्य प्रकारका जग्गा विकास योजना र कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>३. हाल शहरी विकास तथा भवन निर्माण विभाग अन्तर्गत रहेको जग्गा विकास चक्रकोषको क्षेत्राधिकार वृद्धि गरी राष्ट्रिय स्तरको स्वायत्त निकायको रूपमा जग्गा तथा आवास विकास कोषको स्थापना गरिनेछ ।</p> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्य सम्ममा सुरक्षित (भवन आचार संहिताको मापदण्ड अनुसार निर्मित) आवासमा बसोबास गर्ने जनसंख्या ३७.८ प्रतिशतबाट ६० प्रतिशत पुगेको र आफ्नै स्वामित्वको आवासमा बसोबास गर्ने परिवार ८५.३ प्रतिशतबाट ८९ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । विभिन्न तहका सरकार तथा निजी क्षेत्र समेतको सहभागितामा १० लाख आवास एकाई तथा १ लाख आवासीय फ्ल्याट निर्माण भएको हुने, अव्यवस्थित बस्ती व्यवस्थापन गर्न शहरी गरीबको लागि शहरमा ५ हजार आवास एकाईको निर्माण भएको हुने, प्रत्येक प्रदेशमा कम्तीमा ५/५ वटाको दरले ३५ वटा एकीकृत बस्ती विकास भएको हुनेछ ।

## ८.९ भवन निर्माण

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको अवस्थिति भूकम्प लगायत बहुविपद् जोखिमयुक्त रहेकोले विपद् पूर्वतयारी कार्यलाई अभिवृद्धि गरी प्रभावकारी प्रतिकार्य र पुनर्लाभ हासिल गर्न तथा पुनर्स्थापना र पुनर्निर्माण कार्यमा "विल्ड ब्याक बेटर" को अवधारणा अनुसार भवन निर्माण गर्नु आवश्यक छ । वि.सं. २०७२ वैशाखको विनाशकारी भूकम्प र यसले पुऱ्याएको क्षतिलाई समेत मध्यनजर गरी राष्ट्रिय भवन संहितालाई कडाइका साथ कार्यान्वयन गर्नु, राष्ट्रिय भवन संहिता समय सापेक्षिक रूपमा निर्माण तथा परिमार्जन गर्नु र हाल रहेका भवनको जोखिम परीक्षण गरी आवश्यकतानुसार सबलीकरण गर्नु उत्तिकै जरुरी रहेको छ । वातावरणीय दृष्टिले स्वच्छ, वित्तीय दृष्टिले सम्भाव्य र प्राविधिक दृष्टिले उपयुक्त र सुरक्षित भवन निर्माण प्रविधिको प्रयोगलाई प्रोत्साहन गर्नुको साथै परम्परागत निर्माण प्रविधि तथा वास्तुकलाको जगेर्ना गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ । भवनको प्रचलित डिजाइन र निर्माण प्रविधिमा समयानुकूल परिमार्जन गर्नु जानु जरुरी रहेको छ ।

### २. प्रमुख समस्या

वि.सं. २०७२ सालको भूकम्पपश्चात् सुरक्षित भवन निर्माणमा जागरुकता वृद्धि भए पनि सुरक्षित भवन निर्माणले संस्थागत रूप लिन नसक्नु, गुणस्तरीय निर्माण सामग्रीको आपूर्ति व्यवस्था कमजोर हुनु, राष्ट्रिय भवन संहिता पालनामा सरोकारवालाको अपेक्षित सहभागिता नहुनु, स्थानीय तहहरूमा राष्ट्रिय भवन संहिता कडाइका साथ लागू गर्न

प्राविधिक जनशक्ति पर्याप्त मात्रामा नहुनु र कम लागतका नयाँ निर्माण प्रविधिबारे पर्याप्त अध्ययन अनुसन्धान नहुनु प्रमुख समस्या रहेका छन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

भवन निर्माणका लागि निर्माण सामग्रीको गुणस्तरमा सुधार ल्याउन आवश्यक अनुसन्धान गरी नर्म्स र मापदण्ड तयार गर्नु र समयानुकूल नयाँ प्रविधिहरूको प्रयोग गर्नु, राष्ट्रिय भवन संहिताको समयानुकूल परिमार्जन गरी सम्पूर्ण भवन सुरक्षित तवरले निर्माण गर्नु, एकीकृत सरकारी भवनको निर्माण एवम् व्यवस्थापनको कार्य एकद्वार प्रणालीबाट सम्पादन गराउनु, दिगो तथा वातावरणमैत्री नवीनतम भवन निर्माण प्रविधि प्रयोग गराउनु, परम्परागत सीप, निर्माण प्रविधि तथा वास्तुकलाको जगेर्ना गर्नु र नयाँ निर्माण प्रविधि सम्बन्धी अध्ययन अनुसन्धान तथा तालिम व्यवस्था गर्नु प्रमुख चुनौती हुन् ।

राष्ट्रिय भवन संहिता प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्न सबै क्षेत्रको प्रतिबद्धता हुनु, सुरक्षित र भूकम्प प्रतिरोधी भवन निर्माण सम्बन्धी जनचेतना अभिवृद्धि हुनु, नयाँ प्रविधिको सुरक्षित भवन पुनर्निर्माणको लागि डिजाइन क्याटलग तयार हुनु, पुनर्निर्माणको क्रममा सरकारबाट गाउँगाउँमा प्राविधिक सेवा उपलब्ध गराइनु, सरकारी भवनको निर्माण, मर्मतसंभार, रेखदेख र सुरक्षा सम्बन्धमा एकीकृत सरकारी कार्यालय भवन निर्माण सम्बन्धी नीतिगत निर्णय हुनु र भवन मर्मत सूचना प्रणाली सफ्टवेयर विकास गरिनु प्रमुख अवसर हुन् ।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सुरक्षित, किफायती र वातावरणमैत्री भवन ।

#### ४.२ लक्ष्य

सुरक्षित, आकर्षक, किफायती र वातावरणमैत्री भवन निर्माण, स्तरोन्नति तथा सुधार गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

- भवन निर्माणमा उपयुक्त आधुनिक प्रविधि र स्थानीय वास्तुकलाको मिश्रणबाट नयाँ निर्माण सामग्रीको प्रयोग समेतलाई प्रोत्साहन गरी सुरक्षित, टिकाउ, सुलभ र किफायती भवनहरूको निर्माण गर्नु ।
- एकीकृत सरकारी भवन डिजाइन, निर्माण, प्रयोग तथा मर्मत-संभार सम्बन्धमा एकद्वार नीति सहित भवन क्षेत्रको संस्थागत तथा कानुनी संरचनाको सुधार गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. संस्थागत क्षमता विकास गर्दै सरकारी कार्यलाई सेवामूलक | १. राष्ट्रिय भवन संहिताको समय सापेक्ष परिमार्जन तथा आवश्यकता अनुसार नयाँ भवन संहिता निर्माण तथा प्रभावकारी कार्यान्वयनमा जोड दिइनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| तथा कार्यमूलक बनाउन एकीकृत सरकारी भवनको निर्माण गर्ने ।   | <p>२. भवन संहिताको अनुगमन संयन्त्रलाई कार्यक्षेत्र तोक्यो प्रदेश र स्थानीय तहमा विस्तार गरिनेछ।</p> <p>३. भवन डिजाइन, निर्माण तथा सुपरीवेक्षण कार्यमा संलग्न जनशक्तिको क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>४. स्थानीय प्रविधि र उपलब्ध निर्माण सामग्रीहरूको प्रयोगलाई प्राथमिकता दिई प्रचलित भवन डिजाइन र प्रविधिको लागि आवश्यक मापदण्ड विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. घर-जग्गा बहाललाई व्यवस्थित गर्न र निजी तथा सरकारी लगानीमा 'बहाल भवन' निर्माण र सञ्चालन गर्न घर-जग्गा बहाल सम्बन्धी कानून तथा मापदण्डको निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>६. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा प्रशासनिक सेवा सहज र मितव्ययी बनाउन प्रशासनिक प्लाजा एवम् सेवाग्राहीमैत्री एकीकृत सरकारी भवन निर्माण गरिनेछ ।</p> <p>७. सरकारी भवनको एकीकृत लगत तयार गरिनेछ ।</p> |
| २. एकीकृत सरकारी भवन डिजाइन, निर्माण, प्रयोग तथा मर्मत-संभार सम्बन्धमा एकद्वार नीति सहित भवन क्षेत्रको संस्थागत तथा कानुनी संरचनाको सुधार गर्ने । | <p>१. निर्माणको क्षेत्रमा प्रयोग हुन सक्ने अझ किफायती, सुरक्षित र वातावरणमैत्री निर्माण सामग्री र नवीनतम प्रविधिको प्रवर्द्धनका लागि नियमित अनुसन्धान र विकास कार्यमा शैक्षिक प्रतिष्ठानलाई परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>२. बहुतल्ले भवन निर्माण सम्बन्धी प्रविधिबारे अनुसन्धान तथा विकास गरी यस्ता भवन निर्माण गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>३. सरकारी तथा निजी स्तरबाट नयाँ भवन निर्माण गर्दा परम्परागत प्रविधि र स्थानीय वास्तुकलालाई प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>४. पुरातात्विक महत्त्वका भवन निर्माण गर्दा परम्परागत निर्माण प्रविधि र वास्तुकलाको जगेर्ना गरिनेछ ।</p>   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

सबै प्रदेशको प्रादेशिक राजधानीका प्रशासनिक भवनहरू एकीकृत सेवा केन्द्रको रूपमा निर्माण भएको हुनेछ । समय सापेक्षित रूपमा हाल रहेका सबै राष्ट्रिय भवन संहिताहरू परिमार्जन र आवश्यकतानुसार नयाँ राष्ट्रिय भवन संहिता निर्माण भएको हुनेछ । सबै स्थानीय तहमा राष्ट्रिय भवन संहिता प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयनका साथै राज्यकका तीन तहमा एकीकृत सरकारी भवन निर्माण भएको हुनेछ । नयाँ निर्माण प्रविधि तथा निर्माण सामग्री सम्बन्धी अनुसन्धान तथा विकास केन्द्र स्थापना भएको हुनेछ । पुरातात्विक महत्त्वका भवनको परम्परागत निर्माण प्रविधि र वास्तुकला अनुसार पुनर्निर्माण भएको हुनेछ ।

## ८.१० पुनर्निर्माण

### १. पृष्ठभूमि

नेपालमा २०७२ साल वैशाख १२ को विनाशकारी भूकम्प तथा तत्पश्चात्का पराकम्पका कारण पूर्वी तथा मध्य नेपालका १४ जिल्ला गम्भीर र १८ जिल्ला आंशिक रूपमा प्रभावित भई ठूलो परिमाणमा धनजनको क्षति हुन पुग्यो। उक्त भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त भौतिक संरचनाको पुनर्निर्माण गर्न गराउन नीतिगत, कानुनी र संस्थागत संरचनाको व्यवस्था गर्ने क्रममा राष्ट्रिय पुनर्निर्माण प्राधिकरणको गठन भई भूकम्पबाट भएको क्षति एकिन गरी सोही आधारमा सरकारी संरचना, निजी आवास, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक सम्पदाको पुनर्निर्माण तथा जोखिमयुक्त बस्ती स्थानान्तरण, एकीकृत बस्ती विकास साथै पुनर्स्थापना सम्बन्धी कार्य भइरहेका छन्। पुनर्निर्माण सम्बन्धी कार्य क्रमशः स्थानीय तहमा हस्तान्तरण गर्दै उक्त तहको अपनत्व सहित गरी सबैको सहकार्यमा पुनर्निर्माण र पुनर्स्थापनाको कार्य अगाडि बढाउनुपर्ने आवश्यकता टङ्कारो रूपमा देखिएको छ।

### २. प्रमुख समस्या

भूकम्प पीडितको गुनासो व्यवस्थापन गर्नु, स्रोत-साधनको व्यवस्थापनमा समस्या हुनु, सार्वजनिक संरचना निर्माणमा जग्गा सम्बन्धी समस्या हुनु, अन्तरनिकाय समन्वय तथा सहकार्य प्रभावकारी हुन नसक्नु, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक सम्पदा पुनर्निर्माणमा प्रक्रिया र निकायगत अन्यौलता तथा विवाद रहनु, पुनर्निर्माणमा संलग्न कर्मचारीलाई उत्प्रेरणा जगाई स्थायी रूपमा राखी राख्न कठिनाई हुनु र विकास साझेदारबाट प्रतिबद्धता बमोजिमको सहयोग प्राप्ति, प्रयोग र परिचालन हुन नसक्नु प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त निजी आवास एवम् सार्वजनिक भवन, विद्यालय भवन, पुरातात्विक सम्पदा र स्वास्थ्य केन्द्रको पुनर्निर्माणका लागि आवश्यक स्रोत जुटाई तोकिएको समयमै पुनर्निर्माणको काम सम्पन्न गर्नु, पुनर्निर्माणका लागि आवश्यक प्राविधिक जनशक्तिको उपलब्धता र उपयोगको सुनिश्चितता गर्नु, पुनर्निर्माण पछिको पुनर्स्थापनाका लागि भूकम्प पीडितलाई जीविकोपार्जनमुखी कार्यक्रम सञ्चालन गरी जीवनस्तर उकास्नु र स्थानीय तहमा विपद् व्यवस्थापनका लागि आवश्यक नीतिगत व्यवस्था एवम् कार्यान्वयन क्षमता विकास गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्।

पुनर्निर्माणलाई राष्ट्रिय प्राथमिकताको कार्यक्रम अन्तर्गत राखी प्राधिकरण र अन्तर्गतका निकाय मार्फत सम्बोधन गरिनु, स्थानीय एवम् जिल्लास्तरमा पुनर्निर्माण सम्बन्धी सञ्चालित तालिमबाट उत्पादित आवश्यक जनशक्तिलाई परिचालन गर्न सकिने अवस्था रहनु, जोखिम न्यूनीकरण सम्बन्धी अभिमुखीकरण एवम् सचेतीकरणका कार्यक्रम सञ्चालन गरी जनचेतना जगाउने सम्भावना रहनु, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय संघसंस्था, दातृ निकाय एवम् मित्रराष्ट्रबाट सहयोगको प्रतिबद्धता प्राप्त हुनु र स्थानीय तहका निर्वाचित जनप्रतिनिधिबाट पुनर्निर्माणका कार्यको अपनत्व ग्रहण गर्नु प्रमुख अवसर हुन्।

## ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

### ४.१ सोच

सुरक्षित र योजनाबद्ध पुनर्निर्माण ।

### ४.२ लक्ष्य

भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त भौतिक संरचनाको दिगो, सुरक्षित र बहुप्रकोप प्रतिरोधात्मक ढंगले पुनर्निर्माण गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. निजी आवास तथा सार्वजनिक भौतिक संरचनाको शीघ्र पुनर्निर्माण गरी सम्पन्न गर्नु ।
२. जोखिमयुक्त बस्ती स्थानान्तरण, एकीकृत बस्ती विकास एवम् पुनर्स्थापनाको कार्य गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त निजी आवास र सार्वजनिक भौतिक संरचनाहरूको भूकम्प प्रतिरोधी हुनेगरी पुनर्निर्माण र सुधार गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"><li>१. क्षतिग्रस्त संरचनामध्ये बाँकी रहेका भौतिक संरचना प्राथमिकताको आधारमा भूकम्प प्रतिरोधी हुनेगरी शीघ्र र लागतमैत्री प्रबलीकरण तथा पुनर्निर्माण गरिनेछ ।</li><li>२. निजी आवास पुनर्निर्माणका लागि आवश्यक अनुदान वितरण एवम् सहूलियतपूर्ण कर्जा प्रवाहलाई प्रभावकारी बनाई सम्पन्न गरिनेछ ।</li><li>३. धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्पदा एवम् परम्परागत शैलीका निजी आवास पुनर्निर्माण तथा पुनर्स्थापना कार्यमा यथाशक्य स्थानीय सीप, सामग्री र प्रविधिको उपयोग गरिनेछ ।</li><li>४. विश्व सम्पदा सूचीमा सूचीकृत सांस्कृतिक सम्पदाको एकीकृत गुरुयोजनाका आधारमा पुनर्निर्माण सम्पन्न गरिनेछ ।</li><li>५. पुनर्निर्माण तथा पुनर्स्थापना सम्बन्धी कार्य प्रदेश तथा स्थानीय तहसँग सहकार्य र समन्वय गरी सम्पन्न गरिनेछ ।</li></ol> |
| २. जोखिमयुक्त बस्ती स्थानान्तरण एवम् एकीकृत बस्ती विकास गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"><li>१. जोखिमपूर्ण बस्ती स्थानान्तरण एवम् एकीकृत बस्ती विकासको कार्यलाई योजनाबद्ध रूपमा अगाडि बढाउन आवश्यक कानून तर्जुमा गरिनेछ ।</li><li>२. प्रदेश र स्थानीय तहसँग सहकार्य र समन्वय गरी जोखिम न्यूनीकरणका आधारभूत अवधारणा अवलम्बन गरी बस्ती विकास सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li></ol>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ३. भूकम्पपीडित (मूलतः जोखिममा परेका) को जीविकोपार्जनका लागि आय-आर्जनका अवसर सिर्जना गर्ने । | <p>१. भूकम्प पीडितको जीविकोपार्जनका लागि व्यावसायिक कृषि, पशुपालन, पर्यटन, स्थानीय सामग्रीको उत्पादन, परम्परागत कला र कौशलको प्रवर्द्धन सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. भूकम्प पीडितको आय-आर्जनमा सुधारका लागि विभिन्न अल्पकालीन तथा मध्यमकालीन अवधिका निःशुल्क व्यावसायिक सीप विकास तालिम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>३. जोखिममा परेका लाभग्राहीका लागि आवश्यकतामा आधारित आय-आर्जन र जीविकोपार्जनमुखी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> |
| ४. विपद् व्यवस्थापनका लागि स्थानीय तह देखि नै आवश्यक क्षमता र प्रभावकारिता सुदृढ गर्ने ।    | <p>१. सुरक्षित संरचना निर्माणका लागि स्थानीय तहका जनप्रतिनिधि, कर्मचारी तथा जनसाधारणका लागि विभिन्न प्रकारको क्षमता अभिवृद्धि तथा प्रचार-प्रसारको कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. स्थानीय स्तरको पुनर्निर्माण सम्बन्धी क्षमता अभिवृद्धि गर्न प्राविधिक सहायता, तालिम र सहजीकरणको सुविधा उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>३. पुनर्निर्माणबाट प्राप्त ज्ञान, सीप र क्षमता भूकम्प प्रभावित स्थानीय निकायमा हस्तान्तरण गरिनेछ ।</p>                     |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा ५,०५,४२४ निजी आवास, १६७ सार्वजनिक भवन, ३,७३७ विद्यालय भवन, २८६ सुरक्षा निकायका भवन, ५५४ स्वास्थ्य केन्द्र, ६६८ पुरातात्विक सम्पदा र १,३२० गुम्बा पुनर्निर्माण भएका हुनेछन् । भूकम्प पीडित परिवारले आवास निर्माणको लागि अनुदान तथा सरल कर्जा सुविधा प्राप्त गरेको हुने, भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त निजी आवास एवम् सरकारी भौतिक संरचनाको पुनर्निर्माण, मर्मतसंभार तथा प्रवलीकरण भएको हुने, जोखिमपूर्ण बस्तीका बासिन्दाको उपयुक्त स्थानमा स्थानान्तरण भएको हुने, नवीनतम प्रविधि अनुरूप भूकम्प प्रभावित क्षेत्रको पुनर्निर्माण एवम् पुनर्स्थापना सम्बन्धी कार्य सम्पन्न भएको हुने, भूकम्प पीडितलाई जीविकोपार्जनको लागि विभिन्न आय-आर्जनका कार्यक्रम सञ्चालन भएका हुने र भूकम्प प्रभावित स्थानीय तहका जनप्रतिनिधि एवम् कर्मचारीको विपद् व्यवस्थापन सम्बन्धी ज्ञान, सीप र क्षमता अभिवृद्धिका लागि तालिम सञ्चालन भएका हुनेछन् ।



## परिच्छेद – ९

# लोकतन्त्र र सुशासन

### ९.१ राष्ट्रिय एकता

#### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले नेपाललाई बहुजातीय, बहुभाषिक, बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक तथा भौगोलिक विविधतायुक्त विशेषतालाई आत्मसात गरी विविधताबीचको एकता संवर्द्धन गर्ने संकल्प गरेको छ। त्यसैगरी, संविधानले राज्यका नीतिहरू अन्तर्गत नेपालको स्वतन्त्रता, सार्वभौमसत्ता, भौगोलिक अखण्डता र स्वाधीनताको संरक्षण गर्दै राष्ट्रिय एकता अक्षुण्ण राख्ने तथा विभिन्न जात, जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति र सम्प्रदायबीच पारस्परिक सद्भाव, सहिष्णुता र ऐक्यबद्धता कायम गरी संघीय एकाइबीच परस्परमा सहयोगात्मक सम्बन्ध विकास गर्दै राष्ट्रिय एकता प्रवर्द्धन गर्ने नीति अंगीकार गरेको छ। संविधानको यो मूल मर्मलाई आत्मसात गर्दै नेपालमा रहेका विभिन्न जातजाति, भाषा, धर्म, संस्कार र संस्कृतिको जगेर्ना र सम्बर्द्धन गर्न राष्ट्रिय एकता नीति ल्याई सोमार्फत सम्पूर्ण नागरिकहरूबीचको सद्भाव बढाउन विभिन्न प्रयास थालिएको छ।

#### २. प्रमुख समस्या

धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय विविधताभित्र पहिचानको विषयलाई उचित एवम् उपलब्धिमूलक ढङ्गले व्यवस्थापन गर्नु, साम्प्रदायिकता वा अन्य कुनै अतिवादको नाममा हुने घटनाका कारण थप द्वन्द्व र अविश्वासको वातावरण सिर्जना हुने सम्भावना रहनु जस्ता विषय समस्याको रूपमा रहेका छन्।

#### ३. चुनौती तथा अवसर

राष्ट्रिय एकतालाई अक्षुण्ण राख्ने, राष्ट्र र राष्ट्रियता कुनै व्यक्ति समुदाय वा क्षेत्रीयताभन्दा माथि हो भन्ने भावना जागृत गराउनु, सबै वर्ग र समुदायको पहिचान र भावनाको कदर गर्नु, संघीयताको कार्यान्वयनसँगै संघीय शासकीय व्यवस्थामा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका एकाइबीच आ-आफ्नो क्षेत्राधिकार कार्यान्वयन गर्दा सहकारिता, समन्वय र सहअस्तित्वको आधारमा राष्ट्रियता र राष्ट्रिय एकताको भावनालाई सर्वोपरि राखी गर्ने कार्य संस्कृतिको विकास गर्नु चुनौतीपूर्ण रहेको छ।

बहुजातीय, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक तथा भौगोलिक विविधता बीचको एकता कायम राख्ने गरी गरिएको संवैधानिक व्यवस्था, सहकारिता, समन्वय र सहअस्तित्वमा आधारित संघीयताको सुनिश्चतता, नेपालीको नेपाल राष्ट्र निर्माण गर्ने चाहना, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पूर्वाधार एवम् विभिन्न क्षेत्रको विकासको अवसर, जातिगत,

भाषिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवम् धार्मिक विविधता व्यवस्थापनको संवैधानिक व्यवस्था र तीन तहका सरकारबीचको अन्तरआबद्धता अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

राष्ट्रिय एकताको संरक्षण, संवर्द्धन र प्रवर्द्धन ।

##### ४.२ लक्ष्य

बहुल समाजको विशेषतालाई देशको आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकाससँग आबद्ध गर्नु ।

##### ४.३ उद्देश्य

विविधताको उचित सम्बोधन र सम्मान मार्फत राष्ट्रिय एकता सुदृढ बनाउनु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. विविधतायुक्त नेपालको विशेषता र यसका सबल पक्षको सम्बन्धमा नागरिकमा जनचेतना फैलाउने । | १. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको साझा आचारसंहिता निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।<br>२. तीन तह बीच न्यूनतम साझा कार्यक्रम र मापदण्ड बनाइनेछ ।<br>३. नेपालको जातीय, भाषिक, लैंगिक, क्षेत्रीय तथा सांस्कृतिक विविधताको बारेमा विभिन्न संचार माध्यमबाट जानकारीमूलक कार्यक्रमको प्रकाशन, प्रसारण र वितरण गरिनेछ ।<br>४. विद्यालय तथा उच्च शिक्षाका पाठ्यक्रममा नेपालको सामाजिक तथा सांस्कृतिक बनोट र यसका सकारात्मक पक्ष सम्बन्धी विषय समावेश गरिनेछ । |
| २. आपसी सद्भाव र मेलमिलापको माध्यमबाट सभ्य समाज निर्माण गर्न नागरिकलाई प्रेरित गर्ने । | १. समाजमा शान्ति, सुव्यवस्था, आपसी मेलमिलाप र सद्भाव बढाउन प्रत्येक नागरिक जिम्मेवार बन्ने गरी नागरिकलाई उत्प्रेरित हुने किसिमका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. देशको स्वतन्त्रता, सार्वभौमसत्ता तथा राष्ट्रिय एकताको प्रबलीकरण र संघीय एकाइबीच परस्परमा सहयोगात्मक सम्बन्ध विकास गर्दै राष्ट्रिय एकता प्रवर्द्धन गरिनेछ ।<br>३. प्रदेश-प्रदेश तथा स्थानीय तहहरू बीच सहयोग, समन्वय र सहकार्यका लागि उपयुक्त वातावरण निर्माण गरिनेछ ।              |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ३. समाजमा द्वेष र अन्तरद्वन्द्व फैलाउने आन्तरिक तथा बाह्य गतिविधिलाई कानुनी दायरामा ल्याउने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>सामाजिक तथा सांस्कृतिक विविधताका बीचको एकतालाई खल्बल्याउने तथा नागरिकलाई दिग्भ्रमित पार्ने मनसायले संविधान वा कानुनको गलत प्रचार र प्रयोगलाई रोक्न शून्य सहनशीलताको नीति अपनाइनेछ ।</li> <li>राष्ट्रिय हित र राष्ट्रिय एकतामा खलल पुग्ने सामाजिक संजालको प्रयोगलाई निरूत्साहित गरिनेछ ।</li> <li>राष्ट्रिय एकता तथा सामाजिक सद्भाव र सहिष्णुता प्रवर्द्धन हुने क्रियाकलाप पहिचान र सञ्चालन गरी नागरिकसँगको सम्बन्ध थप सौहार्दपूर्ण बनाइनेछ ।</li> </ol> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

मुलुकको स्वतन्त्रता, सार्वभौमसत्ता, भौगोलिक अखण्डता र स्वाधीनताको रक्षा गर्दै सबै जातजाति, धर्म, भाषा, संस्कृति र सम्प्रदायबीच पारस्परिक सद्भाव, सहिष्णुता र ऐक्यबद्धता थप सुदृढ भएको हुने, भौगोलिक विविधताको उचित उपयोग गरी राष्ट्रिय एकता सुदृढ बनाउने कार्यमा सबै नागरिक एकजुट भएको हुने र सामाजिक-सांस्कृतिक रूपले अझ सभ्य तथा परिष्कृत नागरिक तयार भई समृद्ध एवम् सुखी नेपाली समाज निर्माण भएको हुनेछ ।

#### १.२ नेतृत्व निर्माण

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले कानुनको शासन, मौलिक हक तथा मानव अधिकारका मूल्य र मान्यता, लैङ्गिक समानता, समानुपातिक समावेशीकरण, सहभागिता र सामाजिक न्यायको माध्यमबाट राष्ट्रिय जीवनका सबै क्षेत्रमा न्यायपूर्ण व्यवस्था कायम गर्दै लोककल्याणकारी राज्यव्यवस्थाको स्थापना गर्ने, परस्पर सहयोगमा आधारित संघीयताका आधारमा संघीय एकाइ बीचको सम्बन्ध बलियो बनाउने र शासन व्यवस्थामा समानुपातिक सहभागितामूलक सिद्धान्तलाई आत्मसात् गर्दै लोकतान्त्रिक अधिकारको उपभोग गर्न पाउने अवस्था सुनिश्चित गर्न संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक व्यवस्था सुदृढ गर्ने उद्देश्य लिएको छ । मुलुकमा तीन तहको शासन प्रणाली रहने संवैधानिक व्यवस्था बमोजिम सबै तहमा जनहित र देश विकासका लागि इमान्दार एवम् अनुकरणीय नेतृत्वको आवश्यकता रहेको छ । लोकतान्त्रिक राज्य प्रणालीमा सबै जनताको सहभागिता अभिवृद्धि गर्दै राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक र सांस्कृतिक अधिकारको पूर्ण उपयोगको वातावरण सिर्जना गर्ने, युवाको सशक्तीकरण र विकासका लागि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी लगायतका क्षेत्रमा विशेष अवसर प्रदान गर्दै व्यक्तित्व विकास गर्ने तथा राज्यको सर्वांगीण विकासमा योगदानका लागि उपयुक्त अवसर प्रदान गर्ने राज्यको नीति रहेको छ । यस सन्दर्भमा, संविधानले निर्देश गरेका सिद्धान्तमा आधारित भई देश र जनताका लागि परिलक्षित दायित्व पूरा गर्न लोकतान्त्रिक प्रणालीमा अपनत्व र

विश्वास रहने गरी देश विकासका लागि टेवा दिन सक्ने राजनीतिक तथा प्रशासनिक प्रणालीको विकास गर्न जरूरी छ । यसका लागि सम्बन्धित विषयवस्तुको पूर्ण ज्ञान, सबै पक्षलाई समेट्ने सीप र सकारात्मक धारणा सहितको नेतृत्व निर्माण आजको आवश्यकता हो ।

## २. प्रमुख समस्या

असल राजनीतिक तथा प्रशासनिक संस्कारको विकास, संवर्द्धन एवम् प्रवर्द्धन हुन नसक्नु, ईमानदार नेतृत्व निर्माणका सम्बन्धमा राजनीतिक एवम् प्रशासनिक नेतृत्वको भूमिकालाई थप उदाहरणीय बनाउन नसक्नु, नेतृत्व निर्माण तथा नेतृत्व विकासलाई सहयोग पुग्ने सामाजिक वातावरणको अभाव हुनु, राष्ट्रिय विकासमा युवा सहभागिता अभिवृद्धि गर्न युवाको व्यक्तित्व विकास र सशक्तीकरणका लागि अपेक्षाकृत अवसर प्रदान गर्न नसक्नु प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

राजनीतिक प्रणालीमा क्षमतावान र नैतिकवान नेतृत्वको विकास गर्नु, बृहत् नेतृत्व (Meta Leadership) को अभ्यास गर्नु, नेतृत्वमा राष्ट्र र जनताप्रति समर्पण भावको विकास गर्नु, योग्यता र क्षमताका आधारमा नेतृत्व चयन प्रणालीको अभ्यास गर्नु, नेतृत्वलाई निष्ठा, सदाचार, ईमानदारिताको मानकको रूपमा स्थापित गराउनु, युवाको सशक्तीकरणसँगै व्यावसायिक नेतृत्व विकास गर्नु र नेतृत्वमा पनि दण्ड पुरस्कार पद्धति लागू गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन् ।

लोकतान्त्रिक व्यवस्था र संघीय शासन प्रणाली अनुरूप राज्यको तल्लो तहदेखि राजनीतिक अभ्यास गर्ने र नेतृत्व निर्माण गर्ने सक्षम नेतृत्व हुनु, सहभागितामूलक नेतृत्वशैलीको अभ्यास र समावेशी नेतृत्वको अभ्यास बढ्नु, नेतृत्व छनोटमा प्रजातान्त्रिक शैली अवलम्बन गरिनु, राष्ट्रिय विकासका सबै क्षेत्रमा युवा पुस्ताको सहभागिता उल्लेख्य रूपमा बढ्दै जानु, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा सञ्जालीकरण तथा अवसर प्राप्त हुनु र कार्य सम्पादनमा आधारित प्रोत्साहन प्रणाली, कार्य सम्पादन करार सम्झौता लागू गर्ने अभ्यास सुरुआत हुनुलाई अवसरको रूपमा लिन सकिन्छ ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

निष्ठावान, सक्षम, ईमानदार र गतिशील नेतृत्व विकास ।

### ४.२ लक्ष्य

लोकतान्त्रिक मूल्य-मान्यतामा आधारित शासन सञ्चालन, व्यवस्थापन र सर्वाङ्गीण विकासलाई प्रभावकारी रूपमा अगाडि बढाउन सक्षम एवम् कुशल नेतृत्वको विकास गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. मुलुकको सर्वाङ्गीण विकास र सुशासनका लागि राजनैतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, व्यावसायिक लगायत सबै क्षेत्रमा सक्षम तथा कुशल नेतृत्व विकास गर्नु ।
२. विभिन्न तहको नेतृत्वबीचको अन्तर्सम्बन्धलाई प्रगाढ बनाउँदै सहभागितात्मक एवम् सहकार्यात्मक नेतृत्वशैली विकास गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. सक्षम र प्रभावकारी नेतृत्व विकासका लागि योजना तयार गर्ने ।                                     | १. नेतृत्व विकासका लागि क्षेत्रगत रूपमा दीर्घकालीन, मध्यमकालीन तथा अल्पकालीन कार्ययोजना तयार गरी लागू गरिनेछ ।<br>२. पुस्तान्तरण नेतृत्व विकासका लागि उत्तराधिकार योजना (Leadership Succession Plan) बनाई लागू गरिनेछ ।<br>३. सक्षम र क्षमतावान नेतृत्व विकासका लागि कार्य विवरण, अधिकार प्रत्यायोजन, दण्ड-पुरस्कार, प्रशासकीय स्वायत्तता आदिको लागि कानुनी रूपमै व्यवस्था गरिनेछ । |
| २. विभिन्न तहको नेतृत्वबीचको अन्तर्सम्बन्धलाई प्रभावकारी बनाउन साझेदारी र सहकार्यको विकास गर्ने । | १. नेतृत्वबीचको साझेदारी र सहकार्य विकास गर्न सार्वजनिक, निजी, सहकारी र गैरसरकारी संस्थासँग सहकार्य र साझेदारी अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>२. नेतृत्व क्षमता विकासका लागि सरकारी र निजी क्षेत्रबीच अनुभव आदान-प्रदान र प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण (इन्टर्नसीप) कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।  |
| ३. पदमा मात्र आधारित नभई क्षमतामा आधारित नेतृत्व विकासलाई प्राथमिकता दिने ।                       | १. सफल नेतृत्वलाई आदर्श र अनुकरणीय व्यक्तिको रूपमा सम्मान गर्ने संस्कृतिको विकास गरिनेछ ।<br>२. नेतृत्व मूल्याङ्कनको लागि संयन्त्र र पद्धति व्यवस्थित गरिनेछ ।<br>३. सबल र सक्षम नेतृत्व विकासका लागि नेतृत्व विकास सम्बन्धी उपयुक्त वातावरण निर्माण गरिनेछ ।   |

### ५. अपेक्षित उपलब्धि

देशको शासन व्यवस्था प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न सक्ने क्षमतायुक्त र कुशल नेतृत्व निर्माणका लागि आवश्यक योजना र कानून निर्माण भएको हुने, सरोकारवाला निकायसँग समन्वय र सहकार्य गरिएको हुने, सक्षम र सफल नेतृत्व मार्फत देश विकासले गति लिएको हुनेछ ।

## १.३ अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्ध

### १. पृष्ठभूमि

विश्वको राजनीतिक तथा आर्थिक वातावरणमा सारभूत रूपमा परिवर्तनका संकेत देखापरेका छन्। एसिया महादेश विश्वको आर्थिक विकासको केन्द्र बनेको छ भने छिमेकी मित्र राष्ट्रहरू विश्वका दुई ठूला अर्थतन्त्रका रूपमा विकसित हुँदै आएका छन्। राष्ट्रिय हितका आधारभूत उद्देश्य प्राप्त गर्न नेपालले बाह्य आर्थिक सम्बन्धलाई विशेष जोड दिँदै आएको छ। नेपालको आर्थिक कूटनीति मूलभूत रूपमा अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्धलाई मुलुकको समृद्धि र विकासमा परिचालन गर्ने दिशामा केन्द्रित रहेको छ। संविधानद्वारा निर्देशित अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्धको ढाँचाभित्र रही अति कम विकसित मुलुकबाट विकासोन्मुख मुलुकमा स्तरोन्नति हुने, दिगो विकासका लक्ष्यहरू र राष्ट्रिय सोच हासिल गर्नेतर्फ नेपालको अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्धलाई उद्देश्यमूलक रूपमा परिचालन गर्नुपर्नेछ। वातावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन र शान्ति स्थापनामा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा अनुभवको आदानप्रदान गर्नुपर्नेछ।

### २. प्रमुख समस्या

नेपालको अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्धको प्रवर्द्धनमा देखा परेका मुख्य समस्याहरूमा नेपालको विकास प्रयासलाई असर पार्न सक्ने बाह्य राजनीतिक, रणनीतिक एवम् नीतिगत परिवर्तनलाई उपयुक्त तवरले विश्लेषण गरी सम्बोधन गर्न सक्ने जनशक्ति तथा संस्थागत व्यवस्थाको पर्याप्त विकास हुन नसक्नु, बहुस्तरमा सञ्चालन हुने अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्ध अभिवृद्धिका लागि आवश्यक स्रोत तथा साधन सहितको रणनीतिक बाँडफाँटको समन्वय नहुनु, अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्धको सञ्चालनमा आबद्ध हुने निकायहरूका बीचमा सहकार्य र समन्वय प्रभावकारी रूपमा बढाउन नसक्नु, निजी क्षेत्रको कमजोर उत्पादकत्व क्षमताको कारणले अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा उपलब्ध बजार सुविधा पूर्ण उपयोग गर्न नसक्नु, अपेक्षित स्तरमा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी र उपयुक्त प्रविधि भित्र्याउन नसक्नु रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

विश्वको परिवर्तनशील वातावरणमा राष्ट्रिय हित संरक्षण एवम् प्रवर्द्धन गर्ने सक्षम कूटनीतिक क्षमता विकास र विस्तार गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय प्रणालीमा देखापरेका अवसर तथा चुनौती पहिचान गरी यसमा रहेको नीतिगत दायरा (Policy Space) निर्धारण गर्नु, छिमेकी मुलुकले हासिल गरेको विकासबाट लाभ लिनु, मित्र राष्ट्रहरू तथा अन्य विकास साझेदारको सहयोग प्राप्त गर्नका लागि द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय तहमा कूटनीतिक सहभागिता अभिवृद्धि गर्नु, विश्वमा देखा परिरहेका भू-आर्थिक परिवर्तनलाई राष्ट्र विकासको पक्षमा उपयोग गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्धमा देखापरेका अनिश्चितताहरूलाई ध्यान दिँदै अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा वस्तु तथा सेवाको आपूर्ति गर्ने क्षमता अभिवृद्धि गर्नु तथा अतिकम विकसित मुलुकको हैसियतले प्राप्त हुने सुविधाको पूर्ण उपयोग तथा अतिकम विकसित राष्ट्रबाट स्तरोन्नति भएपछि आउन सक्ने असरको न्यूनीकरणका लागि आवश्यक रणनीति विकास गर्नु प्रमुख चुनौती रूपमा रहेका छन्।

हालसम्म १६३ मुलुकसँग नेपालको कूटनीतिक सम्बन्ध कायम भई विदेशका विभिन्न ३९ स्थानमा आवासीय कूटनीतिक नियोग क्रियाशील रहनु, मौलिक शान्ति प्रक्रियाको टुङ्गो लागेर राजनीतिक संक्रमण अन्त्य भएसँगै मुलुकले हासिल गरेको स्थायित्व र स्थिरताबाट अन्तर्राष्ट्रिय जगतमा मुलुकप्रति सकारात्मक दृष्टिकोण र सद्भाव रहनु, नेपालले द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय सम्झौताबाट हासिल गरेको अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा सहज प्रवेश, प्राकृतिक स्रोत-साधन तथा भू-अवस्थितिबाट सिर्जित अन्तर्राष्ट्रिय बजार सम्भावना र विदेशमा रहेका नेपाली जनशक्तिको सीप, क्षमता र अनुभव तथा विप्रेषणको विकासमा अधिकतम परिचालनको सम्भावना यस क्षेत्रका अवसरका रूपमा रहेका छन्।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

समुन्नत र समन्यायिक विकास एवम् राष्ट्रिय सम्मानका लागि अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्ध।

##### ४.२ लक्ष्य

नेपाललाई आकर्षक लगानी तथा पर्यटन गन्तव्य, सन्तुलित एवम् विविधीकृत अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार र आर्थिक अन्तरआबद्धता भएको सुदृढ तथा आत्मनिर्भर अर्थतन्त्रका रूपमा विकास गर्न अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्धको सुदृढीकरण गर्ने।

##### ४.३ उद्देश्य

अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा नेपालको राष्ट्रिय हित प्रवर्द्धन गर्दै तीव्र आर्थिक वृद्धि, गरिबी न्यूनीकरण तथा दिगो विकासका लक्ष्यहरू प्राप्तिका योगदान पुऱ्याउन अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्धको महत्तम परिचालन गर्नु।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. अन्तर्राष्ट्रिय जगतमा नेपालको राष्ट्रिय हित, राष्ट्रिय छवि, राष्ट्रिय पहिचान र प्रतिष्ठाको प्रवर्द्धन गर्ने। | १. संविधानमा उल्लिखित राष्ट्रिय हित अनुरूप प्राकृतिक, ऐतिहासिक र सामाजिक-सांस्कृतिक सम्पदा र विकासलाई विश्व समुदायमा स्थापित एवम् प्रवर्द्धन गरिनेछ।<br>२. मौलिक ढङ्गले हासिल गरेको लोकतान्त्रिक राजनीतिक रूपान्तरण र शान्ति प्रक्रिया तथा मुलुकले तय गरेको विकासको स्पष्ट दिशा र सम्भावनाहरूको प्रचुरतालाई विश्व समुदायसमक्ष स्थापित गरिनेछ।<br>३. नेपाललाई विश्वमा चिनाउन र पर्यटन प्रवर्द्धन गर्न विदेशस्थित कूटनीतिक नियोगमा सांस्कृतिक कार्यक्रमसहित राष्ट्रिय दिवस मनाउनुका साथै नेपाली शान्ति मिसनलाई परिचालन तथा लक्षित प्रचार प्रसारका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>४. कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापना गर्न बाँकी रहेका मुलुकसँग आवश्यकता र औचित्यका आधारमा कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापना र आवासीय कूटनीतिक प्रतिनिधित्व विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>५. द्विपक्षीय, क्षेत्रीय र बहुपक्षीय कूटनीतिक संयन्त्रमा नेपालको सहभागितालाई अझ सशक्त बनाइनेछ ।</p>  |
| २. नेपालको आर्थिक कूटनीतिलाई रणनीतिक तथा नतिजामूलक रूपमा परिचालन गर्ने ।                             | <p>१. उच्चस्तरीय भ्रमण, कूटनीतिक पहलका साथै क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय सहयोग संयन्त्रका बैठकहरूमा नेपालको आर्थिक हित अभिवृद्धि हुनेगरी सहभागिता रहनेछ ।</p> <p>२. सरोकारवाला निकायसँगको सहकार्यमा संभाव्यताका आधारमा देशगत लक्ष्य तोकिएको सम्बन्धित मुलुकको आर्थिक तथा विकास नीति र बजार सम्भावनाहरूको अध्ययन गर्ने लगायका कार्यक्रम सञ्चालन गर्न विदेशस्थित नेपाली नियोगहरूको परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>३. गैरआवासीय नेपाली, अन्तर्राष्ट्रिय संघ-संस्था र बहुराष्ट्रिय कम्पनीलाई नेपालमा रोजगारमूलक, दीर्घकालीन र रूपान्तरणकारी परियोजना सञ्चालन गर्न उत्प्रेरित गरी विदेशी पुँजी, प्रविधि र सीप आकर्षित गर्नुका साथै नेपाली उत्पादनलाई निर्यात गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>४. नेपाल-भारत-चीनबीच यातायात पूर्वाधार र सञ्चार आबद्धता, ऊर्जा र पर्यटन लगायतका क्षेत्रमा द्विपक्षीय तथा त्रिपक्षीय सहयोग तथा सहकार्यको प्रवर्द्धन गरिनेछ । दक्षिण एसिया तथा उत्तर एसियासँगका आर्थिक सिनर्जीलाई मुलुकको आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणमा उपयोग गरिनेछ ।</p> |
| ३. राष्ट्रिय हित अनुकूल हुने गरी विद्यमान सन्धि, सन्झौता र समझदारीको विश्लेषण गरी पुनरावलोकन गर्ने । | <p>१. कार्यान्वयनमा रहेका सन्धिको वस्तुगत विश्लेषणका आधारमा परिमार्जन तथा अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्धमा देखिएका नयाँ समीकरण तथा शक्ति राजनीतिकरणको सूक्ष्म अध्ययन र विश्लेषणबाट मात्र सन्तुलित नयाँ सन्धि, सन्झौता गरिनेछ ।</p> <p>२. पारवहन, आपूर्ति तथा बजार पहुँच र प्राविधिक क्षेत्रबाट पर्न सक्ने नकारात्मक प्रभावको विश्लेषण गरी सो सम्बन्धी कार्यको लागि अन्तरनिकाय समन्वय अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | ३. वस्तु तथा सेवाको सहूलियतपूर्ण बजार पहुँचको प्राप्ति, प्रविधि हस्तान्तरण, सीमापार बसाइँ-सराइँ, पर्यावरण र मौसम परिवर्तन जस्ता क्षेत्रसँग सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रिय नियमन प्रक्रियालाई विकासशील तथा भूपरिवेष्टित मुलुकको हितसम्मत बनाउने प्रयास गरिनेछ र समान आर्थिकस्तर भएका मुलुकहरूसँग स्वतन्त्र व्यापार सम्झौता गरी वस्तु तथा सेवा व्यापार प्रवर्द्धन गर्न जोड दिइनेछ ।   |
| ४. कूटनीतिक दक्षतामा अभिवृद्धि गरी गुणस्तरीय सेवा प्रवाहको सुनिश्चितता गर्ने । | <p>१. परिस्थितिजन्य र कानुनी समस्यामा परेका नेपालीलाई आवश्यकतानुसार कानुनी परामर्श, राहत तथा उद्धारको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित राष्ट्रमा वैधानिक प्रक्रियाबाट प्रवेशाज्ञा दिने विषयमा प्रभावकारी अनुगमन बढाइनेछ ।</p> <p>३. व्यवसायिक, दक्ष र प्रतिस्पर्धी कूटनीतिक सेवाका लागि आवश्यक कानुनी संरचनाको व्यवस्था, जनशक्ति विकास योजनाको निर्माण, कार्यसम्पादनमा आधारित व्यवस्थापन प्रणालीको अवलम्बन, ज्ञान व्यवस्थापन तथा संस्थागत अभिलेख व्यवस्थापनको सबलीकरण लगायतका कार्य गरिनेछ ।</p> <p>४. संयुक्त राष्ट्र संघ लगायत अन्य अन्तर-सरकारी, अन्तर्राष्ट्रिय संघ-संस्थामा नेपालको तर्फबाट नियमित रूपमा उम्मेदवारी दिने तथा ती निकायका नीतिगत र कार्यकारी पदका लागि नेपाल परराष्ट्र सेवा लगायत निजामती सेवाका इच्छुक कर्मचारीलाई योग्य बनाउन आवश्यक प्रणालीगत, नीतिगत र कानुनी व्यवस्था अपनाइनेछ ।</p> <p>५. राहदानी सेवा र कन्सुलर सेवालाई सूचना प्रविधिमा आधारित बनाइनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा अन्तर्राष्ट्रिय आर्थिक सम्बन्ध सुदृढ भई विश्वव्यापी रूपमा नेपालको प्रतिष्ठा अभिवृद्धि हुनुको साथै बाह्य स्रोत प्रवाहमा सकारात्मक प्रभाव पर्नेछ । आर्थिक कूटनीतिको देशगत र क्षेत्रगत रणनीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन भएको हुनेछ । थप मुलुकहरूसँग द्विपक्षीय परामर्श संयन्त्रको स्थापना भई नियमित बैठक र नतिजामूलक रणनीतिक संवाद भएको हुनेछ । संयुक्त राष्ट्र संघीय प्रणालीका अङ्ग तथा विश्व व्यापार संगठन जस्ता निकायमा

कार्यकारी तहमा नेपालको प्रतिनिधित्व भएको हुनेछ। यस अवधिमा नेपालको उत्पादकत्व र आपूर्ति क्षमता अभिवृद्धि भई व्यापार घाटामा न्यूनीकरणमा योगदान पुगेको र नेपाल भित्रिने पर्यटकको संख्या उल्लेख्य रूपमा वृद्धिमा सघाउ पुगेको हुनेछ। दक्ष र सीपयुक्त कामदारहरू मात्र श्रम सम्झौता भएका सुरक्षित गन्तव्यमा मात्र जानेछन्। मुलुकलाई आवश्यक पर्ने प्रविधि सहज रूपमा भित्रिएको हुनेछ। अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्धको प्रवर्द्धन र कूटनीतिमा संलग्न जनशक्तिहरूको क्षमता अभिवृद्धि भएको हुनेछ।

## ९.४ शान्ति सुव्यवस्था र सुरक्षा

### १. पृष्ठभूमि

शान्ति सुव्यवस्था र सुरक्षाको विश्वसनीय वातावरण सुशासन र विकासका लागि पूर्वशर्त हो। सुशासन र विकास दिगो शान्ति र स्थिरताको मूल आधार हो। नेपालको संविधानले नेपालको स्वतन्त्रता, सार्वभौमसत्ता, भौगोलिक अखण्डता र स्वाधीनताको संरक्षण गर्दै राष्ट्रिय एकता अक्षुण्ण राख्ने, राष्ट्रिय सुरक्षा प्रणालीको विकास गरी शान्ति-सुरक्षाको व्यवस्था गर्ने, सर्वाङ्गीण मानवीय सुरक्षाको प्रत्याभूति गर्ने तथा राष्ट्रिय सुरक्षा नीतिका आधारमा नेपाली सेना, नेपाल प्रहरी, सशस्त्र प्रहरी बल नेपाल, राष्ट्रिय अनुसन्धान विभाग लगायत सबै सुरक्षा निकायलाई सबल, सुदृढ, व्यावसायिक, समावेशी एवम् जनउत्तरदायी बनाउने र राष्ट्रिय आवश्यकता अनुरूप नागरिकलाई राष्ट्रको सेवा गर्न तत्पर तथा सक्षम बनाउने नीतिलाई आत्मसात गरेको छ। मुलुकलाई आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा चुनौतीबाट प्रतिरक्षा गर्दै नागरिकको जीउ, धन, समानता र स्वतन्त्रताको संरक्षण, शान्तिपूर्वक बाँच्न पाउने अधिकारको सुनिश्चितता तथा उद्यम एवम् व्यापार-व्यवसायको सुरक्षाको प्रभावकारी प्रबन्ध गर्नु राज्यको संवैधानिक दायित्व समेत रहेको छ। संघीय व्यवस्था बमोजिम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय सुरक्षा चुनौतीलाई पूर्वानुमान गर्न सक्ने प्रभावकारी राष्ट्रिय सुरक्षा प्रणालीको विकास गर्दै समुन्नत, आत्मनिर्भर र दिगो आर्थिक विकासका लागि शान्ति सुरक्षाको उपयुक्त वातावरण निर्माण गर्नु राष्ट्रिय प्राथमिकताको विषय हो। कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयन र अपराध नियन्त्रण मार्फत प्रत्येक नेपालीलाई सुखी र खुसी तुल्याउन तथा सामाजिक-आर्थिक विकासका लागि भरपर्दो आधार निर्माण गर्न शान्ति सुरक्षाको बहुआयामिक पक्षको गुणात्मक विकासको गतिलाई आगामी दिनमा तीव्र बनाउनु पर्नेछ। मुलुकको समग्र राष्ट्रिय हित, सुरक्षा र प्रतिरक्षासम्बन्धी नीतिलाई समयानुकूल बनाउँदै सबै सुरक्षा संयन्त्रको संस्थागत सुदृढीकरण एवम् आधुनिकीकरण गर्दै राष्ट्रिय सुरक्षालाई थप सबल, सुदृढ र जनउत्तरदायी बनाउन आवश्यक छ।

### २. प्रमुख समस्या

मानवीय सुरक्षाको सर्वाङ्गीण प्रत्याभूतिका लागि सबै पक्ष समेट्ने गरी राष्ट्रिय सुरक्षा प्रणालीलाई समायानुकूल विकास गर्न नसकिनु, शान्ति सुव्यवस्था कायम राख्ने कार्यमा जनस्तरमा अपेक्षाकृत दायित्वबोध हुन नसक्नु, शान्ति सुरक्षालाई सामाजिक-आर्थिक विकासका क्षेत्रगत क्रियाकलापमा आन्तरिकीकरण गर्न नसकिनु, शान्ति सुरक्षाको पूर्व सजगता, पूर्व-तयारी र पर्याप्त सावधानी अपनाउन नसक्नु, सीमा तथा अध्यागमन व्यवस्थालाई आवश्यक/अपेक्षित सुदृढ एवम् व्यवस्थित गर्न नसकिनु, सुरक्षाका आन्तरिक तथा बाह्य दुवै पक्षमा सूचना एवम् नवीनतम प्रविधिको उच्चतम उपयोग गर्न नसकिनु, शान्ति सुरक्षासँग सम्बन्धित सूचनाको प्राप्ति, विश्लेषण, प्रयोग र सम्प्रेषण पर्याप्त मात्रामा

हुन नसक्नु, सुरक्षा निकायहरूलाई समयको परिवर्तनसँगै सबल, चुस्त, दक्ष र प्रतिस्पर्धी बनाउन आवश्यक संस्थागत सुदृढीकरण एवम् आधुनिकीकरणका लागि पर्याप्त साधन स्रोत उपलब्ध नहुनु, सुरक्षा निकायलाई आवश्यक पर्ने सुरक्षा सामग्री स्वदेशभित्र पर्याप्त मात्रामा उत्पादन गर्न नसकिनु, मुलुकमा ठूला र रणनीतिक महत्त्वका विकास आयोजना सञ्चालन गर्दा राष्ट्रिय सुरक्षामा पर्ने प्रभावको लेखाजोखा र विश्लेषण गर्ने पद्धति नहुनु र सुरक्षा निकायको चल-अचल सम्पत्तिको सूचना प्रविधिमा आधारित व्यवस्थित र एकीकृत अभिलेख तयार गर्न नसक्नु जस्ता विषय यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

शान्ति सुव्यवस्था र सुरक्षा कायम राख्ने कार्यमा तीन तहका सरकारहरूबीच कानुनी तथा संस्थागत क्षमता र अन्तरसम्बन्धको प्रभावकारी विकास गर्नु, द्वन्द्वका स्रोतको समयमै आकलन गरी व्यवस्थापन गर्नु, सामाजिक विकृति, विभेद, बहिष्करण र सामाजिक-आर्थिक असुरक्षाका कारण उत्पन्न हुनसक्ने सुरक्षा चुनौती निराकरण गर्न यसलाई सबै क्षेत्रगत विषयमा समेट्नु, जनअपेक्षा र उपलब्ध स्रोत-साधन बीचको अन्तरलाई कम गर्नु, सुरक्षा चुनौतीको बदलिँदो स्वरूप र प्रकृतिसँग जुध्न सुरक्षा निकायको आधुनिकीकरण र व्यावसायीकरण गर्नु, नेपाली सेना, नेपाल प्रहरी, सशस्त्र प्रहरी बल नेपाल लगायत सबै सुरक्षा निकायलाई समावेशी र जनउत्तरदायी बनाउँदै कार्यरत जनशक्तिलाई समयानुकूल तालिम, प्रशिक्षण, सैन्य तथा सुरक्षा उपकरण आवश्यक मात्रामा उपलब्ध गराउनु, वृत्ति विकासका उचित अवसर सन्तुलित र न्यायपूर्ण तरिकाले उपलब्ध गराई उनीहरूको मनोबल उच्च राख्नु, कानूनको बाध्यकारी परिपालनाप्रति नागरिकको कर्तव्य र दायित्वबोध गराउनु, खुल्ला सिमाना र भूमण्डलीकरणका कारण बढ्दो संगठित अपराध नियन्त्रणका लागि आवश्यक संख्यामा नतिजामुखी, जिम्मेवार र उत्प्रेरित जनशक्ति उपलब्ध गराउनु, अन्तर्राष्ट्रिय र संवेदनशील क्षेत्रीय सुरक्षा वातावरण, अन्तर्राष्ट्रिय आतङ्कवाद, गैरसंवैधानिक क्रियाकलाप, खुल्ला अन्तर्राष्ट्रिय सिमाना तथा अन्तर्राष्ट्रिय संगठित अपराध लगायतका गतिविधिहरू नियन्त्रण गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय सिमानामा हुने घुसपैठ, अतिक्रमण र अबाञ्छित गतिविधिलाई नियन्त्रण गर्नु, आप्रवासन तथा शरणार्थी समस्यालाई समाधान गर्नु र सुरक्षा संयन्त्र र निकाय बीच समन्वय र कार्यात्मक सम्बन्ध सुदृढ तुल्याई मुलुकको समग्र सुरक्षा व्यवस्थामा सुधार ल्याउनु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

संक्रमणकालको अन्त्य भई स्थिरता सहितको स्पष्ट कार्यदिशा, मुलुकभर विस्तारित सुरक्षा संयन्त्र, जनचेतनामा आएको अभिवृद्धि, अपराध अनुसन्धानमा नवीनतम प्रविधिको विकास एवम् सहज उपलब्धता, स्वास्थ्य सेवा, प्रकृति संरक्षण, जनहित, विपद् व्यवस्थापन एवम् उद्धारजस्ता सेवामूलक कार्यमार्फत सुरक्षा निकाय र नागरिक बीचको सम्बन्ध सुदृढीकरण, सुरक्षा सम्बन्धी सूचना र सहयोग आदान प्रदानका लागि क्षेत्रीय र अन्तर्राष्ट्रिय संगठनसँगको सम्बन्ध विकास, सूचना प्रविधिमा भएको विकाससँगै सुरक्षा निकायहरूमा आधुनिक प्रविधि र उपकरणको प्रयोग क्रमशः विस्तारित हुँदै जानु यस क्षेत्रको अवसरका रूपमा रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

स्वतन्त्र, अखण्ड, सुरक्षित, सार्वभौम र शान्तिपूर्ण नेपाल।

## ४.२ लक्ष्य

सर्वाङ्गीण मानवीय सुरक्षा सहितको विकास र समृद्धिका लागि शान्ति सुरक्षाको पूर्ण प्रत्याभूति गर्दै राष्ट्रिय हित र स्वार्थको संरक्षण एवम् संवर्द्धन गर्ने ।

## ४.३ उद्देश्य

१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा रहने सबै सुरक्षा निकायबीच शान्ति-सुरक्षाका विषयमा सहयोग र समन्वय सुदृढ गर्दै विश्वसनीय र भरपर्दो सुरक्षा प्रणाली विकास गर्नु ।
२. सामाजिक विकृति, द्वन्द्व, अपराध र हिंसा नियन्त्रण गर्दै दिगो शान्ति प्रवर्द्धन गर्नु ।
३. शान्तिमैत्री विकास प्रणाली तथा संवेदनशील विकास प्रक्रियालाई अवलम्बन गर्दै सामाजिक-आर्थिक विकासका क्षेत्रगत विषयमा शान्ति सुरक्षाको विषयलाई आन्तरिकीकरण गर्नु ।
४. सबै सुरक्षा निकायलाई समयानुकूल चुस्त, दक्ष, व्यावसायिक र साधन-स्रोत सम्पन्न तुल्याउनु ।
५. अन्तर्राष्ट्रिय सिमाना र सीमा नाकाको सुरक्षा व्यवस्था र अध्यागमन प्रणालीलाई सुदृढीकरण गर्नु ।
६. विद्युतीय माध्यममा आधारित व्यक्तिगत घटना दर्ता र नागरिकको सबै प्रकारका सूचना र विवरण सहितको एकीकृत राष्ट्रिय परिचय व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास गरी राज्यबाट प्रवाह हुने सेवासुविधालाई समेत एकीकृत सूचना प्रणालीमा आबद्ध गर्नु ।
७. सबै सुरक्षा निकायको व्यावसायिक क्षमता अभिवृद्धि गरी राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय शान्ति स्थापनामा योगदान पुऱ्याउनु ।

## ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. सुरक्षा र प्रतिरक्षा सम्बन्धी नीति, रणनीति र कानून तथा संगठनात्मक पक्षमा समसामयिक सुधार गरी राष्ट्रिय सुरक्षा व्यवस्थालाई सुदृढ बनाउने । | १. मुलुकको सुरक्षा संवेदनशीलतालाई मध्यनजर गर्दै राष्ट्रिय सुरक्षा नीतिलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. मुलुकको बाह्य सुरक्षा सरोकारका विषयलाई उचित सम्बोधन गर्ने गरी प्रतिरक्षा नीति कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।<br>३. सबै सुरक्षा निकायहरू सम्बन्धी कानूनलाई पुनरावलोकन गरी आवश्यक संशोधन तथा अद्यावधिक गरिनेछ ।<br>४. सबै सुरक्षा निकायको मौजुदा संगठन संरचनालाई समयानुकूल थप चुस्त र प्रभावकारी बनाइनेछ ।<br>५. मुलुकको सुरक्षा, सिमाना तथा भौगोलिक अखण्डता सम्बन्धी सूचना, नक्सा, अभिलेख तथा दस्तावेजलाई सुरक्षित र अद्यावधिक राख्न विभिन्न कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | ६. सबै सुरक्षा अङ्गहरूबीच अन्तर्सम्बन्ध, सहकार्य तथा महत्वपूर्ण सूचनाको साझेदारी गर्दै आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा प्रणालीलाई चुस्त र सुदृढ तुल्याइनेछ ।  |
| २. कानुनको परिपालना, सामाजिक न्याय र द्वन्द्व व्यवस्थापन मार्फत दिगो शान्ति प्रवर्द्धन गर्ने ।  | १. दिगो शान्ति प्रवर्द्धनको विषयलाई राज्यका सबै नीति तथा कार्यक्रममा समन्वयात्मक एवम् सामञ्जस्यपूर्ण ढङ्गले मूलप्रवाहीकरण गरिनेछ ।<br>२. दिगो शान्तिका लागि गैरविभेदकारी नीति र कानुन तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>३. सामाजिक न्यायमार्फत दिगो शान्ति प्रवर्द्धनका लागि स्थानीय तहमा बहुआयामिक कार्यक्रम र सामुदायिक मध्यस्थता एवम् द्वन्द्व व्यवस्थापनको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>४. समाजमा हुनसक्ने विवाद र द्वन्द्वका कारण बारे समयमै पहिचान गर्नसक्ने गरी नियमित सूचना संकलन र विश्लेषण गर्न विशेषज्ञ एकाइको स्थापना र क्षमता विकास गरिनेछ । |
| ३. विद्यमान कानुनी एवम् संस्थागत व्यवस्थाको सुदृढीकरणसहित बहुसरोकारवाला निकायसँग साझेदारी मार्फत सामाजिक विकृति, द्वन्द्व, अपराध, हिंसा र लागू पदार्थको कारोबार तथा दुर्व्यसन नियन्त्रण गर्ने । | १. स्थानीय तहसँगको समन्वय र सहकार्यमा सामाजिक विकृति, दुर्व्यसन र अपराध नियन्त्रणका अभियान सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. सरकार, निजी क्षेत्र, गैरसरकारी संस्था, नागरिक समाज, सञ्चार जगत तथा अन्य सरोकारवालाको सहकार्यमा लागू पदार्थलाई निषेध र मदिरा बिक्री-वितरणलाई व्यवस्थित गरिनेछ ।<br>३. दुर्व्यसनमा परेका व्यक्तिहरूलाई उपचार र पुनःस्थापना गरी उद्यमशील र आत्मनिर्भर बनाइनेछ ।  |
| ४. शान्ति सुरक्षा, अपराध अनुसन्धान र नियन्त्रणका लागि आधुनिक प्रविधिको प्रयोग तथा गुप्तचर सुरक्षा सूचना प्रणालीको (Security Intelligence) संस्थागत एवम् प्राविधिक सुदृढीकरण गर्ने ।             | १. शान्ति सुरक्षा र अपराध नियन्त्रणका लागि रोकथाममूलक, उपचारात्मक र प्रवर्द्धनात्मक क्रियाकलाप सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. सुरक्षा एकाइहरू एवम् सुरक्षा गुप्तचर (Security Intelligence) लाई सूचना प्रविधि र रेडियो सञ्चार नेटवर्कमा आबद्ध गरिनेछ ।<br>३. जिल्लास्तरीय प्रहरी एकाइमा बायोमेट्रिक सहितको अपराध तथा अपराधी अभिलेख प्रणाली तयार गरी तथ्याङ्क व्यवस्थापन गरिनेछ ।   |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>४. सबै सुरक्षा एकाइको आवश्यकतानुसार भौतिक एवम् प्राविधिक पूर्वाधार स्तरोन्नति गरिनेछ ।</p> <p>५. अन्तरनिकाय सूचना साझेदारी संयन्त्र विकास गरिनेछ ।</p> <p>६. प्रदेश र स्थानीय तहको सुरक्षा संवेदनशीलता पहिचान गर्न सुरक्षा सूचकांक (Security Index) विकास गरी लागू गरिनेछ ।</p>  |
| <p>५. विकासका सबै आयाममा सुरक्षा चासोलाई सम्बोधन गर्दै सुरक्षा निकायको कार्यक्षमता अभिवृद्धि गर्ने ।</p>      | <p>१. मुलुकमा ठूला र रणनीतिक महत्वका विकास आयोजना सञ्चालन गर्दा त्यसले राष्ट्रिय सुरक्षामा पार्ने प्रभावको लेखाजोखा र विश्लेषण गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</p> <p>२. राष्ट्रिय गौरव र रणनीतिक महत्वका ठूला विकास आयोजनाको जग्गा प्राप्ति, निर्माण र सञ्चालन सुरक्षाका विषयमा समन्वयात्मक ढङ्गमा आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. विद्यमान सुरक्षा निकायभित्रै विशिष्टीकृत तालिम प्राप्त सुरक्षा दस्ता निर्माण तथा विशेष सुरक्षा एकाइको स्थापना र सुदृढीकरण गरी सेवामूलक, औद्योगिक, उत्पादनशील र विकासमूलक क्षेत्रमा विशेष सुरक्षा व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. रणनीतिक र सामरिक महत्वका पूर्वाधार निर्माण गर्न सुरक्षा निकायलाई आवश्यकता अनुसार संलग्न गरिनेछ ।</p> <p>५. विपद् व्यवस्थापनका विभिन्न चरणमा प्रभावकारी भूमिका निर्वाह गर्न सक्ने गरी सुरक्षा निकायको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> |
| <p>६. नागरिक-मैत्री सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ गर्ने तथा नागरिक र सुरक्षा अङ्गबीचको सम्बन्धलाई सुदृढ बनाउने ।</p> | <p>१. सुरक्षा चासो र चुनौतीको स्थानीय तहदेखि नै विश्लेषण (Security and Crime Mapping) गर्ने व्यवस्थाका लागि सम्बन्धित निकायको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>२. नागरिक र सुरक्षा निकायबीचको सम्बन्ध तथा साझेदारीलाई सुदृढ तुल्याउन विभिन्न कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>३. राष्ट्रिय सेवा दललाई स्थानीय स्तरसम्म विस्तार गर्दै राष्ट्रप्रति समर्पित, अनुशासित र बफादार तथा राष्ट्रको सेवा गर्न तत्पर र सक्षम नागरिकको विकास गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| <p>७. सबै सुरक्षा निकायलाई समयानुकूल दक्ष, आधुनिक, व्यावसायिक तथा साधन-स्रोत सम्पन्न बनाई सबै किसिमका सुरक्षा चुनौतीलाई सामना गर्न सक्षम बनाउने ।</p> | <p>१. सबै सुरक्षा निकायको तालिम प्रशिक्षण नीतिलाई समयानुकूल परिमार्जन गरी आवश्यक संख्यामा तालिम, प्रशिक्षण तथा वृत्ति विकासको सन्तुलित र न्यायोचित व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. सुरक्षा बन्दोबस्तीका सामग्रीको खरिद व्यवस्थालाई पारदर्शी र प्रभावकारी बनाई सुरक्षा निकायलाई आवश्यक पर्ने हवाई तथा जमिनी र नाविक सुरक्षा उपकरण र सूचना प्रविधिका साधन तथा मेशिनरी आवश्यक मात्रामा उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>३. सबै सुरक्षा निकायका लागि आवश्यक बन्दोबस्तीका सामग्रीको उत्पादन तथा आपूर्तिमा आत्मनिर्भर हुन यससम्बन्धी मौजुदा उद्योग, कारखानाको सुदृढीकरण तथा क्षमता विस्तार र आवश्यकता अनुसार नयाँ उद्योग सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>४. सुरक्षाकर्मीको आवास एवम् ब्यारेकको पुनर्निर्माण तथा नवनिर्माण गरी सुरक्षित र व्यवस्थित तुल्याइनेछ ।</p> <p>५. सबै सुरक्षा निकायमा आधुनिक सूचना प्रविधिको उपयोग गर्दै डिजिटल सुरक्षा प्रणालीको विकास एवम् विस्तार गरी कार्यदक्षता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>६. सुरक्षा सम्बन्धी सबै निकायको चल र अचल सम्पत्तिको व्यवस्थित र एकीकृत अभिलेख तयार गर्न डिजिटलाइजेसन गरिनेछ ।</p> <p>७. सबै सुरक्षा निकायका तालिम/प्रशिक्षण संस्थाको स्तरोन्नतिका साथै सुरक्षा एवम् प्रतिरक्षा सम्बन्धी विषयमा उच्च तहको औपचारिक शिक्षा प्रवर्द्धन गर्न सम्भाव्यताका आधारमा राष्ट्रिय प्रतिरक्षा विश्वविद्यालय स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>८. नेपालसँग दौत्य सम्बन्ध कायम भएका मित्रराष्ट्रसँग सैनिक कूटनीति, सैन्य सहयोगको आदान-प्रदान तथा संयुक्त अभ्यास मार्फत नेपाली सेनाको क्षमता विकास एवम् साख वृद्धि गरिनेछ ।</p> |
| <p>८. सीमा सुरक्षा र अध्यागमन प्रणालीलाई द्विपक्षीय एवम् बहुपक्षीय कूटनीतिक पहल तथा संस्थागत सुदृढीकरणका</p>  | <p>१. सीमा सुरक्षा र अपराध नियन्त्रण गर्न आधुनिक प्रविधियुक्त थप सुरक्षा पोष्ट तथा विशिष्टीकृत एकाइको स्थापना एवम् संस्थागत क्षमता वृद्धि गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| आधारमा व्यवस्थित र सुदृढ गर्ने ।  | <p>२. अन्तर्राष्ट्रिय संगठनसँगको समन्वय र सहयोगलाई अभिवृद्धि गर्दै अपराध नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> <p>३. विद्युतीय अध्यागमन प्रणालीको स्थापना र विकास गरिनेछ ।</p> <p>४. सीमा सुरक्षा र अध्यागमन प्रणालीको सुदृढीकरणका लागि द्विपक्षीय एवम् बहुपक्षीय सूचना आदान-प्रदानको संयन्त्र र साझेदारी विकास गरिनेछ ।</p>   |
| ९. कारागार सम्बन्धी न्यूनतम मापदण्ड समयसापेक्ष रूपमा परिमार्जन गरी प्रविधिमैत्री सेवासुविधा सहितको सुधार गृहको रूपमा विकास गर्ने ।  | <p>१. न्यूनतम मानवोचित सेवा सुविधा र भौतिक पूर्वाधार सहितको कारागार निर्माण र सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. कैदी बन्दीलाई उत्पादनशील र विकासका क्रियाकलापमा संलग्न गराउने व्यवस्था गरिनेछ ।</p>  |
| १०. बहुउपयोगी तथा प्रविधियुक्त एकीकृत राष्ट्रिय परिचय व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास गरी नागरिकका सबै प्रकारका विवरण र राज्यबाट प्रदान गरिने सेवा सुविधा समेतको अभिलेख एकीकृत रूपमा क्रमशः आबद्ध गर्दै लैजाने । | <p>१. सबै नागरिकलाई राष्ट्रिय पहिचान सहितको बहुउपयोगी राष्ट्रिय परिचयपत्र (स्मार्ट कार्ड) प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>२. राष्ट्रिय परिचयपत्र व्यवस्थापन सूचना प्रणाली र सामाजिक सुरक्षा तथा व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यवस्थापन सूचना प्रणालीलाई एकीकृत गरिनेछ ।</p> <p>३. व्यक्तिगत घटना दर्तालाई बायोमेट्रिक विवरण सहितको विद्युतीय प्रणालीमा आबद्ध गरिनेछ ।</p> <p>४. राज्यबाट प्रवाह हुने सामाजिक सुरक्षा भत्ता लगायत सबै सेवालाई राष्ट्रिय परिचयपत्र व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमा आबद्ध गर्दै विद्युतीय र बैकिङ प्रणालीमा आधारित बनाइनेछ ।</p> <p>५. खुला कारागारको अवधारणा लागु गरिनेछ ।</p> |
| ११. सुरक्षा निकायको व्यावसायिक क्षमता अभिवृद्धि गर्दै राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा शान्ति स्थापना कार्यमा योगदान पुऱ्याउने ।  | <p>१. सबै सुरक्षा निकायलाई शान्ति स्थापना कार्यमा आवश्यक पर्ने प्रशिक्षण, सुरक्षा सामग्री तथा उपकरण उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>२. अन्तर्राष्ट्रिय शान्ति स्थापनामा नेपाली सुरक्षाकर्मीको सहभागिता र योगदानलाई क्रमशः विस्तार गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>३. सबै प्रकारका संगठित अपराधको अन्त्य गर्न राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय तहमा सञ्जालीकरण विस्तार गर्दै लगिनेछ ।</p>   |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

संघ, प्रदेश, स्थानीय तह र सबै सुरक्षा निकायबीच सुरक्षा विषयमा सुदृढ समन्वय तथा वैज्ञानिक एवम् प्रविधियुक्त सुरक्षा व्यवस्थाको कार्यान्वयन मार्फत दिगो शान्ति र विश्वसनीय सुरक्षा वातावरण निर्माण भएको हुनेछ। सुरक्षा चासोमा जनसहभागिता सुनिश्चित भई प्रशासन नागरिकमैत्री भएको हुनेछ। शान्ति सुरक्षाको बहुआयामिक पक्षको सम्बोधन र क्षेत्रगत विकास योजनामा मूलप्रवाहीकरण भएको हुनेछ। भौतिक पूर्वाधार विकास र औद्योगिकीकरणमा बाधा पुऱ्याउने गतिविधिको नियन्त्रण भई आयोजना सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ भएको हुनेछ। लागू पदार्थको कारोबार एवम् दुर्व्यसन नियन्त्रण, मदिराको उत्पादन, बिक्री-वितरण एवम् प्रयोग व्यवस्थित भई स्वस्थ, सभ्य र अपराधमुक्त समाज निर्माण भएको हुनेछ। साइबर क्राइम, आर्थिक अपराध, आतंकवाद, मानव बेचबिखन र लागू पदार्थ अपराधमा उल्लेख्य कमी आएको हुनेछ। दर्ता भएका अपराधका घटनाको शत प्रतिशत अनुसन्धान भएको हुनेछ। पाँच वर्षमुनिका सबै बालबालिकाको जन्म दर्ता भएको हुनेछ। सबै नेपाली नागरिकले राष्ट्रिय परिचयपत्र प्राप्त गरेका हुनेछन्। सबै सुरक्षा निकायमा आधुनिक सुरक्षा उपकरण तथा बन्दोबस्तीको सामग्री र पर्याप्त मात्रामा तालिम/प्रशिक्षणको व्यवस्था मार्फत दक्षता एवम् व्यावसायिक क्षमता अभिवृद्धि भई आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा व्यवस्था सबल, सुदृढ र जनउत्तरदायी भएको हुनेछ।

## १.५ निर्वाचन प्रणाली

### १. पृष्ठभूमि

नेपालले प्रतिस्पर्धात्मक बहुदलीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली अवलम्बन गरेको छ। यस प्रणालीको स्थायित्व र दिगोपनाका लागि आवधिक निर्वाचन प्रणाली एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ हो। नेपालको संविधान एवम् कानूनले स्वतन्त्र, निष्पक्ष र भयरहित वातावरणमा जनताले आफ्नो मताधिकारबाट जनप्रतिनिधि छनोट गर्ने अधिकार सुनिश्चित गर्नुका साथै प्रत्येक बालिग नेपाली नागरिकलाई निर्वाचन प्रक्रियामा सहभागी हुने, मतदान गर्ने, निर्वाचन सम्बन्धी सूचना प्राप्त गर्ने अधिकारको प्रत्याभूति गरेको छ। संविधानले निर्वाचन आयोगलाई सबै प्रकारका निर्वाचनको सञ्चालन, रेखदेख, निर्देशन, नियन्त्रण र निर्वाचनको प्रयोजनको लागि मतदाता नामावली संकलन गर्ने, राजनीतिक दलको दर्ता र नियमन गर्ने जस्ता महत्वपूर्ण जिम्मेवारी समेत प्रदान गरेको छ। नेपालको संविधान जारी भएपश्चात् राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, संघीय संसद, प्रदेश सभा र स्थानीय तहका निर्वाचन सफलतापूर्वक सम्पन्न भइसकेका छन्। समावेशी र समानुपातिक प्रतिनिधित्व हुने गरी ३६,००० भन्दा बढी जनप्रतिनिधि निर्वाचित भई संघीय लोकतान्त्रिक प्रणाली संस्थागत भएको छ।

### २. प्रमुख समस्या

निर्वाचन सम्बन्धी ऐनमा आवधिक निर्वाचनको मिति उल्लेख नभएको कारणले निर्वाचन समय सारिणी बनाई निर्वाचन कार्य सञ्चालन गर्न नसकिनु, निर्वाचन कानूनमा दोहोरोपना तथा अस्पष्टता रहनु, मतदाता नामावली दर्ता सफ्टवेयरलाई समयमा नै अद्यावधिक गर्न नसक्नु, मतदाता नामावलीलाई त्रुटिरहित बनाउन नसकिनु, सरोकारवालाको सहमतिमा विद्युतीय मतदान यन्त्रको प्रयोग गरी मतदान एवम् मतगणना गर्न नसकिनु र निर्वाचन कार्यालयहरूको व्यवस्थापन र सञ्चालनका लागि भौतिक पूर्वाधारहरूको अभाव हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

निर्वाचन आयोगबाट तयार गर्न लागिएको आयोगको तेस्रो रणनीतिक योजनाका रणनीतिक स्तम्भ, लक्ष्य र क्रियाकलाप कार्यान्वयन गर्नु, निर्वाचन सञ्चालन तथा व्यवस्थापन गर्ने निकायलाई आधुनिक प्रविधियुक्त, चुस्त, दुरुस्त तथा सक्षम बनाउनु, निर्वाचनका सरोकारवाला सबै पक्ष मिली आवधिक निर्वाचनलाई स्वच्छ, स्वतन्त्र र मितव्ययी ढंगबाट सम्पन्न गराउनु, प्रभावकारी निर्वाचन शिक्षाको माध्यमबाट सुसूचित मतदाता तयार पार्नु र निर्वाचन आचारसंहिताको पूर्ण परिपालना गर्नु-गराउनु जस्ता चुनौती रहेका छन्।

सबै प्रकारका निर्वाचनलाई सफलतापूर्वक सम्पन्न गर्ने सक्षम निकायको रूपमा निर्वाचन आयोगको विश्वसनीयता रहनु, आयोगलाई राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रबाट सहयोग र समर्थन प्राप्त हुनु, लोकतन्त्र र निर्वाचनप्रति सरोकारवालाको प्रतिबद्धता बढ्नु, निर्वाचन आयोगप्रति मतदाताहरूको विश्वास बढ्दै जानु, सचेत नागरिक समाज एवम् बढ्दो जनचेतनाका कारण निर्वाचन राष्ट्रिय अभियानको रूपमा विकास हुँदै जानु, आमसञ्चार र सामाजिक सञ्जालको विस्तार हुनु र निर्वाचन प्रक्रियामा नवीनतम प्रविधिको प्रयोगको सम्भावना रहनु जस्ता अवसर रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

स्वच्छ, स्वतन्त्र, निष्पक्ष, विश्वसनीय एवम् मितव्ययी निर्वाचनको सञ्चालन एवम् व्यवस्थापन।

#### ४.२ लक्ष्य

सबै उम्मेदवार तथा मतदातालाई आफ्नो राजनीतिक अधिकार निर्वाध ढंगले उपभोग गर्न पाउने अवसर प्रदान गरी स्वच्छ, स्वतन्त्र, निष्पक्ष, भयरहित, विश्वसनीय र मितव्ययी आवधिक निर्वाचन गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

१. निर्वाचन सम्बन्धी ऐन, नियम, कार्यविधि र निर्देशिकामा समसामयिक सुधार एवम् निर्वाचन चक्रका सम्पूर्ण क्रियाकलापलाई प्रविधियुक्त र मितव्ययी बनाई स्वच्छ, निष्पक्ष, स्वतन्त्र, विश्वसनीय एवम् भयरहित निर्वाचन प्रणालीको माध्यमबाट नागरिकको मताधिकारको सुनिश्चितता गर्दै लोकतन्त्रको संस्थागत विकासमा योगदान गर्नु।
२. सरोकारवालाहरू बीचको आपसी सम्बन्धलाई समन्वयात्मक, सहयोगात्मक र सुदृढ बनाउँदै निर्वाचन कार्यक्रम र प्रक्रियामा महसुस हुने गरी सुधार गर्दै लैजानु।
३. निर्वाचन शिक्षा मार्फत मतदातालाई सशक्तीकरण गरी निर्वाचनलाई बढीभन्दा बढी सहभागितामूलक बनाउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. निर्वाचन सम्बन्धी कानूनमा थप परिमार्जन तथा परिष्कृत गर्दै नीतिगत सुधार गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. निर्वाचन सम्बन्धी कानूनमा समसामयिक सुधार र परिमार्जन गरिनेछ ।</li> <li>२. निर्वाचन समय सारिणीको माध्यमबाट निर्वाचनको पूर्वानुमान गरी निर्वाचनलाई सरल, छरितो र प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> <li>३. नेपाल सरकार, राजनीतिक दल र अन्य सरोकारवालासँग छलफल गरी कानुनी रूपमा समय सारिणी निर्धारण गरी निर्वाचन सम्बन्धी क्रियाकलाप सञ्चालन हुने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</li> <li>४. खर्चिलो बन्दै गइरहेको निर्वाचन प्रचार-प्रसार अभियानलाई नियन्त्रण गरी राजनीतिक दल एवम् उम्मेदवार बीचमा सबैका लागि समान प्रतिस्पर्धी वातावरण (Equal Level Playing Field) कायम गर्न प्रयास गरिनेछ ।</li> <li>५. आवश्यकता अनुसार मतदान केन्द्रको पुनरावलोकन, उत्प्रेरणामूलक निर्वाचन शिक्षा कार्यक्रम, अपाङ्गमैत्री मतदान व्यवस्था, सरल मतदान प्रक्रिया अवलम्बन गरी सम्पूर्ण मतदातालाई मतदानमा सहभागी हुने वातावरण सिर्जना गरिनेछ ।</li> </ol> |
| २. प्रभावकारी निर्वाचन शिक्षा सञ्चालन तथा नवीनतम प्रविधिको उच्चतम प्रयोग गरी मतदाता नामावली दर्ता, अद्यावधिक, मतदान र मतगणना गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. निर्वाचन कार्यक्रम एवम् प्रक्रियालाई सरल, स्पष्ट, छिटो छरितो तथा प्रभावकारी बनाउन निर्वाचन व्यवस्थापनका सम्पूर्ण प्रक्रियामा क्रमशः नवीनतम प्रविधि जस्तै: विद्युतीय मतदान यन्त्रको प्रयोग गरिनेछ ।</li> <li>२. मतदाता नामावली दर्ता तथा अद्यावधिक कार्यक्रमलाई स्थानीय तहका वडास्तरसम्म पुऱ्याइ मतदाता नामावली दर्तालाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>३. अनलाइन प्रणालीबाट समेत मतदाता नामावलीमा नाम दर्ता गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</li> <li>४. संचारका आधुनिक साधन प्रयोग गरी आयोगको जानकारीमूलक सूचना तथा सन्देशहरू सरोकारवाला समक्ष प्रभावकारी रूपमा पुऱ्याइनेछ ।</li> <li>५. राजनीतिक दल दर्ता तथा अद्यावधिक र राजनीतिक दलको आय-व्ययलाई पारदर्शी बनाउन एवम् निर्वाचन सम्बन्धी खर्चलाई सीमाबद्ध बनाउन सफ्टवेयरको निर्माण र प्रयोग गरिनेछ ।</li> </ol>                                       |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>३. सबै राजनीतिक दल, सरोकारवाला र सुरक्षा निकायबीचको आपसी समन्वयबाट विश्वासिलो वातावरण सिर्जना गरी निर्वाचन सुरक्षालाई मजबुत र भरपर्दो बनाउने।</p> | <p>१. निर्वाचनका सरोकारवालसँग सुमधुर सम्बन्ध राखी, सुरक्षा निकायको परिचालन तथा आचार संहिताको पूर्ण परिपालना गरी गराई निर्वाचनलाई शान्तिपूर्ण बनाउने कार्यमा सबैको स्वामित्व र प्रतिबद्धता हासिल गरिनेछ।</p> <p>२. निर्वाचन सुरक्षा जोखिम विश्लेषण गरी सुरक्षा निकायहरूको संलग्नतामा सुरक्षा व्यवस्थालाई मजबुत पार्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ।</p> <p>३. निर्वाचनको सन्दर्भमा संचार माध्यमको अनुगमनलाई प्रभावकारी बनाइनेछ।</p> <p>४. नेपाल सरकार, राजनीतिक दल, आमसञ्चार माध्यम, नागरिक समाज, दातृ निकाय लगायत सरोकारवालाको बीचमा आपसी विश्वास, समझदारी निर्माण, सहकार्य, सम्वादका लागि विभिन्न कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।</p>   |
| <p>४. निर्वाचन आयोगको संस्थागत सुदृढीकरण गर्ने।</p>  | <p>१. निर्वाचनसँग सम्बन्धित कर्मचारीलाई मतदाता नामावली दर्ता, निर्वाचन सामग्री व्यवस्थापन, लेखा जस्ता निर्वाचन व्यवस्थापनको आधारभूत जानकारी सम्बन्धी तालिम, अभिमुखीकरण एवम् अन्य विषयगत र पुनर्ताजगी तालिम कार्यक्रमका माध्यमबाट क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। साथै, निर्वाचनमा संलग्न जनशक्तिलाई विषयगत एवम् पुनर्ताजगी तालिम प्रदान गरिनेछ।</p> <p>२. निर्वाचन सम्बन्धी विश्वमा भएका राम्रा अभ्यासलाई नेपालमा भित्र्याउन सकिने सम्भावनाको बारेमा अध्ययन, अनुसन्धान तथा विकास गरिनेछ।</p> <p>३. राजनीतिक दल, आयोगका पदाधिकारी, कर्मचारी तथा निर्वाचनमा खटिने जनशक्तिको लागि छुट्टाछुट्टै आचारसंहिता निर्माण गरी लागू गरिनेछ।</p> <p>४. जग्गा नभएका जिल्ला निर्वाचन कार्यालयको जग्गा प्राप्त गरी र जग्गा भएका तर भवन नभएका जिल्ला निर्वाचन कार्यालयको भवन निर्माण गरिनेछ।</p> |

| रणनीति | कार्यनीति   |
|--------|---|
|        | <p>५. विदेशमा रहेका तथा अनुपस्थित मतदाताको मतदानको अधिकार स्थापित गर्ने सम्बन्धमा आवश्यक अध्ययन गरिनेछ ।</p> <p>६. सरकारबाट राजनीतिक दललाई दिइने अनुदान (State Funding) को विषयमा आवश्यक अध्ययन गरी कानुनी तथा नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

त्रुटिरहित मतदाता नामावली तयार भएको हुने, भयरहित मतदानको वातावरण सिर्जना भएको हुने तथा निर्वाचन शिक्षामा सबैको पहुँच अभिवृद्धि भएको हुनेछ । निर्वाचनमा अधिकाधिक मतदाताको सहभागिता भई न्यून प्रतिशत मात्र मत बदर भएको अवस्था हुनेछ । मतदाता नामावली दर्ता, मतदान, मतगणना लगायतका निर्वाचन सम्बन्धी क्रियाकलापहरू प्रविधिमैत्री भएका हुनेछन् । निर्वाचन आचार संहिताको पूर्ण परिपालना भई निर्वाचन अझ बढी स्वच्छ, स्वतन्त्र, निष्पक्ष, विश्वसनीय, भयरहित एवम् मितव्ययी भएको हुनेछ । निर्वाचन आयोग तथा सम्बन्धित निकायको संस्थागत क्षमता सुदृढ भएको हुनुका साथै पूर्वाधार निर्माण भएको हुनेछ । निर्वाचन सम्बन्धी कानूनको अद्यावधिक भएको हुनेछ ।

## १.६ मानव अधिकार

### १. पृष्ठभूमि

मानव अधिकारको संरक्षण, प्रवर्द्धन र सम्मानका लागि नेपालको संविधानले आमनागरिकका आधारभूत अधिकारलाई मौलिक हकका रूपमा स्पष्ट व्यवस्था गरेको छ । संयुक्त राष्ट्र सङ्घको बडापत्र एवम् मानव अधिकारको विश्वव्यापी घोषणापत्र, मानव अधिकार सम्बन्धी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिको नेपाल पक्ष राष्ट्र भइसकेको छ । मानव अधिकारको सम्मान, संरक्षण र प्रवर्द्धनमा निरन्तर अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता जनाउँदै कार्यान्वयनका लागि संवैधानिक, कानुनी, नीतिगत एवम् संस्थागत संरचनाको व्यवस्था गर्दै आएको छ ।

मानव अधिकारको संरक्षण, संवर्द्धन र सम्मानका लागि स्थायी संरचना एवम् संस्थाहरू र विभिन्न तहका सरकारी निकायहरूका बीचमा समन्वय तथा सहकार्य गरी मानव अधिकार सम्बन्धी जनचेतनामूलक कार्यक्रमलाई सशक्त बनाइएको, समुदायमा मानव अधिकार सम्बन्धी अभिमुखीकरण तालिम सञ्चालन गरिएको, विकासका मुद्दासँग मानव अधिकारलाई संरचनागत एवम् कार्यात्मक रूपमा जोड्दै लाने कार्य भइरहेको छ ।

### २. प्रमुख समस्या

समाजमा रहेको भेदभाव, छुवाछुत, लैंगिक हिंसा जस्ता कुप्रथा, मुलुकको भौगोलिक संरचना, पूर्वाधार एवम् सेवा सुविधाको उपलब्धता जस्ता कुराहरू मानव अधिकारको प्रत्याभूतिका लागि प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका

छन्। मानव अधिकारप्रतिको सचेतनामा अभिवृद्धि भएको भए तापनि सेवाग्राही नागरिक अधिकारका बाहक हुन भन्ने मानव अधिकार संस्कृतिको विकास हुन नसक्नु, राजनीतिक, सामाजिक लगायतका मानव अधिकार सम्बन्धी आधारभूत ज्ञान, मूल्य-मान्यता र संस्कारको पद्धति स्थापित हुनु नसक्नु, संरचनागत रूपमा रहेको सामाजिक विभेदलाई अन्त्य गर्न नसक्नु जस्ता प्रमुख समस्या रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

संविधान, कानून र अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता अनुरूप दण्डहीनता अन्त्य र प्रभावकारी रूपमा कानूनको परिपालना गर्नु, विकास निर्माणमा सामाजिक एवम् आर्थिक क्रियाकलाप मानव अधिकारमैत्री र संस्कारयुक्त बनाउनु, मानव अधिकारको संरक्षण, सम्बर्द्धन र प्रवर्द्धनमा दायित्वकर्ता र अधिकारकर्ताबीच प्रभावकारी समन्वय र साझेदारी निर्माण गर्न नसक्नु, मानव अधिकार सम्बन्धी सूचना, ज्ञान र जानकारी सबै निकायका अधिकारी एवम् आमनागरिकको तहसम्म पुग्न नसक्नु जस्ता चुनौती रहेका छन्।

विश्वमा सर्वस्वीकार्य भएका मानव अधिकारसम्बन्धी मूल्य र मान्यतालाई नेपालको संविधानले मौलिक हकको रूपमा प्रत्याभूत गर्नु, मौलिक हक कार्यान्वयनका लागि आवश्यक कानुनी व्यवस्था हुनु, मानव अधिकारसँग समुचित क्षेत्रीय, अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि, सन्धि, तथा ऐच्छिक आलेखको पक्ष राष्ट्र हुनु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको क्षेत्राधिकार संविधानद्वारा नै स्पष्ट गरी नागरिकले वास्तविक रूपमै मानव अधिकारको उपभोग गर्न सक्ने गरी संरचनात्मक व्यवस्था हुनु, संविधान एवम् कानूनद्वारा संरक्षित मानव अधिकारको कार्यान्वयनको अनुगमन गर्ने, मानव अधिकार उल्लंघनमा अनुसन्धान गर्ने लगायतका कार्य गर्ने स्वतन्त्र र सक्षम, संवैधानिक आयोगको व्यवस्था तथा न्याय सम्पादनका लागि स्वतन्त्र न्यायालयको व्यवस्था हुनु जस्ता मानव अधिकारको संरक्षण तथा सम्बर्द्धनको लागि महत्वपूर्ण अवसर हुन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१. सोच

समावेशी, मर्यादित, समतामूलक र स्वअनुशासित समाज निर्माण।

#### ४.२. लक्ष्य

न्यायमैत्री शासन प्रणाली र प्रभावकारी सेवा प्रवाह मार्फत अधिकारको निर्बाध उपभोग गर्न पाउने स्थिति निर्माण गर्ने।

#### ४.३. उद्देश्य

१. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता अनुरूप मानव अधिकारको सम्मान, संरक्षण र संवर्द्धन गर्नु।
२. सिमान्तीकृत, विपन्न, लैङ्गिक अल्पसंख्यक, अपाङ्गता भएका एवम् पिछडिएका क्षेत्र, वर्ग, र समुदायको अधिकार सुनिश्चित गर्नु।
३. मानव अधिकार प्रवर्द्धनको सदृढीकरण एवम् मानव अधिकारमैत्री शासन पद्धतिको विस्तार गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. मौलिक हक कार्यान्वयन गर्न निर्माण भएका कानून प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्ने ।   | १. मौलिक हक कार्यान्वयन गर्ने कानूनहरूको कार्यान्वयनको लागि आवश्यक स्रोत-साधनको उपलब्धता सुनिश्चित गरिनेछ ।<br>२. संविधानमा व्यवस्था भएका मानव अधिकार सम्बन्धी संरचनालाई प्रभावकारी बनाई मानव अधिकारको संरक्षण र सम्बर्द्धन गरिनेछ ।<br>३. न्यायमा पहुँच सुनिश्चित गर्न निःशुल्क कानुनी सहायता सम्बन्धी नीतिगत, कानुनी एवम् संस्थागत व्यवस्था गरिनेछ ।   |
| २. समाजमा विद्यमान सबै प्रकारका भेदभाव, छुवाछुत, हिंसा तथा कुप्रथाको अन्त्य गर्ने ।  | १. विपन्न, सीमान्तीकृत एवम् पिछडिएका वर्गका अधिकार सुनिश्चित गरिनेछ ।<br>२. मानव अधिकार सम्बन्धी आधारभूत विषयवस्तुलाई विद्यालय तथा विश्वविद्यालयको पाठ्यक्रममा समावेश गरिनेछ ।<br>३. हरेक प्रकारका भेदभाव र छुवाछुत विरुद्ध जनचेतनामूलक कार्यक्रम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट सञ्चालन गरिनेछ ।   |
| ३. मानव अधिकार उल्लङ्घनको घटनामा दण्डहीनताको अन्त्य गरी पीडितलाई क्षतिपूर्तिको सुनिश्चितता गर्ने ।                                     | १. मानव अधिकार उल्लङ्घनका घटनाको अनुसन्धान कार्यलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।<br>२. मानव अधिकार उल्लङ्घनको घटनाका पीडकलाई कारवाही र पीडितलाई उचित क्षतिपूर्ति तथा परिपूरणको व्यवस्था गरिनेछ ।   |
| ४. मानव अधिकार संस्कृति विकास गरी मानव अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि तथा प्रतिबद्धताबाट सिर्जित दायित्व कार्यान्वयन गर्ने । | १. सार्वजनिक क्षेत्रमा सेवा प्रवाह गर्ने राष्ट्र सेवक एवम् कर्मचारीलाईलाई आफू कर्तव्यको वाहक र सेवाग्राही नागरिक अधिकारका वाहक हुन भन्ने मानव अधिकारको आधारभूत मूल्य-मान्यताका सम्बन्धमा सचेतना अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>२. मानव अधिकारको संरक्षण, सम्बर्द्धन र प्रवर्द्धनमा योगदान गर्ने व्यक्ति तथा संघ-संस्थालाई सम्मान गरिनेछ ।<br>३. मानव अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि अन्तर्गतका प्रतिवेदन सम्बन्धी दायित्व समयमै पूरा गर्दै आवधिक कार्ययोजना निर्माण गरी लागु गरिनेछ । |
| ५. तीन तहका सरकारबाट सम्पन्न गरिने योजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा मानव अधिकारमुखी पद्धति अपनाउने ।                              | १. तीन तहका सरकारबाट तयार हुने नीति तथा कार्यक्रम, कार्ययोजना र विकास क्रियाकलापमा मानव अधिकारको प्रत्याभूति सुनिश्चित हुने गरी सञ्चालन गरिनेछ ।   |

| रणनीति | कार्यनीति  |
|--------|--|
|        | २. मानव अधिकार सम्बन्धी राष्ट्रिय कार्ययोजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>३. स्थानीय तहको न्यायिक समितिको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>४. मानव अधिकारमैत्री नीति, योजना तथा कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने र महसुस हुने गरी कार्यान्वयनको खाका तयार गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

मानव अधिकारका सम्बन्धमा निर्माण भएका कानून र अदालतका आदेश/फैसला कार्यान्वयन भई सबै नेपाली नागरिकले मानव अधिकारको व्यवहारिक रूपमा उपभोग गर्न सक्ने अवस्था सुनिश्चित भएको हुनेछ । साथै, मानव अधिकार सम्बन्धी नेपाल पक्ष भएका अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि तथा प्रतिवद्धता अन्तर्गतका प्रतिवेदन सम्बन्धी दायित्व कार्यान्वयन भएको हुनेछ ।

#### ९.७ न्याय प्रणाली

##### १. पृष्ठभूमि

संविधान र संघीयताको मर्म अनुसार नेपाली जनताको इच्छा र आकांक्षा तथा अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूप कानून निर्माण गरी न्यायलाई सबैको पहुँचयोग्य, अनुमानयोग्य र विश्वसनीय बनाउनु आवश्यक रहेको छ । यसका लागि संविधान प्रदत्त मौलिक हकको कार्यान्वयन गरी नागरिक स्वतन्त्रता, मानव अधिकार र मानवीय मूल्य-मान्यताको सम्मान, संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्दै स्वतन्त्र, निष्पक्ष र सक्षम न्यायपालिका मार्फत छिटो-छरितो, सर्वसुलभ, मितव्ययी, निष्पक्ष, प्रभावकारी र उत्तरदायी न्याय व्यवस्था कायम गरी जनताले प्रत्यक्ष अनुभूत गर्न सक्ने न्याय प्रणाली सुनिश्चित गर्नु आवश्यक छ ।

संवैधानिक व्यवस्था एवम् संघीय प्रणाली अनुकूल फौजदारी कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरी समाजमा अपराध नियन्त्रण गर्ने, वैज्ञानिक प्रमाणका आधारमा अभियोजन गर्ने, सरकारको सरोकार भएका मुद्दामा प्रतिरक्षा गर्ने र शान्ति सुव्यवस्था कायम गरी सुशासनको अनुभूत हुने गरी विद्यमान न्याय प्रणालीलाई समयानुकूल सुदृढ गर्दै लैजानु पर्नेछ । न्याय प्रणालीको प्रस्थान बिन्दु स्थानीय तहको न्यायिक समितिलाई न्याय सम्पादन र व्यवस्थापनमा सक्षम एवम् प्रणालीबद्ध बनाई न्याय सम्पादन र व्यवस्थापनमा प्रभावकारिता कायम गर्नु आवश्यक छ । नेपाल सरकार र प्रदेश सरकारको प्रमुख कानुनी सल्लाहकारका रूपमा नेपालको संविधानले व्यवस्था गरेको महान्यायाधिवक्ता र मुख्य न्यायाधिवक्ताको भूमिकालाई कानूनको अनुसरण र प्रतिरक्षाका लागि अझ सबल र सुदृढ बनाउँदै मानवीय, सामाजिक तथा आर्थिक विकासको पूर्वशर्तको रूपमा रहेको कानुनी शासनलाई सबै पक्षबाट परिपालना गरी जीवन्त तुल्याई न्यायपूर्ण र गतिशील समाज निर्माण गर्न यस योजनाले निर्देशित गर्नेछ ।

## २. प्रमुख समस्या

संघीय व्यवस्थामा लोकतान्त्रिक पद्धति सहजीकरण र विधिको शासन कायम गर्न आवश्यक कानून निर्माण गर्नका लागि पर्याप्त ज्ञान, सीप र क्षमता सहितको दक्ष जनशक्तिको कमी रहनु, अन्तरनिकाय वा बहुनिकाय समन्वयको कमीका कारण कानून निर्माणमा ढिलाई हुनु, कानूनको परिपालना गर्ने संस्कृतिको पर्याप्त विकास नहुनु, निःशुल्क कानुनी सेवाको प्रभावकारिता बढाउन नसक्नु, मुद्दा प्रवाह व्यवस्थापन पद्धति सूचना प्रविधिसँग आबद्ध हुन नसकेकोले न्यायिक प्रक्रिया छिटो छरितो, सहज र पूर्व-अनुमानयोग्य हुन नसक्नु, अदालतको बढ्दो कार्यचाप अनुरूप स्रोत-साधनको व्यवस्थापन र जनशक्तिको क्षमता विकास हुन नसक्नु, फैसला कार्यान्वयनको स्वचालित पद्धति विकास गर्न नसक्नु, न्याय प्रक्रियामा साक्षी प्रमाणको प्रस्तुति प्रभावकारी नहुनु, निर्णय गर्नुपूर्व कानुनी सल्लाह नलिने परिपाटीका कारण सरकारी निर्णय उपर परेका रिट निवेदनको प्रतिरक्षामा अपेक्षित सफलता हासिल गर्न नसक्नु, साक्षी र पीडितको सुरक्षा व्यवस्थापन कमजोर हुनु, फैसला कार्यान्वयन प्रभावकारी नहुनु, विकासका नवीनतम आयामसँग सम्बन्धित विषयहरूमा कानुनी शिक्षालाई आवश्यकता अनुसार विशिष्टीकृत र विविधीकरण गर्न नसक्नु र कानुनी शिक्षा र शिक्षण प्रणालीलाई निर्देशित, व्यवस्थापन र नियमन गर्ने विशेषज्ञ निकायको अभाव हुनु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

नेपालको संविधान कार्यान्वयन गर्न आवश्यक पर्ने सबै कानून तर्जुमा गर्नु, स्थानीय न्यायिक समितिको काम कारवाहीलाई गुणस्तरीय एवम् प्रभावकारी बनाउनु, निःशुल्क कानुनी सहायता सेवा सम्बन्धित सबैलाई उपलब्ध गराई न्यायमा पहुँच अभिवृद्धि गर्नु, फौजदारी एवम् देवानी कार्यविधि संहिताको पूर्ण परिपालनाका लागि सबै तह र निकायमा पर्याप्त नागरिक शिक्षा, सचेतना र दक्षता अभिवृद्धि गर्नु, परम्परागत ढाँचाको अनुसन्धान प्रक्रियालाई वस्तुगत र वैज्ञानिक प्रमाणमा आधारित बनाउनु, अपराध पीडित तथा साक्षीको संरक्षण गरी कसुरदारलाई सजाय दिलाउनु, सरकारी सरोकारका मुद्दा सशक्त रूपमा प्रतिरक्षा गर्न पर्याप्त स्रोत-साधन र क्षमता विकास गर्नु, मुद्दाहरूको चापमा वृद्धि भएसँगै त्यसको सही व्यवस्थापन र फैसला कार्यान्वयनको लागि पर्याप्त दक्ष जनशक्तिको व्यवस्था गर्नु, कानूनको परिपालनामा नागरिकको कर्तव्य र दायित्वबोध वृद्धि गर्दै लैजानु, सबै सरोकारवालाबीच समन्वयको भूमिका निर्वाह गर्ने निकायको क्षमता सुदृढ एवम् आधुनिकीकरण गर्नु र कानुनी शिक्षा र शिक्षण प्रणालीलाई समाजको विकासक्रम एवम् आवश्यकता अनुरूप विशिष्टीकृत, गुणस्तरीय र आकर्षित बनाउँदै लैजानु जस्ता विषय प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

मुलुक संघीय शासन व्यवस्थामा प्रवेश गरेपछि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा आवश्यकतानुसार प्राथमिकता निर्धारण गरी कानून निर्माण गर्ने र कार्यान्वयन गर्ने महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त भएको छ। सूचना प्रविधिमैत्री न्यायसम्पादन, भौतिक पूर्वाधार विकास र न्यायिक जनशक्तिको क्षमता विकासका क्षेत्रहरूको पहिचानसहित न्यायपालिकाको रणनीतिक योजनाले सुधारका क्षेत्र पहिचान गरेको छ। सरकारी अभियोजन र सरकारी निर्णयको प्रतिरक्षाको लागि महान्यायधिवक्ता लगायत प्रदेशस्तरमा मुख्य महान्यायधिवक्ताको संवैधानिक व्यवस्था हुनु, स्थानीय न्यायिक

समितिको व्यवस्था हुनु, नयाँ फौजदारी एवम् देवानी कार्यविधि संहिता तर्जुमा भई लागु हुनु, निःशुल्क कानुनी सेवाको व्यवस्था हुनु, हिरासतमा रहेको थुनुवा र कैदीको अवस्थाका बारेमा खुला अनुगमन व्यवस्था हुनु, सरकारी वकिलको लागि छुट्टै सेवा शर्तसम्बन्धी कानुनी व्यवस्था हुनु र अपराध पीडितको हक, संरक्षण र सम्बर्द्धनमा विषयगत कानुन निर्माण हुनु अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

स्वतन्त्र, निष्पक्ष, पहुँचयोग्य, सक्षम र विश्वसनीय न्याय प्रणाली ।

### ४.२ लक्ष्य

स्वतन्त्र एवम् सक्षम न्याय प्रणाली, प्रभावकारी अभियोजन, सुदृढ प्रतिरक्षा, संविधान प्रदत्त मौलिक हकको सुनिश्चितता एवम् मानव अधिकारको संरक्षण, सम्बर्द्धन, न्यायिक प्रक्रियामा सूचना प्रविधिको प्रयोग गरी सहज पहुँच विस्तार तथा कानुनी सहायताको प्रभावकारिता अभिवृद्धिसँगै कानुनी शासनको प्रतिफल जनताले अनुभूत गर्ने न्याय व्यवस्था कायम गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. न्याय प्रशासनलाई छिटो, छरितो, निष्पक्ष, प्रभावकारी र जनउत्तरदायी तथा न्यायिक प्रक्रियालाई सरल, अनुमानयोग्य, जवाफदेही, पारदर्शी र सूचना प्रविधिमैत्री बनाई सबैका लागि न्याय सुनिश्चित गर्दै न्यायपालिकाप्रतिको जनआस्था र विश्वासमा अभिवृद्धि एवम् न्यायपूर्ण समाज निर्माण गर्नु ।
२. नेपालको संविधान, संघीयताको मर्म, नेपाल पक्ष भएको अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि-सम्झौता अनुरूप सबै पक्षबाट अपनत्व हुने सरल र गुणस्तरीय कानुनको तर्जुमा गर्नु तथा मौलिक हक तथा मानव अधिकारको संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्दै न्यायमा सबैको सहज पहुँच स्थापित गराउनु ।
३. न्याय सम्पादनमा क्रियाशील जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि गर्दै वस्तुगत र वैज्ञानिक प्रमाणमा आधारित अपराध अनुसन्धान, अभियोजन र प्रतिरक्षा प्रणाली विकास गरी पीडित पक्ष र सरकारी पक्षका साक्षीको संरक्षण एवम् अपराध पीडितलाई न्याय दिई दण्डहीनताको अन्त्य गर्नु ।
४. कानुनी शिक्षा र शिक्षण प्रणालीलाई राष्ट्रिय एवम् अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा गुणस्तरीय, प्रतिस्पर्धी एवम् समाजको आवश्यकता परिपूर्ति गर्ने गरी विकास गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. सूचना प्रविधिमैत्री मुद्दा प्रवाह व्यवस्थापन र स्वचालित फैसला | १. न्यायिक प्रक्रियालाई छिटोछरितो, प्रभावकारी र पूर्वनुमानयोग्य बनाउन वैज्ञानिक र सूचना प्रविधिमैत्री मुद्दा व्यवस्थापन प्रणालीको विकास गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>कार्यान्वयन पद्धतिको विकास एवम् न्यायपालिकाको संस्थागत सुदृढीकरण र न्यायिक जनशक्तिको क्षमता विकास गरी न्यायिक प्रक्रियालाई छिटोछरितो, प्रभावकारी, अनुमानयोग्य र सहज पहुँचयुक्त बनाउने ।</p> | <ol style="list-style-type: none"> <li>२. फैसला कार्यान्वयनलाई स्वचालित बनाई मुद्दा अन्तिम किनारा भएको मितिले एक वर्षभित्र फैसला कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>३. न्यायपालिकाको संस्थागत सुदृढीकरणका लागि तर्जुमा गरिएको न्यायपालिकाको चौथो पञ्चवर्षीय रणनीतिक योजना र न्यायपालिकाको सूचना प्रविधि सम्बन्धी गुरुयोजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>४. सेवा प्रवाहको निश्चित पद्धति एवम् मापदण्डको विकास र अनुगमन तथा सुपरिवेक्षणका माध्यमबाट काम कारवाहीमा पारदर्शिता र न्यायिक सुशासनलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> <li>५. अदालतहरूको भौतिक संरचनाहरूको सुदृढीकरण र अभिलेख संरक्षणका लागि पूर्वाधारको विकास गरिनेछ ।</li> <li>६. न्यायमा पहुँच विस्तारका लागि कानून र कार्यविधिमा सुधार, सेवाग्राहीमैत्री भौतिक संरचनाको निर्माण र आन्तरिक कार्य संस्कृतिमा सुधार एवम् न्यायपालिकाको आस्था र विश्वास अभिवृद्धि र मेलमिलाप पद्धतिको प्रभावकारिताका लागि कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>७. न्यायिक जनशक्तिको क्षमता विकास सम्बन्धी तालिम नीति २०७४ को प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>८. सेवाग्राहीको रायसुझाव संकलन, गुनासो व्यवस्थापन एवम् दण्ड र पुरस्कार पद्धतिलाई प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>९. कार्यविधि सरलीकरण र नवीन विधिशास्त्रीय विषयहरूमा नियमित अध्ययन अनुसन्धान गरिनेछ ।</li> </ol> |
| <p>२. संविधान अनुकूलको कानून निर्माण गर्ने ।</p>   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. कानून निर्माण गर्दा आमजनता तथा सरोकारवालाहरूसँग पर्याप्त छलफल एवम् आवश्यक अध्ययन-अनुसन्धान गरी आम जनमानसमा अपनत्वको भावना विकास हुने वातावरण तयार गरिनेछ ।</li> <li>२. नेपालको संविधान र संघीयताको मर्म तथा अदालतका आदेश बमोजिमका कानून निर्माणमा तीव्रता दिइनेछ ।</li> <li>३. मुलुकी देवानी तथा अपराध संहिता लगायतका कानूनहरूको प्रचार-प्रसार गरी कानुनी सचेतना अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> </ol>   |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>४. निर्माण भएका कानूनबारे सर्वसाधारणमा छिटो जानकारी दिन र पहुँचयोग्य बनाउन "हात हातमा कानून" कार्यक्रम मार्फत मोबाइल एप्लिकेशन विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. स्थानीय तहमा रहेको न्यायिक समितिलाई अदालतमा रूपान्तरण गर्न नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ ।</p>  |
| ३. निःशुल्क कानुनी सहायता सेवालाई सबैको पहुँचयोग्य र प्रभावकारी बनाउने ।  | <p>१. मौलिक हक कार्यान्वयनको लागि आवश्यक ऐन, नियम, निर्देशिका र कार्यविधि निर्माण तथा परिमार्जन गरिनेछ ।</p> <p>२. नेपाल पक्ष भएका अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौताको अध्ययन अनुसन्धान गरी अन्तर्राष्ट्रिय दायित्ववाट सिर्जित भूमिका निर्वाह गर्न आवश्यक कानून तर्जुमा गरिनेछ ।</p> <p>३. निःशुल्क कानुनी सहायता सेवालाई सबैको पहुँचयोग्य र प्रभावकारी बनाउँदै कार्यान्वयन निकायको संस्थागत सुदृढीकरण एवम् क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>४. स्वेच्छिक कानुनी सहायता (pro bono) लाई प्रभावकारी रूपमा प्रयोगमा ल्याइनेछ ।</p> <p>५. न्यायमा सहज पहुँच अभिवृद्धिको लागि कानुनी पूर्वाधार तयार गरी प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयनमा ल्याई हिंसा तथा विभेदरहित न्यायपूर्ण समाजको सिर्जना गरिनेछ ।</p> <p>६. संक्रमणकालीन न्यायसम्बन्धी कार्यहरू पूरा गर्न कानुनी, प्रक्रियागत र संस्थागत सुधार गरी सम्बन्धित आयोगहरूलाई सक्षम र प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> |
| ४. अपराध अनुसन्धान, अभियोजन र प्रतिरक्षा प्रणालीलाई वैज्ञानिक र वस्तुगत प्रमाणमा आधारित बनाउने तथा संस्थागत सुदृढीकरण गर्ने । | <p>१. अपराध अनुसन्धानमा वैज्ञानिक पद्धतिको प्रयोगलाई बढाउँदै लैजाने र सबै तहका न्यायिक समितिलाई क्रियाशील बनाइनेछ ।</p> <p>२. विधि विज्ञान प्रयोगशालालाई प्रादेशिक तहमा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>३. हेलो साक्षी कार्यक्रम, इ-एटर्नी कार्यक्रम र समुदायमा सरकारी वकिल कार्यक्रम सञ्चालनमा ल्याइनेछ तथा पीडित मैत्री कक्षको विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>४. कानूनको परिपालना, सरकारीवादी मुद्दाको प्रतिरक्षा र फैसला कार्यान्वयनको प्रभावकारिता अभिवृद्धि र समन्वय कायम गर्न नेपाल बार काउन्सिल र सरकारी वकिलको कार्यालयको संस्थागत क्षमता सुदृढीकरण गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ५. न्याय सेवाका कर्मचारी र सरकारी वकिलहरू एवम् स्थानीय न्यायिक समितिका पदाधिकारीहरूको न्याय सम्पादन एवम् मुद्दा व्यवस्थापन क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | १. न्याय सेवा तालिम केन्द्र र राष्ट्रिय न्यायिक प्रतिष्ठान मार्फत तालिम आवश्यकता विश्लेषण गरी क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. सरकारी वकिलको पेसालाई व्यवसायिक र थप स्वायत्तता बनाइनेछ ।<br>३. सरकारी वकिलको सेवा शर्तसम्बन्धी कानून तर्जुमा गरी विषयगत आधारमा उनीहरूको विशिष्टीकरण गरिनेछ ।<br>४. स्थानीय न्यायिक समितिका पदाधिकारीलाई आवश्यक तालिम दिई मेलमिलाप, मध्यस्थता जस्ता सामुदायिक कार्यक्रमहरू मार्फत स्थानीय तहका विवाद निरूपण एवम् द्वन्द्व व्यवस्थापन गरिनेछ । |
| ६. पीडित पक्ष र सरकारी पक्षका साक्षीको संरक्षण तथा मुद्दाका साक्षी र प्रमाणको प्रस्तुतिलाई प्रभावकारी बनाउने ।                                      | १. पीडितमैत्री प्रभावकारी न्याय प्रणालीका लागि आवश्यक कानुनी तथा भौतिक एवम् सुरक्षा पूर्वाधारको प्रबन्ध गरिनेछ ।<br>२. साक्षी परिक्षण एवम् प्रमाण प्रस्तुतिमा सूचना प्रविधिको प्रयोगको विस्तार गरिनेछ । पीडितले प्राप्त गर्ने क्षतिपूर्ति तथा राहत कोषको व्यवस्थापन प्रभावकारी बनाइनेछ । साक्षी संरक्षण सम्बन्धी कानून तर्जुमा गरी लागु गरिनेछ ।  |
| ७. कानुनी शिक्षा र शिक्षण प्रणालीलाई व्यवस्थित, गुणस्तरीय र आधुनिक बनाउने ।   | १. कानुनी शिक्षा र यससँग सम्बन्धित शिक्षण संस्थानलाई गुणस्तरीय, प्रतिस्पर्धी र समाजको आवश्यकता परिपूर्ति गर्ने गरी कानुनी शिक्षा प्रणालीको विकास, व्यवस्थापन र नियमन गर्न राष्ट्रिय स्तरमा एक कानून विश्वविद्यालयको स्थापना एवम् सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. कानुनी शिक्षालाई आधुनिकीकरणसँगै विधागत रूपमा विशिष्टीकृत गर्दै व्यावसायिक र आकर्षित बनाइनेछ ।<br>३. कानुनी शिक्षा र शिक्षण प्रणालीलाई प्रविधियुक्त बनाई नागरिक शिक्षासँग जोडिनेछ ।  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्तिम वर्षमा कानुनी शासनको सूचकांक ०.५३ बाट ०.५८ पुगेको हुनेछ । स्वतन्त्र, सक्षम एवम् प्रभावकारी न्याय प्रणालीको स्थापना भई कानूनको शासन एवम् नागरिक अधिकार र स्वतन्त्रताको संरक्षण हुनेछ । सूचना प्रविधिको प्रयोगले कानून र न्यायिक कामकारवाहीमा जनताको सहज पहुँच कायम हुनेछ । मुद्दाको अनुसन्धान र अभियोजन वैज्ञानिक एवम् वस्तुपरक हुनेछ । छिटो, छरितो, सरल, निष्पक्ष, अनुमानयोग्य न्याय प्रक्रियाको माध्यमबाट आधारभूत मौलिक हकको कार्यान्वयन, संरक्षण र प्रवर्द्धन प्रभावकारी भएको हुनेछ । न्यायमा सबैको पहुँच

पुगेको हुनेछ। सबै पक्षबाट स्वामित्व लिने कानून निर्माण भई कानूनको परिपालनाको संस्कारमा वृद्धि हुनेछ। सातवटै प्रदेशमा विधि विज्ञान प्रयोगशालाको स्थापना भई सञ्चालनमा आएको हुनेछ। अभियोजन पक्ष सुदृढ भई सरकारवादी मुद्दामा सफलताको दर वृद्धि भएको हुनेछ।

## ९.८ संघीय शासन प्रणाली

### १. पृष्ठभूमि

संघीय शासन प्रणाली बमोजिम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा सरकार गठन भई सञ्चालनमा रहेको छ। साथै, संविधानले शासन पद्धतिमा विभिन्न जात, जाति, वर्ग, क्षेत्र, लिङ्ग र समुदायका नागरिकहरूको स्वामित्व, सहभागिता र पहुँच अभिवृद्धि गर्दै विविधताको व्यवस्थापनका माध्यमबाट राष्ट्र निर्माण गर्ने उद्देश्यका साथ संघीय ढाँचालाई आत्मसात गरेको छ। अन्तरतह समन्वय, सहयोग र सहकार्यमा आधारित संघीयता नै नेपालको शासन पद्धतिको मूल आधार हो।

### २. प्रमुख समस्या

संघीयता कार्यान्वयनको नयाँ अनुभव, संघीयता कार्यान्वयनको स्पष्ट मार्गचित्र तयार भइनसक्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारबीच अन्तरसम्बन्ध स्पष्ट रूपमा परिभाषित नहुनु, एक-अर्का सरकारबीच अपेक्षित समन्वय कायम हुन नसक्नु र प्रदेश र स्थानीय तहको क्षमता विकासको योजना नबन्नु प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती र अवसर

संविधानप्रति सबै सरोकारवालाको समान बुझाई कायम गर्नु, सबै तहमा प्रशासन र राजनीति बीच अन्तरसम्बन्ध परिभाषित गर्नु, सबै तहमा पर्याप्त कर्मचारी व्यवस्थापन गर्नु, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयन गर्नु, सहकारी संघीयताको मूल्य र मान्यतालाई आत्मसात गर्नु, सबै प्रदेशलाई एउटै दिशामा अग्रसर गराउनु र सबैका बीचमा समन्वय स्थापित गरी संविधानले तोकेका अधिकारहरूको तत् तत् तहमा अभ्यास गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्।

तीन तहमा निर्वाचित स्थिर सरकार, राजनीतिक प्रतिबद्धता, प्रशासनिक संरचना र आवश्यक कानूनहरूको उपलब्धता, संघीयता कार्यान्वयनका लागि सहयोगी वातावरण, सकारात्मक नागरिक सोच जस्ता अवसर रहेका छन्। साथै, स्थानीय तह नै सुशासन, विकास र समृद्धिको लागि आधार भएकोले यो अवसरको रूपमा पनि रहेको छ। स्थानीय अर्थतन्त्रको जगमा आर्थिक समृद्धि हासिल गर्ने अवसर पनि प्राप्त भएको छ।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

समन्वय, सहयोग र सहकार्यमा आधारित समावेशी संघीय शासन प्रणाली।

#### ४.२ लक्ष्य

संघीय शासन पद्धतिबाट प्राप्त हुने लाभमा सबै नागरिकहरूको समान पहुँच र अवसर सुनिश्चित गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. लोकतन्त्रबाट प्राप्त हुने लाभको समानुपातिक, समावेशी र न्यायोचित वितरणको अवस्था सिर्जना गर्नु ।
२. सन्निकटताको सिद्धान्त अनुसार कार्यसम्पादन हुने अवस्था सिर्जना गर्नु ।
३. स्थानीय तहबाट राजनैतिक एवम् प्रशासनिक नेतृत्व विकास गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. तहगत सम्बन्धलाई परिभाषित गर्न आवश्यक कानुनी र संस्थागत आधार तयार गर्ने ।                  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. संविधानले मार्गदर्शन गरेका अन्तरसरकार समन्वय सम्बन्धी ऐन निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</li> <li>२. संघीय संरचना अनुसार संस्थागत संरचना निर्माण र व्यवस्थित गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| २. तीन तहका सरकारहरूलाई सहज रूपले सञ्चालन गर्न योजना, नीति र रणनीति बनाई कार्यान्वयन गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. स्थानीय तहलाई संवैधानिक अधिकारको पूर्ण कार्यान्वयन गर्न सक्ने गरी सक्षम बनाउन आवश्यक नीति र कार्यको प्रबन्ध मिलाउने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. स्थानीय तहको जनशक्ति, निर्वाचित नेतृत्व र स्थानीय तहमा रहेका गाउँपालिका र नगरपालिका संघ, महासंघ तथा जिल्ला समन्वय समितिको क्षमता विकास गरी सुदृढ र सेवाग्राही मैत्री बनाई सुशासनमा टेवा पुऱ्याइनेछ ।</li> <li>३. संघीयता कार्यान्वयनको लागि नागरिक समाज, निजी क्षेत्र र गैरसरकारी क्षेत्रसँग साझेदारी गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ३. भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विविधतालाई जीवन्तता प्रदान गर्ने ।                   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. संविधानमा व्यवस्था गरिएका सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विविधता र समावेशिता संरक्षण गर्ने विभिन्न आयोग र प्रतिष्ठानको कार्य जिम्मेवारीलाई सहजीकरण र समन्वय गरिनेछ ।</li> <li>२. स्थानीय तहलाई आर्थिक वृद्धिको रूपमा विकास गर्ने गरी सार्वजनिक, निजी, सहकारी एवम् समुदायको लगानी केन्द्रित गरिनेछ । साथै, स्थानीय तहका बीचमा एकीकरण भएमा थप समानीकरण अनुदान उपलब्ध गराइनेछ ।</li> <li>३. भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विविधतालाई जीवन्तता प्रदान गर्दै विविधता बीचको एकता कायम गर्न सामाजिक परिचालन, सचेतना एवम् अन्तर्क्रिया कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol> |

|  |   |
|--|---|
|  | ४. संविधान र स्थानीय तह सञ्चालन ऐनमा व्यवस्था भए बमोजिमका विशेष, संरक्षित र स्वायत्त क्षेत्र पहिचान गरी सोको गठन तथा सञ्चालन गरिनेछ । |
|--|---|

#### ४.५ अपेक्षित उपलब्धि

संघीयता कार्यान्वयन सम्बन्धी आवश्यक कानून, नीति, संस्थागत संरचना निर्माण भएको हुने, संघीयता सम्बन्धी विभिन्न विषयको अध्ययन, अनुसन्धान, छलफल र समन्वय सम्बन्धी कार्यक्रमको सञ्चालन, संविधान अनुसारका समावेशी आयोग तथा प्रतिष्ठानको क्षमता अभिवृद्धि भएको हुने र संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आ-आफ्नो अधिकारको उपभोग र प्रयोग गरेका हुनेछन् ।

#### ९.९ प्रदेश तथा स्थानीय तहको सन्तुलित विकास

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानको प्रस्तावनामा संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्थाको माध्यमद्वारा दिगो शान्ति, सुशासन, विकास र समृद्धिको आकांक्षा पूरा गर्ने व्यवस्था गरिएको छ । त्यस्तै संविधानले राज्यको संरचना र राज्यशक्तिको बाँडफाँट अन्तर्गत संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र नेपालको मूल संरचना संघ, प्रदेश र स्थानीय तह गरी तीन तहको हुने व्यवस्था गरेको तथा राज्यशक्तिको बाँडफाँट अन्तर्गत विभिन्न अधिकारका सूचीहरूको निर्धारण गरेको छ । संविधानको यो मूल मर्मलाई आत्मसात गर्दै हाल संघ, प्रदेश र स्थानीय तीन तहको निर्वाचन सम्पन्न भई सबै तहमा सरकार गठन समेत भइसकेको छ । संघीय गणतन्त्रात्मक नेपालको समृद्धिको मूल कडी स्थानीय तथा प्रदेश तहको सन्तुलित विकास नै हो । तसर्थ संघ, प्रदेश तथा स्थानीय तहको अधिकार क्षेत्र अनुरूप कानून बनाई सोको कार्यान्वयनबाट जनताले लोकतन्त्रको अनुभूति गर्ने गरी प्रदेश तथा स्थानीय तहको सन्तुलित विकास गर्नुपर्नेछ ।

##### २. प्रमुख समस्या

संविधानले दिएका साझा अधिकारका बुझाइमा अन्योलता सिर्जना हुनु, कतिपय अवस्थामा एउटै कर सबै तहबाट लगाइनु, प्रदेश तथा स्थानीय तहमा भौतिक पूर्वाधार तथा जनशक्ति व्यवस्थापनमा कठिनाई हुनु, सबै तहको सन्तुलित विकासको लागि भौगोलिक विकटता रहनु आदि प्रमुख समस्या रहेका छन् ।

##### ३. चुनौती तथा अवसर

प्रदेश तथा स्थानीय तहको विकासमा भौगोलिक सन्तुलन कायम गर्नु, तीन तहको सरकारका अधिकारको सूचीमा थप स्पष्टता ल्याई जिम्मेवारी समन्वयात्मक एवम् सामञ्जस्यपूर्ण ढङ्गमा कार्यान्वयनमा ल्याउनु, जनतामा "आफूले तिरेको कर आफ्नै विकासको लागि" भन्ने भावना जागृत गराउनु, जनतामा अधिक भारको महसुस नहुने गरी राजस्व बढाउने उपायको अवलम्बन गर्नु र सबै तहको सन्तुलित विकास गर्न प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन् ।

एकात्मक राज्य प्रणाली संघीय व्यवस्थामा रूपान्तरण हुनु, सबै तहको निर्वाचनमार्फत स्थिर सरकार गठन समेत भइसकेको अवस्थामा जनताले पाउने सेवासुविधा जनताको नजिकबाट उपलब्ध हुने व्यवस्था हुनु र प्रदेश तथा स्थानीय तह दुवैले आ-आफ्नो तहको विकासका लागि नयाँ-नयाँ योजना सहित विकासका कार्य अगाडि बढाउनु प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

मजबुत संघीय शासन प्रणालीमा आधारित समृद्ध नेपाल ।

##### ४.२ लक्ष्य

राष्ट्रको समग्र विकासमा योगदान दिन सक्ने गरी प्रदेश र स्थानीय तहलाई सुदृढ बनाउने ।

##### ४.३ उद्देश्य

प्रदेश तथा स्थानीय शासन प्रणालीको सन्तुलित र दिगो विकास गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. संघीय सरकारको सहयोग र समन्वयमा प्रदेश र स्थानीय तहले आ-आफ्नो भौगोलिक क्षेत्रको वस्तुस्थिति विश्लेषण गरी सोको सही सदुपयोग गर्ने गरी विविध उपायको अवलम्बन गर्ने । | १. प्रदेश र स्थानीय तहमा उपलब्ध स्रोत-साधनको पहिचान गरी सोको महत्तम उपयोग हुने गरी सम्बन्धित सरकार मार्फत योजना बनाइनेछ ।<br>२. प्रदेश तथा स्थानीय तह आफैमा आत्मनिर्भर हुन सक्ने गरी संविधानको दायराभित्र रही राजस्वको परिमाण वृद्धि गर्न आवश्यक कार्यक्रम ल्याइनेछ ।<br>३. स्थानीय तथा प्रदेश तहमा उपलब्ध स्रोत-साधनको महत्तम उपयोग हुने गरी परिचालन गर्न प्रत्येक तहलाई जिम्मेवार बनाइनेछ । |
| २. स्थानीय तह र प्रदेशको स्रोत-साधन र क्षमता अभिवृद्धि गरी विकासशील जनशक्ति उत्पादन गर्ने ।  | १. स्थानीय तथा प्रदेश सरकारको क्षमता अभिवृद्धि गर्न विशेष तालिम तथा अन्य आवश्यक कार्यक्रम प्याकेजको रूपमा ल्याइनेछ ।<br>२. प्रदेश तथा स्थानीय तहमा कर्मचारी समायोजन तथा नयाँ भर्नाको माध्यमबाट जनशक्ति आपूर्ति कार्य सम्पन्न गरिनेछ ।   |
| ३. आ-आफ्नो क्षेत्रको विकासको लागि एक-आपसमा समन्वय तथा  | १. सबै तहका विकास निर्माणका कार्य सञ्चालन गर्दा पारदर्शिता, जवाफदेहिता र मितव्ययीता सुनिश्चितता गरिनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| सहकार्य गर्दै प्रतिस्पर्धात्मक हुन संघीय सरकारले सबै स्थानीय तथा प्रदेश सरकारलाई उत्प्रेरित गर्ने । | <p>२. प्रदेश र स्थानीय तहलाई संवैधानिक सिमाभित्र रही करको दायरा बढाएर आफैमा निर्भर हुन सक्ने गरी सबलीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. स्थानीय साधन स्रोतको उपयुक्त परिचालनबाट राजस्वमा वृद्धि गरी दिगो तथा द्रुत विकासमा योगदान पुऱ्याउन स्थानीय तथा प्रदेश सरकारलाई प्रोत्साहित गरिनेछ ।</p> <p>४. स्थानीय तहको बजेटको निश्चित हिस्सा मानव पुँजी निर्माणमा खर्च गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका अधिकारको बाँडफाँटमा स्पष्टता आएको हुने, प्रत्येक तहले आफूलाई प्राप्त अधिकार कार्यान्वयनको लागि आवश्यक कानून निर्माण गरी आ-आफना योजना सञ्चालन गरेका हुने, दिगो, फराकिलो र सन्तुलित विकासका लागि स्थानीय तथा प्रदेश तहले राजस्व वृद्धि गरी आफैँ धान्न सक्ने खर्च प्रणालीको विकास गरेका हुने र प्रदेश तथा स्थानीय तहको सन्तुलित विकास मार्फत संघीयता कार्यान्वयन सफलतापूर्वक अगाडि बढेको हुनेछ ।

#### ९.१० शासकीय सुधार

##### १. पृष्ठभूमि

नागरिकका सामाजिक-आर्थिक आकांक्षा पूरा गर्दै अगाडि बढ्न शासन सञ्चालनका लागि प्रयुक्त पद्धति र औजारलाई निरन्तर परिष्कृत गर्दै लैजानु आवश्यक पर्दछ । नागरिकले संविधान प्रदत्त आधारभूत मौलिक हकको वास्तविक अनुभूति गर्न सक्ने वातावरण विकास गर्न समेत यो अपरिहार्य हुन्छ । राज्यका नीति अन्तर्गत सार्वजनिक प्रशासनलाई स्वच्छ, सक्षम, निष्पक्ष, पारदर्शी, भ्रष्टाचारमुक्त, जनउत्तरदायी र सहभागितामूलक बनाउँदै राज्यबाट प्राप्त हुने सेवा सुविधामा जनताको समान र सहज पहुँच सुनिश्चित गरी सुशासनको प्रत्याभूति गर्ने व्यवस्था रहेको छ । संघीय शासन प्रणाली अनुरूप सेवा प्रवाहका लागि आधार तयार भएसँगै नयाँ प्रकृतिको अभ्यासलाई व्यवस्थित गर्ने, आवश्यक कानुनी ढाँचाको विकास गर्ने र विभिन्न तहबीच समन्वय र सहकार्यलाई अभ्यासमा उतार्ने काम भइरहेका छन् । स्थानीय तहलाई संविधान निर्देशित उत्तरदायित्व पूरा गर्न सक्षम तुल्याउन विधायिकी, व्यवस्थापकीय र न्यायिक क्षमता अभिवृद्धि गर्ने, विकासको व्यवस्थापन गर्न सक्षम तुल्याउने र आवश्यक सहयोग, समन्वय र अनुगमन सम्बन्धी कार्य हुँदै आइरहेका छन् ।

## २. प्रमुख समस्या

संघीय शासन व्यवस्थाको अवलम्बन पश्चात् जनतासँग प्रत्यक्ष सम्बन्धित सेवाप्रवाह र विकासको व्यवस्थापन तथा सञ्चालनको दायित्व प्रदेश र स्थानीय तहको कार्य जिम्मेवारी बमोजिमको क्षमता अभिवृद्धि नहुनु, सार्वजनिक सेवा प्रवाहका क्षेत्रमा नवीनतम विकास एवम् प्रविधिको समुचित उपयोग गर्न नसक्नु, पारदर्शिता र जवाफदेहिताको प्रणाली पूर्ण रूपमा विकास भइनसक्नु, विभिन्न तहबीच पर्याप्त समन्वय हुन नसक्नु, सुशासन र सार्वजनिक उत्तरदायित्व अपेक्षित रूपमा वहन हुन नसक्नु प्रमुख समस्या रहेका छन् ।

## ३. चुनौती तथा अवसर

संविधानले निर्दिष्ट गरे अनुरूप सार्वजनिक क्षेत्रमा पारदर्शिता, निष्पक्षता र प्रभावकारिता कायम गरी उत्तरदायित्व वहन गर्दै जनताको घर-दैलोमा सेवा पुऱ्याउनु, विकास प्रशासनको क्षमतामा अभिवृद्धि गर्नु, सार्वजनिक व्यवस्थापनप्रति नागरिकको विश्वास बढाउनु, समन्वयको प्रभावकारी प्रणाली अवलम्बन गरी जनतामा उत्साह पैदा गर्नु, संघीय प्रणालीको कार्यान्वयनलाई कम खर्चिलो बनाउनु, पारदर्शिता र जवाफदेहिताको स्तर सुदृढ बनाउनु, शासन सञ्चालनमा सदाचार र मितव्ययीता कायम गर्नु जस्ता चुनौती रहेका छन् ।

नयाँ संविधान बमोजिम निर्वाचनबाट सबै तहमा राजनीतिक संरचनाहरू तयार भई मुलुक लामो समयदेखिको राजनीतिक अस्थिरता र संक्रमणबाट मुक्त हुनु, जनतामा शिक्षा र चेतनाको स्तर बढ्नु र नजिकको सरकारबाट हुने काम कारवाहीमा उनीहरूको निगरानी हुन सक्ने सहज वातावरण तयार हुनु, विकास आयोजनाहरूको प्राथमिकीकरण र कार्यान्वयनमा स्थानीय जनताको सहभागिता बढाउन अनुकूल अवस्था रहनु, संविधानको कार्यान्वयन र विकासको लक्ष्यमा पुग्न अनुकूल वातावरण तयार हुनु प्रमुख अवसर हुन् ।

## ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

पारदर्शिता, जवाफदेहिता, जनउत्तरदायी, सदाचारयुक्त र आधुनिक प्रविधिमा आधारित विधिको शासन ।

### ४.२ लक्ष्य

समग्र शासन व्यवस्थामाथि नागरिकको विश्वास अभिवृद्धि गर्दै विधिको शासन सुदृढ बनाउने ।

### ४.३ उद्देश्य

सार्वजनिक निकायका काम कारवाहीहरूलाई पारदर्शी, जवाफदेही, सदाचारयुक्त र प्रविधिमैत्री बनाई जनसहभागिता र जनविश्वासमा अभिवृद्धि गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. सरकारका काम कारवाहीलाई पारदर्शी तथा प्रभावकारी बनाउन सांगठनिक, कानुनी, प्रणालीगत तथा व्यवहारगत सुधार गर्ने ।             | १. राज्यबाट प्रदान गरिने सेवा सुविधालाई छिटो छरितो र प्रभावकारी बनाउन कानुनी तथा नीतिगत स्पष्टता ल्याइनेछ ।<br>२. परम्परागत शैलीमा विद्यमान रहेका कार्यालयका कार्यस्थलहरूलाई आधुनिक, प्रविधिमैत्री र अधिकतम खुला कार्यस्थलको रूपमा परिवर्तन गरिनेछ ।<br>३. अध्ययन, अनुसन्धान र अन्वेषण जस्ता कार्यमा उपलब्ध सरकारी तथ्याङ्कको प्रयोगमा सहजता ल्याउन विद्युतीय रूपमा सार्वजनिक हुने तथ्याङ्क तथा सूचना खुला सरकारी तथ्याङ्क (Open Government Data - Open Source data) को अवधारणा अनुरूप प्रकाशन गरिनेछ । |
| २. विकास आयोजनाको कार्यन्वयनमा आइपर्ने समस्यालाई सम्बोधन गर्न प्रविधिमा आधारित तत्काल समस्या समाधान प्रणाली अवलम्बन गर्ने । | १. विकास निर्माणका काममा आइपर्ने समस्याको तत्काल समाधान गर्न संयन्त्र बनाई क्रियाशील बनाइनेछ । प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय अन्तर्गत तत्काल समस्या समाधान केन्द्र स्थापना गरी सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. अनुगमन प्रणालीलाई वस्तुगत बनाइने र आवश्यकतानुसार अनुगमनको पुनःअनुगमन गर्ने प्रणाली विकास गरी लागू गरिनेछ ।<br>३. नागरिकको गुनासो समयमै सम्बोधन गर्न सार्वजनिक निकायका कार्यविधिमा परिमार्जन गरिनुका साथै हेलो सरकारलाई थप अधिकारसहित प्रभावकारी बनाइनेछ ।                            |
| ३. राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रका जिम्मेवार पदाधिकारीको कार्यसम्पादनको स्तरलाई मापनयोग्य बनाई लागू गर्ने ।                | १. मितव्ययीता, जवाफदेहिता र सदाचारलाई सार्वजनिक पदमा रहेका व्यक्तिहरूले जीवनशैलीकै रूपमा पालना गर्नुपर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।<br>२. विभिन्न तहका सार्वजनिक निकायबाट सम्पादन हुने काम कारवाहीमा समन्वय गरी आधारभूत र प्राविधिक रूपमा एकरूपता कायम गर्न प्रशासनिक तहमा समन्वय प्रणालीको विकास गरिनेछ ।<br>३. उच्च नेतृत्व तहमा सार्वजनिक जिम्मेवारी प्रदान गर्दा कार्य सम्पादन करार सम्झौता गरिनेछ ।  |
| ४. सार्वजनिक निकायका काम कारवाहीप्रति सकारात्मक छवि निर्माण गर्ने ।   | १. नयाँ प्रविधिको अवलम्बन र विद्यमान प्रविधिमा सुधार गर्दा धेरै निकायबाट दोहोरो खर्च हुन नदिन निश्चित मापदण्डमा आधारित भई प्रारम्भिक खर्च गर्ने र त्यसको प्रयोग अन्य धेरै निकायले गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।   |

| रणनीति | कार्यनीति  |
|--------|--|
|        | <p>२. सार्वजनिक निकायका कार्यक्रम कम खर्चिलो र सामाजिक नमुनाको रूपमा सम्पन्न गरिनेछ ।</p> <p>३. सरकारबाट गरिएका काम कारवाही तथा नयाँ अभियानलाई सार्वजनिक गरी सदाचारयुक्त असल अभ्यासहरूको प्रचार-प्रसारमा जोड दिई सरकार तथा राज्य संयन्त्रप्रति जनताको सकारात्मक छवि निर्माण गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

संवैधानिक व्यवस्था अनुरूप सार्वजनिक निकायका काम कारवाहीमा पारदर्शिता, स्वच्छता र निष्पक्षतामा अभिवृद्धि गर्न आवश्यक विधि तयार भएका हुने, सार्वजनिक निकायका कार्यविधि र अभ्यास बढी मितव्ययी र सदाचारयुक्त भएका हुने, जिम्मेवारी र उत्तरदायित्वको स्पष्ट किटानी गर्ने प्रणालीको अवलम्बनले सार्वजनिक जवाफदेहिताको स्तरमा स्पष्ट रूपमा सुधार आएको हुने, प्रविधिमैत्री कार्यस्थल र कार्यविधिको प्रयोगबाट काम सम्पन्न गर्न लामो समय पूर्वानुमान गर्न सकिने भएको हुने, कार्यसम्पादनको स्तरमा सुधार आएको हुने, गुनासोको संख्या घटेको हुने र समग्रमा तीन तहका सार्वजनिक निकायका काम र कार्यशैली उपर जनताको भरोसामा उल्लेख्य वृद्धि भएको हुनेछ ।

#### १.११ प्रशासकीय सुशासन

##### १. पृष्ठभूमि

शासन प्रणालीलाई जनमुखी, सक्षम, सुदृढ, सेवामूलक र उत्तरदायी बनाउँदै लैजानु आजको आवश्यकता हो । शासन प्रणालीमा सबै क्षेत्र, वर्ग, समुदाय र सरोकारवालाको पहुँच र सहभागितालाई सुनिश्चित गर्न आवश्यक छ । संघीय प्रणालीमा आधारित लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्थालाई व्यवहारमा कार्यान्वयन गर्दै जनविश्वास अभिवृद्धि गर्नु प्रशासकीय सुशासनको मूल मर्म हो ।

##### २. प्रमुख समस्या

अन्तरसरकार समन्वय, शासन सञ्चालन र विकास. सेवा प्रवाह सम्बन्धी नीति, कानून तथा मापदण्ड तर्जुमा भई नसक्नु, सबै तहमा संरचनागत व्यवस्था भइनसक्नु, सबै तहमा जनशक्तिको समुचित व्यवस्थापन हुन नसक्नु, जवाफदेहिता, जिम्मेवारीबोध र सेवाग्राहीमैत्री व्यवहार हुन नसक्नु र सदाचार कायम गर्न नसकिनु जस्ता प्रमुख समस्या रहेका छन् ।

##### ३. चुनौती र अवसर

लक्षित वर्गले लाभ लिन सक्ने गरी समावेशीकरण नीतिमा पुनरावलोकन गर्नु, जनताको बढ्दो अपेक्षा सम्बोधन गर्ने गरी सेवा प्रवाहमा सुधार गर्नु, सबै राष्ट्र सेवक कर्मचारीको क्षमताको पूर्ण उपयोग हुने गरी संस्थागत क्षमतामा

अभिवृद्धि गर्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच प्रभावकारी प्रशासकीय समन्वय कायम गर्ने गरी संरचनागत एवम् नीतिगत व्यवस्था गर्नु चुनौती रहेका छन् ।

संघीय ढाँचा अनुरूप स्थानीय तहबाटै सेवा प्रवाह हुने अवस्था सिर्जना हुनु, सार्वजनिक व्यवस्थापनको क्षेत्रमा नयाँ प्रविधि, ज्ञान, सीप र क्षमता भएका जनशक्तिको प्रवेश हुँदै जानु, सार्वजनिक प्रशासन समावेशी हुँदै जानु, राजनीतिक र प्रशासनिक सुमधुर सह-सम्बन्धको माध्यमबाट विकास र सेवा प्रवाह प्रभावकारी हुँदै जानु अवसरका रूपमा रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१. सोच

परिणाममुखी र जनसेवी सार्वजनिक प्रशासन तथा विकास व्यवस्थापन ।

##### ४.२. लक्ष्य

जवाफदेही, व्यावसायिक र सक्षम सार्वजनिक प्रशासनबाट सार्वजनिक सेवाप्रतिको जनविश्वास अभिवृद्धि गर्ने र विकासलाई नतिजामुखी बनाउने ।

##### ४.३. उद्देश्य

१. सार्वजनिक प्रशासनलाई संघीय संरचना अनुरूप सबल, सक्षम र सुदृढ बनाई दक्ष, सेवाग्राहीमुखी र व्यावसायिक बनाउनु ।
२. सार्वजनिक सेवालार्ई भरपर्दो, सुलभ, गुणस्तरीय र पहुँचयोग्य बनाई विकास प्रक्रियालाई प्रभावकारी बनाउनु ।
३. सेवा प्रवाह र शासन प्रणालीमा बहुपक्षीय साझेदारीको विकास गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. निजामती सेवाको राष्ट्रिय नीति तथा मानव संसाधन विकास योजना बनाई कर्मचारी एवम् तालिम प्रदायक संस्थाहरूको क्षमता विकास गर्ने । | १. हाल विद्यमान निजामती सेवाको राष्ट्रिय नीतिलाई संघीय संरचना अनुरूप आवश्यक परिमार्जन गरिनेछ ।<br>२. क्षमता विकास योजना बनाई संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा कार्यरत कर्मचारीलाई आवश्यकताको आधारमा तालिम दिइनेछ ।<br>३. तालिम प्रदायक संस्थामा आवश्यक पूर्वाधारको व्यवस्था गरी सूचना प्रविधिसँग आबद्ध गरिनेछ<br>४. प्रशासनिक संयन्त्रलाई चुस्त, दुरुस्त र गतिशील बनाउनका लागि सेवा प्रवाह र विकास निर्माणप्रति प्रतिबद्ध एवम् थप उत्प्रेरणायुक्त |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | सक्षम कर्मचारीतन्त्रको विकास समेत गर्न विद्यमान क्षमता विकासका नीति एवम् कानुनलाई समयानुकूल र समन्यायिक तवरले परिमार्जन गरिनेछ ।  |
| २. अन्तरसरकार समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी एवम् व्यवस्थित बनाउने ।                                    | <p>१. अन्तरसरकार समन्वय र सहकार्य गर्न संविधानको व्यवस्थालाई प्रभावकारी बनाउन मन्त्रालय र प्रदेश स्तरमा संयन्त्र निर्माण गरी सोको प्रभावकारी वातावरण तयार गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रदेश र स्थानीय तहको प्रशासकीय संरचना, सेवा प्रवाह हुने स्थान र क्षमता विकास सम्बन्धी संरचनाहरू निर्माण गरी सेवा प्रवाहलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p>   |
| ३. सेवा प्रवाहलाई नागरिक र विकासमैत्री बनाई विकास व्यवस्थापनमा सहकारी तथा निजी क्षेत्रलाई आबद्ध गर्ने । | <p>१. सेवा प्रवाह र विकास व्यवस्थापनमा निजी क्षेत्र र नागरिक समाज बीचको सहकार्य अभिवृद्धिका लागि कानुनी र नीतिगत सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. सेवा प्रवाहलाई पारदर्शी, जनमुखी, उत्तरदायी बनाउन नागरिक समाज लगायत बहु-सरोकारवालाहरूको निगरानी बढाइनेछ ।</p> <p>३. सेवा प्रवाह र विकासलाई प्रभावकारी बनाउन सेवाग्राहीको पृष्ठपोषण लिने पद्धतिलाई संस्थागत गर्दै प्रविधिमैत्री बनाउन आवश्यक पहल गरिनेछ ।</p>   |
| ४. राष्ट्रसेवकलाई आफ्नो कार्य जिम्मेवारीप्रति थप परिणाममुखी र उत्तरदायी बनाउने ।                        | <p>१. राष्ट्र सेवकलाई जिम्मेवार, कर्तव्यनिष्ठ र उत्तरदायी बनाई आचरणमा सकारात्मक परिवर्तन ल्याउन सूचकसहित कार्यसम्पादन सम्झौता गरिनुका साथै दण्ड र पुरस्कारको उचित र प्रभावकारी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. भ्रष्टाचार विरुद्ध व्यक्त गरिएका प्रतिबद्धता अनुरूप भ्रष्टाचार विरुद्ध शून्य सहनशीलताको नीतिमार्फत सार्वजनिक प्रशासनमा सदाचारिता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>३. विभिन्न अध्ययन सुझावको आधारमा प्रशासकीय सुशासनको क्षेत्रमा थप सुधार गरिनेछ ।</p> |

## ४.५ अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यसम्ममा 'हेलो सरकार'मा प्राप्त उजुरीको फछ्यौट हालको ४८.१३ प्रतिशतबाट ९८ प्रतिशत पुगेको हुनेछ । यस अवधिमा शतप्रतिशत राष्ट्रिय परिचय पत्र प्राप्त गरेका हुनेछन् । सबै प्रदेश तथा स्थानीय तहको क्षमता विकास योजना तयार भएको हुने, स्थानीय तहका कम्तीमा दुई तिहाई जनप्रतिनिधि तथा कर्मचारीले आधारभूत तालिम प्राप्त गरेको हुने, सबै नगरपालिका तथा गाउँपालिकाको न्यूनतम पूर्वाधार सहितको वडा तहसम्मको प्रशासकीय भवन निर्माण सम्पन्न भएको हुने, अन्तरसरकार समन्वय सम्बन्धी कानून तर्जुमा भइ यसको प्रभावकारी कार्यान्वयन भएको हुने, सबै स्थानीय तहका जनप्रतिनिधि तथा कर्मचारीको आचार संहिता निर्माण भई लागू भएको हुने, स्थानीय तहको नीति तर्जुमा तथा सेवा प्रवाह प्रक्रियामा नागरिक समाजको सहभागिता, सहकार्य, समन्वय एवम् सहयोग अभिवृद्धि गर्ने संयन्त्र निर्माण भई सार्वजनिक क्षेत्रको कुशलता अभिवृद्धि भएको हुनेछ ।

## ९.१२ भ्रष्टाचार नियन्त्रण

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानमा सार्वजनिक प्रशासनलाई स्वच्छ, सक्षम, निष्पक्ष, पारदर्शी, भ्रष्टाचारमुक्त, जनउत्तरदायी र सहभागितामूलक बनाउँदै राज्यबाट प्राप्त हुने सेवा, सुविधामा जनताको समान र सहज पहुँच सुनिश्चित गरी सुशासनको प्रत्याभूति दिने राज्यको नीति अनुरूप कानुनी र संरचनागत व्यवस्था गरिएको छ । भ्रष्टाचार विरुद्धको संयुक्त राष्ट्र संघीय महासन्धि बमोजिम कानुनको परिमार्जन गरी सार्वजनिक, निजी, सहकारी, सामुदायिक तथा गैरसरकारी क्षेत्रमा हुने भ्रष्टाचारजन्य कार्य, आर्थिक अनियमिततालाई समेत कानुनको दायरामा ल्याउन आवश्यक कानुनी व्यवस्था तर्जुमा भइरहेका छन् । उक्त कानुनी व्यवस्था बमोजिम भ्रष्टाचार नियन्त्रणसँग सम्बन्धित नियामक निकायको सबलीकरण गर्नु आवश्यक भएको छ । समाजको आर्थिक तथा सामाजिक पक्षमा भ्रष्टाचारले पारिरहेको प्रतिकूल असरलाई नियन्त्रण गर्ने सम्बन्धमा विहङ्गम दृष्टिकोण, प्रतिबद्धता एवम् सोही बमोजिमको गतिशीलता र व्यवहारमा प्रतिबिम्बित हुन आवश्यक छ ।

### २. प्रमुख समस्या

समाजमा आर्थिक अपराध विरुद्धको जनमतलाई बलियो बनाउन नसकिनु, निजी क्षेत्रको आर्थिक अनियमिततालाई कानुनी कारवाहीको दायरामा पूर्ण रूपमा ल्याउन नसकिनु, छानबिन तथा अनुसन्धानको सबल प्रणालीको विकास गर्न नसकिनु, सार्वजनिक सेवा विशेष गरी खरिद तथा नागरिकसँग प्रत्यक्ष सरोकार रहने निकायबाट सम्पादन हुने काम कारवाहीलाई अनलाइन प्रणालीमा पूर्ण रूपमा आबद्ध गर्न नसकिनु र सबै प्रदेश तथा स्थानीय तहमा विस्तार गरी सार्वजनिक सेवालाई अनुमानयोग्य बनाउन नसकिनु प्रमुख समस्या हुन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

समाजमा नैतिक मूल्य-मान्यताको विकास गरी भ्रष्टाचारलाई सामाजिक अपराधको रूपमा स्थापित गर्नु, सबै क्षेत्रमा हुने भ्रष्टाचारजन्य कार्यलाई नियन्त्रण गरी सुशासनको प्रत्याभूति दिनु र भ्रष्टाचारजन्य कसुरका नयाँ-नयाँ स्वरूप नियन्त्रण गरी समग्र सार्वजनिक सेवालाई अनुमानयोग्य बनाउनु चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

भ्रष्टाचार विरुद्धको संयुक्त राष्ट्र संघीय महासन्धि बमोजिम कानून परिमार्जनको क्रममा रहेको कानूनले सबै तह र क्षेत्रमा हुने भ्रष्टाचारजन्य कार्य एवम् आर्थिक अनियमिततालाई अनुसन्धानको दायरामा आउने सम्भावना रहेको, मुलुकको संघीय संरचना बमोजिम सबै तहमा सबल सरकार गठन भएकोले गलत आर्थिक क्रियाकलापलाई नियन्त्रण गरी मुलुकको विकास गर्नको लागि उपयुक्त अवसर रहनु, भ्रष्टाचार विरुद्ध समाजमा देखिएको परिवर्तित दृष्टिकोण, संवैधानिक एवम् कानुनी रूपमा सबल नियामक निकायको व्यवस्था हुनु, नागरिकमा भ्रष्टाचार विरुद्धको सशक्त चेतनाको विकास हुँदै जानु, नियामक निकायको सबलीकरण एवम् अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगको प्रादेशिक (क्षेत्रीय कार्यालय) एवम् सम्पर्क कार्यालयको विस्तारले भ्रष्टाचार विरुद्धको अभियानलाई थप प्रभावकारी रूपमा अगाडि बढाउने जस्ता अवसर रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सदाचारयुक्त समाज निर्माण।

#### ४.२ लक्ष्य

भ्रष्टाचारजन्य कार्य नियन्त्रण गरी मर्यादित एवम् स्वच्छ समाज निर्माण गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

भ्रष्टाचारजन्य कार्य नियन्त्रण गरी सुशासनको अनुभूति दिलाउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. विद्यमान नीति तथा कानूनमा समयानुकूल परिमार्जन तथा कार्यान्वयन गर्ने। | १. भ्रष्टाचार नियन्त्रणसँग सम्बन्धित कानून एवम् नीतिगत सुधारलाई निरन्तरता दिइनेछ।<br>२. नीतिगत तहमा हुने भ्रष्टाचारको अन्त्य गर्दै नीति निर्माणकर्तालाई जवाफदेही र उत्तरदायी बनाइनेछ।<br>३. सदाचार नीति तर्जुमा गरी प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ। |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| २. भ्रष्टाचार विरुद्ध शून्य सहनशीलतासहित सदाचारयुक्त समाज निर्माण गर्ने ।                       | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग, न्यायपरिषद्, सम्पत्ति शुद्धीकरण विभाग, राजस्व अनुसन्धान विभाग, राष्ट्रिय सतर्कता केन्द्र, राष्ट्रिय अनुसन्धान विभाग, सार्वजनिक खरिद अनुगमन कार्यालय, सैनिक अनुसन्धान समिति लगायतका निकायलाई सक्षम र सबल बनाउँदै जवाफदेही र उत्तरदायी बनाइनेछ ।</li> <li>२. भ्रष्टाचारसँग सम्बन्धित सूचनाको संकलन, आदान-प्रदान र विश्लेषण गरी नियामक निकाय एवम् सम्बन्धित निकायमा आवश्यक कारवाहीको लागि उपलब्ध गराउने प्रबन्ध मिलाइनेछ ।</li> <li>३. भ्रष्टाचार नियन्त्रण गर्ने संयन्त्र र निकायमा आबद्ध जनशक्तिको क्षमता विकास तथा अनुसन्धानमा आधुनिक उपकरण तथा पद्धतिको प्रयोग गरी भ्रष्टाचार नियन्त्रणलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> <li>४. नियामक निकायबीचको समन्वयलाई सुदृढ र प्रभावकारी बनाइ भ्रष्टाचार नियन्त्रणसँग सम्बन्धित काम कारवाहीलाई एकीकृत रूपमा अगाडि बढाइनेछ ।</li> <li>५. सम्पत्तिको शुद्धीकरण नियन्त्रण सम्बन्धी कार्यलाई प्रभावकारी बनाउँदै कानून बमोजिम दण्डित गरिनेछ ।</li> <li>६. भ्रष्टाचार नियन्त्रणमा निरोधात्मक, उपचारात्मक र प्रवर्द्धनात्मक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ३. भ्रष्टाचार विरुद्धका चेतनामूलक, निरोधात्मक एवम् दण्डात्मक काम कारवाहीलाई प्रभावकारी बनाउने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट प्रवाह हुने सार्वजनिक सेवामा अनलाईन प्रणाली विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. विद्यालय स्तरको पाठ्यक्रममा “भ्रष्टाचार समाज विरुद्धको अपराध हो” भन्ने विषयलाई समावेश गरी भ्रष्टाचार विरुद्ध सामाजिक सचेतना जगाई नैतिकवान नागरिक बन्न जोड दिइनेछ ।</li> <li>३. भ्रष्टाचार विरुद्धको जनमत परिचालन गर्नको लागि नागरिक समाज, गैरसरकारी तथा सामुदायिक संस्थाहरूको सक्रिय सहभागितामा सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> <li>४. कानुनी शासनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</li> <li>५. भ्रष्टाचार विरुद्धको जनमत तयार गर्न संचार माध्यमसँग सहकार्य गरिनेछ ।</li> </ol>  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ४. सार्वजनिक सेवामा लाग्ने खर्च, समयवधि तथा प्रक्रिया एवम् कार्यविधिको सम्बन्धमा स्पष्टता ल्याई सार्वजनिक सेवालार्ई जवाफदेही एवम् पारदर्शी बनाउने।           | १. भ्रष्टाचार विरुद्धको संयुक्त राष्ट्रसंघीय महासन्धि कार्ययोजना सम्बन्धी रणनीतिक कार्य योजना, २०६९ मा व्यवस्था भए अनुसार कानून निर्माण तथा परिमार्जन गरिनेछ।<br>२. सार्वजनिक निकायको वेबसाइट, नागरिक बडापत्र एवम् सञ्चारका अन्य माध्यमबाट सार्वजनिक सेवामा लाग्ने खर्च, समयवधि तथा प्रक्रिया एवम् कार्यविधिमा स्पष्टता ल्याई सार्वजनिक सेवालार्ई प्रभावकारी बनाइनेछ।<br>३. भ्रष्टाचार विरुद्धको संयुक्त राष्ट्रसंघीय महासन्धिको प्रावधानहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि आवधिक कार्य योजना तयार गरी लागू गरिनेछ। |
| ५. सार्वजनिक, निजी, गैरसरकारी, सहकारी, बैकिङ्ग क्षेत्रमा हुने आर्थिक अनियमितताको नियन्त्रण गरी निजी क्षेत्रको सेवा प्रवाहलाई गुणस्तरीय एवम् सेवामूलक बनाउने। | १. अनुचित कार्यको अनुसन्धान तथा कारवाही सम्बन्धमा आवश्यक कानुनी व्यवस्था गरिनेछ।<br>२. भ्रष्टाचार गरी विदेशमा लगेर लुकाएको सम्पत्ति फिर्ता गर्न पारस्परिक कानुनी सहायता, सुपुर्दगी गर्ने जस्ता अन्तर्राष्ट्रिय सहयोग प्रवर्द्धनको कार्यलाई प्रभावकारी बनाइनेछ।   |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यमा भ्रष्टाचार अनुभूति सूचकांक ३१ बाट ४१ मा पुगेको हुनेछ। भ्रष्टाचार समाज विरुद्धको अपराधको रूपमा स्थापित भई जनस्तरदेखि राज्य सञ्चालनका हरेक तहमा सदाचार प्रवर्द्धन भएको हुनेछ। भ्रष्टाचारजन्य कार्य नियन्त्रण भई समृद्ध नेपाल सुखी नेपालीको दीर्घकालीन लक्ष्य हासिल गर्नमा योगदान पुगेको हुनेछ।

#### १.१३ मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण

##### १. पृष्ठभूमि

संविधानले नागरिक स्वतन्त्रता, मौलिक अधिकार, मानव अधिकारको संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्दै प्रत्येक व्यक्तिलाई शोषण विरुद्धको हक अन्तर्गत इच्छा विरुद्ध काममा लगाउन नपाइने व्यवस्थाको प्रत्याभूति गरेको छ। मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार बहुआयामिक, बहुक्षेत्रगत एवम् विश्वव्यापी समस्या भएका हुँदा यसको निरोध, पीडितको

संरक्षण, सम्बर्द्धन र कानुनी उपचार सम्बन्धी कार्य भइरहेको छ। साथै, सरकारले राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा गरेको प्रतिबद्धता अनुरूप आवश्यक कानुन र नीति तर्जुमा गरी सरोकारवाला निकायको सहयोग, समन्वय, सहकार्यमा विभिन्न कार्यक्रम सञ्चालन गर्दै आएको छ। मानव बेचबिखन सम्बन्धी जघन्य अपराधको नियन्त्रण गर्ने कार्यमा राज्यको अहम भूमिका रहन्छ। तसर्थ, राज्य संरचनामा आएको परिवर्तनसँगै संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच आपसी समन्वय र सहकार्यबाट मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण गर्नुपर्ने आवश्यकता छ।

## २. प्रमुख समस्या

मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारका आयाम र स्वरूपमा परिवर्तन हुनु, जोखिममा परेका समूह/समुदायको स्पष्ट पहिचान हुन नसक्नु, पीडित तथा पीडकको पहिचान हुन नसक्नु, नजिकका आफन्त र चिनजानका व्यक्तिबाट समेत बेचबिखनमा पर्नु, कतिपय पीडितहरू न्यायका लागि राज्य संयन्त्रको सम्पर्कमा आउन नचाहनु, वैदेशिक रोजगार तथा आप्रवासनलाई व्यवस्थित एवम् मर्यादित बनाउन नसक्नु, घरेलु तथा अन्य वैदेशिक रोजगारमा जाने महिला यौन शोषणमा पर्नु, होटल तथा सत्कार व्यवसायमा कार्यरत महिला तथा किशोरीहरूको यौन शोषण विद्यमान रहनु, चेतनाको कमी र गरिबीको कारण मानवअंगको बेचबिखनको अवस्था विद्यमान हुनु, अन्तर्राष्ट्रिय अपराधको सञ्जाल तथा संलग्नतामा वृद्धि हुँदै जानु र प्रभावकारी अन्तर्राष्ट्रिय सहकार्य र साझेदारीको कमी हुनु यस क्षेत्रका समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

मानव बेचबिखनका नयाँ स्वरूप, तरिका र बाटो प्रयोग हुने गरेको सन्दर्भमा सोही अनुसार नियन्त्रणका उपाय अवलम्बन गर्नु, नियन्त्रणमा संलग्न निकायहरूबीच प्रभावकारी समन्वय स्थापित गर्नु, एकीकृत तथ्याङ्क तथा सूचना प्रणालीको विकास गर्नु, स्वदेशमा रोजगार तथा स्वरोजगारका अवसर सिर्जना गर्नु, यौन तथा श्रम शोषणका लागि हुने आन्तरिक तथा बाह्य बेचबिखन नियन्त्रण गर्नु, वैदेशिक रोजगार र मानव बेचबिखनबारे सचेतना अभिवृद्धि गर्नु, प्रमाण संकलन र साक्षी संरक्षण प्रभावकारी रूपमा गर्नु, वैदेशिक रोजगार ऐन र मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार ऐनबीच सामञ्जस्यता कायम गराउनु, मानव बेचबिखनको अन्तरदेशीय संगठित सञ्जाल विरुद्ध प्रहरी परिचालन र सूचना संकलन एवम् विश्लेषण गर्ने क्षमता अभिवृद्धि गर्नु यस क्षेत्रका चुनौती हुन्।

नेपालको संविधानले शोषण विरुद्धको हकको प्रत्याभूत गर्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको सामूहिक प्रयत्नबाट मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारका मुद्दाको सम्बोधन गर्ने सकारात्मक अवस्थाको सिर्जना हुनु, मानव बेचबिखन नियन्त्रण र सुरक्षित आप्रवासन सम्बन्धी सूचना तथा परामर्श केन्द्र स्थापना तथा सञ्चालन हुनु, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार विरुद्ध स्थानीय तहबाट समिति गठन भई तिनको परिचालन हुने सम्भावना रहनु, बेचबिखनबाट पीडितका लागि अल्पकालीन पुनर्स्थापना कोष तथा केन्द्र सञ्चालन हुनु, मानव बेचबिखन नियन्त्रण सम्बन्धमा विभिन्न निकाय तथा गैरसरकारी संस्थाको सहकार्य हुनु र सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको विकासको व्यापकताले नागरिक तहमा यस विरुद्ध सचेतना अभिवृद्धि हुँदै जानु यस क्षेत्रका अवसर हुन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारमुक्त मर्यादित समाज ।

### ४.२ लक्ष्य

मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारको जोखिममा रहेका समूह/समुदायको सामाजिक-आर्थिक रूपान्तरण गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारको जोखिममा रहेका समूह/समुदायको आर्थिक-सामाजिक सशक्तीकरण गर्नु ।
२. निरोधात्मक अभियान मार्फत मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण गर्नु ।
३. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारबाट पीडित तथा प्रभावितको उद्धार, संरक्षण, न्यायमा पहुँच र पुनर्स्थापनाका सेवालार्इ प्रभावकारी बनाउनु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारको जोखिममा रहेका समूह/समुदायको पहिचान गरी आर्थिक तथा सामाजिक सशक्तीकरण गर्दै बेचबिखन तथा ओसारपसार कार्यलाई नियन्त्रण तथा निरुत्साहित गर्ने उपाय अवलम्ब गर्ने । | १. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारको जोखिम कम गर्न जोखिममा रहेका समूह/समुदायको पहिचान गरी तिनीहरूको सशक्तीकरण गर्न समुदायमा आधारित जीविकोपार्जन तथा स्वरोजगारका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारबाट पीडित/प्रभावितको अध्ययन तथा पहिचानका लागि कार्यविधि तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>३. बेचबिखन तथा ओसारपसारको जोखिममा रहेका समूह तथा पीडित/प्रभावितबारे एकीकृत तथ्याङ्क तथा सूचना व्यवस्थापन प्रणालीको विकास गरिनेछ ।<br>४. मानव बेचबिखन नियन्त्रणका लागि विकास साझेदार, निजी क्षेत्र र समुदायसँग सहकार्य र साझेदारी गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>५. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार रोक्न स्थानीय तहमा सुरक्षित आप्रवासन सम्बन्धी शिक्षा तथा सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालनको साथै सूचना केन्द्र स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>६. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार विरूद्ध राष्ट्रिय तथा स्थानीय सञ्चार माध्यमको क्षमता तथा संवेदनशीलता अभिवृद्धि गरी प्रभावकारी रूपमा परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>७. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रणको लागि महिला विकास कार्यक्रमद्वारा प्रवर्द्धित समूह तथा संस्थाको प्रभावकारी परिचालन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>२. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण, पीडित/प्रभावितको उद्धार, संरक्षण र पुनर्स्थापना गर्न विभिन्न तहका सरकारमा साझेदारी गर्ने संयन्त्र र संरचनाको क्षमता अभिवृद्धि तथा सरोकारवालाबीच प्रभावकारी साझेदारी कायम गर्ने ।</p> | <p>१. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारबाट पीडित तथा प्रभावितको उद्धार, स्वदेश फिर्ता, संरक्षण तथा पुनर्स्थापनाका लागि स्थापित संयन्त्रहरूको सुदृढीकरण तथा विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>२. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारबाट पीडित/प्रभावितलाई तत्कालै उद्धार तथा संरक्षण गर्न गन्तव्य देशमा अल्पकालीन संरक्षण केन्द्रको स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>३. पीडित तथा प्रभावितलाई दिइने सेवालाई मापदण्ड अनुरूप बनाई प्रत्येक प्रदेशमा कम्तीमा एउटा एकीकृत सेवा सुविधा सहितको दीर्घकालीन पुनर्स्थापना केन्द्र र आवश्यकतानुसार स्थानीय तहमा पुनर्स्थापना केन्द्र निर्माण तथा सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार विरूद्ध शून्य सहनशीलताको नीति अवलम्बन गर्दै बेचबिखनमा संलग्नलाई कानुनी दायरामा ल्याउन सम्बन्धित कानुनमा समसामयिक परिमार्जन गरिनेछ ।</p> <p>५. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार विरूद्ध न्याय प्रणालीका साथै वैज्ञानिक र पारदर्शी अनुसन्धान पद्धति विकास गरिनेछ ।</p> <p>६. पीडित तथा प्रभावितलाई परिवार तथा समुदायमा पुनर्स्थापना र पुनर्मिलनपछिको सहयोग र अनुगमनलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>७. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण गर्न क्षेत्रीय स्तरमा समन्वय गर्न र पीडित एवम् प्रभावितको स्वदेश फिर्तीलाई सहज बनाउन द्विदेशीय, क्षेत्रीय र अन्तर्राष्ट्रिय मञ्चको उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>८. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण, पीडित तथा प्रभावितको उद्धार, संरक्षण, पुनर्स्थापना र स्वदेश फिर्तीमा कूटनीतिक नियोगको परिचालन गरिनेछ ।</p>  |
| <p>३. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारबाट पीडित/प्रभावितको संरक्षणका लागि आधारभूत मानव अधिकारको सम्मान गर्दै एकीकृत तथा प्रभावकारी सेवा प्रवाहको सुनिश्चितता गर्ने ।</p>                | <p>१. बेचबिखन तथा ओसारपसारका पीडित तथा प्रभावितहरूलाई प्राप्त हुने कानुनी सहायता तथा क्षतिपूर्तिलाई सहज बनाइनेछ ।</p> <p>२. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण गर्न गठित राष्ट्रिय समिति, प्रदेश समिति तथा स्थानीय समितिको सुदृढीकरण गरी मानव बेचबिखन विरुद्धका कार्यक्रमको तर्जुमा र कार्यान्वयनमा समन्वय गरी सबै स्थानीय समूह र समुदायको सहभागिता वृद्धि गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>३. साक्षी र पीडितको सुरक्षाको लागि कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. बेचबिखनबाट पीडित तथा प्रभावितको राहत, उद्धार, पुनर्स्थापना र सीपमूलक तालिमको लागि प्रदेश तथा स्थानीय तहसम्म पुनःस्थापना कोषको स्थापना गरिनेछ ।</p> |
| <p>४. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रणका लागि प्रभावकारी फौजदारी न्याय प्रणाली र कानुनी एवम् संस्थागत संरचनाको माध्यमबाट पीडित/प्रभावितको न्यायमा पहुँच अभिवृद्धि गर्ने ।</p> | <p>१. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार विरुद्ध शून्य सहनशीलताको नीति अवलम्बन गर्न र बेचबिखनमा संलग्न अपराधीलाई कानुनी दायरामा ल्याउन आवश्यक कानुनी तथा नीतिगत सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारबाट पीडित तथा प्रभावितको संवेदनशीलतालाई दृष्टिगत गर्दै घटना दर्ता प्रक्रियालाई पीडित तथा प्रभावितमैत्री बनाई न्यायमा पहुँच वृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>३. यौन तथा श्रम शोषणका लागि हुने आन्तरिक बेचबिखन र होटल तथा सत्कार व्यवसायमा हुने यौन शोषण नियन्त्रण गर्न प्रभावकारी नियमन तथा अनुगमन प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</p>  |

#### ॡ. अपेक्षित उपलब्धि

आन्तरिक तथा बाह्य मानव बेचबिखन तथा ओसारपसारमा उल्लेख्य कमी आएको हुने, स्थानीय तहमा मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण संयन्त्रको निर्माण भएको हुने, पीडितले क्षतिपूर्ति सहज रूपमा प्राप्त गरेको हुने, पीडितको न्यायमा पहुँच वृद्धि भएको हुने र पीडित तथा प्रभावितका लागि गुणस्तरीय पुनर्स्थापना केन्द्र सञ्चालन भएको हुनेछ ।

## अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र

### १०.१ तथ्याङ्क प्रणाली

#### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको तथ्याङ्कीय अधिकार स्पष्ट किटानी गरेको छ। यस अनुसार मुलुकको तथ्याङ्क प्रणाली तीन तहका सरकारहरू संलग्न रहेको विकेन्द्रित प्रणालीको रूपमा सञ्चालन भइरहेको छ। तथ्याङ्कका संघीय क्रियाकलापमा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको अतिरिक्त विभिन्न संवैधानिक आयोग, मन्त्रालय तथा विभागहरू, नेपाल राष्ट्र बैंक लगायतका निकाय संलग्न छन्। यी निकायले आ-आफ्नो विषयगत कार्यक्षेत्र अन्तर्गतका तथ्याङ्क उत्पादन र आपूर्ति गर्दै आएका छन्। उत्पादित तथ्याङ्क विकास र समृद्धिको राष्ट्रिय लक्ष्य अनुरूप तीन तहका सरकारका नीति तथा योजना तर्जुमा, अनुगमन र मूल्याङ्कनका साथै विकासको दीर्घकालीन सोच, दिगो विकास लक्ष्य तथा संविधानमा उल्लेखित राज्यका निर्देशक सिद्धान्त तथा नीतिबाट मार्गनिर्देशित कार्यक्रमहरूको कार्यान्वयनबाट अपेक्षित नतिजा हासिल गर्नका लागि वस्तुगत आधार बन्न सक्नेछन्।

वि.सं. १९६८ सालको जनगणनाबाट औपचारिक रूपमा सुरु भएको तथ्याङ्क प्रणालीले एक शताब्दी पार गरिसकेको छ। यस क्रममा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागबाट आवधिक रूपमा राष्ट्रिय स्तरका गणना र सर्वेक्षणहरू सम्पन्न भएका छन्। हालसम्म ११ वटा जनगणना, ६ वटा कृषि गणना र १० वटा औद्योगिक गणनाहरू सम्पन्न भएका छन्। पहिलो पटक राष्ट्रिय आर्थिक गणना २०७५ सम्पन्न भएको छ। राष्ट्रिय लेखाका अनुमान र सूचकांक निर्माण सम्बन्धी कार्यहरू नियमित रूपमा सञ्चालन भइरहेका छन्। स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालयबाट जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण र नेपाल राष्ट्र बैंकबाट परिवार बजेट सर्वेक्षण निश्चित समय अन्तरालमा सञ्चालन हुँदै आएका छन्। प्रशासनिक अभिलेख, सूचना व्यवस्थापन प्रणाली, अध्ययन अनुसन्धानका प्रतिवेदनको प्रशोधन र विश्लेषणबाट समेत तथ्याङ्क उत्पादन भइरहेको छ। तथ्याङ्क प्रणालीको विकासका लागि राष्ट्रिय रणनीति तर्जुमा भएको र नयाँ तथ्याङ्क ऐन तर्जुमाको चरणमा छ। योजना अवधिमा तथ्याङ्क प्रणाली थप मजबुत भई यसले स्पष्ट कार्यदिशा तय गर्ने अपेक्षा गरिएको छ।

#### २. प्रमुख समस्या

संघीय शासन पद्धति सापेक्ष तथ्याङ्क प्रणाली स्थापित हुन नसक्नु, तथ्याङ्क सम्बन्धी ऐन-नियमको सामयिक परिमार्जन नहुनु र परस्पर बाझिने कानुनी प्रावधान एकैसाथ लागू भइरहनु, तथ्याङ्कीय क्रियाकलापबीच प्रभावकारी समन्वय हुन नसक्दा विसंगत तथ्याङ्कको उत्पादन विद्यमान रहनु, प्रचलित तथ्याङ्कीय मानक र असल

अभ्यासहरूको सीमित प्रयोग हुनु, तथ्याङ्क प्रणालीका लागि अत्यावश्यक भौतिक, प्राविधिक र वित्तीय पूर्वाधार कमजोर हुनु मुख्य समस्याका रूपमा देखिएका छन्। तथ्याङ्कीय क्रियाकलापमा सूचना प्रविधि लगायत नवीन प्रविधिहरूको न्यून प्रयोग हुनु, प्रशासनिक अभिलेखहरूबाट सीमित किसिमका मात्र तथ्याङ्क उत्पादन हुनु, माग अनुसार खण्डीकृत स्वरूपका तथ्याङ्क उपलब्ध हुन नसक्नु, सर्वेक्षण अनुमति प्रणाली पूर्ण रूपमा लागू हुन नसक्नु, तथ्याङ्कीय निकायको सांगठनिक र कार्य प्रणालीगत सुधार हुन नसक्नु जस्ता समस्या समेत विद्यमान छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

संघीय संरचना बमोजिम तथ्याङ्क प्रणालीलाई सबै तहमा स्थापित गर्दै तहगत सरकारको अधिकार र उत्तरदायित्व स्पष्ट गरी तथ्याङ्कको उत्पादन तथा उपलब्धताको पद्धति स्थापना गर्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहसम्म नै तथ्याङ्कको माग, आपूर्ति र प्रयोगलाई सम्बोधन गर्नु, सर्वेक्षण अनुमति प्रणाली लागू गरी निकायगत र तहगत जिम्मेवारी स्पष्ट गर्नु तथ्याङ्क प्रणालीका मुख्य चुनौती हुन्। तथ्याङ्क क्षेत्रको विकासका लागि प्राप्त हुने सहायतालाई प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रमा परिचालन गर्नु, तथ्याङ्कीय जनशक्ति तथा संस्थागत क्षमता विकास गरी तथ्याङ्कको उत्पादन बढाउनु, तथ्याङ्कीय क्रियाकलापलाई मितव्ययी रूपमा सञ्चालन गर्नु र अन्तर्राष्ट्रिय जगतमा प्रचलित विधि, प्रविधि र गुणस्तर मापदण्डलाई आत्मसात गरी राष्ट्रिय विकासका दीर्घकालीन सोच, दिगो विकास लक्ष्य लगायत तीन तहका नीति तथा योजना प्रणालीका लागि आवश्यक तथ्याङ्कको निरन्तर उत्पादन र आपूर्ति गर्नु जस्ता चुनौती रहेका छन्।

संघीय प्रणाली अनुसार संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका तथ्याङ्कीय अधिकार र जिम्मेवारी संविधानले किटानी गरेको र सो बमोजिमका अधिकारको कार्य विस्तृतीकरण सम्बन्धी प्रतिवेदन नेपाल सरकारबाट स्वीकृत भई कार्यान्वयनमा आएको छ। तथ्याङ्क प्रणालीको विकासका लागि राष्ट्रिय रणनीति तर्जुमा भएको छ। नयाँ तथ्याङ्क ऐन तर्जुमाको प्रक्रिया अगाडि बढेको छ। सूचना र प्रविधिको प्रयोगमा भएको निरन्तर वृद्धि, विभिन्न मन्त्रालय तथा सरकारी निकायहरूमा व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको स्थापना, तथ्याङ्कको उपयोगका सम्बन्धमा चेतना अभिवृद्धि, नीति निर्माण र योजना व्यवस्थापनका लागि गुणस्तरीय तथ्याङ्कको मागमा निरन्तर वृद्धि, सरकारी निकायमा कार्यरत तथ्याङ्कीय जनशक्तिमा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता तथा लामो कार्य अनुभव, अन्तर्राष्ट्रिय समुदाय र विकास साझेदारहरूबाट निरन्तर रूपमा सहयोग प्राप्त हुनु, उच्च राजनैतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रबाट तथ्याङ्क प्रणालीको विकास र प्रयोगमा चासो व्यक्त हुनु जस्ता अवसर रहेका छन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सबल, क्रियाशील र समन्वयात्मक राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणालीको विकास।

#### ४.२ लक्ष्य

समन्यायिक विकास र समृद्धि सम्बन्धी नीतिका लागि संघीय शासन प्रणाली सापेक्ष गुणस्तरीय तथ्याङ्क उत्पादन, व्यवस्थापन र आपूर्ति पद्धतिको विकास गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. विश्वसनीय, गुणस्तरीय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा तुलनायोग्य तथ्याङ्क उत्पादन गरी नियमित आपूर्तिको व्यवस्था गर्नु।
२. तथ्याङ्कीय क्रियाकलापमा निकायगत तथा तहगत समन्वय स्थापना गरी संघीय संरचना अनुरूपको तथ्याङ्क प्रणाली विकास गर्नु।

### ४.४ रणनीति र कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. संघीय पद्धति बमोजिम तथ्याङ्कीय कार्य व्यवस्थापनका लागि नीतिगत र संस्थागत व्यवस्था गर्ने।   | <ol style="list-style-type: none"><li>१. तथ्याङ्क प्रणालीको विकासका लागि राष्ट्रिय रणनीति कार्यान्वयन गरिनेछ।</li><li>२. संघ, प्रदेश, स्थानीय तहका तथ्याङ्कीय निकायको प्रतिनिधित्व रहने गरी मौजुदा राष्ट्रिय तथ्याङ्क परिषद्को पुनर्गठन गरिनेछ। प्रदेशस्तरमा समन्वय प्रभावकारी बनाउन प्रदेश तथ्याङ्क परिषद् गठन गरिनेछ।</li><li>३. तहगत तथ्याङ्क उत्पादनमा सामञ्जस्यता कायम गर्न अन्तर-तहगत प्रतिनिधित्व रहने गरी प्राविधिक समितिहरू गठन गरिनेछ। स्तरीय अवधारणा, परिभाषा, मानक, ढाँचा र वर्गीकरणमा एकरूपता कायम गर्न तथ्याङ्कीय एकाईका बीचमा समन्वय गरिनेछ।</li></ol>   |
| २. नीति, योजना, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन र दिगो विकास लक्ष्य लगायतका उपयुक्त सूचकहरूको पहिचान र प्राथमिकीकरण गरी अन्तर्राष्ट्रिय रूपमा प्रचलित विधि र गुणस्तर मापदण्ड अनुरूपको तथ्याङ्क उत्पादन र आपूर्ति गर्ने। | <ol style="list-style-type: none"><li>१. स्थानीय तहसम्मका तथ्याङ्क तथा सूचकहरू एकीकृत रूपमा उपलब्ध गराउन सूचना प्रविधिमा आधारित राष्ट्रिय तथ्यगत विवरण विकास गरिनेछ र नियमित रूपमा अद्यावधिक गर्दै लगिनेछ।</li><li>२. दिगो विकास लक्ष्यका राष्ट्रिय, प्रादेशिक तथा स्थानीय तहका सूचकको मापन, सङ्कलन, सम्पादन र विश्लेषण गरिनेछ।</li><li>३. अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्रचलनमा रहेका अवधारणा, परिभाषा, मानक, ढाँचा र वर्गीकरणलाई नेपालको सन्दर्भमा परिमार्जन गरी प्रयोगमा ल्याइनेछ।</li><li>४. तथ्याङ्कीय कार्यक्रमको योजनाको प्रारम्भिक चरणदेखि नै उत्तरदातालाई पर्ने भार कम गर्न, प्रत्युत्तर दर बढाउन र लागत</li></ol> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>कम गर्न उपयुक्त प्रक्रिया अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>५. भौगोलिक, लैंगिक, सामाजिक र विषय विशेषताका आधारमा खण्डीकृत तथ्याङ्क उत्पादन र विश्लेषण गरी उपलब्ध गराइनेछ ।</p>   |
| <p>३. तथ्याङ्क उत्पादन र आपूर्तिमा सबै तथ्याङ्कीय स्रोतहरू (गणना, सर्वेक्षण तथा प्रशासनिक अभिलेख) को उपयोग गर्ने ।</p> | <p>१. नीति तथा योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन र मूल्याङ्कनका लागि आवश्यक पर्ने तथ्याङ्क तथा सूचकहरूको उत्पादन र प्रक्षेपण गर्न आवश्यक पर्ने गणना तथा सर्वेक्षणहरू चक्रीय प्रणाली अनुसार सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका विभिन्न निकायमा रहेका प्रशासनिक अभिलेख तथा व्यवस्थापन सूचना प्रणालीबाट प्राप्त तथ्याङ्क, विवरण तथा नक्साङ्कनहरूको संग्रह, प्रशोधन र विश्लेषण गरिनेछ । स्थूल तथ्याङ्क (Big Data) को व्यवस्थापन र उपयोगका लागि पहल गरिनेछ ।</p>  |
| <p>४. तथ्याङ्कीय क्रियाकलापमा आधुनिक सूचना प्रविधिको प्रयोग बढाउने र नवीनतम प्रविधिहरू अवलम्बन गर्ने ।</p>             | <p>१. प्रयोगकर्तामैत्री रूपमा तथ्याङ्कको सम्प्रेषण, सार्वजनिकीकरण र वितरणको लागि खुला तथ्याङ्क (Open Data) लगायतका प्रचलित उत्तम अभ्यास र प्रविधिको अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>२. तथ्याङ्कीय काम कारवाहीमा आधुनिक सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको अधिकतम प्रयोग गरिनेछ । सबै तहका सरकारी निकायको वेबसाइटमा तथ्याङ्कीय सामग्री अधिकतम रूपमा समावेश गरिनेछ ।</p> <p>३. व्यक्तिगत घटना दर्ता प्रणालीको व्यवस्थापनमा अनलाइन पद्धति अवलम्बन गरिनेछ । हाल कागजी रूपमा रहेका र अनलाइन दर्ता प्रणालीमा आधारित विवरणको प्रशोधन गरी जनसांख्यिक सूचकहरू तयार गरिनेछ ।</p> <p>४. सबै सार्वजनिक निकायका प्रशासनिक अभिलेखहरूलाई सुव्यवस्थित गर्न व्यवस्थापन सूचना प्रणाली स्थापना तथा एकीकृत पोर्टल तयार गरिनेछ । प्रशासनिक प्रतिवेदनहरूको अभिलेखन र व्यवस्थापन सूचना प्रणालीका सबै चरणमा उपयुक्त डिजिटल प्रविधिको प्रयोग गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ५. तहगत सरकारमा तथ्याङ्क व्यवस्थापन सम्बन्धी संगठनात्मक व्यवस्था, क्षमता विकास र प्रभावकारी समन्वय, आदान प्रदान र सञ्जालीकरण गर्ने । | <p>१. निर्धारित तथ्याङ्क प्रणाली लागू गरी सरकारका सबै तह तथा निकायमा संगठनात्मक व्यवस्था गरी काम, कर्तव्य र अधिकार स्पष्ट गरिनेछ ।</p> <p>२. सबै तहका तथ्याङ्क कार्यालय वा एकाईहरूको भौतिक, प्राविधिक र तथ्याङ्कीय पूर्वाधारको विकास गरिनेछ ।</p> <p>३. जनशक्ति विकास, अध्ययन अनुसन्धान र अन्तर्राष्ट्रिय जगतमा विकसित असल अभ्यासको आदान प्रदानका लागि राष्ट्रिय नीतिको परिधिमा रही अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध र सहयोग परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>४. तथ्याङ्कीय जनशक्तिको अध्ययन, अनुसन्धान र प्रशिक्षणका लागि संस्थागत प्रवन्ध र क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. प्रदेश तथा स्थानीय तहमा तथ्याङ्क व्यवस्थापन, उपयोग र आदान प्रदानका लागि आधारभूत प्रणालीको स्थापना र विकासका साथै ती तहहरूमा रहेका तथ्याङ्कीय निकायहरूको क्षमता विकास गरिनेछ ।</p> <p>६. विश्वविद्यालय लगायतका शैक्षिक संस्था तथा प्रतिष्ठान, अनुसन्धानमूलक संस्था, गैरसरकारी संघ-संस्थासँग समन्वय गरी विशेषज्ञ सेवा आदान प्रदान र इन्टर्नसीपको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>७. सर्वेक्षण अनुमति प्रणाली राष्ट्रिय तथ्याङ्क कार्यालयबाट कार्यान्वयन गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

राष्ट्रिय जनगणना २०७८, राष्ट्रिय कृषि गणना २०७८, नेपाल जीवनस्तर सर्वेक्षण, नेपाल बहुसूचकांक सर्वेक्षण, जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण, पारिवारिक बजेट सर्वेक्षण, समय उपयोग सर्वेक्षण, महिला विरुद्ध हुने हिंसा सम्बन्धी सर्वेक्षण, नेपाल औद्योगिक सर्वेक्षण लगायतका गणना तथा सर्वेक्षणहरू सञ्चालन भएका हुनेछन् । तथ्याङ्कीय क्रियाकलाप स्तरीय मानक तथा कार्यविधि तयार भई कार्यान्वयनमा आएको हुने र सर्वेक्षण अनुमति प्रणाली तथा निर्धारित तथ्याङ्क प्रणाली लागू भएको हुनेछ । दिगो विकास लक्ष्यका सूचकहरूसँग सम्बन्धित

तथ्याङ्कको नियमित उत्पादन र आपूर्ति भएको हुनेछ। राष्ट्रिय लेखाका त्रैमासिक तथा वार्षिक अनुमान, आपूर्ति-उपयोग तालिका र आगत-निर्गत तालिका, उत्पादन तथा मूल्य सम्बन्धी तथ्याङ्क तथा सूचकांक तयार भएको हुनेछ। राष्ट्रिय तथ्यगत विवरण तयार भई एकीकृत तथा खण्डीकृत तथ्याङ्क नियमित रूपमा अद्यावधिक भएको हुनेछ। राष्ट्रिय लेखाको आधार पुनरावलोकन (रिबेसिड) भई अद्यावधिक आधारका अनुमानहरू तयार भएको हुनेछ।

## १०.२ गरिबी निवारण

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले सामाजिक सुरक्षा र सामाजिक न्याय प्रदान गर्दै सबै लिङ्ग, क्षेत्र र समुदायभित्रका आर्थिक रूपले विपन्नलाई प्राथमिकता प्रदान गर्ने नीति अंगीकार गरेको छ। नेपालमा विगत दुई दशकदेखि गरिबी निवारणलाई विकास प्रयासको प्राथमिकतामा राखी कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिएको छ। दसौं योजना अवधिदेखि गरिबीलाई आय गरिबी, मानवीय गरिबी तथा सामाजिक वञ्चितीकरण गरी मूलतः तीन आयाममा विभाजन गरिएको छ। हाल पचास वटाभन्दा बढी गरिब लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन भइरहेका छन्। गरिब लक्षित कार्यक्रमहरू लक्षित वर्गमा केन्द्रित गर्न गरिब घर-परिवार पहिचान तथा परिचयपत्र वितरण कार्यक्रम अगाडि बढेको छ। यी प्रयासहरूको फलस्वरूप नेपालीको समग्र गरिबी र मानव विकास सूचकहरूमा उल्लेखनीय सुधार आएको छ। गरिबीको रेखामुनि रहेको जनसङ्ख्या १८.७ प्रतिशत र बहुआयामिक गरिबी सूचकांक २८.६ प्रतिशत रहेको छ। यद्यपि गरिबी निवारण र आर्थिक असमानता न्यूनीकरणको क्षेत्रमा अपेक्षाकृत उपलब्धि हासिल हुन सकेको छैन।

हाम्रो अपेक्षा दिगो विकास लक्ष्यमा उल्लेख गरिए अनुसार सबै ठाँउबाट सबै प्रकारको गरिबी अन्त्य गर्नु हो। यो लक्ष्य हासिल गर्नका लागि गरिबीका बहु-आयामहरूलाई सम्बोधन गर्दै गरिबहरूको प्रतिव्यक्ति आय वृद्धि गर्नुका साथै भौगोलिक क्षेत्र, लिङ्ग र सामाजिक समूहहरूबीच विद्यमान रहेको आर्थिक असमानता न्यूनीकरण गर्न रूपान्तरणीय प्रयास आवश्यक देखिएको छ। त्यसैगरी गरिबी न्यूनीकरण अन्तरसम्बन्धित विषय भएकाले यसका लागि सरकारी, सहकारी, सामुदायिक, निजी र गैरसरकारी क्षेत्र एवम् विकास साझेदारको एकीकृत र समन्वयात्मक भूमिका अपरिहार्य रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

गरिब लक्षित कार्यक्रम क्षमता विकासभन्दा वितरणमुखी हुनु, वास्तविक गरिबलाई लक्षित गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्न नसक्नु, विभिन्न निकायहरूबाट सञ्चालित छरिएर रहेका गरिबी निवारणसँग सम्बन्धित कार्यक्रमबीच समन्वयको अभाव रहनु, कृषि क्षेत्र निर्वाहमुखी हुनु, राज्यको स्रोत-साधनमा गरिबहरूको सहज पहुँच पुऱ्याउन नसक्नु, वैदेशिक रोजगारीबाट प्राप्त आर्थिक सामाजिक विप्रेषणको उपयोग उत्पादनमूलक क्षेत्रमा लगाउन नसक्नु, बौद्धिक पलायन रोक्न नसक्नु र दक्षता तथा क्षमता अनुरूप रोजगारीको अवसर सिर्जना गरी वैदेशिक रोजगारीमा जाने जनशक्तिको क्षमताको उपयोग मुलुकभित्रै गर्न नसक्नु गरिबी निवारणका प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

गरिबी न्यूनीकरणको प्रयासलाई तीव्रता दिँदै भौगोलिक, लैङ्गिक, जातीय र आय वर्गबीच रहेको गरिबीको गहनता र असमानता कम गर्नु, सीप, पुँजी र प्रविधिमा गरिबीको रेखामुनि रहेका नागरिकको पहुँच सुनिश्चित गरी स्वरोजगार प्रवर्द्धन गर्नु, कृषिमा आश्रित आवश्यकताभन्दा बढी जनसङ्ख्यालाई क्रमिक रूपले गैरकृषि क्षेत्रमा स्थानान्तरण गराउनु, कृषि क्षेत्रलाई आधुनिकीकरण र व्यवसायीकरण गर्नु, लगानीमैत्री वातावरणको सिर्जना गर्दै कृषि, उद्योग र पर्यटन क्षेत्रको विकास गरी नयाँ रोजगारीका अवसर सिर्जना गर्नु र वास्तविक गरिब पहिचान गरी गरिब लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

संघीय शासन प्रणालीको अभ्यास सुरुआतसँगै राजनीतिक स्थायित्व, शान्ति सुव्यवस्था तथा सुशासन कायम भई विकासको अभियानमा नागरिकको सक्रिय सहभागिता वृद्धि हुनु, गरिबी निवारणको विषय तीन तहका सरकारको जिम्मेवारीभित्र रहेको हुँदा तीन तहका सरकारबाट गरिबी निवारण सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन हुने बलियो आधार तयार हुनु, गरिब घर-परिवार पहिचान गरेर सामाजिक सुरक्षण लगायत अन्य गरिबी निवारणका कार्यक्रम वास्तविक गरिबलाई लक्षित गरी अघि बढाउने प्रयास हुनु, आवधिक योजना र कृषि, पर्यटन, विकास निर्माण लगायत सबै क्षेत्रगत योजना गरिबी निवारणमुखी हुनेगरी तर्जुमा तथा कार्यान्वयन हुनु र दिगो विकासका लक्ष्य प्राप्त गर्न एवम् सार्क गरिबी निवारण र बिमस्टेक गरिबी निवारण कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्न नेपाल सरकारले प्रतिबद्धता जनाउनु यस क्षेत्रका अवसर हुन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

सबै प्रकारको गरिबीमुक्त समाज।

#### ४.२ लक्ष्य

गरिब र धनीबीचको आर्थिक असमानता न्यूनीकरण गर्दै गरिबीको रेखामुनि रहेको जनसङ्ख्या ११ प्रतिशतमा ल्याउने।

#### ४.३ उद्देश्य

१. गरिब पहिचान गर्नु एवम् गरिब लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु।
२. गरिबवर्ग लक्षित सीप विकास तथा रोजगारी सिर्जना गर्नु।
३. राज्यको स्रोत-साधनमा गरिबको सहज पहुँच स्थापित गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. सर्वेक्षण मार्फत गरिब घर-परिवार पहिचान गरी अध्यावधिक विवरण राख्ने ।                                   | <p>१. गरिब पहिचान गरी राष्ट्रिय परिचयपत्र प्रणालीमा आबद्ध गर्न आवश्यक गरिब परिचयपत्र सम्बन्धी कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. आधुनिक प्रविधिको प्रयोग गरी देशका सबै घर-परिवारको सर्वेक्षण मार्फत गरिब घर-परिवारको पहिचान गरी परिचयपत्र वितरण गरिनेछ ।</p> <p>३. बहुसंख्यक गरिब भएका क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण), समुदाय र परिवार (गरिब, मध्यम गरिब र अति गरिबको पहिचान गरिनेछ ।</p> <p>४. सर्वेक्षण मार्फत गरिब घर-परिवारको विवरण अद्यावधिक गरिनेछ । साथै, यस्तो विवरण गरिब घर-परिवार सूचना व्यवस्थापन प्रणाली विकास गरी व्यवस्थित गरिनेछ ।</p>  |
| २. पहिचान भएका गरिब लक्षित गरी गरिबी निवारण योजना, कार्यक्रम तथा आयोजना तर्जुमा एवम् कार्यान्वयन गर्ने । | <p>१. पछाडि परेको क्षेत्र र समुदायका गरिब घर-परिवारलाई लक्षित गरी क्षमता विकास, आय-आर्जन तथा रोजगारमूलक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. सामाजिक सुरक्षा एवम् संरक्षणका कार्यक्रम र गरिबी निवारणका कार्यक्रमलाई गरिब व्यक्ति, परिवार तथा समुदाय लक्षित गरिनेछ ।</p> <p>३. गरिबी निवारण सम्बन्धी दिगो विकास लक्ष्य, सार्क गरिबी निवारण कार्ययोजना, बिमस्टेक गरिबी निवारण कार्ययोजना कार्यान्वयनका लागि ती विषयवस्तु क्षेत्रगत नीतिहरूमा समावेश गरिनेछ । यस्ता नीति तथा कार्यक्रमको तर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा समन्वय गरिनेछ ।</p> <p>४. गरिबी निवारणका लागि विभिन्न निकायबाट सञ्चालित कार्यक्रमबीच प्रभावकारी समन्वय तथा अनुगमन गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</p> |
| ३. रोजगार तथा स्वरोजगारमूलक सीप विकास तालिम तथा शिक्षा कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्ने ।                      | १. रोजगार तथा स्वरोजगारमूलक शिक्षा र सीप विकास तालिम कार्यक्रम सञ्चालन गरिरहेका विभिन्न निकायहरूसँग साझेदारी तथा समन्वय गरिनेछ ।   |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>२. अति गरिब व्यक्ति तथा परिवारलाई बजारको माग अनुसारको सीप निशुल्क प्रदान गरी व्यवसाय सञ्चालन गर्न विशेष अनुदान एवम् सहूलियत दरको ऋण उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>३. बेरोजगार युवाहरूलाई उद्यमी बनाउन रोजगारमूलक तालिम प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>४. अन्तर्राष्ट्रिय/क्षेत्रीय संघ-संस्था तथा विकास साझेदारहरूसँग समन्वय र सम्बन्ध विस्तार गरी गरिबी निवारण केन्द्रित कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p>  |
| ४. उत्पादनमूलक रोजगारी तथा अवसरको अभिवृद्धि गरी यसमा गरिबको पहुँच सुनिश्चित गर्ने ।       | <p>१. आर्थिक वृद्धि मार्फत सिर्जना हुने रोजगारी लगायतका सम्पूर्ण अवसरको न्यायोचित वितरण गरिनेछ ।</p> <p>२. न्यूनतम रोजगारी प्रत्याभूत योजना तर्जुमा गरी लागू गरिनेछ ।</p> <p>३. विकास आयोजना तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्दा आर्थिक वृद्धि एवम् रोजगारी सिर्जना हुने विषयलाई प्राथमिकता दिइनेछ ।</p>   |
| ५. गरिबी निवारण नीति तर्जुमा गरी उत्पादनका स्रोत-साधनमा गरिबहरूको पहुँच सुनिश्चित गर्ने । | <p>१. गरिबी निवारण कार्यक्रमलाई व्यवस्थित गर्न गरिबी निवारण नीति तथा कानून तर्जुमा गरिनेछ ।</p> <p>२. भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय गरिबी निवारण सम्बन्धी कार्यक्रमको समन्वय, तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन एवम् मूल्याङ्कन गर्ने निकायको रूपमा रहनेछ ।</p> <p>३. सबै क्षेत्रगत नीति, योजना तथा कार्यक्रमको तर्जुमा गर्दा गरिबी निवारणलाई उच्च प्राथमिकतामा राखिनेछ ।</p> <p>४. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय लगानी, वैदेशिक सहायता लगायत राज्यका स्रोत-साधनको न्यायपूर्ण परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>५. उद्यमी बन्न चाहने गरिबलाई आवश्यक सीप, पुँजी, प्रविधि एवम् स्रोत-साधन आदिको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>६. सामुदायिक संस्थाहरूमा रहेको मौजुदा साधन-स्रोतलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी गरी उद्यमी र उद्यमशीलता विकास गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ६. आधारभूत आवश्यकताका वस्तु तथा सेवामा गरिबहरूको पहुँच सुनिश्चित गर्ने । | १. सरकारी तथा गैरसरकारी निकाय मार्फत शिक्षा, स्वास्थ्य, खानेपानी, आवास, सूचना आदि जस्ता आधारभूत आवश्यकताका वस्तु तथा सेवामा गरिबको सहज पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ ।<br>२. गरिबहरूलाई सहकारी संस्थामा आबद्ध गराई छरिएर रहेको श्रम, पुँजी, प्रविधि र सीप एकीकृत रूपमा उपयोग गरी व्यवसाय प्रवर्द्धन मार्फत गरिबहरूको जीवनस्तर उठाइनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

निरपेक्ष गरिबीको रेखामुनि रहेको जनसंख्या १८.७ प्रतिशतबाट ११ प्रतिशत र बहुआयामिक गरिबीमा रहेको जनसंख्या २८.६ प्रतिशत (सन् २०१४) बाट १३ प्रतिशतमा घटेको हुनेछ । आम्दानीमा माथिल्लो १० र तल्लो ४० प्रतिशत जनसंख्याको अनुपात १.३ बाट १.२५ र सम्पत्तिमा आधारित जिनी गुणक ०.३१ बाट ०.२९ मा घटेको हुनेछ । गरिब पहिचान सम्बन्धी राष्ट्रिय प्रणालीको विकास भई ७७ वटै जिल्लाका गरिब व्यक्ति तथा परिवारको पहिचान गरी परिचयपत्र वितरण गरिएको हुनेछ ।

#### १०.३ श्रम तथा रोजगारी

##### १. पृष्ठभूमि

गरिबी निवारण र आर्थिक विकासमा उल्लेख्य प्रगति गर्न सकिने तथ्यलाई मध्यनजर गरी श्रमबजारको आवश्यकता अनुरूप सीपमूलक श्रमशक्तिको विकास गर्नु आजको आवश्यकता हो । गुणस्तरीय मानव संसाधनको विकास मार्फत श्रमको उत्पादकत्व अभिवृद्धि गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई सबल बनाउन उत्पादनको क्रियाशील साधनको रूपमा श्रमको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । उत्पादनमूलक रोजगारी सिर्जना गरी मुलुकमा उपलब्ध युवा श्रमशक्तिको उपयोग मार्फत कृषि क्षेत्रमा विद्यमान अनुत्पादक अधिक श्रमशक्तिलाई उद्योग, व्यापार, पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य जस्ता सेवा क्षेत्रमा स्थानान्तरण गर्न सकेमा अर्थतन्त्रको संरचनात्मक परिवर्तनमा योगदान हुनसक्छ । विगतमा वैदेशिक रोजगारीले गरिबी निवारणमा उल्लेखनीय भूमिका खेलेकोले सरकारी स्तरबाटै यसको प्रवर्द्धन गरिए पनि यसले ल्याएका र ल्याउन सक्ने सामाजिक, आर्थिक र मानवीय जोखिम विश्लेषण गरी आन्तरिक रोजगारी सिर्जना गरी वैदेशिक रोजगारीलाई निरूत्साहित गर्नुपर्नेछ ।

नेपालको संविधानले रोजगारी र श्रमको हकलाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गर्नुका साथै दक्ष र व्यावसायिक श्रमशक्तिको विकास गर्ने, श्रमिक र उद्यमीबीच सुसम्बन्ध कायम गर्ने, वैदेशिक रोजगारबाट आर्जित पुँजी, सीप, प्रविधि र अनुभवको स्वदेशमा उपयोग गर्ने र सबैका लागि मर्यादित कामको अवसर सुनिश्चित गर्ने नीति लिएको छ । श्रम

संगठनको अभिसन्धि १६९ ले मर्यादित र सुरक्षित रोजगारी र श्रमको उत्पादकत्वको प्रत्याभूति गरेको छ। राष्ट्रिय रोजगार नीति, २०७१ र वैदेशिक रोजगार नीति, २०६८ कार्यान्वयन भएको छ भने दिगो विकास लक्ष्य र अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठन अभिसन्धि मार्फत सुरक्षित रोजगारीको प्रतिबद्धता व्यक्त गरेको छ। यसका लागि आन्तरिक रोजगारीको प्रवर्द्धन, बाध्यात्मक वैदेशिक रोजगारीको अन्त्य र उत्पादकत्व अभिवृद्धि गर्ने रणनीति अनुरूप विभिन्न कार्यक्रम सञ्चालनमा रहेका छन्।

नेपालमा प्रत्येक वर्ष करिब पाँच लाख थप जनशक्ति श्रम बजारमा प्रवेश गर्दछन्। एकातर्फ आन्तरिक श्रम बजारको प्रशोचन क्षमता (Absorption Capacity) न्यून हुँदा अतिरिक्त श्रमशक्ति वैदेशिक रोजगारीमा जाने गरेका छन्। दैनिक करिब १ हजार युवा विदेशिने गरेको र विप्रेषण आय कुल गार्हस्थ उत्पादनको अनुपातमा २५.१ प्रतिशत रहेको छ जुन विश्वकै उच्चमध्येको एक हो। अर्कोतर्फ उदार श्रमनीति, सीपमूलक श्रमशक्तिको अपर्याप्तता र कमजोर श्रम निरीक्षण तथा नियमनका कारण विदेशी श्रमिक आप्रवाह बढ्दै गएको र स्वदेशी श्रमिक विस्थापित हुँदै गएको अवस्था छ। श्रम शक्तिको ३६.५ प्रतिशत औपचारिक क्षेत्रमा संलग्न रहेको र बेरोजगारी दर ११.४ प्रतिशत रहेको छ। श्रम शक्ति सहभागिता दर ३८.५ रहेको र बाध्यकारी श्रम सहभागिता दर १.२ प्रतिशत रहेको छ। आ.व. २०७४/७५ मा औसत श्रम उत्पादकत्व वार्षिक रू. १ लाख ८४ हजार रहेको छ।

## २. प्रमुख समस्या

श्रम, सीप र उत्पादनबीच तादात्म्यता कायम हुन नसक्नु, श्रमप्रतिको सम्मानको कमी हुनु, उद्यमशीलता विकास, स्वरोजगार प्रवर्द्धन र उत्पादनशील रोजगारीको सिर्जना पर्याप्त हुन नसक्नु, वैदेशिक रोजगारीबाट प्राप्त सीप र पुँजीको न्यून परिचालन हुनु, विभिन्न प्रकृतिको बालश्रम विद्यमान रहनु, सकारात्मक औद्योगिक श्रम सम्बन्धको विकास गरी रोजगारमैत्री लगानीलाई प्रोत्साहन गर्न नसक्नु र श्रमबजार सूचना प्रणाली र श्रम प्रशासन चुस्त नहुनु मुख्य समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

श्रम तथा रोजगारीको हकको कार्यान्वयन गर्नु, उत्पादनशील क्षेत्रमा रोजगारीका अवसर पहिचान र सिर्जना गर्नु, अनौपचारिक क्षेत्रको रोजगारीलाई औपचारिक क्षेत्रको दायरामा ल्याउनु, श्रम निरीक्षण र नियमनलाई प्रभावकारी बनाउनु, श्रम बजारको माग अनुरूप सीपयुक्त श्रमशक्तिको विकास गर्नु, शिक्षालाई व्यवहारिक र रोजगारमूलक बनाई उद्यमशीलता विकास गर्नु, असल श्रम सम्बन्धको विकास र श्रमको उत्पादकत्व वृद्धि मार्फत आर्थिक विकासका सम्भावनाहरूलाई फराकिलो बनाउनु, प्रमुख गन्तव्य मुलुकसँग द्विपक्षीय श्रम सम्झौता गर्नु, गन्तव्य मुलुकमा कामदारको सुरक्षा गर्नु र वैदेशिक रोजगारीबाट सिर्जित संरचनागत जोखिमहरू कम गर्दै यसबाट प्राप्त पुँजी, प्रविधि, ज्ञान र सीपलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा आन्तरिक उपयोग गर्नु मुख्य चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

श्रम, सामाजिक सुरक्षा र रोजगार सम्बन्धी नयाँ कानूनहरू जारी हुनु, प्राविधिक शिक्षा तथा सीपमूलक तालिमलाई प्राथमिकता दिइनु, न्यूनतम पारिश्रमिकको कानुनी व्यवस्था हुनु, शैक्षिक बेरोजगार तथा वैदेशिक

रोजगारबाट फर्केका व्यक्तिलाई ऋण सुविधा उपलब्ध गराउने व्यवस्था हुनु, बालश्रम निवारण गुरूप्रयोजना कार्यान्वयनमा आउनु र रोजगार सूचना केन्द्रको स्थानीय तहसम्म विस्तार हुनु प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

सबै नागरिकलाई मर्यादित र उत्पादनशील रोजगारीका अवसरको उपलब्धता ।

##### ४.२ लक्ष्य

उत्पादनशील क्षेत्रमा रोजगारी अभिवृद्धि गरी बेरोजगारी दर तथा श्रमको अल्प उपयोगमा उल्लेखनीय रूपमा कमी ल्याउने ।

##### ४.३ उद्देश्य

- देशभित्र उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारीका अवसर विस्तार गर्नु ।
- असल औद्योगिक श्रम सम्बन्ध विकास गर्नु ।
- बालश्रम लगायत सबै प्रकारका श्रम शोषण अन्त्य गर्नु ।
- वैदेशिक रोजगारीलाई सुरक्षित, मर्यादित र व्यवस्थित गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. स्थानीय तहदेखि रोजगार कार्यक्रमलाई विस्तार गरी न्यूनतम रोजगारीको प्रत्याभूति गर्ने । | १. न्यूनतम रोजगारीको प्रत्याभूति गर्ने गरी प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम लगायतका विशेष कार्यक्रमहरू प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. रोजगार र उद्यमशीलता प्रवर्द्धन गर्न शैक्षिक प्रमाणपत्र धितो राखी न्यून ब्याजदरमा ऋण प्रवाहको व्यवस्थालाई विस्तार गरिनेछ ।<br>३. रोजगार सूचना केन्द्र स्थापना गरी निजी क्षेत्रमा सिर्जना हुने रोजगारीलाई उपलब्ध श्रमशक्तिको मागसँग आबद्ध गरिनेछ ।<br>४. “श्रमको सम्मान, हाम्रो अभियान” मार्फत श्रमप्रतिको सकारात्मक धारणा विकास गरिनेछ र श्रम सम्परीक्षणको माध्यमबाट श्रमिक हक-हितको प्रत्याभूति गर्नुका साथै कार्यथलोमा हुने सबै प्रकारका विभेदलाई अन्त्य गर्दै ‘समान कामका लागि समान पारिश्रमिक’को प्रतिबद्धता लागू गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>५. रोजगार सम्बन्धी महत्वपूर्ण अभिलेखहरू डिजिटलाइज गरी प्रकाशन गर्नुका अतिरिक्त सम्बन्धित निकायको वेबसाइटमा समेत राख्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>६. सम्पूर्ण श्रमिकहरूलाई पञ्जीकृत गरी सामाजिक सुरक्षाको दायरामा ल्याइनेछ ।</p> <p>७. मर्यादित श्रमको मान्यता अनुरूप सबै प्रकारको श्रमको शोषण अन्त्य गरिनेछ । हरेक श्रमलाई मर्यादित बनाइनेछ । साथै, बाँधा तथा बलपूर्वक लगाइने श्रमलाई निर्मूल पारिनेछ ।</p> <p>८. जीवन धान्न पुग्ने तहमा न्यूनतम पारिश्रमिक तोकी आवश्यकता अनुसार समयानुकूल वृद्धि गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>९. सरकारी निकायले गर्ने विकास खर्चलाई रोजगारी सिर्जनासँग आबद्ध गरिनेछ ।</p> <p>१०. अनौपचारिक क्षेत्रमा रहेको रोजगारीलाई क्रमशः औपचारिक क्षेत्रमा रूपान्तरण गरिनेछ ।</p>  |
| <p>२. विद्यमान श्रम तथा रोजगार सम्बन्धी कानूनहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन र सामाजिक संवादको माध्यमबाट असल औद्योगिक श्रम सम्बन्धको विकास गर्ने ।</p> | <p>१. वैदेशिक रोजगार कल्याणकारी कोषलाई थप प्रभावकारी बनाउन कामदारको वर्गीकरण अनुसार योगदान गर्न व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. असल श्रमसम्बन्ध विकास गर्न र श्रम विवाद समाधान गर्न सरकार, रोजगारदाता र ट्रेड युनियनबीच नियमित सम्वाद र समन्वयको प्रणाली स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>३. सरकार र निजी क्षेत्रको सहकार्यमा श्रम विनिमय केन्द्रको स्थापना गरी सञ्चालन र नियमन गरिनेछ ।</p> <p>४. प्रतिष्ठानहरूमा श्रमिकको व्यवसायजन्य स्वास्थ्य र सुरक्षा सम्बन्धी मापदण्डको प्रभावकारी अनुगमन तथा नियमन गरी कार्यान्वयन गराइनेछ ।</p> <p>५. श्रम कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्दै अनौपचारिक श्रमलाई औपचारिकीकरण गर्ने प्रक्रिया आरम्भ गरिनेछ ।</p> <p>६. बालश्रमको अन्त्य गर्ने सम्बन्धी विद्यमान गुरुयोजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्दै बालश्रम अन्त्य गरिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | ७. श्रमिकहरूको हक-हित र सुविधासँग सम्बन्धित विषयहरूमा निर्णय गर्दा श्रमिकहरूको अनिवार्य प्रतिनिधित्वको व्यवस्था गरिनेछ ।  |
| ३. राष्ट्रिय आवश्यकताका आधारमा प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा, तालिम र सीप विकासद्वारा श्रमिकको दक्षता अभिवृद्धि गर्ने । | १. व्यावसायिक तथा सीप विकास तालिम कार्यक्रमहरूलाई श्रम बजारको आवश्यकता अनुरूप बनाई “सबैलाई सीप, सबैलाई रोजगार” कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. श्रमबजारको मागको आधारमा श्रमशक्तिको क्षमता विकास गरी श्रम उत्पादकत्व वृद्धि गरिनेछ ।<br>३. वैदेशिक रोजगारमा जानेहरूलाई आवश्यक तालिम र प्रशिक्षणद्वारा सीप विकास गरेर मात्र वैदेशिक रोजगारमा पठाउन आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ ।<br>४. वैदेशिक रोजगारबाट प्राप्त ज्ञान, सीप र अनुभवलाई प्रमाणीकरण गरी उद्यमशीलता विकासमा उपयोग गरिनेछ ।   |
| ४. तीन तहका सरकारबीच रोजगारी सिर्जना र श्रम व्यवस्थापनमा प्रभावकारी समन्वय गर्ने ।  | १. सरकारलाई रोजगारका सूचना प्रवाह गर्नका लागि उत्प्रेरित गर्ने र यसका लागि क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।<br>२. रोजगारका विषयमा स्वदेश तथा विदेशमा भएका असल अभ्यासहरूबाट लाभ लिन ज्ञान आदान-प्रदान केन्द्र (Knowledge Sharing Center) स्थापना गरिनेछ ।<br>३. न्यूनतम ज्यालाको कार्यान्वयन तथा प्रतिष्ठान तथा संघ-संस्थामा कार्यरत श्रमिकको ज्याला, तलब-भत्ता तथा अन्य सुविधा बैंक खाता मार्फत भुक्तानी गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।<br>४. प्रभावकारी रोजगार व्यवस्थापनका लागि विभिन्न तहका सरकारबीच समन्वय र सहकार्य गरिनेछ ।<br>५. सामाजिक ऐक्यबद्धता, योगदान र सामाजिक साझेदारीमा आधारित सर्वकालीक सुरक्षाको बृहत् कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ । |
| ५. वैदेशिक रोजगारका चरणलाई सुरक्षित, शोषणमुक्त मर्यादित र अधिकतम प्रतिफलदायक बनाउने ।                                     | १. प्रमुख गन्तव्य मुलुकहरूसँग श्रम सम्झौता गर्नुका साथै विदेशमा रहेका नेपाली श्रमिकहरूको हक-हितको संरक्षण र सामाजिक सुरक्षाका लागि श्रम कूटनीति अवलम्बन गरिनेछ ।  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>२. गन्तव्य मुलुकमा कामदारको हक-हितको संरक्षण र प्रवर्द्धन र उद्धारका लागि त्यहाँ रहेका सेवा प्रदायक, गैरआवासीय तथा प्रवासी नेपाली संघसंगठन र प्रतिष्ठित रोजगारदाता कम्पनीसँग प्रभावकारी समन्वय कायम गरिनेछ ।</p> <p>३. सबै सरोकारवालाहरूको प्रतिनिधित्व रहने गरी वैदेशिक रोजगार परिषद्को स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>४. देशलाई आवश्यक पर्ने जनशक्तिको पहिचान र व्यवस्थापन गर्दै जगोडा श्रमिकलाई गन्तव्य मुलुकसँग श्रम सम्झौता गरी वैदेशिक रोजगारमा पठाउने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>५. भारतमा रोजगारीका लागि जाने कामदारले स्थानीय तहमा दर्ता हुने, परिचयपत्र जारी गर्ने र बिमा/कल्याणकारी कोषमा आबद्ध गराउने कानुनी व्यवस्था कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>६. वैदेशिक रोजगारको लागि जानेहरूको पूर्व अभिलेख राखी त्यसलाई सुरक्षित व्यवस्थित एवम् मर्यादित गरिनेछ । साथै, सबैखाले विकृतिहरूको कडाईका साथ नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> |
| <p>६. रोजगारी सिर्जना गर्न एवम् विभिन्न निकायसँग समन्वय तथा रोजगारी सम्बन्धी कार्यको नियमन गर्न अधिकार सम्पन्न उच्चस्तरीय “राष्ट्रिय रोजगार प्राधिकरण” गठन गर्ने ।</p> | <p>१. जनशक्ति र रोजगारी सम्बन्धी केन्द्रीय तथ्याङ्क प्रणाली निर्माण गरी आर्थिक रूपले सक्रिय जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गरिनेछ ।</p> <p>२. बजारमा आवश्यक रहेको जनशक्ति पूर्ति हुने गरी रोजगारको खोजीमा रहेका र प्राधिकरणमा नाम दर्ता गर्ने व्यक्तिहरूलाई सीप सिकाउन राष्ट्रिय प्राविधिक प्रशिक्षण प्रतिष्ठानसँग समन्वय गरिनेछ ।</p> <p>३. युवा स्वरोजगार कोष, गरिबी निवारण कोष लगायतका कोष, बोर्ड र आयोगहरूलाई प्राधिकरणमा समाहित गरिनेछ ।</p> <p>४. राष्ट्रिय मानव संशाधन तथा जनशक्ति योजना तर्जुमा गरी तालिम र क्षमता विकासका माध्यमबाट सीपमूलक तथा प्राविधिक जनशक्ति विकास गरिनेछ ।</p>  |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

बेरोजगारी दर ११.४ प्रतिशतबाट ६ प्रतिशतमा झरेको हुने, श्रमशक्ति सहभागिता दर ३८.५ प्रतिशतबाट ४८.५ प्रतिशत पुगेको हुने, रोजगारीमा औपचारिक क्षेत्रको हिस्सा ३६.५ प्रतिशतबाट ५० प्रतिशत पुगेको र श्रमको औसत उत्पादकत्व वार्षिक रू. २ लाख ७६ हजार पुगेको हुनेछ। योजना अवधिमा वार्षिक ५ लाख जनशक्तिले व्यावसायिक, प्राविधिक र सीपमूलक तालिम प्राप्त गरेको हुनेछन्। सबै स्थानीय निकायमा रोजगार सूचना केन्द्रहरू स्थापना भई संगठित क्षेत्रको रोजगारी प्रणालीमा आबद्ध भएको हुनेछ। औद्योगिक श्रम विवादको न्यूनीकरण भई असल श्रम सम्बन्धको विकास भएको हुनेछ।

## १०.४ मानव संसाधन विकास

### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले परिलक्षित गरेको समाजवाद उन्मुख स्वतन्त्र र समृद्ध अर्थतन्त्र विकासको लागि आवश्यक प्रमुख साधन नै जनशक्ति हो। त्यसैगरी, संविधान प्रदत्त रोजगारीको मौलिक हकको कार्यान्वयन तथा दीगो विकासका लक्ष्यहरू २०३० ले राखेको सम्मानजनक रोजगारीका लक्ष्य प्राप्त गर्न समेत शिक्षालाई सीपसँग, सीपलाई उत्पादनसँग, उत्पादनलाई बजार तथा बजारलाई रोजगारी, अवसर र आर्थिक विकाससँग जोड्न मानव संसाधन विकास योजना आवश्यकता पर्दछ। जनसंख्याको ४०.३५ प्रतिशत युवाहरू (१५ देखि ४० वर्ष) लाई व्यावसायिक, प्राविधिक शिक्षा तथा सीपमूलक तालिमको माध्यमबाट दक्ष जनशक्तिमा परिणत गरी स्वदेशी तथा अन्तर्राष्ट्रिय श्रम बजारमा प्रतिस्पर्धा गर्न सक्ने तुल्याउन जरुरी देखिएको छ। मुलुकभित्रै उपलब्ध रोजगारीका अवसर नागरिकले नै उपयोग गर्नसक्ने तथा स्वरोजगारी सिर्जना हुनसक्ने वातावरण निर्माण गर्न आवश्यक छ।

### २. प्रमुख समस्या

देशमा विद्यमान जनशक्ति उत्पादनको अवस्था र भविष्यमा आवश्यक पर्ने विविध क्षेत्रका जनशक्तिको आकलन गर्ने प्रणाली हालसम्म पनि स्थापना हुन नसक्नु, उत्पादित जनशक्ति र श्रम बजारको मागबीच तालमेल नहुनु, आन्तरिक श्रमबजारमा आवश्यक दक्ष जनशक्तिको अभाव हुनु, ठूलो संख्यामा अदक्ष कामदार विदेशमा सस्तो ज्यालामा जोखिमपूर्ण काम गर्ने अवस्था सिर्जना हुनु, विश्वविद्यालयबाट उत्पादित दक्ष जनशक्तिसमेत विदेश पलायन हुनु, वर्षेनी श्रमबजारमा प्रवेश गर्ने करिब ५ लाख जनशक्तिमध्ये करिब १ लाख ५० हजारको लागि मात्र छोटो तथा लामो अवधिका प्राविधिक र व्यावसायिक सीप विकासका अवसर उपलब्ध हुनु, उपलब्ध भएको प्राविधिक शिक्षाको गुणस्तर बजारको माग बमोजिकको हुन नसक्नु, अभिभावक, शिक्षक, शैक्षिक संस्था, विद्यार्थी सबैलाई श्रम बजारको माग सम्बन्धमा अनुमानको आधारमा जोखिम लिनुपर्ने बाध्यता रहिरहनु, ज्ञान तथा सीप र कामको बीच तालमेल नभई बेरोजगारी झन् बढ्नु तथा विकास र समृद्धि हुन नसक्नु र गरिबी निवारण र उच्च आर्थिक विकासको मुख्य आधार ठानिएको मानव संसाधनको विकास प्राथमिकतामा पर्न नसक्नु जस्ता समस्याहरू रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

नेपालको संविधानले परिलक्षित गरेको समृद्ध राष्ट्र निर्माणमा टेवा पुऱ्याउन शिक्षा, ऊर्जा, स्वास्थ्य, सूचना प्रविधि, कृषि, वन, लगायतका सबै संभावित क्षेत्रहरू पहिचान गरी आवश्यक पर्ने जनशक्ति प्रक्षेपण गर्दै मानव संसाधन विकास योजना तयार गरी कार्यान्वयन गर्नु, गुणस्तरीय व्यावसायिक सीप र तालिमका अवसरमा सबैको पहुँच विस्तार गर्नु, वैदेशिक रोजगारीमा जाने अदक्ष युवाहरूलाई दक्ष बनाएर मात्र पठाउने व्यवस्था गर्नु, वैदेशिक रोजगारीबाट फर्केकाहरूको सीप र दक्षताको उपयोग गर्नु र मानव संसाधन विकासलाई गरिबी निवारण र आर्थिक विकाससँग एकीकृत गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्।

जनसङ्ख्याको उमेरगत संरचना अनुसार उत्पादनशील युवा शक्तिको अनुपात निकै उच्च रहनु, जनशक्तिको वर्तमान अवस्थाको आकलन र प्रक्षेपणको विवरण (डाटाबेस) तयार हुनु, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय श्रमबजारमा सीपयुक्त जनशक्तिको माग बढ्दै जानु, गुणस्तरीय प्राविधिक र व्यावसायिक शिक्षाका लागि सरकारी र निजी लगानी वृद्धिहुँदै जानु र सीपमूलक र प्राविधिक शिक्षाप्रतिको आकर्षणमा वृद्धि हुँदै जानुले मुलुकभित्र गुणस्तरीय मानव संसाधनको विकास गर्ने र मुलुकको आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणमा सोको उपयोग गर्ने महत्त्वपूर्ण अवसर सिर्जना हुनु प्रमुख अवसर हुन्।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

दक्ष, कुशल, सीपयुक्त र उत्पादनशील मानव संसाधनको विकास।

#### ४.२ लक्ष्य

बजारको माग र आपूर्तिबीच सन्तुलन कायम गर्दै सामाजिक तथा आर्थिक रूपान्तरणका लागि मानव संसाधनको विकास गर्ने।

#### ४.३ उद्देश्य

१. आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणका लागि तत्कालीन र दीर्घकालीन रूपमा आवश्यक पर्ने मानव संसाधनको वर्तमान अवस्थाको मूल्याङ्कन गरी सोही आधारमा प्रक्षेपण गर्नु।
२. मानव संसाधन विकास प्रणालीलाई संस्थागत गरी राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्रतिस्पर्धा गर्न सक्ने सक्षम तथा गुणस्तरीय मानव संसाधनको उत्पादन गरी आपूर्ति गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. मुलुकभित्र आवश्यक पर्ने दक्ष तथा अर्धदक्ष मानव संसाधनको विकास र उपयोगको निम्ति आवधिक प्रक्षेपणका आधारमा योजना तयार गरी लागू गर्ने ।                         | <p>१. सबै तहका सरकार तथा निजी क्षेत्र समेतको सहभागितामा एकीकृत मानव संसाधन विकास योजना तयार गरी यसलाई अनुसन्धानसँग समेत आबद्ध गरिनेछ ।</p> <p>२. आवधिक जनशक्ति प्रक्षेपणका आधारमा तीन तहबाट वार्षिक जनशक्ति योजना तयार गरिनेछ ।</p> <p>३. युवा जनशक्तिलाई प्राविधिक तथा विश्वविद्यालय शिक्षामा केन्द्रित गर्ने, कार्यक्षेत्रमा आबद्ध जनशक्तिलाई स्वअध्ययन, तालिम तथा विकासमा प्रोत्साहित गर्ने र अवकाश प्राप्त जनशक्तिलाई ज्ञान स्थानान्तरण कार्यक्रममा केन्द्रित गरिनेछ ।</p> <p>४. युवा, महिला, वृद्ध, अपांगता भएका तथा सक्रिय जनशक्तिको अद्यावधिक प्रवृत्तिका आधारमा आर्थिक सामाजिक नीति तर्जुमा एवम् संशोधन गर्दै लगिनेछ ।</p> |
| २. राष्ट्रको आर्थिक विकासको क्रमसँगै विविध क्षेत्रमा आवश्यक पर्ने मानव संसाधनको विकास र उपयोगमा सरकारी, सामुदायिक र निजी क्षेत्रबीच साझेदारी र सहकार्य गर्ने । | <p>१. जनशक्ति प्रक्षेपणको मार्गदर्शन बमोजिम प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रहरूका लागि आवश्यक जनशक्ति उत्पादनका लागि सरकारी लगानीमा उच्च वृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>२. सरकारी र निजी क्षेत्रबीचको साझेदारी तथा कर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वको अवधारणामा आधारित भई मानव संसाधनको विकास र उपयोगमा निजी क्षेत्रलाई उत्प्रेरित गरिनेछ ।</p>   |
| ३. प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक सीप विकासको अवसर सबैको पहुँचयोग्य र गुणस्तरीय बनाउने ।  | <p>१. विश्वविद्यालय, शैक्षिक संस्था र निजी क्षेत्रलाई श्रम क्षेत्रमा उच्च माग भएका विषयगत क्षेत्रमा जनशक्ति उत्पादन गर्न प्रोत्साहित गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा आन्तरिक श्रमको माग अनुसारका विभिन्न किसिमका व्यावसायिक तथा सीपमूलक तालिम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>३. मानव संसाधनको उपयोगका लागि रोजगारीका अवसर धेरै भएका निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरिनेछ ।</p>   |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>४. छरिएर रहेका सरकारी सीप विकास संस्था र कार्यक्रमबीच सहकार्य, समन्वय र एकीकरण समेत गरी क्षमता र गुणस्तर वृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>५. अनुसन्धानमूलक उच्च शिक्षा तथा प्राविधिक शिक्षाका अवसर उपलब्ध गराएर राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय श्रमबजारमा प्रतिस्पर्धा गर्नसक्ने गुणस्तरीय जनशक्ति तयार गरिनेछ ।</p> <p>६. आर्थिक तथा सामाजिक रूपमा पछाडि परेका समूहको क्षमता विकासका लागि प्राविधिक र व्यावासायिक शिक्षाका अवसरमा छात्रवृत्ति लगायतका सुविधाहरू उपलब्ध गराइनेछ ।</p> <p>७. उत्पादित जनशक्ति र श्रमबजारमा उपलब्ध रोजगारीका अवसरबीच तादात्म्यता कायम गर्न इन्टर्नसीप र एपरेन्टिससीप कार्यक्रमलाई अनिवार्य गरिनेछ ।</p> |
| ४. वैदेशिक रोजगारीबाट फर्केर आएका सीपयुक्त जनशक्तिलाई ज्ञान र सीप प्राप्त गर्ने एक स्रोतको रूपमा उपयोग गर्ने । | <p>१. वैदेशिक रोजगारीबाट फर्केकाहरूको सीपको डिजिटल अभिलेख स्थापना गरी उनीहरूलाई व्यावासायिक तालिमको प्रशिक्षकका रूपमा उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>२. विदेशी लगानीका उद्योगमा वैदेशिक रोजगारीबाट फर्किएका नेपाली कामदारलाई प्राथमिकता दिइने व्यवस्था गरिनेछ ।</p>  |
| ५. विदेशी उद्योग र कम्पनी मार्फत नयाँ प्रविधि प्राप्ति र उपयोग गर्ने ।   | <p>१. विदेशी उद्योग र कम्पनीसँगको समन्वय र सहकार्यमा नयाँ प्रविधि भित्र्याई दक्ष जनशक्ति उत्पादन गरिनेछ ।</p> <p>२. विश्वविद्यालय र अन्तर्गतका अनुसन्धान निकायहरूको क्षमता विकास गरी बाह्य लगानीको परिचालनमा अनुसन्धानका कार्यहरू सञ्चालन गरिनेछ ।</p>  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

जनशक्ति प्रक्षेपण तथा एकीकृत मानव संसाधन विकास योजना निर्माण भई त्यसको आधारमा क्षेत्रगत योजनाहरू निर्माण भएको हुनेछ । राष्ट्रको आवश्यकता बमोजिमको सीपयुक्त जनशक्ति उत्पादन भएका हुनेछन् । विकास योजनाहरूले मानव संसाधनको विकास र उपयोगलाई उच्च प्राथमिकता दिएका हुनेछन् । श्रम बजारको माग र आपूर्तिको सन्तुलन कायम भएको हुनेछ । मानव संसाधनको विकास र उपयोगमा सरकारी र निजी क्षेत्रबीच सहकार्य

गरिएको हुनेछ। इच्छुक युवाहरूले माग बमोजिम सीप विकासका अवसर प्राप्त गर्नेछन्। अर्ध-बेरोजगारी तथा बेरोजगारीको दरमा कमी आएको हुनेछ। समग्रमा मानव संसाधन विकासमा प्रगति भई स्तरोन्नति भएको हुनेछ।

## १०.५ अनुसन्धान तथा विकास

### १. पृष्ठभूमि

संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्थालाई समावेशिताका माध्यमबाट सुदृढ गर्न र विकास व्यवस्थापनलाई नतिजामुखी बनाउन अनुसन्धान तथा विकासको अपरिहार्यता रहन्छ। वैज्ञानिक अध्ययन अनुसन्धान एवम् विज्ञान र प्रविधिको आविष्कार, उन्नयन र विकासमा लगानी अभिवृद्धि गर्ने तथा वैज्ञानिक, प्राविधिक, बौद्धिक र विशिष्ट प्रतिभाहरूको संरक्षण गर्ने राज्यका नीति रहेको छ। नीति अनुसन्धानको क्षेत्रमा लामो समयदेखि वातावरण, स्वास्थ्य तथा जनसंख्या अनुसन्धान केन्द्र, नेपाल स्वास्थ्य अनुसन्धान परिषद्, नेपाल कृषि अनुसन्धान परिषद्, शैक्षिक अनुसन्धान तथा विकास केन्द्र, आर्थिक विकास तथा प्रशासन अनुसन्धान केन्द्र, नेपाल एसियाली अध्ययन केन्द्र, नीति अनुसन्धान तथा विश्लेषण केन्द्र, क्रियाशील वन नेपाल, नीति अनुसन्धान तथा विकास संस्था, परराष्ट्र मामिला अध्ययन प्रतिष्ठान, विश्वविद्यालय तथा प्राज्ञिक संस्थाहरू, नेपाल प्रशासनिक प्रशिक्षण केन्द्र, नेपाल अध्ययन समूह लगायतका क्रियाशील संस्थाहरू रहे तापनि तिनीहरूको क्षमता विकास गर्न र तिनीहरूको योगदानलाई राष्ट्रिय विकासका आयामहरूमा आन्तरिकीकरण गरी मुलुकले उचित लाभ लिन थप काम गर्न बाँकी छ। यसै क्रममा नेपाल सरकारबाट नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठानको गठन समेत गरी तथ्यमा आधारित नीतिको अध्ययन एवम् अनुसन्धान गर्न खोजिएको छ।

“समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली” को राष्ट्रिय सोचलाई सफल बनाउन ऊर्जा, यातायात, पर्यटन, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, वन, वातावरण, शहरी विकास तथा वैदेशिक रोजगार र सामाजिक विकास जस्ता क्षेत्रगत विषयका नीतिहरू तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्न अध्ययन र अनुसन्धानको गहन भूमिका रहेको छ। साथै, हालसम्म पहिचान नभएका स्रोत-साधन पहिचान गर्न, तिनीहरूको व्यवस्थित परिचालन गर्न तथा उपलब्ध स्रोत-साधनको अत्युत्तम उपयोग गर्ने वातावरण सिर्जना गर्न र मूलतः विकास नीति तर्जुमा कार्यान्वयन एवम् पृष्ठपोषण गर्न अनुसन्धान तथा विकासको माध्यमबाट मार्ग प्रशस्त गर्नु आवश्यक हुन्छ।

### २. प्रमुख समस्या

अनुसन्धान तथा विकासको क्षेत्रमा दीर्घकालीन सोच नहुनु, अनुसन्धान तथा विकासलाई उच्च महत्त्व नदिइनु, सरकारी तथा निजी क्षेत्रबाट अध्ययन एवम् अनुसन्धानको कार्यले प्राथमिकता नपाउनु, अनुसन्धान तथा विकासको क्षेत्रमा पर्याप्त साधन परिचालन नहुनु, युवा वैज्ञानिकको समुचित परिचालन गर्न नसक्नु, अनुसन्धान तथा विकासको लागि संस्थागत संयन्त्र तथा अन्तरनिकाय समन्वय अत्यन्त कमजोर हुनु, अनुसन्धान तथा विकासमा विश्वविद्यालय तथा प्राज्ञिक संस्थाहरूको संलग्नता कम हुनु र बाह्य पक्षबाट नेपालमा गरिएका अनुसन्धान तथा विकास सम्बन्धी अध्ययनहरू नेपालले प्राप्त गरी उपयोग गर्न नसक्नु प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्। साथै, नयाँ सोच, विचार

सहितका स्वदेशमा रहेका र विदेशबाट आशा, उमंग र चाहनाहरू बोकेर फर्केका सिर्जनशील युवाशक्तिलाई अनुसन्धान र विकासमा समाहित गराउने विधिको निर्माण नहुनु अनुसन्धान र तथ्यपरक विकास नीतिमा बाधक बनेको छ ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

अनुसन्धान तथा विकासलाई राष्ट्रिय नीति तथा विकास आयोजनाको अभिन्न अंगको रूपमा आत्मसात गर्नु, अनुसन्धान तथा विकासका क्षेत्रहरूको प्राथमिकीकरण तथा स्तरीकरण गर्नु, अनुसन्धान तथा विकासको लागि यथार्थपरक र सान्दर्भिक सूचना तथा तथ्याङ्कहरूको अभिलेखीकरण गर्नु, नीति निर्माण तथा पृष्ठपोषणसँग अनुसन्धान तथा विकासलाई एकीकृत गर्नु, नीति विश्लेषणको लागि सूचना निर्माण, संकलन, पहुँच अभिवृद्धि र सूचनाको उपयोग गर्ने क्षमताको विकास गर्नु, अध्ययन तथा अनुसन्धानबाट राष्ट्रिय मापदण्ड तयार गर्नु र यस विषयमा कार्यरत निकायका बीचमा उच्च स्तरको समन्वय गर्नु, अध्ययन एवम् अनुसन्धान गरिएका विषयको प्रमाणीकरण एवम् एकीकृत भण्डारण तथा सहज रूपमा प्रमाण उपलब्ध गराउनु, अनुसन्धान तथा विकासको उपलब्धिलाई संस्थागत गर्नु र यसको दिगोपनालाई प्रभाव मूल्याङ्कनको माध्यमबाट प्रमाणमा आधारित बनाउनु चुनौती रहेका छन् ।

अनुसन्धान तथा विकासको कार्य अत्यन्त सघन र बौद्धिक कार्य समेत रहेकोले यसलाई ज्ञानमा आधारित भविष्यको सम्पत्ति (Knowledge Based Future Property) को रूपमा सिर्जना गर्न सकिनु, राष्ट्रिय नीति तथा विकास आयोजनाहरूमा अध्ययन अनुसन्धानको माग बढ्दै जानु, राष्ट्रिय, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको साझेदारी बढ्दै जानु, अनुसन्धान तथा विकासको क्षेत्रमा विभिन्न संस्थाहरूको संजाल स्थापना र विस्तार हुनु र अनुसन्धान तथा विकासबाट प्राप्त नतिजालाई पृष्ठपोषणको रूपमा उपयोग गर्ने वातावरण बन्दैजानु जस्ता अवसर रहेका छन् । साथै, विश्वव्यापीकरणको कारणले नीति एवम् कार्ययोजनाको सन्दर्भमा राष्ट्रिय हितको प्रवर्द्धन गर्न पनि अनुसन्धान एवम् विकास कार्यले क्रमशः महत्त्व पाएको छ । छिमेकी मुलुक चीन र भारत लगायत नेपाल जस्ता अन्य मुलुकको अनुभवबाट नवीन विकास, ज्ञान तथा प्रविधि हस्तान्तरणको क्षेत्रमा अनुसन्धान तथा विकासलाई अगाडि बढाउन सकिने अवसर समेत रहेको छ ।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

तथ्य र ज्ञानमा आधारित विकासका माध्यमबाट समृद्ध राष्ट्र निर्माण ।

#### ४.२ लक्ष्य

अनुसन्धान तथा विकासलाई सिर्जनशील ज्ञानको भण्डार (Store of the Innovative Knowledge) को रूपमा विकास गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

१. अनुसन्धान तथा विकासको माध्यमबाट भविष्यको लागि ज्ञानमा आधारित र सिर्जनशील नागरिक तयार गर्नु ।

२. अनुसन्धान तथा विकासको उपलब्धिलाई राष्ट्र हित, राष्ट्रिय नीति तथा कार्यक्रममा अवलम्बन गर्नु ।

३. अनुसन्धान तथा विकासको माध्यमबाट राष्ट्रिय नीति निर्माण तथा कार्यान्वयन क्षमता अभिवृद्धि गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति र कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. नेपालको शैक्षिक प्रणालीलाई व्यवहारिक, प्रयोगात्मक र अनुसन्धानमूलक बनाउन जोड दिने ।  | १. विश्वविद्यालयका अनुसन्धानमूलक शोधकार्यलाई राष्ट्रिय नीति निर्माणमा समाहित गरिनेछ ।<br>२. अध्ययन अनुसन्धानमा गरिने लगानी क्रमशः वृद्धि गर्दै लगिनेछ ।  |
| २. तालिम र विकासलाई सैद्धान्तिक ज्ञान र व्यावहारिक अभ्यासमा प्रतिबिम्बित गरी अनुसन्धान तथा विकाससँग आबद्ध गर्ने ।                                | १. सरकारका सबै निकायहरूमा विश्वसनीय सूचना तथा तथ्याङ्क र अनुगमन सुनिश्चितता कायम गरिनेछ ।<br>२. तालिम प्रदायक संस्थाहरूको पाठ्यक्रमलाई व्यवहारिक बनाउदै तालिमपश्चात्को प्रभाव मूल्याङ्कन (Impact Monitoring of Training) लाई अनिवार्य बनाइनेछ ।<br>३. प्रशिक्षार्थीले तालिममा सिकेको ज्ञान र सीपलाई सोध र कार्यक्षेत्रमा उपयोग गर्ने वातावरण बनाइनेछ ।   |
| ३. अनुसन्धान तथा विकासलाई राष्ट्रिय प्राथमिकतामा राखी निजी क्षेत्रको भूमिका सहित विगतका विषय क्षेत्रगत नीतिहरूको पुनरावलोकन गरी पृष्ठपोषण लिने । | १. अनुसन्धान तथा विकासमा निजी, गैरसरकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको रणनीतिक सहयोग र साझेदारी प्रोत्साहित गरिनेछ ।<br>२. अनुसन्धान तथा विकासमा हुने राष्ट्रिय लगानीलाई वृद्धि गर्दै निजी तथा विकास साझेदारहरूको लगानीलाई विश्वसनीय बनाउने संयन्त्रको विकास गरिनेछ ।<br>३. अनुसन्धान तथा विकासको माध्यमबाट नीति निर्माण, कार्यान्वयन र अनुगमनमा सरोकारवाला निकायहरूको सहभागिता अभिवृद्धि गरिनेछ ।<br>४. तुलनात्मक रूपमा विकासका सम्भावना बढी भएका क्षेत्रहरूमा अनुसन्धान र विकासलाई संस्थागत गर्दै उत्पादन र उत्पादकत्वमा जोड दिइनेछ ।<br>५. अनुसन्धान र विकासका लागि निजी क्षेत्रसँग राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा सहकार्य गरिनेछ । |
| ४. अनुसन्धान तथा विकासलाई अनुसन्धान आयोजना   | १. अनुसन्धान तथा विकासमा संलग्न निकायहरूलाई एउटै सञ्जाल (Single Networking) मा आबद्ध गरिनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| (Research Project) को रूपमा विकास गर्ने ।   | <p>२. अनुसन्धान तथा विकासको परिणामलाई राष्ट्रिय नीति तथा विकास आयोजनाहरूसँग सामन्जस्यता गर्दै यसको राष्ट्रिय मानक निर्धारण गरिनेछ ।</p> <p>३. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय, वित्तीय, प्राविधिक, मानवीय र अन्य स्रोतको पहिचान र उपयोगको लागि समन्वयात्मक वातावरण तय गरिनेछ ।</p>   |
| ५. अनुसन्धान तथा विकासको माध्यमबाट मानव संशाधन विकासमा जोड दिने ।                       | <p>१. युवा जनशक्तिलाई गुणस्तरीय तथा प्राज्ञिक शिक्षामा केन्द्रित गर्दै कार्यक्षेत्रमा आबद्ध जनशक्तिलाई तालिम मार्फत दक्ष र योग्य बनाउन उच्च प्राथमिकता दिइनेछ ।</p> <p>२. उच्च शिक्षामा अनुसन्धान तथा विकास सम्बन्धी विषयलाई समावेश गरिनेछ ।</p>   |
| ६. नीति निर्माणकर्तालाई व्यावसायिक तथा क्षेत्रगत विषय विज्ञ बनाउने वातावरण तयार गर्ने । | <p>१. सबै तहका सरकारको नीति, योजना र कार्यक्रममा तथ्यपरक दिगो विकास लक्ष्यहरूलाई अनुसरण गर्न सक्ने क्षमताको विकास सम्पन्न गरिनेछ ।</p> <p>२. स्थलगत तालिम (On the Job Training) लाई सुपरीवेक्षकको अनिवार्य जिम्मेवारी (Responsibility of the Supervisor) को रूपमा गरिनेछ ।</p> <p>३. अनुसन्धान तथा विकासको माध्यमबाट पूर्व राष्ट्रसेवक प्राज्ञिकहरूको ज्ञान, सीप र अनुभवलाई राष्ट्रिय हितमा समुचित उपयोग गर्ने संयन्त्रको विकास गर्दै वैज्ञानिक, प्राविधिक, बौद्धिक र विशिष्ट प्रतिभाहरूको संरक्षण गरिनेछ ।</p> <p>४. नेपाल भित्र र बाहिरका अध्ययन तथा अनुसन्धानको तथ्याङ्कीय अभिलेखीकरण गरिनेछ ।</p> <p>५. अनुसन्धान तथा विकास सम्बन्धी नेपालमा स्थापना भएका संस्थालाई विदेशी राष्ट्रका अनुसन्धान तथा विकास सम्बन्धी संस्थासँग सम्पर्क र सहकार्य स्थापित गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

अध्ययन, अनुसन्धान तथा विकासमा सार्वजनिक र निजी क्षेत्रको लगानीमा बढोत्तरी भएको हुनेछ । अध्ययन अनुसन्धानको तथ्याङ्कीय अभिलेख सुरु भएको हुनेछ । अध्ययन, अनुसन्धान तथा विकासबाट औद्योगिक क्षेत्रको

उत्पादनमा सहयोग पुगेको हुनेछ। तथ्यमा आधारित र नतिजामूलक निर्णय प्रक्रियाको माध्यमबाट संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था अनुरूप समृद्ध राष्ट्र निर्माणमा सहयोग पुगेको हुनेछ।

## १०.६ समावेशीकरण

### १. पृष्ठभूमि

आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक र प्रशासनिक दृष्टिले पछाडि परेका विभिन्न लक्षित वर्गहरू (महिला, दलित, आदिवासी जनजाति, मधेसी, थारु, मुस्लिम समुदाय, पिछडावर्ग, सीमान्तीकृत, अल्पसंख्यक, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, लैंगिक तथा यौनिक अल्पसंख्यक, किसान, श्रमिक, उत्पीडित वा पिछडिएको क्षेत्रका नागरिक तथा आर्थिक रूपले विपन्न खस आर्य) लाई नेपालको संविधानले समानुपातिक समावेशी सिद्धान्तका आधारमा राज्यको निकायमा सहभागिता हुन पाउने हकलाई मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था गरेको छ। नेपालको संविधानमा नै राष्ट्रिय महिला आयोग, राष्ट्रिय दलित आयोग, राष्ट्रिय समावेशी आयोग, आदिवासी जनजाति आयोग, मधेसी आयोग, थारु आयोग र मुस्लिम आयोगको व्यवस्था गरी समावेशीकरणलाई थप व्यवस्थित, सुनिश्चित तथा प्रभावकारी बनाउने व्यवस्था गरिएको छ। महिला, दलित, आदिवासी जनजाति, मधेसी, मुस्लिम समुदाय, पिछडावर्ग, अल्पसंख्यक, लोपोन्मुख जाति, दुर्गम पहाडी तथा हिमाली क्षेत्रका बासिन्दा, विपन्नवर्ग जस्ता वञ्चितमा परेका समुदाय तथा व्यक्तिहरूको लागि सीप विकास तालिम, छात्रवृत्ति कर्जा र रोजगारीमूलक लक्षित कार्यक्रम, शिक्षा तथा सार्वजनिक क्षेत्रको रोजगारीमा आरक्षण, मातृभाषाको संरक्षण र सम्बर्द्धन सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन हुँदै आएको छ। विभिन्न जाति, वर्ग एवम् क्षेत्रबीच आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य क्षेत्रमा देखिएको अन्तरको अन्त्य गर्नुपर्ने भएको छ। साथै, मुलुकको बहुलतायुक्त सामाजिक स्वरूपलाई पुँजीको रूपमा स्थापित गरी राष्ट्रिय विकासमा महत्तम लाभ उठाउन समावेशीकरणलाई प्रमुख माध्यमको रूपमा अंगीकार गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ।

### २. प्रमुख समस्या

विभिन्न लक्षित समुदाय र वर्गका बीच सामाजिक क्षेत्रमा ठूलो अन्तर रहनु, राज्यको स्रोत, साधन, अवसर र लाभमा त्यस्ता वर्ग, समुदाय एवम् क्षेत्रको न्यायोचित पहुँच नहुनु, राजनीतिक र प्रशासनिक संरचनामा उचित प्रतिनिधित्व नहुनु प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

लक्षित समुदायमा व्याप्त गरिबी घटाउनु, विभिन्न समुदाय तथा वर्गबीच आर्थिक, शैक्षिक तथा सामाजिक क्षेत्रमा रहेको अन्तर कम गर्नु, राज्यको स्रोत-साधन तथा सेवा सुविधामा त्यस समुदायको न्यायोचित पहुँच स्थापित गर्नु, नकारात्मक सामाजिक मूल्य-मान्यता हटाउनु, प्रदेश र स्थानीय तहमा स्थापित सरकारको संरचनामा लक्षित समुदायको अपेक्षित प्रतिनिधित्व गराउनु र सामाजिक न्याय सहितको समावेशी विकास हासिल गर्ने विषयहरू प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

विभिन्न जाति, वर्ग र पिछडिएको क्षेत्रका नागरिकलाई समानुपातिक समावेशी सिद्धान्तका आधारमा राज्यका निकायमा सहभागिता हुन पाउने हकलाई मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था हुनु, मौलिक हक सम्बन्धी कानूनहरू संघीय संसदबाट अनुमोदन हुनु, समावेशीकरणलाई बढी व्यवस्थित तथा प्रभावकारी बनाउन व्यवस्था गरिएका संवैधानिक आयोगहरूको संरचनागत स्थापना वा स्थापना हुने प्रक्रियामा रहनु, स्थानीय तहका विभिन्न पदहरूमा जातीय, लैङ्गिक प्रतिनिधित्वको व्यवस्था हुनु, आफ्नो धर्म, संस्कृति, भाषाको संरक्षण र संवर्द्धनका लागि सचेतना तथा क्रियाशीलतामा अभिवृद्धि हुनु र राज्यका विभिन्न अङ्ग तथा क्षेत्रमा यस्ता समुदायहरूको प्रतिनिधित्व बढ्दै गएकाले समावेशीकरणको प्रक्रियालाई थप प्रभावकारी बनाउने सम्भावना रहेका छन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

राज्यका सबै नागरिकको उपस्थिति र अर्थपूर्ण सहभागितामा समावेशी विकास ।

##### ४.२ लक्ष्य

मानव विकास सूचकांकको आधारमा पछाडि परेका समुदायहरूको सशक्तीकरण र समानुपातिक विकास गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. आर्थिक सामाजिक तथा राजनैतिक अवसरबाट वञ्चिततामा परेका लक्षित वर्गका लागि मुलुकमा उपलब्ध साधन-स्रोत तथा सुविधामा समानुपातिक समावेशी पहुँचको सुनिश्चितता गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. मुलुकमा उपलब्ध स्रोत-साधनहरूमा लक्षित वर्गको समानुपातिक पहुँच बढाउने ।  | १. मुलुकमा उपलब्ध स्रोत-साधनहरूमा महिला, आदिवासी, जनजाति, दलित, मधेसी, मुस्लिम समुदाय, अल्पसंख्यक लोपोन्मुख जाति, पिछडा वर्गका नागरिकहरूको पहुँच बढाइनेछ ।<br>२. सीमान्तीकृत तथा पिछडिएका क्षेत्रका नागरिकहरूको आर्थिक तथा सामाजिक विकासका लागि लक्षित कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ ।               |
| २. राज्यका तीन तहमा हुने निर्णय प्रक्रिया तथा यसका प्रशासनिक संरचनामा सकारात्मक विभेद र आरक्षणको माध्यमबाट अर्थपूर्ण सहभागिता सुनिश्चिता गर्ने । | १. शासन सञ्चालन तथा विकासका सबै क्षेत्रको निर्णय प्रक्रियामा सबै सरोकारवालाहरूको सहभागिता सुनिश्चित गरिनेछ ।<br>२. आर्थिक, सामाजिक तथा भौगोलिक रूपले पछाडि परेका नागरिकहरूलाई सकारात्मक विभेद र आरक्षणको माध्यमबाट राजनैतिक, सामाजिक र प्रशासनिक क्षेत्रमा अर्थपूर्ण सहभागिता सुनिश्चितता गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| ३. सीप विकास तालिम प्रदान गरी मुलुकमा उपलब्ध रोजगारीका अवसर उपयोग गर्न सक्षम बनाउने ।                              | १. संघ, प्रदेश र स्थानीय तह र यसका कार्यक्षेत्रभित्र उपलब्ध रोजगारीका अवसर उपयोग गर्न सक्षम तुल्याउन आर्थिक, सामाजिक रूपले पछाडि परेका लक्षित वर्गलाई सीप विकास तालिम प्रदान गरी उनीहरूको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।  |
| ४. आदिवासी, जनजाति, दलित, मधेसी, मुस्लिम समुदाय तथा पिछडावर्गको भाषा तथा संस्कृतिको संरक्षण एवम् संवर्द्धन गर्ने । | १. विभिन्न जाति तथा समुदायको लोपोन्मुख भाषा एवम् संस्कृतिहरूलाई संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक अनुसन्धान, राम्रा सिकाईको अनुसरण, सम्बन्धित वर्गको संलग्नता र त्यसप्रति जागरण ल्याउने कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ । |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

राज्यका तीन तहका निर्णय प्रक्रियामा नागरिक सहभागिता सुनिश्चित भएको हुने, उपलब्ध स्रोत-साधनहरूमा समुदायको पहुँच बढेको हुने, राजनीतिक, प्रशासनिक, शैक्षिक क्षेत्रमा सकारात्मक विभेद र आरक्षणको माध्यमबाट अर्थपूर्ण र देखिने सहभागिता भएको हुने र आदिवासी, जनजाति, मधेसी, मुस्लिम समुदाय, पिछडा वर्गको भाषा तथा संस्कृतिको संरक्षण एवम् संवर्द्धन भएको हुनेछ ।

#### १०.७ सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता

##### १. पृष्ठभूमि

नेपाल बहुजातीय, बहुभाषिक, बहुधार्मिक र बहुसांस्कृतिक राष्ट्रको रूपमा विश्वमै सुपरिचित छ । हाम्रो समृद्ध मूर्त तथा अमूर्त सम्पदाहरू राष्ट्रिय एकता सबलीकरण गर्ने माध्यमका रूपमा रहेका छन् । परम्परागत संस्कृतिको जगेर्ना गरी भाषा र संस्कृतिको मौलिकतालाई अक्षुण्ण राख्दै ऐतिहासिक, पुरातात्विक तथा सांस्कृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण, संवर्द्धन र विकास गर्नु हाम्रो दायित्व रहेको छ । असल सांस्कृतिक अभ्यास, सांस्कृतिक सहिष्णुता र सहअस्तित्व मार्फत सामाजिक सद्भाव सुदृढ गर्न आवश्यक छ । "विविधतामा एकता, नेपाली समाजको विशेषता" भन्ने तथ्यलाई आत्मसात् गरी राष्ट्रिय एकता र अखण्डतालाई मजबुत बनाउनको लागि संस्कृतिको अहम् भूमिका रहेको छ । कला र साहित्यको क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउने श्रष्टाहरूलाई सम्मान गर्ने कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिएका छन् ।

नेपालमा ४ भाषिक समुदायका कुल १२५ जातजाति र १२३ भाषाहरू रहेका छन् । यहाँका १० सम्पदाहरू विश्वसम्पदा सूचीमा सूचीकृत छन् । मूर्त-अमूर्त संस्कृतिका दृष्टिकोणले नेपाल विश्वमै धनी राष्ट्र मानिन्छ ।

## २. प्रमुख समस्या

प्राचीन सांस्कृतिक सम्पदा एवम् तिनीहरूको स्वामित्वमा रहेको सम्पत्तिको वैज्ञानिक अभिलेखको अभाव हुनु, सम्पदाहरूमाथि अव्यवस्थित शहरीकरणद्वारा सिर्जित अतिक्रमण हुनु, विश्वव्यापीकरण तथा आधुनिकीकरणको प्रभाव रहनु, मूर्त तथा अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको व्यवस्थापन सम्बन्धी नीति तथा कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्न पर्याप्त स्रोत-साधन अपर्याप्त हुनु, सम्पदाको दिगो संरक्षण तथा सञ्चालनका लागि स्थानीय तह तथा समुदायमा स्वामित्वको अनुभूति दिलाउन नसकिनु, भाषा, संस्कृति संरक्षण, प्रवर्द्धन तथा अभ्यास गर्ने विभिन्न क्षेत्रका स्रष्टा तथा समुदायलाई उचित सम्मान तथा प्रोत्साहनमा समेट्न नसक्नु र भाषा, संस्कृतिको क्षेत्रमा पर्याप्त मात्रामा अध्ययन, अनुसन्धान तथा अन्वेषण कार्य हुन नसक्नु समस्या विद्यमान रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

मूर्त तथा अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा सम्बन्धी नीति, कानून एवम् अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु, विश्वव्यापीकरणको प्रभावबाट मौलिक संस्कृतिलाई जोगाइराख्नु, विविधतामा एकता ल्याउने सशक्त माध्यम भाषा र संस्कृति भएकोले सबै भाषा र संस्कृतिको संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्नु र संस्कृतिलाई राज्यको प्राथमिकतामा समावेश गरी पर्याप्त स्रोत-साधनको व्यवस्था मिलाउनु प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

भूकम्पद्वारा क्षतिग्रस्त ऐतिहासिक पुरातात्विक सम्पदाहरूको पुनर्निर्माण सन्तोषजनक रूपमा गति लिएको, संघीय संरचना अनुरूप तीन तहका सरकारबाट संस्कृतिको संरक्षणमा स्थानीय आवश्यकता बोध गरी थप प्रयास हुन सक्ने अवस्था सिर्जना भएको छ। संविधानमा भाषा आयोगको प्रावधान रहनु, तथा भाषा र संस्कृतिको हकलाई मौलिक हकको रूपमा प्रत्याभूत गरिनु, सांस्कृतिक एवम् धार्मिक विविधताबीच सद्भाव अभिवृद्धि भएकाले राष्ट्रिय एकता सुदृढ गर्नका साथै बाह्य धार्मिक पर्यटकलाई आकर्षण गर्न सकिने अवसर रहेको छ।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

विविधतामा गौरव गर्ने एकताबद्ध नेपाली समाज।

### ४.२ लक्ष्य

नेपालका सबै मौलिक संस्कृतिको संरक्षण, संवर्द्धन र विकास गर्दै राष्ट्रिय एकता एवम् अखण्डता मजबुत बनाउने।

### ४.३ उद्देश्य

१. सबै जाति/समुदायको संस्कृति र परम्पराको जगेर्ना गरी मौलिक पहिचान र राष्ट्रिय एकता अभिवृद्धि गर्नु।
२. सम्पदाहरूको संरक्षण र प्रभावकारी व्यवस्थापन गरी पर्यटकीय स्थलको रूपमा विकास गर्नु।
३. भाषा, साहित्य, लिपी, सङ्गीत, नाट्यकला र ललितकला क्षेत्रको वृहत्तर विकास र प्रवर्द्धन गर्नु।

### ४.३ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>१. सबै समुदायको सामाजिक, सांस्कृतिक र धार्मिक मूल्य-मान्यताको कदर, संरक्षण र सम्मान गर्दै राष्ट्रिय एकता प्रवर्द्धन गर्ने गरी संस्कृति परिभाष्य निर्माण गर्ने ।</p>   | <p>१. सबै समुदायका धार्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्य-मान्यताहरूको सम्मान वृद्धि हुने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. लोपोन्मुख संस्कृतिको संरक्षण तथा अभिलेखीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. सांस्कृतिक विविधताबाट राष्ट्रिय एकताका सूत्रहरू पहिचान गरी तिनलाई सर्वसाधारणले बुझ्ने र अभ्यास गर्ने रूपमा प्रचार-प्रसार गरिनेछ ।</p> <p>४. नागरिकहरूमा उक्त परिभाष्यका आधारमा सांस्कृतिक एकता सन्देश प्रवाह गरिनेछ ।</p> <p>५. परम्परागत गुठी प्रणालीको संरक्षणका साथै धार्मिक गुठी सम्बन्धी सम्पूर्ण व्यवस्थालाई पुनरवलोकन गरी परिवर्तित सन्दर्भमा नयाँ ढंगले सञ्चालनको व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p>  |
| <p>२. धार्मिक, सांस्कृतिक एवम् पुरातात्विक सम्पदाहरूको संरक्षण र क्षतिग्रस्त संरचनाको पुनर्निर्माण गर्नुका साथै प्रवर्द्धन गरी पर्यटकीय उपजको रूपमा विकास गर्न सरकार, निजी क्षेत्र र समुदायबीच सहकार्य गर्ने ।</p> | <p>१. क्षतिग्रस्त सम्पदाहरूलाई समयमै पुनःनिर्माण सम्पन्न गरी पर्यटकीय आकर्षणको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>२. मूर्त तथा अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदालाई प्रभावकारी संरक्षण हुने मापदण्डको आधारमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्यक्षेत्र अनुरूप वर्गीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. शिव परिपथ, बौद्ध परिपथ र रामायण परिपथ लगायत अन्य धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिपथहरूको गुरुयोजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>४. विश्व सम्पदा सूचीमा परेका क्षेत्रको उचित संरक्षण र संवर्द्धन गर्नुका साथै अन्य सम्भावित स्थललाई समेत विश्व सम्पदा सूचीमा समावेश गराउन पहल गरिनेछ ।</p> <p>५. धार्मिक, सांस्कृतिक, पारम्पारिक, ऐतिहासिक एवम् पुरातात्विक महत्त्वका सम्पदा स्थलहरूको दिगो विकास एवम् व्यवस्थापनका लागि गुरुयोजना बनाई कार्यान्वयन गर्दै लगिनेछ ।</p> <p>६. धार्मिक, सांस्कृतिक, पारम्पारिक, ऐतिहासिक सभ्यताहरूको सम्बर्द्धन र प्रवर्द्धन गर्दै लगिनेछ ।</p> |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | ७. पशुपतिनाथ, लुम्बिनी, वृहत्तर जनकपुर र देवघाट जस्ता धार्मिक तथा पर्यटकीय क्षेत्रहरूको अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्रचार-प्रसार तथा प्रवर्द्धन कार्यलाई उच्च प्राथमिकता दिइनेछ ।  |
| ३. भाषा, कला, साहित्य र संगीत आदि क्षेत्रसँग सम्बद्ध संस्थाहरूको सबलीकरण गर्ने ।  | <p>१. प्राचीन कला, साहित्य, संगीत, भाषा, संस्कृति भएका विशेष स्थान र त्यसमा समर्पित स्रष्टाहरूको सम्मान हुने गरी सामाजिक संरक्षण प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>२. स्रष्टाहरूको सिर्जनाको सुरक्षाका लागि प्रतिलिपि अधिकार संरक्षण कार्यलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>३. देशमा प्रचलित विभिन्न भाषा-भाषीका, लिपिको यथार्थ स्थिति पहिचान गरी अभिलेखीकरण गर्नुका साथै तिनीहरूको संरक्षण एवम् उत्थानका कार्यलाई अघि बढाइनेछ ।</p> <p>४. नेपाली मौलिक सभ्यताको प्रवर्द्धन र संरक्षण गरिनेछ ।</p> <p>५. परम्परागत लोकसंगीत, नृत्य, नाट्य लगायतका श्रव्य तथा प्रदर्शनजन्य लोक कलाहरूको अनुसन्धान र संरक्षणको उचित व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p>   |
| ४. ऐतिहासिक, धार्मिक एवम् पुरातात्विक सम्पदाहरूको अन्वेषण, उत्खनन, संरक्षण, जगेर्ना र प्रवर्द्धनमा तहगत सरकारबीच समन्वय र सहकार्य गर्ने । | <p>१. विभिन्न धार्मिक सांस्कृतिक तथा पुरातात्विक सम्पदाहरूमा पर्यटकीय आकर्षण वृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>२. नेपाली मौलिक सभ्यताको पहिचान र संरक्षण गरिनेछ ।</p> <p>३. मूर्त तथा अमूर्त संस्कृतिको संरक्षणका लागि गहन अध्ययन, अनुसन्धान तथा अन्वेषण कार्य सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>४. विभिन्न धार्मिक सम्पदा एवम् तीर्थस्थलहरूलाई आत्मनिर्भर बनाउन ती क्षेत्रमा उठ्ने भेटीघाटी लगायत स्रोतहरूको उचित व्यवस्थापन गर्न आवश्यक कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>५. स्थानीय सम्पदा, ऐतिहासिक गढी, किल्ला, भाषा, लिपि, कला, संस्कृति, गुठी, धार्मिक स्थल तथा पाटी-पौवाहरूको अभिलेखीकरण, संरक्षण र उपयोगमा प्रदेश र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ ।</p> <p>६. काठमाडौँ उपत्यका लगायतका सांस्कृतिक एवम् ऐतिहासिक महत्त्वका पर्यटकीय स्थानको प्रवर्द्धन गरी जीवित खुला संग्रहालयको रूपमा विकास गरिनेछ ।</p> <p>७. प्रत्येक प्रदेशमा एक-एक वटा बहुभाषिक, बहुजातीय तथा बहुसांस्कृतिक संग्रहालय स्थापना गरिनेछ ।</p> |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

क्षतिग्रस्त सम्पदाहरूको पुनर्निर्माण कार्य सम्पन्न भएको हुने, लुम्बिनी र पशुपति क्षेत्र विकासको गुरुयोजना कार्यान्वयन भएको हुने, देशभित्रका सबै समुदायहरूको संस्कृतिको प्रणालीबद्ध रूपमा अभिलेखीकरण एवम् लोपोन्मुख सांस्कृतिक सम्पदाहरूको जगेर्ना भएको हुने, पुरातात्विक, धार्मिक र सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षणमा स्थानीय तह तथा समुदायको सहभागिता वृद्धि भएको हुने, मातृभाषामा पठनपाठन हुने विद्यालय संख्यामा २० प्रतिशतले वृद्धि भएको हुने, पुरातात्विक एवम् ऐतिहासिक महत्त्वका सम्पदाहरूको संरक्षण र संवर्द्धन भई दुरुस्त सञ्चालनमा रहेको हुने र प्रतिलिपि अधिकारको संरक्षण भई स्रष्टा-सर्जकहरू लाभान्वित हुने अवस्था सुनिश्चित हुनेछ।

## १०.८ विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन

### १. पृष्ठभूमि

नेपाल कमजोर भौगर्भिक तथा भू-धरातलीय बनोट, मौसमी विषमता तथा जलवायु परिवर्तन, निरन्तर दोहोरिरहने बहु-प्रकोपका घटना, अव्यवस्थित पूर्वाधार विकास एवम् जोखिम असंवेदनशील विकास निर्माण कार्य लगायतका कारण उत्पन्न विभिन्न प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक विपद्को अत्यधिक जोखिममा रहेको मुलुकहरूमध्ये रहेको छ। सक्रिय भूकम्पीय क्षेत्र, भौगर्भिकरूपमा गतिशील पर्वत श्रृङ्खला, अस्थिर र भिरालो जमिनका कारण नेपाल विश्वमा भूकम्पीय जोखिमको दृष्टिले ११औं तथा बाढी पहिरोको दृष्टिकोणबाट ३०औं अति जोखिम मुलुकको रूपमा रहेको छ। विविध प्रकारका विपद्हरूको जोखिममा रहेकाले हरेक वर्ष औसत ५०० भन्दा बढी विपद्का घटनाहरू हुने गरेका छन्। प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक विपद्का घटनाहरूका कारण नेपालको भौतिक, आर्थिक, सामाजिक विकास र प्रगतिमा समेत प्रतिकूल प्रभाव परिरहेको छ।

नेपालको संविधानले प्राकृतिक प्रकोपबाट हुने जोखिम न्यूनीकरण गर्न पूर्वसूचना, तयारी, उद्धार, राहत एवम् पुनर्स्थापना गर्ने नीति अवलम्बन गर्दै विपद् व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यलाई स्थानीय तहको एकल अधिकार तथा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकारका रूपमा राखेको छ। त्यसैगरी प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक विपद् पूर्वतयारी, उद्धार, राहत र पुनर्लाभ कार्य संघ र प्रदेशको साझा अधिकारको सूचीमा सूचीकृत छ। यस जिम्मेवारीलाई योजनाबद्ध र व्यवस्थित ढङ्गले कार्यान्वयन गर्न विगतका विपद्का घटनाहरूबाट पाठ सिक्दै सेण्डाई कार्यढाँचा २०१५-२०३०, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन सम्बन्धी पेरिस सम्झौता, अदिस अबाबा कार्ययोजना तथा दिगो विकासका लक्ष्यहरू लगायतका अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धताहरू समेटि यस योजनाले विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनलाई संघीय शासकीय प्रणाली अनुरूप राज्यका नीति, रणनीति र कार्ययोजना संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्यक्षेत्रभित्र समाहित गर्नेछ।

### २. प्रमुख समस्या

विपद् जोखिमका बारेमा पर्याप्त सूचना र ज्ञानको कमी हुनु, विपद् जोखिम न्यूनीकरण र विकास निर्माण कार्यबीच आवश्यक तालमेलको कमी हुनु, विपद् उत्थानशील विकास प्रक्रियाको कमजोर अवलम्बन हुनु, विकास निर्माणमा विपद् व्यवस्थापनको न्यून मूलप्रवाहीकरण हुनु, सबै विषयगत क्षेत्रमा विपद् जोखिमको पहिचान तथा नक्सांकन हुन

नसक्नु, प्राकृतिक स्रोतहरूको अव्यवस्थित एवम् अत्यधिक दोहन हुनु, सबै विषयगत क्षेत्रमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापनका लागि स्पष्ट कार्ययोजना र पर्याप्त लगानीको कमी हुनु, सरोकारवालाहरू बीचको कार्यमा सामाज्यस्यताको कमी हुनु, विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनको सूचकमा आधारित सूचना व्यवस्थापन प्रणालीको अभाव हुनु र आपतकालीन अवस्थाका लागि दक्ष र यथेष्ट मानव स्रोत, उपकरण, बन्दोबस्ती तथा राहत सामग्रीको कमी हुनु प्रमुख समस्याका रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

विकास आयोजनाहरूको छनोट प्रक्रियादेखि नै आयोजना व्यवस्थापनका प्रत्येक चरणमा विपद् जोखिम मूल्याङ्कनलाई समाविष्ट गराउनु, जोखिममा आधारित योजना तथा निर्णय प्रक्रिया अवलम्बन गराउनु, विपद् जोखिम न्यूनीकरणका लागि पर्याप्त लगानी जुटाउनु, अव्यवस्थित एवम् छरिएर रहेका बस्तीलाई विपद्को दृष्टिकोणबाट उत्थानशील बनाई नागरिकलाई सुरक्षित बसोबासको व्यवस्था मिलाउनु, सरोकारवालाहरू बीचको आपसी समन्वय र सहकार्य सुदृढ गर्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय गरी तीन तहमा विपद् व्यवस्थापन सम्बन्धी कोषको निर्माण एवम् व्यवस्थापन गर्नु र एकीकृत विपद् व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास र सञ्चालन, परिवर्तित संघीय प्रणाली अनुसार विपद् व्यवस्थापनलाई संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकारक्षेत्र र जिम्मेवारीमा आन्तरिकीकरण र कार्यान्वयन क्षमता अभिवृद्धि गर्दै उत्थानशील समाज निर्माण गर्नु मुख्य चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

संवैधानिक प्रत्याभूति, विपद् जोखिम न्यूनीकरण राष्ट्रिय नीति, २०७५, विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन ऐन, २०७४, विपद् जोखिम न्यूनीकरण राष्ट्रिय रणनीतिक कार्ययोजना, २०१८-२०३० लगायतका नीतिगत तथा कानुनी व्यवस्थाहरू हुनु, सबै तहका सरकारमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापनको अधिकार र जिम्मेवारीको बाँडफाँट हुनु, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धताहरूको कार्यान्वयन हुँदै जानु, जोखिम न्यूनीकरणमा निजी क्षेत्र तथा समुदायको जागरुकता र सचेतना अभिवृद्धि हुनु, गैरसरकारी संस्थाको सक्रियता रहनु, प्राज्ञिक तथा अध्ययन अनुसन्धानको क्षेत्रको संलग्नता बढ्दै जानु र आधुनिक प्रविधिमा पहुँच एवम् विस्तार हुनु अवसरका रूपमा रहेका छन्।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

विपद् जोखिमबाट सुरक्षित र उत्थानशील नेपाल।

#### ४.२ लक्ष्य

सबै प्रकारका प्राकृतिक प्रकोप एवम् गैरप्राकृतिक विपद् घटनाबाट सिर्जित मानवीय, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक र वातावरणीय क्षति कम गर्ने।

### ४.३ उद्देश्य

१. विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन गर्न विपद् उत्थानमैत्री शासन पद्धतिको सुदृढीकरण गर्नु ।
२. तीन तहमा बहुप्रकोप जोखिम नक्साङ्कन/सूचनामा आधारित विपद् जोखिम पूर्वानुमान, पूर्वतयारी, प्रतिकार्य र पुनर्लाभ सम्बन्धी क्षमता विकाससँगै विपद् जोखिम संवेदनशील योजना तथा पूर्वाधार निर्माण प्रक्रिया सुनिश्चित गर्नु ।
३. विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापनका लागि सार्वजनिक, निजी तथा सामुदायिक लगानी वृद्धि गरी समुदाय स्तरदेखि नै उत्थानशील क्षमता अभिवृद्धि गर्नु ।
४. विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापनका लागि बृहत् सहभागिता सुनिश्चित गरी सचेतना अभिवृद्धि गर्दै विपद्पश्चात्को पुनर्लाभ, पुनःस्थापना, पुनर्निर्माण र नवनिर्माणका कार्यलाई सबल र उत्थानशील बनाउनु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. विपद् जोखिम न्यूनीकरणमैत्री शासन पद्धति सुदृढ बनाउन आवश्यक नीतिगत, संस्थागत र कार्यपद्धतिमा सुधार गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापन सम्बन्धी विद्यमान व्यवस्थाहरूलाई पुनरावलोकन गरी आवश्यक नीतिगत र कानुनी व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>२. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा विपद् व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्य गर्दा अन्तर सरकार समन्वय र सहकार्यको कार्यसंस्कृति अवलम्बन गरिनेछ ।</li> <li>३. तीन तहमा बहुप्रकोप जोखिम आकलनमा आधारित भई यससम्बन्धी बुझाई अभिवृद्धि गर्दै सबैको पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ ।</li> <li>४. विपद् जोखिम न्यूनीकरणका योजना तथा कार्यक्रमहरू तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्दा लैङ्गिक साथै सबै प्रकारका सामाजिक समावेशितालाई प्राथमिकतामा राखी गरिनेछ ।</li> </ol> |
| २. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका विषयगत विकास प्रक्रियाहरूमा जोखिम न्यूनीकरणलाई मूलप्रवाहीकरण गर्ने र विपद् जोखिम न्यूनीकरण एवम् उत्थानशीलता अभिवृद्धि गर्न सार्वजनिक, निजी तथा समुदायमा आधारित लगानी, साझेदारी र सहकार्य अभिवृद्धि गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विषयगत विकास योजना र पूर्वाधार निर्माणमा विपद् जोखिम आकलनमा आधारित भई विपद् जोखिम मूल्याङ्कन समावेश गरिनेछ ।</li> <li>२. विषयगत विकास प्रक्रियाको अनुगमन र मूल्याङ्कनमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण सम्बन्धी सूचकहरू विकास गरी लागू गरिनेछ ।</li> <li>३. तीन तह र समुदायस्तरमा सम्भावित जोखिमलाई न्यूनीकरण गर्नका साथै थप क्षति हुन नदिन सुदृढ विपद् प्रभाव मूल्याङ्कन</li> </ol>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>पद्धति, जीवन तथा निर्जीवन बिमा, सामाजिक सुरक्षा लगायत समुदायमा आधारित विपद् जोखिम न्यूनीकरणका विधिहरूको प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> <p>४. विपद् जोखिम न्यूनीकरण र उत्थानशीलता अभिवृद्धिका लागि सार्वजनिक तथा निजी लगानी वृद्धि गरी सबै तहमा साझेदारीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>५. विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनमा सार्वजनिक, निजी, गैरसरकारी, सहकारी संघसंस्थाहरू र समुदायबीच साझेदारी र सहकार्य प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</p> <p>६. विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापन सम्बन्धी अध्ययन-अनुसन्धान र प्रविधि विकासका क्षेत्रमा सरकारी निकाय, शिक्षण संस्थान, अनुसन्धानकर्ता तथा निजी क्षेत्रको साझेदारी र सहकार्यलाई प्रवर्द्धन र सुदृढ गरिनेछ ।</p> |
| ३. समुदायदेखि राष्ट्रिय स्तरसम्म बहुप्रकोप जोखिम आकलन/नक्साङ्कनमा आधारित पूर्वतयारी, प्रतिकार्य, पुनर्लाभ सम्बन्धी क्षमता विकास र पर्याप्त साधन- स्रोतको व्यवस्थापन गर्ने । | <p>१. संघ, प्रदेश, स्थानीय तह र समुदायस्तरमा बहुप्रकोप जोखिम आकलन तथा नक्साङ्कन गरिनेछ ।</p> <p>२. तीन तहमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनको वृहत्तर सूचना सङ्कलन, विश्लेषण र प्रवाहलाई अनलाइन प्रणालीमा आधारित बनाई सरोकारवालाहरूको समन्वयमा सबैको पहुँचमा पुऱ्याइनेछ ।</p>   |
| ४. विपद् जोखिमको पूर्वानुमान, अनुगमन, पूर्वतयारी र प्रभावकारी प्रतिकार्य गर्न आवश्यक पूर्वाधार, जनशक्ति, क्षमता र प्रविधिको विकास र सुदृढीकरण गर्ने ।                       | <p>१. प्रभावकारी पूर्वतयारी र प्रतिकार्यका लागि संभाव्य प्रकोपहरूको आकलन सहितको भौगोलिक सूचना प्रणालीमा आधारित (GIS Based) पूर्वसूचना प्रणालीको विकास र विस्तार गरिनेछ ।</p> <p>२. विपद् पश्चात्को क्षति न्यूनीकरण तथा पुनर्लाभको लागि स्थानीय तहको क्षमता विकास गरी स्थानीय तहसम्म उद्धार एवम् राहत सामग्रीको रणनीतिक मौज्जात (Strategic Storage) कायम राखी भण्डारण तथा वितरण प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>३. औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा तथा सीप विकास तालिमका कार्यक्रमहरूमा प्रकोप र विपद् सम्बन्धी पाठ्यक्रम र विषयहरू समावेश गरिनेछ,</p>   |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | ४. प्रकोप र विपद् जोखिमको अनुगमन, सूचना संप्रेषण, खोज तथा उद्धार कार्यलाई प्रभावकारी बनाउन आधुनिक प्रविधि तथा उपकरण, बन्दोबस्तीका सामग्री र दक्ष जनशक्ति सहितको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ।  |
| ५. प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त आयलाई समुदायको विपद् जोखिम व्यवस्थापनमा न्यायोचित रूपमा उपयोग गर्ने। | १. विपद् जोखिम न्यूनीकरण गरी मानवीय, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक र वातावरणीय क्षति कम गर्न विपद् बजेट कोड र विपद् व्यवस्थापनको वित्तीय रणनीति तयार गरी लागू गरिनेछ।<br>२. प्राकृतिक स्रोतको आयलाई प्रभावित क्षेत्रको विपद् जोखिम न्यूनीकरणमा लगानी गरी सुरक्षित र उत्थानशील बस्तीको निर्माण गरिनेछ।<br>३. प्राकृतिक स्रोतको आयबाट प्राप्त रकमलाई प्रयोग गरी विपद् क्षति न्यूनीकरणको लागि 'विपद् जोखिम न्यूनीकरण कोष' स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ।<br>४. विपद् पश्चात्को पुनर्निर्माण र पुनर्स्थापनामा 'अझ राम्रो र बलियो' (Built Back Better) निर्माण गर्नका लागि जोड दिइनेछ। |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

विपद्का घटनाबाट प्रभावित जनसंख्या १५.५ प्रति हजारबाट ५ प्रति हजार र मृत्यु हुने जनसंख्या १.७ प्रति लाखबाट १.०९ प्रति लाखमा सीमित हुनेछ। सबै तहमा सूचना तथा तथ्यमा आधारित विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन योजना तर्जुमा तथा निर्णय प्रक्रिया स्थापित भएको हुनेछ। संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनका लागि रणनीतिक कार्ययोजना, कार्यविधि, प्रतिकार्य ढाँचा तर्जुमा भई कार्यान्वयनमा आएको हुनेछ। विपद् जोखिम व्यवस्थापनमा सरकारी तथा निजी क्षेत्रको लगानी वृद्धि भएको हुनेछ। प्रकोप र विपद् जोखिमको पूर्वानुमान, सूचना संप्रेषण, खोज तथा उद्धार, प्रतिकार्य र पुनर्लाभलाई प्रभावकारी बनाउन विपद् व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको स्थापना हुनुका साथै आधुनिक उपकरण, बन्दोबस्ती, प्रविधि र दक्ष जनशक्ति सहितको प्रभावकारी प्रतिकार्य क्षमता अभिवृद्धि भएको हुनेछ र प्रकोप एवम् विपद्जन्य घटनाहरू र तिनीहरूबाट मानवीय नोक्सानी, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक र वातावरणीय क्षति र असर कम भई विपद् उत्थानशील विकास पद्धति स्थापित भएको हुनेछ।

## १०.९ वातावरण

### १. पृष्ठभूमि

वातावरण व्यवस्थापन मानव स्वास्थ्य र सुखसँग प्रत्यक्ष रूपमा जोडिएको विषय हो। संविधानले प्रत्येक नागरिकलाई स्वच्छ र स्वस्थ वातावरणमा बाँच्न पाउने मौलिक हकको व्यवस्था गरी यसको व्यवस्थापनलाई राज्यले उच्च प्राथमिकतामा राखेको छ। वातावरण संरक्षण संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारको कार्य जिम्मेवारीभित्र पर्दछ। नेपालको भौगोलिक अवस्था, भू-उपयोग र भू-क्षमतानुसार भौतिक पूर्वाधार निर्माण र सञ्चालन गर्न सफा यातायात, वातावरणमैत्री कलकारखाना र अस्पताल एवम् व्यस्थित शहरीकरणको आवश्यकता छ। चुम्बकीय तथा विद्युतीय उपकरण, विषादी र रासायनिक पदार्थको प्रयोगमा सावधानी अपनाउनु जरुरी देखिन्छ।

वातावरण संरक्षणलाई टेवा पुऱ्याउन ध्वनि, जल, जमिन र वायुसँग सम्बन्धित प्रदूषण रोकथाम र नियन्त्रणका लागि केही मापदण्ड निर्धारण भई कार्यान्वयनमा आएका छन्। औद्योगिक प्रतिष्ठानमा नियमित र आकस्मिक अनुगमन गरी मापदण्ड पालना गराउने कार्य भएको छ। स्थानीय तहमा वातावरणीय सक्षमता हासिल गर्न जलवायु अनुकूलन गाउँ कार्यक्रम सञ्चालनमा ल्याइएको छ। वातावरणीय विषयमा जनचेतना अभिवृद्धि, सरसफाई एवम् फोहरमैला व्यवस्थापन, प्रदूषण नियन्त्रण तथा नदी किनार र सडक किनार समेतमा हरियाली प्रवर्द्धन गरी वातावरणीय स्वच्छता कायम राख्न विगत दुई दशकदेखि प्रयास गरिए तापनि अपेक्षित उपलब्धि हासिल हुन सकेको छैन। वातावरण व्यवस्थापन एक जटिल, बहुक्षेत्रीय र बहुआयामिक विषय भएकाले यसको व्यवस्थापनमा प्रत्येक व्यक्ति, तहगत सरकार, निकाय र क्षेत्रको सहयोग र सहकार्य अनिवार्य शर्त हो।

### २. प्रमुख समस्या

एकीकृत र योजनावद्ध विकास नहुनु, जनसंख्याको बढदो चाप, अव्यवस्थित शहरीकरण बढ्नु, पूर्वाधार विकास र वातावरण बीचको असन्तुलन हुनु, औद्योगिक क्षेत्र, अस्पताल र शहरी क्षेत्रबाट निस्काशन हुने रेडियोधर्मी, विद्युतीय, चुम्बकीय, अस्पतालजन्य लगायतका विभिन्न प्रकारका प्रदूषण र कृषि क्षेत्रमा प्रयोग हुने रासायनिक मल र विषादी, जोखिमपूर्ण रसायनको मापदण्डको अभाव र कार्यान्वयन क्षमता कमजोर हुँदा वायु, ध्वनि, जल तथा जमिनमा प्रदूषणको मात्रा बढ्नु, तीन तहका सरकार, औद्योगिक प्रतिष्ठान, विश्वविद्यालय, अनुसन्धान सम्बन्धी संघ संस्थाहरू तथा अन्य सरोकारवालाबीच वातावरणसँग सम्बन्धित विषयमा समन्वय र सहकार्य हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

प्रत्येक नागरिकलाई स्वच्छ र स्वस्थ वातावरणमा बाँच्न पाउने हकलाई प्रत्याभूत गर्ने गरी आवश्यक नीति, कानून, मापदण्ड निर्माण र यसको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु चुनौती रहेको छ। वातावरणीय स्वच्छता सम्बन्धी विषयमा सबै निकायहरू र तहहरूको साझा प्रतिबद्धता जुटाउनु, ठूला उद्योग, यातायात तथा शहरी बस्तीमा मानवीय क्रियाकलापहरूबाट हुने जल, जमिन, ध्वनि र वायु प्रदूषण नियन्त्रण गर्नु, प्लाष्टिक लगायत फोहरमैलाको उचित

व्यवस्थापन तथा नदी किनार, सडक किनार समेतमा वृक्षारोपण गरी शहरी हरियाली कायम गर्नु, वातावरण र विकासबीच सन्तुलन कायम गर्नु, वातावरण प्रदूषण गर्नेबाट दायित्व वहन गराउनु र वातावरण संरक्षण प्रति नागरिकको दायित्वबोध, अध्ययन अनुसन्धानमा साझेदारी र सहकार्य जुटाउनु आदि यस क्षेत्रको प्रमुख चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

स्वच्छ तथा स्वस्थ वातावरणलाई संविधानमा मौलिक हकका रूपमा व्यवस्था गरिनु यस क्षेत्रको लागि ठूलो अवसर हो। वातावरण संरक्षण ढाँचा तयार हुनु, स्वच्छ तथा स्वस्थ वातावरणका लागि जनचेतनामा वृद्धि हुँदै जानु, यसका लागि स्थानीय, राष्ट्रिय, क्षेत्रीय तथा अन्तरराष्ट्रिय चासो रहनु, वातावरणसँग सम्बद्ध विभिन्न महासन्धि, अभिसन्धि तथा सञ्ज्ञौताहरू हुनु र नेपाल त्यस्ता सन्धि-संज्ञौताको पक्ष राष्ट्र हुनु वातावरणीय व्यवस्थापनका लागि अवसर हो। जैविक विविधता र प्राकृतिक वातावरण नै मुलुकको पर्यटन विकासको मेरुदण्ड भएको महसुस गरी वातावरणीय स्वच्छताका लागि सबै पक्ष र सरोकारवालाहरूले ध्यान दिनु अवसरका रूपमा लिन सकिन्छ। दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्न वातावरणीय पक्षलाई समेत विशेष ध्यान दिनु पर्ने हुनाले वातावरण व्यवस्थापन गर्न सरकार, विश्वविद्यालय र गैरसरकारी संस्थाहरू लगायत सबै सरोकारवालाहरूको सहयोग प्राप्त हुने अवसर रहेको छ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

सफा, स्वच्छ र हरित वातावरण।

##### ४.२ लक्ष्य

प्रदूषण नियन्त्रण, फोहरमैला व्यवस्थापन र हरियाली प्रवर्द्धन गरी नागरिकको स्वच्छ र स्वस्थ वातावरणमा बाँच्न पाउने अधिकारको सुनिश्चितता गर्ने।

##### ४.३ उद्देश्य

१. जल, वायु, माटो, ध्वनि तथा विद्युतीय लगायत सबै प्रकारका प्रदूषणको रोकथाम र नियन्त्रण गर्नु।
२. भौतिक पूर्वाधारको विकास र प्राकृतिक वातावरणबीच सन्तुलन कायम गर्नु।
३. प्रमुख शहर र औद्योगिक क्षेत्र लगायत सबै क्षेत्रबाट सिर्जित फोहरमैला (घरधुरी, औद्योगिक प्रतिष्ठान र अस्पताल) को व्यवस्थापन, नदीको स्वच्छता कायम र हरियाली विस्तार गर्नु।
४. प्रदूषण नियन्त्रण सहितको वातावरण व्यवस्थापनका लागि आवश्यक नीति, कानून र प्रभावकारी संरचना निर्माण गर्नुका साथै शोध, अनुसन्धान र क्षमता अभिवृद्धि गर्नु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| <p>१. जल, वायु, माटो, ध्वनि, विकिरणजन्य, घातक फोहोरमैला, तथा विद्युतीय प्रदूषण तहको राष्ट्रिय मापदण्ड तयार गरी सबै प्रकारका प्रदूषणको रोकथाम र नियन्त्रण गर्ने साथै प्रदूषण पीडितलाई प्रदूषकबाट क्षतिपूर्ति उपलब्ध व्यवस्था गर्ने ।</p> | <p>१. जल, जमिन, ध्वनि, दृश्य तथा वायु प्रदूषण रोकथाम सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुकूल राष्ट्रिय मापदण्ड तयार गरी मौजुदा तथा नयाँ बन्ने शहरहरूमा समेत कार्यान्वयन र सोको नियमित अनुगमन गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रमुख शहरहरू, औद्योगिक प्रतिष्ठान र जोखिममा रहेका क्षेत्रमा वायु गुणस्तर मापन केन्द्र स्थापना र सञ्चालन, वायु गुणस्तरको एकीकृत नक्साङ्कन, वायु प्रदूषण क्षमता एकिन र पूर्वानुमान गरी उत्सर्जनका गतिविधिमा नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> <p>३. औद्योगिक प्रतिष्ठानहरूमा प्रदूषण नियन्त्रण प्रणाली स्थापना गर्नुका साथै गैर-औद्योगिक क्षेत्रबाट उत्सर्जन हुने प्रदूषित पानीको प्रशोधनको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. उद्योग र अन्य व्यवसायहरूबाट निष्कासन हुने प्रदूषणयुक्त धुँवा धुलो, पानीलाई व्यवस्थित गर्न वातावरणमैत्री प्रविधि कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>५. औद्योगिक प्रतिष्ठानबाट उत्पादन हुने वस्तुहरूमा प्रदूषणमूक्त भएको प्रमाणपत्रको व्यवस्था लागू गरिनेछ ।</p> <p>६. तोकिएको मापदण्ड बाहेकका प्लाष्टिक उत्पादन र प्रयोगमा प्रतिबन्ध र प्लाष्टिकजन्य पदार्थको पुनः प्रयोगको नीति अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>७. कृषिफार्म, उद्योग र अन्य व्यवसायहरूमा प्रयोग गरिने विषादीको नियमन र नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> |
| <p>२. पूर्वाधार विकास र वातावरणबीच सन्तुलन कायम गर्न आवश्यक कानुन र संरचना निर्माण गरी वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन र न्यूनीकरणलाई पूर्वाधार विकासको अभिन्न अंग बनाउने ।</p>   | <p>१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा प्राथमिकता प्राप्त आयोजना र वातावरणमा प्रभाव पार्ने अन्य आयोजनाहरू व्यवस्थित गर्न वातावरण व्यवस्थापनको समग्र पक्ष समेट्ने गरी कानुन, मापदण्ड तर्जुमा तथा संशोधन गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. हरित अर्थतन्त्रको विकासका लागि सरोकारवालाहरू परिचालन गरी यसलाई वातावरण विकासका क्षेत्रगत कार्यक्रममा मूलप्रवाहीकरण गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
|   | <p>३. प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण र वातावरण प्रभाव मूल्याङ्कन मापदण्ड फराकिलो र व्यवहारिक बनाई तहगत समन्वय गरी वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन स्वीकृति प्रक्रियालाई पारदर्शी र सरलीकरण गरिनेछ ।</p> <p>४. वातावरणीय प्रभावबाट उत्पन्न जोखिम न्यूनीकरणका लागि निश्चित प्रतिशत रकम वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदनमा नै छुट्टयाइनेछ ।</p>  |
| <p>३. फोहोरमैला व्यवस्थापनका लागि निजी क्षेत्रको सहभागिता सहित नवीन प्रविधिको अवलम्बन गर्ने ।</p>                                   | <p>१. सबै स्थानीय तहहरूमा वातावरणमैत्री कार्ययोजना तयार गरी जैविक ऊर्जा, प्राङ्गारिक मल उत्पादन र फोहोरमैला व्यवस्थापनका लागि सार्वजनिक निजी साझेदारीमा प्लान्ट (भस्मिकरण समेत) स्थापना र सञ्चालन गरिन गरिनेछ ।</p> <p>२. फोहोरमैला व्यवस्थापन प्रणालीलाई आधुनिक प्रविधिमा आधारित यन्त्रशालाहरू (प्राङ्गारिक मल लगायत अन्य वस्तुमा परिवर्तन) को प्रयोग गरी प्रभावकारी बनाउँदै सिमसार क्षेत्र, धार्मिक स्थल, सडक, टोल वा अन्य सार्वजनिक स्थानमा फोहोरमैला फाल्न पूर्णरूपले प्रतिबन्ध लगाइनेछ ।</p> <p>३. प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक विपद्का कारण उत्पन्न हुने फोहोर मैलाकोको व्यवस्थापन गरिनेछ ।</p> <p>४. नदीकिनारा अतिक्रमणलाई रोकी सो ठाउँमा वृक्षारोपणलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ ।</p> <p>५. नदीको स्वच्छता कायम राख्न प्रदूषित पानी, ढल र फोहोरमैलालाई नदीमा मिसाउने कार्य नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> |
| <p>४. शहरी क्षेत्रमा योजनाबद्ध एकीकृत नदी व्यवस्थापन र हरियाली प्रवर्द्धन गर्ने ।</p>   | <p>१. प्रमुख शहरहरू, औद्योगिक प्रतिष्ठान, नदी किनार र सडक किनारमा सरकार र स्थानीय समुदायको सहकार्यमा वृक्षारोपण र पुष्पवाटिका निर्माण जस्ता हरियाली प्रवर्द्धनका कार्य गरिनेछ ।</p>  |
| <p>५. विश्वविद्यालय र अन्य निकायको सहकार्यमा प्रदूषण नियन्त्रण लगायत वातावरण व्यवस्थापनका क्षेत्रमा शोध, अध्ययन, अनुसन्धान एवम्</p> | <p>१. वातावरण सम्बन्धी अनुसन्धानका क्रियाकलापहरू सञ्चालनमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तह, दातृ निकाय, गैरसरकारी संस्था, सामुदायिक संस्था एवम् प्राज्ञिक निकायहरूबीच समन्वय र साझेदारी गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति                                   | कार्यनीति   |
|--|---|
| सरोकारवालाहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | <p>२. त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गतको भौतिक शास्त्र केन्द्रीय विभाग, नारेल प्रयोगशाला र नेपाल सरकार अन्तर्गतको केन्द्रीय वातावरण रिफरेन्स प्रयोगशालाहरूको स्तरोन्नति गरी प्रभावकारी सञ्चालनका साथै प्रदेश स्तरमा वातावरण परीक्षण प्रयोगशालाहरू स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>३. आवधिक रूपमा संघ र सबै प्रदेशको वातावरणीय अवस्था (State of Environment) को प्रतिवेदन तयार गरी प्रकाशित गरिनेछ ।</p> <p>४. वातावरण व्यवस्थापनमा सम्बद्ध सरोकारवालाहरूको लागि तालिम, गोष्ठी अध्ययन, भ्रमण सञ्चालन गरी विशिष्टीकृत क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</p> <p>५. वातावरण व्यवस्थापनका सम्पूर्ण क्रियाकलापहरूको तथ्यांक अद्यावधिक गरी वातावरणीय सूचना प्रणाली सुदृढ गरी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>६. औद्योगिक घरायसी र अन्य स्रोतबाट उत्पन्न पुनःभरणयोग्य वस्तुहरूको सदुपयोग गर्ने उद्योगहरूको स्थापना गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्तिम वर्षमा वायु प्रदूषणको औषत मात्रा (पि पि एम २.५) ५३ माइक्रोग्राम प्रति घन मिटरबाट ४० माइक्रोग्राम प्रति घन मिटरमा घटेको हुनेछ । वातावरण संरक्षणका लागि राष्ट्रिय मापदण्ड तयार भई जनताले अनुभूत गर्न सक्ने गरी सबै प्रकारका प्रदूषण रोकथाम र नियन्त्रणमा उल्लेख्य उपलब्धि हासिल भएको हुनेछ । हरेक स्थानीय तहमा फोहोरमैला व्यवस्थापन प्लान्ट स्थापना, वन उद्यान स्थापना र खालि क्षेत्रको कम्तीमा ५ प्रतिशत हरियाली बढेको हुनेछ । जोखिमजन्य फोहोर व्यवस्थापनका लागि ठूला औद्योगिक प्रतिष्ठान र अस्पतालहरूमा भस्मिकरण प्लान्ट स्थापना भएको हुनेछ । सबै प्रदेशमा वातावरण प्रदूषण परीक्षण प्रयोगशाला स्थापना र ३० स्थानहरूमा वायु गुणस्तर मापन केन्द्र स्थापना भएको हुनेछ । प्लाष्टिकको प्रयोग प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन २ ग्राम बाट १ ग्राममा घटेको हुनेछ ।

#### १०.१० जलवायु परिवर्तन

##### १. पृष्ठभूमि

जलवायु परिवर्तन विश्वव्यापी रूपमा देखापरेको एक गम्भीर समस्या हो । नेपालको अधिकतम तापक्रम प्रतिवर्ष सरदर ०.०५६ डिग्री सेल्सियसका दरले वृद्धि भएको र हिमाली क्षेत्रमा यो दर अझ बढी देखिएको छ । नेपालले विश्वको

कुल हरितगृह ग्यासको करिब ०.०२७ प्रतिशत मात्र उत्सर्जन गरे तापनि वायुमण्डलीय तापक्रम वृद्धिका कारण र भौगर्भिक तथा भौगोलिक रूपमा संवेदनशील भूबनोट भएको हुँदा नेपालमा जलवायु परिवर्तनको असर बढी परेको देखिन्छ। जलवायु परिवर्तनका कारण वृद्धि भएको विश्वव्यापी तापमानलाई न्यूनीकरण गर्ने कुलिङ सेन्टरको रूपमा रहेको हिमालको संरक्षणमा समेत विशेष ध्यान दिनु परेको छ।

जलवायु परिवर्तनको कारण कृषि तथा खाद्यान्न, जलस्रोत, वन-जङ्गल तथा जैविक विविधता, मानव स्वास्थ्य, पर्यटन, ऊर्जा, सिँचाई, बसोवास तथा पूर्वाधारमा प्रतिकूल प्रभाव पर्न थालेको छ। बाढी, पहिरो, डढेलोमा समेत तीव्रता आएको कारण ठूलो मात्रामा धनजनको क्षति हुनुको साथै जीविकोपार्जनमा समेत असर पारी बसाइँसराइ गर्नुपर्ने बाध्यता सिर्जना भएको देखिन्छ। नेपालले सयुक्त राष्ट्रसंघीय जलवायु परिवर्तन प्रारूप महासन्धि (UNFCCC) को पक्ष राष्ट्र भई अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमा प्राप्त अवसरलाई राष्ट्रिय आवश्यकता अनुरूप सदुपयोग गर्नुको साथै सो अनुरूपका दायित्वहरू पूरा गर्दै आएको छ। जलवायु परिवर्तन नीति, २०६७ कार्यान्वयनका लागि राष्ट्रिय अनुकूलन कार्यक्रम, २०६७ र स्थानीय अनुकूलन योजना, २०६८ अनुरूप स्थानीय स्तरमा जलवायु परिवर्तन अनुकूलनका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दै आएको छ। नवीकरणीय स्वच्छ ऊर्जाका कार्यक्रमहरू मार्फत न्यून कार्बन उत्सर्जन हुने वातावरण मैत्री विकासका प्रक्रियाहरू अवलम्बन गरी क्षमता अनुसार उत्सर्जन न्यूनीकरणमा योगदान पुऱ्याएको छ भने कार्बन संचितिका लागि वन क्षेत्रका कार्यक्रम सञ्चालनमा छन्।

नेपालले जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी पेरिस सम्झौतालाई अनुमोदन गरी कार्यान्वयनका लागि “राष्ट्रिय रूपमा निर्धारित योगदान” मार्गचित्र समेत तयार गरेको छ। विकास तथा वातावरणीय सुरक्षाका अन्तरसम्बन्धित तह, क्षेत्र र अन्तर्राष्ट्रिय समुदाय लगायतका सरोकारवाला बीच प्रभावकारी रूपमा समन्वय गरी जलवायु परिवर्तनका प्रभावसँग अनुकूलित हुने तथा प्रतिकूल प्रभावलाई न्यूनीकरण गर्नेतर्फ नीति तथा कार्यक्रमको तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्नु आवश्यक छ।

## २. प्रमुख समस्या

जलवायु परिवर्तनमा नेपालको भूमिका नगन्य भए पनि जलवायु परिवर्तनको अत्याधिक प्रभावित र जोखिमपूर्ण राष्ट्रहरूको सूचिमा रहनु, जलवायु परिवर्तन बहुपक्षीय विषय भएको तर अन्तर क्षेत्रगत निकायहरूबीच समन्वयमा कमी र बुझाईमा एकरूपता नहुनु, जलवायु परिवर्तनका संभावित असर र प्रभाव, जलवायुजन्य प्रकोपबाट हुने क्षति सम्बन्धमा अध्ययन अनुसन्धान र आधारभुत तथ्याकको कमी हुनु, जलवायु परिवर्तनको विषय समग्र विकास प्रक्रियामा मूलप्रवाहीकरण हुन नसक्नु, समस्या सम्बोधनको लागि समग्र संस्थागत क्षमता, आवश्यक वित्त, प्रविधि, ज्ञानको कमी रहनु प्रमुख समस्या हुन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

विभिन्न तहमा जलवायु परिवर्तनको जोखिम व्यवस्थापनबाट संकटापन्नता घटाई अनुकूलित क्षमता बढाउनु, जलवायु उत्थानशील समुदाय निर्माण गर्नु, जलवायु वित्तमा पहुँच बढाई नतिजामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु,

अन्तरनिकाय समन्वय गर्नु, संस्थागत क्षमतामा अभिवृद्धि गर्नु, जलवायु परिवर्तनमा नेपालका विशिष्टीकृत विषयहरूलाई अन्तर्राष्ट्रिय मञ्चहरूमा जलवायु परिवर्तनबाट जोखिममा परेका देशहरूको साझा आवाजको रूपमा स्थापित गर्नु प्रमुख चुनौती हुन् ।

जलवायु परिवर्तनको असर न्यूनीकरण तथा अनुकूलनका कार्यहरू गर्न द्विपक्षीय र बहुपक्षीय सहयोग र सहकार्य प्राप्त गर्न सकिने अवस्था रहनु, कार्बन उत्सर्जन न्यूनीकरणका लागि कार्बन व्यापारमा भाग लिन क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रिय विधि तथा संरचनाहरू स्थापित हुनु, वातावरणमैत्री विकास तथा कार्बन पदचाप (कार्बन फुटप्रिन्ट) प्रतिस्थापनका लागि वातावरण सेवाको भुक्तानी प्रणालीको स्थापना गर्न सक्ने अवस्था रहनु, कार्बन सञ्चितीबाट अन्तर्राष्ट्रिय भुक्तानीमा पहुँच पुऱ्याउँदै जलवायु परिवर्तनका क्षेत्रमा उपलब्ध अन्तर्राष्ट्रिय सहयोग र सुविधालाई नेपालको प्राथमिकता अनुरूप परिचालन गरी जलवायुमैत्री विकास कार्यक्रममा समावेश गर्दै राष्ट्रिय समृद्धिमा टेवा पुऱ्याउन सकिनु प्रमुख अवसर हुन् ।

#### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

जलवायु उत्थानशील समाजको निर्माण ।

##### ४.२ लक्ष्य

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन क्षमता अभिवृद्धि तथा प्रतिकूल प्रभावको न्यूनीकरणबाट दिगो समाज निर्माणमा योगदान गर्ने ।

##### ४.३ उद्देश्य

१. जलवायु परिवर्तनको प्रतिकूल प्रभावलाई पेरिस सम्झौता अनुरूप न्यूनीकरण गर्दै अनुकूलन क्षमताको अभिवृद्धि गर्नु ।
२. जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरणका लागि वातावरण मैत्री, स्वच्छ ऊर्जा र हरित विकास अवधारणा कार्यान्वयन गर्नु ।
३. जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण र अनुकूलनका लागि पेरिस सम्झौता लगायतका माध्यमबाट उपलब्ध अन्तर्राष्ट्रिय वित्त र प्रविधिमा दाबी गर्दै प्राप्त लाभको न्यायोचित वितरण गर्नु ।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. जलवायु परिवर्तन व्यवस्थापनका लागि संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा आवश्यक नीतिगत र संस्थागत संरचनामा सुधार एवम् क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | १. राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा भएका परिवर्तनलाई आत्मसात गरी जलवायु परिवर्तन नीति, २०६७ को समसामयिक परमार्जन गरिनेछ ।<br>२. वातावरण तथा जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी संघीय कानून तर्जुमा गरिनेछ । |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>३. जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी पेरिस सम्झौताको कार्यान्वयनका लागि दीर्घकालीन रणनीतिक योजना तर्जुमा गरिनेछ साथै राष्ट्रिय रूपमा निर्धारित योगदान मार्ग चित्रलाई आवश्यकतानुसार परिमार्जन गर्दै कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>४. राज्यका सबै तह, निकाय र क्षेत्रहरूमा जलवायु परिवर्तनका मुद्दाहरूलाई मूलप्रवाहीकरण गरिनेछ ।</p>  |
| २. समुदायको संकटापन्नता घटाई समानुकूलित तुल्याउन राष्ट्रिय, प्रादेशिक एवम् स्थानीय अनुकूलन योजना कार्यान्वयन गर्ने । | <p>१. नदी तथा हिमतालहरूको सर्वेक्षण, अनुगमन तथा जोखिम न्यूनीकरणका कार्यहरू गरिनेछ ।</p> <p>२. जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी राष्ट्रिय अनुकूलन योजना तर्जुमा गरिनेछ र यसले निर्धारण गरेको प्राथमिकता तथा लक्ष्य हासिल गर्न स्थानीय तहमा अनुकूलन योजनाहरू तयारी तथा कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन योजनाहरूलाई कार्बन संचिति र जलवायु परिवर्तन अनुकूलनमैत्री बनाइनेछ ।</p> <p>४. जलवायु परिवर्तन अनुकूलन हुने गरी विपद् जोखिम व्यवस्थापन, पूर्वाधार विकास र यसबाट प्रत्यक्ष प्रभावित कृषि, जलस्रोत तथा ऊर्जा आदिमा उपयुक्त प्रविधिको पहिचान, संरक्षण, प्रवर्द्धन र प्रसार गरिनेछ ।</p> |
| ३. जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरणका लागि हरित विकासको अवधारणा अवलम्बन गर्ने र स्वच्छ ऊर्जा प्रवर्द्धन गर्ने ।             | <p>१. हरित विकास अवधारणाको ढाँचा तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>२. विद्युतिय सवारी साधनलाई प्राथमिकता दिइनेछ ।</p> <p>३. हरितगृह ग्यास उत्सर्जन गर्ने यातायात, उद्योग, ऊर्जा, कृषि, वन तथा भू-उपयोग लगायत क्षेत्रका उत्सर्जन हुने प्रमुख बिन्दुहरू र कारकहरू (Drivers) पहिचान गरी तिनलाई उत्सर्जनको मात्राका आधारमा वर्गीकरण गर्ने र उत्सर्जन मापनका आधारहरू तयार गरिनेछ ।</p> <p>४. प्रमुख स्रोतहरूको उत्सर्जनको आधार तह (Reference Level) तथा ऐतिहासिक प्रवृत्ति (Historical Trend) पत्ता लगाई उत्सर्जन न्यूनीकरणका उपायहरू पहिचान र सिफारिश गरिनेछ ।</p>   |
| ४. जलवायु वित्तमा सहज पहुँचको लागि अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा पैरवी  | <p>१. द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय भुक्तानीका संभावित क्षेत्रहरू जस्तै रेडप्लस, हरित जलवायु कोष, अन्तर्राष्ट्रिय वातावरणीय सुविधा,</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| गर्दै सम्भावित लाभहरूलाई प्रदेश, स्थानीय तह र समुदायसम्म पुऱ्याउने ।                | <p>अनुकूलन कोष, जलवायु लगानी कोष जस्ता संयन्त्रहरू र अन्तर्राष्ट्रिय मञ्चमा सहभागिता र समन्वय मार्फत वित्त तथा प्रविधि भित्र्याउन पहल गरिनेछ ।</p> <p>२. स्थानीय अनुकूलन योजनाको निर्माण र कार्यान्वयनमा स्थानीय तहहरूलाई सशक्तीकरण गर्दै जलवायु परिवर्तन शीर्षकको बजेटको ठूलो हिस्सा स्थानीय तहमा खर्च हुने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण र स्वच्छ ऊर्जाका कार्यक्रम विस्तार गर्न निजी क्षेत्रको सहभागिता र लगानीलाई वृद्धि गरिनेछ ।</p> |
| ५. जलवायु परिवर्तनका क्षेत्रमा अध्ययन-अनुसन्धान तथा क्षमता विकासका कार्यहरू गर्ने । | <p>१. विश्वविद्यालय तथा अन्य संस्थाहरूसँगको सहकार्यमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा जलवायु परिवर्तनका क्षेत्रमा अध्ययन अनुसन्धान र शोध, प्रविधि विकास तथा क्षमता विकासका कार्यहरू गरिनेछ ।</p> <p>२. जलवायु परिवर्तन व्यवस्थापनमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्य जिम्मेवारी स्पष्ट गरी तिनवटै तहबाट लगानी परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>३. जलवायु परिवर्तनको असर न्यूनीकरण, अनुकूलन, लगानी तथा भुक्तानीको प्रभावकारी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरिनेछ ।</p>                  |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको अन्त्यसम्ममा ५५० स्थानीय तहको अनुकूलन योजना तयार भई कार्यान्वयन भएको हुनेछ । पाँच वटा विषयगत क्षेत्र (यातायात, उद्योग-वाणिज्य, कृषि, वन र ऊर्जा) बाट हुने हरितगृह ग्यास उत्सर्जनको सन्दर्भ तह (Reference Level) तयार भई नियमित रूपमा अनुगमन गर्ने व्यवस्था भएको हुनेछ । जलवायु परिवर्तन व्यवस्थापनको क्षेत्रमा कम्तीमा पाँच वटा ठूला परियोजना सञ्चालन भई जलवायु परिवर्तनको प्रतिकूल प्रभावलाई अनुकूलन गर्ने गरी क्षमता बढेको हुनेछ । जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी शिक्षा समावेश गरेका विद्यालयहरूको अनुपात ९० प्रतिशत र जलवायु परिवर्तन अनुकूलनमा तालिम प्राप्त व्यक्ति (स्थानीय योजनाकार) को संख्या २ हजार पुगेको हुनेछ । जलवायुको दृष्टिले व्यवस्थित गाउँहरू (स्मार्ट भिलेज) १०० वटा र जलवायुको दृष्टिले व्यवस्थित खेतीप्रणाली (फार्मिङ) ३०० वटा पुगेको हुनेछ ।

#### १०.११ जल तथा मौसम विज्ञान

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको भौगोलिक अवस्थिति तथा भू-धरातलका कारण नेपालमा विषम तथा विविधता युक्त जलवायु रहेको छ । जलमौसम र कृषिको अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहेको छ । जैविक विविधता कायम राख्न पनि जल, मौसम र

जलवायुको ज्ञान तथा तथ्याङ्क आवश्यक रहने गर्दछ। मौसमी प्रतिकूलता र बाढीका कारण विभिन्न विपद्का घटना हुने गरेको र जलवायु परिवर्तनका कारण मौसम तथा बाढी पूर्वानुमानमा जटिलता थपिंदै गइरहेको छ। हिमक्षेत्र तथा हिमनदीहरूमा आएको संकुचन आएको छ। साथै, ठूला-ठूला हिमतालहरूको निर्माण भएका कारण हिमताल विष्फोटनको जोखिम बढ्दो छ। भरपर्दो र विश्वसनीय मौसम पूर्वानुमान तथा प्रभावकारी पूर्वसूचनाबाट नेपालको कृषि प्रणाली सुधार गर्न, हवाई दुर्घटना कम गर्न, बाढी तथा खडेरी लगायत अन्य जल तथा मौसमजन्य प्राकृतिक विपद्ले पार्न सक्ने जनधनको क्षतिलाई न्यून गर्नुपर्ने आवश्यकता छ।

## २. प्रमुख समस्या

हाल सञ्चालनमा ल्याइएका विभिन्न जल तथा मौसम मापन केन्द्रहरूलाई विश्व मौसम संगठनको मापदण्ड बमोजिम चुस्त र दुरुस्त बनाई नियमित रूपमा र तत्काल (Real Time) गुणस्तरीय तथ्याङ्क प्राप्त गर्न नसक्नु, दक्ष जनशक्ति उपलब्ध नहुनु, अधिकांश केन्द्रको जग्गाको स्वामित्व नेपाल सरकारमा नभएकोले केन्द्रहरूको स्थायित्व नभई तथ्याङ्कको निरन्तरता कायम गर्न कठिन हुनु, उच्च पहाडी तथा हिमाली क्षेत्रमा जल तथा मौसम मापन केन्द्रहरू पर्याप्त संख्यामा नहुनु, जल, मौसम तथा जलवायु सेवालार्ई व्यवस्थित र निर्देशित गर्ने विशिष्ट कानुनको अभाव हुँदा सो सँग सम्बन्धित कामलाई व्यवस्थित गर्न नसक्नु, अविच्छिन्न सेवा प्रवाह गर्न स्रोत-साधन अपर्याप्त हुनु, साथै अन्तर्राष्ट्रिय हवाई उड्डयन संगठनको मापदण्ड बमोजिम उड्डयन मौसम सेवालार्ई प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न नसकिनु, सरोकारवाला (हवाई उड्डयन, कृषि, पर्यटन, जलस्रोत, विपद् व्यवस्थापन, स्वास्थ्य आदि) को माग बमोजिम जल, मौसम तथा जलवायु सेवा विस्तार गर्न नसकिनु, भूमिगत जल भण्डारका अलावा ताल तलैयामा रहेको पानीको परिमाण र गुणस्तरको तथ्याङ्क नियमित रूपमा संकलन नहुनु र सेडिमेन्ट सम्बन्धी एवम् बाढी-डुबान र क्षति आकलन तथा निराकरण सन्दर्भमा अध्ययन तथा अनुसन्धान अपर्याप्त हुनु प्रमुख समस्या रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

मौसम तथा जलप्रवाह पूर्वानुमानलाई भरपर्दो बनाई पूर्वसूचनाको उपयोग गर्दै कृषि, हवाई, जलस्रोत, स्वास्थ्य, पर्यटन आदि क्षेत्रको व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी बनाउनु, देशको भौगोलिक विकटता तथा विषमताको कारण देशभर सतह एवम् भूमिगत जल र मौसमसँग सम्बन्धित गुणस्तरीय तथ्याङ्क, सूचना अटूट रूपमा सङ्कलन गर्नु, जल तथा मौसम मापन केन्द्रहरूको सञ्चालन, विस्तार र आधुनिकीकरण गर्नु, हिमताल तथा हिमनदीहरूको सर्वेक्षण गर्नु, जलवायु परिवर्तनबाट हुने जल तथा मौसमजन्य बहुप्रकोपबाट विभिन्न क्षेत्रमा हुनसक्ने असरलाई न्युनिकरण तथा जोखिम व्यवस्थापन गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय हवाई उड्डयन संगठन र विश्व मौसम संगठनले जल तथा मौसम सेवा प्रवाहका लागि निर्धारण गरेका मापदण्डहरू लागू गर्नु, स्थानीय स्तरमा समेत उपयोग हुने गरी कृषि हावापानी सेवा प्रदान गर्नु तथा बहुप्रकोप पूर्वसूचना प्रणालीको विकास गर्नु, लामो अवधि सम्मको मौसम पूर्वानुमान सेवा उपलब्ध गराउनु, जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी समयानुकूल वैज्ञानिक अध्ययन तथा अनुसन्धान गरी क्षेत्रगत तथ्याङ्क/सूचना सरोकारवाला निकायहरूसम्म प्रभावकारी रूपमा सम्प्रेषण गर्नु र अध्ययन तथा अनुसन्धानको लागि आवश्यक दक्ष जनशक्ति उत्पादन एवम् आधुनिक प्रविधिको विस्तार र प्रभावकारी प्रयोग गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

जलस्रोत, कृषि, पर्यटन, स्वास्थ्य, पूर्वाधार निर्माण आदिको दिगो विकास तथा व्यवस्थापनका लागि भरपर्दो, अटुट, गुणस्तरीय, जल तथा मौसम सेवा अत्यावश्यक हुनु, जलवायु परिवर्तनका कारण सिर्जित नकारात्मक असरहरू न्यूनीकरण गर्न विभिन्न स्वदेशी तथा विदेशी संघ-संस्थाबाट क्षमता अभिवृद्धि, संस्थागत विकास, अध्ययन तथा अनुसन्धानका लागि अभिरुचि बढ्नु, जल तथा मौसमजन्य बहुप्रकोपको भरपर्दो पूर्वानुमान तथा पूर्वसूचना सेवाको माग बढ्नु, बिमा प्रयोजनका लागि जल तथा मौसमी घटनाहरूको प्रमाणीकरणको माग वृद्धि हुनु र हवाई सेवाको विस्तार हुँदै जाँदा हवाई मौसम सेवाको माग पनि बढ्दै जानु यस क्षेत्रका प्रमुख अवसर हुन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

विश्वसनीय र भरपर्दो जल तथा मौसम सेवा मार्फत हवाई उड्डयन, जलस्रोत, कृषि, पर्यटन, स्वास्थ्य लगायतका क्षेत्रको दिगो विकास एवम् जलवायु समानुकूलित समाजको निर्माण।

### ४.२ लक्ष्य

विश्वसनीय र भरपर्दो जल तथा मौसम सेवा मार्फत नागरिकको जीउधनको सुरक्षाका साथै दिगो पूर्वाधार निर्माणमा टेवा पुऱ्याउने।

### ४.३ उद्देश्य

१. जल तथा मौसम सेवालार्ई समयानुकूल विकास र विस्तार गर्न आवश्यक नीति निर्माण तथा संरचनागत सुधार गर्नु।
२. जल तथा मौसमजन्य बहुप्रकोपको भरपर्दो पूर्वानुमान तथा पूर्वसूचना प्रवाहबाट नागरिकको जीउधनको सुरक्षा गर्नु।
३. जल, मौसम तथा जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्नु।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. विश्व मौसम संगठनको मापदण्ड अनुसारको भरपर्दो, विश्वसनीय, गुणस्तरीय जल तथा मौसम सेवा उपलब्ध गराउन नीति तथा कानुन निर्माण गर्ने। | १. जल तथा मौसम सेवालार्ई समयानुकूल विकास र विस्तार गर्न र यस सेवालार्ई लागत उठ्ती आधार (Cost Recovery Basis) मा सञ्चालन गर्न कानुनी व्यवस्था गर्नुको साथै संरचनागत सुधार गरिनेछ। |
| २. जल तथा मौसम मापन केन्द्रहरूलार्ई क्रमशः नवीनतम प्रविधि सहितको   | १. जल तथा मौसम मापन केन्द्रहरूलार्ई क्रमशः टेलिमेट्री प्रविधि सहित स्वचालित केन्द्रमा स्तरोन्नति गरिनेछ।   |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| आधुनिक स्वचालित केन्द्रहरूमा रूपान्तरण र आवश्यकता अनुसार विस्तार गर्ने ।   | २. उच्च हिमाली क्षेत्रमा स्वचालित जल तथा मौसम केन्द्र स्थापना गरी हिमताल तथा हिमनदीको सर्भेक्षण गरिनेछ ।  |
| ३. नदी बेसिन योजना बमोजिम विकासका पुर्वाधारहरूको लागि जल उपलब्धतामा हुने भिन्नता, बेसिनहरूको पानीको सन्तुलन (Water Balance), थेग्रान अध्ययन तथा आकलन गर्ने ।       | १. ठूला प्रकृतिका अन्तर-जलाधार जल स्थानान्तरण र जलाशययुक्त बहुउद्देश्यीय जलस्रोत आयोजनाको समग्र जल व्यवस्थापन गरिनेछ ।<br>२. आधुनिक उपकरण सहित जल मौसम मापन केन्द्रहरूको स्थापना गरी जलप्रवाह, जलवायु, सेडिमेन्ट मापन तथा अध्ययन गरिनेछ ।   |
| ४. मौसम तथा जल प्रवाहको भरपर्दो तथा गुणस्तरीय पूर्वानुमान गर्ने ।  | १. जल तथा मौसम सेवालाई विश्वसनीय र भरपर्दो बनाउन नेपालको पूर्व, मध्य र पश्चिमी क्षेत्रमा एक एक वटा उच्च प्रविधियुक्त मौसमी राडार जडान गरिनेछ ।<br>२. दैनिक एक-एक वटा रेडियोसोण्ड (Radiosonde) बेलुन प्रक्षेपण गरी वायुमण्डलको मौसमी अवस्था मापन गरिनेछ ।  |
| ५. विपद् जोखिम न्यूनीकरण सम्बन्धी सेन्डाई फ्रेमवर्कले तय गरे अनुरूप विभिन्न संघ-संस्थासँग समन्वय गरी जल तथा मौसमजन्य बहु-प्रकोप पूर्वसूचना प्रणालीको विकास गर्ने । | १. सात दिने तथा ऋतुगत मौसम पूर्वानुमान र जलवायु परिवर्तनको प्रक्षेपण गरी बाढी, सुक्खा लगायत अन्य जलमौसम जन्य बहुप्रकोपहरूको भरपर्दो तथा विश्वसनीय पूर्व सूचना विभिन्न सरोकारवाला निकाय र लक्षित समुदायसम्म सम्प्रेषण गर्न टेलिभिजनका साथै अन्य संचार माध्यमहरूको उपयोग गरिनेछ ।<br>२. रिमोट सेन्सिङ, भौगोलिक सूचना प्रणाली र गणितीय मोडेलिङबाट बाढी प्रकोप जोखिम नक्सा (Flood Risk Map) तयार गरी जोखिममा आधारित बाढी पूर्वानुमान तथा पूर्वसूचना प्रणालीको विकास गरी सञ्चालनमा ल्याइनेछ ।<br>३. मौसम अनुमान सम्बन्धी सूचनाको अन्तर देशीय प्रवाहको लागि द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय पहल गरिनेछ । |
| ६. विश्व मौसम संगठन, जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी अन्तर सरकारी निकाय, अन्तर्राष्ट्रिय हवाई उड्डयन संगठन र  | १. विश्व मौसम संगठनबाट प्रतिपादित जलवायु सेवासम्बन्धी विश्वव्यापी खाका (Global Framework for Climate Services) बमोजिम राष्ट्रिय खाका तयार गरी सहकार्य तथा समन्वयका साथ कार्यन्वयनमा ल्याइनेछ ।  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| अन्य सरोकारवाला संघ-संस्थाहरूसँग समन्वय र सहकार्य गर्ने । | <p>२. जल तथा मौसम मापन उपकरणको मर्मत-संभार, क्यालिब्रेसन, प्रविधि विकासका लागि आवश्यक अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्न प्रयोगशाला सहितका पूर्वाधारहरूको स्थापना तथा प्रभावकारी उपयोग गरिनेछ ।</p> <p>३. अनुसन्धानमूलक संस्थाहरूसँग सहकार्य गर्दै जल, मौसम तथा जलवायु परिवर्तनबाट परेका वा पर्न सक्ने असर सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धान कार्यलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

नवीनतम प्रविधि सहितको मौसमी राडार, रेडियोसोण्ड, चट्टयाड मापन केन्द्र, स्वचालित जल तथा मौसम मापन केन्द्र आदिबाट अटुट रूपमा गुणस्तरीय जल तथा मौसम तथ्याङ्क संकलन, प्रशोधन तथा विश्लेषण गरी सात दिनसम्मको भरपर्दो मौसम तथा जलप्रवाह पूर्वानुमान सेवा उपलब्ध हुनेछ । जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धान गरी सो सम्बन्धी सूचना प्रवाह भएको हुनेछ । जल तथा मौसमजन्य बहु-प्रकोपको पूर्वसूचना सरोकारवाला निकायमा सम्प्रेषण भई जोखिम र जनधनको क्षति न्यूनीकरण भएको हुनेछ ।

#### १०.१२ सामुदायिक र गैरसरकारी संस्था

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले सामुदायिक तथा गैरसरकारी संस्थाहरूको लगानी र भूमिकालाई जवाफदेही र पारदर्शी बनाउँदै त्यस्ता संस्थाहरूको स्थापना, स्वीकृति, सञ्चालन, नियमन र व्यवस्थापनका लागि एकद्वार प्रणाली अपनाउने र राष्ट्रिय आवश्यकता र प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रमा संलग्न गराउने कुरा उल्लेख गरेको छ । दिगो विकास लक्ष्यले नागरिक समाजसँगको साझेदारीलाई समावेश गरेको छ । राज्यको समृद्धिका लागि नेपाली जनताको सामाजिक रूपान्तरण र आर्थिक विकासको लागि विकासको साझेदारको रूपमा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । सामुदायिक तथा गैरसरकारी संस्थाहरूलाई सरकारको विकास प्रयासमा सहयात्रीको रूपमा योगदान गर्नसक्ने वातावरण निर्माण गर्नु र उनीहरूबाट प्रवाह हुने स्रोतको उपयोगलाई, पारदर्शी बनाई अधिकतम सामाजिक परिचालन मार्फत प्रभावकारी सेवा प्रवाह गरी जनताको जीवनस्तरमा सुधार गर्ने गराउनेतर्फ जोड दिनु आजको आवश्यकता रहेको छ । यस सन्दर्भमा सामुदायिक तथा गैरसरकारी संघ संस्थाको भूमिका दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्ने तर्फ केन्द्रित हुनु आवश्यक छ ।

##### २. प्रमुख समस्या

सरकार र सामुदायिक तथा गैरसरकारी संस्थाहरू बीचको सहकार्यका क्षेत्रहरूलाई व्यावसायिक, पारदर्शी र प्रभावकारी बनाउन नसक्नु, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूको कार्यक्रममा दोहोरोपना हुनु,

परियोजनाहरूको प्रभावकारी सुपेरिवेक्षण, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन नहुनु, एकीकृत सूचना तथा तथ्याङ्क प्रणाली नहुनु, सामुदायिक एवम् गैरसरकारी संस्थामा आन्तरिक सुशासनको कमी हुनु, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्था मार्फत वैदेशिक सहायता परिचालन भइरहेको भए तापनि लगानी अनुसार अपेक्षित उपलब्धि हासिल हुन नसक्नु, नियमनकारी निकाय प्रभावकारी नहुनु यस क्षेत्रका समस्या हुन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाद्वारा संचालित परियोजनालाई एकद्वार प्रणाली मार्फत सहजीकरण तथा परिचालन गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाबाट परिचालन हुने आर्थिक स्रोतलाई पारदर्शी बनाई राष्ट्रिय लेखा प्रणालीमा आबद्ध गराउनु र गैरसरकारी संस्थालाई तीन तह बीचको समन्वयमा राष्ट्रिय प्राथमिकता र आवश्यकताका क्षेत्रमा परिचालन गर्नु, सामाजिक तथा आर्थिक विकासमा गैरसरकारी क्षेत्रको योगदान मापन गर्ने सूचक तयार गर्नु र प्रभावकारी अनुगमन/मूल्याङ्कनका लागि संस्थागत सुदृढीकरण गर्नु यस क्षेत्रका चुनौती हुन् ।

नेपालको संविधानमा संघ संस्थालाई कानुनी रूपमा अधिकार प्रदान गर्नुका साथै उत्तरदायित्व र जिम्मेवारीको व्यवस्था हुनु, संघीय प्रणाली अनुरूप प्रदेश र स्थानीय तहको परियोजना तर्जुमा र परिचालनमा संलग्नता हुने अवस्था हुनु, संघीय प्रणाली बमोजिम स्थानीय तहसम्म गैरसरकारी संस्थाहरूलाई विकास साझेदारको रूपमा परिचालन गरी सामाजिक विकासका विविध क्षेत्रका क्रियाकलापलाई तीव्र बनाउने आधार तयार हुनुका साथै दिगो विकास लक्ष्य प्राप्तिसमा सहयोग पुग्ने अवस्था सिर्जना हुनु यस क्षेत्रका अवसर हुन् ।

### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

#### ४.१ सोच

व्यावसायिक, जवाफदेही र पारदर्शी सामुदायिक तथा गैरसरकारी संघसंस्था ।

#### ४.२ लक्ष्य

राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूलाई मर्यादित, पारदर्शी र व्यवस्थित रूपमा परिचालन गर्दै सामाजिक तथा आर्थिक विकास गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

१. राष्ट्रिय प्राथमिकताको क्षेत्रमा संघ संस्थाको परिचालन, व्यवस्थापन र नियमन गर्नु ।
२. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूबाट प्राप्त हुने स्रोतको उपयोगलाई जवाफदेही र पारदर्शी बनाउँदै मुलुकको सामाजिक तथा आर्थिक विकास गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति र कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूको परिचालनमा सहजीकरण गर्ने निकायलाई सक्षम, सुदृढ, जिम्मेवार र उत्तरदायी बनाउने।                       | <p>१. गैरसरकारी संस्था स्थापना, स्वीकृति, आबद्धता, सञ्चालन, व्यवस्थापन, परिचालन तथा नियमन र समाज विकास सम्बन्धी नीति निर्माण, कानुनी व्यवस्थाको पुनरवलोकन र आवश्यकतानुसार नयाँ कानुनको तर्जुमा गरिनेछ।</p> <p>२. कुनै पनि राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाले नेपालको सार्वभौमसत्ता, अखण्डता, परराष्ट्र तथा सुरक्षा नीतिमा प्रतिकूल हुने, विभिन्न जातजाति वा सम्प्रदायबीच सुसम्बन्ध खलल पार्ने, धार्मिक रूपमा कसैलाई मनोवैज्ञानिक प्रभावपार्ने तथा सार्वजनिक नैतिकताको प्रतिकूल हुने कार्य प्रयोजनको लागि परियोजना सञ्चालन गरेमा कानुनी रूपमा दण्डनीय बनाइनेछ।</p> <p>३. समाज कल्याण परिषद्को भोगाधिकारमा रहेको सम्पत्तिको व्यवस्थापन गर्नको लागि गुरूयोजना तर्जुमा गरिनेछ।</p> <p>४. संघीय संरचना अनुरूप सहजीकरण तथा नियमन गर्ने निकायको पुनर्संरचना गरी सरकारका तीन तहबीचको समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाउनको लागि उक्त निकायलाई सक्षम र सुदृढ बनाइनेछ।</p> <p>५. सामुदायिक तथा गैरसरकारी संघ-संस्थाको परिचालनको लागि आचारसंहिता एवम् मापदण्ड निर्माण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ।</p> <p>६. गैरसरकारी संस्थाको आबद्धता, स्वीकृति, परिचालन, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्न जिम्मेवार निकायको संस्थागत सुदृढीकरण गरिनेछ।</p> |
| २. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूको पारदर्शिता, जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्दै सहजीकरण, परिचालन, अनुगमन र मूल्याङ्कनलाई प्रभावकारी बनाउने। | <p>१. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाका कार्यक्रमहरूलाई समन्वयात्मक रूपमा एकद्वार प्रणालीबाट राष्ट्रिय प्राथमिकताको क्षेत्रमा परिचालन गरिनेछ।</p> <p>२. स्थानीय तहमा उपलब्ध हुने भौतिक, मानवीय तथा प्रविधिजन्य स्रोतको उपयोगलाई प्राथमिकता दिँदै राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूको स्रोत परिचालन गरिनेछ।</p>  |

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
|  | <p>३. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाको सञ्चालन तथा खर्चको मापदण्ड निर्देशिका तर्जुमा गरी प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p> <p>४. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाले प्राप्त गर्ने स्रोतको अभिलेखीकरण गरी पारदर्शिता कायम गर्नको लागि सहायता व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमा आबद्ध हुने बाध्यकारी व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>५. राष्ट्रिय विकासको लक्ष्य हासिल गर्न गैरसरकारी क्षेत्रसँग साझेदारीको नीति अवलम्बन गरिनेछ ।</p>   |
| <p>३. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूको परिचालनलाई तीन तहको सरकारसँगको समन्वय र सहकार्य मार्फत सामाजिक तथा आर्थिक विकासमा अभिवृद्धि गर्ने ।</p>        | <p>१. गैरसरकारी संस्थाका परियोजना निर्माणदेखि कार्यान्वयनसम्मका सबै चरणहरूमा स्थानीय सरोकारवाला तथा स्थानीय तहको सहभागिता, सहकार्य र समन्वयलाई सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> <p>२. अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाको सहयोगमा स्थानीय गैरसरकारी संस्था मार्फत प्रदेश स्तरमा सञ्चालित कार्यक्रममा प्रदेश सरकारले सहजीकरण गर्नेछ र केन्द्रीय मापदण्ड तथा आचारसंहिताको प्रदेश र स्थानीय स्तरमा कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने गैरसरकारी संस्थाले पालना गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. गैरसरकारी संस्थाहरूले सञ्चालन गर्ने परियोजना र लगानीलाई स्थानीय तहको वार्षिक बजेट तथा योजनामा अनिवार्य रूपमा समावेश गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरूले सञ्चालन गरेका परियोजनाको तीन तहका सरकारहरूको समन्वय र सहकार्यमा अनुगमन तथा मुल्याङ्कनलाई नियमित एवम् प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> |
| <p>४. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संघ-संस्थाहरूको कार्य प्रभावकारिता र कार्य कुशलतालाई मापन योग्य बनाउने तथा एकीकृत तथ्याङ्क सूचना प्रणाली विकास गर्ने ।</p> | <p>१. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाले सामाजिक क्षेत्रमा गरेको योगदानलाई एकीकृत तथ्याङ्क प्रणाली मार्फत राष्ट्रिय रूपमा अभिलेख राख्ने, तथ्याङ्क अद्यावधिक गर्ने र विश्लेषण सहित वार्षिक रूपमा प्रतिवेदन सार्वजनिक गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति | कार्यनीति  |
|--------|--|
|        | <p>२. अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाको वित्तीय र भौतिक विवरण सूचना प्रणालीमा प्रविष्टि गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>३. अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाको कार्यक्रम/परियोजनाको प्रगति तेस्रो पक्षबाट मूल्याङ्कन गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ ।</p> <p>४. अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्था मार्फत प्राप्त रकम नेपाल सरकारले तोकेको बैंक मार्फत कारोबार गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाहरू व्यावसायिक, पारदर्शी र उत्तरदायी भई राष्ट्रिय प्राथमिकताको क्षेत्रमा परिचालन भएका हुने, गैरसरकारी संस्था परिचालन एवम् नियमन सम्बन्धी नयाँ कानून कार्यान्वयनमा आएको हुने, एकीकृत तथ्याङ्क तथा सूचना प्रणाली स्थापना तथा सञ्चालन भएको हुने र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रभावकारी भएको हुनेछ ।



# योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

## ११.१ योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन

### १. पृष्ठभूमि

योजनाबद्ध विकास प्रयासको छ दशक लामो अवधिमा राष्ट्रिय योजना प्रणाली संस्थागत हुनुका साथै आर्थिक सामाजिक विकासको क्षेत्रमा महत्वपूर्ण उपलब्धिहरू हासिल भएका छन्। पहिलो योजनाकालदेखि नै सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रमा उल्लेख्य उपलब्धि हासिल गर्ने लक्ष्यसहित रणनीति र कार्यक्रम समावेश गरी आवश्यक स्रोतको विनियोजन गर्दै आएको भए तापनि अपेक्षाकृत उपलब्धि भने हासिल हुन सकेको छैन। योजना प्रणालीलाई राजनैतिक परिवर्तनसापेक्ष नतिजामुखी र यथार्थपरक बनाउन निरन्तर प्रयासहरू हुँदै आएका छन्। तेह्रौँ योजनाबाट नतिजा खाकाको अवधारणालाई आत्मसात गरी यसलाई थप परिष्कृत बनाउदै योजनासँग मध्यमकालीन खर्च संरचना र वार्षिक विकास कार्यक्रमलाई आबद्ध गर्दै लिएको छ। परिवर्तित संघीय संरचना अनुसार प्रदेश र स्थानीय तहमा समेत योजना प्रणालीको विकास गरी संस्थागत गर्ने प्रयास बमोजिम प्रदेश तहमा योजनाबद्ध विकासको संस्थागत व्यवस्था भएको छ। प्रादेशिक र स्थानीय योजना तर्जुमा दिग्दर्शन, राष्ट्रिय र प्रादेशिक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा लिएको छ। साथै, विकास आयोजना तथा कार्यक्रमको आवश्यकता पहिचान, छनोट र स्वीकृतिका लागि राष्ट्रिय आयोजना बैंक स्थापना सम्बन्धी कार्य अगाडि बढेको छ। सरकारका तीन तहमा योजना प्रक्रियालाई तथ्य र प्रमाणमा आधारित र नतिजामुखी बनाउन नतिजा खाकाको प्रयोग र राष्ट्रिय आयोजना बैङ्क स्थापनाको प्रयास भइरहेको छ।

पन्ध्रौँ योजना संघीय प्रणाली अनुसार संविधान कार्यान्वयन गर्ने प्रथम योजना भएकाले तीव्र आर्थिक वृद्धि, उत्पादनशील रोजगारी सिर्जना र विकासका प्रतिफल र अवसरहरूमा समतामूलक पहुँच स्थापित गर्दै “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली” राष्ट्रिय सोच र तथा समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्रको आधार सिर्जना गर्नमा केन्द्रित गरिएको छ। यो योजनाले संघीय प्रणाली अनुसार एकीकृत योजना प्रणालीको विकास, दीर्घकालीन सोच, राष्ट्रिय लक्ष्य र उद्देश्य हासिल गर्ने गरी प्रदेश र स्थानीय तहको आवधिक योजना र कार्यान्वयनलाई मार्गनिर्देश गर्नेछ। साथै, रूपान्तरणकारी कार्यक्रम तथा आयोजना पहिचान र नतिजामूलक योजना, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको संस्थागत विकास र सुदृढीकरणमा पन्ध्रौँ योजना केन्द्रित रहेको छ।

## २. प्रमुख समस्या

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकार सूचीको कानुनी व्यवस्था र मापदण्ड स्पष्ट नहुनु, योजना तर्जुमालाई तथ्यपरक र नतिजामूलक बनाई कार्यान्वयन पद्धतिसँग जोड्न नसक्नु, संघीय प्रणाली अनुरूप खण्डीकृत तथ्याङ्क उपलब्ध नहुनु, आर्थिक योजना समूह क्रियाशील नभएकाले योजना तर्जुमा सम्बन्धी दक्ष र अनुभवी जनशक्तिको अभाव हुनु योजना तर्जुमा सम्बन्धी प्रमुख समस्या हुन्। साथै, तर्जुमाको अवस्थामा कार्यान्वयन गर्ने सरोकारवाला निकायको न्युन सहभागिताको फलस्वरूप योजनामा अपनत्वको कमी हुनु, कार्यान्वयनमा लैजानु पर्ने आयोजना विश्लेषण र छनौट गर्ने पद्धति वैज्ञानिक नहुनु, योजना कार्यान्वयन गर्ने निकायको क्षमता कमजोर हुनु, सरोकारवाला निकायहरूमा संस्थागत स्मरण प्रणाली कमजोर हुनु, योजनाको तहगत आवद्धता र वर्गीकरण स्पष्ट भइनसक्नु, आवश्यकता अनुसार सम्बन्धित निकायहरूको पुनसंरचना हुन नसक्नु, छरिएका तथा टुक्रे आयोजनाहरूको वाहुल्यता कायमै रहनु, विषय क्षेत्रगत मन्त्रालय तथा निकायमा योजना सम्बद्ध जनशक्तिको क्षमता विकासमा पर्याप्त ध्यान पुग्न नसक्नु र सांगठनिक एवम् कार्य प्रणालीगत सुधार नहुनु र कार्य सम्पादन सम्झौता संस्थागत हुन नसक्नु आयोजनाहरूमा दोहोरो श्रोत विनियोजनको अवस्था रहनु योजना कार्यान्वयनमा समस्या रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

राष्ट्रिय, प्रादेशिक र स्थानीय तहको विकासको अवस्था र प्राथमिकता बमोजिम दीर्घकालीन सोचसहित योजना तर्जुमा तथा कार्यक्रम पहिचान, छनोट र कार्यान्वयन गर्नु, आवधिक योजना, मध्यमकालीन खर्च संरचना र वार्षिक बजेटबीच सामञ्जस्यता कायम गरी स्रोत-साधनको सुनिश्चितता गर्नु, संघीय प्रणाली अनुरूप योजना तर्जुमासम्बन्धी सङ्गठनात्मक संरचना, प्रक्रिया तथा विधिमा सुधार गर्नु, योजना तर्जुमामा संलग्न हुने तीन तहका निकायहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्नु र संलग्न जनशक्तिको क्षमता विकास गरी संस्थागत सुदृढीकरण गर्नु प्रमुख चुनौती हुन्। साथै, सार्वजनिक खरिद प्रक्रियालाई चुस्त बनाउनु, आयोजना व्यवस्थापनमा सुधार गरी कार्यान्वयनमा प्रभावकारिता ल्याउनु, वित्तीय संघीयताको स्पष्ट कार्ययोजना बनाई योजना कार्यान्वयनमा आवद्ध गर्नु, कार्यान्वयनमा संलग्न हुने निकायहरूका बीचमा समन्वय र सहकार्यको वातावरण विकास गर्नु, स्रोत-साधनको विवेकपूर्ण वर्गीकरण तथा प्राथमिकीकरण गर्नु र कार्यक्रम तथा आयोजनामा संलग्न हुने जनशक्तिलाई निश्चित अवधिसम्म अविच्छिन्न रूपमा सोही कार्यमा संलग्न गराउनु समेत चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारको विकासप्रति उच्च प्रतिबद्धता हुनु, विकास योजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयनको लागि आवश्यक पर्ने स्रोत-साधनको लागि वित्त सबलीकरणको अवस्था रहनु र वित्तीय दायरा फराकिलो हुँदै जानु, आवश्यक तथ्याङ्कीय आधार विस्तार हुनु, दिगो विकास लक्ष्यको कार्यान्वयन तथा सामाजिक-आर्थिक रूपान्तरणका लागि दीर्घकालीन सोचको अवधारणा अगाडि आउनु, संविधानको कार्यान्वयन तथा संघीय ढाँचाअनुरूप नीतिगत, कानुनी, संस्थागत र संरचनागत परिवर्तन हुनु, योजना प्रक्रियालाई थप नतिजामूलक, सन्तुलित, समन्यायिक र समावेशी बनाउने प्रयास हुनु, विकास सहायताको प्रतिबद्धता बढ्दै जानु, प्रकोप उत्थनशील योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा जोड दिइनु र शिक्षामा बढ्दो लगानीका कारण दक्ष जनशक्तिको उपलब्धता योजना प्रक्रियालाई प्रभावकारी बनाउने अवसरका रूपमा रहेका छन्। साथै, प्रदेश तथा स्थानीय तहमा योजना प्रक्रिया तथा

व्यवस्थापनका लागि संस्थागत व्यवस्थाको थालनी हुनु, मध्यमकालीन खर्च संरचना कार्यान्वयनको कानुनी व्यवस्था हुनु, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयन आरम्भ हुनु र तहगत रूपमा कर्मचारीको समयोजन तथा व्यवस्थापन आरम्भ हुनु जस्ता अवसर समेत रहेका छन्।

#### ४. सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

##### ४.१ सोच

संघीय संरचना अनुरूप तथ्यपरक र नतिजामुखी योजना तर्जुमा प्रणालीको विकास।

##### ४.२ लक्ष्य

दीर्घकालीन सोच बमोजिम योजना तर्जुमा गरी विकास कार्यक्रम/आयोजनाबाट लक्षित उपलब्धि हासिल गर्ने।

##### ४.३ उद्देश्य

राष्ट्रिय सोच र लक्ष्य हासिल हुने गरी संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा समन्वयात्मक, नतिजामुखी र सबल योजना तर्जुमा पद्धतिको विकास गर्नु।

##### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. दीर्घकालीन सोच र राष्ट्रिय प्राथमिकताका आधारमा योजना तर्जुमा गर्ने। | १. संविधानमा उल्लिखित राज्यको निर्देशक सिद्धान्त तथा नीति सापेक्ष कार्यक्रमहरू समावेश गरी योजना तर्जुमा गरिनेछ।<br>२. दीर्घकालीन सोचका आधारमा सबै तहका योजनाहरू तर्जुमा गरिनेछ।<br>३. दिगो विकासका लक्ष्यहरूको कार्यान्वयनलाई मध्यनजर गरी तहगत योजनाहरू तर्जुमा गरिनेछ।<br>४. सबै तहमा आयोजना बैंक स्थापना गरी सोमा समावेश आयोजनाको प्राथमिकीकरण गरी कार्यान्वयनमा लगिनेछ।<br>५. आयोजनाको पहिचान, मूल्याङ्कन, छनोट तथा प्राथमिकीकरणका लागि मन्त्रालयगत रूपमा आयोजना विकास सम्बन्धी स्रोत सहितको संरचनाको व्यवस्था र सुदृढीकरण गरिनेछ।<br>६. दीर्घकालीन सोच कार्यान्वयन गर्न विषय क्षेत्रगत गुरुयोजना तर्जुमा गरिनेछ। |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| <p>२. योजना तर्जुमाको प्रक्रियागत पक्षमा सुधार गर्ने ।</p>                                 | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. विगतका योजनाको समीक्षा गरी सिकाइ, अनुभव र पृष्ठपोषणका आधारमा योजना तर्जुमा प्रक्रियालाई प्रभावकारी बनाउने प्रणाली विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. योजना तर्जुमालाई कार्यान्वयनयोग्य र नतिजामुखी बनाउन योजनाले आत्मसात गर्ने लक्ष्य तथा आवश्यक पर्ने स्रोतको यथार्थ अनुमान गर्ने पद्धतिको विकास गरिनेछ । यसका लागि आवश्यक पर्ने तथ्याङ्कको उत्पादन र व्यवस्थापनमा सुधार गरिनेछ ।</li> <li>३. योजना तर्जुमाको क्रममा नै कार्यान्वयनका लागि आवश्यक संस्थागत संरचना, स्रोत, जिम्मेवारी र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन पद्धतिको स्पष्ट व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>४. सबै तहमा समावेशी र सहभागितामूलक योजना तर्जुमा पद्धतिको विकास गरिनेछ । तहगत सरकार, निजी तथा गैरसरकारी क्षेत्र, नागरिक समाज, प्राज्ञिक वर्ग र अन्य सरोकारवालाको सहभागितामा योजना तर्जुमामा सर्वपक्षीय अपनत्व अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> </ol> |
| <p>३. संघीय संरचना अनुकूल हुनेगरी विद्यमान योजना प्रणालीको सुदृढीकरण तथा विकास गर्ने ।</p> | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. संघीय संरचना अनुकूल तीन तहमा योजना प्रणाली विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. योजना र मध्यकालीन खर्च संरचनालाई संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा संस्थागत गरी योजनाका विभिन्न तह र अवयवबीच कार्यमूलक सम्बन्ध कायम गरिनेछ ।</li> <li>३. तीन तहका योजना तथा कार्यक्रम तर्जुमाको चरणमा देखा पर्ने समस्याको सम्बोधन गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ । तहगत समन्वय प्रभावकारी बनाउन राष्ट्रिय योजना आयोगबाट विशेष पहल गरिनेछ ।</li> <li>४. प्रादेशिक र स्थानीय तहका योजना तर्जुमा गर्दा राष्ट्रिय सोच र लक्ष्यलाई मध्यनजर गरी राष्ट्रिय योजनाले लिएका मूलभूत सिद्धान्त, सोच र लक्ष्यलाई अनुसरण गरिनेछ । राष्ट्रिय योजनाले प्रादेशिक र स्थानीय तहका योजनालाई समेत मार्गनिर्देश र सहजीकरण गर्ने पद्धतिको विकास गरिनेछ ।</li> </ol>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ४. योजना तर्जुमामा संलग्न सार्वजनिक निकाय एवम् निजी, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको क्षमता विकास तथा सुदृढीकरण गरी ग्रहण क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. योजना, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी निकायहरूलाई विशिष्टीकृत निकायको रूपमा विकास गरिनेछ ।</li> <li>२. संघीय तथा प्रदेश मन्त्रालय र तीन तहमा रहेका विकास सम्बद्ध निकायहरूमा योजना एकाईहरूको संस्थागत व्यवस्था गरी कार्य विशिष्टीकरण गरिनेछ ।</li> <li>३. तीन तहमा रहेका योजना सम्बन्धी निकाय र एकाईहरूको संस्थागत क्षमता विकास गरिनेछ ।</li> <li>४. योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा संलग्न तीन तहमा कार्यरत जनशक्तिको क्षमता विकास तथा जवाफदेहिता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> </ol>  |
| ५. योजना कार्यान्वयनको प्रक्रियागत पक्षमा सुधार गर्ने ।   | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. योजनामा समावेश भएका कार्यक्रम/आयोजना कार्यान्वयनको तहगत तथा निकायगत जिम्मेवारी तोकेर कार्यान्वयनमा लगिनेछ ।</li> <li>२. कार्यक्रम/आयोजना कार्यान्वयनको समय तालिका बनाई लागू गरिनेछ । यस अनुसार सार्वजनिक खरिद प्रक्रियालाई चुस्त बनाइनेछ ।</li> <li>३. कार्यक्रम/आयोजना कार्यान्वयनको लागि आवश्यक स्रोतको उपलब्धता, परिचालन, निकास, खर्च तथा प्रतिवेदन गर्ने प्रणालीमा सुधार गरिनेछ ।</li> <li>४. मध्यमकालीन खर्च संरचना तथा वार्षिक कार्यक्रमलाई योजना कार्यान्वयनसँग आबद्ध गरिनेछ । मध्यमकालीन खर्च संरचनालाई अनिवार्य शर्त मानी स्रोत सुनिश्चितता गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</li> </ol> |
| ६. संघीय संरचना अनुकूल योजना कार्यान्वयनको लागि संस्थागत संरचनाको व्यवस्थापन गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा योजना कार्यान्वयन सम्बन्धी संयन्त्रको स्थापना तथा सुदृढीकरण गरिनेछ ।</li> <li>२. आर्थिक योजना तथा तथ्याङ्क सेवालार्ई पूर्ण क्रियाशील गराई तीन तहमा आयोजना व्यवस्थापन, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीमा तदनुरूप कर्मचारी व्यवस्थापन गरिनेछ ।</li> </ol>   |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>३. योजना तर्जुमा तथा बजेट व्यवस्थामा लेखा उत्तरदायी अधिकारीलाई थप जिम्मेवार बनाउने गरी कानूनको परिमार्जन गरिनेछ ।</p> <p>४. सबै तहमा योजना सम्बन्धी व्यवस्थापन सूचना प्रणाली विकास गरी कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ ।</p>   |
| ७. आयोजनाको व्यवस्थापन र कार्यक्रम कार्यान्वयनमा सुधार गर्ने । | <p>१. सार्वजनिक खरिद, प्राकृतिक स्रोत साधन तथा जनशक्ति परिचालन सम्बन्धी कानुनी, नीतिगत, संस्थागत र प्रक्रियागत सुधार गरिनेछ ।</p> <p>२. बृहत् पूर्वाधार निर्माण लगायत विषय क्षेत्रगत रूपान्तरणकारी आयोजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>३. भौगोलिक, प्रादेशिक र क्षेत्रगत सन्तुलन कायम हुने गरी कार्यक्रम तथा आयोजना प्राथमिकताका आधारमा कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>४. आयोजना बैकमा छनौट भएका प्राथमिकता प्राप्त आयोजना मात्र कार्यान्वयन गरिनेछ ।</p> <p>५. योजना कार्यान्वयनको लागि अन्तरनिकाय समन्वय र बहुक्षेत्रीय हस्तक्षेप गरी नतिजा सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> <p>६. समस्याग्रस्त तथा रूग्ण कार्यक्रम/आयोजनाहरूलाई पुनःप्राथमिकीकरण गरी औचित्यताको आधारमा कार्यान्वयनलाई निरन्तरता दिने, गाभ्ने वा बन्द गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

संघीय संरचना बमोजिम योजना तर्जुमा सम्बन्धी कानुनी, संस्थागत र प्रक्रियागत व्यवस्था भएको हुने, दीर्घकालीन सोच र आवधिक योजना तर्जुमा भई प्रदेश र स्थानीय तहमा योजना प्रणाली विकास र संस्थागत भएको हुने, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा मध्यमकालीन खर्च संरचना संस्थागत भएको हुने, रूपान्तरणकारी कार्यक्रम/आयोजना विकास भई कार्यान्वयनमा आएको हुने र योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गर्ने निकायको संस्थागत सुदृढीकरण तथा जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि भएको हुनेछ ।

## ११.२ राष्ट्रिय आयोजना बैंक

### १. पृष्ठभूमि

सन्तुलित आर्थिक तथा सामाजिक विकासका लागि आवश्यक लगानीका अवसर पहिचान गरी परिचालन गर्न र परिपक्व रूपमा योजना पहिचान तथा छनोटका कार्यहरू गर्न गराउन आयोजना बैंकको स्थापना भएको हो। विकासका तोकिएका लक्ष्यहरू गुणस्तरयुक्त तथा निर्दिष्ट समयभित्र हासिल गर्न आयोजनाहरूको सही पहिचान र छनोट गर्ने प्रणालीको विकास गरी प्राथमिकताका आधारमा आयोजना कार्यान्वयन गर्नु गराउनु आजको आवश्यकता हो। कुनै निश्चित मापदण्डविना आयोजनाको पहिचान तथा छनोट गर्ने र आवश्यक पूर्व तयारीविना कार्यान्वयनमा लैजाने वर्तमान परिपाटिले अधिकांश आयोजनाहरू समस्याग्रस्त छन्। यसबाट आयोजनाहरू तोकिएको समय र निर्धारित लागतमा सम्पन्न हुन सकिरहेका छैनन्। परिणामस्वरूप हालका वर्षहरूमा सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनमा अनावश्यक तथा अत्यधिक चाप पर्न गएको छ। राष्ट्रिय आयोजना बैंक संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको योजना तर्जुमा तहसम्म विस्तार भएको अवस्थामा यसले देशको वित्तीय अनुशासन कायम गर्न र लगानीका थप अवसर जुटाउन एवम् आयोजना कार्यान्वयनमा कुशलता हासिल गर्न महत्वपूर्ण योगदान गर्नेछ।

### २. प्रमुख समस्या

आयोजनाको पहिचान, छनोट, मूल्याङ्कन जस्ता पूर्वतयारीका प्रक्रिया बिना कार्यान्वयन गर्ने परिपाटि, आयोजनाको आवश्यकता र योगदान सम्बन्धी तथ्यगत सूचनाको अपर्याप्तता, विषय क्षेत्रगत गुरुयोजना तथा योजनाको अभाव लगायतका कारणले विकास आयोजनाहरू प्रायः तोकिएको समय र निर्धारित लागतमा सम्पन्न नहुनु एवम् यसको लागि आवश्यक संयन्त्र बन्न नसक्नु, संस्थागत सरचना र क्षमताको कमी हुनु प्रमुख समस्याको रूपमा रहेका छन्।

### ३. चुनौती तथा अवसर

आयोजना चक्रको समुचित व्यवस्थापन, आन्तरिक र बाह्य स्रोत-साधनको परिचालन, न्यायोचित वितरणको साथै सम्बन्धित सबै पक्षको सहयोग, समन्वय र प्रतिबद्धता हासिल गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण रहेको छ। विगतमा अपरिपक्व रूपमा गरिएका आयोजना पहिचान र छनोटले ल्याएको दीर्घकालीन नकारात्मक प्रभावलाई कम गर्दै जानुका साथै आयोजना बैंकको सिद्धान्त र मान्यतालाई अनुसरण तथा कार्यान्वयन गर्ने गराउने कार्य चुनौतीपूर्ण छ।

सरकारको नीति तथा कार्यक्रममा राष्ट्रिय आयोजना बैंक स्थापना गर्ने गराउने व्यवस्था उल्लेख हुनु, प्राथमिकताको क्षेत्रमा सार्वजनिक लगानी परिचालन गर्ने नीति हुनु, आगामी आर्थिक वर्षहरूको लागि आयोजना छनोटको आधार तय हुनु, आयोजना बैंक सम्बन्धी कानून तर्जुमा प्रक्रियामा रहनु, विकास साझेदारहरूको चासो तथा सहयोगको प्रतिबद्धता हुनु र तीन तहका सरकारमा आयोजना बैंकको महत्वपूर्ण भूमिका रहनु अवसरको रूपमा रहेका छन्। राष्ट्रिय आयोजना बैंकमा समावेश भएका आयोजना सार्वजनिक वा निजी क्षेत्र एवम् सार्वजनिक निजी साझेदारीमा समेत लगानीयोग्य हुनेछन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

आयोजना तर्जुमा तथा व्यवस्थापनमा सुशासन अभिवृद्धि गरी तीव्र सन्तुलित र दिगो विकास ।

### ४.२ लक्ष्य

कार्यान्वयनका लागि तयारी अवस्थामा रहेका आयोजनाहरूको पोर्टफोलियो तयार भई सार्वजनिक, निजी एवम् वैदेशिक स्रोतको प्रभावकारी परिचालन गरी सन्तुलित र दिगो विकास गर्ने ।

### ४.३ उद्देश्य

१. तथ्यपरक र मापदण्डमा आधारित आयोजना पहिचान, छनोट तथा मूल्याङ्कन प्रक्रिया तथा प्राथमिकीकरण गर्ने प्रणालीको विकास र अभ्यास गर्नु गराउनु ।
२. आयोजना बैंकका सिद्धान्त र मान्यता अनुरूप प्रदेश र स्थानीय तहहरूमा समेत त्यस्तो प्रणालीको स्थापना गर्न आवश्यक सहजीकरण गर्नु ।

### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
| १. तथ्यपरक र मापदण्डमा आधारित आयोजना पहिचान, मूल्याङ्कन, छनोट तथा प्राथमिकीकरण गरी राष्ट्रिय आयोजना बैंकको स्थापना गर्ने । | १. आयोजनाहरूको पहिचान, मूल्याङ्कन, छनोट तथा प्राथमिकीकरणको मापदण्ड बनाई लागू गर्नको लागि आवश्यक कानून तथा संस्थागत संरचना तयार गरिनेछ ।<br>२. राष्ट्रिय आयोजना बैंकमा समावेश भएका आयोजनाहरूको व्यवस्थित अभिलेखीकरणका लागि राष्ट्रिय आयोजना बैंक विद्युतीय व्यवस्थापन सूचना प्रणाली (National Project Bank Management Information System) मा आबद्ध गरी आयोजना छनोट प्रणालीको पूर्ण रूपमा विकास गरिनेछ ।<br>३. राष्ट्रिय योजना आयोगमा राष्ट्रिय आयोजना बैंक पूर्ण रूपमा सञ्चालन गरी क्षमता विकास गरिनेछ ।<br>४. सम्भाव्यता अध्ययन भइसकेका आयोजनालाई मात्र प्राथमिकताको आधारमा छनोट गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>५. राष्ट्रिय योजना आयोगबाट विशेष परिस्थितिमा आवश्यक आयोजनाको पहिचान गरी सम्भाव्यता अध्ययन प्रक्रिया अघि बढाइनेछ ।<br>६. राष्ट्रिय आयोजना बैंक मार्फत आयोजनाको पहिचान, प्राथमिकीकरण र नतिजाको सुनिश्चितता गरिनेछ । |

|   |  |
|---|--|
| <p>२. प्रदेश र स्थानीय तहहरूमा आयोजना बैंक प्रणालीको स्थापना गर्ने तर्फ आवश्यक कार्यहरू गर्न गराउन सहजकर्ताको भूमिका निर्वाह गर्ने ।</p>            | <p>१. प्रदेश र स्थानीय तहमा आयोजनाहरूको पहिचान, मूल्याङ्कन र छनोट प्रक्रिया तथा प्राथमिकीकरणको मापदण्ड बनाई लागू गर्न सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रदेश तथा स्थानीय स्तरमा आयोजना बैंक स्थापना गर्न आवश्यक समन्वय र सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. प्रदेश र स्थानीय तहहरूका आयोजना बैंकमा सूचीकृत आयोजनाहरूको व्यवस्थित अभिलेखीकरणका लागि आयोजना बैंकलाई विद्युतीय व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमा आबद्ध गरिनेछ ।</p>                       |
| <p>३. कार्यान्वयनका लागि तयारी अवस्थामा रहेका आयोजनाहरूको पोर्टफोलियो तयार गरी स्वदेशी तथा विदेशी निजी क्षेत्रको लगानी र सहायता परिचालन गर्ने ।</p> | <p>१. राष्ट्रिय आयोजना बैंक र प्रदेश तथा स्थानीय स्तरका आयोजना बैंकमा समावेश भएका आयोजनाको विकास तथा सञ्चालनका लागि आन्तरिक तथा बाह्य स्रोतको परिचालन गर्न सहयोग गरिनेछ ।</p> <p>२. राष्ट्रिय आयोजना बैंकमा समावेश भएका आयोजनाहरूको प्राथमिकताको आधारमा छनोट गरी मध्यमकालीन खर्च संरचनामा समावेश गरिनेछ ।</p> <p>३. कार्यान्वयनमा रहेका क्रमागत आयोजनाहरूको स्वीकृत मापदण्डका आधारमा मूल्याङ्कन गरी पुनः प्राथमिकीकरण गरिनेछ ।</p> |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

राष्ट्रिय आयोजना बैंक स्थापना भई पूर्ण रूपमा सञ्चालन भएको हुनेछ । विकास आयोजनाहरूको लागि आवश्यक स्रोतको पहिचान र परिचालन हुन गई तोकिएको गुणस्तर, परिमाण, समय र निर्धारित लागतमा सम्पन्न भई सरकारको वित्तीय व्यवस्थापनमा योगदान पुगेको हुनेछ ।

#### ११.३ तहगत सम्बन्ध तथा अन्तरसरकार समन्वय

##### १. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र नेपालको राज्य संरचना संघ, प्रदेश र स्थानीयबाट हुने व्यवस्था गरेको छ । संवैधानिक व्यवस्था बमोजिम संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आ-आफ्नो अधिकार प्रयोग गर्दा एकअर्काको साझा चासो, सरोकार र राष्ट्रिय लक्ष्य एवम् हितको विषयलाई समेत ध्यान दिई आफ्ना सामाजिक, आर्थिक एवम् सांस्कृतिक विकासका प्रयासहरू अघि बढाउनु परेको छ । यी तीन तहको सम्बन्ध सहकारिता, सहअस्तित्व र समन्वयका सिद्धान्तका आधारमा हुने संवैधानिक व्यवस्था छ । तीन तहले संविधान प्रदत्त अधिकारको महत्तम प्रयोग मार्फत विकास र सुशासनमा प्रतिस्पर्धा तथा आवश्यकता अनुसार सहयोग र सहकार्य गरी अन्तरसरकार समन्वयलाई मजबुत बनाउँदै राष्ट्रिय विकासमा योगदान पुऱ्याउनु आजको आवश्यकता हो ।

## २. प्रमुख समस्या

संविधानमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकारका सम्बन्धमा गरेको व्यवस्थाका बारेमा आ-आफ्नै बुझाइ रहनु, राजस्व बाँडफाँटको विषयमा तीन तहबीच फरक मत रहनु, एकअर्कामा समन्वयको लागि कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्था सुदृढ नसक्नु र तीन तहबीचको सम्बन्धलाई प्रभावकारी र परिणाममुखी बनाउन नसक्नु जस्ता प्रमुख समस्या रहेका छन्।

## ३. चुनौती तथा अवसर

संविधानले तोकेका साझा अधिकारको सूचीमा थप स्पष्टता ल्याउनु, जनतामा अधिक भारको महसुस नहुने गरी राजस्व बढाउने उपाय अवलम्बन गर्नु, नागरिकको बढ्दो आकांक्षा एवम् अपेक्षालाई सम्बोधन गर्नु, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच राजनीतिक समझदारी कायम गर्दै समन्वयको संस्कारमा अभिवृद्धि गर्नु र तहगत समन्वयको लागि कानुनी तथा संस्थागत व्यवस्था सुदृढ गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

मुलुकले संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन प्रणालीसहित संघीय राज्य प्रणाली अवलम्बन गर्नु, संघीयता कार्यान्वयनले गति लिनु, तीन तहको सरकार मार्फत जनतालाई दिनुपर्ने सेवा नजिकबाट प्रदान गरिने व्यवस्था हुनु, तीन तहले आ-आफ्नो क्षेत्राधिकार अनुसार विकास निर्माणको कार्य अगाडि बढाउनु प्रमुख अवसर रहेका छन्।

## ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

### ४.१ सोच

सुदृढ तहगत सम्बन्ध र उपलब्धिमुखी अन्तरसरकार समन्वय।

### ४.२ लक्ष्य

संघ, प्रदेश र स्थानीय तह बीचको सम्बन्धलाई सुदृढ, सबल र सक्षम बनाउने।

### ४.३ उद्देश्य

१. संघीय शासन प्रणाली कार्यान्वयनमा देखिएका अन्यौलता हटाउन अन्तरसरकार समन्वय मार्फत विकास र सुशासनमा टेवा पुऱ्याउनु।
२. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको एकल तथा साझा अधिकारको बुझाइमा एकरूपता ल्याई अन्तरसरकार समन्वय सुदृढ गर्नु।
३. प्रभावकारी एवम् उपलब्धिमूलक तहगत सम्बन्धको लागि आवश्यक कानुनी तथा संस्थागत संयन्त्रको निर्माण गर्नु।
४. स्रोत वितरण एवम् बाँडफाँट, विकास र कार्यान्वयनमा स्पष्टता ल्याई नागरिकमा संघीय शासनको अनुभूति गराउनु।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति   | कार्यनीति   |
|--|---|
| १. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले संविधान प्रदत्त अधिकारको प्रयोगमा तीव्रता दिने ।   | <p>१. नेपालको संविधानले प्रदान गरेका एकल तथा साझा अधिकारका सम्बन्धमा आवश्यक कानुन निर्माण गरी प्रत्येक तहको अधिकारमा स्पष्टता ल्याइनेछ । साथै, नेपाल सरकार कार्य विस्तृतीकरण प्रतिवेदन अनुसार निर्धारित कार्यहरू सम्पादन गर्नका लागि आवश्यक संस्थागत र प्रणालीगत व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. प्रदेश तथा स्थानीय तहलाई अधिकारको प्रयोग, कानुन निर्माण तथा कार्यान्वयनको लागि संघले आवश्यक सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>३. तीन तहको सरकार बन्नुअघि नेपाल सरकारले सञ्चालन गरेका आयोजना तथा जिल्ला र क्षेत्रीय रूपमा रहेको जग्गा तथा सम्पत्ति आवश्यकता र औचित्यका आधारमा सम्बन्धित तहलाई हस्तान्तरण गरिनेछ ।</p> |
| २. तीन तहको सरकारबीचको समन्वयमा अभिवृद्धि गरी विकास निर्माण, सेवाप्रवाह तथा जनतासँग प्रत्यक्ष सरोकारका विषयलाई प्रभावकारी बनाउने । | <p>१. अन्तरप्रदेश परिषद् तथा प्रदेश समन्वय परिषद्को सुदृढीकरण मार्फत तीन तहको समन्वयलाई प्रभावकारी बनाइनेछ । अन्तरप्रदेश परिषद्को सचिवालय गठन गरी समन्वयलाई सहज बनाइनेछ ।</p> <p>२. विकास निर्माण र सेवा प्रवाहमा चुस्तता ल्याउन जनतालाई प्रदान गरिने सेवाहरू छरितो र प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> <p>३. स्थानीय तहबाट भएका कामकारवाही तथा सेवाप्रवाहको आवश्यकता अनुसार प्रदेश तथा संघबाट र प्रदेशको कामकारवाहीको केन्द्रीयस्तरबाट अनुगमन र सहजीकरण गरिनेछ ।</p> <p>४. तीन तहबीच समन्वय कायम गर्नको लागि आवश्यक कानुन निर्माण गरिनेछ ।</p>  |
| ३. आ-आफ्नो तहको विकास र सुशासन अभिवृद्धि गर्नको लागि सरकारहरूबीच प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण सिर्जना गर्ने ।                          | <p>१. विकासका गतिविधिलाई तीव्रता दिन र सुशासन प्रवर्द्धन गर्न सबै तहबाट कार्यक्रमसहितका योजना बनाई लागू गरिनेछ ।</p> <p>२. मानव विकास सूचकांकमा उल्लेख्य प्रगति हासिल गर्न सबै तहका सरकारलाई विभिन्न कार्यक्रम मार्फत प्रोत्साहन गरिनेछ ।</p> <p>३. विकास र सुशासन कायम गर्न एक तहले गरेका उत्कृष्ट कार्यहरूलाई अन्य तहले समेत अनुसरण गर्ने वातावरण मिलाइनेछ ।</p>  |

## ५. अपेक्षित उपलब्धि

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको कार्यक्षेत्र र अधिकारको बाँडफाँटमा स्पष्टता आएको हुनेछ। तीन तहबीच समन्वय गर्न कानुनी रूपमा नै व्यवस्था भएको हुनेछ। साझा चासो र हितका सम्बन्धमा तहहरूबीच सूचनाको आदान प्रदान तथा असल अभ्यासको अनुसरण गर्ने संस्कारको विकास भई तीन तहबीच सहकार्य र समन्वयमा अभिवृद्धि भएको हुनेछ। र जनतालाई अनुभूत हुने गरी विकास र सुशासन कायम भएको हुनेछ।

## ११.४ अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

### १. पृष्ठभूमि

विकास नीति, योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनाको सफल कार्यान्वयनका साथै विकास प्रक्रियालाई नतिजामूलक र पारदर्शी बनाई सार्वजनिक जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्न अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ। संविधानले राष्ट्रिय नीतिको कार्यान्वयन तथा सुशासनको सन्दर्भमा समेत अनुगमन तथा मूल्याङ्कनलाई महत्व दिई फराकिलो दायरामा राखेको छ। विकास आयोजनाहरूको व्यवस्थित अनुगमन तथा मूल्याङ्कनका लागि राष्ट्रिय अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन, २०७५ कार्यान्वयनमा रहेको छ। प्रदेश र स्थानीय तहको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली विकासका लागि प्रदेश अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन, २०७५ (नमुना) तयारी र संप्रेषण गरी सहजीकरण गरिएको छ। दिगो विकास लक्ष्यमैत्री अनुगमन तथा मूल्याङ्कनका लागि सूचक तयार गरी प्रदेशगत रूपमा समेत तथ्याङ्कको व्यवस्थापन गरिएको छ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कनलाई अन्तरनिकाय र अन्तरसरकारी तहको समन्वय र सहकार्यमा थप प्रभावकारी बनाउनु आवश्यक छ। आन्तरिक र तेस्रो पक्षको मूल्याङ्कन मार्फत विकास नीति, योजना तथा कार्यक्रमको असर र प्रभाव अध्ययन गरी पृष्ठपोषण प्रदान गर्ने प्रयासलाई सुदृढ बनाउने एवम् विकास आयोजनाहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्य छिटो, छरितो र व्यवस्थित बनाउन नवीन प्रविधिको प्रयोग र सञ्जालीकरण गर्नुपर्ने देखिएको छ। योजनामा अनुगमन तथा मूल्याङ्कनबाट प्राप्त अनुपोषणलाई तीन तहको सरकारमा अनिवार्य रूपमा लागु गर्ने प्रणालीको विकास गर्दै समस्याको शीघ्र सम्बोधन गरिनेछ।

### २. प्रमुख समस्या

अनुगमनका चरणहरूको अनुपालना हुन नसक्नु, विकास नीति, योजना तथा कार्यक्रमले पारेको समग्र प्रभाव, असर र दिगोपनाको मूल्याङ्कनलाई सघन बनाउन नसक्नु, योजना तर्जुमाको क्रममा अनुगमन तथा मूल्याङ्कनका लागि आवश्यक कार्ययोजनाले प्राथमिकता नपाउनु प्रमुख समस्या हुन्। अनुगमन तथा मूल्याङ्कनबाट औँल्याइएका सकारात्मक पृष्ठपोषणलाई कार्यान्वयन गर्ने व्यवस्था अनिवार्य नहुनु, कार्यक्रम तथा आयोजनाको नतिजालाई सम्बन्धित निकायका पदाधिकारीहरूको कार्यसम्पादनसँग आबद्ध गरी पुरस्कार र दण्डको व्यवस्था गराउन नसक्नु,

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीसँग आबद्ध जनशक्तिको पर्याप्त क्षमता विकास गर्न नसक्नु र यसका लागि साधन-स्रोतको अपर्याप्तता रहनु प्रमुख समस्या हुन् ।

### ३. चुनौती तथा अवसर

संघीय संरचना अनुरूप संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको सहकार्य र समन्वयमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई संस्थागत गर्नु, योजनाले परिलक्षित गरेका प्रगतिको एकीकृत प्रतिवेदन गर्नु, राष्ट्रिय लक्ष्यका सही तथा मापनयोग्य सूचकहरू निर्धारण गर्नु, दिगो विकास लक्ष्य लगायतका विषयमा असर र प्रभाव तहका सूचकहरूको खण्डीकृत एवम् सर्वेक्षणमा आधारित तथ्याङ्क तथा सूचना सिर्जना गरी प्रगति समीक्षा गर्नु, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन क्षेत्रमा दक्ष जनशक्ति तयार गरी टिकाइराख्नु, नीति, योजना तथा कार्यक्रमको प्रभाव र असर मूल्याङ्कन गर्नु, मूल्याङ्कनबाट आएका पृष्ठपोषणलाई अनिवार्य कार्यान्वयन गराउनु र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यमा प्रविधिको प्रयोगलाई व्यवहारमा लागु गर्नु प्रमुख चुनौती रहेका छन् ।

संविधानद्वारा तहगत सरकारको अधिकारको सूचीबाट कार्य जिम्मेवारीको बाँडफाँट हुनु, तीन तहमा आफ्नो कार्य जिम्मेवारी अनुसार अनुगमन सूचक बनाई कार्य गर्ने अवसर प्राप्त हुनु, संघीयताको कार्यान्वयनसँगै प्रदेश र स्थानीय तहमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कनमा सक्रिय हुनु, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी नीतिगत नमुना मार्गदर्शन तर्जुमा हुनु, मूल्याङ्कनका क्षेत्रमा प्रतिष्ठित राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय संस्थासँगको साझेदारी र सहकार्यमा वृद्धि हुनु र अनुगमन तथा मूल्याङ्कनलाई सबैले आत्मसात गर्नु जस्ता अवसर रहेका छन् ।

### ४. क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीति

#### ४.१ सोच

नतिजामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन व्यवस्था मार्फत शासकीय सुधार ।

#### ४.२ लक्ष्य

मापनयोग्य सूचकको आधारमा नतिजामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली सुदृढ गरी विकास कार्यक्रम/आयोजनाको निर्धारित लक्ष्यहरू हासिल गर्ने ।

#### ४.३ उद्देश्य

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा नतिजामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई संस्थागत गर्नु ।

#### ४.४ रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| १. कानुनी र नीतिगत व्यवस्था गरी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई सबल र सुदृढ बनाउने । | १. अनुगमन तथा मूल्याङ्कन ऐन तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।<br>२. अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीमा सहभागितामूलक, आधुनिक र नवीनतम विधिहरू अवलम्बन गरिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>३. अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यलाई गुणस्तरीय बनाउन जिम्मेवार संस्था तथा निकायहरूको संहिता तथा स्तरीय मापदण्ड बनाई लागू गरिनेछ ।</p> <p>४. अनुगमन तथा मूल्याङ्कनसँग सम्बन्धित निकायहरूसँग सहकार्य र सूचनामा समन्वय गरिनेछ ।</p>  |
| <p>२. नतिजामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कनलाई स्थापित गर्न अन्तर निकायगत तथा अन्तर सरकारी समन्वय र सहकार्यको विकास गर्ने ।</p> | <p>१. संघीय संरचना अनुरूप अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी भूमिका प्रभावकारी बनाउन सो सम्बन्धी अन्तरनिकाय/अन्तरसरकारी समन्वय र सहकार्यलाई सबल बनाइनेछ ।</p> <p>२. तीन तहमा वार्षिक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्ययोजना तयार गरी तदनुरूप कार्य सम्पादन गरिनेछ ।</p> <p>३. आयोजना तर्जुमाकै क्रममा सोचतालिका तथा सरल, स्पष्ट, मापनयोग्य र भरपर्दो नतिजा सूचकहरू समावेश गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>४. एकीकृत अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास गरी संघ, प्रदेश र स्थानीय तह बीच आयोजना प्रगति सम्बन्धी सूचना प्रणाली विकास गरिनेछ ।</p> <p>५. तीन तहको सरकारको सहभागितामा प्राथमिकता प्राप्त विकास आयोजनाहरूको संयुक्त अनुगमन गरिनेछ ।</p> <p>६. जिल्ला समन्वय समिति लगायत अनुगमन र समन्वयकारी निकायहरूलाई अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यमा प्रभावकारी बनाइनेछ ।</p> |
| <p>३. अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यमा आबद्ध सबै तहका जनशक्तिको क्षमता विकास गर्ने ।</p>                                     | <p>१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी जनशक्तिको क्षमता विकासका लागि तालिम प्रदान गरिनेछ ।</p> <p>२. गुणस्तरीय अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी क्षमता विकासका लागि सम्बन्धित क्षेत्रमा कार्यरत राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय संस्थासँग सहकार्य गरिनेछ ।</p> <p>३. तीन तहको सरकारका आवधिक योजना, नीति तथा वार्षिक कार्यक्रमको पूर्व, चालु, सम्पन्न, असर र प्रभाव तथा दिगोपना मूल्याङ्कन गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ ।</p> <p>४. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका विकास नीति, योजना र कार्यक्रममा दिगो विकास लक्ष्यलाई आन्तरिकीकरण गरी सोको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन, अभिलेख व्यवस्थापन र प्रतिवेदन गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| ४. विकास कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूको समस्याहरू तत्काल/समयमै समाधान गराउने संरचनाको विकास गर्ने। | १. राष्ट्रिय गौरवका, रूपान्तरणकारी, रणनीतिक महत्व र प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाका समस्या समाधान गर्न सक्ने अधिकार सम्पन्न विशेष संयन्त्रको विकास गरिनेछ।<br>२. अनुगमन तथा मूल्याङ्कनबाट प्राप्त पृष्ठपोषणको आधारमा आयोजनाको विश्लेषण गरी आयोजना बैंकमा समावेश गर्ने तथा आयोजना बैंकको सूचीबाट हटाउन सकिने प्रणालीको विकास गरिनेछ।<br>३. सरोकारवाला निकायहरू सम्मिलित संयुक्त अनुगमन टोली गठन गरी कार्यक्रम/आयोजनाको अनुगमन गर्ने प्रणालीको विकास गरिनेछ। |

#### ५. अपेक्षित उपलब्धि

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी ऐन जारी भएको हुनेछ। नयाँ कार्यक्रम तथा आयोजना स्वीकृति गर्नु अघि सो सम्बन्धी कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूको मूल्याङ्कनबाट प्राप्त सुझावहरूलाई ग्रहण गर्ने पद्धति विकास भएको हुनेछ। सात वटै प्रदेशमा आयोजना कार्यसम्पादन सूचना प्रणालीको माध्यमबाट प्रमुख विकास आयोजनाहरूको प्रगति समीक्षा भएको हुनेछ। प्रदेश तथा स्थानीय तहमा अनुगमन मूल्याङ्कन सम्बन्धी नीतिगत र कार्यगत स्पष्टता आई विकास आयोजनाले अपेक्षित उपलब्धि प्राप्त गर्न सहयोग पुगेको हुनेछ। आन्तरिक र तेस्रो पक्ष गरी कम्तिमा २५ वटा कार्यक्रम/आयोजनाको मूल्याङ्कन भएको हुनेछ। संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको सहकार्य र समन्वयमा कम्तिमा ३५ वटा राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाको अनुगमन भई कार्यान्वयनमा सहजीकरण र देखिएका समस्याको समाधान भएको हुनेछ। अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यमा संलग्न ८० प्रतिशत कर्मचारीहरूले अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी तालिम प्राप्त गरेका हुनेछन्। निर्धारित समयमा आयोजना सम्पन्न हुने अवस्था आएको हुनेछ।

#### ११.५ जोखिम व्यवस्थापन

##### १. पृष्ठभूमि

योजनाको अपेक्षित लक्ष्य तथा उद्देश्य हासिल गर्न राजनीतिक स्थायित्व, राजनीतिक दलहरू बीच सहकार्य, नीतिगत स्थिरता, लगानीको अनुकूल वातावरण, आर्थिक स्थायित्व, मित्र राष्ट्र र विकास साझेदारको सहयोग, निकायगत कार्यदक्षता र कुशलता, अन्तरक्षेत्रगत अन्तरतहगत समन्वय र सहकार्य आवश्यक हुन्छ। त्यस्तै योजनाले निर्धारण गरे अनुरूप सार्वजनिक, निजी तथा सहकारी एवम् गैरसरकारी क्षेत्रबाट लगानी हुने अपेक्षा गरिएको छ। योजना अवधिमा सम्पन्न हुने राष्ट्रिय गौरव तथा राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजना र कार्यक्रमले योजनाको कार्यान्वयन पक्षलाई निक्कैल गर्नेछ। तसर्थ योजना तर्जुमा गर्दा लिइएका मान्यता र पूर्वानुमान अनुरूप सम्भाव्य जोखिम प्रक्षेपित अवस्था अनुरूप नियन्त्रणको दायराभिन्न रहने अनुमान गरिएको छ।

## २. जोखिम पक्ष

### २.१ बाह्य जोखिम

यस अन्तर्गत क्षेत्रीय तथा विश्वव्यापी स्तरका आर्थिक, राजनीतिक र वातावरणीय जोखिम रहेका छन्। दुई छिमेकी मुलुक र अन्य प्रमुख व्यापार, श्रम र लगानी सम्बन्ध भएका राष्ट्रले अवलम्बन गर्ने आर्थिक एवम् वित्तीय नीति तथा तिनीहरूको आर्थिक स्थिति, बजार तथा उत्पादन अवस्था, विश्व बजारमा आउन सक्ने असन्तुलन तथा आर्थिक संकटबाट नेपालको अर्थतन्त्रको वास्तविक, मौद्रिक, सार्वजनिक तथा बाह्य सबै क्षेत्रमा नकारात्मक प्रभाव पर्न सक्दछ। यसले निर्यात, आयात, रोजगारी, पर्यटन आगमन, वैदेशिक सहायता प्राप्ति, विप्रेषण, सोधनान्तर तथा विदेशी विनिमय सञ्चितिमा असर पार्न सक्तछ। भारतमा हुने मूल्यवृद्धि, विदेशी विनिमय नीति, अन्तर्राष्ट्रिय मूल्यमा आउने उतार-चढावको प्रभाव, मौसमी प्रतिकूलताका कारण कृषिजन्य उत्पादन तथा आपूर्तिमा आउने उतार-चढावको प्रभाव जस्ता पक्षहरू जोखिमको रूपमा रहेका छन्। योजनाका समष्टिगत तथा विषय क्षेत्रगत नीति तथा रणनीतिले यी पक्षलाई समग्र रूपमा सम्बोधन गर्दै बाह्य स्थायित्व सहित अर्थतन्त्रलाई स्वतन्त्र र सबल गर्ने अनुमान गरिएको छ। साथै, बाह्य क्षेत्रमा हुने आतंककारी गतिविधि, द्विपक्षीय र बहुपक्षीय सम्बन्ध, जलवायु परिवर्तनबाट वातावरणमा पर्ने नकारात्मक असर, पेट्रोलियम पदार्थमा हुने मूल्य वृद्धि, महामारी तथा अन्य विपद् लगायतका कारणबाट पनि योजनाले लिएका लक्ष्यहरू प्राप्तिमा नकारात्मक असर पर्ने जोखिम रहेका छन्।

### २.२ आन्तरिक जोखिम

यस अन्तर्गत आर्थिक, वित्त, मौद्रिक, प्राकृतिक, शासकीय र सामाजिक तथा कार्य संस्कृतिजन्य जोखिम रहेका छन्। नेपालको अर्थतन्त्र विस्तारका क्रममा रहेकाले आन्तरिक उत्पादनमा वृद्धि नभएसम्म निर्यात-आयात अनुपातमा अपेक्षित सुधार नहुने र उत्पादनशील क्षेत्रको विकासका लागि चालु खातामा अत्यधिक दबाव पर्न सक्ने अवस्था आउन सक्छ। आन्तरिक रूपमा राजनीतिक अस्थिरता भई लगानीको वातावरण खल्बलिएमा वा आन्तरिक सुरक्षा स्थित कमजोर भएमा पनि अर्थतन्त्रमा नकारात्मक असर पर्नसक्ने जोखिम हुनसक्छ। साथै, जलवायु परिवर्तनका दृष्टिकोणले नेपाल अत्यन्त जोखिमपूर्ण रहेकाले यसबाट जनजीवन, उत्पादन, पूर्वाधार तथा अन्य क्षेत्रमा प्रतिकूल असर पर्न सक्ने देखिन्छ। साथै, आन्तरिक तथा अन्तरदेशीय उत्सर्जनका कारण भइरहेको र आगामी दिनमा थप बढ्नसक्ने वायु प्रदूषण नियन्त्रण गर्न तथा स्वच्छ र हरित अर्थतन्त्र निर्माण गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण छ।

प्राकृतिक रूपले नेपाल एक सम्वेदनशील मुलुकका रूपमा रहेको छ। मुलुकको अवस्थिति तथा भूबनोटका कारण भूकम्प, बाढी, पहिरो, सुख्खा, खडेरी लगायतका प्राकृतिक विपद्को उच्च जोखिममा रहेको छ। उदाहरणका लागि ८०० वर्षको अवधिमा नेपालले तीनवटा ठूला भूकम्प (सन् १२२०, वि.सं. १९९० र २०७२) को सामना गर्नुपर्‍यो। विपद्को जोखिम न्यूनीकरण सम्बन्धी पर्याप्त तयारी नभएमा वा बृहत्, आधुनिक पूर्वाधार तथा निर्माणमा पर्याप्त सावधानी नअपनाइएमा मुलुक आर्थिक रूपमा समृद्ध हुँदै गर्दा यसबाट हुने मानवीय, भौतिक तथा आर्थिक क्षति, गरिबी तथा संकटापन्नतामा पर्ने प्रभावको सघनता गणितीय रूपमा बढ्ने सम्भावना रहन्छ। यसबाट आर्थिक

क्रियाकलापमा अनपेक्षित प्रभाव पार्ने र कुल गार्हस्थ उत्पादन र उत्पादकत्वमा क्षति भै लक्षित उपलब्धि हासिल गर्न अवरोध सिर्जना हुन सक्छ ।

संघीय शासन प्रणाली नेपालको लागि नयाँ अभ्यास भएको हुँदा प्रदेश र स्थानीय तहको संस्थागत विकास र कार्यान्वयन क्षमताले विकास योजना, नीति तथा कार्यक्रमको कार्यान्वयनलाई प्रभावित पार्नेछ । साथै, योजना अवधिमा तर्जुमा हुने वार्षिक र आवधिक योजनामा उल्लेख भएका लक्ष्य तथा रणनीतिको निरन्तरता दिनुपर्ने हुन्छ । योजनाका लक्ष्यहरू हासिल गर्न सो अनुरूप राजनीतिक नेतृत्व, कर्मचारीतन्त्र र नागरिकको दृष्टिकोण तथा मनोवृत्ति एवम् संरचनात्मक व्यवस्थामा परिवर्तन हुनु आवश्यक छ । स्रोत- साधनको विनियोजन एवम् सञ्चालन कुशलता कायम गर्दै कार्य पद्धति र कार्य संस्कृतिमा सुधार गर्न सकेमा जोखिम पक्षको व्यवस्थापन हुन सक्छ । अर्थतन्त्रलाई आत्मनिर्भर बनाउँदै वित्तीय, मानवीय तथा भौतिक साधनको प्रभावकारी परिचालन हुन नसकेमा उल्लेखित लक्ष्य हासिल नहुने जोखिम रहन्छ ।

### ३. जोखिम व्यवस्थापनका रणनीति तथा कार्यनीति

| रणनीति  | कार्यनीति  |
|---|--|
| १. विश्व अर्थतन्त्रमा आउन सक्ने सम्भावित उतार चढावको जोखिम पहिचान गरी नेपाली अर्थतन्त्रमा यसको नकारात्मक प्रभाव न्यूनीकरण गर्ने । | १. अर्थतन्त्रमा आउन सक्ने सम्भावित जोखिम पहिचान गर्ने प्रणालीको गरिनेछ ।<br>२. विदेशी मुद्राको सञ्चित वृद्धि गरिनेछ ।<br>३. नेपाली अर्थतन्त्रको परिनिर्भरतालाई क्रमशः कम गरिनेछ ।  |
| २. अन्तर्राष्ट्रिय अर्थ राजनीतिको विश्लेषण गरी आवश्यक नीति तथा रणनीति बनाउने ।  | १. पुँजी खातालाई सम्भाव्यता अध्ययनका आधारमा छनोटपूर्ण रूपमा क्रमशः परिवर्त्य बनाउँदै लगिनेछ ।<br>२. छिमेकी राष्ट्र तथा नेपालसँग अर्थ-राजनीतिक रूपमा महत्वपूर्ण राष्ट्रहरू तथा अन्तर्राष्ट्रिय विकास साझेदार संस्था तथा निकायका नीतिहरूको अध्ययन विश्लेषण गरी उपयुक्त नीति र रणनीति तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ ।  |
| ३. वैदेशिक व्यापार तथा वैदेशिक विनिमयका जोखिमको प्रभाव न्यूनीकरण गर्ने ।  | १. वस्तु र सेवाको उत्पादन अभिवृद्धि गर्नुका साथै अनावश्यक आयात नियन्त्रण गरी आयात व्यवस्थापन गरिनेछ ।<br>२. नेपाली अर्थतन्त्रलाई प्रतिस्पर्धी र समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम हुने गरी विदेशी विनिमय नीतिलाई पुनरावलोकन गर्दै लगिनेछ ।<br>३. भारतीय मुद्राको विनिमय सञ्चित वृद्धि गर्न भारततर्फको निर्यात प्रवर्द्धन र भारतीय पर्यटक आगमन अभिवृद्धि गर्न जोड लगिनेछ । |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
|   | <p>४. विदेशी विनिमयलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा उपयोग गर्न जोड दिइनेछ ।</p> <p>५. देशगत र वस्तुगत व्यापार विविधीकरण गरिनेछ ।</p>  |
| ४. वैदेशिक रोजगारी व्यवस्थापन र विप्रेषण प्राप्ति तथा परिचालनमा देखिएका जोखिम न्यूनीकरण गर्ने । | <p>१. औपचारिक माध्यमबाट विप्रेषण आप्रवाहमा वृद्धि तथा विप्रेषण र विदेशी लगानीलाई प्राथमिकता क्षेत्रमा परिचालन गर्न कानुनी, संरचनागत तथा प्रक्रियागत सुधार र प्रोत्साहनको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. आन्तरिक रोजगारीको अवसर वृद्धि गरिनेछ ।</p>   |
| ५. समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्ने ।   | <p>१. आर्थिक तथा वित्तीय जोखिम पहिचान गर्न आर्थिक पूर्व सावधानी प्रणाली विकास गरी सोको व्यवस्थापन रणनीति अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>२. विप्रेषण आप्रवाह, लगानी, वैदेशिक व्यापार तथा भुक्तानी सन्तुलन सम्बन्धमा मध्यमकालीन तथा दीर्घकालीन प्रक्षेपण गरी उपयुक्त रणनीति अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>३. बिमा सेवाको विकास एवम् विस्तार गरी आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक एवम् अन्य कारणबाट उत्पन्न हुने जोखिमलाई बिमाको दायरामा ल्याई वित्तीय जोखिम न्यूनीकरण गरिनेछ ।</p> <p>४. धितोपत्र तथा वस्तु विनिमय बजारलाई स्वच्छ, प्रतिष्पर्धी र विश्वसनीय बनाइनेछ ।</p> <p>५. धितोपत्र बजारमा लगानी सम्बन्धी जोखिम न्यूनीकरणका लागि आवश्यक वित्तीय उपकरणहरूको विकास गरिनेछ ।</p> |
| ६. सार्वजनिक वित्तको प्रभावकारी व्यवस्थापन गर्ने ।  | <p>१. तीन तहको वित्तीय जोखिमको नियमित लेखाजोखा गर्ने विधि तयार गरी वित्तीय नियन्त्रण प्रणालीलाई सुदृढ गरिनेछ ।</p> <p>२. राजस्वको आधार वृद्धि गर्ने एवम् उच्च प्रतिफल दिने र उत्पादन वृद्धिसँग सम्बन्धित पूर्वाधारका क्षेत्रमा सार्वजनिक स्रोतको विनियोजन गरिनेछ ।</p> <p>३. सार्वजनिक खर्चलाई उत्पादनशील तथा प्रतिफलयुक्त हुने गरी परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>४. चालु खर्च व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड बनाई वाञ्छित सीमाभित्र राखिनेछ । साथै, गैरबजेटरी खर्चलाई नियन्त्रण गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति   | कार्यनीति  |
|--|--|
|  | <p>५. योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा लगायतका सामाजिक सुरक्षा प्रणालीलाई विस्तार तथा सबल बनाइनेछ ।</p> <p>६. सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन सम्बन्धी कानून र मध्यमकालीन तथा दीर्घकालीन रणनीति तर्जुमा गरिनेछ । सार्वजनिक ऋण व्यवस्थापन गर्दा विदेशी विनिमयको जोखिम न्यूनीकरण गर्ने रणनीति अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>७. सार्वजनिक ऋण परिचालन सम्बन्धी आधारहरूलाई समयानुकूल पुनरावलोकन तथा परिमार्जन गरिनेछ । साथै, सार्वजनिक ऋणलाई अल्पकालीन तथा निश्चित सीमामा राख्नेगरी परिचालन गरिनेछ ।</p> <p>८. मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमा प्रक्रियालाई सुदृढ गरी यथार्थपरक बनाइनेछ ।</p>                                     |
| ७. मौद्रिक तथा वित्तीय क्षेत्रका जोखिम न्यूनीकरण गर्ने । | <p>१. कर्जाको ब्याजदर निर्धारण गर्दा लागत प्रभावी प्रणाली अवलम्बन गर्ने व्यवस्था लागू गरिनेछ ।</p> <p>२. अर्थतन्त्रको लागि आवश्यक लगानी र आन्तरिक स्रोत उपलब्धता बीचको अन्तर पूर्ति गर्न बाह्य लगानी भित्र्याइनेछ ।</p> <p>३. मुद्रास्फिति दरलाई वाञ्छित सीमा भित्र राखिनेछ ।</p> <p>४. बजार मूल्य र तरलताको स्थिति अनुसार मौद्रिक नीति परिमार्जन गरिनेछ ।</p> <p>५. मूल्य स्थायित्व कायम गर्ने गरी सरकारी वित्त तथा वार्षिक मौद्रिक नीति तय गरिनेछ ।</p> <p>६. वित्तीय संस्थाको विस्तार र प्रविधिमैत्री वित्तीय सेवाको विकास गरी वित्तीय पहुँच बढाइनेछ । वित्तीय क्षेत्रको नियमन प्रणाली सुदृढ गरिनेछ ।</p> |
| ८. पूर्वाधार र सूचना प्रविधिजन्य जोखिम न्यूनीकरण गर्ने । | <p>१. उर्जा, पूर्वाधार, मानवीय र साइबर सुरक्षा प्रदान गर्ने तथा साइबर अपराध नियन्त्रण गरिनेछ ।</p> <p>२. सूचना प्रविधि सञ्जालीकरण तथा डाटाबेस सुरक्षा सम्बन्धी प्रणालीमा आधुनिक प्रविधिको अवलम्बन गरिनेछ ।</p> <p>३. सूचना प्रविधिको विस्तार र पहुँच अभिवृद्धि गरी डिजीटल डिभाइड न्यूनीकरण गरिनेछ ।</p>  |

| रणनीति  | कार्यनीति   |
|---|---|
| ९. प्राकृतिक विपद् र जलवायु परिवर्तनका जोखिम न्यूनीकरण गर्ने ।  | <ol style="list-style-type: none"> <li>बहुप्रकोप जोखिम नक्साङ्कन र सूचनामा आधारित विपद् जोखिम पूर्वानुमान, पूर्वतयारी, प्रतिकार्य र पुनर्लाभ सम्बन्धी क्षमता विकाससँगै विपद् जोखिम संवेदनशील योजना तथा पूर्वाधार निर्माण प्रक्रिया सुनिश्चित गरिनेछ ।</li> <li>विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापनका लागि सार्वजनिक, निजी तथा सामुदायिक लगानी वृद्धि गरी समुदाय स्तरदेखि नै उत्थानशील क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ ।</li> <li>जलवायु परिवर्तनको प्रभाव न्यूनीकरण गर्न स्थानीय समुदायमा अनुकूलन क्षमता अभिवृद्धि, सचेतना र सवलीकरण गरिनेछ ।</li> <li>विकास निर्माणका चरणहरूमा जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी विषयलाई मूलप्रवाहीकरण गरिनेछ ।</li> </ol> |
| १०. शासकीय जोखिम न्यूनीकरण गर्ने ।                              | <ol style="list-style-type: none"> <li>सरकारका कामकारवाहीमा पारदर्शिता, जवाफदेहिता र उत्तरदायित्व प्रवर्द्धन गरी सुशासन कायम गरिनेछ ।</li> <li>राजनीतिक, प्रशासनिक तथा वित्तीय संघीयतालाई परिष्कृत गर्दै संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीचको सहकार्य र समन्वयलाई प्रभावकारी बनाइनेछ ।</li> <li>दीर्घकालीन सोच, आवधिक योजना र वार्षिक बजेट बीचको तादात्म्यता र क्षेत्रगत नीतिहरूसँग सामञ्जस्यता कायम गरिनेछ ।</li> </ol>   |
| ११. सामाजिक तथा कार्य संस्कृति सम्बन्धी जोखिम न्यूनीकरण गर्ने । | <ol style="list-style-type: none"> <li>कामको सम्मान, सम्मानजनक काम र कामप्रतिको जिम्मेवारीलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ ।</li> <li>सार्वजनिक पदमा रहने सबै पदाधिकारीहरूको पदीय आचरण र अनुशासन सम्बन्धी आचारसंहिता लागू गर्ने व्यवस्था गरिनेछ ।</li> <li>पेसागत मर्यादा, व्यावसायिकता र सदाचार प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।</li> </ol>  |